KADMBINI JAN-MAY 1981 G.K.U.

110517

309 or 308

23.6.86 Rlc

5160 21.6.86

19/6/86

10AM Rlc

5059 18/6/86

22-7-25

75/1 7-25

20 BY

28/3/86 Rlc

3223

27/3/86

10AM 16/6/86

5703 Rlc

14/6/86

14.6.86

23.686

5160 21.686

एक प्रकाशन

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की
विशिष्ट पत्रिका

जनवरी ९१

RJ-902

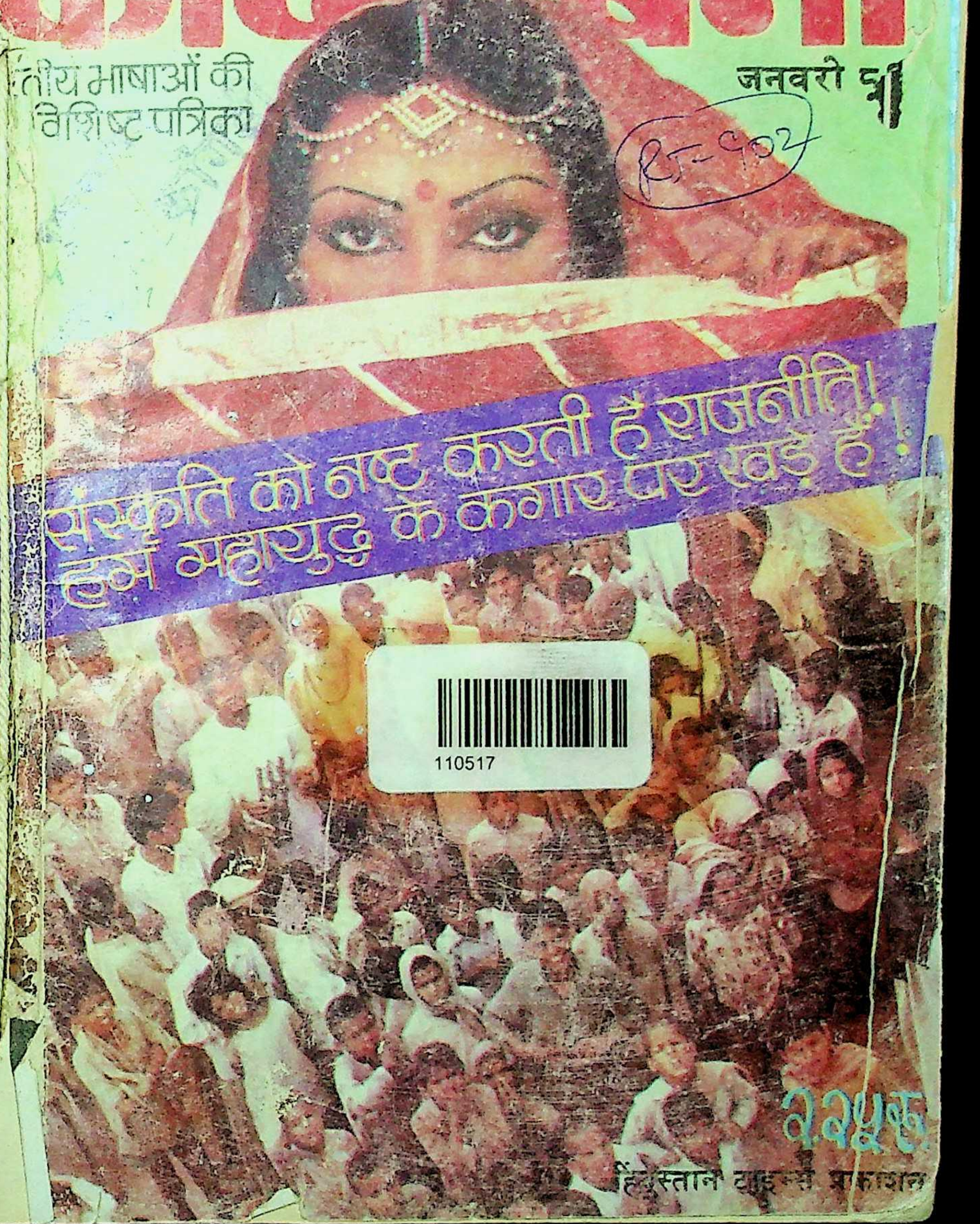

संस्कृति को नष्ट करती है राजनीति!
हम महायुद्ध के कगार पर खड़े हैं!

110517

२.२५रु.

हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

करों में छूट पाएं

राष्ट्रीय बचत पत्र
(II निर्गम)
में धन लगायें

इससे, आपको मिलेगा सम्पूर्ण कर मुक्त 6.5% चक्रवृद्धि (7.93% साधारण) ब्याज। सात वर्ष बाद, आपके 100/- रु० बढ़कर 155.50/- रु० हो जायेंगे।

बचत पत्र तीन वर्ष बाद भुनाए जा सकते हैं। एक व्यक्ति के लिए जमा राशि सीमा 75,000/- रु० है। निवेश की राशि धन-कर से भी मुक्त है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

- अधिकृत एजेंट,
- जिला बचत अधिकारी द्वारा जिला कलैक्टोरेट,
- भारतीय स्टेट बैंक और इसके सहायक बैंक,
- नजदीकी डाक घर,
- क्षेत्रीय कार्यालय, राष्ट्रीय बचत संगठन (राज्य या केन्द्रीय सरकार)

डीएवीपी 80/118

या लिखें :
राष्ट्रीय बचत संगठन
12, सेमिनेरी हिल्स, नागपुर-440006

राधाकृष्ण किताब-क्लब

हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करें
एक-तिहाई कमीशन तथा डाकखर्च मुफ़्त

केवल 10 रुपये जमा करवा कर आप राधाकृष्ण किताब-क्लब के सदस्य बन सकते हैं।

आपको राधाकृष्ण प्रकाशन की सभी पुस्तकों पर तथा समय-समय पर अन्य प्रकाशकों की बहुचर्चित पुस्तकों पर भी एक-तिहाई कमीशन की छूट मिलेगी।

पुस्तकों के कागज, जिल्दबंदी छपाई इत्यादि में कोई भी कटौती नहीं की जायेगी।

50 रुपये की पुस्तकें एक साथ मँगवाने पर आपसे डाक-खर्च भी नहीं लिया जायेगा।

हर महीने अथवा दूसरे महीने पुस्तकें मँगवाने का आप पर कोई बन्धन नहीं होगा।

नयी पुस्तकों की सूचना आपको लगातार मिलती रहेगी ताकि पुस्तकों का चुनाव करने में आपको सुविधा हो।

विस्तृत जानकारी के लिए आज ही लिखें और सदस्य बनें।

एक विशिष्ट साहित्यिक पत्रिका

अभिरुचि

लेखक और पाठक के बीच
संवाद की त्रैमासिकी

संपादक : डा० विद्यानिवास मिश्र

खेमों तथा वादों से मुक्त रहकर पठनीय श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य के प्रति लेखक-पाठक की साझेदारी की ईमानदार कोशिश।

इसके हर अंक में आप पढ़ेंगे :

- नये प्रकाशनों के विषय में आस्वादपरक आलोचना
- रचनाकारों के साथ अनौपचारिक बातचीत
- महत्वपूर्ण प्रकाश्यमान रचना से कोई अंश
- पाठक समस्या पर लेख
- लेखक शिविरों/लेखक सम्मेलनों पर रपट
- विश्व साहित्य की उल्लेखनीय नयी कृति का प्रभावांकन
- अनेक अन्य स्तम्भ

एक प्रति 4 रुपये वार्षिक मूल्य 15 रुपये
(रजिस्टर्ड डाक से सवा दो रुपये प्रति अंक अतिरिक्त)

कृपया बैंक ड्राफ्ट, पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर राधाकृष्ण प्रकाशन के नाम से ही भेजें। आज ही ग्राहक बनें।

पहला अंक जनवरी 1981 में प्रकाश्य

हिन्दी के पांच प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने पिछले 10 वर्षों में हिन्दी में प्रकाशित सार्थक पुस्तकों का चयन किया है। राधाकृष्ण प्रकाशन के संस्थापक श्री ओम्प्रकाश की स्मृति में इन पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी दिल्ली में आयोजित की गयी। इस अवसर पर प्रकाशित सूचीपत्र निःशुल्क मंगवायें।

अच्छी पुस्तकों के लिए
राधाकृष्ण प्रकाशन
2 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

साफ़, ताज़ा सांस मज़बूत, स्वस्थ दांत

कोलगेट डेन्टल क्रीम से

हर भोजन के बाद अपने दांत कोलगेट से साफ़ कीजिए. यह ठीक उसी तरह दांतों की रक्षा करता है, जैसे दुनियाभर के दांतों के डाक्टर कहते हैं.

दांतों में छुपे हुए अन्नकणों में कीटाणु बढ़ते है. इनसे सांस में बदबू पैदा होती है, और बाद में दांतों में सड़न.

इसीलिए, हमेशा भोजन के फ़ौरन बाद कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ कीजिए. यह सांस को ताज़ा, दांतों को सफ़ेद और दांतों की सड़न रोकने में असरदार साबित हो चुका है.

कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट-जैसा स्वाद मन में बस जाता है.

देखिए, कोलगेट के भरोसेमंद फ़ार्मूले का काम :

दांतों में छिपे हुए अन्नकणों में, सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु बढ़ते है.

कोलगेट का अनोखा, असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों को और कीटाणुओं को निकाल देता है.

नतीजा : आपके दांत आकर्षक सफ़ेद, आपकी सांस तरोताज़ा और दंतक्षय की रोकथाम.

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की बदबू रोकिए-दंतक्षय का प्रतिकार कीजिए...

Colgate
DENTAL CREAM
Colgate
STOPS BAD BRE
दांतों की पूरी देखभाल के लिए
कोलगेट ट्राइगार्ड टूथब्रश इस्तेमाल कीजिए
तीन गुना बेहतर है.
1 दांतों के एनेमल की रक्षा करता है.
2 दांतों पर जमी मैल को हटाता है.
3 मसूड़ों की रक्षा करता है.

DC.G.74 HN

KITCHEN KING
DEGGI MIRCH
AGMARK
CURRY POWDER
GARAM MASALA
CHANE KA MASALA
CHAT MASALA

60 वर्षों से लोकप्रिय
शुद्धता तथा कम मूल्य के प्रतीक

एम डी एच
मसाले

एम.डी.एच मसाले पोली-पैक में सील किये जाते हैं ताकि इनकी ताज़गी और स्वाद बने रहें। ये मसाले आपके लिये क्वालिटी की गारंटी हैं।

हमारे अन्य लोकप्रिय उत्पादन :
किचन किंग, देगी मिर्च, गरम मसाला,
चना मसाला, चाट मसाला इत्यादि

महाशियां दी हट्टी प्राइवेट लिमिटिड
9/44 इंडस्ट्रियल ऐरिया, कीर्ति नगर, नई देहली-110015 फ़ोन : 585122
सेल्स आफिस खारी बावली, दिल्ली-110006 फ़ोन : 258714

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

• ज्ञानेन्दु

निम्नलिखित शब्दों के जो सही अर्थ हों, उन पर चिह्न लगाइए और इसी पृष्ठ से आरंभ उत्तरों से मिलाइए।

१. **सुषुप्ति**--क. बेहोशी, ख. उदासीनता, ग. गहरी नींद, घ. संन्यास।

२. **रसातल**--क. विचित्र लोक, ख. पतन की सीमा, ग. रसमय वातावरण, घ. स्वादिष्ट पदार्थ।

३. **सन्नद्ध**--क. झुका हुआ, ख. प्रेरित, ग. लगा हुआ, घ. तैयार।

४. **क्षंतव्य**--क. जानने लायक, ख. जाने का स्थान, ग. क्षमा करने योग्य, घ. आदरणीय।

५. **संश्रय**--क. शंका, ख. सुख, ग. अच्छा आश्रय, घ. विवेक।

६. **मयंक**--क. कीचड़, ख. कालिख, ग. चंद्रमा, घ. पाप।

७. **विभीषिका**--क. पराकाष्ठा, ख. विनाश, ग. नरक, घ. भय उत्पन्न करनेवाला दृश्य।

८. **गर्भित**--क. अंकुरित, ख. भरा हुआ, ग. निंदनीय, घ. सिमटा हुआ।

९. **हततेज**--क. धीमा, ख. घायल, ग. कुरूप, घ. जिसका तेज नष्ट हो गया हो।

१०. **संगोष्ठी**--क. सभा, ख. समाज, ग. विचार-विमर्श, घ. बैठक जिसमें किसी विषय पर भली भांति विचार किया जाए।

११. **पृच्छा**--क. पूंछ, ख. प्रश्न, ग. अदम्य इच्छा, घ. ज्ञान।

उत्तर

१. ग. गहरी नींद (भारतीय योगशास्त्र के अनुसार ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए चित्त की एक अवस्था, जिसमें योगी बाह्य चेतना से अपने को मुक्त कर लेता है)। शीतकाल में अनेक जीव **सुषुप्ति** की अवस्था में चले जाते हैं।

२. ख. पतन की सीमा, विनाश का गड्ढा। ढोंगी लोग समाज को **रसातल** में पहुंचाने से नहीं चूकते। (पुराणों के अनुसार सात कल्पित लोकों में से पृथ्वी के नीचे स्थित एक लोक।)

३. घ. तैयार, कसा हुआ (शस्त्र, उपकरण आदि से), उद्यत। दोनों ओर की सेनाएं मुठभेड़ के लिए **सन्नद्ध** हैं।

४. ग. क्षमा करने योग्य, क्षम्य। ऐसा जघन्य अपराध कदापि **क्षंतव्य** नहीं है।

५. ग. अच्छा आश्रय, शरण। **संश्रय** प्राप्त होने से वह निश्चित हो गया है।

६. ग. चंद्रमा। **मयंक** के मुख पर भी दाग है।

110517

७. घ. भय उत्पन्न करनेवाला दृश्य, भयंकर परिस्थिति। युद्ध की **विभीषिका** से किस का दिल नहीं दहलता !

८. ख. भरा हुआ, पूरित। यह वाक्य बड़ा **अर्थ-गर्भित** है। ('गर्भ' शब्द का विशेषण)

९. घ. जिसका तेज नष्ट हो गया हो, कांतिहीन। जो स्वयं **हततेज** है, वह दूसरों में प्राण नहीं फूंक सकता।

१०. घ. बैठक जिसमें किसी विषय पर भली भांति विचार किया जाए। इस **संगोष्ठी** में अनेक विद्वानों ने अपने मत प्रस्तुत किये हैं।

११. ख. प्रश्न (विशेषतया भविष्य-संबंधी)। जग में **पृच्छा** का अंत कभी नहीं होगा।

पारिभाषिक शब्द

पेरूजल = अवलोकन
डेमी आफिशल = अर्ध-सरकारी
अंडर कंसीडरेशन = विचाराधीन
रिमाइंडर = अनुस्मारक, स्मरण-पत्र
प्रोप्राइटी = औचित्य
सैंक्शन = संस्वीकृति, मंजूरी
ऑन कंपेंशनेट ग्राउंड्स = दया के आधार पर
एबारिजिनल = आदिवासी
बैलेंस-शीट = तुलन-पत्र
कंपेन = प्रचार

समस्या-पूर्ति–२०

चलो चलें हम दोनों

प्रथम पुरस्कार–

उन्माद नदी से सीख
थकन का नाम न लें हम दोनों
दुनियावाले जलें
देख क्यों व्यर्थ जलें हम दोनों
पार क्षितिज के नीड़
बनाने चलो चलें हम दोनों

–राजीव माथुर

यू. पी. एप. टी. सी. स्पिनिंग मिल,
काशीपुर (नैनीताल)

द्वितीय पुरस्कार–

चलो चलें हम दोनों मिलकर
संग-संग इन लहरों के
बड़े भाग्य से मुक्ति मिली है
कोलाहल से शहरों के

–अवधबिहारी भारद्वाज

द्वारा–कल्याण पान भंडार, कल्याणजी
का रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

प्रतिक्रियाएं

वर्ण-व्यवस्था की वकालत क्यों ?

दिसंबर अंक में डॉ. रामजी सिंह के लेख 'जातिवाद का सर्प : राजनीति का दूध' में लिखा है—'जाति का आधार अब कर्मणा' के बदले 'जन्मना' है। अतः आज वर्ण-व्यवस्था नहीं, बल्कि जाति-व्यवस्था है, जो हिंदुत्व की सबसे बड़ी दुश्मन है।' आगे वे लिखते हैं—'पांच हजार वर्षों से भारतीय समाज पर ब्राह्मण-क्षत्रिय-धुरी का आधिपत्य रहा। सत्ता, संपत्ति और शिक्षा को उन्होंने अपने अधिकार में रखा और केवल उत्पादक-श्रम शूद्रों के लिए आरक्षित कर दिया। यही कारण है कि समाज संगठन में, सभी वर्गों का समान सहयोग नहीं मिल सका, जिसके दुष्परिणाम स्पष्ट हैं।' यहां ध्यान देने की बात यह है कि 'ब्राह्मण-क्षत्रिय-धुरी का संपत्ति और शिक्षा पर अधिकार और उत्पादकश्रम का शूद्रों के लिए आरक्षण—यह वर्ण-व्यवस्था के ही अनुसार है। इस प्रकार विभाजन के लिए वर्ण-व्यवस्था और जाति-व्यवस्था समान रूप से दोषी हैं। या यह कहना अधिक समीचीन होगा कि ये दोनों एक ही व्यवस्था के दो पहलू हैं। दोनों में कोई सूक्ष्म अंतर खोज भी लिया जाए, तब भी समाज-विभाजन की स्थिति में कोई अंतर नहीं आता। इसलिए वर्ण-व्यवस्था बनाम जाति-व्यवस्था का प्रश्न न उठाकर वर्ण-व्यवस्था या जाति-व्यवस्था बनाम वर्ग-व्यवस्था का प्रश्न उठाया जाता, तो अधिक तर्क-संगत बात होती। पूरे लेख से ऐसा लगता है कि लेखक के मानस पर समाज-संगठन के प्रश्न के स्थान पर हिंदुत्व के भविष्य का प्रश्न हावी रहा है। लेखक का यह कथन सही है कि राजनीति जातिवाद के सर्प का पोषण कर रही है, लेकिन साथ ही यह भी नहीं भूलना चाहिए कि वर्ण-व्यवस्था की वकालत करना भी प्रकारांतर से जाति-व्यवस्था की ही वकालत करना है।

—श्याम शर्मा, दिल्ली

अनुकरणीय व्यक्तित्व

दिसंबर अंक में 'युवराज भारत आ रहे हैं' लेख पढ़कर लगा कि ब्रिटेन में चार्ल्स को, राजवंश की सभी परंपराओं को तोड़कर, सही मायने में एक 'पूरा आदमी' बनाने की कोशिश की गयी है, जो आज की दुनिया में हर तरह की जानकारी रखता हो, अपने लोगों का दुःख-दर्द समझ सकता हो, और वह जन साधारण से कटा-कटा न रहे। ब्रिटेन में राजवंश के प्रतिनिधि को भी जनतंत्री बनाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। मन में सवाल उठता है कि क्या हमारे देश में, जो एक जनतंत्री देश है, ऐसा

कुछ नहीं किया जा सकता—जिससे जन-प्रतिनिधि जनता से दूर न हो पाएं। क्या भावी जन प्रतिनिधियों के लिए हमारे यहां कोई प्रशिक्षण-व्यवस्था नहीं होनी चाहिए?

—अखिलेशकुमार, बुलंदशहर

प्रधानमंत्री को मेरा पैगाम

'कादम्बिनी' का दिसंबर '८० अंक पढ़ा, बहुत रोचक लगा, लेकिन एक लेख ने दिमाग को झंझोड़कर रख दिया। श्री लक्ष्मणप्रसाद मिश्र द्वारा लिखित लेख 'मुझे शिकायत है' वास्तव में शिकायत के लायक हैं। कितने शर्म की बात है कि इटली-जैसा देश हिंदी को इतना बढ़ावा देना चाहता है, और भारत सरकार का उसके साथ यह रवैया? यह शोभा नहीं देता। अत: मैं माननीय प्रधानमंत्री का ध्यान आपकी पत्रिका 'कादम्बिनी' द्वारा, आकृष्ट करना चाहता हूं कि वे हिंदी की विदेशों में बढ़ती हुई इस लोकप्रियता पर विशेष ध्यान दें।

—श्याम अग्रवाल, कलकत्ता

उनका मुंह क्यों बंद

'समय के हस्ताक्षर' में 'पुलिस अफसर को सूअर कहा' पढ़ा! इतना बड़ा सत्य छापकर आपने वास्तव में दरियादिली दिखायी। इसके लिए बधाई! वोटों के लिए राष्ट्रीयता को दांव पर लगानेवाले, सत्ता में घुसे चोरों के मुंह से यह बात क्यों नहीं निकली? इसीलिए कि अगली बार वोट कौन देता? इसीलिए कि देशद्रोहियों के विरुद्ध कभी देशद्रोही ने आवाज उठायी है। लानत है ऐसे 'जयचंदों' पर!

—राजेशकुमार, बीकानेर

'निराला' संपूर्ण उतरा

'कादम्बिनी' के दिसंबर अंक में सांध्य-बेला के सुंदर रंगीन आकर्षक छायाचित्र को निराला की काव्य पंक्तियों के अंकन ने एक संपूर्ण अभिव्यक्ति दे दी। हिंदी-साहित्य के महाप्राण 'निराला' के भावों के सजीव छायांकन के लिए छायाकार श्री तेज नारायण तथा आप दोनों ही बधाई के पात्र हैं। डॉक्टर भगवती

गुरुकुल कांगड़ी

विचार-दीर्घा—१३

पुरस्कार : पचास रुपये

'हमसे हास्य-व्यंग्य क्यों लुप्त होते जा रहे हैं?' विषय पर अपने विचार तीन सौ शब्दों में निम्न पते पर भेजें। विचार के साथ वापसी के लिए लिफाफा संलग्न न करें। अंतिम तिथि ५ फरवरी '८१

पता—संपादक : 'कादम्बिनी,' विचार-दीर्घा—१३
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८–२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

शरण मिश्र का निबंध 'वर्षा विगत शरद रितु आयी' बहुत भाया। ऐसा विशुद्ध साहित्यिक निबंध प्रकाशित करने के लिए आप के प्रति आभार ज्ञापित करने के लोभ का मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूं।

विश्वंभर श्रीवास्तव के 'यादें मेरे गांव की' ने मुझे भी मेरे गांव की याद दिला दी। डॉक्टर हरनाम प्रसाद वाजपेयी का लेख 'जहां पगलों का सही इलाज होता है' अच्छा लगा।

—रामस्वरूप दीक्षित, नौगांव, छतरपुर

मेरे द्वार की सांकल . . .

'कादम्बिनी' का दिसंबर '८० अंक पढ़ा। 'काल-चिंतन' में विभिन्न दृष्टिकोणों से व्यक्त मन की अकुलाहट भी एक सार्थकता की ओर संकेत करती है, जहां मानव मन की सारी समस्याओं का समाधान उपलब्ध है। एक ओर नये वर्ष का अभिनंदन है, तो दूसरी ओर यह आकांक्षा भी कितनी भली लगती है—बस यही चाहिए मुझे कि व्यतीत दोबारा मेरे द्वार की सांकल न खटखटाये।

--ठा. जमनाप्रसाद 'जलेश' दमोह,

इन्हें क्यों भूल गए ?

'क्या आपका जन्म दिसंबर में हुआ' (प्रो. दुबे पद्मेश) पढ़ा। लेकिन दिसंबर माह में जन्म लेनेवाले महत्त्वपूर्ण लोगों के नामों में, सभी प्रकार के स्वरों के मालिक भारत देश के महान फिल्मी पार्श्व-गायक मुहम्मद रफी साहब, जिनका जन्म २४ दिसंबर को हुआ था, का नाम नहीं मिला। लेखक इतनी जल्दी रफी साहब को भूल सकता है; विश्वास नहीं होता!

—संतोष नायक, असाटी, जबलपुर

सच मानिए 'कादम्बिनी' हिंदी जगत की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। दिसंबर अंक में गुलाबदास ब्रोकर की कहानी 'आखिरी झूठ' तथा अल्का बोहरा की कहानी 'वे नन्हें हाथ' बहुत रुचिकर लगीं।

—चेतना श्रीवास्तव, इलाहाबाद

सवाल ईसा की मौत का

सार-संक्षेप में 'ईसा की मृत्यु क्रूस' पर नहीं हुई लेख पढ़ा। ऐसा प्रतीत होता है कि इस में कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है। पहली बात तो यह कि यहूदी (इजराइली) हमारे देश के दक्षिण में सारे संसार की भांति अपने विश्वास, भाषा, संस्कृति और सभ्यतानुसार व्यवहार, पूजा, अर्चना करते हुए पाये जाते हैं, जबकि कश्मीर में ऐसी कोई बात नहीं पायी जाती। यदि कोचीन में साइनगौग है, तो गुम हुए इसराइली कबीले कश्मीर में अपनी किसी विशेष निशानी के बिना ईसा ने कैसे पहचान लिये, जबकि उन्हें और किसी ने आज तक नहीं पहचाना। दूसरे, केवल दो कब्रें ही औरों से अलग क्यों बनीं? कबीले की सारी की सारी कब्रें अलग तरीके की क्यों नहीं पायी जातीं? तीसरे, गुम हुए कबीले को पाकर ईसा ने उसे वह उपदेश क्यों नहीं दिया, जिसे वह पश्चिम में देते? उल्टे यह कि ईशा शादी कर के बाल-बच्चों में इतने रम गये कि अपना प्रयोजन ही भूल गये।

—युक्ति विनोद, अंबाला

नौटंकी खत्म हो जाएगी

दिसंबर अंक में प्रकाशित विजय किशोर मानव का 'क्या नौटंकी खत्म हो जाएगी' लेख एक अछूते विषय पर प्रकाश डालनेवाला रोचक लेख है। मैं नौटंकी से बचपन से ही जुड़ा हुआ हूं। पिछले एक दशक में मैंने बीस से अधिक नौटंकियों में भाग लिया है। मैंने स्वयं पुरुष तथा स्त्री पात्रों का अभिनय किया, उनका संचालन किया है। नौटंकी में शास्त्रीय नियमों की तरह ही अनुशासित गायन का विशेष महत्त्व होता है। इसमें वहरत, चौगोला, लावनी, छंद, सवैया दौड़, दोहा और अन्य तर्जों के प्रयोग से नौटंकी को इतना सशक्त बनाया जा सकता है कि दर्शक अभिभूत होकर पात्रों के दुःख को आत्मसातकर रो पड़े।

मैंने देखा है कि महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में लोकप्रियता की दृष्टि से नौटंकी को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। ग्रामीण जनता के बीच मनोरंजन, शिक्षा, प्रचार व जन-जागृति पहुंचाने के लिएं नौटंकी अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। नौटंकी के विषय में मैं एक बात और कहना चाहूंगा कि स्त्री पात्रों के अभिनय के लिए यदि इस क्षेत्र में महिलाओं ने प्रवेश किया, तो मैं दावे से कह सकता हूं कि नौटंकी की वही दुर्दशा होगी, जो कलकत्ता के थियेटरों की हुई थी।

—देवेंद्र पाठक 'महरूम', झरेला (म. प्र.)

आगामी अंक में

लोकतंत्र : एक खतरनाक मोड़ पर

संसार के अनेक देश तानाशाही की चपेट में आ गये हैं। जिन देशों में लोकतंत्र है, वहां भी उसे भीषण दबावों से गुजरना पड़ रहा है। इस प्रश्न पर देश के राजनेता, बुद्धिजीवी व अन्य लोग क्या सोचते हैं ?

नोबल पुरस्कार हमेशा गलत लोगों को !

एक सनसनीखेज पर्दाफाश, जो अभी तक अज्ञात तथ्यों से परिचित कराता है !

सम्मोहन में तैरती पिछली जिंदगी

कुछ लोग सम्मोहित किये गये और उस अवस्था में उन्होंने उस जिंदगी के बारे में बताया, जो उनके वर्तमान जन्म से पूर्व की थी।

साथ ही कहानियां, कविताएं और सभी नियमित स्तंभ

कादम्बिनी

वर्ष २१ : अंक ३
जनवरी, १९८१

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

वि. आर. कृष्ण अय्यर
जनतंत्र तो है १९
जमनादास अख्तर
पाकिस्तान में हिंदी ३२
अखिलेश कुमार सिंह
रेगिस्तान में पेट्रोल के पेड़ ४५
चार्ल्स सोबराज
जेल में मादक द्रव्य ५४
डॉ. इंद्रनील मिश्र
महायुद्ध की कगार पर खड़े हैं ५५
राजन राहू
चीनी कवि को पत्तियां खानी पड़ीं ... ६२
परमपत मातादीन पत्रकार
महासागर में तैरती सुंदर धरती ६८
एन. आर. श्याम
साईं बाबा को चुनौती ८०
स्वामी वाहिद काजमी
अद्भुत प्रेम-प्यासी ८६
संजय गोठवाल
सावधान, नशा वंश को ९२
अंजनीकुमार
या अली बजरंग बली ९८
कैलाश भारद्वाज
ढाई प्रतिशत का गणतंत्र १०१
जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
वहां फालतू आदमी नहीं मिलते . . . ११७
प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'
आपका जन्म जनवरी में १२१
डॉ. ब्रजराज किशोर
चाय और नारी समगोत्री हैं १२८
सतीशकुमार जैन
युद्ध और वैराग्य १३४
डॉ. महेश नारायण
जेल में राजनीतिक भूचाल १४६
आचार्य विनय मोहन शर्मा
मैंने भी प्रेत देखे हैं ! १५३
डॉ. प्रभात त्यागी
सम्राट जो नमक बेचता था १५६

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य---६, प्रतिक्रियाएं---८, काल-चिंतन---१४, समय के हस्ताक्षर---१६, आस्था के आयाम---३६, चुटकियां---६०, विचार-दीर्घा---६५, हंसिकाएं (डॉ. सरोजनी प्रीतम)---७९, सही कहानियां---८४, बुद्धि-विलास---९१, विधि-विधान---९४, इनके भी बयां हैं जुदा-जुदा---१००, गोष्ठी---११४, ज्ञान-गंगा---१३९, नयी कृतियां---१६०, सीपिकाएं---१७१, तनाव से मुक्ति---१७३, घरेलू उपचार---१७५, प्रवेश---१८०।

मुखपृष्ठ : फार्लसिंह गिरोटा

विशेष परिचर्चा

भीष्म नारायण सिंह, बिरजू महाराज, गोपालकृष्ण कौल
संस्कृति को नष्ट करती है राजनीति... २६

जगदम्बीप्रसाद यादव
गंगा जो शोक बन जाती है १६७

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

कर्त्तारसिंह दुग्गल/हम जिस ३८
सेवकराम ओखाड़ू
सफर बस का ५०
अब्दुल नियाजी/किताब ७४
अहमद नदीम कासमी
औरत साहिबा १०६
आर. वीलिनाथन
मेरा क्या अपराध है १४०

कविताएं

उपेन्द्रकुमार/शहर और ऊंचाइयां... ३५
रामनिवास जाजू /चट्टानों में फूल.... ६६
एस. एल. मधु /नींद आ रही १७६
राजकुमारी रश्मि/लपटों का..... १७७
विश्वंभर अरुण/सूरज १७७

सार-संक्षेप

अलविन टॉफलर/तीसरी लहर... १८२

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष
एस. एल. खुराना
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

संपादकीय सहयोगी

संयुक्त-संपादक : शीला झुनझुनवाला

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल, उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवतीप्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, विजयश्री, प्रूफ-रीडर : स्वामी शरण
चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
पता : संपादक—'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१

काल-चिंतन

--एक मानता है, दूसरा नहीं, तीसरे को सभी की मान्यताएं अस्वीकार्य हैं, इसके बावजूद बार-बार प्रश्न उठाये जाते हैं और सिद्धांतों की स्थिरता का ढोल पीटा जाता है।

--क्यों होता है यह ?

--कौन करता है ऐसा ?

◆

--शहर और भीड़ . . . आदमी और अस्तित्व-बोध ! प्रगति और विकसित होते हुए आयाम तोड़-फोड़ भी तो करते हैं !

--वही सब नहीं है जो बाहरी टूटन है, भीतर की दरार शायद अधिक प्रबल और गहन होती है !

--वह दरार व्यक्ति की सूक्ष्मतम ग्रंथियों के साथ समाविष्ट होकर उसकी मानसिक संवेदनाओं पर प्रहार करती है !

--मनुष्य की विडंबना यही है---वह मजबूत होते हुए भी कहीं बहुत कमजोर है। मस्तिष्क का हलका-सा तंतु हिला नहीं कि जैसे भूचाल आ गया।

--मौसम कभी चोरी से नहीं आता, वह संकेत देता है और सावधान करता है वायुमंडल को, लेकिन मौसमों के बीच अचानक उलझनें कैसे आ जाती हैं ?

--वहां मौसम क्यों चुप रहता है ! क्यों आते हैं आंधी-तूफान, फट पड़ता है बादल और जलने लगती है धरती ! सब कुछ ऐसे होता है, जैसे बैठा हुआ सही आदमी एकदम बागी बन जाए !

--मौसम की संवेदना आदमी की संवेदना से भिन्न नहीं है; संभवतः इसीलिए मनुष्य का सबसे पहला आकर्षण है प्रकृति !

--प्रकृति निष्क्रिय नहीं है। उसकी कार्य-पद्धति वायुवी भटकन नहीं है।

--लगता है, एक संविधान है उसका,और हर कीमत पर वह उसकी रक्षा करती चलती है।

--संविधान हम तोड़ते हैं ! हम यानी प्रकृति-प्रदत्त मनुष्य ! जब वह वहशी हो जाता है तो सारे संकेत और प्रावधान रद्दी कागज से अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं होते।

--सुविधाओं के योग उन्हीं अक्षरों को अर्थ दे देते हैं।

--यह एक विरोधाभास की स्थिति है।

◆

--विपरीत स्थितियां और विसंगतियां न्याय की तुला नहीं बन सकतीं। तर्क तभी काम देता है, जब समता-योग का आश्वासन मिलता है।

--एक दिन अचानक एक घटना हो गयी : संशय का सांप समाधान की अरगनी पर चढ़ गया !

--अथक खोजबीन, परंतु सब व्यर्थ !

--अरगनी शरीर-रक्षक अवयवों की जीवनी शक्ति है।

——पूरे दिन वह आवृत्त और रात्रि के अंधकार में नग्न !

——संशय का सांप कैसे खोजा जाए। प्रकाश में अरगनी को निरावृत्त करना दुस्साहस है और रात्रि की प्रतीक्षा मृत्यु के गिरजाघर की घंटियां हैं।

——समाधान कैसे होगा !

——अरगनी पर जो कुछ टंगा है समान नहीं है——अर्थ के दायरे, चेतना के सोच, रुचि-अभिरुचि के आयाम और संस्कारों की परिधि उसे छायावृत्त किये है !

——परिणाम, इन वृत्तियों की प्रतिक्रिया ही हो सकता है।

◆

——राजधर्मा बुद्ध संपन्न व्यक्ति थे, अचानक वे गौतम बन गये और सत्य की खोज में निकल पड़े। एक सत्य प्रस्थापित हुआ, परंतु . . . ! समय के हाथों वह सिद्धांत नहीं बन सका। अनेक सिद्धांतों ने उसी अरगनी पर अपने सांप छोड़ दिये।

——एक ही अर्थ में अनेक अर्थ खोजे जाने लगे !

——जिस सार्थकता के लिए राज-वैभव का एक व्यक्ति ने त्याग किया और अपने शरीर को तिल-तिलकर नष्ट कर दिया, उसे ही अपनी समूची यात्रांत में अपने सहयोगियों को सावधान करना पड़ा कि इस अविकारी मार्ग में कोई व्यवधान न आने पाये। यह उपलब्धि अनंत श्रम का प्रतिफल है !

——समय का पहरुआ आंधी की तरह अपनी लाठी घुमाता है !

——उसे कोई नहीं रोक सका !

◆

——सामर्थ्य असीम नहीं है, लेकिन जब तक वह प्रबल होता है सब पर हावी बना रहता है।

——वही सिद्धांतों को तार्किक अर्थ देता है।

——उन अर्थों को सामान्यतया स्वीकारा जाता है क्योंकि स्वीकारनेवाले समताहीन हैं !

——जिस दिन समर्थ व्यक्ति कमजोर पड़ा, उसी दिन सारा चुप मुखर हो उठता है। वह शोर और आंदोलनों में बदल जाता है।

——यहीं से फिर एक-दूसरा सिद्धांत प्रस्थापित होता है !

——नियति की यह शृंखला है और पृथ्वी की तरह निरंतर गतिशील है।

◆

——इसलिए सिद्धांतों को पीटना व्यर्थ है। वे तो चमड़े में आवृत ढोल में कैद हैं; जब जैसे हाथ उस चमड़े पर पड़ेंगे, वैसा ही तो स्वर निकलेगा।

——हर स्वर एक सिद्धांत होगा।

——हर पल परिवर्तन का संकेत है !

——परंपराएं भी इसी आधार पर बनती और बिगड़ती हैं !

——इनका न कोई हल है, न निराकरण। संशय का सांप जब मन से नहीं हटता तो समाधान की अरगनी पर वह चढ़ेगा ही !

——समाधान जब स्वयं विष पीड़ित हो गया, कौन उसे पी सकता है : बार-बार शिव पैदा नहीं होते, सांपों की संख्या निरंतर बढ़ती जाएगी और हर सिद्धांत उसका निवाला बनेगा।

राजेन्द्र अवस्थी

समय के हस्ताक्षर

आंख-फोड़ 'गंगा-जल' अभियान

बिहार के भागलपुर जिले की पुलिस ने अपने 'गंगाजल-अभियान' के अंतर्गत ३३ युवकों की आंखें तकुवे से फोड़कर, उनमें तेजाब भर देने का जो जघन्य अपराध किया है, उसके आगे दुनिया में अपराधियों के साथ किये जानेवाले सारे बर्बर व्यवहार फीके पड़ गये हैं। समाचारपत्रों में इन घटनाओं पर विस्तार से लिखा जा चुका है। यद्यपि अंधे बना दिये गये बंदियों का कहना है कि पुलिसवालों ने उनकी आंखें फोड़ी हैं, बिहार के मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्र के हाल के वक्तव्यों से लगता है कि वे इस अमानुषिक अत्याचार के लिए पुलिस की बजाय किन्हीं और को जिम्मेदार मानते हैं। यों डॉ. मिश्र मानते हैं कि गत वर्ष अक्तूबर १९७८ से विचाराधीन बंदियों की आंखें फोड़ी जा रही हैं।

हमने राजधानी आये ऐसे ही दो हतभाग्य बंदियों---बलजीत और सालिगराम साह से मुलाकात की है। उनकी आपबीती रोंगटे तो खड़े कर ही देती है, साथ ही उस व्यवस्था के प्रति भी आक्रोश जगाती है, जिसमें अधिकार-संपन्न व्यक्तियों को इस तरह की छूट है। भारतीय पुलिस की बर्बरता की पहले भी और मिसालें मिल चुकी हैं। केरल में राजन-हत्याकांड, म. प्र. में गर्भवती हसीना की मौत, तमिलनाडु, आंध्र, बंगाल और बिहार में मुठभेड़ के नाम पर किसी को भी नक्सलपंथी कहकर मार डालना और डाकुओं का सरेआम कत्ल, पुलिस के निर्मम व्यवहार के ही ज्वलंत प्रमाण हैं। लगता है कि क्रूरता का जो पाठ भारतीय पुलिस ने ब्रिटिश-जमाने में सीखा है, आजादी के बाद उसे भुलाना तो दूर, उसकी कारगरता पर उसका विश्वास और बढ़ा है।

सबसे बड़ी विडंबना तो यह है कि एक ओर प्रधानमंत्री ने 'गंगाजल-अभियान' की कड़े शब्दों में भर्तसना की है, तो दूसरी ओर, कुछ लोगों ने कहा है कि आंख फोड़ने के इस 'गंगा-जल-अभियान' को सामाजिक स्वीकृति मिली हुई है। पुलिसकर्मियों का 'सामूहिक आकस्मिक अवकाश' और 'भागलपुर बंद' का नाटक इसी 'सामाजिक स्वीकृति' की पुष्टि के लिए हुआ है। क्या हम सब एक बार फिर मध्ययुगीन सामंती बर्बरता के दौर में लौट

रहे हैं ? क्या आज की तमाम सामाजिक और न्याय-व्यवस्थाएं इतनी प्रभावहीन हो चुकी हैं कि पुलिस को अपराध खत्म करने के लिए ऐसे आतंकवादी बर्बर उपायों का सहारा लेना पड़ रहा है ?

हमारा विश्वास है कि पुलिस-बर्बरता की मात्र भर्त्सना कर देने, कुछ दोषी सिपाहियों को दंड दे देने और अंधे बना दिये गये लोगों की हालत पर आंसू बहाने से यह समस्या खत्म नहीं होगी ।

समाज में अपराधियों को प्रश्रय देनेवालों में स्वयं पुलिस के अलावा वे लोग हैं, जो अपराधियों के आतंक की बैसाखियां लगाकर सत्ता की कुरसी तक पहुंचना चाहते हैं । उन की मिलीभगत से ही अपराधी पनपते हैं और जब बात हद से बढ़ जाती है, तब लोक-दिखावे के लिए पुलिस 'मुठभेड़ों' और 'गंगाजल-अभियान'-जैसे तरीकों से छोटे-बड़े अपराधियों को, जिनके अपराध की न्यायालय में पुष्टि भी नहीं हो पाती, मौत के घाट उतार देती है ।

भागलपुर की घटनाओं ने एक बार फिर 'कानून की रक्षक' पुलिस को अपराधियों के कटघरे में खड़ाकर दिया है । देखना है कि भारत सरकार और उच्चतम न्यायालय आगे क्या करते हैं ।

सरकारी तंत्र बनाम कैदी

नयी दिल्ली के निजामुद्दीन स्टेशन का प्लेटफार्म नं. ३, जिसकी एक बेंच पर लेटा है एक कृशकाय बीमार व्यक्ति, जो रह-रहकर अचेत हो जाता है । वह भाग न जाए, इसके लिए पहरे पर खड़े हैं छह सशस्त्र पुलिस सिपाही, जो बीमार बंदी की तरह ही परेशान हैं । बंदी एंबुलेंस में ही ले जाया जा सकता है, और अस्पताल उस बंदी के लिए एंबुलेंस भेजने से इनकार कर चुका है ।

अंततः प्लेटफार्म पर खड़ा एक व्यक्ति अपने किसी पत्रकार मित्र को फोन पर सारी स्थिति से अवगत कराता है । पत्रकार दिल्ली के पुलिस आयुक्त को सूचित करता है, और तब घंटों की प्रतीक्षा के बाद आती है एंबुलेंस ! पर किस्सा यहीं नहीं खत्म होता । बंदी आंध्र के नक्सली नेता नागभूषण पटनायक को आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में इलाज के लिए भरती किया जाता है, पर कुछ समय बाद आंध्र सरकार कहती है कि वह अपने बीमार बंदी का खर्च नहीं उठा सकती, लिहाजा उसे वापस भेज दिया जाए । ताजा समाचार के अनुसार नागभूषण पटनायक आंध्र लौट गये हैं ।

आंध्र सरकार का यह रवैया, तमिलनाड़ में नक्सली-मठभेड़ों के नाम पर मौतें और बिहार का 'गंगाजल अभियान'--राजनीतिक मतभेदों के परे, यही सोचने के लिए मजबूर करता है कि सरकारी तंत्र अपने बंदियों के प्रति, चाहे वे अपराधी हों या राजनीतिक, हिकारतभरी बदले की भावना से ग्रस्त है।

यहां गुप्त दस्तावेज कितने गुप्त रह सकेंगे!

नयी दिल्ली के लोधी होटल के पास बनी एक विशालकाय बहुमंजली इमारत, जो जानकार लोगों में आतंक पैदा करती है। आतंक इसलिए कि यह समूची इमारत भारत सरकार के विदेशों में गुप्तचरी करनेवाले विभाग 'रिसर्च एंड एनेलेसिस विंग' (रॉ) का मुख्यालय है। आपातकाल के बाद इस विभाग पर गाज गिरी, क्योंकि नये शासकों का खयाल था कि आपातकाल में 'रॉ' ने विदेशों में गुप्तचरी छोड़कर देश में ही गुप्तचरी की थी। तब से 'रॉ' को जैसे ग्रहण लग गया है। पांव तो उसके जनता-सरकार काट गयी थी, रही-सही ताकत 'रॉ' में व्याप्त आंतरिक फूट खत्म किये दे रही है।

आंतरिक फूट का कारण है—पदोन्नति और भरती की नीति को लेकर अधिकारियों और कर्मचारियों में उत्पन्न तनाव, जो 'घेराव' और 'पैन डाउन स्ट्राइक' के रूप में विभाग की सारी गतिविधियां ठप्प कर गया। ताजे समाचारों के अनुसार 'रॉ' में आयोजित प्रदर्शन प्रधानमंत्री की अपील पर खत्म हो चुका है, लेकिन उससे जो भी क्षति होनी थी, वह तो हो चुकी।

१९६८ में इंटेलिजेंस ब्यूरो को विभाजित कर 'रॉ' का गठन किया गया था। एक समय इस विभाग का काफी दबदबा था, पर वर्तमान संघर्ष ने उसकी सारी प्रतिष्ठा धूल में मिला दी है।

कहीं 'रॉ' स्वयं विदेशी गुप्तचरों की तोड़-फोड़ का तो शिकार नहीं है? क्योंकि अधिकारियों के अनुसार संघर्ष पर आमादा कर्मचारियों ने गुप्तचरी का काम करनेवाले कुछ अधिकारियों व उनके गोपनीय कार्य-क्षेत्र तक को उजागर कर दिया है। एक अधिकारी ने पूरे कांड में 'बाहरी ताकत' का हाथ बताया भी है। ऐसी स्थिति में 'रॉ' के गुप्त दस्तावेज और कार्यकलाप कितने गुप्त रह सकेंगे, विचारणीय है। पुलिस, सशस्त्र पुलिस के बाद गुप्तचर सेवाओं में प्रदर्शन एवं हड़ताल की बीमारी राष्ट्र के लिए घातक होगी। सरकार को कड़े से कड़ा कदम उठाने में कोई हिचकिचाहट नहीं करनी चाहिए। ●

जनतंत्र तो है पर जनता से टूटा हुआ

वि. आर. कृष्ण अय्यर

> आज यह आमतौर पर विश्वास किया जाता है कि एक राजनीतिक व्यक्ति आसन पर बने रहने के लिए कुछ भी कर सकता है, यहां तक कि वह देशभक्त भी बन सकता है।
>
> —विलियम रेडाल्फ हर्स्ट

आज रोटी और आजादी की राजनीति नैतिकता-शून्य और प्रवंचनापूर्ण महत्त्वाकांक्षी योजनामात्र सिद्ध हो रही है, फलतः न्याय और स्वतंत्रता का महत्त्व भी एक तीखेपन के साथ उभरकर सामने आ रहा है। केंद्र में या राज्य में प्रत्येक राजनीतिक दल ने, वह किसी भी छाप का क्यों न हो, सत्तारूढ़ होने पर जनता के साथ विश्वासघात की वही भूमिका अपनायी है, जो जूडास ने ईसा-मसीह का विश्वस्त साथी होने के बावजूद उनसे निभायी थी।

भारतीय राजनीति का नया खतरा यह है कि प्रत्येक राजनीतिक दल ने जनता का ही साथ छोड़ दिया है। आज की सर्वव्यापी दलीय नैतिकता यह है कि

अपने प्रखर चिंतन एवं स्पष्टवादिता के लिए प्रख्यात जस्टिस वि. आर. कृष्ण अय्यर ने यह लेख 'कादम्बिनी' के लिए विशेष रूप से लिखा है। इसमें उन्होंने आज की राजनीति की घातक प्रवृत्तियों की चर्चा करते हुए भारतीय जनतंत्र पर मंडराते खतरों के प्रति जनमानस को सचेत किया है। —संपादक

विरोध में रहो, तो रोटी और आजादी की बात करो, और सत्ता में पहुंचो तो रोटी से मुक्ति की बात करो।

आज सारी दुनिया, विशेषकर तीसरी दुनिया के देशों में स्वतंत्र-चिंतन खत्म होता जा रहा है। इसका कारण केवल विभिन्न प्रकार के सरकारी दबाव ही नहीं, बल्कि बची हुई सामंती प्रवृत्तियां भी हैं। ऐसे समय में नैतिकता और स्वतंत्र चिंतन का ढोंग न्यस्त स्वार्थों से गहरे जुड़े सत्ताहीन व्यक्ति ही कर रहे हैं। भारत में आज वैचारिक मुक्ति और बंधुआ मजदूरों की मुक्ति की लड़ाई सरकार-समर्थक या सरकार-विरोधी लड़ाई के रूप में नहीं लड़ी जानी है, क्योंकि अनेक राजनीतिक-दलों ने, चाहे वे क्रांतिकारी नामधारी दल क्यों न रहे हों, परोक्ष या अपरोक्ष रूप से एक-सी प्रवृत्ति का परिचय दिया है—सत्तारूढ़ होने की अवधि में एक ओर लाखों भोलेभाले नागरिकों के मानवीय अधिकारों की घोर उपेक्षा, तो दूसरी ओर, अपने हितों की पूर्ति के लिए सत्ता का भरपूर उपयोग!

'किस्सा कुरसी का' एक बीमारी

'किस्सा कुरसी का' रोग के लक्षण प्रत्येक दल में प्रकट हो गये हैं। भूखी जनता अप्रत्यक्ष रूप से समाजवादी समाधानों की मांग कर रही है। संसद या विधान सभाओं के दोनों पक्षों के तौर-तरीकों की बजाय निर्भीक विचारों और कार्यों द्वारा वह समाजवाद चाहती है। उसकी यह मांग भारत में व्याप्त असीमित असंतोष की ही मांग है। जूडास और बाराबास को, वे समाज में जहां भी हों, क्रमशः अलग-थलग किया जाए और सूली पर चढ़ाया जाए तथा गांधी और ईसा मसीह की पुनः प्राण-प्रतिष्ठा की जाए, चाहे इसके लिए कितनी ही विपदाएं क्यों न झेलनी पड़ें।

स्वतंत्रता खतरे में

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता खतरे में है, क्योंकि राजनीति एक धंधा बनकर रह गयी है। उससे आम जनता को खून, पसीने और आंसुओं के सिवाय और कोई उम्मीद नजर नहीं आती। मैं पाखंडी हो सकता हूं, पर बर्नार्ड शॉ ने कहा है कि 'हर महान सत्य पाखंड-जैसा ही शुरू होता है।'

यदि हम भारत और इस मानव-ग्रह—पृथ्वी—से प्यार करते हैं, तो हमें जोर देकर यह कहना होगा कि समाजवादी विचारधारा के समर्थन की आड़ में न सरकार, न विपक्षी दल बड़े-बड़े वायदे कर पाएंगे। हमें इस बात का भी आग्रह करना पड़ेगा कि चारों ओर व्याप्त घोर गरीबी को प्रगतिशील विचारों पर आधारित एक सुव्यवस्थित परिवर्तन द्वारा दूर किया जाएगा। इस देश ने सामाजिक न्याय को सर्वोपरि कानून माना है, और यही सामाजिक न्याय विधेयकों द्वारा बनाये जानेवाले छोटे-छोटे कानूनों का मूल स्रोत भी है। गरीबी के निष्कासन

के लिए बनाया जानेवाला परिवर्तनकारी कार्यक्रम भी इसी सामाजिक न्याय से अनुप्राणित होगा।

भारतीय जनता के संविधान की नींव सामाजिक न्याय है। न्याय—कानूनी न्याय ही—अभी हाल तक मेरा व्यवसाय था। पर जब तक समाज से अन्याय निष्कासित नहीं किया जाता और शुद्ध जनतंत्र कायम नहीं होता, कानून और कानूनविद, अदालतें और उनकी आचार-संहिताएं, बरकरार नहीं रह सकतीं, उसी तरह जैसे ब्रिटिश साम्राज्य, जिसमें कभी सूर्य अस्त नहीं होता था, बरकरार नहीं रहा। महान मानवतावादी रॉबर्ट इंगेरसोल ने भविष्यवाणी की थी कि 'यदि जनता को न्याय नहीं मिला तो समाज का पतन अवश्यंभावी है।'

स्वतंत्रता और न्याय के बिना, अन्य किसी आधार पर कभी कोई भी सरकार ज्यादा समय तक नहीं टिक सकेगी। समय की धारा के दोनों किनारों पर पड़ी दरारें, महानगरों के ध्वंसावशेष, और नष्ट हो चुके सारे राष्ट्र, सभी यही चेतावनी देते हैं कि अन्याय की आधारशिला पर खड़ा कोई भी राष्ट्र ज्यादा नहीं टिक सकता।

जब तक समाज से अन्याय निष्कासित नहीं किया जाता और शुद्ध जनतंत्र कायम नहीं होता, कानून और कानूनविद, अदालतें और उनकी आचार-संहिताएं, बरकरार नहीं रह सकतीं

जस्टिस अय्यर

धूल-धूसरित मिस्र, संगमरमर के वीरान खंडहरों में छिपा एथेंस, और अपने समय के शक्तिशाली रोम का टूट-टूटकर गिरा हरेक पत्थर चीख-चीखकर कह रहा है कि अन्याय पर आधारित कोई भी राष्ट्र स्थायी रूप से खड़ा नहीं रह सकता।

विरोधाभासों से भरी दुनिया

डॉ. अम्बेडकर ने संविधान सभा के आखिरी दिनों में दृढ़ता के साथ कहा था—'हमें अपने यहां राजनैतिक जनतंत्र की तरह ही, सामाजिक जनतंत्र बनाना होगा। यदि हम सामाजिक जनतंत्र को राजनीतिक जनतंत्र का आधार नहीं बनाएंगे

110517

तो हमारा राजनीतिक जनतंत्र खड़ा नहीं रह सकेगा। हमें ये दो तथ्य जानने चाहिएं कि हमारे भारतीय समाज में से दो चीजें पूरी तरह गायब हैं। पहली चीज है— समानता। सामाजिक धरातल पर, हमारा समाज क्रमिक असमानता के सिद्धांतों पर आधारित है। इसका अर्थ है कुछ लोगों को उच्च स्तर पर रखना, तो दूसरों को निम्न स्तर पर। आर्थिक धरातल पर हमारा समाज एक ऐसा समाज है, जिसमें कुछ लोगों के पास अपार धन है, तो बहुत से लोग घोर गरीबी के शिकार हैं। २६ जनवरी, १९५० को हम विरोधाभासों की दुनिया में प्रवेश करने जा रहे हैं क्योंकि, राजनीति के क्षेत्र में हमें समानता प्राप्त होगी, जबकि सामाजिक व आर्थिक जीवन में असमानता। राजनीतिक क्षेत्र में हम इस सिद्धांत को मान्यता देने जा रहे हैं कि एक व्यक्ति एक वोट और एक वोट बराबर एक मूल्य, जबकि सामाजिक और आर्थिक जिंदगी में, अपने सामाजिक और आर्थिक ढांचे के कारण हम प्रत्येक व्यक्ति के समान मूल्यों के सिद्धांत को नकारते रहेंगे। हमें इस विरोधाभास को जितनी जल्दी संभव हो सके, दूर करना चाहिए। अन्यथा, जो असमानता के शिकार होंगे, वे इस संविधान सभा द्वारा परिश्रम से तैयार किये गये हमारे इस राजनीतिक जनतंत्र के ढांचे के परखचे उड़ा देंगे।'

बहाने तो कई बनाये जा सकते हैं, पर तथ्य यह है कि राष्ट्र द्वारा प्रत्येक दल या दलों के गठजोड़ों को शासन का अवसर देने के बावजूद लाखों लोग आज भी शोषण और अभावोंभरी आहत जिंदगी गुजार रहे हैं। क्या आम जनता की प्राथमिक प्रतिनिधि संसद अपनी सर्वोच्चता के नशे में डूबी हुई है? क्या वह अपना लक्ष्य भूल गयी है? संसद के छोटी-बड़ी अवधि के सत्रों को देखकर यही लगता है कि वहां केवल सवार बदले हैं, पर मंजिल से दूरी ज्यों की त्यों बनी हुई है। क्या हम सदैव संघर्ष के लिए आमादा एक संस्कृति-विरोधी अथवा शत्रुतापूर्ण प्रणाली में, जिसे संवैधानिक रूप दे दिया गया है, नहीं डूब गये हैं। इस संस्कृति-विरोधी प्रणाली में अदालतें, विधान-मंडल, कार्यपालिका संयुक्त प्रयासों द्वारा जनता की स्थिति सुधारने के अपने लक्ष्य को भूलकर, एक दूसरे का विरोध करने, परस्पर एक-दूसरे को नीचा दिखाने और संदेह करने में जुटी हुई हैं।

अन्याय फैल रहा है

अन्याय फैलता जा रहा है, विकास धूमिल है, गांवों की हालत बदतर होती जा रही है, अंत्योदय और सर्वोदय का नामोनिशान नहीं है। एक दिन भारतीय जनता (जिसे 'पब्लिक अनलिमिटेड' कहा जाना चाहिए) भारतीय राजनेताओं को (जिन्हें 'प्राइवेट लिमिटेड' कहा जाना चाहिए) राजनीतिक धोखाधड़ी कहेगी और उन्हें उठा फेंकेगी। दरअसल, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय ही

हमारा उद्देश्य है।

हमारे जनतंत्र के लिए बुनियादी शर्त यह है कि सत्ता जनता के हाथों में होनी चाहिए और उसके राजनीतिक प्रतिनिधियों को प्रत्येक भारतीय की मानवीय स्थिति में सुधार के लिए तत्काल प्रभावशाली तथा सार्थक भूमिका निभानी चाहिए। इस सदी के पहले आधे हिस्से ने तो देश को अंगरेज मालिकों से मुक्ति दिलायी और अब इस सदी के दूसरे आधे हिस्से को भारत के भारतीय मालिकों से मुक्ति दिलानी होगी और यदि संसदीय प्रणाली को केवल हुल्लड़बाजी और जनता के खिलाफ षड़यंत्र के रूप में ही कार्य करना है, तब हमें वैधानिक प्रणाली की मौजूदा खामियों को दूर करना होगा।

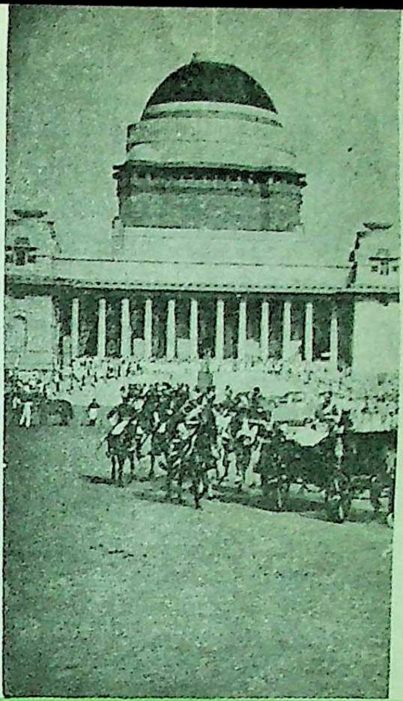

जनतंत्र की शान

संसदीय पद्धति में सुधार जरूरी

इंगलैंड-जैसे छोटे, सघन और संगठित आवादीवाले द्वीप के लिए शासन की 'वेस्टमिनिस्टर पद्धति' सही हो सकती है, लेकिन जहां पर व्यापक विविधताएं हों, सांस्कृतिक, धार्मिक विभिन्नताएं हों, सामाजिक और आर्थिक असमानताएं हों, और अशिक्षा तथा पिछड़ापन हो, वहां वह कारगर नहीं हो सकती। आज सन १९८१ में भारत की पहली आवश्यकता संसदीय पद्धति में सुधार करने की है, जिससे हमारा जनतंत्र केवल राजनीतिक जनतंत्र ही न बना रहे बल्कि संवेदनशील, समाजवादी, आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भी 'एक संवेदनशील समाजवादी जनतंत्र' बन सके। आज संसद में होनेवाली उत्तेजनाभरी तमाम कार्यवाही, हमारी सामाजिक और आर्थिक बीमारियों को दूर करने के लिए मुश्किल से ही कोई लाभप्रद कानूनी उपाय खोज पायी है। विधि-निर्माण और उससे पूर्व के स्तर पर कानून में होनेवाला विलंब, अदालतों में होनेवाले विलंब से ज्यादा भयानक है। जनता को भाषणबाजी, आपसी 'तू-तू मैं-मैं', अराजकता और दलीय-राजनीति की अफीम पिलाकर विधायकों की भीषण असफलताओं से अनभिज्ञ रखा जाता है। जबकि, उनका काम है लाखों लोगों की माली हालत सुधारने के लिए नीति

और कानून बनाना तथा उनके पालन पर निगरानी रखना।

मतदाता का स्वप्न

अधिकांश जनता मतदान करने की औपचारिकता को इस उम्मीद के साथ निभाने गयी है कि सरकार उनका भला करेगी, लेकिन बाद में उसे पता चला कि वह बेवकूफ बना दी गयी है। भारत की कोटि-कोटि जनता के दुःख-दर्दों को सुनने के लिए दलीय पद्धति, केंद्र-शासन और संसदीय प्रणाली में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है, ताकि वे संविधान-प्रदत्त सामाजिक न्याय को जीवंत सत्य बनाने के लिए, आज जैसे नकारात्मक रुख की बजाय, रचनात्मक रूप से कार्य कर सकें। संविधान-प्रदत्त सामाजिक न्याय चुनावों में दिखावे की चीज या घोषणा-पत्र का एक झूठा मुद्दा बनकर न रह जाए। ब्रिटिश व अमरीकी दलीय राजनीति की जिन बातों के लिए आलोचना की जाती है, हमारी दलीय पद्धति में भी मौजूद हैं। मुझे यह कहते हुए खेद है कि शायद ही हमारा कोई राजनीतिक दल, चाहे वह दक्षिणपंथी हो या वामपंथी या मध्यपंथी, यह दावा कर सकता है कि वह इस आलोचना का अपवाद है।

हलीफेक्स के मारक्वेस जॉर्ज सवीले ने एक बार कहा था—

'सबसे अच्छा राजनीतिक दल और कुछ नहीं, शेष राष्ट्र के खिलाफ एक षडयंत्र-जैसा ही होता है।'

डिजराइली का कथन आज भी लागू होता है—

'भाड़ में जाए सिद्धांत! बस अपने दल के साथ बंधे रहिए।'

अमरीका के महान दार्शनिक राल्फ वाल्डो इमरसन ने एक बार कहा था—

'किसी भी राजनीतिक दल (अमरीका की रेडीकल पार्टी या कंजरवेटिव पार्टी) से, जब भी वह सत्ता में रहा है, दुनिया को कोई भी फायदा नहीं हुआ है, सिवाय विज्ञान, कला या मानविकी-ज्ञान के, जबकि समूचे राष्ट्र के साधन उसके अनुकूल थे।'

एक नया खतरा

यह न सोचिए कि मैं राष्ट्रपति शासन-प्रणाली का समर्थक हूं। नहीं, मैं इसका समर्थक नहीं हूं, क्योंकि राष्ट्रपति शासन-प्रणाली में और भी अधिक खतरा है। यदि हम संसदीय प्रणाली को जनतंत्र के लिए उपयोगी माध्यम न बना सके, तो हमारे अपढ़ राजनीतिक लोग हमें उपरोक्त खतरे में खींच ले जाएंगे। अच्छी सरकार के पोषण और संसद में सक्रियता लाने के लिए राजनीतिक दलों से पृथक शक्तिशाली तत्वों का होना जरूरी है।

दरअसल, राजनीति तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण चीज है, लेकिन राजनेताओं ने राजनीति का और अपना अधःपतन कर लिया है। जॉर्ज वाशिंगटन ने एक बार चेतावनी दी थी—

'तथाकथित देशभक्ति का छद्‍म करनेवालों से सावधान रहो!'

एल. एल. मेनकेन का कहना है कि 'एक अच्छा राजनीतिक एक कुशल सेंधमार-जैसा ही अकल्पनीय रूप से चुप रहता है !' और ऐसा डीन स्विफ्ट के जमाने में भी होता था। उसके जमाने में राजनेता बदनाम और गिरे हुए होते थे। उसका कहना था—

'राजनीति, जैसा कि इस शब्द का अर्थ सामान्यत: समझा जाता है, भ्रष्टाचार के अलावा और कुछ नहीं है।'

लेकिन अधिकांश राजनीतिज्ञों के भ्रष्टाचार को कौन झुठला सकता है। इस मामले में नैतिकता या समाजवाद की बढ़-चढ़कर बातें करनेवालों पर ज्यादा शक होता है। हम राजनीति के प्रति तटस्थ रहने का खतरा नहीं उठा सकते। जैसा कि जॉर्ज ओरवेल ने संकेत दिया था—

'हमारे युग में राजनीति से अलग रहने'-जैसी कोई चीज नहीं है। सभी मसले राजनीतिक मसले हैं और राजनीति स्वयं झूठ, बहानेबाजी, बेवकूफी, नफरत और दिमागी बीमारी का पुलिंदा मात्र है।'

संसदीय प्रणाली पर अविश्वास जनतंत्र, योजनाबद्ध विकास और कानून-सम्मत शासन के लिए सबसे गंभीर खतरा है। संसदीय प्रणाली की गिरती साख के लिए राजनीतिक दल और राजनीतिज्ञ ही जिम्मेदार हैं, जो अल्प-शिक्षित और कम चालाक होने के साथ-साथ अत्यंत दंभी, आत्ममुग्ध भी होते हैं और सत्ता के भ्रष्टाचार को बढ़ाने में लगे रहते हैं।

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता खतरे में है, क्योंकि राजनीति एक धंधा बनकर रह गयी है . . .

जब जनता की उम्मीदों पर आघात पहुंचता है. तो हताशा उन्हें संसदीय प्रणाली से विमुख कर देती है। सत्ता पर आसीन दल या दलों का गठजोड़ तानाशाही चालों का आसरा लेने लगता है, और हताशा में किसी भी परिवर्तन की आकांक्षी जनता, जो अविश्वास से भरी होती है, इन चालोंमें आ जाती है। जब तक उसे सचाई का पता चलता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

दल-बदल की बीमारी

यह राष्ट्र दल-बदल की बीमारी से ग्रस्त है। यहां मेरा तात्पर्य एक या अनेक दलों से 'दल-बदल' से नहीं है, क्योंकि अधिकांश नेता इसके शर्मनाक अपराधी हैं, मैं तो सारे राजनीतिक दलों द्वारा जनता का साथ छोड़ देने की बात कर रहा हूं। राजनीति का यह पतन केवल दलितों और शोषितों की नयी चेतना द्वारा ही रोका जा सकता है। (क्रमश:)

'संसदीय प्रणाली पर अविश्वास एक गंभीर खतरा' अगले अंक में पढ़िए

संस्कृति को नष्ट करती है राजनीति

'भ्रष्टाचार का केंद्र है राजनीति और सदाचार का केंद्र है राजनीति' इस ज्वलंत प्रश्न पर पढ़िए निर्माण-आवास एवं संसदीय मामलों के केंद्रीय मंत्री श्री भीष्म नारायण-सिंह, सुप्रसिद्ध कत्थक कलाकार श्री बिरजू महाराज एवं सुपरिचित कवि-समालोचक श्री गोपालकृष्ण कौल के विचार--

संस्कृति और राजनी एक दूसरे की पूरक

(भीष्म नारायण सिंह)
संसदीय कार्य एवं आवास-निर्माण मंत्री

संस्कृति और राजनीति एक दूसरे के पूरक हैं। गांधीजी को ही लीजिए, जहां गांधीजी एक बड़े राजनेता थे, वे भारतीय संस्कृति के प्रतिमूर्ति भी थे। जवाहरलालजी बड़े राजनेता तो थे ही, यदि उनके जीवन को सूक्ष्म रूप से देखा जाए, तो उनमें भारतीय संस्कृति की झलक पग-पग पर मिलेगी। हां, वैसे राजनीतिज्ञों से केवल संस्कृति को ही नहीं, किसी भी क्षेत्र को धक्का लग सकता है, जो परिपक्व नहीं हैं। जब कभी राजनीतिज्ञों से संस्कृति को धक्का लगा है, तब वे ऐसे लोग थे, जो न राजनीतिज्ञ थे और न संस्कृति को समझते थे।

हमारी प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी का पूरा जीवन राजनीति और संस्कृति का पूरा सम्मिश्रण है। मेरे विचार में राजनीति और संस्कृति दोनों एक दूसरे की पूरक हैं। भ्रष्टाचार सामाजिक बुराई है। जिस समाज में, जिस मात्रा में बुराई होती है, उसका असर उसी अनुपात में विभिन्न वर्गों पर पड़ता है। उसमें सभी वर्ग आ जाते हैं। समाज में जिस मात्रा में अच्छाई होती है, वह उसी मात्रा में राजनीति और संस्कृति दोनों क्षेत्रों में देखने को मिलती है।

राजनीति संस्कृति विरोधी नहीं

कला और संस्कृति जीवन को संपूर्णता में रखकर एक जीवन-दृष्टि के विकास का प्रयत्न करती है। और इस प्रकार आदर्श और मर्यादाओं के अंतर्गत व्यवहार की प्रेरणा देकर समाज को उदात्त भावनाओं से पूर्णकर ईश्वर-प्राप्ति में सहायक बनती है। राजनीति जीवन के भौतिक पक्ष को नियंत्रित करती है और उसी के विकास पर जोर देती है। इसलिए उसका क्षेत्र सीमित हो जाता है। दोनों के क्षेत्र की व्यापकता में ही अंतर है, कोई मौलिक मतभेद दोनों में नहीं है।

मौलिक विरोध नहीं

राजनीति मूलतः संस्कृति की विरोधी नहीं होती। व्यक्तियों का कला और संस्कृति के प्रति अज्ञान संस्कृति के विकास में बाधक हो सकता है, पर राजनीति का संस्कृति से कोई विरोध नहीं। राजनीति को संस्कृति से और संस्कृति को राजनीति से बल मिलता है। सरकारें कला और संस्कृति के विकास के लिए काम करती हैं। पर आजकल उतनी सहायता नहीं दे पातीं, जितनी राजाओं के समय में मिलती थी। इसका कारण आज कला को मनोरंजन का साधनभर मान लेना है, जबकि कला और संस्कृति को व्यापक अर्थों में लिया जाना चाहिए। भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण ही आज कला और संस्कृति का महत्त्व राजनीति की अपेक्षा कम हो गया है। राजाश्रय से कला-संस्कृति के विकास में बड़ा योगदान मिल सकता है।

बिरजू महाराज

दृष्टिकोण रचनात्मक नहीं

आज जीवन के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण का अभाव है। पहले कलाकारों को जीवन-यापन की समस्याओं से राजाश्रय देकर मुक्त रखा जाता था, आज उनकी अपनी कोई पहचान नहीं है। पद्मश्री आदि सम्मान सरकार दे देती है, उससे भी कलाकार की भौतिक स्थिति में कोई अंतर नहीं आता।

एक क्रिकेटर छक्का मारता है, तो उसका फोटो अखबार में मुखपृष्ठ पर आ जाता है। पर एक कलाकार कई घंटे तक कला का प्रदर्शन करता है, तो उसे कोई

महत्त्व नहीं दिया जाता ।

मंत्रीजी का अज्ञान

एक बार हम एक केंद्रीय शिक्षा-मंत्री महोदय से मिले। उन्हें अपना नाम बताया, तो वे पूछने लगे, 'कौन बिरजू महाराज ? आप क्या काम करते हैं ?' यानी मंत्री महोदय को कला के क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तियों के बारे में जानकारी नहीं थी, पर वह शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय संभाले हुए थे।

राजनीति इस प्रकार अनजाने में अनाधिकारी व्यक्ति को अधिकार दे देती है, इस प्रकार से कला और संस्कृति को हानि तो पहुंचती है, पर यह दोष मेरी दृष्टि में राजनीति का नहीं, लोगों के अज्ञान का है। क्योंकि अनेक राजनीतिज्ञ संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी बड़ी रुचि लेते हैं।

इस प्रकार संस्कृति के ज्ञान से रहित और संस्कृति को बढ़ावा देनेवाले दोनों प्रकार के लोग राजनीति में होते हैं, तो राजनीति दोषी कैसे हुई ? व्यक्ति ही उत्तरदायी हुआ !

संस्कृति को नष्ट सुविधाओं के पीछे भागनेवाले लोग करते हैं, राजनीति नहीं। राजनीति का संस्कृति से अधिक, आज के जीवन में महत्त्व सुविधाओं की लालसा के ही कारण है।

—कत्थक केंद्र, मंडी हाउस, नयी दिल्ली

राजनीति सही समस्याओं को दूषित कर रही है

गोपाल कृष्ण कौल

संस्कृति के आंतरिक और बाह्य रूप की संरचना के मूल में मानवीय संवेदना और गतिशील चेतना रहती है। संस्कृति का सौंदर्यात्मक यानी रूपवादी पक्ष और विचारात्मक यानी भाववादी पक्ष—दोनों ही मनुष्य को अधिक श्रेष्ठ सामाजिक एवं संघर्षशील व्यक्ति बनने की परिवर्तनशील प्रक्रिया की उपज हैं। संस्कृति ज्ञान के विविध आयामों और सामाजिक जरूरतों के विभिन्न प्रयत्नों से अछूती नहीं रह सकती।

संस्कृति राजनीति से अछूती नहीं

इसीलिए संस्कृति उस राजनीति से भी अछूती नहीं रह सकती, जो शोषणमुक्त समाज की रचना में मानव-संघर्ष के त्याग-बलिदान और दुःख-दर्द से जुड़ी हुई है। लेकिन एक 'राजनीति' और है, जिससे परहेज करने की बात प्रायः सभी मतों के समकालीन राजनीतिक लोग कभी-कभी

कहते रहते हैं, उस राजनीति से संस्कृति का कोई सहज लगाव नहीं हो सकता।

प्रायः हमें सुनने को मिलता है — 'यह राष्ट्रीय प्रश्न है, इसको 'राजनीति' से अलग रखना चाहिए, यह भाषा का सवाल है, इसको 'राजनीति' से दूर रखो, यह आर्थिक मसला है, इसमें 'राजनीति' न लाओ और अमुक आंदोलन से 'राजनीतिक' लाभ नहीं उठाना चाहिए, आदि-आदि। इन उक्तियों से जाहिर है कि ऐसी भी कोई राजनीति आज चल रही है, जो सही प्रश्नों और समस्याओं को प्रदूषित कर देती है। ऐसी राजनीति से अगर संस्कति का क्षेत्र प्रदूषित होने से बचा रहे, तो यह मानव-समाज के हित में ही है।

राजनीति के भी दो रूप हैं। एक, सत्तामुखी पूंजी-आश्रित रूप है और दूसरा, सेवामुखी-संघर्ष-केंद्रित रूप है। सेवामुखी रूप ही राजनीति का मूल रूप है, जो समाज के विकास में मानव की संघर्षशील चेतना का वैज्ञानिक प्रतिफलन है, और जिससे बुनियादी परिवर्त्तन और क्रांतियों का जन्म होता है। सत्तामुखी पूंजी-आश्रित रूप सिर्फ अपने हित में सांस्कृतिक माध्यमों का उपयोग करता है।

संस्कृति जन-जीवन का उत्स

संस्कृति का सहज और मूल उत्स जन-जीवन है। तमाम लोक-कलाएं इस उत्स से ही निकलती हैं। सामान्य जन आर्थिक दृष्टि से गरीब होने पर भी लोक-संस्कृति से संपन्न हो सकता है, किंतु आर्थिक दृष्टि से संपन्न सभी व्यक्ति सांस्कृतिक दृष्टि से संपन्न नहीं हो सकते। इस देश की लोक-कलाओं को ज्यादातर उन गरीब लोगों ने ही जीवित रखा है, जिनको आज गरीबी की रेखा के नीचे खड़ा कर दिया गया है।

गोपालकृष्ण कौल

संस्कृत नाटकों में राजा के साथ एक विदूषक मनोरंजन के लिए रहता था। आज भी अनेक लोग संस्कृति को राजा के पिछलग्गू विदूषक के रूप में ही बनाये रखना चाहते हैं। ऐसे महापुरुषों की दृष्टि में हर जलसे के 'टेलपीस' (दुमछल्ले) के रूप में 'कल्चरल शो' (एक सांस्कृतिक कार्यक्रम) जलसावादियों की थकान दूर करने के लिए जरूरी हो गया है। संस्कृति की यह दुमछल्ला हैसियत कहां तक ठीक है? क्या सामंती जमाने की तरह संस्कृति की हैंसियत केवल राजप्रमुखों को रिझाने के लिए है? ऐसे ज्वलंत सवाल उन लोगों के मन में सुलग रहे हैं, जो नये समाज की रचना के लिए संघर्षरत जन-चेतना से सहज रूप से जुड़े हैं।

समाज को नयी दिशा देनेवाली सांस्कृतिक जन-चेतना का विकास ही मानवीय अवमूल्यन और पिछड़ेपन को दूर कर सकता है। **—कल्पनानगर, गाजियाबाद**

हमारी भावी योजनाएं

‘कादम्बिनी’ के अगले अंक से पाठकों को निरंतर परिवर्तन मिलेगा और इसे हम और अधिक रोचक तथा पठनीय बनाते जाएंगे ।

किस्से अदालतों के

दिलचस्प दास्तान उन जजों की, जिन्होंने न जाने कितने अपराधियों को मौत की सजा दी है ।

बकलम मुल्ला नसीरुद्दीन

अभी तक आप खोजा फकीर के किस्से पढ़ रहे थे । अब पढ़िए मुल्ला नसीरुद्दीन के वे किस्से, जिनमें यदि हास्य-व्यंग्य है तो जीवन की गहराई और दर्शन भी ।

कवि के आसपास

एक नयी लेखमाला--एक कवि की कविताएं और उस कवि की कृतियों का किसी विख्यात आलोचक का विश्लेषण, कवि की अंतरंग झाकी के साथ । नामों की प्रतीक्षा कीजिए ।

‘कादम्बिनी’ कहानी प्रतियोगिता

इस वर्ष ‘कादम्बिनी’ फिर कहानी प्रतियोगिता का आयोजन करने जा रही है । इस प्रतियोगिता की विशेषता यह होगी कि हम इस बार कहानी के लिए कोई विषय देंगे । यह विषय आज की जिंदगी और आदमी के भीतर के तनावों अथवा सामाजिक परिवेश की किसी मूल समस्या में से हो सकता है ।

एक नया स्तंभ---'सुनी-सुनायी'

सामान्य पाठकों से रचनाएं आमंत्रित हैं। ऐसी कुछ बातें सुनने को मिलती हैं, जो मनोरंजक होती हैं, और कई बार चौंका देनेवाली भी। कई बार कोई बड़ा आदमी अथवा कोई बहुत छोटा आदमी पते की बात कह जाता है। १५ से २० पंक्तियों में हम पाठकों से ऐसी घटनाएं चाहते हैं।

रोमांचक आपबीती कहानियां

यथा संभव प्रत्येक अंक में ऐसी कहानी, जो 'ट्रयू लाइफ ड्रामा' कहलाती है, जो सचमुच बीती हुई घटनाओं पर आधारित है और इतनी रोमांचक है कि पाठकों को झकझोर देगी।

और कुछ विशेषांक

- ० मार्च में होली की परंपरा को बनाये रखने के लिए भरपूर मनोरंजन की सामग्री
- ० **अवकाश अंक**---मई मजे और छुट्टियों का मौसम होता है। इस अवसर पर इस तरह की विशेष सामग्री, जिसमें पहली बार हम नृत्य-संगीत और नाटक के अतिरिक्त फिल्मी दुनिया के कलाकारों के अंतरंग जीवन की झांकियां भी देंगे।
- ० अगस्त में कहानी-विशेषांक और
- ० नवम्बर में नववर्षांक। इस बार हमने २१ वें वर्ष का पहला अंक निकाला था। अब हम प्रस्तुत करेंगे एकदम नये ढंग की सामग्री से भरपूर एक और विशेषांक।

'कादम्बिनी' प्रत्येक अंक में अपने को निरंतर विकसित करती जाएगी। अपने पाठकों के पत्रों का हम निरंतर स्वागत करते रहे हैं और करते रहेंगे।

जिंदगी के आसपास जो कुछ है, वह कादम्बिनी में है

कादम्बिनी' पढ़िए---समय के साथ चलिए

एक ओर भारत में राजनीतिक कारणों से कुछ प्रदेशों में हिंदी का विरोध किया जा रहा है, तो दूसरी ओर पाकिस्तान में अगले वर्ष से हिंदी को क्षेत्रीय भाषा का दरजा देकर कालेजों में पढ़ाया जाएगा। दिलचस्प तथ्य यह है कि भारत-विरोध के आदी पाकिस्तान के पत्रों ने सरकार की इस नीति का कोई विरोध नहीं किया है।

पाकिस्तान में अब हिंदी पढ़ायी जाएगी

● जमनादास अख्तर

पाकिस्तान में हिंदी लिखनेवालों की संख्या बहुत तो नहीं, परंतु ऐसा भी नहीं कि इस देश में हिंदी जानने और लिखनेवाला कोई नहीं।

पाकिस्तान की वर्तमान सरकार ने 'इसलाम' के नारे लगाते-लगाते अब भारत के महत्त्व को महसूस करके हिंदी का महत्त्व भी अनुभव करना शुरू कर दिया है। लाहौर के दैनिक 'नवाये वक्त' ने ६ दिसंबर को यह समाचार प्रकाशित किया है कि 'पाकिस्तान में शिक्षा के अगले वर्ष से इंटरमीडिएट के लिए जो कोर्स तैयार किया गया है, उसमें हिंदी को क्षेत्रीय भाषा की हैसियत से शामिल किया गया है।'

इस समाचार-पत्र ने शिकायत की हैं कि पाकिस्तानभर में इस स्तर पर हिंदी की शिक्षा के लिए कोई पुस्तक नहीं है।

वास्तव में, पाकिस्तान सरकार ने इससे पहले भी अपने सूचना-विभाग, विदेश विभाग, गुप्तचर-विभाग और रेडिओ के भारत संबंधी विभाग के कर्मचारियों के लिए हिंदी की शिक्षा का प्रबंध कर रखा है।

भारत स्थित पाकिस्तान के दूतावास में भी हिंदी जाननेवाले रखे जाते हैं, क्योंकि भारत के हिंदी समाचार पत्रों में पाकिस्तान संबंधी, जो लेख प्रकाशित होते हैं, उनकी

जानकारी के लिए हिंदी जाननेवालों का होना आवश्यक है। इसी प्रकार पाकिस्तान रेडियो ने उत्तर प्रदेश, राजस्थान और बिहारवालों को प्रभावित करने के लिए हिंदी के विशेष प्रसारणों का सिलसिला शुरू किया है। हिंदी में मिलनेवाले पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिये जाते हैं।

हिंदी के पाकिस्तानी कवि

यह एक सुखद आश्चर्य की बात है कि पाकिस्तान में हिंदी में लिखनेवाले कवि भी हैं। उनमें से कुछ एक को मैं जानता हूं। लंदन में गत वर्ष एक रात युवा कवि अनवर खालिद मुझे मिले थे। अनवर अलीगढ़ में पैदा हुये थे, उन्होंने यौवन के कुछ वर्ष कलकत्ता और वाराणसी में व्यतीत किये और फिर पाकिस्तान चले गये। लंदन में हिंदी के एक कवि-सम्मेलन में उन्होंने झूम-झूमकर कई गीत सुनाए। इनमें से एक गीत यह था—

आस की धुन पर
जीवन मुरली गाये रसीले गीत
कभी दुखों की तान उड़ाये
कभी मिलन संगीत

मेरी कविताएं भारत में छपें

इब्ने इंशा पाकिस्तान के चोटी के कवि और हास्य-रस के लेखक थे। तीन वर्ष पहले लंदन में उनकी मृत्यु हुई। मृत्यु से लगभग २० दिन पहले उन्होंने मुझे निमंत्रण दिया, कहने लगे, "मैं चाहता हूं कि मेरी हिंदी की कविताएं भारत में प्रकाशित हों।" लेकिन इनका यह सपना अधूरा ही रहा। इंशा का एक गीत इस प्रकार है—

मत जाओ, मत जाओ गोरी
मत जाओ, मत जाओ
तुमसे जोत जगी थी मन में
जैसे चांद से नील गगन में

इंशा का इक गीत 'इक बार कहो तुम मेरी हो' बहुत प्यारा गीत है——

इक बार कहो तुम मेरी हो !
हम घूम चुके बस्ती बन में
इक आस की सांस लिए मन में
कोई साजन हो, कोई प्यारा हो
कोई दीपक हो न कोई तारा हो
जब जीवन रात अंधेरी हो . . .
इक बार कहो मेरी हो !
जब सावन बादल छाये हों
जब फागुन फूल खिलाये हो
जब चंदा रूप लुटाता हो
जब सूरज धूप नहाता हो
जब शाम ने मस्ती घेरी हो
इक बार कहो तुम मेरी हो

मोहन और राधा की याद

निगारसे हवाई कराची के युवा कवि हैं। उनकी कविताओं और गीतों की पुस्तक घनिक पब्लिशर्स, कराची ने १९६३ में प्रकाशित की थी। उन्होंने आरज़ू लखनवी की कविताओं से प्रेरणा प्राप्त की है। उन्होंने अपनी कविताओं में श्याम, मोहन, मुरली, कन्हैया, यमुना, वृंदावन और राधा को स्मरण तथा संबोधित किया है। कुछ गीतों के मुखड़े ये हैं—

'रस्ता न रोको नटखट श्याम', 'मोहे मोहन की मुरली बुलाये', 'सुनो श्याम तिहारे मैं गुण गाऊं', 'काहे सूनी भयी आज चतुर मुरलिया, 'बेसुध बंशी बजाये मोहन', 'रावण रूप में आयी निराशा', 'रुक गयी श्याम की बंसी देखो'

निगार को पढ़ते-पढ़ते मीरा बाई की याद आ जाती है --

सुनो श्याम तिहारे मैं गुन गाऊं
जनम-जनम सुख पाऊं
वृंदावन की लगी हाय किससे कहूं
चाहे मथुरा रहूं चाहे गोकुल बसूं
नयन-दीप जलाऊं, तुम्हारे दरसन करूं
किसी मंदिर में काहे जाऊं
सुनो श्याम तिहारे गुन गाऊं

सरल उर्दू के गीत

सरल उर्दू को आप हिंदी भी कह सकते हैं। वास्तव में, यह आज भी पाकिस्तान में गीतों की भाषा है। पाकिस्तान बनने से पहले हफीज जालंधरी, कतील शफाई भट्टी और अल्ताफ मशहदी ने इसी भाषा में लिखा। हफीज का गीत—'बांसुरी बजायेगा' एक समय अत्यंत पसंद किया गया था। कतील तो आज भी इसी भाषा में गीत लिखते हैं। अदम का एक गीत है—

घूंघट में चांद सा मुखड़ा
मुखड़े में नैन रसीले
ओ साजन छैल-छबीले

हिंदी और पाकिस्तान

इस में संदेह नहीं कि गत ३० वर्षों से पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध प्रचार का तूफान चल रहा है। इस तूफान के कारण कोई सोच भी नहीं सकता कि पाकिस्तान में हिंदी के लिए कोई गुंजाइश है। परंतु वास्तविकता को मिटाया नहीं जा सकता। यदि पाकिस्तान को अरबों और ईरानियों से संबंध रखने के लिए अरबी और फारसी जाननेवालों की आवश्यकता है, तो भारत से अपने संबंध के सिलसिले में उसे हिंदी की शिक्षा का प्रबंध करना ही पड़ेगा। इंटरमीडिएट कोर्स में हिंदी की शिक्षा के लिए गुंजाइश रखना, इसका प्रमाण है। इस संबंध में यह बात और भी महत्त्वपूर्ण है कि पाकिस्तान के किसी भी समाचार-पत्र ने इस योजना का विरोध नहीं किया।

—पटौदी हाउस, दरियागंज,
नयी दिल्ली

शादी की सालगिरह नजदीक थी। पत्नी ने पति से पूछा, "इस बार हम शादी की सालगिरह किस तरह मनाएंगे! तुमने कुछ सोचा?"

"मेरे विचार से इस बार वर्षगांठ के दिन पांच मिनिट का मौन रख लेंगे," पति ने अपनी योजना बतलायी।

*

चीनी की कीमती प्याली हाथ से गिरकर टूट जाने से पलंग के नीचे दुबके हुए पति से पत्नी! "अजी, मैं कहती हूं, बाहर निकलो।"

पति: "घर का मालिक मैं हूं। जहां मेरी मर्जी होगी, वहां रहूंगा।"

शहर और ऊंचाइयां

आइए देखिए
मेरे शहर के चौरस्तों पर
बुत गायब हैं
लेकिन पेडेस्टल खड़े हैं
अपने सीने पर टांके एक ऐसा परिचय
जो न वर्तमान है/न भविष्य/केवल भूत है
और मंडराता है ये भूत / मेरे शहर के चौरस्तों पर
तो साहब, केवल देखिए ही नहीं/कुछ गुनिए भी
सदा मुस्कुराइए ही नहीं/ कभी रोइए भी
आंखें गीली नहीं तो सूनी ही कीजिए
इन सूने पेडेस्टलों की तरह
ओह,
तो आप रोना नहीं/हंसना चाहते हैं
मेरे शहर में जहां भीड़ ही भीड़ है
क्यू में लगने के लिए क्यू है
जश्न मनाना चाहते हैं
कि कहीं कुछ खाली तो है
पुराने बुतों के पेडेस्टल ही सही
फिर तो/ आपने अपनी निगाह
बिलकुल सही जगह टिकायी है
और आपका हिसाब
एकदम ठीक सोलह आने पाई है
सूने पेडेस्टल पर चढ़ने में
जो जल्दी आपने दिखायी है
उसके लिए मेरी बधाई है

बैसाखियों की कहानी तो जानी पहचानी है
परंतु बहुत कम ने ये बात जानी है
कि मेरे शहर की अधिकांश ऊंचाइयां
इन पेडेस्टलों ने ही बनायी हैं
जी हां/ आइए/ देखिए और चुनिए
पेडेस्टल खाली हैं मेरे शहर में
मेरे प्रांत में/ मेरे देश में

—उपेन्द्र कुमार

७४७, बाबा खड़क सिंह मार्ग, नयी दिल्ली

आस्था के आयाम

अद्भुत स्मारक

कोई बात किसी पर कहां और कब चोट कर जाएगी और उसे क्या से क्या बना देगी, यह कोई नहीं कह सकता। ऐसी ही एक घटना है। एक शिक्षक ने तंग आकर अपने एक ऐसे छात्र की किताब-कॉपियां कावेरी नदी में फेक दीं, जो पढ़ने-लिखने में बहुत ही कमजोर था और वह उसे समझा-समझाकर हार गये थे। किताब-कॉपियां नदी में फेंककर उन्होंने छात्र से कहा, "तुम नहीं पढ़ सकोगे; जाओ घर जाओ, वायलिन बजाओ।" दरअसल, वह छात्र वायलिन बजाने में जितना निपुण था, पढ़ाई-लिखाई में उतना ही कमजोर।

छात्र घर चला गया और वायलिन के अभ्यास में रम गया। आगे चल कर उसने मैसूर दरबार के प्रख्यात संगीतकार बिदारम कृष्णप्पा से वायलिन वादन में उच्च प्रशिक्षण प्राप्त कर महारत हासिल की। और देश का महानतम वायलिन वादक बना। चालीस से अधिक वर्ष तक कर्नाटक संगीत के क्षेत्र में शीर्षस्थ रहनेवाले इस संगीतकार का नाम था टी. चौवडिया। उसने महाराजापुरम विश्वनाथ अय्यर, अरियाकुडी रामानुज आयंगार, चेमबाई वैद्यनाथ भागवतार, मुसुरी सुब्रामण्यम आइयर, सेमनगुडी श्रीनिवास आइयर, जी. एन. बालसुब्रामन्यम तथा एम. एस. सुबुलक्ष्मी-जैसे सिद्धहस्त संगीतकारों की संगति की थी।

आज से १३ वर्ष पूर्व इस महान संगीतकार का निधन हो गया; इस लंबे अर्से ने उसका बहुत कुछ संगीत भुला दिया। एक बार संगीत अकादमी के अध्यक्ष के. के. मूर्ति, गायिका वसंतकुमारी का मधुर गायन सुन रहे थे। वसंतकुमारी जो गीत गा रही थीं, उसका भाव था कि "हम सब अच्छे संगीत का आनंद तो लेते हैं, लेकिन संगीतकार की याद बनाए रखने के लिए हम क्या करते हैं।"

श्री मूर्ति को यह बात चुभ गयी और उन्होंने निश्चय कर लिया कि वह उस महान वायलिन-वादक का समुचित स्मारक बनवायेंगे, और उन्होंने वही किया। हाल ही में उस स्मारक का बंगलौर में विधिवत उद्घाटन किया गया है। लगभग २५ लाख रुपये की लागत से बने इस स्मारक भवन की विशेषता यह है कि यह भवन वायलिन के आकार का है। विश्वभर में

किसी वाद्य-यंत्र के आकार में बना, यह पहला भवन है। वातानुकूलित इस भवन में ऐसा मंच है, जिस पर सभी कलाओं का प्रदर्शन हो सकता है और इसमें १०४५ दर्शक आसानी से बैठकर देख सकते हैं। निस्संदेह यह भवन उस अद्वितीय वायलिन-वादक का अद्वितीय स्मारक है।

मानव-कल्याण के लिए समर्पित

यह सुनते आये हैं कि ऋषि-मुनि, संत-महंत व धर्माचार्य मानव-कल्याण के लिए अपने जीवन का दान करते आये हैं। यह सुनी हुई बात नहीं, बल्कि एक सचाई है, और वह भी आज के युग की। इस सचाई का प्रमाण हैं कांचीपुरम के शंकराचार्य। सन १९५४ में इन शंकराचार्य ने अपनी गद्दी पर अपने उत्तराधिकारी को बैठा कर अपने आप को मानव-कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। तब से उन्होंने लगातार भारतभर के अनेक प्रांतों के गांवों, कस्बों और शहरों का पैदल भ्रमण कर, अपने उपदेशों से आज के चिंताकुल व्यक्ति को शांति दी है, आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान कर उसे आत्मसंबल प्रदान किया है।

८६ वर्ष की आयु में भी यह आचार्य प्रातः तीन बजे उठ बैठते हैं, और पड़ाव छोड़कर यात्रा पर निकल पड़ते हैं। छह बजे तक यानी तीन घंटे में १०-१२ किलोमीटर की यात्रा कर, वह मंदिर आदि किसी धार्मिक स्थल पर विश्राम करते हैं। इस पद-यात्रा में छह वैदिक विद्वान उनके साथ रहते हैं। जब तक वह पड़ाव पर पहुंचते हैं, उनके दर्शनों के लिए लोगों की भीड़ लग जाती है। दूर-दूर से हजारों लोग उनके दर्शन करने, आशीर्वाद ग्रहण करने और अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आते हैं।

ग्रीस की भूतपूर्व महारानी फ्रेडेरिका तो उनकी इतनी भक्त हैं कि वह नियमित रूप से समय-समय पर दर्शन करने आती हैं। गत वर्ष जब शंकराचार्यजी उत्तरी कर्नाटक की यात्रा पर थे, तब उनके दर्शन करने के लिए, अमरीका से केनैडी भी आये थे।

सन १९२७ में जब महात्मा गांधी दक्षिण भारत की यात्रा पर थे, तब वह केरल के पालघाट नामक स्थान पर शंकराचार्य से मिले थे।

अद्भुत और धन्य हैं ये संत, जिनके दर्शन मात्र से उद्विग्न मन को शांति प्राप्त होती है।

हमजिंस

• कर्त्तारसिंह दुग्गल

कुंदन सुनार के यहां बच्चा हुआ था। अब तो वे अपने आपको जौहरी कहलवाते थे। अब तो उनके शो-रूम के सामने जहाज-जैसी बड़ी मोटरों की लाइन लगी रहती थी। क्या गोरे और क्या बिगड़े हुए देसी सरमाएदार, लोगों की इस तरह उनके यहां भीड़ लगी रहती, जैसे शहद की मक्खियों का छत्ता हो। हीरे और जवाहर, पुखराज और पन्ने, माणिक और मोती, सोने और चांदी के गहनों के नित्य नये फैशन! और अब वे जौहरियों की गली में धुएं से पुते घर में थोड़े ही रहते थे, अब तो माडल-टाउन में उनका बंगला था। बंगला क्या था, जैसे महल हो। देख-देखकर भूख नहीं मिटती थी। उधर से गुजरनेवाला हर कोई एक बार रुककर जरूर उसे निहारता।

पर सवाल यह था, कुंदन सुनार को ऐसी क्या मुसीबत पड़ी थी कि बच्चों पर बच्चे पैदा किये जा रहा था। हर साल नया कैलेंडर! पहले ही उसके पांच बच्चे थे, तीन बेटियां और दो बेटे!

'उसका ख्याल है कि, औलाद बराबर-बराबर होनी चाहिए। जितनी बेटियां उतने ही बेटे।'

"तो इस बार बेटी हुई या बेटा?" उसने अपनी पत्नी से पूछा। उसकी पत्नी लेडी डॉक्टर थी। उन्हीं के नर्सिंगहोम में तो कुंदन की बीवी की जच्चगी हुआ करती थी।

उसकी पत्नी ने कोई जवाब नहीं दिया। अपने अस्पताल के मरीजों के बारे में जिक्र करना उसे अच्छा नहीं लगता था। लेकिन कुंदन की पत्नी बस मरीज थोड़े ही थी, वे पड़ोसी भी तो थे। उनका एक दूसरे के यहां आना-जाना था। बहन-भाइयों की तरह वे लोग घुले-मिले थे।

और फिर बात टल गयी। क्या फर्क पड़ता है, कुंदन जैसे लखपति के यहां पांच बच्चे हों या छह। उसे क्या परवाह थी। नौकर-चाकर पालने के लिए थे। अंधा पैसा।

उस शाम उसने अपनी पत्नी को टेलीफोन पर बात करते हुए सुना। दूसरी ओर कुंदन था।

"नहीं कुंदन भाई साहब! मैं नहीं

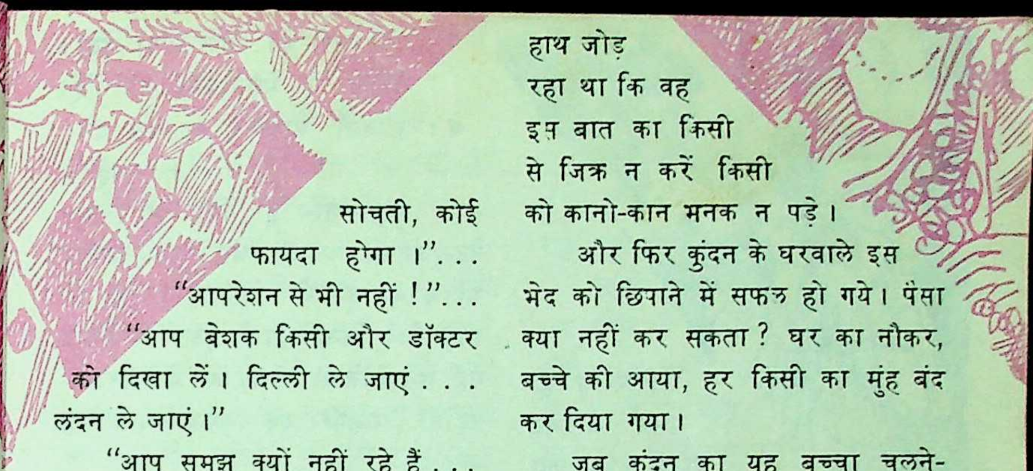

सोचती, कोई फायदा होगा ।"...

"आपरेशन से भी नहीं !"...

"आप बेशक किसी और डॉक्टर को दिखा लें। दिल्ली ले जाएं . . . लंदन ले जाएं ।"

"आप समझ क्यों नहीं रहे हैं . . . वह न इधर है न उधर। आखिर इस तरह के बच्चे भी तो होते हैं।"

"ईश्वर की देन से कोई लड़ थोड़े ही सकता है।"

और फिर उसकी पत्नी ने झुंझलाकर, जैसे टेलीफोन बंद कर दिया हो। "फिजूल—बेकार बातें . . .," वह बुड़बुड़ा रही थी।

"क्या बात है, कुंदन के यहां बेटी हुई है या बेटा ?" उसने अपनी पत्नी से पूछा।

स्टैथस्कोप उठाये, वह नर्सिंगहोम राउंड पर जा रही थी। उसने अपने पति के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया।

उत्तर देने की बात ही क्या थी। सारी बात तो उसने अपने कानों से सुन ली थी। कुंदन से कुदरत दगा कर गयी थी।

अगले रोज सुबह-सुबह, कुंदन स्वयं उनके घर आया। लेडी डॉक्टर के सामने हाथ जोड़ रहा था कि वह इस बात का किसी से जिक्र न करें किसी को कानो-कान भनक न पड़े।

और फिर कुंदन के घरवाले इस भेद को छिपाने में सफल हो गये। पैसा क्या नहीं कर सकता? घर का नौकर, बच्चे की आया, हर किसी का मुंह बंद कर दिया गया।

जब कुंदन का यह बच्चा चलने-फिरने लगा तो मां की ममता, वह उसे लड़के की तरह कपड़े पहनाती, लड़कों की तरह बाल बनाती। उसका नाम भी उन्होंने लड़कों-जैसा रखा था—कस्तूरी लाल। लेकिन कस्तूरी था कि हमेशा लड़कियों में घुसा रहता। उनसे बातें करता, उनके साथ हंसता-खेलता रहता! हंसता तो लड़कियों जैसा, खेलता तो लड़कियों के खेल, गाता तो लड़कियों के गाने। उसकी मां, उसके नौकर-चाकर लाख उसे समझाते। कस्तूरी को उनकी कोई बात समझ में न आती। जो उसके जी में आता, वही करता।

जब वह और बड़ा हुआ, तब कस्तूरी को स्कूल नहीं भेजा गया। उसके लिए घर पर ही ट्यूटर रख दिये गये। जो उसे सुबह-शाम पढ़ा जाते।

कच्ची पहली, पक्की पहली, दूसरी तीसरी, चौथी, कस्तूरी घर ही में पढ़कर एक कक्षा से दूसरी कक्षा में चढ़ता गया।

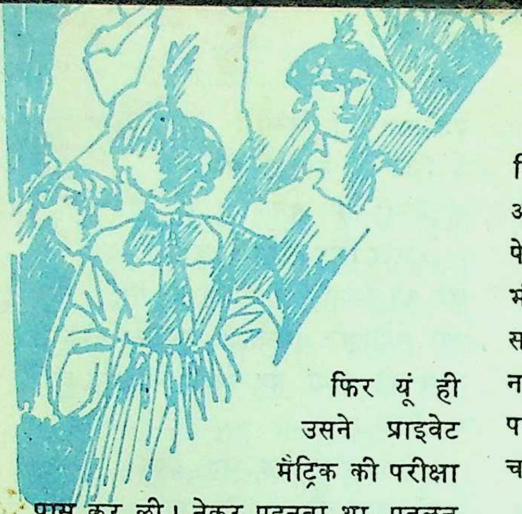

फिर यूं ही उसने प्राइवेट मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। नेकर पहनता था, पतलून पहनता, कभी बुश्शर्ट, कभी कमीज, लेकिन जब उसे मौका मिलता, किचन में जा घुसता और बावर्ची के साथ कुछ खाना-वाना पकाना शुरू कर देता। कभी दाल-चावल चुनने लगता, कभी आटा गूंथने लगता।

ज्यों-ज्यों बड़ा हो रहा था, कस्तूरी की अजीब-सी शक्ल निकलती आ रही थी। अजीब-सी उसकी आवाज होती जा रही थी। दूसरे बच्चों से भिन्न। और फिर उसकी समझ में आ गया कि वह भिन्न था। न लड़का न लड़की; न मर्द न औरत!

पर यह बात कि कस्तूरी हिजड़ा है, कब तक दबी रहती। भरे-शहर में इस तरह का राज कब तक बना रहता। आखिर यह खबर हिजड़ों की बस्ती तक जा पहुंची। जिस दिन उन्हें पता चला, हिजड़े तालियां बजाते उनके बंगले पर आ धमके। वे तो अपनी जाति के प्राणी को लेकर ही जाएंगे। कस्तूरी को छिपा दिया गया। लेकिन वे माननेवाले थोड़े ही थे। छावनी डालकर वह बैठ गये। हिलने का नाम ही न लें। सुबह से आये हुए, शाम हो गयी थी। खूब पेट-पूजा भी कर ली थी, खूब खातिर भी करवा चुके थे। लेकिन, कस्तूरी को साथ लिये बिना वहां से हटने को तैयार नहीं थे। बंगले के गेट पर जमे थे। अड़ोसी-पड़ोसी, राहगीर रुक-रुककर अपनी राह चल देते।

आखिर कुंदन ने हिजड़ों के साथ सौदा कर लिया। उनकी मुट्ठी गर्म करके उन्हें लौटा दिया गया। मुंह-मांगी मुराद, जो उन्होंने मुंह से निकाला, वही ले कर टले!

हिजड़ों की बिरादरी के साथ यह तय पाया था कि हर महीने की पहली को कुंदन उन्हें सौ रुपया नकद और कुछ इनाम दिया करेगा।

सौ रुपये माहवार से शुरू हुए, बढ़ते-बढ़ते आजकल पांच सौ-रुपया महीना उनकी 'लाग' हो गयी थी। जैसे-जैसे साल बीतते, वे लोग पैर और लंबे पसारते जाते। कपड़ों के साथ कपड़े, रसद के साथ रसद, फलों के साथ फल। और पहली

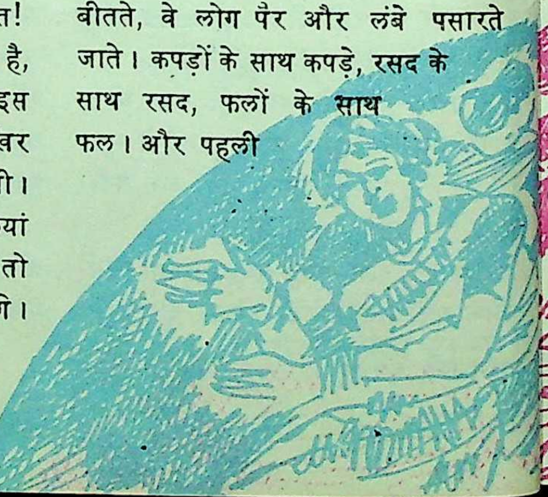

तारीख को अपनी 'लाग' अलग, पांच सौ रुपये नगद गिन कर धरा लेते।

कुंदन के घरवाले भी सच्चे थे। बेशक वह हिजड़ा था, पर इतने बड़े घर में से कोई अपनी औलाद कैसे हिजड़ों की बस्ती में रहने के लिए भेज दे।

उधर हिजड़े भी सच्चे थे। वे लोग अपनी औलाद तो पैदा नहीं कर सकते थे। अगर शहर में जन्मे हिजड़े उनके साथ आकर शामिल न हों, तो ख्वाजा सराओं का धंधा कैसे चले। वे तो भूखे मर जाएं। इन्हें खाने को भी चाहिए, पीने को भी चाहिए, सिर पर छत भी चाहिए। इन्हें गाना सीखना होता है, नाचना सीखना होता है, सजने-संवरने के लिए पाउडर, सुर्खी खरीदने होते हैं। हारमोनियम बाजे और तबले। शृंगार-पट्टियां और घुंघरु। खुशबूदार तेल और ऊंची एड़ी के सेंडिल।

कस्तूरी ज्यों-ज्यों बड़ा हो रहा था, एक अजीब परेशानी वह महसूस करने लगा। कदम-कदम पर कोई न कोई उलझन उसे आकर घेर लेती। अड़ोस-पड़ोस के लड़के उसे 'सिसी' कहकर बुलाते। और लड़कियों को उसमें से मर्द की बू आती। अजीब-बेढब-सा उसका चेहरा निकलता आ रहा था। मोटे-मोटे होंठ। पकौड़ा-सी नाक। घनी काली भवें, सामने गरदन में बढ़ी हुई घुंडी। फटी हुई आवाज। लड़कों के कपड़े पहनता, लेकिन लड़कियों जैसी चाल। लड़कियों की तरह शरमाता, लड़कियों जैसी झिझक।

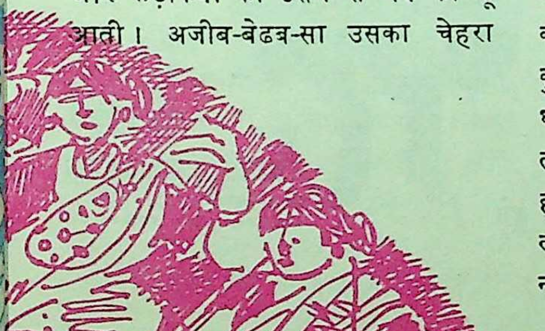

उसके साथी सभी लड़कों की दाढ़ी उग आयी थी मगर उसकी ठोडी पर अभी कोई बाल नहीं था। उसके सभी दोस्त शेव बनाते थे। ब्लेड और उस्तरे की बातें करते थे, और वह उनके मुंह की ओर देखता रहता।

अड़ोस-पड़ोस के लड़कों के साथ खेलते हुए, कस्तूरी महसूस करता कि वह अपने साथियों से कहीं पहले थक जाता था। अपने साथियों से कहीं पहले उसका पसीना छूटने लगता। अपने साथियों से कहीं पहले उसका दम फूलने लगता। अपने साथियों से कहीं पहले उसका चेहरा लाल-सुर्ख हो जाता। उसके साथी लड़कों ने उसका नाम रखा हुआ था—'उई मैं तो थक गयी।'

उस जाड़े में, उनके बंगले के सामने की कोठी में कोई किरायेदार आ गये। कोई स्टेट बैंक का मैनेजर था। ढेर-सा-कुनबा! इतवार को सुबह जब वे सज-धजकर गिरजाघर इबादत के लिए जाते, तो एक रेले का रेला घर से निकलता। हर आयु के बच्चे, जवान-जहान लड़के-लड़कियां, और अभी मां-बाप का कुछ नहीं बिगड़ा था। मां इस तरह सजती-

हंसा कंबल

सर्दी दूर भगायें, गर्मी पहुंचाये। लुभावने डिज़ाइनों, मनमोहक चैक और सजीली धारियों में मिलते है। इसके अलावा ट्वीड्स ड्रैसों, के लिये कपड़े, ब्लेज़र ऊनी शर्टिंग्स, ख़ाकी पट्टी और ग्रेट कोट का कपड़ा भी उपलब्ध हैं।

हमेशा आपके लिये गरमाहट लिये हुये

Hansa Regd.

AMRITSAR SWADESHI WOOLLEN MILLS AMRITSAR

एक्सपोर्ट आफिस
पो॰आ॰संख्या: ११११२, बम्बई-४०००२०

adEnvoys

संवरती, इस तरह के शोख रंग के कपड़े पहनती कि लोग देखते रह जाते ।

इन नये पड़ोसियों की एक बेटी को, कस्तूरी भा गया। घंटों खिड़की में बैठी उसे ताकती रहती। उसका कमरा, कस्तूरी के कमरे के ठीक सामने खुलता था। कस्तूरी उससे कतराता रहता। जैसे-जैसे कस्तूरी उससे बचने की कोशिश करता, पड़ोसिन लड़की, उतनी ही उसकी दीवानी होती जाती। वैसे-वैसे ही उसका पीछा करती। उसने इसे चिट्ठियां लिखनी शुरू कर दीं।

और फिर कस्तूरी को भी जैसे वह अच्छी लगने लगी। कितनी प्यारी-प्यारी चिट्ठियां लिखती थी। वह तो इसके लिए कोई भी कुर्बानी कर सकती थी। बेशक रंग जरा सांवला था, लेकिन कितनी नमकीन थी वह। कितनी प्यारी मोटी-मोटी अंखियां, यूं इसकी ओर देखती, जैसे घूंट-घूंट इसे पी रही हो।

और फिर जैसे उनका यह खेल बन गया। रात-रातभर वे जागते रहते। सड़क के पार अपने कमरे की खुली खिड़की में, वह खड़े-खड़े, बैठे-बैठे अपनी नुमाइश करती रहती। कभी किसी तरह सजती, कभी किसी तरह। कभी किसी तरह बालों को बनाती, कभी किसी तरह। कभी नाचने लगती, कभी गाने लगती। कभी रोने लगती . . . छल-छल अश्रु !

और फिर उन्होंने मिलना शुरू कर दिया। कभी कहीं, कभी कहीं। कभी किसी बहाने, कभी किसी बहाने। कस्तूरी हमेशा उससे कतराता, उससे बचने की कोशिश करता, लेकिन लड़की अपनी धुन की पक्की थी। बुरी तरह से उस पर फिदा थी। उसकी बहनें, उसकी इस पसंद पर हंसती। वह उनका मुंह-सिर नोच लेती। बस एक कस्तूरी, उसे और कुछ नहीं चाहिए था। उसकी मां को भी कोई आपत्ति नहीं थी। बेशुमार दौलत जो थी, कस्तूरी के बाप के पास। उनका बंगला ही देखते बनता था।

लाख उससे बचने की कोशिश करता, लेकिन एक रोज शाम के झुटपुटे में पार्क के एक ओर, कस्तूरी उसके हाथ लग गया। कब से वह, एक पेड़ की ओट में खड़ी उसकी राह देख रही थी कि कब वह उधर से गुजरे। एक-एक सांस उससे प्यार करने लगी। बार-बार उसके साथ चिपटती, बार-बार उसे छाती से लगाकर चूमने लगती, लेकिन वह तो ठंडा यख था—जैसे बर्फ की सिल्ली। लड़की हारने वाली नहीं थी। एक नजर इसके मुंह की ओर देखकर, जैसे उसके अंग-अंग में वहशत समा गयी हो। उसने फिर इसे बाहु-पाश

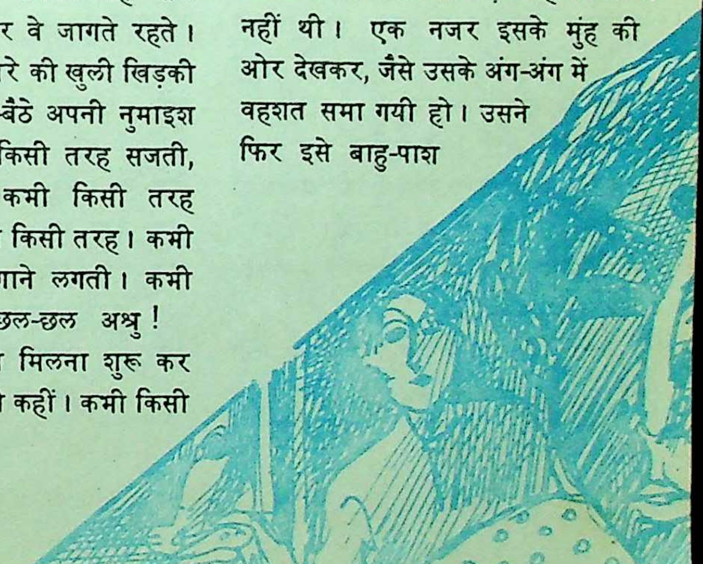

में जकड़ लिया और क्षण-क्षण बढ़ रहे अंधेरे में, वह कस्तूरी को चूमे जा रही थी, एक नशे में, एक उन्माद में। उसके होंठ इसके होंठों, उसकी जीभ इसकी जीभ पर, उसके दांत इसके दांतों में! और उसके साथ, घास पर लेटा हुआ कस्तूरी यूं पड़ा था, जैसे भीगी हुई ईंट हो। ठंडा-यख, टुकर-टुकर उसकी ओर देख रहा था। उसका कलेजा धक-धक कर रहा था, जैसे फंदे में फसी हुई कोई फाख्ता हो।

और फिर अचानक उसके मन में न जाने क्या आया कि भरपूर-जवान-जहान लड़की ने करवट बदली। एक पंजे के बल वह उठी, और दांत पीसकर, दायें-बायें कस्तूरी के दोनों गालों पर तड़ातड़ तमाचे जड़कर, फुंकारती, दहाड़ती, तेज-तेज कदम अपने ब्लाउज के बटन बंद करती हुई, पार्क में से निकल गयी। कस्तूरी देर-रात गये तक, वहीं पार्क में अकेला मिट्टी के साथ मिट्टी होता रहा।

वह दिन, और कस्तूरी का जैसे घर से निकलने का मन न करता हो। उसकी कमरे की खिड़की हमेशा बंद रहती, जैसे सामने के घर के कमरे की खिड़की बंद रहती थी। और फिर उसका मन बहल गया। कस्तूरी के बड़े भाई की शादी हो रही थी। घर में आवा-जाही, खाना-पीना, चहल-पहल। फिर बारात निकली। फिर डोली आयी।

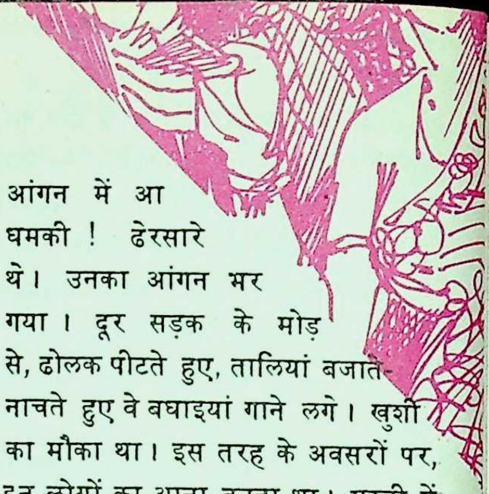

डोली को आये हुए ज्यादा देर नहीं हुई थी, कि हिजड़ों की एक टोली उनके आंगन में आ धमकी! ढेरसारे थे। उनका आंगन भर गया। दूर सड़क के मोड़ से, ढोलक पीटते हुए, तालियां बजाते-नाचते हुए वे बधाइयां गाने लगे। खुशी का मौका था। इस तरह के अवसरों पर, इन लोगों का आना बनता था। मस्ती में हिजड़े भी गा-गाकर, नाच-नाचकर थक नहीं रहे थे। इतना बड़ा घर, इतने बड़े सरमाएदार के बेटे का ब्याह। वे तो जितनी खुशी मनायें, उतनी थोड़ी थी। जितनी बलाये लें, उतनी कम थीं।

हिजड़े नाच रहे थे। बंगले के एक कमरे में से, साड़ी बांधे, लिपस्टिक से होंठ रंगे, पांव में घुंघुरू बांधे, कस्तूरी नाचता हुआ निकला, और हिजड़ों के नाच में शामिल हो गया। घर वालों की ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गयी। हिजड़ों ने कस्तूरी को यूं अपने में शामिल होते देखा, तो उनकी लय और तेज हो गयी। ढोलकवाले ने और तेज थाप देना शुरू कर दिया। एक स्वर—एक ताल पांव उठते। एक-स्वर, एक ताल अंग थिरके। नाच तेज होता जा रहा था, और तेज होता जा रहा था।

—पी-७, हौजखास, नयी दिल्ली

रेगिस्तान में पेट्रोल के पेड़

● अखिलेश कुमार सिंह

दिन-प्रतिदिन गंभीर हो रहे ऊर्जा संकट ने वैज्ञानिक समुदाय को, यह सोचने के लिए विवश कर दिया है कि ऊर्जा की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी ऐसे स्रोत का आश्रय लिया जाए, जो चिरस्थायी और सरलता से उपलब्ध हो। निस्संदेह सूरज इस दृष्टि से सर्वाधिक उपयुक्त है। सौर-विकिरण जहां अनंतकाल तक इसी तरह प्राप्त होता रहेगा, वहीं वह सर्वसुलभ भी है। समस्या केवल उसके संग्रहण की है। इसके लिए कई प्रकार की विधियों का उपयोग किया जा सकता है। ये विधियां भौतिक, रासायनिक या जैविकीय हो सकती हैं।

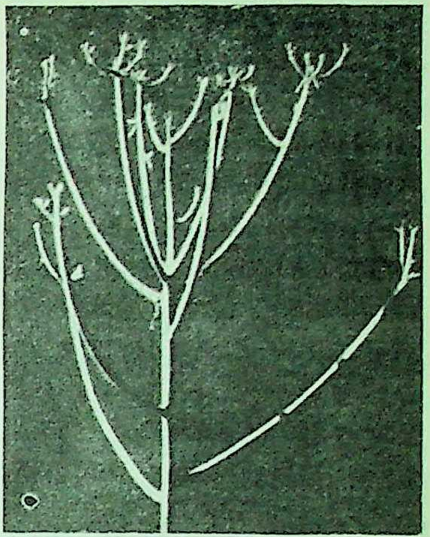

ऊपर: सेहुंड़ का पौधा

भौतिक या रासायनिक विधियों द्वारा सौर-ऊर्जा के संचय तथा उसके मनोवांछित उपयोग के लिए, जहां अभी अध्ययन-अनुसंधान की एक लंबी यात्रा तय करनी है, वहीं जैविकीय विधि द्वारा यह काम प्रकृति में पहले से ही संपन्न हो रहा है। आवश्यकता सही प्रबंध और विकास की है। आज जिस पेट्रोलियम के तेजी से समाप्त होते हुए भंडारों ने हमें चिंतित कर दिया है, वह भी जैविकीय विधि द्वारा संचित, सौर-ऊर्जा का भौतिक-रासायनिक तथा जैविक कारकों द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों में रूपांतरित एक रूप ही है। इसलिए वैज्ञानिक तेजी से इस दिशा में सोच रहे हैं कि लाखों करोड़ों वर्ष के इस समयांतर को क्यों न समाप्त कर दिया जाए? इस दिशा में उन्हें काफी सफलता भी प्राप्त हुई है। वास्तव में पेट्रोलियम, विभिन्न हाइड्रोकार्बनों सहित अनेक यौगिकों का एक जटिल मिश्रण है, जिसमें ऊर्जा-उत्पादन के लिए सर्वाधिक उपयोगी भाग

हाइड्रोकार्बन होते हैं। वैज्ञानिक इन हाइड्रोकार्बनों को पौधों से प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं।

पौधों द्वारा हाइड्रोकार्बनों का निर्माण

जब हरे पौधों की पत्तियों पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है, तब उनमें उपस्थित क्लोरोफिल नामक यौगिक, प्रकाश को अवशोषित कर लेता है। इस प्रकार अवशोषित किये गये प्रकाश से, अतिरिक्त ऊर्जा मिल जाने के कारण, क्लोरोफिल के अणु सामान्य अवस्था से उत्तेजित अवस्था मे पहुंच जाते हैं। अब ये सामान्य अवस्था में तभी आ सकते हैं जब इस अतिरिक्त ऊर्जा का किसी काम में उपयोग हो जाए। क्लोरोफिल अणुओं को प्रकाश द्वारा दी गयी इस ऊर्जा का उपयोग पत्तियों में उपस्थित पानी के अपघटन में हो जाता है। क्लोरोफिल अणु अपनी अतिरिक्त ऊर्जा से पानी के अणु को ऑक्सीजन तथा हाइड्रोजन में तोड़ देते हैं, और स्वयं फिर सामान्य अवस्था में आ जाते हैं। इसलिए इस क्रिया को विज्ञान की भाषा में, जल का प्रकाश-रासायनिक विखंडन कहा गया है।

पानी के विखंडन से उत्पन्न होनेवाली आक्सीजन तो पत्तियों पर स्थित असंख्य छिद्रों, जिन्हें पर्णरंध्र कहते हैं, द्वारा हवा में छोड़ दी जाती है। जब कि हाइड्रोजन, हवा से अवशोषित की गयी कार्बन डाई आक्साइड के साथ संयुक्त होकर, कई जटिल अभिक्रियाओं के साथ 'कार्बोहाइड्रेट' नामक जटिल यौगिक तथा पानी बनाती है। यह संपूर्ण अभिक्रिया-शृंखला प्रकाश-संश्लेषण कहलाती है।

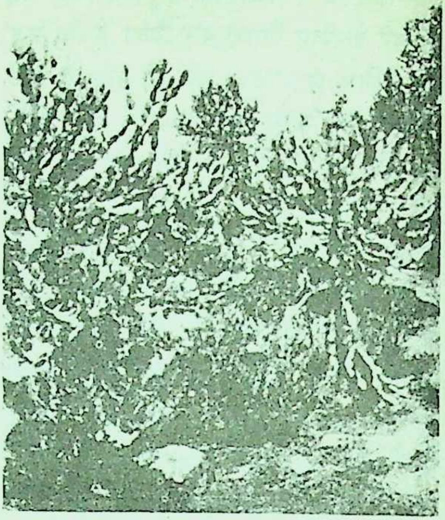

वैज्ञानिक नाम : यूफोर्बिया ट्रिगोना

यद्यपि प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया का मुख्य उत्पाद 'कार्बोहाइड्रेट' ही है, पर इस प्रक्रिया में संग्रहीत सौर-ऊर्जा का कुछ अंश प्रोटीन, वसा, सेल्यूलोज और हाइड्रोकार्बनों इत्यादि के रूप में भी संचित होता है। विभिन्न पौधों में इन पदार्थों की मात्रा, विभिन्न आंतरिक और बाह्य-कारकों तथा पौधों के आनुवंशिक संगठन के अनुसार, परिवर्तनशील होती है।

वास्तव में प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया द्वारा संश्लेषित कार्बोहाइड्रेटों से ही हाइड्रोकार्बनों का निर्माण होता है। पौधों की कोशिकाओं में उपस्थित विविध

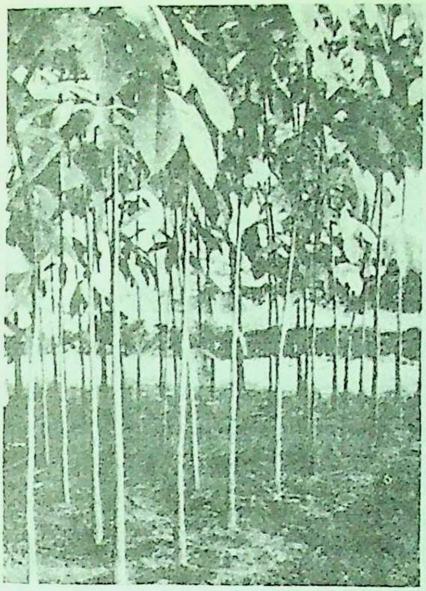

रबर-वृक्ष

प्रकार के एंजाइम कार्बोहाइड्रेट अणुओं के विखंडन और पुनर्गठन द्वारा कई चरणों में हाइड्रोकार्बनों का निर्माण संपन्न करते हैं।

हाइड्रोकार्बनों के धनी पौधे—हर पौधे में हाइड्रोकार्बन, प्रचुर मात्रा में संचित नहीं होता। इसलिए आवश्यक है कि ऐसे पौधों को पहचाना जाए, जिनसे अधिकाधिक हाइड्रोकार्बन प्राप्त किया जा सके। इस दृष्टि से वनस्पति जगत का 'यूफोर्बिएसी' नामक कुल सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। लगभग चार हजार प्रजातियों-वाले इस विशाल कुल की कोई न कोई जाति, आर्कटिक प्रदेशों को छोड़कर, संसार के हर भाग में पायी जाती है। वैसे अधिकांश जातियां विश्व के उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में ही केंद्रित हैं। इस कुल के पौधे शाक, झाड़ी या वृक्ष किसी भी रूप में पाये जा सकते हैं। परंतु इन सब में एक सामान्य गुण, यह होता है कि इनमें एक विशेष प्रकार का दूधिया द्रव भरा होता है। यही दूधिया द्रव हाइड्रोकार्बनों का स्रोत है।

हाइड्रोकार्बनों की उपलब्ध मात्रा तथा उनके गुणात्मक स्तर की दृष्टि से रबर का पौधा, जिसे वैज्ञानिक शब्दावली में 'हीवया ब्रैसिलिएंसिस' कहते हैं, इस कुल का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सदस्य है। रबर के वृक्ष को चीरने से प्राप्त होनेवाले आक्षीर में प्रचुर मात्रा में हाइड्रोकार्बन विद्यमान रहते हैं। यद्यपि इन हाइड्रोकार्बनों का रासायनिक संगठन लगभग वही होता है, जो पेट्रोलियम का फिर भी उनके पारमाणविक अनुक्रमों और अणुभार वितरण में अंतर पाया जाता है। रबर से प्राप्त हाइड्रोकार्बनों का अणुभार एक लाख से दस लाख तक होता है, जो अपेक्षाकृत अधिक है। इसलिए उनका सीधे ईंधन के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। यदि उत्पाद के अणुभार को नियंत्रित करके दस हजार तक ही सीमित रखा जा सके, तो रबर के वृक्ष का, निश्चय ही एक ऊर्जा-वृक्ष के रूप में उपयोग किया जा सकता हैं।

इस दृष्टि से उपयोगी इस कुल का दूसरा महत्त्वपूर्ण सदस्य 'यूफोर्बिया' है। संसारभर में 'यूफोर्बिया' की लगभग छह सौ प्रजातियां पायी जाती हैं, जिनमें से

अधिकांश उष्ण कटिबंधीय हैं। इन्हीं में से एक प्रजाति है 'यूफोर्बिया टिरुकाली'। हिंदी में—कोणपाल या सेहुंड़ के नाम से जाना जाने वाला लगभग २० फुट ऊंचा यह झाड़ीनुमा वृक्ष, मूलतः पूर्वी अफरीका का निवासी हैं। पर अब भारत के शुष्क तथा उष्ण क्षेत्रों में वह पूरी तरह स्थापित हो चुका है। इसके दूधिया द्रव में ५३.८ से ७९.९ प्रतिशत तक जल तथा जल विलेय पदार्थ और २.८ से ३.८ प्रतिशत तक 'कूचुक' पाये जाते हैं। इसके ताजे आक्षीर से 'आइसोयूफोराल' नामक एक अलकोहल भी पृथक किया गया है।

हाइड्रोकार्बनों की प्राप्ति के लिए महत्त्वपूर्ण, 'यूफोर्बिया' की दूसरी प्रजाति है 'यूफोर्बिया ट्रिगोना'। अंडमान द्वीप समूह के पर्णपाती वनों तथा दक्षिणी भारत के शुष्क पठारी भागों में बहुतायत से पायी जानेवाली इस प्रजाति को तेलुगु में 'कात्तिमांडु' नाम से जाना जाता है। इस प्रजाति के पौधों में भी तीखे, चरपरे स्वादवाला दूधिया आक्षीर पाया जाता है। जिसमें लगभग १.५ प्रतिशत 'कूचुक' होता है। इन पौधों के विभिन्न भागों से हाइड्रोसिनैमिक अम्ल भी पृथक किया गया है। 'यूफोर्बिएसी' के अतिरिक्त 'एस्क्लेपिडेसी' कुल के कुछ पौधों में भी प्रचुर मात्रा में हाइड्रोकार्बन पाये जाते हैं। जिनमें 'मिल्क वीड' नाम से जाना जानेवाला पौधा सर्वाधिक उल्लेखनीय है।

मरुस्थल का सार्थक उपयोग

इन दोनों ही कुलों के पौधों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि ये शुष्क तथा उष्ण प्रदेशों और रेगिस्तानों में, बिना किसी कठिनाई के, प्राकृतिक रूप से उगते रहते हैं, जहां अन्य पौधों का उगना संभव नहीं। इस संदर्भ में एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि सौर-विकिरण की अधिकतम तीव्रता विश्व के रेगिस्तानी क्षेत्रों में ही पायी जाती है। इन क्षेत्रों में प्राप्त सौर ऊर्जा का औसत मान लगभग छह सौ ग्राम कैलोरी प्रति वर्ग सेंटीमीटर प्रतिदिन है। इस प्रकार हाइड्रोकार्बन स्रोत के रूप में इन पौधों के उपयोग से, जहां एक ओर इन क्षेत्रों में उपलब्ध सौर ऊर्जा की विशाल मात्रा का सार्थक उपयोग संभव हो सकेगा, वहीं इससे कृषि योग्य भूमि अथवा वनों पर कोई अतिरिक्त भार भी नहीं पड़ेगा। बल्कि 'यूफोर्बिया' की कुछ प्रजातियां अनुपयोगी भूमि के सुधार में सहायक ही होंगी। इन पौधों में हाइड्रोकार्बनों का उत्पादन, आधुनिक कृषि तकनीकों की सहायता से, और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

इस प्रकार प्राप्त हाइड्रोकार्बनों का परिशोधन के पश्चात पेट्रोल के स्थान पर, सरलता पूर्वक इस्तेमाल किया जा सकेगा। विविध रासायनिक उद्योगों में तो इस प्रकार प्राप्त कच्चा उत्पाद सीधे ही उपयोग में लाया जा सकेगा। यह भी एक संयोग है कि आज भी विश्व की पेट्रोल-संपदा का अधिकांश रेगिस्तानों के गर्भ से ही प्राप्त हो रहा है। और कल भी उसकी खेती

रबर-वृक्ष से दूध निकालती युवतियां

उन्हीं के वक्ष पर होगी।

गुजरात तथा राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में अगर यूफोर्बिएसी कुल की इन हाइड्रोकार्बन-धनी प्रजातियों की व्यापक पैमाने पर खेती की जाए, तो इससे न केवल मरुस्थल का सार्थक उपयोग संभव होगा, वरन ऊर्जा-संकट के समाधान में सहायता भी मिलेगी। रेगिस्तानों के तेजी से होते हुए फैलाव को भी रोका जा सकेगा।

डीजल का पेड़—प्रकाश-संश्लेषण की कई गुत्थियों को सुलझानेवाले वैज्ञानिक के रूप में प्रख्यात नोबल पुरस्कार प्राप्त अमरीकी वैज्ञानिक डा. केल्विन ने कई ऐसे पौधों का पता लगाया है, जिनके तनों को चीरने से प्राप्त होनेवाले द्रव का, रासायनिक उपचार के पश्चात मोटर वाहनों में. पेट्रोल की जगह इस्तेमाल किया जा सकता है। किंतु उनकी नवीनतम खोज तो बिल्कुल ही विस्मयकारी है। अमेजन के जंगलों में पाये जानेवाले वृक्ष कोपीफेश लैंग्सडोर्फी के तनों से प्राप्त होनेवाले द्रव के विश्लेषण के पश्चात उन्होंने कहा कि 'वह शुद्ध डीजल के सिवा कुछ नहीं है।

अब वह दिन दूर नहीं। जब आप अपनी कार के ईंधन के लिए तेल-कूपों पर नहीं, पेट्रोल और डीजल के जंगलों पर निर्भर करेंगे। है न मजेदार बात! चाकू से पेड़ का सीना चाक कीजिए और बालटी-भर डीजल लेकर चलते बनिए!

—अ/१६, कस्तूरबानगर, सिमरा, वाराणसी

• सेवकराम ओखाड़

जिंदगी का बहुत-सा हिस्सा कितनी आसानी से सफर में ही कट जाता है। किसी ने कभी सोचा है? जरूरत नहीं। सोचने की फुरसत भी कहां हैं, क्योंकि हर सफर का एक मकसद होता है। मकसद भी दो तरह के हैं। एक ही दरजे की आवारा-गर्दी और दूसरी जरूरत मंद ताकतों का खींचते रहना। यानि कोई बहुत मुश्किल आ पड़ी है तब आप सफर करते हैं, अथवा आपके पैरों में खुजली हो रही है, और डर इस बात का है कि बैठे-बैठे कहीं गठिया वात न हो जाए। तो आप आवारा-गर्दी के लिए निकल पड़ते हैं।

आवारा-गर्दी हमारी बहुत पुरानी आदत है, और सच पूछिए तो उसी से जिंदगी को उमर मिलती है। एक सीट पर बैठे रहना, रोज-रोज एक ही घर में जाना और हर रोज की हर शाम का नाम खोजने में मुश्किल हो, यदि स्थिति ऐसी आ जाए तो सच मानिए जिंदगी का एक लम्हा इसी तरह टूट जाता है। जैसे फेफड़ों में फंगस लग जाता है। सफर शब्द भी मजेदार है। हिंदी, उर्दू में इसका जो अर्थ है, अंगरेजी में उससे अलग नहीं, क्योंकि हर सफर के साथ एक मुसीबत जरूर जुड़ी होती है। सफर करना, यानी मुसीबत उठाना। मुसीबत कौन नहीं उठाता? कब नहीं उठानी पड़ती? आप हंसेंगे तो मजे में रहेंगे, वरना रोते तो वैसे भी हैं, वही रोना और नसीब होगा। कुछ लोगों की आम आदत है—शिकायत करते रहना। वे हर चीज से शिकायत करते हैं, हर वक्त शिकायत करते हैं, यहां तक कि उनकी शिकायत अपने आप से भी है। साहब, हम शिकायत करने के आदी नहीं हैं। एक सफर का वाकया आपको बता

रहे हैं—

सफर बहुत लंबा नहीं था, लेकिन देखिए न हनुमानजी की पूंछ भी तो बहुत लंबी नहीं थी। कहते हैं हनुमानजी में वह ताकत थी कि वे अपनी पूंछ लंबी कर सकते थे। दो-ढाई लाख की बसों के ड्राइवरों में वैसी ही ताकत होती है। या तो वे अपनी गाड़ी पटरियों पर चढ़ाकर तोड़ सकते हैं; अथवा इस खरामा-खरामा चाल से चलेंगे कि डेढ़-घंटे का सफर डेढ़ दिन में पूरा होगा। सच मानिए मेरठ से दिल्ली का सफर एक दिन इतना ही लंबा हो गया था। जब मेरठ शहर से हम चले, इस रौब में थे कि डेढ़ घंटे में दिल्ली पहुंच जाएंगे और जिन्हें हमने समय दिया है उनसे मिल लेंगे। शुरुआत तो अच्छी हुई। यानि बस ठीक समय पर बस-स्टैंड से चल पड़ी। दस मिनट तक उस भीड़भरे जंगल से वह एक शाही दुल्हे की तरह गुजरती रही। और फिर अचानक आ रुकी। पांच मिनट, दस मिनट और धीरे-धीरे आधा घंटा गुजर गया, बस जो ठहरी तो ठहर ही गयी। खिड़की से झांककर देखा तो जितना लंबा बसों का काफिला आगे था, उतना ही पीछे। हमें लगता है ऐसी किसी स्थिति को देखकर 'सैंडविच' बनाने का काम शुरू हुआ होगा। "अरे भई, क्या हो गया?" एक मुसाफिर ने दूसरे से पूछा। दूसरे ने अपनी मेरठी हिंदी में जवाब दिया, "कोई एक्सीडेंट हो गया लगता है।" तीसरे ने रिमार्क किया, "अरे भई, चैंकिंग हो रही है, चैंकिंग. . . "तो," ये साली चैंकिंग इत्ती देर होवै है" हम चुप और परेशान। हर मुसाफिर एक-सी स्थिति में है, जहां ये बात करनेवाले लोग बैठे हैं, वहीं तो हम भी बैठे हैं, लेकिन देखिए ना कि वे जानते हैं कि क्या हो गया है और हमें मालूम नहीं। शायद, यही कुछ उन अंधों के साथ हुआ होगा, जो हाथी को छूकर अपनी-अपनी जानकारी पूरे भरोसे के साथ लोगों

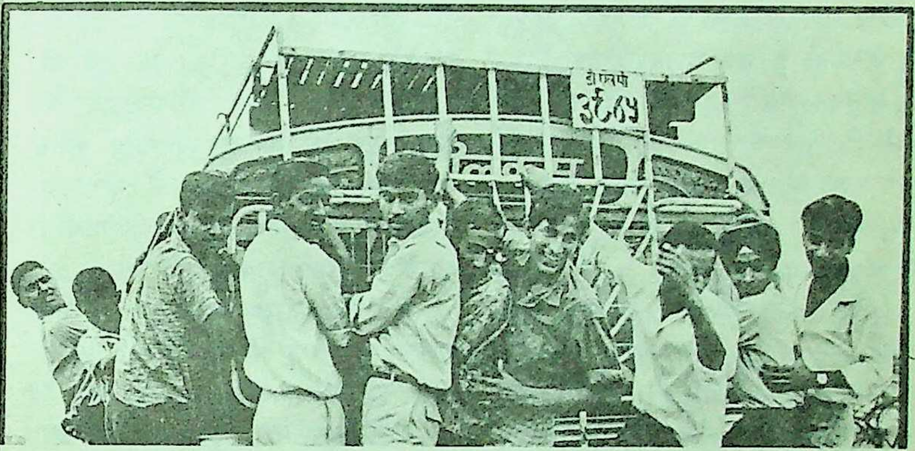

को दे रहे थे। हमने अपनी घड़ी देखी। पूरा एक घंटा गुजर गया। सुना था डेढ़ घंटे में तो बस दिल्ली पहुंच जाती है। लेकिन ये तो अभी मेरठ शहर ही है। अचानक बस खिसकी और हम कितने खुश हुए, सचमुच, इसका बयान नहीं कर सकते। आहिस्ता, आहिस्ता, बस खिसकती गयी और बाद में, हमें पता लगा कि सरदारों का एक बहुत बड़ा जुलूस निकल रहा था और उस जुलूस ने सारा ट्रैफिक रोक रखा था। हमें बुरा नहीं लगा, क्योंकि हम धर्मनिरपेक्ष देश के नागरिक हैं। सब धर्मों को आजादी है तब शिकायत हम किस धर्म से करें। लोग वैसे ही अभी घोर नास्तिक कहते हैं फिर कहने लगेंगे, 'राक्षस है।' हमने अपने पास बैठे एक यात्री से कहा—"प्यारे भाई, आज तो सफर में मजा आ गया।"

"ऐसा क्या हुआ?" उसने पूछा। "अजी बस, बहुत अच्छा हुआ। अपनी कार पर आये होते तो पूरे एक घंटे जो तकरीर हमने सुनीं, सुन पाते। आखिर, यह तो जनता की आवाज है . . .।"

हम अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाये थे कि बस फिर रुक गयी और आदमियों का एक बहुत बड़ा रेला भीतर घुस आया। कंडक्टर पीछे से आवाज लगा रहा था—"अरे, आगे की सवारियों और आगे खिसको। खड़ी सवारियां ड्राइवर के पास तक पहुंचे।" कुछ तो आगे बोनट पर जा बैठीं और कुछ ड्राइवर की सीट के पास ठीक दरवाजे पर। खूब है भई, हवा में भी बड़ी ताकत होती है। हवा भरे टायरों पर खड़ा बस का इतना बड़ा ढांचा, और उस ढांचे के भीतर इतनी ढेर-सी सवारियां! . . . शोर . . . शोर . . . शोर! आप किसी से बात भी करना चाहें, तो नहीं कर सकते।

इतनी सवारियों को भरकर बस चल पड़ी। लेकिन कम्बख्त किस्मत हमारी ही खराब थी कि हम जितनी जल्दी पहुंचने की सोच रहे थे, बस उतने ही मजे लेकर चल रही थी। हर सौ कदम पर सवारी बैठालने के लिए बस रोकी जा रही थी और हर मील पर सवारी उतारने के लिए भी। वैसे थी वह एक्सप्रेस बस। धीरे-धीरे पीछे की सारी बसें जोर का शोर कर आगे निकलती जा रही थीं। बस के भीतर से आवाजें—

"ड्राइवर साहब, सड़क पर ही रात बिताना चाहते हैं!"

"बाल-बच्चे नहीं होंगे घर में!"

"मीटिंग-शीटिंग, इन्हें उससे क्या मतलब!"

"अरे घर में गमी हो गयी होगी, दुःखी है बेचारा!"

इनके बीच से एक जोर की चीखती आवाज, "अरे ड्राइवर साहब कार-वार चलानी आवै है कि नहीं।"
दूसरी आवाज, "नया-नया लाइसेंस मिला होगा।"

एक जोर का ब्रेक . . . सारी सवारियां

एक दूसरे पर गड्डमगड्ड। कुछ की तो चीख निकल गयी। गाड़ी रुक गयी और ड्राइवर साहब सीट से उतरकर नीचे खड़े हो गये। "क्यों खड़े हो गये?" लीजिए इस पर भी एक खासी बहस छिड़ गयी। हर आदमी अपनी बात कह रहा था, जबकि हर कोई एक ही जगह था। हम परेशान नहीं थे। ढाई लाख की बस में बैठे थे। कोई हमारी टुच्ची-सी 'फीयट' कार थोड़े-ही थी। हमने आस-पास नजरें दौड़ायीं। दीवारों पर दिलचस्प नारे लिखे थे।

—बवासीर का अक्सीर इलाज।
—दुल्हन वही जो अंमुकजी दिलवाएं।
—रिश्ते ही रिश्ते, मिल तो लें।
—हवा की चाल चले, हीरो साइकल।

इन नारों को पढ़कर हमें मजा आ रहा था और बस के भीतर, जो दिलचस्प बहसें हो रहीं थीं, जिनका विषय राजनीति से लेकर धर्म-शास्त्र और समाज-शास्त्र तक था, एअर कंडीशन कारों! अथवा बंद कमरों में कहां सुनने को मिलेगा। थोड़ी देर बाद, ड्राइवर साहब अंगड़ाई लेते हुए अपनी सीट पर जा विराजे, और पीछे पलटकर आवाज कसी, "खबरदार! किसी ने मेरे बारे में कुछ कहा तो, वरना, बस तो ऐसे ही चलेगी।"

सारी सवारियां परेशान थीं। इसलिए एक साथ सारी आवाजें उठीं—"नहीं भैया, हमने कान पकड़े, कुछ नहीं कहेंगे।"

"यह हुई ना बात।" और ड्राइवर ने तेजी से गाड़ी स्टार्ट की और पवन-गति से ढाई लाख की बस खुली सड़क पर चलने लगी। तब अंधेरा हो गया था, हमने अपने कार्यक्रम में पहुंचने की सारी आशाएं छोड़ दी थीं, लेकिन खुशी थी कि बस चल तो रही है। सवारियां मजे में भुनी हुई मूंगफलियां खाकर सारे छिलके वहीं फेंक रही थीं, और खुश थीं कि ड्राइवर के पास सचमुच लाइसेंस है।

सच मानिए यह पास का सफर ढाई लाख की बस में, जिंदगी में बहुत कम किया है। आज करना पड़ रहा है, तो मजे ही आ गये। देश की सही तसवीर और जनता की सही हालत देखने को मिल गयी। इस पूरे वाकया का 'क्लाइमेक्स' तो और भी मजेदार है। दिल्ली बार्डर पर आकर अचानक बस इतनी जोर से रुकी कि हमारे तो होंठ ही कट गये। तीन-चार सवारियां घायल, और ड्राइवर साहब की घोषणा कि इंजन खराब हो गया है। गाड़ी आगे नहीं जाएगी। खुदा बचाये ऐसे सफर से। हमने तो वहीं से रिक्शा पकड़ा। बाकी सवारियों का क्या हाल हुआ, वे ही जानें। ●

दिल्ली के तिहाड़ जेल में किसी भी बंदी का इंटरव्यू लेने पर सख्त प्रतिबंध है, लेकिन कुछ समय पूर्व एक विदेशी पत्रकार डेनिस रेन हार्ट ने 'अंतर्राष्ट्रीय अपराधी' चार्ल्स सोबराज का एक इंटरव्यू रिकार्ड किया, जो नीदरलैंड रेडियो से प्रसारित भी हुआ। यहां प्रस्तुत है, 'कादम्बिनी' के लिए विशेष रूप से उपलब्ध चार्ल्स सोबराज के इंटरव्यू के कुछ अंश

—सं०

तिहाड़ जेल में मादक द्रव्यों की तस्करी

प्रश्न—आपने अपने मुकदमों को उच्च न्यायालय से लेकर उच्चतम न्यायालय में लड़ा है, इसके लिए बहुत बड़ी धन-राशि की जरूरत होती है। आपने इतना धन कहां से प्राप्त किया ?

उत्तर : इस पैसे में मुझे कुछ पैसा उस किताब को लिखने के कांट्रेक्ट से मिला, जिसे मैं लिख रहा हूं, तथा कुछ पैसा मुझे अन्य स्रोतों से मिला ।

प्रश्न—ऐसा कहा जाता है कि आपके आय के स्रोतों में वह स्रोत भी है, जिसे आप तिहाड़ जेल में भी रखे हुए हैं, कहा ज़ाता है कि समूची जेल और जेल के अंदर की सारी गतिविधियों का नियंत्रण आपके हाथों में है ।

उत्तर : यह कहना कि मैं जेल को चला रहा हूं और उससे फायदा कमा रहा हूं, इस बारे में मैं कहूंगा कि 'नहीं' मैं इससे कोई भी आंशिक लाभ नहीं उठा रहा हूं । और अगर ऐसा मान भी लिया जाए कि मैं जेल को चला रहा हूं, तो वह यहां के कैदियों के भले के लिए ही है । क्योंकि पहले यहां के कैदियों की जिंदगी बहुत भयानक थी । और जब हमने, यानी मैंने उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर की, तथा जेल अधिकारियों द्वारा भ्रष्ट आचरण की शिकायतें की । मैंने जो भी सामग्री प्रस्तुत की है, वह कैदियों के लिए अधिक से अधिक सुविधा जुटाने के लिए की है ।

प्रश्न—कुछ समय पहले जेल के अधिकतर वार्डरों ने उपद्रव किया, और तुम्हें मारने की कोशिश की । ऐसा क्यों हुआ ?

उत्तर : क्योंकि मैंने पिछले वर्षों में उनके खिलाफ बहुत-सी शिकायतें दर्ज करायी थीं, विशेषकर मादक द्रव्यों की तस्करी संबंधी शिकायत । वार्डर बाहर से हशीस, अफीम आदि मादक द्रव्यों की तस्करी कर के जेल में लाते हैं और उन्हें कैदियों को बेचते हैं । दरअसल, यही धंधा उनकी आय का मुख्य साधन है ।

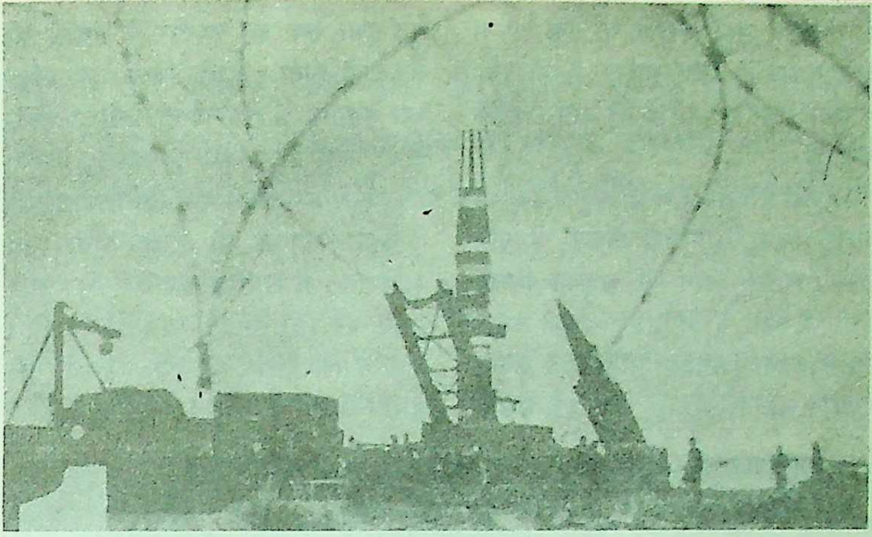

हम महायुद्ध के कगार पर खड़े हैं!

● डॉ. इन्द्रनील मिश्र

“ताज्जुब की बात है। तुम्हारे देश पर युद्ध का खतरा मंडरा रहा है और यहां चारों ओर बे फिक्री का आलम है। लगता है, जैसे किसी को किसी बात की चिंता ही नहीं है।”

यह ख्याल था, मेरे एक विदेशी पत्रकार मित्र का, जो नीदरलैंड से पाकिस्तान होते हुए भारत आये थे। नयी दिल्ली के एक 'फाइव स्टार' होटल में भारतीय उप-महाद्वीप की वर्तमान स्थिति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने उपरोक्त टिप्पणी की थी। उनका कहना था कि पाकिस्तान में उनकी अनेक महत्त्वपूर्ण लोगों से भेंट हुई। वे पाकिस्तान के फांसी पर लटका दिये गये प्रधानमंत्री भुट्टो की विधवा पत्नी बेगम भुट्टो से भी मिले। पाक प्रेसीडेंट जिया-उल हक के अनेक विरोधियों से भी उनकी बातें

हुई। सबका यही ख्याल था कि अपना तख्ता बचाने के लिए जनरल जिया-उल-हक अपने वतन को लड़ाई की आग में झोंक सकते हैं।

अपनी बात के समर्थन में मेरे विदेशी पत्रकार मित्र ने प्रसिद्ध लेखक डेरमांड मॉरिस का यह कथन भी उद्धृत किया, **'किसी भी नेता के लिए एक अच्छी लड़ाई खासी मददगार साबित होती है। लड़ाई के बहाने वह तानाशाह बना रह सकता है। साथ ही, अपने देश की जनता का प्यार भी उसे भरपूर मिलता है। वही खतरा हमेशा लोगों को संगठित होकर रहने की प्रेरणा देता है।'**

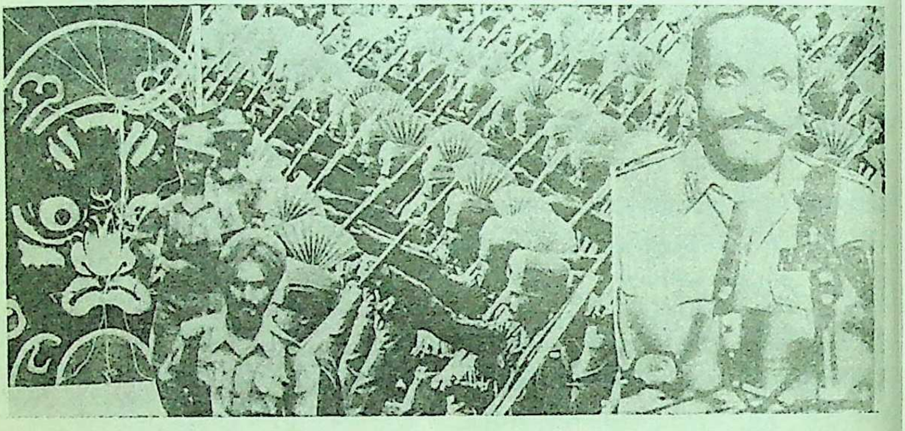

क्या सचमुच एक बार फिर भारत-पाक युद्ध छिड़ सकता है? यदि ऐसा युद्ध हुआ, तो क्या होगा और उसका अंतिम परिणाम क्या होगा?

इन प्रश्नों पर कई बार विचार किया जा चुका है। अगर भारत-पाक के बीच युद्ध हुआ, तब वह कश्मीर के सवाल को लेकर ही होगा। पिछले दिनों पाक अधिकृत कश्मीर के तथाकथित प्रेसीडेंट ब्रिगेडियर मोहम्मद हयात ने पेशावर में एक महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिया। ब्रिगेडियर हयात ने कहा, 'कश्मीर की मुक्ति तथा उसे पाकिस्तान में शामिल करने के लिए सही समय पर सारे उपाय आजमाये जाएंगे। और इसके लिए 'आजाद कश्मीर' की जमीन 'बेस कैंप' का काम देगी।' ब्रिगेडियर हयात का यह वक्तव्य पिछले कुछ समय से कश्मीर और पाकिस्तान की सीमा से जुड़े भारतीय इलाके में घटी घटनाओं के प्रकाश में और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

कश्मीर में पाकिस्तानी घुसपैठिये इधर काफी सक्रिय हो गये हैं। घाटी में हुए विभिन्न दंगों में भी कई बातें समान पायी गयी हैं। यही नहीं, कहा जाता है कि पिछले दिनों अंबाला के फौजी हवाई

'कश्मीर की मुक्ति तथा उसे पाकिस्तान में शामिल करने के लिए सही समय पर सारे उपाय आजमाये जाएंगे। और इसके लिए 'आजाद कश्मीर' की जमीन 'बेस कैंप' का काम करेगी'

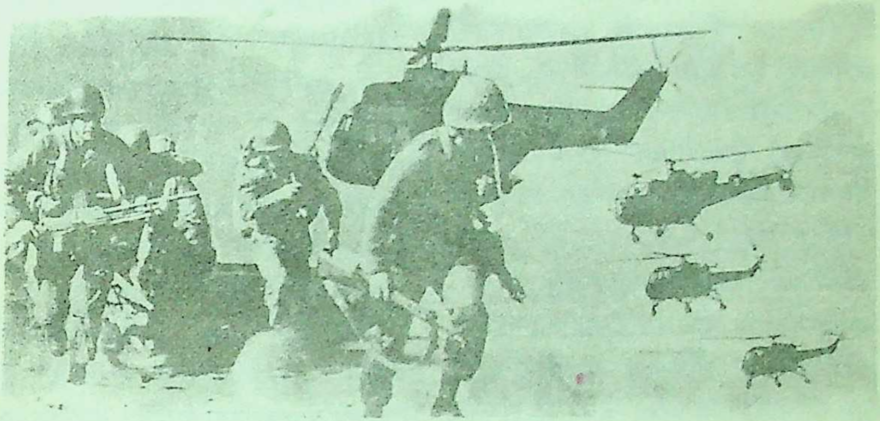

अड्डे के पास बने एक बारूदखाने में ऐसी भयंकर आग लगी कि चौबीस घंटों के प्रयत्नों के बावजूद, उस पर काबू न पाया जा सका। कुछ दिनों बाद इसी हवाई अड्डे पर उड़ान भरते समय एक मिग विमान में आग लग गयी और उसके चालक को तमाम कोशिशों के बावजूद न बचाया जा सका।

कश्मीर को लेकर युद्ध होने की आशंका और भी कई कारणों से बलवती हो गयी है। पिछले दिनों सोवियत समाचार पत्र 'प्रावदा' ने एक समाचार प्रकाशित किया था, जिसके अनुसार चीन 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑव कश्मीर' नामक एक पृथक देश को बनाने की योजना पर काम कर रहा है। इस नये 'रिपब्लिक' में पाक अधिकृत कश्मीर के अलावा भारत का जम्मू-कश्मीर-वाला हिस्सा भी शामिल किया जाएगा। चीन चाहता है कि नेपाल और भूटान की तरह यह नया 'रिपब्लिक' भी उसके और भारत तथा पाकिस्तान के बीच 'बफर स्टेट' की भूमिका निबाहे।

अमरीका के नये प्रेसीडेंट रीगन और उनके प्रमुख सलाहकारों में रिचर्ड निक्सन

भारत पाक सैन्य-बल

भारत-पाकिस्तान के बीच अब तक तीन युद्ध हो चुके हैं—पहला, सन १९४७ में जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया। दूसरा, अप्रैल १९६५ में कच्छ के रण में हुआ। तीसरा युद्ध ३ दिसम्बर, १९७१ को हुआ, जब पाकिस्तान ने भारतीय विमान तलों पर हमला किया था।

के 'बदनाम' विदेशमंत्री डॉक्टर हेनरी किसिंगर का होना अनिवार्य है। रीगन के अमरीकी प्रेसीडेंट होने से दुनियाभर के तानाशाहों और सोवियत-विरोधी शासकों को बेहद खुशी हुई है। जनरल जिया भी उनमें से एक हैं।

रीगन की उपस्थिति : शीत-युद्ध

वाशिंगटन के ह्वाइट हाउस में रीगन की उपस्थिति शीत-युद्ध की वापसी का सूचक मानी जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के पर्यवेक्षकों का विचार है कि यद्यपि अमरीकी प्रेसीडेंट पद पर निर्वाचित होने के बाद रीगन की उग्रवादी विचार-धारा पर अंकुश लग गया है, फिर भी उनके चिंतन में कोई मूलभूत परिवर्तन हुआ है, ऐसा पर्यवेक्षक नहीं मानते।

रीगन और उनके समर्थक अमरीका की खोयी हुई 'प्रतिष्ठा' को पुनः पाने के लिए कृत संकल्प हैं। वे चाहते हैं कि विश्व के सारे छोटे-बड़े देश अमरीकी सैन्य-शक्ति का लोहा मानें और सोवियत संघ को 'घेरने' की उनकी शतरंज पर मोहरे की भूमिका निबाहें।

अमरीकी सैन्य-शक्ति

मनोनीत अमरीकी प्रेसीडेंट रीगन ने अपने चुनाव-प्रचार में अमरीका के तेजी से घटते सैन्य-प्रभाव को एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बनाया था। अमरीकी जनता उस बात से चिंतित है कि जहां एक ओर सोवियत सैन्य-शक्ति बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर अमरीकी प्रतिरक्षा पहले-जैसी सक्षम नहीं रही है। कुछ उग्रवादी अमरीकी इस बात से भी दुःखी हैं कि वे अब अपनी इच्छानुसार विश्व में कहीं भी युद्ध नहीं छेड़ सकते। अमरीका के सेना-प्रमुख जनरल एडवर्ड सी. मेयर ने तो सार्वजनिक रूप से शिकायत की है कि वे एक 'खोखली सेना' का नेतृत्व कर रहे हैं।

निस्संदेह प्रेसीडेंट रीगन अपने कार्यकलापों द्वारा अमरीका की खोयी हुई प्रतिष्ठा वापस लाना चाहेंगे। अमरीका को अरब देशों और ईरान के कारण काफी नीचा देखना पड़ा है। रीगन यदि इन देशों को 'सबक' सिखाने की कोशिश करें, तो कोई आश्चर्य नहीं। अरब-देशों के खिलाफ उनके पास इजरायल के रूप में एक अच्छा हथियार है।

प्रे. रीगन के सलाहकार इस समय ईरान-इराक युद्ध के अंतिम परिणाम की प्रतीक्षा में है। दोनों देशों के बीच युद्ध से जन-धन की भारी हानि हुई है। उधर पश्चिमी

एशिया में जोर्डन और सीरिया के बीच भी तनाव की स्थिति बनी हुई है। युद्ध की स्थिति में जोर्डन को अमरीकी समर्थन और सहायता प्राप्त होगी, जबकि सीरिया की पीठ पर सोवियत हाथ होगा। अतः यह क्षेत्र भी महायुद्ध के बीज के लिए एक उर्वरा-भूमि सिद्ध होगा।

रीगन और 'तीसरी दुनिया'

रीगन-समर्थक 'तीसरी दुनिया' के देशों को दो खेमों में बांटते हैं। एक वे, जो 'अच्छे' हैं--अर्थात अमरीकी समर्थक देश-जैसे पाकिस्तान। दूसरे वे, जो 'बुरे' हैं, अर्थात, जो हर मामले में अमरीका की 'हां' में 'हां' नहीं मिलाते हैं। ऐसे देशों में भारत भी है। रीगन के प्रेसीडेंट-पद पर चुनाव के बाद हेनरी किसिंगर ने पाकिस्तान के प्रति सहानुभूति-पूर्ण रुख अपनाने की बात कही। अतः जिया के हौसले बढ़ जाएं तो कोई आश्चर्य नहीं।

यदि तमाम चेतावनियों और खतरों के बावजूद भारत-पाक युद्ध छिड़ गया तो? निश्चित ही पाकिस्तान को इसकी काफी कीमत चुकानी पड़ेगी। यही तथ्य भारत-पाक युद्ध को रोकनेवाला भी सिद्ध होगा। और भी अनेक तथ्य हैं, जिनके कारण जनरल जिया को भारत के खिलाफ लड़ाई छेड़ने के पहले कई बार सोचना पड़ेगा। उदाहरण के लिए पाकिस्तान के साथ युद्ध की स्थिति में भारत सोवियत संघ के साथ हुई अपनी संधि के तहत मदद ले सकता है। यद्यपि जनरल जिया ने भारत में हुए दंगों को अरब देशों में पूरी तरह 'भुनाने' की कोशिश की है, तथापि भारत के साथ हुए युद्ध में वे पाकिस्तान की कितनी मदद करेंगे, यह नहीं कहा जा सकता। लीबिया के गद्दाफी, जनरल जिया का तख्ता उलटने की कोशिशों में सहायक बताये गये हैं। और भी अनेक अरब-प्रमुख भुट्टो को फांसी पर चढ़ाने के लिए जनरल जिया से नाराज हैं, अतः उनसे भी पाक प्रेसीडेंट को ठोस सहायता मिलेगी, कहना कठिन है।

आक्रमण कब ?

'इंस्टीट्यूट फार डिफेंस स्टडीज एंड एनेलेसिस' के निदेशक के. सुब्रमण्यम के अनुसार यदि पाकिस्तान मिराज विमान द्वारा ले जाये जाने योग्य कुछ किलो टन के ही आणविक हथियार बना लेता है, तो वह पराजय की आशंका किये बिना भारत पर आक्रमण करने में पहल कर सकता है।

इन सबके अतिरिक्त जनरल जिया, भारत की सैन्य-शक्ति की उपेक्षा करने की गलती नहीं कर सकते। आज भारत विश्व के सैन्य-शक्ति की दृष्टि से प्रमुख दस देशों में से एक है।

अतः उम्मीद तो यही करनी चाहिए कि जनरल जिया पिछली लड़ाइयों के अनुभवों से सबक लेंगे, पर ऐसी ही उम्मीद तो प्रेसीडेंट याह्या खां से भी की गयी थी। क्या प्रेसीडेंट जिया-उल-हक भी पुरानी गलती दोहराने जा रहे हैं? ●

चुटकियां

दांतों का डाक्टर : "शायद तुम्हारी सारी दाढ़ें निकालनी पड़ें, क्या तुम्हारे पास इतना पैसा है कि सब दाढ़ों के निकालने का पैसा दे सको ?"

मरीज : "अगर मेरे पास सब दाढ़ों की फीस देने के लिए पैसा न हो, तब भी क्या सारी दाढ़ों को निकलवाने की जरूरत पड़ेगी ?"

Pankaj Goswami - '

"एक मिनट में कितनी सेंकिड होती हैं ?" श्रीमानजी ने श्रीमतीजी से पूछा, "तुम्हारा मतलब किस मिनट से है ?" "तुम्हारे एक मिनट से कि अभी आती हूं वाले मिनट से ।" श्रीमानजी का उत्तर था ।

श्रीमानजी की जेब कट गयी तो वह अपने मित्र से बोले, "चलो, चाय पीकर खुशी मनाएं ।"

"जेब कट जाना कोई खुशी की बात है क्या ?" मित्र ने पूछा ।

"हां, मेरे लिए तो बिलकुल ही खुशी की बात है । तुम्हें पता नहीं, जेब में श्रीमतीजी की दी हुई एक लंबी लिस्ट थी——क्रीम, पाउडर और लिपिस्टिक बगैरह - बगैरह, जिसका बजट पचास रुपये का था । और मेरी जेब में था कुल दस का एक नोट ।"

"दफ्तर से भागने की मेरी आदत रही है । आलिम्पिक में मुझे भेजा जाता तो मैं दौड़ का खिताब जीतकर आता ।"

किस्से खोजा फकीर के

(२०)

एक बार खोजा फकीर के प्रशंसकों व शिष्यों ने उनसे शिकायत की कि आपका व्यवहार हमारे प्रति बहुत ही रूखा और उपेक्षा भरा रहता है, जबकि हम आपका बहुत ही मान-सम्मान करते हैं। यह सुनकर खोजा फकीर जोर से हंसे और बोले, “सुनो, इस बारे में मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं।”

“एक प्रसिद्ध सूफी संत हुए हैं—अल-अमूद। उनके पास दूर देश के कुछ सूफी ज्ञान प्राप्त करने के लिए आये। उनके आने की पूर्व सूचना होते हुए भी वह उनका स्वागत-सत्कार करने के लिए द्वार पर नहीं आये। उनके रहने-सहने व खाने-पीने की भी कोई खास व्यवस्था नहीं की। यहां तक कि पहले-पहल तो वह कुछ समय तक उनसे बोले भी नहीं।”

“इस व्यवहार से क्षुब्ध हो, वे एक दिन संत से इसका कारण पूछ ही बैठे। तब संत ने कहा कि अरे वह तो ज्ञान-वार्ता में हो इतने डूबे रहे कि उन्हें इस बात का समय ही नहीं मिला कि वह सोच पायें कि मान-सम्मान भी कोई चीज होती है, और वह भी जरूरी चीज।”

“संत ने आगे कहा, ‘यदि आपको मान-सम्मान चाहिए तो वह ज्ञान-प्राप्ति के साथ नहीं मिल सकता। मान-सम्मान तो केवल दूकान पर ही मिल सकता है, क्योंकि दूकानदार जानता है कि आप उसके यहां से सामान खरीदेंगे, इसलिए वही झुक-झुककर दुआ-सलाम कर सकता है। और दूसरे, मान-सम्मान आपको उन लोगों से मिल सकता है, जो आप से कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा रखते हैं। देखिए, मुझे तो आप से किसी प्रकार की कोई अपेक्षा है नहीं, इसलिए आप मुझसे ज्ञान तो प्राप्त कर सकते, मान-सम्मान नहीं।”

हा! हा!!

अस्पताल में भर्ती एक मरीज को नर्स से प्रेम हो गया। एक दिन उसने नर्स से कहा, “मैं इस अस्पताल को छोड़कर नहीं जाना चाहता।”

“बिलकुल ठीक बात है, डॉक्टर साहब भी ठीक करके अस्पताल से घर नहीं भेजना चाहते, क्योंकि वह भी मुझसे प्रेम करते हैं,” फिर एक गहरी सांस लेकर नर्स ने कहा, “डाक्टर साहब को यह भी पता चल गया है कि तुम भी मुझ से प्रेम करते हो।”

—योगेश कुमार

बच्चा : “क्या तुमने कभी सर्कस में काम किया है।”

मां : “नहीं तो? लेकिन तुम यह सवाल क्यों कर रहे हो?”

बच्चा : “सामनेवाली आंटी बराबरवाली आंटी से कह रही थी कि तुम डैडी को अपनी उंगलियों पर नचाती हो।”

—आर. के. जैन

चीनी कवि आई क्विंग की आपबीती

• सांस्कृतिक क्रांति के दौरान मुझे पेड़ों की पत्तियां खानी पड़ीं
• माओ ने सामंतवाद की जड़ें मजबूत कीं
• लम्बी छलांग एक भयंकर भूल थी

• राजन राहू

चीन अपनी प्राचीनतम सभ्यता और संस्कृति के कारण अतीत से लेकर आज तक एक महत्त्वपूर्ण देश माना जाता रहा है। आज से दो दशक पूर्व चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष माओ-त्से तुंग के नेतृत्व में वहां बहुचर्चित 'सांस्कृतिक-क्रांति' हुई। इस सांस्कृतिक-क्रांति के दौरान चीन के बुद्धि जीवियों, कवियों, कलाकारों को किस प्रकार शारीरिक-मानसिक यंत्रणाएं दी गयीं। इसका ज्वलंत उदाहरण है—चीन के सुप्रसिद्ध कवि आईक्विग।

चीन के काव्य-जगत में गीतों के राजकुमार के रूप में जानेवाले आईक्विग का जन्म सन १९१० में हुआ था। पेशे से वे एक डॉक्टर थे तथा बीस वर्ष की उम्र से ही वे कविताएं लिखने लगे थे। सन १९५७ से पूर्व उनकी कविताएं चीन के विद्यालयीन पाठ्यक्रम के अंतर्गत स्कूलों में पढ़ायी जाती थीं। सांस्कृतिक-क्रांति के दौरान सन १९६१ में इस सुप्रसिद्ध कवि को सार्वजनिक जीवन से निष्कासित कर दिया गया और गिरफ्तार करके जिंगजांग शहर भेज दिया गया, जहां पर उन्हें पूरे पंद्रह वर्ष तक घोर अमानवीय यंत्रणाओं को भोगना पड़ा।

अभी हाल ही में एक विदेशी पत्रकार से अपनी भेंट में आईक्विग ने बताया, "निष्कासन के दौरान मुझे न केवल पेड़ों की पत्तियां खा-खाकर अपना गुजारा करना पड़ा, बल्कि सार्वजनिक संडासों को भी साफ करना पड़ा। इस बीच मेरी एक आंख की रोशनी भी जाती रही।" १९७६ में उन्हें पीकिंग जाने की अनुमति दी गयी, ताकि वह अपना इलाज करा सकें। अब वे स्वस्थ हैं तथा सार्वजनिक जीवन में वे पुनः सक्रिय हो गये हैं। आज-

चीन में आज से दो दशक पूर्व अध्यक्ष माओ-त्से तुंग के नेतृत्व में कथित सांस्कृतिक-क्रांति हुई। इस सांस्कृतिक-क्रांति के दौरान चीन के विख्यात कवि आईक्विग को पेड़ों की पत्तियां खाकर गुजारा करना पड़ा तथा सार्वजनिक संडासों को साफ करना पड़ा। गुमनामी के अंधेरे में खोये हुए आईक्विग की नयी पार्टी के लोगों ने समझा कि वे मर चुके हैं। प्रस्तुत है सांस्कृतिक-क्रांति के दौरान चीन की व्यथा-कथा की एक झलक —सं.

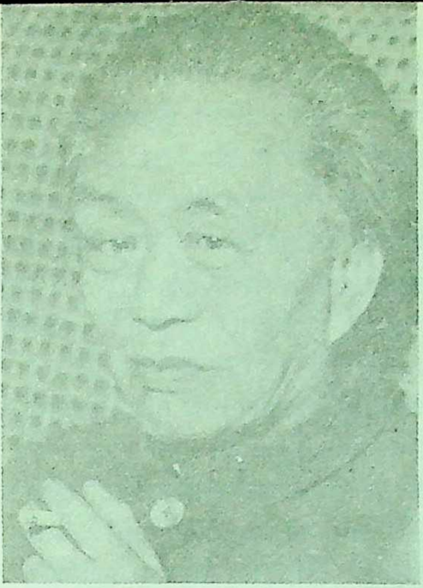

आईक्विग

कल आईक्विग 'चाइनीज राइटर्स एसोसीएशन' के उपाध्यक्ष हैं।

सांस्कृतिक-क्रांति और आईक्विग

आईविवग 'सांस्कृतिक-क्रांति' के पूरे दौर को उच्छृंखलता तथा अव्यवस्था का युग निरूपित करते हैं। उनके अनुसार इस कथित क्रांति ने चीन के साहित्य-जगत का सर्वनाश कर दिया। उस समय 'गैंग ऑव फोर' नामक चंडाल चौकड़ी द्वारा चीन के रचनाकारों को निर्देश दिये जाते थे कि वे क्या लिखें और कैसे लिखें। कोई भी ईमानदार रचनाकार उन निर्देशों के अनुसार सृजन नहीं कर सकता था, क्योंकि उन निर्देशों के अनुसार केवल प्रचार-साहित्य ही लिखा जा सकता था।

"कारावास के दौरान बुद्धिजीवियों से अलस सुबह से गये रात तक इतना शारीरिक श्रम कराया जाता था कि उनमें लिखने की सामर्थ्य जरा भी न बच रहे। इन सत्रह वर्षों में चीन में एक सांस्कृतिक और साहित्यिक शून्यता व्याप्त रही है। इस दौरान एक पूरी पीढ़ी शिक्षा से वंचित रही है।" आईक्विग ने भेंट के दौरान यह तथ्य भी दोहराया।

"सांस्कृतिक-क्रांति का नेतृत्व जिआंग क्विग कर रही थीं। इन्होंने सांस्कृतिक-क्रांति के नाम पर चीन की संस्कृति और शिक्षा को इतना नष्ट किया है कि यदि इस कथित सांस्कृतिक क्रांति की चंडाल चौकड़ी की अगुआ जिआंग क्विग को मत्यु-दंड भी दे दिया जाए तो इस क्षति की पूर्ति नहीं की जा सकती। इस सांस्कृतिक-क्रांति से किसी का भला नहीं हुआ। हां, चीन-वासियों ने इस तथाकथित

सांस्कृतिक-क्रांति से शिक्षा ली है तथा वह पूरी तरह जागरूक हो गया है। यदि इस प्रकार की कोई भी प्रवृत्ति चीन में अब सिर उठायेगी, तो उसे प्रारंभ में ही कुचल दिया जाएगा।"

आईक्विंग की दृष्टि में माओ

आईक्विंग सन १९४१ में माओ-त्से तुंग से येनान में मिले थे। उनसे मिलने पर आईक्विंग ने सोचा था कि माओ एक सुशिक्षित, सुसंस्कृत, विनोदप्रिय, तथा सिद्धांतवादी व्यक्ति होंगे। बाद में माओ के व्यवहार और आचरण में जो बदलाव आया, उससे आईक्विंग को स्वयं काफी विस्मय हुआ। अपने निष्कासन के दौरान फिर वे कभी माओ से नहीं मिल सके।

आईक्विंग के अनुसार, "माओ ने अपनी जिंदगी में काफी भूलें की थीं और उनके द्वारा संचालित कथित 'लंबी छलांग' आंदोलन उनके जीवन की सब से बड़ी भूल थी। इस आंदोलन के बाद चीन का वातावरण एक जेल की तरह हो गया। उस समय के बाद चीन की गृह-नीति, और पार्टी के निर्देश तथा नीतियां इतनी गुप्त रखी जाती थीं कि आज भी प्रमाण के रूप में, उस समय के वरिष्ठ कार्डधारी अधिकारी ही कुछ बता सकते हैं।"

माओ ने सामंतवाद को बढ़ाया

आईक्विंग का कहना है कि चेयरमेन माओ के नेतृत्व में चीन में जो क्रांति हुई, उसने क्रांति के राष्ट्रीय-लक्ष्य को स्थानांतरित कर दिया। तत्कालीन चीनी-समाज की लड़ाई साम्राज्यवाद तथा सामंतवाद के खिलाफ थी, लेकिन माओ के नेतृत्व में हुई इस क्रांति ने सामंतवाद की जड़ों को चीन में और मजबूत किया। यह सामंतवाद विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग तथा कार्डधारी उच्चाधिकारियों के माध्यम से काफी पनपा।

माओ के बाद का चीन

माओ-त्से तुंग की मृत्यु के बाद चीन की सामाजिक आर्थिक तथा विदेश नीतियों में परिवर्तन आये हैं। चीन ने लोहे की दीवारों के बाहर की ताजा हवा ली है। विचार, उत्पादन और संपर्क के स्तर पर बहुत दिनों से व्याप्त संवादहीनता की स्थिति टूटी है। फिर भी अभी चीन की लौह-दीवार के दरवाजे पूरी तरह नहीं खुल पाये हैं। पश्चिमी विचारों एवं पश्चिमी उत्पादनों ने चीन के बंदीगृह जैसे वातावरण में एक उत्तुंग लहर की तरह प्रवेश किया है। किंतु, बंदीगृह की जड़ें अभी पूरी तरह, यह लहर हिला नहीं पायी है।

चीन के बुद्धिजीवी लेखक-कवि माओ की मृत्यु के पश्चात अपने को अधिक स्वतंत्र अनुभव कर रहे हैं। आम जनता में आत्म विश्वास बढ़ा है। कुछ अच्छी नीतियों का कार्यान्वयन अवश्य होगा, ऐसा उनका विश्वास है। वे आशाभरी दृष्टि से भविष्य को देख रहे हैं।

—रामपुरा, कोटा, राजस्थान

पुरस्कृत-विचार

विचार-दीर्घा

--११

विचार दीर्घा--११ का विषय था--'प्रजातंत्र में जनता का दायित्व।' इस चर्चा में भाग लेनेवाले अधिकांश पाठकों का मत था कि सफल प्रजातंत्र में जनता का दायित्व अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। जब तक जनता अपने दायित्व के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक नहीं होती, तब तक प्रजातंत्र सफल नहीं हो सकता।--संपादक

• प्रमिला शाह

दायित्व का प्रश्न अत्यंत सूक्ष्म एवं असूझ है, क्योंकि उसकी सीमाएं निर्धारित नहीं की जा सकतीं। फिर भी यह प्रश्न सामयिक है, क्योंकि यह अनुभव किया जाने लगा है कि 'प्रजातंत्र' के प्रति जनता अभी सजग नहीं है। दायित्व का अनुभव उचित राजनैतिक प्रशिक्षण से ही हो सकता है। अमरीका व इंग्लैंड-जैसे विकसित देशों में राष्ट्रवाद का बोध है, जबकि भारत में राष्ट्र की भावना का संबंध, मात्र १५ अगस्त और २६ जनवरी को झंडा फहराने तक सीमित है। जनता को पांच साल बाद गाय-भैंस-जैसे इकट्ठे करके पेटियों में वोट डलवा देने मात्र से प्रजातंत्र का दायित्व नहीं निभ जाता—यह हमारे नेताओं को सोचना चाहिए।

देश के हर नागरिक को जहां एक ओर निर्भय वातावरण में अपनी सभी संभावनाओं के विकास का सहज अवसर मिलना चाहिए, वहीं दूसरी ओर देश की एक सशक्त एवं दायित्वपूर्ण एकाई के रूप में भी उसका विकास होना चाहिए। जनता दायित्व का अनुभव तो बहुत बाद में करेगी, पहले उसे निश्चितता से मानसिक, शारीरिक व आत्मिक विकास के अवसर मिलने चाहिए।

जहां गरीबी के कारण को पंडे-पुरोहित पूर्व-जन्मों का फल कहकर पूर्ण विराम लगा देते हों और जहां नेता छल-छद्मों से देश की जनता को गुमराह करते हों, वहां जनता अपने दायित्व का अनुभव कर सकेगी, ऐसा सोचना दुराशा मात्र है। युवकों की सजग चेतना और जागरूकता के बीच से इन दोनों को हटा देना चाहिए।

राजनीति और भाग्यवाद के कुचक्रों से मुक्त होकर, हमारा युवक समाज जब अपनी ही अंत:चेतना से जीना सीखेगा, तभी उसे प्रजातंत्र में अपने दायित्व का एहसास होगा।

--११, प्रकाश हाउसिंग सोसाइटी
वेस्ट सांताक्रुज, बंबई

चट्टानों में फूल

श्रम के पत्तों को चबाता हूं
कीड़ा बन रेशम उपजाता हूं

बिजली के तारों पुरजों
भट्टियों और बल्बों
सभी के गीत गाता हूं
यंत्रों की निर्माणशाला में
कविता भी बनाता हूं
मैदान को ढूंढू कहां
चट्टान पर फूल उगाता हूं

फूल जो मौसम से झरेंगे नहीं
जड़ से हरगिज मरेंगे नहीं
इनको न जल चाहिए न खाद
आंधी तूफान से डरेंगे नहीं
जो फूल चट्टानों पर खिले हैं
उनसे भला कौन गले मिले हैं
कारखानों में कविता
और चट्टानों में फूल
बहुत कम जनमते हैं!
शायद इसीलिए
दुनिया से पहले वे
कभी नहीं मरते हैं!!

—राम निवास जाजू
७, श्रीराम रोड, दिल्ली-११०००६

बर्फ पड़ी है
बर्फ पड़ी है
सर्वश्वेत निस्तब्ध
प्रकृति पार्वती खड़ी है !
बर्फ पड़ी है !

– नागार्जुन

दूर जाती दृष्टि–निश्चल
शुभ्र घन हिम राशि केवल,
अकथनीय असंग सित सुख,
समाधिस्थ स्वयं विधाता !

– सुमित्रानंदन पंत

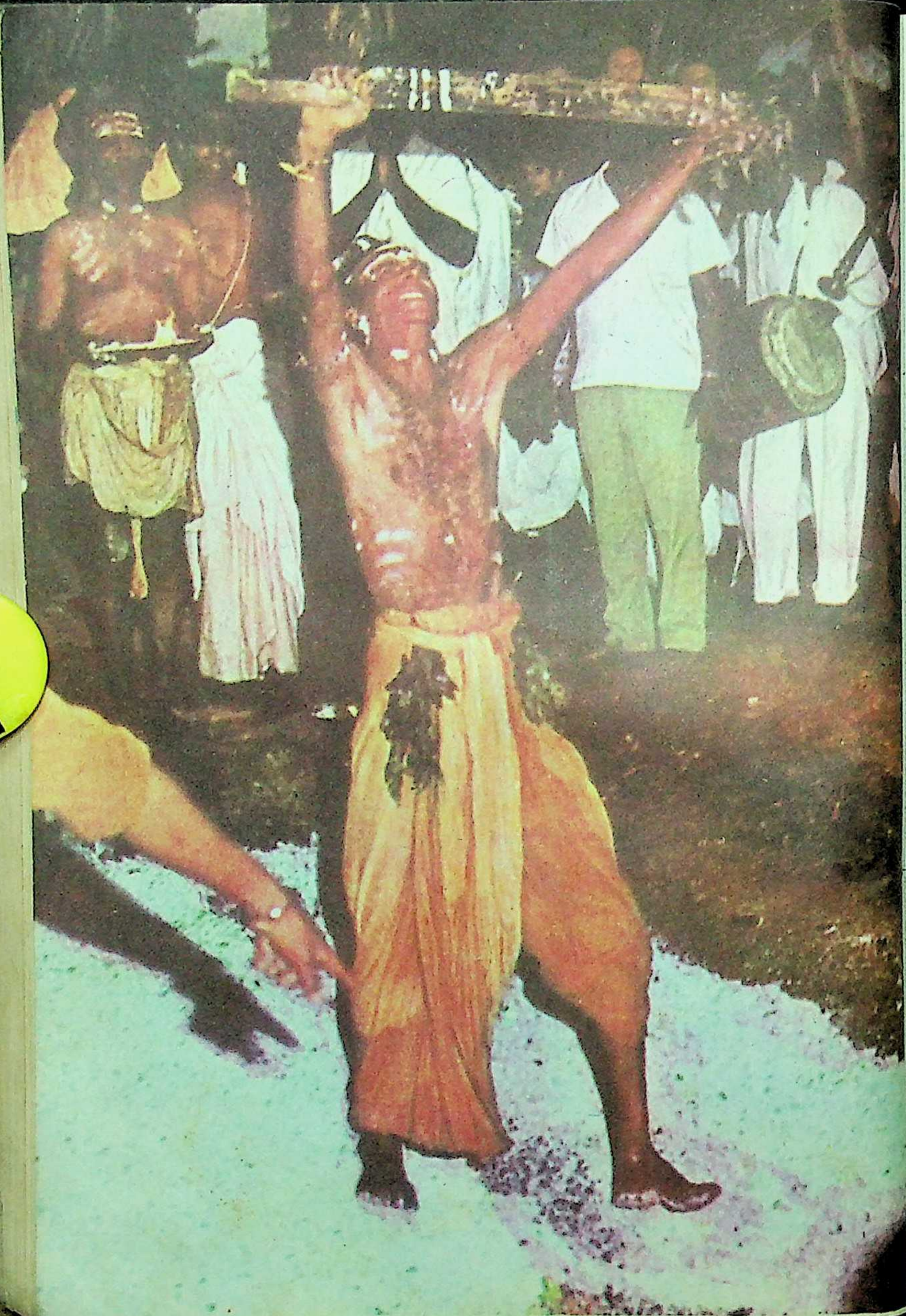

महासागर में तैरती सुन्दर धरती

● परमपत मातादीन (पत्रकार)

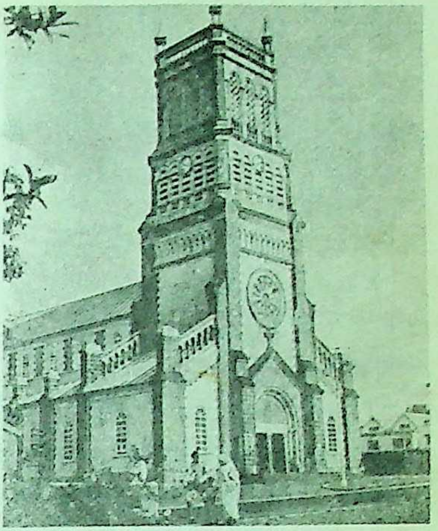

एकाएक——दोपहर में शाम का-सा धुंधलका छा गया। चक्रवात-बवंडर के साथ उफनती लहरों के विद्रोही ज्वार-भाटे उठने लगे। एक विस्फोट के साथ समुद्र के पानी की उष्णता बढ़ने लगी। लहरें उबलने लगीं। तभी दूरी पर सागर को फाड़कर पहाड़-सी कोई चीज ऊपर आती दिखायी पड़ी——समुद्र के बीच से निकलनेवाला ज्वालामुखी। सागर फेनिल ज्वारभाटों के साथ पीछे हटता गया और पहाड़ फैलते गये। धीरे-धीरे ज्वालामुखी शांत हुआ और इस तरह महासागर के बीच एक नये द्वीप का जन्म हुआ।

द्वीप, जो सदियों तक वीरान रहा। उसके सन्नाटे को तोड़ते रहे केवल समुद्री पक्षी। पर आज स्थिति भिन्न है। आज यह द्वीप विभिन्न संस्कृतियों और जातियों का एक गुलदस्ता है। यह मारिशस है——मेरी जन्म-भूमि——मेरे पूर्वजों की कर्म-भूमि!

अपने देश के इतिहास को पढ़ता हूं तो पता चलता है, लंबे समय तक धरती बंजर बनी रही। फिर धीरे-धीरे ठंडी होती गयी। ज्वालामुखी का विषाक्त प्रभाव कम होता गया। वनस्पतियों का उगना आरंभ हुआ। पक्षी और पशु भी पैदा होते गये।

पहला जहाज भारत का

पूर्वजों की स्मृति के अनुसार, इतिहास के धूमिल पन्नों से इस द्वीप को पहुंचनेवाला

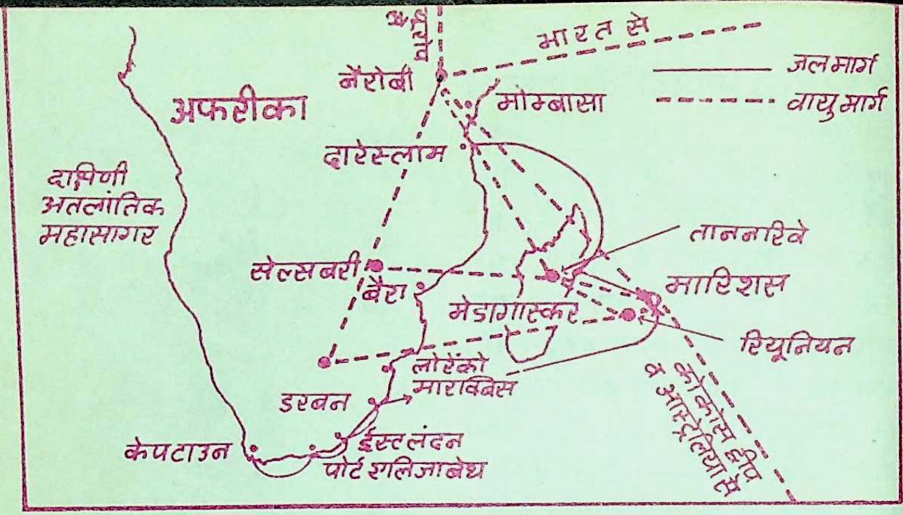
अदन से
भारत से
जलमार्ग
वायुमार्ग
नैरोबी
मोम्बासा
अफरीका
दारेस्लाम
दक्षिणी अतलांतिक महासागर
ताननारिवे
सेलसबरी
बैरा
मारिशस
मेडागास्कर
रियूनियन
लोरेंको माराक्विस
डरबन
ईस्टलंदन
केपटाउन
पोर्ट एलिजाबेथ
कोकोस द्वीप व आस्ट्रेलिया से

मारिशस के हवाई और समुद्री रास्ते

पहला जहाज, द्रविड़ नाविकों का था जो संभवत: दिशाहीन होकर इधर भटक आया था। उस समय द्वीप निर्जीव था। द्रविड़ नाविकों को जब अन्य जहाजों और लोगों के उधर पहुंचने की संभावना नहीं दिखी तब वे वहां से चल पड़े।

इसी तरह समय बीतता गया। ईसा के बाद पहली शताब्दी के आस-पास, भारत की ओर जाते हुए अरबों की नजर इस वीरान द्वीप पर पड़ी। उन्होंने भी संभवत: अधिक उम्मीद न करके इसे छोड़ दिया। इसी तरह समय-समय पर जातियां आती रहीं, जाती रहीं।

इतिहास के पन्ने कुछ स्पष्ट हुए। हिंद महासागर से यात्रा करते हुए सन १५०६ में पुर्तगालियों का आगमन इस द्वीप में हुआ। इसे बसाना जब उन्हें टेढ़ी खीर प्रतीत हुआ, तब वे आगे बढ़ गये। पुर्तगालियों के बाद डच लोग भी आये और गये। जमीन आसानी से अपना हृदय नहीं खोलती––उसे किन्हीं और हाथों का इंतजार था।

सोने के सब्ज बाग

डचों के बाद १७१५ में यहां फ्रांसीसी आये। भारत पर अधिकार जमाने के लिए फ्रांस और इंगलैंड के बीच संघर्ष था। भारत-विजय की सुविधा की दृष्टि से, फ्रांसीसियों ने इसी द्वीप से होकर, मद्रास में अंगरेजों के खिलाफ पहली लड़ाई लड़ी। इस द्वीप के महत्त्व को समझकर सन १८१० में अंगरेजों ने भी, भारतीय सेना के साथ फ्रांसीसियों पर आक्रमण किया और द्वीप उनके अधिकार में आ गया।

यहां से मारिशस में भारतीयों के आगमन की महत्त्वपूर्ण कहानी शुरू होती है।

चालाक अंगरेज उपनिवेशवादी, सोना मिलने के सब्ज बाग दिखाकर, भारतीय

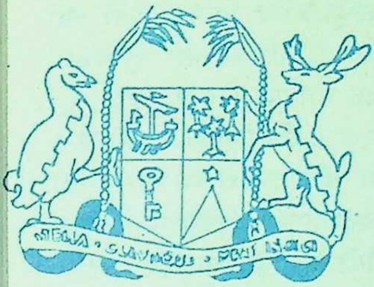
STELLA • CLAVISQUE • MARIS INDICI

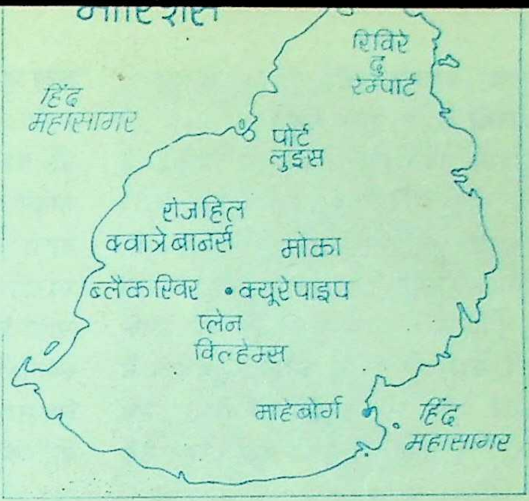
रिविर
द
रम्पार्ट
हिंद
महासागर
पोर्ट
लुइस
रोजहिल
क्वात्रे बार्नस
मोका
ब्लैक रिवर
क्यूरेपाइप
प्लेन
विलहेम्स
माहेबोर्ग
हिंद
महासागर

मजदूरों को मारिशस ले आये थे। वे भोले-भाले निरीह मजदूर अपनी जरूरत की मामूली-सी चीजें लेकर अपने परिवारों के साथ वहां पहुंच गये। उन्होंने वहां की चट्टानों को तोड़कर समतल बनाया, और उनकी मेहनत से वह धरती रसीले और ठोस गन्ने के रूप में सचमुच सोना उगलने लगी। आज मारिशस की सौंधी मिट्टी की गंध उनके खून और पसीने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

गांधीजी की प्रेरणा

लेकिन जिन भारतीयों के खून और पसीने से, वहां की चट्टानें उपजाऊ मिट्टी के रूप में परिवर्तित हुईं, उन्हें क्या मिला? निरंतर प्रतारणा, लांछन और अपमान! पर वे अपनी रखी नींव को खून और पसीने से सींचते रहे। १९०१ में दक्षिण अफरीका से लौटते हुए एक ऐतिहासिक दिन मारिशस की धरती पर महात्मा गांधी के कदम पड़े। वह मारिशस के गवर्नर जनरल चार्ल्स ब्रूस के यहां एक रात रुके। गांधीजी के आगमन से इस द्वीप को प्रेरणा मिली।

स्वतंत्रता प्राप्ति

सर शिवसागर रामगुलाम ने, गांधीजी के रास्ते पर चल कर चालीस वर्ष के अथक संघर्ष के बाद, १२ मार्च १९६८ को मारिशस की जनता को स्वाधीनता दिलाने में सफलता प्राप्त की। स्वतंत्रता प्राप्त होने पर उनकी लेबर पार्टी ने सत्ता संभाली और वे प्रधानमंत्री बने।

उन्हीं के प्रयत्नों से कभी का वीरान-बियाबान टापू —मारिशस, आज हंसता-खिलखिलाता उपवन है। सौंदर्य हमारे इस देश में चारों ओर बिखरा पड़ा है। सामारेल की सतरंगी भूमि, गंगा तालाब जिसे परी तालाब भी कहा जाता है, क्युर्पिम कात्रबोन और मुड़िया पर्वत यहां के

मुख्य आकर्षण हैं।

आदमी के सिरवाले पहाड़

मुड़िया पर्वत के विषय में प्रसिद्ध है कि यह परियों का स्वर्ग-विहार था। एक बार जब परियां यहां नृत्य में लीन थीं, तो एक दूधवाला वहां आ पहुंचा। परियों ने दूधवाले से प्रार्थना की, कि वह उनके बारे में किसी को न बताये। दूधवाले ने वचन देकर भी उनकी गोपनीयता भंग कर दी। परियों ने इससे क्रुद्ध होकर उसे शाप दे दिया, जिससे वह दूधवाला पत्थर का हो गया।

मुड़िया पर्वत के शिखर पर पत्थर की एक मानवाकृति दिखायी देती है। कहा जाता है, यह उस दूध वाले की ही आकृति है। इस आकृति में मनुष्य का सिर (भोजपुरी में 'मुड़िया') दिखायी देने से ही इसे मुड़िया पहाड़ कहा जाता है।

इस पहाड़ के साथ ही एक भव्य मंदिर भी बना है, जिसका विशेष धार्मिक-सांस्कृतिक महत्त्व है। मारिशस कृषि-प्रधान देश है। गन्ना और चाय यहां की मुख्य फसलें हैं। यों मारिशस की भूमि सभी प्रकार से उपजाऊ है। लीचियों तथा अन्य फलों के सुंदर बाग भी हैं।

मारिशस भारत और अफरीका के मध्य स्थित है। इसके सबसे निकट, ५०० मील की दूरी पर है—मैडागास्कर। निकट स्थित दो अन्य द्वीप हैं—रि यूनियन और सिशेल्स। ये दोनों ही मारिशस से छोटे हैं। इससे ६००० मील की दूरी पर है यूरोप!

मारिशस ४० और ३० मील के घेरे में सिमटा है, जिसका क्षेत्रफल ७२० वर्गमील है। पोर्टलुई यहां की राजधानी है।

छोटा भारत 'मारिशस'

यों तो मारिशस में विभिन्न धर्मों को मानने वाली, विभिन्न भाषाएं बोलने वाली अनेक जातियां निवास करती हैं। भारतीय मूल के लोगों की भांति ही अन्य भाषा-भाषी और धर्मावलंबी भी विभिन्न स्थानों से यहां आये थे। किंतु यहां बाहुल्य हम भारतीयों का ही है। भारतीय संस्कृति, यहां की संस्कृति के मूल में, मुख्य रूप से है। इसका कारण भी है। भारतीय मूल के लोगों ने, भारतीय भाषा और संस्कृति को, पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखा है और अगली पीढ़ियों को दिया है। रामायण, महाभारत, गीता, उपनिषद की कथाएं जन-जन में व्याप्त हैं। रामायण आदि ग्रंथ यहां घर-घर में पाये जाते हैं।

इसके साथ ही आर्य समाज आंदोलन ने भी, यहां के जन-जीवन के उत्थान में प्रमुख भूमिका निभायी है। जिसके फलस्वरूप हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार घर-घर में है।

यहां का स्वतंत्रता-संग्राम भी महात्मा गांधी से प्रेरणा पाकर, उन्हीं की पद्धति

से लड़ा गया। इन सब कारणों से हम लोग मारिशस-वासी होते हुए भी, सांस्कृतिक रूप से स्वयं को भारतीय समझते हैं। अतः मारिशस को भी एक छोटा भारत ही मानते हैं।

हिंदी-भाषी प्रधान-मंत्री

मारिशस में क्रिओल सर्वसाधारण की बोली है। भोजपुरी भी मारिशस के सर्वसाधारण की प्रमुख भाषा है। हमारे प्रधानमंत्री भी हिंदी-भाषी ही हैं। अंगरेजी सारे देश में समझी जाती है। फ्रेंच भी यहां की प्रमुख भाषा है। उर्दू भी व्यवहार में लायी जाती है।

मारिशस के सर्वांगीण विकास में भारतीय विशेषज्ञों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रायः सभी बड़ी इमारतें भारतीय इंजीनियरों ने ही बनायी हैं।

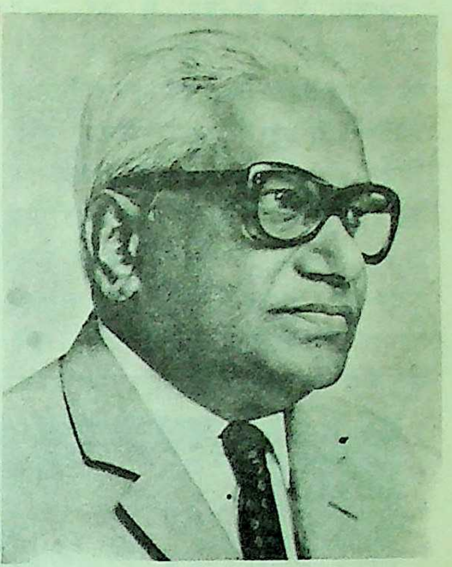
सर शिव सागर रामगुलाम

यहां के एक मात्र सांस्कृतिक केंद्र 'महात्मा गांधी संस्थान' की आधारशिला भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी के कर कमलों द्वारा, ३ जून १९७० को रखी गयी थी। इस संस्थान के संचालक मंडल के अध्यक्ष प्रधानमंत्री सर शिव सागर रामगुलाम हैं। महात्मा गांधी की पुण्य स्मृति की प्रेरणा से ही यह सांस्कृतिक केंद्र सभी भाषाओं के विकास का स्रोत बन गया है।

—महात्मा गांधी संस्थान,
मारिशस

अठारहवीं शताब्दी की बात है, वर्त्तमान मारिशस का फ्रेंच गवर्नर पिएर पोवरेत एंब्रोना द्वीप आया। वहां के डच गवर्नर ने अतिथि की खातिर की, और मसालों के खेत दिखाए। मसालों से लदे खेत देख कर पिएर लालच न रोक पाया। उस ने सब की दृष्टि बचा कर लौंग, जायफल के कुछ पौधे चुरा कर कोट की जेब रख लिये। इसी "शाही चोरी" के कारण मारिशस और मेडागास्कर द्वीपों में लौंग तथा अन्य मसालों की खेती प्रारंभ हुई। यहीं काम करने के लिए, इस शताब्दी के प्रारंभ में भारत के देहातों से, लोगों को फुसला कर एजेंट वहां भेजवा देते थे, जिसके कारण देहातों में मारिशस आदि "मिरच के टापू" नाम से भयजनक बन गये हैं!

दुकान की शो-विंडो में जब उसने तीसरी बार वह किताब देखी, तो उसकी प्रबल इच्छा हुई कि उस किताब को वहां से उठा ले, और भागकर किसी निर्जन कोने में पहुंच जाए, और तब तक उस किताब को न छोड़े, जब तक पूरी पढ़ न ले। आसपास की चहल-पहल को भूलकर वह गहरे सोच में काफी देर तक खड़ा रहा। अगर उसके दोस्त अहमद ने, उसके कंधे को थपथपाकर यह न बताया होता, कि नौ बजने में कुछ ही मिनट बाकी रह गये हैं, तो वह वहीं खड़ा रहता। धीरे-धीरे मुड़कर वह अपने दफतर की ओर चल पड़ा—ठीक उसी प्रकार जैसे कोई छोटा-सा यंत्र किसी कारण अचानक बंद हो गया हो, और एक कुशल हाथ के स्पर्श से दोबारा उकताहट के साथ, पर सही ढंग से काम करने लगा हो।

मनुष्य जब से सोचने लगा, तब से कला और साहित्य का निर्माण कैसे होने लगा, इस बात का विवरण उस किताब में है। जब उसने पहली बार उस किताब को देखा तब उसने बहुत ही सावधानी के साथ पन्ने उलटे थे और प्रत्येक अध्याय पर नजर डाल ली थी। वह उस पुस्तक को खरीदने ही लगा था, कि उसे याद आया जेब में जो दीनार पड़े थे, उनकी तो सुबह ही बिजली का बिल भुगताने के लिए जरूरत पड़ेगी। अगर उसने बिल न दिया, तो बिजली काट दी जाएगी और एक नयी समस्या खड़ी हो जाएगी, जिसे वह आसानी से नहीं सुलझा पायेगा। किताब खरीदने का विचार उसने छोड़ दिया।

दूसरे दिन, दिल जलते हुए भी, प्रेमिका को ठुकरा देने वाले प्रेमी की भांति, उसने किताब की ओर ध्यान नहीं दिया। यह भूलने की कोशिश करते हुए, कि एक नयी किताब का जन्म हुआ था, वह वहां से चला गया। अपने को आश्वस्त करने के लिए वह पढ़ने में गलतियां ढूंढ़ने लगा। और मन के विचारों को बोल-बोलकर दोहराने लगा। कुछ बरसों तक वह,

किताब

● अब्दुल नियाजी

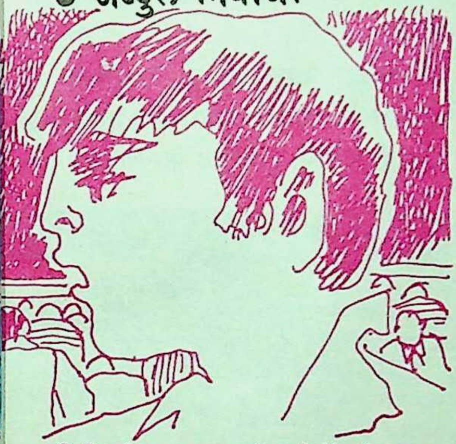

बड़ी उत्सुकता से किताबें पढ़ता रहा था। हालांकि इससे उसका बौद्धिक विकास हुआ और उसका मानस-क्षितिज व्यापक बना, इसके बावजूद अलावा कड़े दर्द के उसे और कुछ प्राप्त नहीं हुआ। लोगों ने उसका मजाक उड़ाया था, कि एक नयी किताब वह नहीं खरीद सकता, तो उसमें इस तरह उदास हो जाने की क्या बात थी? तो क्या वह भी औरों की तरह हो जाए। इस तूफानी समंदर में लुप्त हो जानेवाली छोटी-सी एक ऐसी बूंद, जो मंद-मंद झिलमिलाती रहती है। और अंत में शाश्वत शून्य में ऐसे विलीन हो जाती है, जैसे वह कभी थी ही नहीं! तो फिर, मूर्खता के किसी क्षण में क्यों उसने कुछ बनना चाहा था? उसे क्या पाने की उम्मीद थी? शाश्वतता, किसके साथ? उन मृत आत्माओं के साथ, जो उन्हें याद करते-करते मरी हैं? "मूर्खता!" उसने अपने को कोसा।

उस किताब को न खरीद पाने पर उत्पन्न निराशा से उसके मन में ऐसे विषादमय विचार आने लगे थे, लेकिन दफतर के काम में जब वह लग गया, तब पढ़ने-लिखने की बात वह करीब-करीब भूल ही गया। और जिससे उसे बहुत नफरत थी, उस लगातार चलनेवाले काम को छोड़कर और कोई बात उसके दिमाग में नहीं रही। अपने साथियों द्वारा बार-बार दोहरायी जानेवाली बातों को भी वह सुनने लगा, और सरकार अभी तक जिनका वादा किये जा रही थी, उन नये भत्तों की बात को लेकर, वे जो खुशियां मना रहे थे, उनमें भी वह शरीक हुआ। मानों उन अपेक्षित भत्तों में उसे अपने जीवन की महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति दिखायी दे रही हो।

दोपहर को वह अपने दोस्त अहमद से मिला। बैठते ही अहमद ने साहित्य की

बातें आरंभ कर दीं, और बातों-बातों में उस नयी किताब का जिक्र कर डाला। उसे लगा जैसे किसी ने उसके दिल की गहराइयों में जलता हुआ अंगारा फेक दिया हो! उसने उस किताब को भूल जाना चाहा, लेकिन अहमद तो उस किताब की तारीफ ही करता जा रहा था।

सलीम की समझ में न आया कि क्या करे। वह चुपचाप बैठा रहा मानों मंत्रमुग्घ हो रहा हो। बहुत-सी बातें उसके दिमाग में हलचल मचा रही थीं। वह अधीर हो उठा, और अपने दोस्त से एक दीनार उधार मांगने लगा। हालांकि यह उसके लिए असाधारण बात थी। उसके दोस्त ने उसकी मांग को ठुकराया नहीं। कुछ ही क्षणों के बाद वह एक के बाद एक दूकान में जाकर उस किताब को ढूंढ़ने लगा, लेकिन उस किताब की तो सारी प्रतियां बिक चुकी थीं। फिर भी वह आशा बांधे रहा और साउथ गेट के लिए बस ले ली। उसका खयाल था कि वहां किताबों की किसी न किसी दूकान में वह किताब अवश्य मिल जायेगी। लेकिन वह नाकामयाब रहा। वह मुसकुरा दिया। ...दिल खोलकर हंस दिया। और फिर उसके मन में विषादमय विचार और दलीलों ने घर कर लिया, जिनमें पढ़ाई की मूर्खताभरी आदत की निंदा भरी थी। अनजाने ही, मानों अपनी निराशा के कारण बदले की भावनावश, उसने स्वयंको 'अेरेक' की बोतल लिये टाइग्रिस नदी के किनारे बैठा हुआ पाया। दूसरा गिलास पी लेने के बाद उसने महसूस किया, कि वह अर्थात एक ऐसा प्रतिभाशाली व्यक्ति, उन लोगों में खो गया था, जिन्हें उसकी कोई परवाह नहीं थी। इस भावना को लेकर उसका दर्द और भी गहरा हो गया।

दूसरे दिन, पहले तो उसने उस किताब का कोई भी जिक्र न किया। लेकिन बाद में उसकी वह ऐसे तारीफ करने लगा, मानों वह सचमुच उस किताब को पढ़ रहा हो।

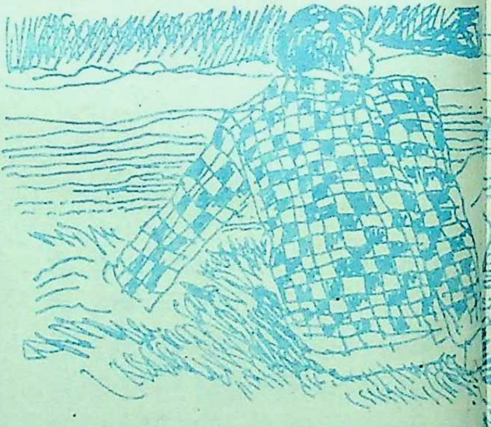

दो सप्ताह बाद जब उसने दूकान में फिर उस किताब को देखा, तब उसके पास एक दीनार था। किताब के पन्नों को उलटने और उसके अध्यायों को दोबारा देख लेने के उद्देश्य से वह दूकान में घुसा। उसने चाहा कि किताब वाले में यह अदृश्य शक्ति हो, कि उस किताब के पैसे वह उसकी जेब से निकाल सके। लेकिन अपने फटे-पुराने जूतों को एक नजर देखते ही

उसके मन में गहरी उदासी छा गयी। किताबों की दूकान से वह बाहर निकल आया, और उस घायल आदमी की तरह वहां से चल दिया, जो अपने जख्म के उपचार के लिए कोई एकांत स्थान ढूंढ़ रहा हो। उसी दिन उसने नये जूते खरीद लिये। फिर से दूकान पर वह किताब मिलनी बंद हो गयी, तो उसे यह अच्छा लगा। उसे लगा कि किताब उसके सामने अगर आयेगी ही नहीं, तो उसे अधिक चैन मिलेगा।

पर कुछ सप्ताहों के बाद जब तीसरी बार वह किताब बाजार में मिलने लगी, तब वह फिर बेचैन हो उठा। जेब में अगर पैसे होते, तो इस बार वह जरूर किताब खरीद लेता। एक बार फिर वह किताब को देखता रह गया। उसने सोचा कि किताब बहुत ही बढ़िया थी, क्योंकि उसका लेखक मशहूर था और अनुवाद अत्यंत सुंदर था। किताब बहुत बड़ी थी—पांच सौ से भी अधिक पन्ने की। पहली बार जब उसने किताब के अध्यायों पर नजर डाली थी, तभी से वह यह महसूस करने लगा था कि जब तक वह उस किताब को ध्यान से पढ़ नहीं लेता, तब तक उसका ज्ञान अधूरा ही रहेगा। लेकिन उस किताब को वह पाये भी तो कैसे?

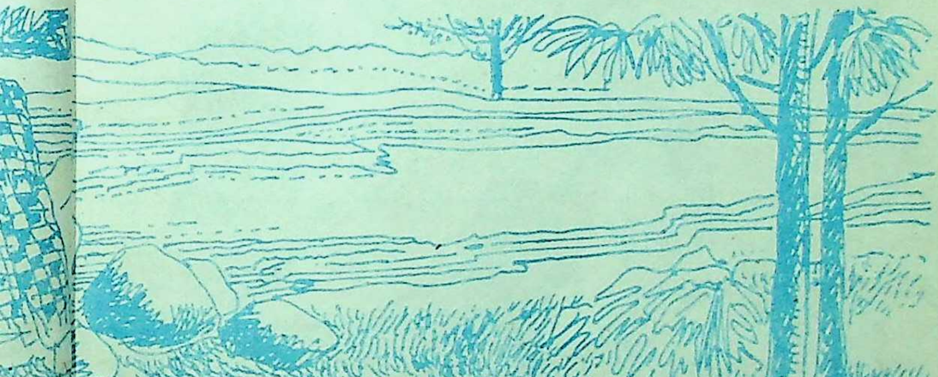

वह अन्यमनस्कता से देखता रहा। उसके अंदर कुछ मरता जा रहा था। अहमद ने अगर दफतर की याद न दिलायी होती, तो वह उस किताब को देखता ही रहता। रास्ते में वह अपनी जिंदगी की तकलीफों के बारे में सोचने लगा, जिनकी वजह से वह पढ़ने के लिए किताब नहीं खरीद सकता था। मजबूरी से उपजी निराशा के कारण, एक बार तो कोई भी किताब पढ़ने के खयाल तक को, उसने अपने मन से निकाल देने का प्रयत्न किया। किताबों की अलमारी अपनी नजरों से दूर हटा दी। किताबों की दूकानों के सामने

आप भी सख़्त
सर्दी में मुस्कुराईए
वर्धमान निटिंग यार्न ले आईए।

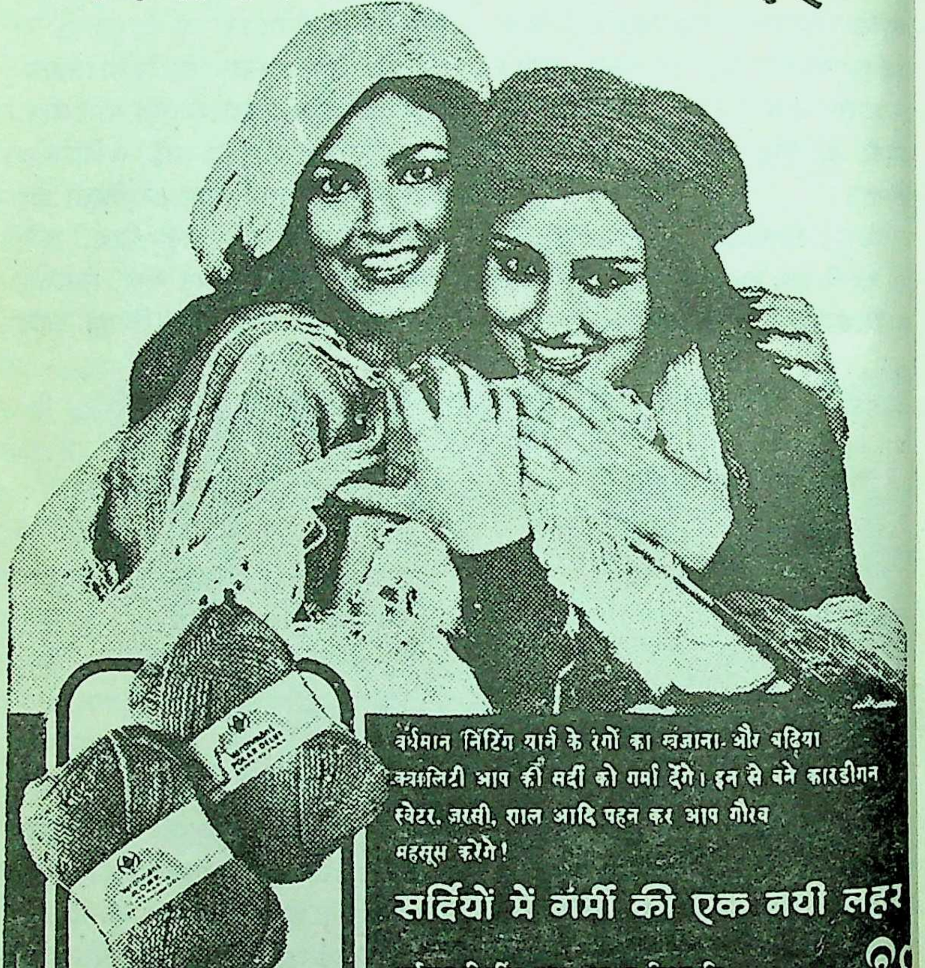

वर्धमान निटिंग यार्न के रंगों का ख़ज़ाना और बढ़िया क्वालिटी आप की सर्दी को गर्मी देंगे। इन से बने कारडीगन स्वेटर. ज़रसी, शाल आदि पहन कर आप गौरव महसूस करेंगे!

सर्दियों में गर्मी की एक नयी लहर

वर्धमान स्पिनिंग एण्ड जनरल मिल्स लि.
चंडीगढ़ रोड, लुधियाना - १४१ ०११.

CRTV/TEL 235084/80

से गुजरना भी बंद कर दिया। और ऐसी चीजों में खो गया, जिनका पढ़ने से कोई वास्ता न हो। लेकिन एक हफ्ते के बाद उसने अपना धैर्य खो दिया—कुछ भी पढ़े बिना इतना लंबा समय उसने पहली बार बिताया था। अपने भीतर वह भयानक खालीपन महसूस कर रहा था। अधिक देर तक वह कॉफी हाउस में भी न बैठ सका। गलियों में निरुद्देश्य घूमने के लिए या शांति का अनुभव करने और एकाग्रता से कई बातें सोचने को नदी के तट पर जाने के लिए, वहां से जल्दी चला आया।

जब वह दफ्तर पहुंचा, तो उसे कुछ याद आया, मानों वह काम करने की उसे पहली बार ही प्रेरणा मिली हो। "अगर वह जाकर किताब की दूकान के मालिक से कहे, कि किताब वह उसे दे दे और उसकी कीमत बाद में, तनख्वाह मिलने पर लेना मंजूर कर ले, तो कैसा रहे? किताबवाला इस पर राजी हो ही जायेगा, क्योंकि वह तो उसका हमेशा का ग्राहक है न ?"

समय और दफ्तर का खयाल किये बिना वह लौट पड़ा। जब वह दूकान पर पहुंचा, तो उसने देखा कि वह किताब कुछ मिनटों पहले ही बिक चुकी थी। दूकानदार ने बताया कि एक ग्राहक के लिये वह किताब उसने हफ्ते तक रखी थी लेकिन वह आया नहीं था, और फिर वह किताब उसने और किसी को बेच दी थी।

अनु. सरला जगमोहन

हंसिकाएं

बीवी

'जादू वह जो सिर चढ़ बोले'...
मुहावरा सुनकर उन्होंने कहा
"जादू न हुआ—
पत्नी हो—गया"

समानता

मालकिन ने डांटा तो
नौकर—इस बात पर रोने लगा
"हाय—अब उसका हाल भी
मालिक जैसा होने लगा"

प्रचुर

उनकी शेल्फ पर
ढेरों जूते देखकर—
वे कहती रहीं . . .
"चरित्र ऐसा ही हो तो
जूतियों की कमी रहती नहीं!"

महंगाई

नन्ही बेटी की तरह थी . . .
. . . अब . . यौवन उभार पर
दिनों दिन निखार पर

फोटो

नवदंपति से
फोटोग्राफर ने कहा—
"मुस्कराइए—
ताकि आपको याद रहे
आप कभी मुस्कराते भी थे"

—डॉ. सरोजिनी प्रीतम

साईबाबा को चुनौती देनेवाला व्यक्ति

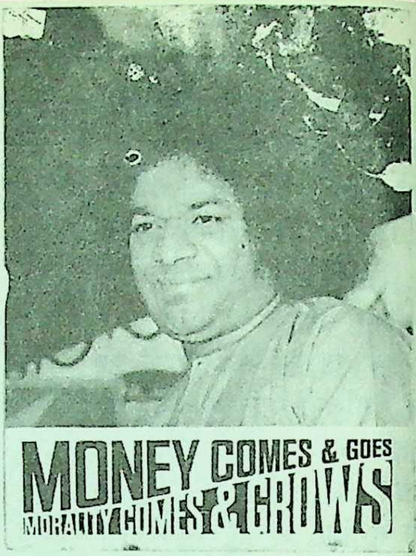

“चाहूं, तो मैं भी सत्यश्री साईंबाबा की तरह भगवान बनकर विलासपूर्ण जीवन बिता सकता हूं। यह मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं होगी। बस मुझे ‘सूरी भगवंतम’-जैसे लोगों को अपना एजेंट बनाना होगा. . .पर ऐसा करके मैं पूर्ण मानव-समाज को धोखा नहीं देना चाहता...” ये शब्द थे श्रीलंका के प्रसिद्ध तर्कशास्त्री डा. कोवूर के, जिन्होंने अंत तक चमत्कारी बाबाओं के चमत्कारों का भंडा-फोड़ करने का बीड़ा उठाया था, और अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जीवन-पर्यंत संघर्ष करते रहे।

१८ अप्रैल १८९८ में केरल के तिरुवल्ला ग्राम में एक सनातन क्रिश्चियन परिवार में जन्मे डॉक्टर कवूर ने सन १९६३ में बाबाओं की आध्यात्मिक, अलौकिक शक्तियों को खुली चुनौती देकर, सारे विश्व में तहलका-सा मचा दिया था। अपनी चुनौती की घोषणा उन्होंने उस समय के सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से की थी। घोषणा के अनुसार किसी भी व्यक्ति द्वारा आध्यात्मिक शक्ति से शून्य में से पूछी गयी वस्तु को निकालना, अंगारों पर बिना जले आधा मिनट खड़े रहना, एक लिफाफे में सील बंद नोट का नंबर बताना, एक नोट की तरह का दूसरा नोट तैयार करना, टेलिपैथी द्वारा सामने वाले व्यक्ति के विचार बताना, किसी भी शक्ति द्वारा पानी पर चलना, योग-शक्ति द्वारा पांच मिनट के लिए हृदय स्पंदन रोकना, तीस मिनट श्वास रोकना, शरीर एक जगह छोड़कर उसी समय दूसरी जगह पर दिखना, शरीर के किसी टूटे हुए अवयव को एक इंच लंबा करना, भूत का फोटो निकालना, तालाबंद कमरे से बाहर निकलना, पानी को पेट्रोल अथवा अंगूर के रस में बदलना, दस आदमियों के हथेली के छापे में रेखाओं को पढ़कर बताना कि

● एन. आर. श्याम

वे मर गये हैं या जिंदा हैं, स्त्री हैं या पुरुष ...आदि उन्होंने २३ उपाय सुझाये, जिनमें से एक को भी करके दिखानेवाले को उन्होंने एक लाख रुपया देना मंजूर किया।

घोषणा में उन्होंने कहा था कि—'यह चुनौती उनकी मृत्यु होने तक अथवा एक बार हारने तक रहेगी। न केवल दिव्यपुरुष, बाबा, संन्यासी, योगी आदि ही बल्कि जादू-टोना जाननेवाला, भूत-शैतान झाड़नेवाला, ज्योतिषी आदि कोई भी व्यक्ति इस चुनौती को स्वीकार कर सकता था, पर शर्त यह थी कि वे उस व्यक्ति का पहले पूरी तरह निरीक्षण करेंगे।

> **"यह सब चमत्कार नहीं, केवल हाथ की सफाई है। बाबा लोग इसी तरह के करतब दिखाकर, उसे चमत्कार का नाम देते हैं"**
>
> **—डॉ० ए० टी० कोवूर**

मैं डाक्टर कोवूर को कुरसी में ही बांध दूंगा

उनकी इस चुनौती को स्वीकार कर भूत-पिशाच झाड़नेवाले 'नंदीसडी शिल्वा' नामक व्यक्ति ने कोवूर को पत्र लिखकर सूचित किया कि वह उन्हें उनकी कुरसी में ही बांध सकता है, अपनी हथेली में भूत के दर्शन और भूत-प्रेतों द्वारा उनके भवन को ध्वस्त करा सकता है। स्वर्गीय श्री कोवूर ने उसकी इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार किया और उसे प्रदर्शन देने के लिये कहा। पर वह व्यक्ति हर बार अपने प्रदर्शन को टालता रहा और उसने कभी भी उन बातों को करके नहीं दिखाया।

इस तरह १९६३ से उनकी मृत्यु यानी १८ सितंबर १९७८ तक दो-तीन लोगों को छोड़कर किसी ने इस चुनौती को स्वीकार नहीं किया और जिन्होंने स्वीकार किया, उन्हें मुंह की खानी पड़ी। डा. कोवूर अंत तक अविजित रहे।

वे मानते थे कि—'संसार में अलौकिक शक्ति कुछ नहीं है। जो कुछ भी है प्रकृतिसिद्ध है। इस तरह की शक्ति प्राप्त है, कहकर प्रचार करनेवाले, लोगों की

आध्यात्मिक मानसिक बलहीनता का फायदा उठाकर उन्हें ठग रहे हैं . . . भूत-शैतान केवल भ्रम हैं . . .' अपने ज्ञान का प्रचार वे भाषणों और समाचार पत्रों में लेखों के द्वारा जनसाधारण में किया करते थे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने हाथ की सफाई (जादूगरी), हिप्नोटिज्म, मेस्मरिज्म आदि विद्याओं में प्रवीणता हासिल की। बाबा लोगों की तरह वे भी शून्य से विभूति, शिवलिंग आदि निकालकर लोगों को आश्चर्य-चकित करते थे; पर उनका कहना था—"यह सब चमत्कार नहीं, केवल हाथ की सफाई है। बाबा लोग इसी तरह के करतब दिखाकर उसे चमत्कार का नाम देते हैं।"

साईंबाबा से टक्कर

सूरी भगवंतम नामक एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने एक साप्ताहिक पत्रिका में सत्यश्री साईंबाबा के कई चमत्कारों के साथ निम्न सनसनीखेज चमत्कार का भी वर्णन किया था—

"एक बार जापान की विश्वप्रसिद्ध घड़ी बनानेवाली 'शिको' कंपनी का मालिक साईंबाबा के दर्शनार्थ भारत आया। बाबा ने शून्य में हाथ घुमाया और उन्हें एक घड़ी निकालकर दी। यह घड़ी 'शिको' कंपनी की ही थी, पर आश्चर्य यह कि यह मॉडल अभी तक मार्केट में नहीं आया था। स्वदेश लौटकर अपने प्राइवेट सेक्रेटरी से पूछने पर उसने बताया कि 'अवतार पुरुष की तरह दिखनेवाला एक तेजस्वी बाबा जिनके सिर पर घने बाल थे, उसके पास आया और उसके पूछने पर उसने तिजोरी में रखी हुई वह घड़ी निकालकर उसे दे दी।' यह बात सुनकर कंपनी का मालिक आश्चर्य से पागल हो गया कि उसके सामने बैठा हुआ बाबा क्षण भर में ही जापान कैसे आ गया और घड़ी लेकर कैसे वापस लौट पड़ा। बाबा के इस चमत्कार से प्रभावित होकर वह भी बाबा का भक्त बन गया।"

इस घटना की सत्यता से परिचित होने के लिए डा. कोवूर ने जापान की उस कंपनी के मालिक का नाम और पता देने के लिए कई साधारण और रजिस्ट्री पत्र सूरी भगवंतम और साईंबाबा के नाम भेजे, पर किसी का जवाब उन्हें नहीं मिला। उन्होंने कोलंबो में जापान के राजदूत से मिलकर 'शिको' कंपनी के मालिक का पता मालूम किया और उन्हें पत्र लिखा जिसका जवाब इस तरह मिला—'मेरा या हमारी कंपनी से संबंधित किसी व्यक्ति का भारत आना अथवा साईंबाबा से मिलना नहीं हुआ है, और न ही हमें साईंबाबा कहलानेवाले व्यक्ति के बारे में जानकारी है . . .' इतना ही नहीं सत्यान्वेषण में लगे डा. कोवूर के प्रयत्नों की उन्होंने प्रशंसा की और उनकी सफलता के लिए शुभकामनाएं भी भेजीं।

उन्होंने पत्र की एक-एक फोटो कापी निकालकर सूरी भगवंतम और साईंबाबा के नाम भी भेजी, पर इसका भी उन्हें कोई

जवाब नहीं मिला।

इस तरह साईंबाबा के झूठे चमत्कारों का भंडा-फोड़ करते हुए डा. कोवूर ने उन्हें ठग करार दिया और सूरी भगवंतम और उनकी ही तरह साईंबाबा के प्रचार में लगे हुए, उनके शिष्यों को उनका एजेंट बताया।

नीलकंठ बाबा का भंडाफोड़

१९६६ में इस खबर को समाचार पत्रों ने प्रमुख स्थान दिया कि, 'ओम नमः शिवाय' मंत्र के द्वारा बचपन में ही आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने का दावा करने वाले नीलकंठ बाबाजी का तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने दर्शन करके उन्हें अपना गुरु और मार्गदर्शी माना है। बाबाजी द्वारा न केवल उन्हें, बल्कि भूतपूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णन, मैसूर महाराज और ऐसे ही बड़े-बड़े व्यक्तियों को शून्य से शिवलिंग निकालकर देने की बातों का बड़े जोर-शोर से प्रचार हुआ था। इन खबरों के प्रभाव में आकर लोग हजारों की संख्या में उनके भक्त बनने लगे।

डा. कोवूर ने श्रीमती गांधी, डॉ. राधाकृष्णन को पत्र लिखकर इस बात की सत्यता की जानकारी चाही, तो उन्हें जवाब मिला कि न तो उन्होंने बाबा के दर्शन ही किये हैं और न ही उन्हें शिवलिंग ही मिला है।

उन्हें भी अवतार बनाने की कोशिश

साईंबाबा सहित अलौकिक शक्ति का दावा करनेवाले कई बाबाओं को पत्र लिखकर उन्होंने उनके चमत्कारों के वैज्ञानिक परीक्षण की अनुमति चाही, पर किसी ने उसे स्वीकार नहीं किया। लोगों को बाबाओं की शक्ति के बारे में संदेह होने लगा। इसलिए बाबाओं ने डॉ. कोवूर को एक बार बुरी तरह पिटवाया भी। पर जब यह चाल भी पूरी तरह सफल नहीं हो सकी, तब उन्होंने कोवूर को भी भगवान का अवतार बताने की कोशिश की।

हिमालय के ऋषिकेश से लौटे एक बाबाजी ने एक विशाल जनसमूह में भाषण देते हुए कहा—'कोवूर भी भगवान के अवतार हैं पर अभी वे सत्यान्वेषण में लगे हुए हैं।' इस तरह उसने लोगों को गुमराह करने की कोशिश की।

१८ सितंबर १९७८ के दिन अपने इस संघर्ष का भार अपने अनुयायियों पर डालते हुए उन्होंने सदा के लिए आंखें बंद कर लीं। पर उस समय भी उनके चेहरे पर विजयपूर्ण मुस्कान थी। वे अपने संघर्ष में कभी पीछे नहीं हटे। १९६३ में उनके द्वारा घोषित चुनौतीपूर्ण एक लाख रुपयों के इनाम को उनके मरते दम तक कोई नहीं जीत सका।

उनकी वसीयत के अनुसार मृत्यु के पश्चात उनके शरीर को श्रीलंका के एक मेडिकल इंस्टीट्यूट को अर्पित कर दिया गया और आंखों को नेत्र-बैंक में दान दिया गया।

—ए. सी. सी. मंचेरियाल (एस. सी. रेलवे)
जिला:—आदिलाबाद (आ. प्र.) ५०४२०१

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

सही कहानियां

पाठकों की : लेखकों की नहीं

- इस स्तंभ के लिए रचनाएं भेजते समय ध्यान रखिए :
- कोई भी रचना वापस नहीं की जाएगी इसीलिए उसकी प्रतिलिपि अपने पास रख लें :

सवा सेर यात्री

—बालेंदु बडोला

मेरा एक टिकट चेकर दोस्त अपनी बहुत डींगें मारता था कि मुझे देखकर 'डब्ल्यू . टी.' चलनेवालों के प्राण सूख जाते हैं !

एक बार गाड़ी के एक कोने में बैठे निहायत सीधे-से दिखनेवाले एक यात्री से जब हमारे चेकर साहब ने टिकट मांगा, तो उसने कहा, "मैं तो साहब के साथ हूं । टिकट भी उन्हीं के पास है।"

"कौन साहब ?" चेकर ने पूछा।

"वही," यात्री बोला, "जो फर्स्ट-क्लास में लेटे हुए हैं।"

अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकते ही चेकर को लेकर वह यात्री फर्स्ट क्लास के एक डिब्बे में घुस गया और ऊपर की बर्थ पर लेटे एक लहीम शहीम-से व्यक्ति को झकझोरता चिल्लाया, "साहब ! . . . साहब ! ! . . ."

"क्या है ?" नींद भंग हो जाने की झुंझलाहट के साथ वे साहब गुर्राये।

"साहब !" यात्री ने चेकर की तरफ इशारा करके बताया—"ये कहते हैं कि 'आप' के पास टिकट नहीं है !"

"ह्वाट ? . . . हू इज दैट ब्लडी-फूल ?" वे साहब नथुने फड़काते उठ बैठे, "लेट मी सी बोथ ऑव यू . . . इडियट्स !" . . .

इतना सुनते ही, यात्री के साथ चेकर भी प्लेटफार्म पर कूद गया। घबराकर उसने यात्री से पूछा, "ये कौन साहब हैं, भाई ?"

अधरों पर कटाक्षमय मुसकान बिखेरता हुआ यात्री बोला, "अजी, ये हैं चीफ सेक्रेटरी, डिफेंस मिनिस्ट्री, गवर्नमेंट ऑव इंडिया ! समझे ?"

"अरे, बाप रे ! . . . तुमने तो मेरी नौकरी ही डुबा दी होती ! . . . भाग जाओ यहां से ।"—कहते हुए हमारे चेकर साहब भी सरपट आगे बढ़ गये।

—२३२/४-एच, फैक्ट्री एस्टेट,
शाहजहांपुर-२४२००१

- साथ में टिकट लगा लिफाफा न भेजें।
- इस स्तंभ में किसी तरह का पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा।
- अगली प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ५ जनवरी, १९८१

हम आपकी कहानी भी छापेंगे--८

अनजान कुत्ते ने जान बचायी

--बी. आर. केकेवारिया

चार वर्ष पहले मैं अलवर के एक गांव में अपने रिश्तेदार के यहां गया था। वहां से मैं तीसरे दिन पांच किलोमीटर दूर एक दूसरे गांव के लिए रवाना हुआ। रास्ता कच्चा व ऊंचा-नीचा था, जिसे पैदल ही तय करना था। मैं आधा किलोमीटर रास्ता ही तय कर पाया था कि तभी मैंने अनायास ही पीछे की तरफ मुड़कर देखा कि एक काला कुत्ता मेरे पीछे भागा चला आ रहा है। मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

लगभग दो किलोमीटर चलने के बाद मैंने फिर पीछे देखा तो पाया कि कुत्ता अब भी मेरे पीछे-पीछे आ रहा था। इस बार मुझे आश्चर्य हुआ कि एक अनजान कुत्ता मेरे पीछे क्यों आ रहा है।

अभी दस कदम ही चला हूंगा कि तभी चार-पांच रोजों (नीलगाय) को अपनी ओर आते देखा। नीलगाय हिंसक नहीं होतीं इसलिए मैं बिना किसी डर के चलता रहा। लेकिन उनके नजदीक आने पर मैं सावधान हो गया। यकायक सबसे आगेवाली नीलगाय मेरे ऊपर झपट पड़ी। मैं तेजी से पीछे हटा, इसी बीच काले रंग का वही कुत्ता उन नीलगायों पर टूट पड़ा और मैं समय का फायदा उठाकर वहां से निकल आया। कुछ दूर जाने के बाद मैंने पीछे देखा कि नीलगाय एक तरफ भागी जा रही है और कुत्ता मेरे पीछे आ रहा है। मैं रुका और कुत्ते को प्यारभरी दृष्टि से देखने लगा। कुत्ता भी रुक गया और रेत के टिब्बे पर चढ़कर मेरी तरफ मुंह करके बैठ गया।

जब मैं गंतव्य गांव की सीमा में पहुंच गया, तब मुड़कर देखा तो पाया कि वह कुत्ता उसी रास्ते पर वापस जा रहा था जो देखते-देखते मेरी आंखों से ओझल हो गया।

**—न्यू ईस्ट मंडी, अल्लिका; पलवल,
फरीदाबाद**

प्रेम-काव्यों की सुदीर्घ परंपरा में विश्व का, जो सर्वोत्तम प्रेम-काव्य माना गया है, वह किसी कवि द्वारा नहीं, अपितु एक कवयित्री द्वारा रचा गया। वह थी यूनान की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री--सैफो

सैफो की अनूठी गाथा हिंदी में पहली बार 'कादम्बिनी' के माध्यम से प्रस्तुत --संपादक

प्रणय निवेदन ठुकराना उसकी आदत थी

● स्वामी वाहिद काज़मी

सैफो अपने समय की श्रेष्ठतम सुंदरी थी। सारे यूनान में उसके सौंदर्य की मिसाल नहीं मिलती। यही नहीं, साहित्य,ज्ञान, काव्य-कुशलता और विद्वत्ता में भी यूनानी स्त्रियां तो दूर, कोई पुरुष भी उसके मुकाबले पर नहीं ठहरता था। वह इतनी अधिक धन-संपन्न थी कि उसका भव्य महल सम्राट के महलों को भी शरमाता था। यूनानभर के कविगण, अमीर, रईस, कलाकार, संगीतकार और उसके अन्य मित्रजन उसके सामने उसके सभासदों के समान बड़े आदर से बैठते थे, और वह उनके मध्य ऐसी प्रतीत होती थी, जैसे सैकड़ों परवानों के बीच एक हसीन शमा।

पुष्प शैय्या पर

सैफो इतनी नाजुकमिजाज तथा विलासप्रिय थी कि चांदी से निर्मित उसके भारी पलंग पर हर समय फूलों की सेज बिछी रहती थी। उस पुष्प-शैय्या पर वह वस्त्र-आवरणों तक से मुक्त होकर लेटती थी, ताकि उसकी सुडौल, सुगठित और सुंदर देहयष्टि में फूलों की सुगंध भी रच बस जाए।

एक अजीब शौक

सैफो जितनी हसीन थी, स्वभाव से उतनी ही चंचल, शोख, तेज-तर्रार, हाजिरजवाब, विनोदप्रिय और व्युत्पन्नमति भी थी। किंतु इसके साथ ही वह कुछ संगदिल भी थी। भावुक और युवा पुरुषों से प्रेम कर, उन्हें निराश कर देने में उसे एक खास मजा मिलता था। अपने भावुक प्रेमियों के प्रणय निवेदन ठुकराना, मानो उसका मानसिक भोजन था। कई युवक उसके प्रति प्रेम में पड़ जाते थे। मगर शीघ्र ही जब सच्चाई सामने आती कि सैफो किसी अन्य युवक पर अनुरक्त है, तब उसके पहले प्रेमी को इतना अधिक सदमा पहुंचता था कि वह या तो पागल होकर रह जाता, अथवा आत्मघात करके समाप्त हो जाता। सैफो से जिस युवक ने

भी प्रेम की पींगें बढ़ायीं, अंततः उसे आत्मघात ही करना पड़ा, और उसे कभी मिलन-सुख प्राप्त नहीं हो सका। ऐसे भाग्यशाली केवल एक युवक का नाम ही लिया जा सकता है, जिसे सैंफो के साथ मधुर-मिलन की चंद हसीन रातें गुजारने का सौभाग्य प्राप्त रहा। वह यूनान की एक रियासत के नरेश का पुत्र शहजादा जरकवैंत था। सैंफो का यह किशोरवयः प्रेमी आयु में अपनी प्रेयसी से पूरे नौ वर्ष छोटा था। वह थी छब्बीस वर्षीया युवती और जरकवैंत था सत्तरह साल का किशोर। किंतु इस 'नन्हें' आशिक के भाग्य में भी अपनी प्रेयसी का सामीप्य-सुख अधिक समय के लिए नहीं लिखा था।

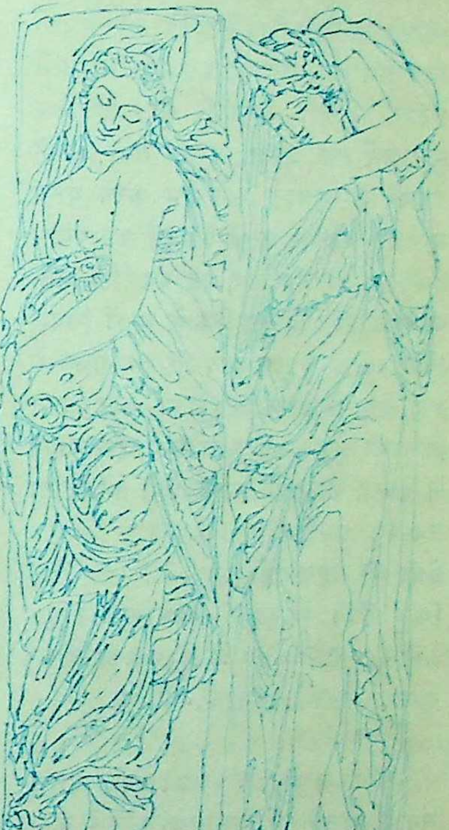

जिस समय सैंफो के सौंदर्य तथा काव्य-प्रतिभा की ख्याति तपते हुए सूर्य की किरणों के समान चारों ओर फैल रही थी, समूचा यूनान सम लैंगिकता की कुप्रवृत्ति से ग्रस्त था। उसे कतई बुरा नहीं माना जाता था। सैंफो भी इस प्रवृत्ति का शिकार थी। उसके महल में अनेक सुंदर सहेलियां, जिन्हें उसकी प्रेमिकाएं ही कहना चाहिए, रंग-बिरंगे भड़कीले लिबास में सजी,अपने उद्दाम यौवन का प्रदर्शन करतीं, उसके आसपास तितलियों की भांति मंडराती रहती थीं। यों तो सैंफो उन सभी को बहुत चाहती थी, किंतु उनमें से फीनी नामक एक नवयौवना प्रेमिका पर वह मन-प्राण से फिदा थी, और हमेशा उसे अपने सामने ही रखती थी। उसकी यही सहेली

फीनी आगे चलकर एक दुःखद घटना का कारण भी बनी।

एक मात्र सफल प्रेमी

सैफो के प्रेमी-जन-समूह में उसका किशोर वयः प्रेमी शहजादा जरकवैंत ऐसा अकेला व्यक्ति था, जिसे सैफो से सच्चा और वास्तविक प्रेम था। वह भी इस बात को भली प्रकार जानती समझती थी। इसलिए एक अर्से तक उपेक्षा बरतने तथा जांचने परखने के पश्चात, उसे प्रेम करने योग्य मानकर, वह भी उसके प्रेम में पड़ गयी। दोनों का प्रेम यहां तक बढ गया कि, शहजादे के प्रति आतुर प्रेम के हाथों विवश होकर, सैफो ने एक बार उसे खुद महल में बड़े प्रेम से आमंत्रित किया और अपने आप को खूब सजा संवारकर, एक प्रकार से दुल्हन की तरह, अपने प्रेमी को अपना तन-मन समर्पित कर दिया।

प्रेमी को सहन नहीं हुआ

किंतु सैफो स्वच्छंद स्वभाववाली एक बेबाक युवती थी। किसी एक की होकर रहना, उसका स्वभाव नहीं था।

एक दिन!

सैफो ने फीनी को अपने प्रगाढ़ आलिंगन में भींचते हुए प्रेम-सिक्त स्वर में कहा, "प्यारी, मुझे तुमसे इतनी मुहब्बत है कि दुनिया में किसी से भी नहीं है।"

कैसे असमय में ये शब्द उसके मुंह से निकले। उसी क्षण संयोगवश जरकवैंत ने कमरे में प्रवेश किया। सैफो के शब्द उसके कानों में पड़ गये। ईर्ष्या की आग उसके भीतर ऐसी भड़क उठी कि वह पागल हो गया। लपककर उसने फीनी को सैफो के आलिंगन से अलग किया और आवेश में उसे जमीन पर दे पटका! वह तो फर्श पर पड़ी सुबकने लगी, पर सैफो को अपने प्रेमी की यह हरकत तनिक सहन न हुई। क्रोध से कांपती हुई वह बोली, "जरकवैंत! अगर तुमको मुझसे मुहब्बत रखनी है, तो मेरी फीनी से भी प्यार से पेश आना पड़ेगा और इसकी भी इतनी ही इज्जत करनी पड़ेगी, जितनी मेरी करते हो।"

जरकवैंत पैर पटकता हुआ बोला, "यह हरगिज नहीं हो सकता। मेरे अलावा तुम किसी से भी प्यार से पेश नहीं आओगी।"

देर तक दोनों में झगड़ा होता रहा, पर नतीजा कुछ भी न निकला और जरकवैंत क्रोधावेश में वहां से चला गया।

अगले ही दिन के प्रातःकाल ने यह सूचना दे दी कि सैफो के प्रेम-संसार पर सदा-सदा के लिए काली रात छा गयी है, और उजाले का कोई सूर्य उदय नहीं होगा।

निश्चित ही सैफो को अपने इस सच्चे प्रेमी की ऐसी दुःखद मृत्यु का कुछ कम आघात न पहुंचा। महीनों तक न तो उसने शृंगार किया, न ठीक से भोजन आदि लिया। किंतु फीनी के प्रेम ने उसे सहारा दिया और वह धीरे-धीरे फिर सामान्य रूप से जीवन-यापन करने लगी।

कुछ अरसे तक दोनों का यह प्रेमपूर्ण-सामीप्य खूब बढ़ता और चलता रहा, मगर अभी विधाता को एक और लीला दिखानी शेष थी।

धोखा प्रेमिका से

फीनी स्वभाव से जैसी चंचल, शोख, हंसमुख और शरीर से जितनी सुंदर थी, हृदय से उतनी ही कठोर भी थी। उसे अपने मनपसंद एक युवक से प्रेम हो गया। लेकिन अपना यह प्रेम-प्रसंग उसने कभी भी सैंफो पर प्रकट नहीं होने दिया। वह सैंफो से कुछ झूठ बोलकर, उसे अंधेरे में रखकर, छुप-छुपकर, अपने प्रेमी युवक से मिलती रहती और सामीप्य-सुख का मजा भी लेती रहती थी। अंततः एक दिन वह अपने प्रेमी के साथ भाग गयी।

फीनी का यह विश्वासघात सैंफो के लिए अतीव दुख का कारण बन गया। पहले शहजादा उसे सदा के लिए छोड़कर स्वर्ग सिधार गया और फिर फीनी ने उसके साथ विश्वासघात किया। अब जीने का कोई सहारा उसके पास नहीं रह गया था। सैंफो ने यह भी कोशिश की कि फीनी अपने पति के साथ ही सही, किंतु उसके पास उसके महल में आकर रहे, लेकिन वह राजी नहीं हुई। सैंफो ने अपने खूनेदिल और आंसुओं से लिखे कई संदेश फीनी को भेजे कि एक बार तो वह उसे अपनी सूरत दिखा जाए। मगर फीनी बड़ी निर्दयता से उसके सारे संदेश ठुकरा दिया करती थी।

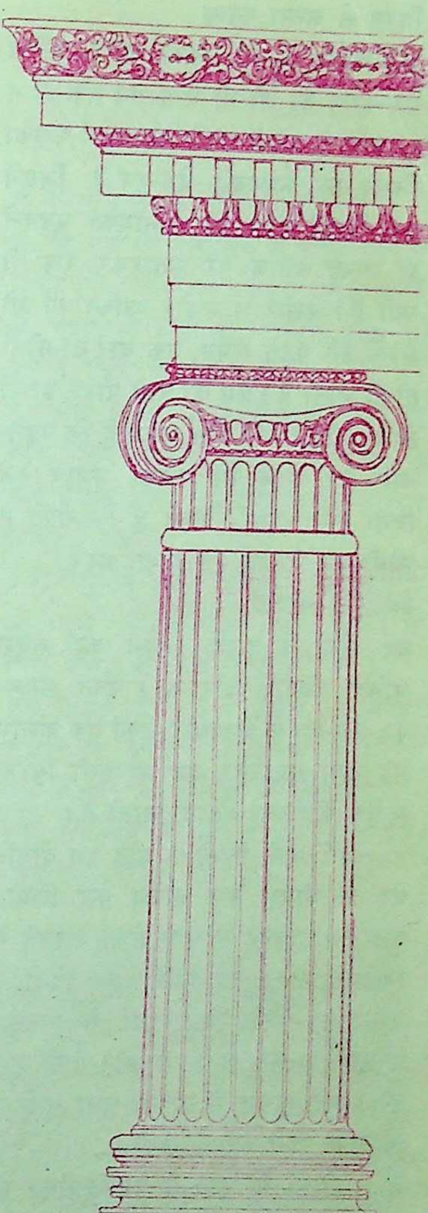

विरह से जन्मा काव्य

उल्लेखनीय है कि सैफो द्वारा रचित प्रेम-काव्य का जो भी भाग अब तक प्राप्त हो सका है, उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण उसका लिखा एक काव्यबद्ध प्रेम-पत्र है, जिसमें एक विरही हृदय की वेदनायुक्त धड़कनें ही मानों कागज पर उतारकर रख दी गयी हैं। कठोर से कठोर व्यक्ति की भी आंखें, उसे पढ़ते समय, एक बार तो गीली हो ही जाती हैं। प्रेम की ऐसी पीड़ा, इतनी व्यथा और इतनी टीस उसमें है कि पढ़नेवाले पर आज भी उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। कहते हैं कि सैफो ने फीनी को ही वह पत्र लिखा था।

विरह से पागल

यह सैफो के दु:खी जीवन का सबसे अधिक दर्दनाक दौर था। उक्त काव्यबद्ध प्रेम-पत्र के अलावा उसका एक कलाम भी पाया गया है। वह भी इसी विरह-अवधि में लिखा बताया जाता है।

शनैः शनैः फीनी के प्रति इस दीवाने प्रेम ने भीषण रूप धारण कर लिया। दु:ख और विरह से भरी सैफो वास्तव में विक्षिप्त होकर रह गयी। कुछ दिनों के पश्चात उसकी विक्षिप्तता ने भयंकर उन्माद का रूप ले लिया और सैफो बड़ी ही दारुण हालत में जंगलों तथा घाटियों में मारी-मारी भटकने लगी।

जंगलों में भटकती पगली सैफो भी कभी अकेली नहीं पायी जाती थी। उसके साथ उसके पचासों शुभचिंतक और शैदायी, जिनमें स्त्री पुरुष दोनों ही होते, उसके साथ रहते थे। अंततः सैफो ने अपनी इस हालत को अधिक सहन न करते हुए एक भयानक निर्णय लिया—

दिल ही टूट गया

एक दिन!

सैफो उस ज्वालामुखी पर्वत पर चढ़ती देखी गयी, जहां से उसे फीनी का श्वेत मकान दृष्टिगोचर होता था। पहाड़ की चोटी के ठीक नीचे ज्वालामुखी से निकले दहकते लावे का एक भीषण स्रोत उबल रहा था। पर्वत पर चढ़कर अंतिम बार उस मकान की ओर बड़ी हसरतभरी दृष्टि से देखते हुए सैफो ने आंखें बंद कर लीं, और इसके पूर्व कि उसके मित्र उसकी ओर लपक पायें, उसने उबलते हुए लावे में छलांग लगा दी। पलक झपकते ही यूनान की वह अप्रतिम सुंदरी, वह सर्वश्रेष्ठ कवयित्री इस प्रकार भस्म होकर रह गयी, जैसे फूल की सुकोमल पंखुरी अंगारों पर राख हो जाती है।

इस दारुण शोक-समाचार के कारण सारे यूनान में दुख और दहशत छा गयी। शोक-विह्वल लोगों के दल उस पहाड़ की ओर दौड़ पड़े।

अब न सैफो है, न उसके प्रेमीजन हैं, किंतु सैफो की विरह-विह्वल आहों और टीसों से जन्मे आंसू, आज भी उसके काव्य के रूप में अमर हैं।

—२ई/८७, एन० आई० टी० फरीदाबाद, १२१००१

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए। आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

—सं.

१. एक चीज की कीमत में साढ़े चार प्रतिशत वृद्धि हो जाती है। यदि पहले उसकी कीमत ६०० रु० थी तो अब उसकी कीमत कितनी है?

क. ६४०, ख. ६२७, ग. ६३०, घ. ६४५

२. भौगोलिक शब्दावली में 'सुंदरवन' को गंगा नदी का क्या कहेंगे?

क. मुहाना, ख. डेल्टा, ग. घाटी

३. टीपू सुलतान तथा उसके पिता हैदरअली को कहां दफनाया गया था?

४. भारत सरकार की सेवा से अवकाश ग्रहण करनेवाले अंतिम आई. सी. एस. अफसर कौन हैं? कब अवकाश-ग्रहण किया?

५. देश में भारी पानी (हेवी वाटर) बनाने का इस समय सबसे बड़ा कारखाना कहां बनाया जा रहा है?

६. क. भारत के किस ग्राम में पूर्णतया सौर-ऊर्जा से उत्पन्न बिजली का प्रयोग शुरू किया गया है। ख. क्या इससे पहले दुनिया के अन्य किसी गांव में भी पूरी तौर से सौर-ऊर्जा से पैदा की गयी बिजली का सब कार्यों के लिए इस्तेमाल किया गया है?

७. गत वर्ष किस नाविक ने समुद्री मार्ग से बिना रुके दुनिया का चक्कर लगाया था?

८. भारत के किस केंद्र-शासित प्रदेश का अपना उच्च न्यायालय है?

९. किस महिला ने सबसे पहले शब्द की गति (लगभग ७४० मील प्रति घंटा) से तेज उड़ान करनेवाले विमान का चालन किया? कब?

१०. 'रघुपति राघव राजाराम, पतितपावन सीताराम' की लोकप्रिय ध्वनि भारत के किस प्रसिद्ध संगीतज्ञ ने बनायी थी?

११. हमारे देश में नेत्रहीनों की संख्या दुनिया के नेत्रहीनों (लगभग २ करोड़ ७० लाख) के अनुपात में कितनी है?

१२. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

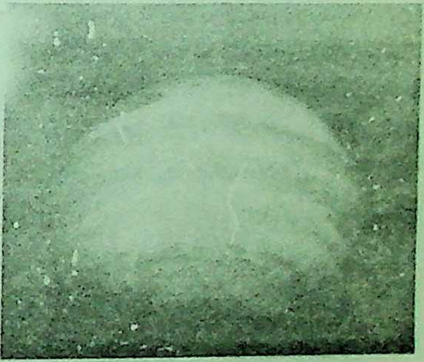

उसकी पीठ में शेर की तरह बाल थे तथा उसके दोनों हाथ शेर के पंजे की भांति दिखलायी दे रहे थे। बच्ची की गरदन व खोपड़ी के दोनों हिस्से नहीं थे।

सावधान! नशा वंश विकृत करता है

• संजय गोठवाल

उदयपुर का जनरल अस्पताल। समय सुबह। सारे वार्डों में कुछ आश्चर्य, कुछ भय और कुछ परेशानी का मिला-जुला वातावरण।

कारण—?

इस अस्पताल के जनाना-वार्ड में, एक महिला ने विचित्र आकृतिवाली एक मृत बच्ची को जन्म दिया था। बच्ची की गरदन तथा खोपड़ी के दोनों हिस्से नहीं थे। उसकी पीठ में शेर की तरह बाल थे, तथा उसके दोनों हाथ शेर के पंजे की भांति दिखलायी दे रहे थे। एक किलो वजन की मृत बालिका की 'स्पाइनल केनाल' खुली हुई थी तथा उसकी अविकसित नाक के कुछ ऊपर, बिलकुल बीच में थी हीरे-जैसी चमकीली कटोरीनुमा एक मोटी आंख, जिसमें बटननुमा दो पुतलियां थीं। मां के गर्भ में ९ माह पूरे करने के पूर्व ही, सात माह की अवधि में जन्म ले लिया।

डॉक्टरों के अनुसार उसकी नाक का विकास नहीं हो पाने के कारण ही आंखें अलग-अलग नहीं हो पायी थीं। मृत बच्ची का मस्तिष्क, किसी दैत्य की गोल खोपड़ीनुमा लग रहा था।

आयुर्विज्ञान में इस प्रकार के जन्म लेनेवाले बच्चों के केस को 'ईनेनंसेफली' और 'साईक्लोप्स' कहते हैं। कुछ बच्चे ऐसी विकृत अवस्था में क्यों जन्म लेते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में, उदयपुर के डॉक्टरों एवं विशेषज्ञों ने अनेक मत व्यक्त किये हैं।

उदयपुर के जनरल अस्पताल के शिशुरोग-विशेषज्ञ प्रोफेसर बी. भंडारी का कहना है, कि माताओं द्वारा गर्भावस्था के समय बीड़ी, सिगरेट, शराब पीने, नींद की गोलियां खाने, मानसिक रोगों के उपचार की एल. एस. डी. गोलियां खाने, हशीश का सेवन करने तथा कैंसर रोग निदान आदि की गोलियां खाने के कारण भी ऐसे बच्चे का जन्म होता है।

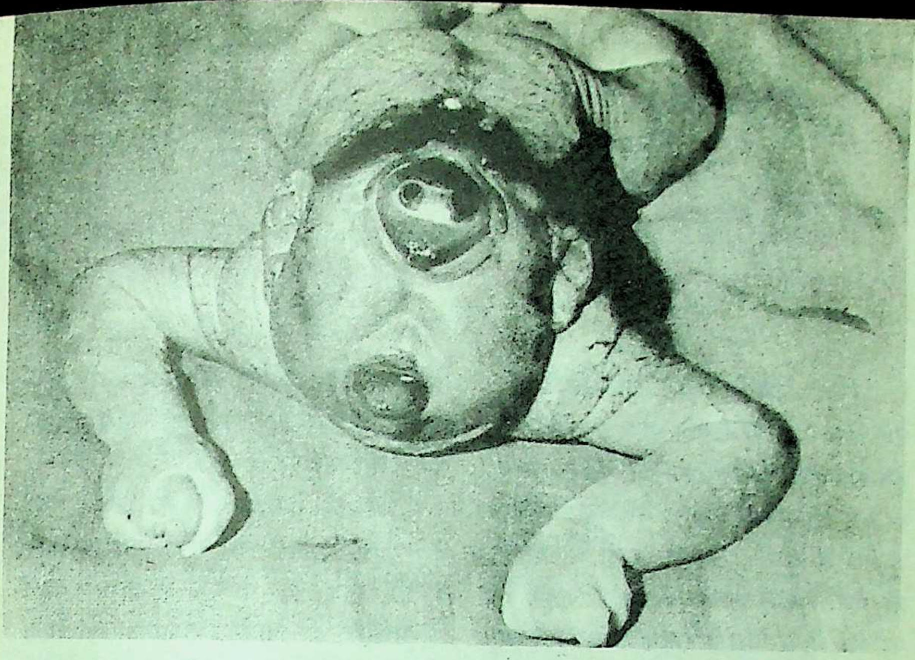

उदयपुर में विकृत आकृति में जन्मी मृत बालिका

जनरल अस्पताल के रति-रोग एवं चर्म रोग-विशेषज्ञ डॉ० निर्मलकुमार बंसल के अनुसार, 'क्रोमोजोम्स' के पूरे २३ पेपर होने पर ही बच्चा सामान्य अवस्था में जन्म लेता है। 'क्रोमोजोम्स' के थोड़ा-सा भी कम या अधिक होने पर, बालक विचित्र आकृति में जन्म ले सकता है। कुपोषण तथा गर्भावस्था के समय, माता के शरीर पर रेडियोधर्मिता की किरणों का प्रभाव पड़ने आदि के कारण भी, बच्चे विकृतावस्था में जन्म ले सकते हैं।। अस्पताल के प्रमुख सर्जन डॉ० आर० के० अग्रवाल का यह कहना है, कि गर्भावस्था के प्रथम तीन माह में ही इस प्रकार की विकृतियां होने की अधिक संभावनाएं होती हैं। कुछ विषाणुओं से भी इस प्रकार के रोग होते हैं।

स्त्री-रोग-विशेषज्ञा डॉ० तारा माथुर का विचार है, कि शिशु के विचित्र आकृति में जन्म लेने के पीछे, गर्भावस्था के प्रथम तीन माह में, महिला द्वारा अधिक गोलियों का सेवन करने और उनका 'रिएक्शन' होने, गर्भावस्था के समय बहुत तेज ज्वर में खतरनाक गोलियों का सेवन करने से भी, ऐसे 'बच्चों' के जन्म की आशंका बनी रहती है। कहते हैं, उदयपुर में विकृत अवस्था में जन्म लेनेवाली उक्त मृत बच्ची भारत में पहली थी। शेष संसार में भी अभी तक केवल तीन बच्चों ने इतनी विकृत अवस्था में जन्म लिया है।

२९, झीणीरेत गली, उदयपुर (राजस्थान)

विधि-विधान

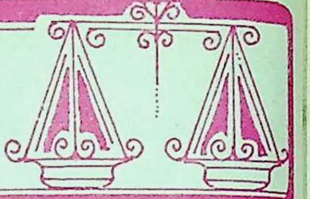

करुणा शर्मा, इंदौर : शादी के तीन वर्ष बाद मेरे पति की मृत्यु से मैं और हमारा पुत्र असहाय हो गये। इसके दो वर्ष बाद मेरा संपर्क मेरे एक पड़ोसी युवक से हुआ, जिससे बाद में शादी हो गयी। पति मुझसे तो प्यार करते हैं, पर मेरे पहले पति के लड़के से जो अब दस साल का है, उनका व्यवहार ठीक नहीं है। वह उसे नौकर की तरह रखते हैं। मुझ से यह सब नहीं सहा जाता। मैं चाहती हूं कि उनसे तलाक ले लूं। क्या मुझे तलाक मिल सकता है। हमारी शादी हिंदू विवाह पद्धति से हुई थी, जिसका हमने रजिस्ट्रेशन भी करवा रखा है।

विवाह का रजिस्ट्रेशन करवा लेने से आपके परस्पर अधिकारों व कर्त्तव्यों में कोई अंतर नहीं पड़ता। हिंदू विवाह अधिनियम के अंतर्गत ही आपके अधिकारों का निर्णय होगा। उक्त अधिनियम के अंतर्गत हुए विवाहों का भी रजिस्ट्रेशन करवाया जा सकता है।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त

आपको तलाक मिलना संभव नहीं है क्योंकि, आपके नये पति का व्यवहार आपके पहले पति के पुत्र से ठीक न होने के आधार पर आपको तलाक नहीं मिल सकता। आपके लिए उचित तो यह होगा कि परिवार में ताल-मेल बनाकर, अपने पति के मन में उस बच्चे के प्रति प्यार पैदा कर दें। यदि यह संभव न हो, तो बच्चे को किसी होस्टल आदि में रख कर पढ़ाने की व्यवस्था करना आपके लिए उपयोगी साबित हो सकता है।

दीप कुमार रोहतगी, दिल्ली : मेरे मकान में एक किरायेदार रहता है। मुझे अपनी रिहाइश के लिए मकान की आवश्यकता है। मुझे पता लगा है कि खुद की जरूरत के लिए मकान खाली करवाना अब आसान हो गया है। क्या मैं जल्दी से जल्दी मकान खाली करवाने की कार्यवाही कर सकता हूं। मेरे किरायेदार की तरफ लगभग २७ महीने का किराया बाकी है। क्या मैं वह रकम भी उस दावे में प्राप्त

कर सकता हूं।

दिल्ली किराया नियंत्रण अधिनियम में एक संशोधन द्वारा धारा २५(बी) समाविष्ट की गयी है। जिसके अंतर्गत स्वयं की आवश्यकता के लिए मकान खाली कराने के लिए कार्यवाही की जा सकती है। इस धारा के प्रयोग के लिए दावे में अन्य किसी आधार पर मकान खाली करवाने की मांग नहीं की जा सकती। इस धारा के अंतर्गत दावे के शीघ्र निर्णय की व्यवस्था है। इस प्रकार के फैसले के विरुद्ध अपील भी नहीं की जा सकती। केवल उच्च न्यायालय में निरीक्षण (रिवीजन) की याचिका दी जा सकती है।

इस धारा का उद्देश्य झगड़ों का शीघ्र निपटारा करना है। इसलिए इस धारा का उपयोग करनेवाला मकान-मालिक, किराये की शेष राशि जमा करवाने के लिए, उस दावे में आवेदन नहीं कर सकता। किराये की बकाया राशि वसूल करने के लिए आपको अलग से दावा करना होगा। इस संबंध में दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा (रामनाथ व अन्य बनाम ओ. पी. खापरिया) एस० ए० ओ० नं० ६४, वर्ष १९७९ में दिया गया निर्णय उल्लेखनीय है।

सचिव , बाजार विकास समिति, दरियापुर, सारण : दरियापुर बाजार के हम सभी ७०–७५ दूकानदारों ने एक 'बाजार-विकास-समिति' की स्थापना की है। इसके अंतर्गत हम बाजार व उसके आस-पास के क्षेत्रों को सुंदर व स्वच्छ बनाने का कार्य करते हैं तथा निर्धनों की आर्थिक सहायता भी करते हैं। कृपया बताएं कि क्या इस समिति का पंजीयन हो सकता है?

रामप्रकाश गुप्त

समिति का पंजीकरण ट्रेड यूनियन एक्ट १९२६ या समिति पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत कराया जा सकता है। ट्रेड यूनियन एक्ट के अंतर्गत पंजीकरण के लिए आपको ट्रेड यूनियनों के पंजीयक के कार्यालय में आवेदन करना होगा। समिति पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत अलग पंजीयक नियुक्त किये गये हैं। आवेदन के साथ आपको अपनी समिति के नियमों की प्रति भी भेजनी होगी।

बृजराज सिंह, रायपुर : मेरी उम्र ४० वर्ष है। मेरे पिता का मकान जिला दतिया में स्थित है। हम लोग तीन भाई हैं, मेरे पिताजी भी तीन भाई थे। मेरे पिताजी सबसे बड़े भाई थे, उनका स्वर्गवास १९६९ में हो गया था। मेरे पिता के भाई और मेरे भाई लोग मकान का हिस्सा बंटवारा नहीं करना चाहते। अतः मुझे अपने हिस्से को लेने के लिए क्या करना होगा?

आप मकान का बंटवारा करवाने

मसूड़ों में तकलीफ़ की पहली निशानियाँ

प्लाक (Plaque)
प्लाक याने दाँतों और मसूड़ों पर हमेशा जमती रहनेवाली कीटाणुओं की अदृश्य परत। अगर साफ़ न किया जाय तो प्लाक के कारण टारटर जम जाती है।

टारटर (पपड़ी)
दाँतों की जड़ की ओर जमी हुई पपड़ी से मसूड़ो में सूजन और तकलीफ़...बाद में मसूड़ों व हड्डियों के सिकुड़ने से दाँत गिर भी सकते हैं।

मसूड़ों से ख़ून
कमजोर और खोखले मसूड़ों को ब्रश से साफ़ करते समय ख़ून निकल सकता है। इससे दर्द भले ही न हो फिर भी कई गंभीर समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

आपके मसूड़ों की देखभाल के लिये फोरहॅन्स, दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

Forhan's
Forhan's
FOR THE
GUMS
"BRUSH YOUR TEETH WITH IT"

डॉक्टर फोरहॅन्स का अनोखा फ़ॉर्मूला
डॉक्टर फोरहॅन्स का फ़ॉर्मूला अपने असरकारक एस्ट्रिंजेंट के कारण मसूड़ों की सतह मज़बूत बनाकर मसूड़ों की तकलीफ़ से दूर रहने में आपकी मदद करता है।

दाँतों के डॉक्टर कहते हैं
मसूड़ों की ख़राबियों से अच्छे दाँत भी गिर सकते हैं।
इसलिए हर रात और हर सवेरे फोरहॅन्स टूथपेस्ट और फोरहॅन्स डबल एक्शन टूथब्रश से अपने दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश कीजिए।

मसूड़े ख़राब तो तन्दुरुस्ती ख़राब

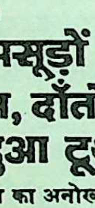

मुफ़्त ! "आपके मसूड़ों और दाँतों की देखभाल"-- दाँतों की देखभाल सम्बन्धी रंगीन सूचना पुस्तिका। डाकखर्च के लिये ३० पैसे के टिकट साथ भेजकर इस पते पर लिखिये :
फोरहॅन्स डेन्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. ११४६३.
डिपार्टमेंट P123-224, बम्बई-४०० ०२०
पुस्तिका किस भाषा में चाहिये, हमें अवश्य लिखिये।

फोरहॅन्स
दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

224F-172 HN

Regd. T.M: Geoffrey Manners & Co.

के लिए न्यायालय में दावा कर सकते हैं। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम १९५६ आपके अधिकार को मान्यता देता है। मकान के हिस्से करना संभव न होने पर न्यायालय मकान को बेचने का आदेश दे सकता है। मकान बिकने की स्थिति में आपके हिस्से की रकम आपको मिल जायेगी। मकान बिकने का आदेश होने पर यदि आप चाहें तो बंटवारा अधिनियम १८९३ की धारा ३ के अंतर्गत मकान स्वयं खरीदने के लिए न्यायालय में आवेदन भी कर सकते हैं।

महीपसिंह, आसनसोल : मैं दो नामों से जाना जाता हूं, एक नाम महीप सिंह है और दूसरा परमिंदर सिंह। दोनों ही नामों से बैंकों में अलग-अलग खाते हैं और व्यवसाय है। क्या दोनों नामों को चालू रखने के लिए कानूनी कार्यवाही आवश्यक है?

साधारणतया किसी भी व्यक्ति का एक ही नाम होता है। परंतु कई बार बचपन का अलग नाम होने के कारण दो नाम चलते रहते हैं। व्यापार दो अलग-अलग नामों से करने का कारण या औचित्य समझ में नहीं आता। बैंकों में तथा व्यापार में तो आपका एक ही नाम होना चाहिए। अन्यथा आप परेशानी में पड़ सकते हैं। आपको दोनों स्थानों पर उर्फ 'एलियस' में दूसरा नाम लिखवा कर, अपना नाम स्पष्ट करा लेना चाहिए।

अशोकराज डाबर, मोदीनगर : मैं अपनी साहित्यिक रचनाएं 'अशोक राज डाबर' के नाम से लिखता हूं। डाबर एक आयुर्वेदिक पेटेंट एवं सौंदर्य प्रसाधन सामग्री के निर्माता हैं। डाबर एक ट्रेड मार्क एक्ट रजिस्ट्रेशन के अंतर्गत रजिस्टर्ड भी है। कृपया बताएं कि मैं अशोक राज डाबर नाम से साहित्य की रचना कर सकता हूं, या कानूनी रूप से मुझे 'डाबर' शब्द अपने नाम से हटा लेना चाहिए?

अपने नाम के साथ डाबर लगाकर आप किसी कानून का उल्लंघन नहीं कर रहे। व्यापार व 'मर्चेंटाइज' चिह्न अधिनियम १९५८ की धारा २८ इस संबंध में उल्लेखनीय है। पंजीकृत चिह्न के प्रयोग का एकाधिकार केवल वस्तु विशेष तक सीमित होता है। अपने नाम के साथ उक्त शब्द का प्रयोग कर आप उसका उल्लंघन नहीं कर रहे। वैसे भी आप तो लेखन कार्य ही करते हैं, किसी वस्तु का क्रय-विक्रय तो नहीं। ●

स्विट्जरलैंड के ब्राउनवैल्ड इलाके में मार्टिन वोगेल नामक ऐसा होटल है जहां बच्चों की खातिरदारी का विशेष ख्याल रखा जाता है। होटल में भोजन ऐसा ही बनता है जो बच्चों को पसंद आये और उनके लिए सैर-सपाटे का आयोजन किया जाता है। होटल के रसोईघर में बच्चों को सामान गिराने, बर्तन तोड़ने या इसी तरह की शरारतों की पूरी छूट है।

या अली

धार्मिक सहिष्णुता की प्रतीक, अवध की गंगा-जमुनी संस्कृति को बरकरार रखने में लखनऊ के नवाबों का बड़ा योगदान रहा है।

लोक-मानस के विश्वासों के अनुसार लखनऊ के मुसलमानी नवाबों के साथ उनका हनुमान प्रेम भी जुड़ा है। कहते हैं, दो ढाई सौ वर्ष पूर्व, वर्तमान लखनऊ के निकट, अलीगंज के जंगल में, नैमिषारण्य की परिक्रमा करके आया एक साधु एक मठिया के निकट ठहर गया। वहां तपते जेठ में उसने तपस्या प्रारंभ की। उसी के पश्चात उसमें एक दिन बजरंगबली की प्रतिमा प्रकट हो गयी और पूजा-आरती होने लगी। साधु और मूर्ति के चमत्कारी प्रभाव से लोगों के रोग-दोख दूर होने लगे और मनोकामना पूर्ति की ख्याति दूर-दूर फैलने लगी।

एक रात हनुमानजी ने स्वप्न दिया, कहा, "फिल्मों में जाओ।" फिर शादी हुई तो एक मुस्लिम फिल्म स्टार से...

जीनतमहल ने मंदिर बनवाया

नवाब वाजिद अली शाह की मां जीनत महल को पहले संतान न होने का बड़ा दुख था। पुत्र प्राप्ति की लालसा में वे उस मठिया में पहुंचीं। इस्लाम-धर्मावलंबी मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी होते हैं, पर मनोकामना-पूर्ति पर उन्होंने मठिया को एक सुंदर मंदिर का रूप दिलवा दिया।

किंवदंती है कि जेठ मास का जो मंगल उनके लिए मंगलकारी सिद्ध हुआ, उसी पर प्रत्येक वर्ष अलीगंज मंदिर में मेला लगने लगा।

नवाबों की हनुमान-भक्ति

बताते हैं, एक बंदर को बंदूक से मार देने से एक नवाबजादे का दिमाग फिर गया। दूसरे भी, नवाब बनने का बस ख्वाब देखते रह गये। बंदर के शिकार के बाद शाही खानदान के एक मियां बीमार पड़े और चल बसे। आगा मीर को एक रात बजरंग बली का इलहाम हुआ। नतीजा यह हुआ कि बंदर-वध वर्जित कर दिया गया और बड़े-बड़े लंगूरी बंदर पाले जाने लगे। लखनऊ वैसे भी बाग-बागीचों का नगर है। और बागों के साथ-साथ बंदरिया बाग भी बस गया। पर इस इलाके में वानरों की कोई सेना नहीं दिखती, न ही उन्हें कच्चे चने चुगानेवाले भक्तगण। पर पुराने लखनऊ में वे अवश्य दिखते हैं। उनका, कभी का क्रीड़ा-स्थल, गोमती पर बना

'मंकी ब्रिज' अब ढह गया है पर हनुमान-सेतु अभी खड़ा है।

नवाबों की 'हनुमान-भक्ति' के अन्य उदाहरण भी हैं। नवाब आसफुद्दौला ने अपने दीवान टिकइतराय को भेज, अयोध्या की हनुमान-गढ़ी का निर्माण करवाया। कहते हैं, गोस्वामी तुलसीदास ने लखनऊ के छाछूकुआं नामक स्थान में बजरंगबली की मूर्ति स्थापित की। तत्पश्चात हनुमान गढ़ी की यात्रा की। अंगरेजों के जमाने में भी कलक्टर लोग अमीनाबाद के हनुमान मंदिर में आरती का सामान और घंटा घड़ियाल आदि भेंट करते थे। चौधरी खलीकुज्जमा ने भी अलीगंज के मंदिर-निर्माण में सहयोग दिया था।

बजरंगबली

● अंजनी कुमार

बजरंगबली की प्रतिमा

पुनरुद्धार की योजना

अलीगंज में दो हनुमान-मंदिर हैं। पहला जहां विशाल मेला लगता है, दूसरा उससे आगे है। जो पहले से अधिक प्राचीन है पर उतना नहीं पुजता है। मेले पर बड़े-बड़े हाकिम हुक्काम दर्शनार्थ यहीं आते हैं। अलीगंज मंदिर के पुनरुद्धार के लिए एक योजना बनायी गयी है। रैंदास मंदिर से आरंभ होकर महानगर तक का क्षेत्र इसमें आता है। 'अलीगंज-मंदिर-योजना' पूर्ण होने पर यहां सुरम्य और आकर्षक पर्यटक स्थल बन सकता है। बावली के पास साधु-महात्माओं के ठहरने हेतु स्थान भी बन गया है। मंदिर के मंडप में हनुमान-लीला के दृश्य चित्रांकित किये गये हैं। मंदिर के दाहिने हाथ में जो विशाल प्रांगण है, वह बरबस 'सुंदर कांड' का स्मरण कराता है।

सुनील दत्त को हनुमान-दर्शन

इसी मंदिर के प्रांगण में एक शरणार्थी

आकर ठहरे। पास के फौजी दफ्तर में नौकरी भी मिल गयी।

एक रात की बात है। हनुमान जी ने स्वप्न दिया, 'फिल्मों में जाओ।' वे सुनीलदत्त थे। शादी हुई एक मुसलिम फिल्म-स्टार से। नरगिस और सुनील दत्त दोनों हनुमान-भक्त हैं। जब भी लखनऊ आते हैं, तब अलीगंज के मंदिर में दर्शनार्थ अवश्य आते हैं।

सांप्रदायिक सद्भाव के प्रतीक

बजरंग बली को पराक्रम और पौरुष का प्रतीक माना गया है। अपने शौर्य के ही कारण वे भगवान राम के सेनानायक, अंगरक्षक और दूत बने। बड़े मंगल पर, साष्टांग दंडवत करते, परिक्रमा हेतु जाते लाल लंगोटधारी आधुनिक हनुमान-भक्तों के दर्शन होते हैं। व्यायामशालाओं में जानेवाले जो भी पहलवान हैं, वे बजरंग बली की ही जय बोलते हैं। गदा का प्रचलन अब नहीं रहा, पर हिंदुओं में लाल और मुसलमानों में हरे रंग के लंगोटे बांधने का प्रचलन आज भी है।

अली मुसलमानों के बलिष्ठ पैगंबर माने जाते हैं और इस्लाम माननेवाले उन्हीं का नाम लेकर अखाड़े में कूदते हैं। पहलवानी और दंगल आज के कटुतापूर्ण युग में भी प्रेम, सौहार्द और धार्मिक सहिष्णुता का परिचय देते हैं।

या अली; या बजरंगबली!

द्वारा श्री प्रमोद टंडन, मैनेजर रवीन्द्रालय,
चारबाग—लखनऊ—२२६००१

इनके भी बयां हैं जुदा-जुदा

हर-एक आंख के आंसू हैं अपनी पलकों
हर-एक सीने में जो दर्द है हमारा
—फिराक गोरखपुर

अपने-अपने दुखों की दुनिया में
मैं भी तनहा हूं वो भी तनहा है
—मखमूर सईद

मैं अपने को सूरज ही कहता रहा
मगर मेरे घर में अंधेरा रहा
—नदीम सिद्दीक

घर से मैं निकला हूं खुद को ढूंढ़ने
सूनी सड़कों पर, अंधेरी रात में
—निजामुद्दीन निजा

मैं अपने आप से इक खेल करने वाला
सभी ये सोच रहे हैं कि मरने वाला
—आजाद गुलाट

थे हक-परस्त हम तो सजा ये मिली ह
अहले जहां की आंख का कांटा बने र
—तरब मेरठ

जहां-जहां से शहीदों के काफिले गुज
उड़ी है गर्दे-सफर, रंगे-गुलसितां की तर
—कैलाश बिहारी माथुर 'मौज

बेवफाओं का ये तारीक नगर है, इस
प्यार की अब कोई कन्दील जलाओ यार
—हामिद नदी

हर आरजू को जो सूली दी हमने ठीक किय
ये नाग होते तो तनहाई तक को डस जा
—आफताब शम्स

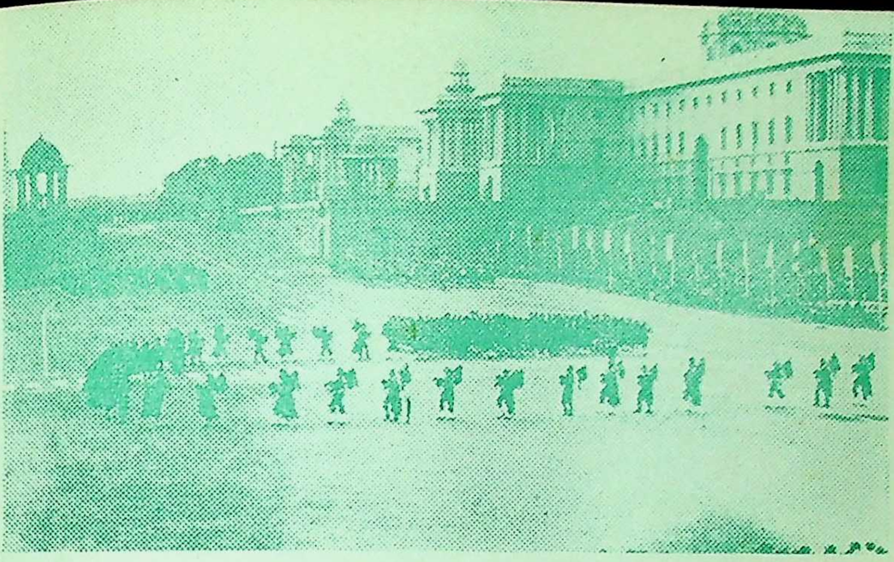

समझ नहीं आता कि यह कैसा सर्वोच्च प्रभुसत्ता संपन्न गणतंत्र है, जहां बालिग मताधिकार संसदीय लोकतंत्र तथा बहुमत के शासन के बावजूद, मात्र ढाई प्रतिशत लोगों की भाषा साढ़े सत्तानबे प्रतिशत लोगों की भाषाओं पर शासन कर रही है !

ढाई प्रतिशत का गणतंत्र

• कैलाश भारद्वाज

भाषा के विषय में एक बार रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा था : 'भाषा कोई छाता अथवा ओवरकोट नहीं है, जिसको मांग-तांगकर काम चलाया जा सके, भाषा तो मनुष्य की जीती-जागती खाल है।'

कहना न होगा कि गुरुदेव के इसी विश्वास ने उनसे 'गीतांजलि' बंगला में लिखवायी थी, उसका अंगरेजी में अनुवाद तो उन्होंने बाद में किया था। भाषा की खाल से उपमा देने के पीछे गुरुदेव

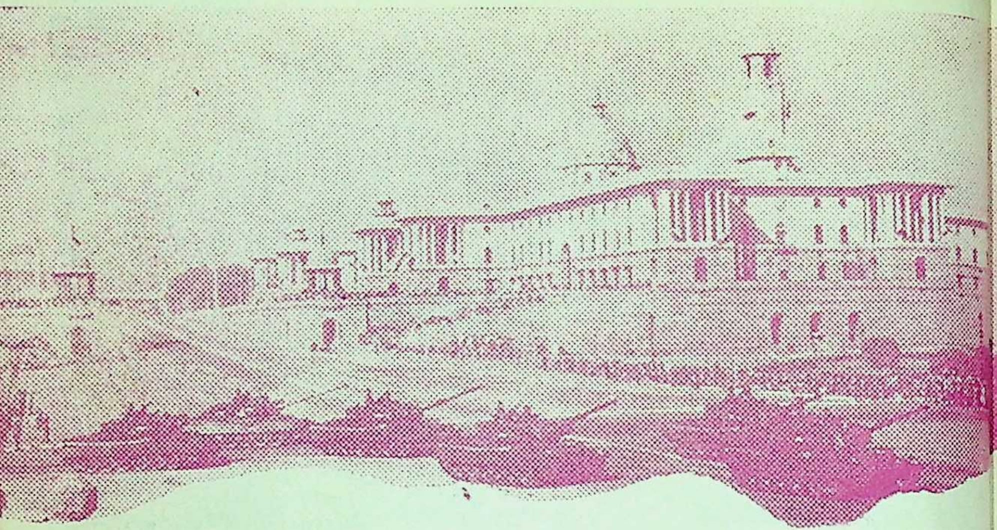

का यही आशय था कि भाषा-संस्कृति से सदा ही अभिन्न होती है। आदमी आखिर अपने सामाजिक संगठन में ही जीवन-यापन करता है। वह अपने समूह के पारस्परिक आचरण को सीखता है। आचरण की आत्मा भाषा ही है, क्योंकि मनुष्य-मनुष्य के बीच अनुभवों-विचारों का जो आदान-प्रदान होता है, वह अधिकांश में भाषा के ही माध्यम से होता है। भाषा मनुष्य की सभी सांस्कृतिक गतिविधियों से संबद्ध होती है।

अब प्रश्न यह है कि क्या हमारे देश की कोई अपनी संस्कृति है? यदि नहीं, तब तो हमारा काम किसी भी भाषा से चल जाएगा, और यदि है, तो हमें अपनी ही भाषा से काम चलाना होगा——चाहे हमारी भाषा आदिम हो, अविकसित हो, पिछड़ी हुई हो। स्पष्ट ही है कि उस अवस्था में न तो हमारा काम किसी 'विश्व-भाषा' से चलेगा, न अंतर्राष्ट्रीय भाषा से और न किसी विकसित-आधुनिक भाषा से।

केवल एक ही और स्थिति में हमारा उद्धार किसी विदेशी भाषा से हो सकता है: यदि हम अपनी संस्कृति को इस कदर दीन-हीन मान लें कि उसे नकारकर कोई विदेशी संस्कृति अपना लें। अतः यदि भारत की भौगोलिक स्थिति से उद्भूत अपनी संस्कृति के प्रति ही हमारी हीन भावना है, तब उस भौगोलिक स्थिति के प्रति हमारे मन में गौरव की भावना कैसे हो सकती है? और तब, हमारे वहां बने रहने का, वहां के साधनों को भोगने का ही, क्या औचित्य हो सकता है?

आयरलैंड ज्योंही आजाद हुआ, वहां के निवासियों ने इंगलैंड का भाषायी साम्राज्यवाद भी उतार फेंका।

राष्ट्र की अस्मिता

गुलामी के दिनों में आइरिश भाषा स्वभा-

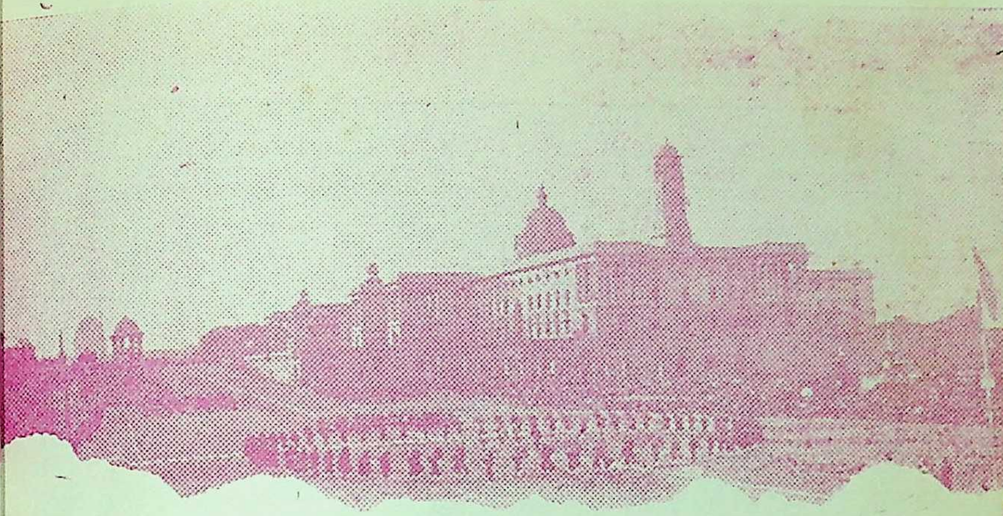

वत: ही छिन्न-भिन्न हो गयी थी। लंबी अवधि तक जन-जीवन में उसका प्रयोग न होने के कारण, उस भाषा को जंग लग गया था। परंतु देश-भक्त आइरिश लोगों ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने बड़े उत्साह, धैर्य व लगन के साथ अपनी भाषा के बिखरे हुए सूत्रों को पुन: संजोया। क्योंकि, वे जानते थे कि किसी भी राष्ट्र की अस्मिता उसकी भाषा से ही प्रकट होती है।

इजरायलियों ने आज की सभी सशक्त-विकसित भाषाओं का मोह त्यागकर अपनी पुरानी हिब्रू भाषा को अपनाया। आज इजरायल की चतुर्दिक प्रगति को देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि अंगरेजी अथवा अन्य कोई अंतर्राष्ट्रीय भाषा न अपनाने से उस देश को कोई क्षति पहुंची है।

कृत्रिम उपग्रह सबसे पहले रूस ने बनाया। उसके साथ ही रूसी भाषा के शब्द-कोश में एक नया शब्द जुड़ गया—'स्पुतनिक!' उधर आकाश में रूसी उपग्रह चढ़ा, इधर उनके शब्द-कोश में 'स्पुतनिक' चढ़ गया। और यही स्वाभाविक भी है। कोई देश ज्यों-ज्यों प्रगति करता जाता है, उसकी भाषा समृद्ध होती जाती है। क्योंकि, अन्य चीजों की तरह भाषा भी जीवन की अनुगामिनी है। भाषा प्रयोग-कर्ताओं के चरित्र और विकास की प्रतिछवि होती है।

और भाषा का सबसे करीबी संबंध होता है, संबद्ध देश की शासन-व्यवस्था से। परतंत्र देश में तो वहां के शासकों की भाषा का चलना स्वाभाविक ही होता है। क्योंकि, जिस देश को सच्चे अर्थों में गुलाम बनाना हो, उसकी भाषा को ही सबसे पहले हटाना होता है, उसे पंगु करना होता है।

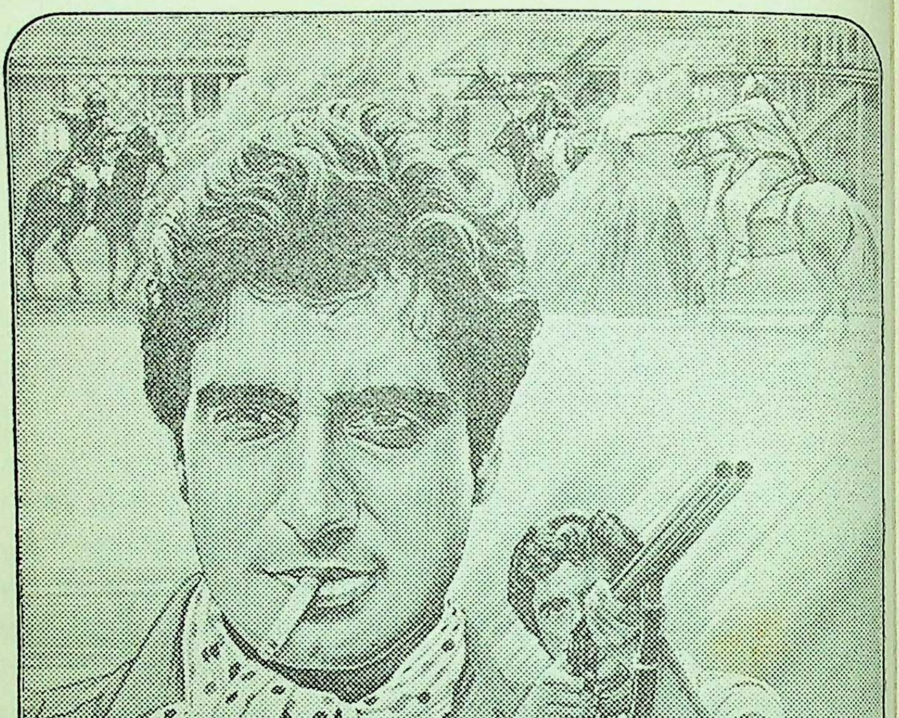
"हम रेड एण्ड व्हाइट पीनेवालों की बात ही कुछ और है!"
Smooth & Right
RED & WHITE
MARCOVITCH
VIRGINIA FILTER
GPI

गॉडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड

वैधानिक चेतावनी: सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।
STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

Rediffusion/GPI/1143f/HN

ढाई प्रतिशत की भाषा

सही अर्थ में स्वतंत्र देश तो कभी भी परायी भाषा को बर्दाश्त नहीं करते। स्वयं इंगलैंड ने ही अपने ऊपर लदी लैटिन (और फ्रांसीसी) भाषाओं के प्रभुत्व के विरुद्ध घोर संघर्ष किया तथा अंततः उन्हें निरस्त करके ही चैन की सांस ली।

हमारा देश तो सर्वोच्च प्रभु-सत्ता-संपन्न गणतंत्र है। लोकतंत्र में तो किसी प्रकार के अधिनायकवाद की भी गुंजाइश नहीं होती। वहां तो आम आदमी का ही (अप्रत्यक्ष) शासन होता है। लोकतंत्र वैसे भी बहुमत का शासन है।

भारत में बहुमत की भाषा हिंदी है—इस तथ्य से कोई भी अपरिचित नहीं है और इसीलिए हमारे संविधान में हिंदी को ही देश की राजभाषा व संपर्क भाषा स्वीकार किया गया है। किंतु आज तीस वर्षों के बाद भी हमारे प्रायः सभी काम-काज ढाई प्रतिशत लोगों की भाषा अंगरेजी में ही चल रहे हैं, और हम लोग हैं कि इसमें बड़े गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

और मजे की बात यह कि प्रायः प्रतिदिन ही अंगरेजी के पक्ष में, उस भाषा को सदा-सदा के लिए यहां बनाये रखने के पक्ष में एक से एक नयी दलील पेश की जाती हैं। अंगरेजी के स्वाभाविक रूप से गिरते हुए स्तर पर जबरदस्त चिंता व्यक्त की जाती है, उसके पठन-पाठन को और प्रभावशाली बनाने की योजनाएं कार्यान्वित की जाती हैं, तथा चुपके-चुपके यह स्वप्न देखा जाता है कि अंततः एक दिन ऐसा आ ही जाएगा, जब इस देश में अंगरेजी भाषियों की संख्या हिंदी भाषियों से अधिक हो जाएगी तथा यह 'टंटा' हमेशा के लिए मिट जाएगा।

समझ नहीं आता कि यह कैसा सर्वोच्च प्रभु-सत्ता-संपन्न गणतंत्र है, जहां बालिग मताधिकार संसदीय लोकतंत्र तथा बहुमत के शासन के बावजूद मात्र ढाई प्रतिशत लोगों की भाषा साढ़े सत्तानवे प्रतिशत लोगों की भाषाओं पर शासन कर रही है?

आखिर इस 'ढाई प्रतिशत के गणतंत्र' को क्या कहा जाए?

—वाणी-विहार रानी तालाब, नाहन
(हि. प्र.)

पश्चिमी जर्मनी के स्वास्थ्य मंत्रालय ने विटामिन की गोलियों के वितरण पर रोक लगा दी है क्योंकि दो अमरीकी विशेषज्ञों द्वारा की गयी खोज के अनुसार अधिक विटामिन लेने से स्वास्थ्य खराब हो जाता है। विटामिन से हड्डियों को नुकसान पहुंचता है, नसें सख्त हो जाती हैं, यकृत खराब होता है और गंजापन आता है। विटामिन सी से पथरी और मधुमेह होते हैं। डी से खून में कैलशियम और फास्फेट जमने लगते हैं जिससे गुर्दों और हृदय को नुकसान पहुंचता है।

उर्दू-कहानी

औरत साहिबा

● अहमद नदीम कासमी

नशे में किसी के दुःखों का बोझ और भारी हो जाता, कोई उपस्थित-अनुपस्थित लोगों को गालियां देने लगता तो कोई पास बैठे औरत-मर्द के कंधे पर सिर रखकर सो जाता। पर इमतियाज के नशे में उखड़ जाने का पता लगता उसकी चाल से—जब वह लड़खड़ाता हुआ यों चलने लगता कि वह खुद किसी और दिशा में चलता तो पैर किसी दूसरी दिशा में। इस तरह वह मेजों, तिपाइयों, क्रॉकरी, बोतलों और गिलासों को तोड़ता कहीं से कहीं जा गिरता।

क्लब के सदस्य कहते थे, 'इमतियाज बहुत सभ्य युवक है। कारोबार में वो अपने पिता सेठ नवाज अहमद से भी दो हाथ आगे। उसे सब कुछ आता है—सिर्फ गिरना नहीं आता।' और वे कहते भी ठीक थे—इमतियाज गिरता तो ऐसे जैसे आकाश से गिरा हो। वह यहां से वहां तक फैलता चला जाता और चिल्लाता—"औरत ! ऐ औरत ! ऐ औरत साहिबा।"

तब वेटर बाहर से सेठजी के ड्राइवर को बुला लाता और वह इमतियाज को कार में डालकर घर पहुंचा देता।

इमतियाज जब यूरोप से लौटा ही था, तब एक दिन, नशे में उखड़कर, उसने पूरे क्लब में खलबली मचा दी। क्लब के एक वरिष्ठ सदस्य माजिद साहब की पत्नी पर जैसे ही उसकी नजर पड़ी, वह उन पर ऐसे झपटा जैसे किसी जादू के प्रभाव में हो। इस हंगामे में क्लब की बहुत सी क्रॉकरी टूट गयी।

दूसरे दिन क्लब के वरिष्ठ सदस्यों

का दल सेठजी के महलनुमा बंगले में पहुंचा तो कारों के काफिले से उतरती भीड़ को देखकर सेठ जी के साथ उनकी पत्नी व पुत्री भी भौचक हो बरामदे में आ खड़ी हुईं। लेकिन माजिद साहब के यह कहने पर कि बात केवल उनके और सेठजी के बीच की ही है, वे अदर चली गयीं।

ड्राइंग रूम में बैठकर सब सदस्यों ने सेठजी से प्रार्थना की कि वे इमतियाज का विवाह जल्दी से कर दें, क्योंकि वह 'औरत, औरत' चिल्लाता है।

सेठ जी हंसे, "अच्छी बात है, स्त्री की चाह अधिक हो तो विवाह सफल रहता है। अभी इस चाह को और बढ़ने दिया जाए।"

सबने आश्चर्य से एक-दूसरे का मुंह देखा। फिर एक सदस्य बोला, "तो फिलहाल आप अपने पुत्र को समझा दीजिए।"

"समझाऊं ?" सेठजी फिर हंसे, "आप सब ही पीनेवाले हैं और मुझसे कहते हैं कि एक पीनेवाले को समझाऊं। भाई! नशा तो किया ही जाता है, समझ-बूझ से दूर होने के लिए, मैं पीता नहीं हूं, पर पीनेवालों के साथ रहा तो हूं। इसलिए आप लोगों की मनोवृत्ति को अच्छी तरह समझता हूं।"

"वह ठीक है सेठजी" माजिद साहब बोले, "पर हम सब परिवारवाले हैं। हमारी वृत्ति का एक अंश सदैव जागृत रहता है। नशे में भी हम यह सहन

नहीं कर सकते कि कोई हमारी स्त्रियों पर हाथ डाले।"

"हाथ डाले" सेठजी हतप्रभ होते हुए बोले, "यह तो बहुत कठोर शब्द है, माजिद साहब ! इमतियाज औरतों से खुले मन से बात कर सकता है पर 'हाथ डाले' यह असंभव है। वह मेरा बेटा है। उसकी रगों में मेरा खून है, शरीफ खून !"

माजिद साहब उसी गंभीरता से बोले, "सेठजी, खून भले ही शरीफ हो पर जब गरम होकर उबलता है तब शराफत के सारे कीटाणु मर जाते हैं, और अंदर से एक दरिंदा उभर आता है—ड्रैकुला।"

"आप इमतियाज को दरिंदा और ड्रैकुला कह रहे हैं ?" सेठजी आवेश में आ गये। "नहीं सेठजी ! हमने ठीक समय पर उन्हें ड्रैकुला बनने से रोक लिया वरना वे तो मेरी पत्नी को चीर-फाड़ डालने की ही नीयत से झपटे थे। ये सब लोग मौजूद थे, इनसे पूछिए," माजिद साहब ने कहा।

सेठजी ने एक नजर सबको देखा। फिर बोले, "कौन-सी पत्नी थीं आपकी ? पहली या दूसरी ? दूसरी ही होंगी। बहरहाल लगता है, इमतियाज यूरोप और अमरीका जाकर भूल गया कि वह किस देश का निवासी और किस समाज का अंग है। मैं देखूंगा कि वह क्लब न जाए। घर में हर तरह की व्हिस्की मौजूद है। यहीं पी लिया करे।"

कुछ समय तक स्तब्धता छायी रही।

फिर एक सदस्य बोला, "यह क्लब आपके कारण चल रहा है सेठजी ! आपने सदस्यों के लिए यहां इतनी सुख-सुविधा एकत्र करदी है कि सारा शहर इसका सदस्य बनने को लालायित है। पर आपकी बीस हजार रुपये मासिक की आय की शर्त के कारण शहर की 'क्रीम' ही यहां आयी है, कूड़ा-करकट नहीं घुस पाया। जैसे 'दीवाने गालिब' के कारण गालिब का नाम अमर है, वैसे ही यह क्लब आपका नाम अमर रखेगा। आप इमतियाज साहब पर अधिक प्रतिबंध न लगायें। हमारी तो आपसे बस इतनी

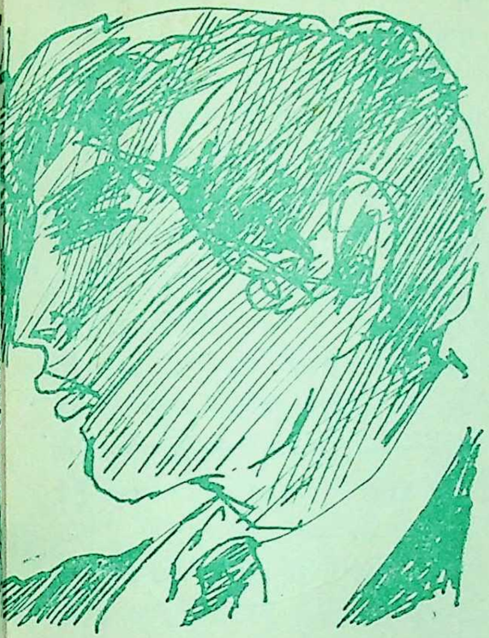

विनती है कि कुछ दिनों तक आप भी उनके साथ आ जाया करें। इससे वे सीमा से आगे नहीं बढ़ेंगे और फिर यही उनकी आदत हो जाएगी।"

सेठजी सहमत होते हुए बोले, "ठीक है आ जाऊंगा।" फिर वे माजिद साहब से बोले, "इमतियाज से कोई गलती हुई है तो वह आपसे माफी मांगेगा। दरअसल वह पश्चिमी सभ्यता के. . ."

माजिद साहब अभी तने बैठे थे, सेठजी को टोकते हुए बोले, "पश्चिम वालों की सभ्यता, उनका रहन-सहन हमसे भिन्न अवश्य है। पर उन्होंने अपनी पत्नियों को कभी नीलाम का माल नहीं बनाया।"

सेठजी ने चौंककर माजिद साहब की ओर देखा। कुछ क्षण एकटक देखते रहे, फिर बोले, "इसका मतलब है कि यदि इमतियाज को क्लब जाना है तो मुझे भी जाना चाहिए, उसके साथ— आऊंगा, माजिद साहब ! हालांकि इससे मेरी रात की नमाज के लिए बहुत देर हो जाएगी। पर क्लब बदनाम नहीं होना चाहिए।"

सब सदस्यों के निश्चित होकर चले जाने पर सेठजी ने फोन करके इमतियाज को बुलाया। सारा हाल उसे बताने के बाद बोले, "बेटा ! इस क्लब से हमने बड़े-बड़े लाभ उठाये हैं। हम अब अरबपति हैं, तो इसमें कम से कम आधा हिस्सा इस क्लब की ही देन समझो, जिसके वातावरण में पत्थर नरम हो जाते हैं और लोहा इतना गरम कि जिधर चाहो मोड़ लो। इस क्लब को मैं मिलों और 'इंपोर्ट-एक्सपोर्ट' के धंधे से भी अधिक महत्त्व देता हूं। अच्छे से अच्छे आदमी इसकी सदस्यता के इच्छुक रहते हैं। इसे बदनाम नहीं होना चाहिए। कल तुमने अच्छा नहीं किया।"

"क्या अच्छा नहीं किया, डैड ?" इमतियाज आश्चर्य से भरकर बोला, "क्या हुआ था कल ? कुछ भी तो नहीं, बस जरा ज्यादा पी ली थी।"

"तुमने क्लब के एक वरिष्ठ सदस्य माजिद साहब की पत्नी से ज्यादती करनी

चाही," सेठजी ने बताया।

इमतियाज को स्मरण हो आया, "अच्छा तो वह ? डैड, आपने कभी उसे देखा है ? आपने कभी संदल से गढ़ा हुआ शरीर देखा है ?"

सेठजी हर्षित होते रहे, "यह माजिद की दूसरी पत्नी है बल्कि तीसरी समझो। एक मर भी तो चुकी है। सुंदर तो वह बहुत है पर, वह माजिद की पत्नी है। तुम क्या करने चले थे उसके साथ ?"

"उसे उसकी सुंदरता पर बधाई देने डैड। उसे बताने कि प्रकृति भी ऐसी अनुपम कृतियों की रचना कभी-कभी ही करती है," इमतियाज बोला।

"बात तो तुमने बुद्धिमानी-की की है" सेठजी हर्षित हो रहे थे, "किंतु यह पूरब है बेटे....प्राचीन एशिया, और एशिया में भी पाकिस्तान—जहां इसलाम है। तुम यूरोप और फिर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़े। तुम व्यापारिक अनुभव के लिए यूरोप और अमरीका के नगर-नगर घूमे, पर यह भूल गये कि तुम्हारा नाम इमतियाज अहमद है वो क्यों ? और मैं सबसे छिपकर पीता हूं तो क्यों ? तुम्हें शेष जीवन यहीं बिताना है। हमारे क्लब को बदनाम नहीं होना चाहिए। पियो, लेकिन तीन-चार पैग से अधिक नहीं। मेरा तो इतने में ही काम हो जाता है। अगर लगे कि संतुलन बिगड़ रहा है तो उठकर चले आया करो ! कल से मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। तुम पहला काम यह करोगे कि माजिद से क्षमा मांगोगे।"

"लेकिन डैड, मैं यह क्षमा मिसेज माजिद से मांग लूं तो कैसा रहेगा ?" इमतियाज ने पूछा।

इस पर पिता-पुत्र देर तक हंसते रहे और फिर वहां से चल दिये। अगले दिन सेठजी बेटे के साथ क्लब पहुंचे, तो सबके चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे। सेठजी बेटे को लेकर माजिद साहब की टेबल पर गये। संकेत करते ही उसने बहुत शिष्टता-पूर्वक माजिद साहब से क्षमा याचना की फिर बोला, "मिसेज माजिद कहां हैं ? मैं उनसे भी क्षमा मांग लूं।"

माजिद साहब बोले, "कल की घटना से कुछ हिल गयी हैं। ठीक होंगी तो आ जाएंगी।"

"हां, उन्हें आना चाहिए" सेठजी

बोले, "अब कुछ नहीं होगा। क्यों इमतियाज ?"

"जी डैड" इमतियाज ने समर्थन करते हुए कहा, "होना क्या है ?"

क्लब का जीवन सामान्य ढर्रे पर आ गया। इमतियाज पीता तो सेठजी उपस्थित रहते। चौथे पैग के बाद उसका गिलास उठाकर मेज के नीचे रख देते। इमतियाज झूमता, मुसकराता तो सेठजी उसे बांहों में समेटकर ले जाते। सब सदस्य सेठजी की शराफत की प्रशंसा करते और एक दिन तो माजिद साहब ने कह दिया--"यदि सब लोग सेठजी जैसे हो जाएं तो समाजवाद की मृत्यु निश्चित है।"

फिर एक दिन माजिद साहब पत्नी को भी ले आये। सब चकित थे कि स्नायविक विभ्रम होने के पश्चात मिसेज माजिद की जिल्द कैसी दमकने लगी है उनकी रंगत के संदल में कैसी अनेक ट्यूब लाइटों के जगमगाने-जैसी उज्ज्वलता आ गयी है।

सेठजी भी तब उपस्थित थे। उन्होंने चार पैग के बाद इमतियाज को समेटा और ले गये। इमतियाज ने मिसेज माजिद को देखा ही नहीं। माजिद साहब ने भी हॉल के अंतिम छोर की टेबल संभाल ली थी।

एक रात सेठजी ने एक वरिष्ठ सदस्य के पास जाकर कहा कि अब इमतियाज ने एशियाई समाज में शराब के तौर तरीके सीखने में प्रथम श्रेणी में सफलता प्राप्त करली है। इस पर देर तक मुसकराहटें बिखरती रहीं। माजिद साहब और मिसेज माजिद ऐसे मुसकाते रहे, जैसे यह सफलता उन्हीं की हो।

अब सेठजी ने क्लब आना बंद कर

दिया। इमतियाज अकेला आता, पर चार पैग की सीमा लांघता कहीं से कहीं निकल जाता। उखड़ने लगता तो वह उठता और गिरता-पड़ता, दायरे बनाता, मेजों को उलटता, "औरत, ऐ औरत, ऐ औरत साहिबा" चिल्लाने लगता।

कुछ दिनों बाद एक दिन उखड़ जाने पर इमतियाज अपनी सीट से उठा। गिरता-पड़ता, झूमता-घूमता, दायरे बनाता और 'औरत-औरत' चिल्लाता माजिद साहब की टेबल पर जा पहुंचा। क्लब में स्तब्धता छा गयी। माजिद साहब का मुंह आरक्त हो उठा। वह खड़े होकर बोले, "फरमाइए"

"औरत इमतियाज मुसकाया। उसकी आंखें आधी से भी कम खुली थीं।

"औरत", कौन-सी औरत", माजिद साहब कड़के।

"कोई भी औरत, केवल एक औरत, टाइम पास करने के लिए,"–फिर उसने झुककर मुसकाते हुए मिसेज माजिद को संबोधित किया, "ऐ औरत साहिबा !"

क्लब के सदस्य इकटठा होने लगे। माजिद साहब आगे बढ़े। इमतियाज को दोनों कंधों से पकड़कर बोले, "यह औरत मेरी बीवी है, मिस्टर ! आइए, मैं आपको औरत, नहीं, नहीं, बल्कि औरतों के पास ले चलता हूं।"

"चलिए" इमतियाज चलने की कोशिश में लड़खड़ाया, "पर, एक शर्त है।" एक—

"क्या ?" माजिद साहब ने पूछा।

"शर्त यह है कि औरत जो भी हो, एसी ही फर्स्ट क्लास हो" उसने मिसेज माजिद की ओर उंगली उठाकर कहा।

"इससे भी सुंदर" माजिद साहब बोले, "आइए।"

और माजिद साहब की पकड में आया हुआ इमतियाज देर तक आश्चर्य का प्रदर्शन करता रहा, "क्या इससे भी सुंदर हो सकती है ? नहीं हो सकती, नहीं हो सकती।"

"हो सकती है, हो सकती है" माजिद साहब उसे खींचे लिये जा रहे थे। सारा क्लब स्तंभित खड़ा देख रहा था कि माजिद साहब क्या करनेवाले हैं।

माजिद साहब ने बड़ी कठिनाई से इमतियाज को अपनी कार में बिठाया। रास्ते भर इमतियाज माजिद साहब को चूमता रहा और अपना प्यार दर्शाता रहा।

कार सेठ नवाज अहमद के महल में प्रविष्ट हुई और पोर्च में रुक गयी। कार से उतरते हुए माजिद साहब ने इमतियाज से कहा—"मैं अभी आता हूं या आपको भी अभी बुलाता हूं।"

"वैसी ही हो माई डियर, आपकी मिसेज–जैसी, संदल से गढ़ी हुई।"

"इंशाअल्लाह, आप तब तक जरा सो लीजिए" माजिद साहब ने कहा।

माजिद साहब ने सेठजी से मिलने की इच्छा का संदेश भिजवाया। उन्हें

ड्राइंगरूम में बिठाया गया। सेठजी शायद अंदर पी रहे थे। सिर पर ऐसे रूमाल बंधा था, जैसे नमाज पढ़ रहे हों। घबराये हुए आये, "क्या बात है माजिद साहब ! रात को इस समय ?"

"कोई विशेष बात नहीं सेठजी ! छोटी-सी बात है। पर यदि आप बेगम साहिबा और बेटी को भी बुलवा लें तो बहुत अच्छा हो।"

सेठजी पलटे, "अवश्य, अवश्य" लेकिन फिर रुके, "कोई विशेष बात लगती है।"

"जी नहीं, ऐसी विशेष कुछ भी नहीं" सुनकर सेठजी सोचते हुए चले गये फिर अपनी पत्नी और बेटी सहित वापस आ गये। तीनों 'नाइट गाऊन' में थीं। पर ऊपर से बड़ी-बड़ी चादरें ओढ़े थीं।

"मैं एक मिनट में हाजिर हुआ" माजिद साहब बाहर लपके। कुछ ही क्षणों में वह इमतियाज को सहारा देते हुए ड्राइंगरूम में घुसे। उसे एक सोफे पर बिठाया और बोले, "लीजिए इमतियाज साहब ! मैंने अपना वायदा निभा दिया है। ये दोनों भी औरतें हैं, ठीक है न !"

इमतियाज पागल की तरह माजिद साहब को देखता रहा। फिर दोनों हाथों से अपना चेहरा छुपाकर बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोता हुआ सोफे पर ढेर हो गया। उसकी मां, बहन और पिता उसकी ओर लपके। माजिद साहब ने फेफड़ों में हवा भरकर इस तरह सीना फुला लिया जैसे मुद्दत से इसके लिए तरस रहे थे।

अनुवाद—शमा अफरोज जैदी

जूरिच में रहनेवाला इमारती लकड़ी का भूतपूर्व विक्रेता हरमन क्रैग कहता है कि २० जुलाई, १९४४ को उसने हिटलर की जान बचायी। उस दिन एक बैठक के दौरान हिटलर के ब्रीफ केस में रखा बम फटा और उससे छप्पर उड़ गया। छप्पर में लगी लकड़ी क्रैग ने बेची थी।

गोष्ठी

सुनीता मल्होत्रा, गुड़गांव: इतिहास में हर्षवर्द्धन नामक राजा के बारे में पढ़ते समय प्रभाकरवर्द्धन और राज्यवर्द्धन-जैसे कुछ नाम पढ़ने में आये। इनके साथ-साथ जुड़ा हुआ 'वर्द्धन' शब्द संयोग मात्र से है या इसका कोई विशेष महत्व है?

यह मात्र संयोग नहीं है। 'वर्द्धन' शब्द एक विशेष राजवंश का सूचक है। इसका प्रसिद्ध राजा प्रभाकर वर्द्धन था, जिसने थानेसर (दिल्ली के आसपास का इलाका, जो थानेश्वर या स्थाणीवर कहलाता है) राज्य की स्थापना की थी। हर्षवर्द्धन इसी का छोटा पुत्र था और राज्यवर्द्धन उससे बड़ा पुत्र। राज्यवर्द्धन की मृत्यु के बाद हर्षवर्द्धन शासक बना, लेकिन वह निस्संतान था, इसलिए यह वंश उसी के साथ समाप्त हो गया।

रंजना, महू: एक समाचार पढ़ा कि दिल्ली में विगत ८ मार्च को स्त्री-दिवस मनाया गया। यह क्या है और ८ मार्च के दिन ही क्यों मनाया जाता है?

अपनी दशा सुधारने के लिए ८ मार्च १८५७ के दिन अमरीका में स्त्री कामगारों ने पहला विरोध-प्रदर्शन किया था। उस दिन कुछ कपड़ा मजदूरिनें इस मांग को लेकर सड़कों पर निकल आयीं कि उनके प्रतिदिन कार्य के घंटों को १६ से घटा कर १० घंटे किया जाए। बाद में जब स्त्री-विमुक्ति का आंदोलन शुरू हुआ, तब उस ऐतिहासिक दिन को स्त्री-दिवस के रूप में मनाने का विचार उत्पन्न हुआ ८ मार्च १९१० को अंतरराष्ट्रीय समाजवादी स्त्री कांग्रेस की स्थापना हुई। ८ मार्च १९१५ को ओस्लो की स्त्रियों ने प्रथम विश्व युद्ध के विरुद्ध प्रदर्शन किया। ८ मार्च १९१७ को रूसी क्रांति में सहायक स्त्रियों ने रोटी की मांग को लेकर मास्को में जुलूस निकाला। ८ मार्च १९२७ को स्पेन की स्त्रियों ने फ्रेंको की तानाशाही के खिलाफ प्रदर्शन किया। ८ मार्च १९४३ को इटली की स्त्रियों ने मुसोलिनी के फासिस्टवाद के विरुद्ध प्रदर्शन किया। इसी तरह यह सिलसिला चलता रहा और ८ मार्च का दिन स्वतंत्रता, समता और विश्व-शांति के लिए संघर्ष करनेवाली स्त्रियों के संघर्ष का प्रतीक एक

महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दिन बन गया, जो स्त्री-दिवस के नाम से जाना जाता है।

मोहन मुदित, अजमेर । 'ब्रज-प्रदेश' से क्या तात्पर्य है ? यदि यह ब्रजभाषा बोलनेवालों की भूमि है, तो इसका विस्तार कहां से कहां तक है और इसके बोलनेवालों की संख्या कितनी है ?

ब्रज-प्रदेश मोटे तौर पर मथुरा जिला और उसके आसपास का क्षेत्र है, लेकिन सीमा-निर्धारण की दृष्टि से इसे केंद्र ही माना जाना चाहिए। कारण यह है कि ब्रजभाषा यहां से काफी दूर-दूर तक बोली जाती है। यदि मथुरा को केंद्र मानें तो दक्षिण में ब्रजभाषा आगरा, भरतपुर के अधिकांश भाग, धौलपुर, करौली, ग्वालियर के पश्चिमी भाग तथा जयपुर के पूर्वी भाग में बोली जाती है। उत्तर में यह गुड़गांव के पूर्वी भाग में बोली जाती है। उत्तर-पूरब दोआबे में यह बुलंदशहर, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी तथा गंगापार के बदायूं, बरेली तथा नैनीताल की तराई में बोली जाती है। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग ३० हजार वर्ग किलोमीटर है।

देवदत्त शर्मा, बरेली : सुंदरता केवल आंखों का विषय है। अंधों के लिए कुछ भी सुंदर या असुंदर नहीं होता। तो क्या सुंदरता वस्तुओं में नहीं, केवल व्यक्ति के मन में, या मात्र उसकी दृष्टि में होती है ?

आपका प्रश्न जिन दो मान्यताओं पर आधारित है, वे गलत हैं। सुंदरता केवल आंखों का विषय नहीं है। सुंदरता केवल दृश्य में नहीं, स्वर, स्वाद, सुगंध, स्पर्श और संचालन में भी होती है, जो क्रमशः कान, जीभ, नाक, त्वचा और संपूर्ण शरीर का विषय है। यदि ऐसा न होता, तो संगीत में कोई सौंदर्य न होता। और सूरदास-जैसे कवि तथा संगीतज्ञ का उदाहरण सामने रहते यह कहना कि अंधों के लिए कुछ भी सुंदर या असुंदर नहीं होता, न केवल अंधों का अपमान बल्कि आपके अज्ञान का भी सूचक है।

यदि ऐसा ही होता तो कोई भी वस्तु या कलाकृति सुंदर नहीं कही जा सकती और वास्तविक सौंदर्य-जैसी कोई चीज होती ही नहीं। लेकिन हम जानते हैं और जीवन में नित्यप्रति देखते हैं कि वास्तविकता से अनभिज्ञ लोगों द्वारा वास्तविकता को चाहे जितना नकारा जाए वह होती है।

सुनीता खान, जमशेदपुर : डाक-टिकट की मुहर लगानेवाली 'फ्रैंकिंग मशीन' का इस्तेमाल क्या गैर-सरकारी स्तर पर भी किया जा सकता है ? यदि हां, तो किन शर्तों पर ?

जी हां, आप गैर-सरकारी स्तर पर भी 'फ्रैंकिंग मशीन' का इस्तेमाल कर सकती हैं। शर्तें इस प्रकार हैं : फ्रैंकिंग मशीन लेने के लिए आपको निर्धारित फार्म पर मशीन के अधिकृत विक्रेता की मार्फत अपने क्षेत्र के मुख्य डाकपाल को आवेदन करना होगा और निर्धारित शुल्क देकर मशीन रखने का लायसेंस लेना

होगा। इसके साथ ही आप जितने मूल्य की टिकटें उससे छापना चाहेंगी, उतनी राशि जमा करनी होगी, जो सौ रुपये से कम और ९९९० से अधिक नहीं होनी चाहिए। मशीन में एक मीटर लगा होता है, जिसका दैनंदिन हिसाब आप तो अपने रजिस्टर में रखेंगी ही, प्रतिदिन डाकखाने को भी भेजेंगी। 'फ्रेंकिंग मशीन' में आपको दो 'डाइयां' लगवानी होंगी : एक 'लायसेंस डाई' जिसमें आपकी फर्म का नाम और लायसेंस नंबर होगा और दूसरी 'वैल्यू डाई' जिससे टिकट का मूल्य छपेगा। आप अपनी फर्म का विज्ञापन करना चाहें, और उसके लिए खर्च करने को तैयार हों तो विज्ञापन की एक तीसरी 'डाई' भी मशीन में लगा सकती हैं। 'फ्रेंक' की हुई डाक-समग्री आपके प्रतिनिधि को निर्धारित डाक घर में ही ले जाना होगा और उसके साथ उस दिन का हिसाब तथा परिचयपत्र भी ले जाना होगा, जिसे 'विंडो टिकट' कहते हैं। मशीन डाकघर द्वारा सीलबंद की जाएगी और उसकी सफाई या मरम्मत के लिए उसे डाकघर में ले जाना होगा, जहां वह डाकघर के अधिकारी की देख-रेख में खोली जायेगी। सील या मीटर के साथ छेड़खानी करना अपराध है। मशीन का इस्तेमाल ठीक हो रहा है या नहीं, इसकी जांच पूर्वसूचना दिये बिना कभी भी की जा सकती है और संबद्ध अधिकारी को यह अधिकार है कि वह कोई अनियमितता देखे तो कारण बताये बिना आपका लायसेंस रद्द कर दे।

अनिल कुमार पालीवाल, इटारसी : अंतरिक्ष की 'काल कोठरियां' (ब्लैक होल) क्या हैं? मैंने एक जगह पढ़ा है कि उनमें पहुंच कर अंतरिक्ष यान गायब हो जाते हैं। क्या यह सच है?

कुछ अंतरिक्षयानों के बारे में यह सच है कि उनका पता नहीं चला कि वे कहां गये, लेकिन वे अंतरिक्ष की 'काल कोठरियों' में ही गये हों, यह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये 'काल कोठरियां' —एक कल्पना या परिकल्पना ही है। यह इस आधार पर की गयी है कि अंतरिक्ष में कुछ ऐसे विचित्र विद्युत प्रवाह पाये गये हैं जो एक ओर से दूसरी ओर तेजी से दौड़ रहे हैं। लेकिन ये कहां से आते हैं और कहां जाते हैं, इसका पता नहीं चल सका है। टैक्सास विश्वविद्यालय के अंतरिक्षविज्ञानी जान व्हीलर ने इन प्रवाहों को क्वासर्स ऊर्जा स्रोत कहा है और हर्वर्टगर्सकी ने इन्हें 'ब्लैक होल' नाम दिया है। उनका अनुमान है कि इन प्रचंड प्रवाहों में पड़ने के बाद कोई वस्तु वापस नहीं आ सकती, बल्कि अनिश्चित की ओर बहती चली जाती है।

चलते-चलते एक प्रश्न और...

सुधारानी, मुंगेर : जिसकी लाठी उसकी भैंस। लेकिन जिसकी भैंस, उसका क्या?

दूध!

—बिंदु भास्कर

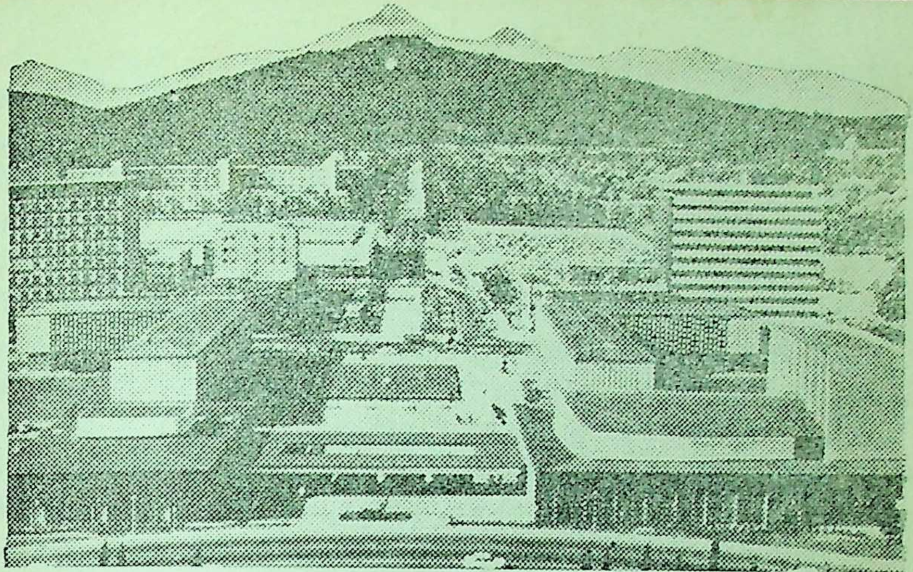

आस्ट्रेलिया में 'टिप' देने की प्रथा नहीं

वहां ऐसे फालतू आदमी नहीं मिलते

• जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी

जब मैं आस्ट्रेलिया के लिए रवाना हुआ, तब आस्ट्रेलिया के लोग कैसे हैं—इसका कोई खयाल नहीं था। जब पर्त हवाई अड्डे पर हमारा विमान रुका, और यह कहा गया कि जब तक आस्ट्रेलियाई स्वास्थ्य-अधिकारी विमान में आकर उसे कीटाणु मुक्त नहीं कर देते, तब तक कोई यात्री विमान से न उतरे, तब ऐसा लगा कि इस देश में बड़ी सख्ती है। और जब हम 'ट्रांजिट' यात्री की हैसियत से पर्त हवाई अड्डे पर उतरे, और तब भी हमारे हैल्थ सर्टिफिकेटों को देखा गया, तब तो यह भावना और पुष्ट हो गयी। लेकिन जब हम सिडनी हवाई अड्डे

पर उतरे, और देखा कि वहां पासपोर्ट अधिकारियों ने हमारे पासपोर्ट पर मोहर तक भी नहीं लगायी, तब लगा कि ऐसी ज्यादा तो सख्ती नहीं है यहां।

अनौपचारिकता का शहर

आस्ट्रेलिया में अनौपचारिकता की हवा है। इसका सब से बड़ा प्रमाण हमें उस वक्त मिला, जब हम वहां की राजधानी कैनबरा में संसद-भवन देखने गये। कैनबरा में हमारा प्रवास मात्र एक दिन का था, और मैंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि इतनी जल्दी संसद-भवन देखने को मिल जाएगा। इसलिए किसी से इसकी चर्चा भी नहीं की। जब हम बर्ले ग्रिफन झील के किनारे घूम रहे थे तब ४५० फुट ऊंचे कैप्टेन जेम्स कुक फव्वारे को देखते हुए मनोहर सफेद इमारत के सामने, लेखक डॉ० गिलियन ने कहा, 'यह हमारा संसद-भवन है, क्या आप अंदर से देखना पसंद करेंगे?"

मैंने सहर्ष उत्तर दिया, "यदि संभव हो सके तो?" उन्होंने द्वार पर खड़े एक संतरी से कुछ पूछा। थोड़ी देर बाद लकड़ी का एक दरवाजा पार किया, जो 'सिक्योरिटी चैक' के लिए था, और जिस पर लगे बोर्ड पर लिखा हुआ था कि 'जिनके दिलों में 'पेसमेकर' लगा हुआ है, वे इसमें होकर न गुजरें।' कितना खयाल था व्यक्ति के स्वास्थ्य का? आगे बढ़े तो एक संतरी ने एक शीशे के आइने जैसी मशीन हमारे शरीर के चारों ओर घुमायी और हमें आगे जानेवालों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। दो मिनट के अंदर हम संसद-भवन की दर्शक-दीर्घा में थे, और संसद की कार्यवाही देख-सुन सकते थे।

दिल्ली में पिछले ३३ वर्षों से संविधान सभा, स्थायी संसद और संसद की कार्यवाही देखनेवालों के लिए मैं पंडागिरी करता रहा हूं। ब्रिटेन के हाउस आव कामंस में भी कार्ड लेकर ही जाना

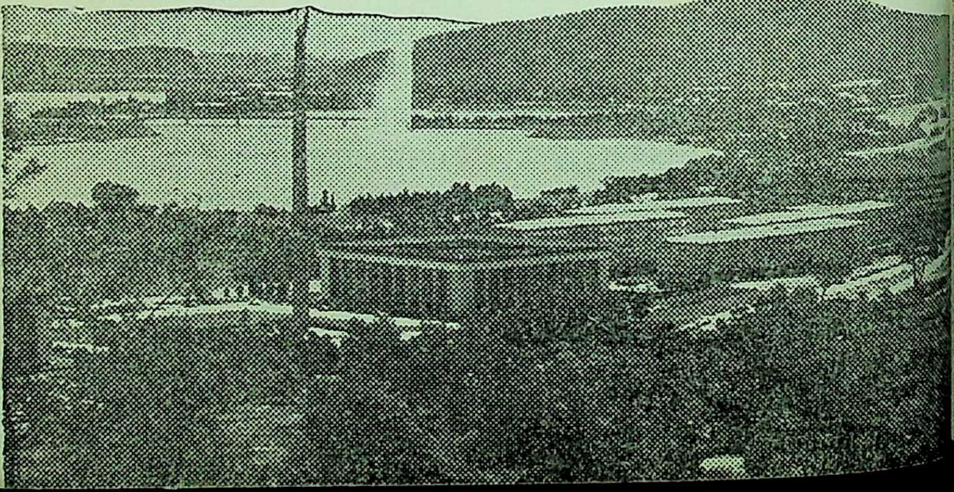

पड़ता है, चाहे कार्ड किसी संसद-सदस्य के सौजन्य से निकला हो, या किसी मंत्री के सौजन्य से, और यदि आप पत्रकार हैं तो सार्जेंट ऑव आर्म्स ने दिया हो। कहने को तो आस्ट्रेलिया में भी आपको संसद के एक कर्मचारी को पूर्व सूचना देनी चाहिए, परंतु वास्तव में ऐसा कुछ जरूरी नहीं है, जैसा कि हमको अनुभव हुआ है। उनके कागजातों में इस बात का कोई उल्लेख नहीं होता कि कौन व्यक्ति आया, और कुल कितने व्यक्ति आये। नाम, गांव, बाप का नाम, पता वगैरह की कोई जरूरत नहीं। वैसे यह ब्यौरा भारत में भी बेकार है, क्योंकि उस आधार पर कोई चैकिंग नहीं होती, लेकिन बस हम लीक पीटे जा रहे हैं।

ईमानदारी बेमिसाल

आस्ट्रेलिया में 'टिप' मांगने की प्रथा नहीं है। ब्रिटेन, बेल्जियम, फ्रांस और इटली आदि में जैसा कि किसी भी सेवा के लिए 'टिप' देने का, बल्कि 'टिप' मांगने का रिवाज है, वैसा यहां नहीं है। कोशिश तो यह रहती है कि आपसे जरूरत से ज्यादा पैसा न लिया जाए। सिडनी और कैनबरा के होटल में हमने देखा कि फ्रिज रखा हुआ था। उसमें दूध था, और अलग से चीनी, चाय, चाय बनाने की केतली और बर्तन रखे हुए थे। आप दिन में जितनी बार चाहें चाय या काफी बनायें और पीयें। सामान कम हो जाए, तब फिर मंगा लें। भारत के होटलों में जब कोई यात्री विदा होता है, तब न जाने कितने लोग द्वार पर उसे सलाम झुकाने के लिए खड़े हो जाते हैं। भले ही, उनकी कोई सेवा न ली गयी हो। जिसका सीधा अर्थ यह होता है कि

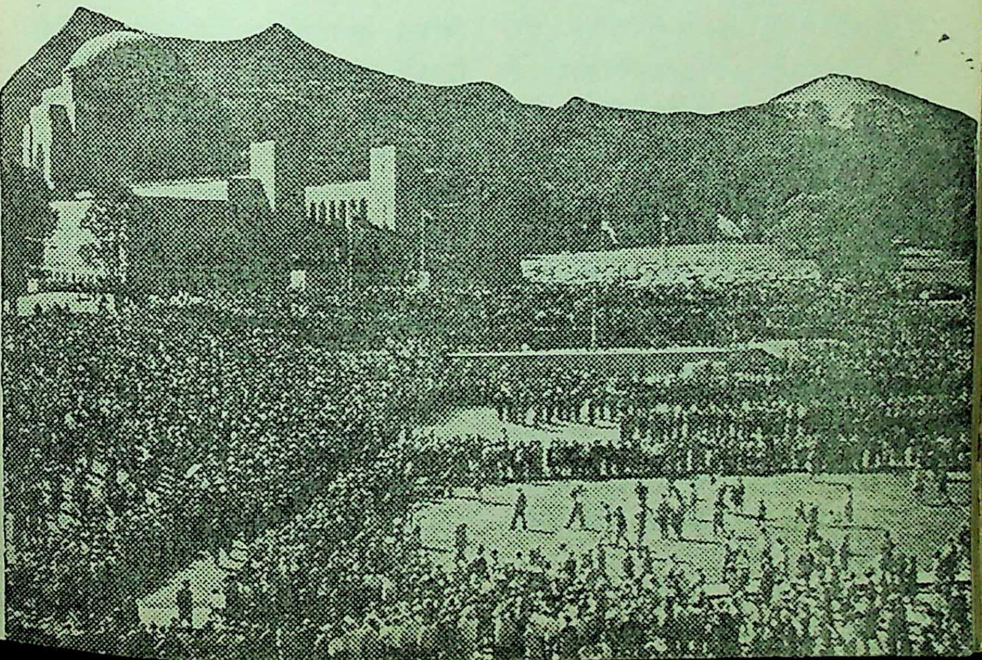

मेहमान को उन्हें कुछ 'टिप' देनी पड़ती हैं। आस्ट्रेलिया में ऐसे फालतू आदमी नहीं मिलते। सब अपने काम से लगे हुए हैं।

विश्वविद्यालयों का वातावरण स्वभावतः निर्बंध होता है। यहां भी डॉ. गिलियन हमें भोजन कराने के लिए विश्वविद्यालय की 'कैंटीन' में ले गये। ट्रे में खाना लिया और डाइनिंग रूम छोड़कर बाहर बगीचे में चले आये। दोपहर का वक्त था, अनेक अध्यापक और छात्र खुले लान में बैठकर भोजन कर रहे थे।

मैंने सिडनी में आस्ट्रेलियाई पत्रकार संघ के महासचिव श्री क्रासलैंड से मुलाकात का समय निर्धारित किया था। जब मैंने एक दिन पहले कार्यक्रम पक्का किया, तब पता चला कि वे मैल्बोर्न में हैं, क्योंकि पत्रकारों की हड़ताल हो गयी है, और संघ की कार्यकारिणी की बैठक उस नगर में हो रही है। हो सकता है कि वह दूसरे दिन लौट आयें। जब मैं उनके कार्यालय पहुंचा, तब पता चला कि श्री क्रासलैंड नहीं लौटे हैं। उनकी सहायिका श्रीमती शैरोन के. ने मेरी सहमति पर न्यू साउथ वेल्स शाखा के सचिव श्री केटलोन को फोन किया। श्री कैटलोन प्रधान अधिकारियों के संपर्क में थे, लेकिन उन्होंने इस बिना पूर्व-निर्धारित भेंट के लिए समय निकाला।

साठ हजार भारतीय

आस्ट्रेलिया बहुत बड़ा महाद्वीप है। आबादी कम है, क्षेत्रफल अधिक है, लोग संपन्न हैं। पर इससे भी अधिक आस्ट्रेलिया की अनौपचारिकता का रहस्य यह है कि यह देश विभिन्न समुदायों से मिलकर बना है। पहले इसका पता हॉलैंडवालों ने लगाया था, और इसे 'नौवा हालैंडिया' का नाम दिया था। बाद में, पूर्वी तट का पता ब्रिटिश कप्तान कुक ने लगाया और उस प्रदेश को अंगरेजी झंडे के अंतर्गत कर लिया। सबसे पहले ब्रिटेन के बंदी ही यहां भेजे गये, पर जब १८५० के लगभग यहां पर सोने की खानें मिलने लगीं, तो सारे यूरोप और अंगरेजी मूल के अतिरिक्त अमरीका से आनेवालों की भीड़ बढ़ गयी। यूनानी और इतालवी लोगों की संख्या भी यहां बहुत है। अनुमान किया जाता है कि इस समय भी यहां के विक्टोरिया, न्यू साउथ वेल्स और क्विस लैंड जैसे राज्यों में लगभग ६० हजार भारतीय होंगे, जो विभिन्न प्रकार के धंधों में लगे हुए हैं। सिडनी में अनेक भारतीयों से भेंट हुई। इनमें एक श्री गिरीश कुमार हैं, जो इस समय सिडनी के प्रमुख दैनिक पत्र 'सिडनी मार्निंग हेराल्ड' में उपविदेश संपादक हैं। वे जैसमंड एवेन्यू में रहते हैं। एक बात में आस्ट्रेलिया निवासी बड़े औपचारिक हैं। वह यह कि जब आप कार में बैठें, तब आपको अपनी सीट की पट्टी बांधनी पड़ेगी। ऊंची-नीची सड़कों पर चलनेवाली गाड़ियों के लिए यह आवश्यक भी है।

—५५, काका नगर, नयी दिल्ली-१

भविष्य

(७)

क्या आपका जन्म जनवरी में हुआ है?

• प्रो. के. ए. दुबे पद्मेश

जनवरी की २० तारीख तक सूर्य मकर राशि में रहता है, तत्पश्चात सूर्य कुंभ राशि में चला जाता है। २० तारीख तक जन्मे व्यवितयों की राशि मकर तथा २० के बाद जन्मे व्यक्तियों की राशि कुंभ है। मकर एवं कुंभ राशि का स्वामी शनि है। अतः दोनों राशियों के व्यक्तियों का स्वामी शनि है। आपका जीवन भयंकर संघर्ष एवं उथल-पुथल से भरा हुआ है। संघर्षों ने आपको गंभीर प्रकृति का व्यक्ति बना दिया है। बचपना आप में नहीं है, छोटी उम्र से ही गंभीर विषयों तथा कार्यों में रुचि लेना प्रारंभ कर देते हैं। गंभीर होते हुए भी विनोद के क्षणों का भरपूर उपयोग करते हैं। जीने की कला जानते हैं। समय का उपयोग करते हैं, सामान्य घटनाएं प्रभावित नहीं करतीं।

आप जो भी बात कहते हैं, ठोस प्रमाणों के साथ तथा अनुभव की कसौटी पर कसी हुई होती हैं। इस कारण आपकी बात में वजन होता है। लोगों में साहस नहीं होता है कि आपकी बात का मजाक उड़ा दें। आपकी बातचीत सुनने के बाद अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति भी आपका मित्र बन जाता है। आप अपनी गंभीरता को छिपाने के लिए कई बार हलके स्तर पर भी विनोदी बन जाते हैं, जो कि आपके व्यक्तित्व में कमी लाता है। अपने मृदु, सरल स्वभाव से ही लोगों को प्रभावित कर लेते हैं, फिर विनोद का सहारा अकारण

ही लेते हैं। आपका मस्तिष्क क्रियाशील एवं उर्वरक है, अतः शोधपूर्ण कार्य एवं सृजनात्मक कार्यों में कीर्ति मिलती है।

जीवन बनाने में सहायक

शनि वायु-तत्त्व प्रधान ग्रह है। आपके जीवन में भी वायु का प्रभाव रहता है। आपकी कीर्ति वायु में फैली सुगंध की तरह निरंतर फैलती रहती है, पर यह मत भूल जाइए कि दुर्गंध भी उसी गति से फैलती है। जैसे वायु मंद गति से चलती है तो सुख देती है, उसी प्रकार सौम्य एवं शांत स्वभाव के कारण आप अपने लक्ष्य को तो प्राप्त कर ही लेते हैं, समाज को भी आपकी उपलब्धियों एवं ज्ञान से लाभ मिलता है। जब वही वायु प्रचंड तूफानी रूप धारण कर लेती है तब पेड़, मकान सभी उखड़कर गिर जाते हैं। आपके प्रचंड, शनि-रौद्र रूप के सम्मुख बड़ा से बड़ा शत्रु पराजित हो जाता है। अनेक लोग बुरी तरह से प्रभावित होते हैं। वातावरण आतंकित रहता है। वायु प्राणदायिनी भी है, प्राण भी लेती है और यही रूप आपका है। आप अनेक लोगों को जीवन बनाने में सहायक होते हैं, वहीं अनेक व्यक्तियों के जीवन को नष्ट करने की क्षमता भी आप में है। शनि के नियंत्रण में होने के कारण आपका शांत सौम्य रूप ही लोक एवं स्वयं के कल्याण में सहायक है।

आपके जीवन में मध्य की स्थिति नहीं है। लाभ तो उच्चस्तर का, हानि तो ऐसी कि दूसरा सहन ही न कर सके। सहनशक्ति परिस्थितियों ने आपको बहुत दे रखी है। कई बार निरंतर घाटा एवं असफलताओं के कारण पलायनवादी भी हो जाते हैं और अध्यात्म का सहारा लेते हैं। कुछ ही दिनों में सुप्तावस्था की प्रतिभा जाग्रत हो जाती है, और एक असफल व्यापारी गृहस्थ, श्रेष्ठ संन्यासी बन जाता है। यह है आप के जीवन की स्थिति। किस क्षण आपके जीवन में कौन-सी घटना घट जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता है। वायु की तरह जीवन है। आपके जीवन में इतने परिवर्तन हैं कि आपको कोई भी भलीभांति समझ नहीं पाता है। चेहरा देखकर पता लगाना कठिन है कि आप किस स्थिति से गुजर रहे हैं। कई बार भीषण आपत्ति आने पर भी आप इतने गंभीर बने रहते हैं कि और तो और, पत्नी को भी आभास नहीं हो पाता है।

आपके कार्यों का समाज द्वारा मूल्यांकन अवश्य होता है। कीर्ति, सम्मान, प्रतिष्ठा, धन और पद सभी कुछ प्राप्त होते हैं। आप यदि मोक्ष प्राप्त करने का भी निश्चय कर लें, तो आपको इसी जन्म में मोक्ष भी मिल सकता है। पद, धन तो सामान्य वस्तुएं हैं। अप्राप्य को प्राप्त करने की सामर्थ्य है।

आप ऊपर से जितने अनुशासित एवं कठोर दिखते हैं, उतने ही अंदर से कोमल हैं। आपका हृदय प्रेम के लिए उतावला रहता है। जहां प्रेम मिला नहीं, वहीं रम गये बिना किसी परवाह के; कई ऐसे

शनि वायु-तत्व प्रधान ग्रह है। आपके जीवन में भी वायु का प्रभाव रहता है। आपकी कीर्ति वायु में फैली सुगंध की तरह निरंतर फैलती रहती है . . :

व्यक्तियों का दांपत्य जीवन दुःखमय रहता है, परंतु इनको उसकी भी परवाह नहीं रहती है।

शनि व्यसनी ग्रह है। आपका अपने पर से थोड़ा-सा भी नियंत्रण हटा कि आप व्यसनों में फंस जाते हैं। शराब, अफीम, चरस, तंबाकू, सिगरेट और रति का शौक बढ़ जाता है। नये-नये प्रयोग इस दिशा में भी करते रहते हैं। प्रेम में भी मध्य की स्थिति नहीं रहती है। या तो अत्यंत रूपवान, सौंदर्यवान, धनी, राजकुमारी के साथ प्रेम प्रसंग होते हैं अथवा नौकरानी, सहायिका, सामान्य स्तर की लड़की के साथ। मजे की बात यह है कि या तो जीवन में एकमात्र पत्नी या प्रेमिका के साथ ही प्रेम प्रसंग होगा या अनेक स्त्रियों के साथ।

कभी-कभी आप अंतर्मुखी एवं अप्रिय और दुखांत साहित्य में रुचि लेने लगते हैं। यह आपकी असफलता का कारण होता है। वैसे आप चतुर, बुद्धिमान व्यक्ति हैं। येनकेन प्रकारेण कठिन से कठिन कार्य कराने की भी क्षमता आप में है। आप परिस्थितियों एवं सहयोगियों पर नियंत्रण भी रखते हैं।

सावधान रहें

पत्नी तथा प्रेमिका से बुरा व्यवहार मत करें। आप कई बार उपेक्षा कर देते हैं। मित्रों एवं सहयोगियों की भी उपेक्षा कर देते हैं। इस दोष को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। प्रेम के चक्करों में अधिक मत पड़ें, इससे आपका समय नष्ट होता है। प्रतिभा अन्य कार्यों की अपेक्षा, मात्र प्रेम में उलझ जाती है। प्रेम के चक्कर के कारण कई बार महत्वपूर्ण अवसर एवं उपलब्धियों से हाथ धोना पड़ता है। विगत जीवन कटंकाकीर्ण हो सकता है, इससे निष्क्रिय हो जाएं, यह बात ठीक नहीं। भविष्य के प्रति आशावान रहना ही हितकर होगा।

स्वास्थ्य

आप पर शनि-ग्रह का पूर्ण नियंत्रण है। शनि वायु तत्त्व प्रधान ग्रह है। अतः शनि से प्रभावित रोग यदा-कदा आपको कष्ट देते रहेंगे। वात-रोग, यानि गठिया, उदर विकार, पैरों, हाथों में दर्द बराबर बना रहेगा।

वृद्धावस्था में हृदय-रोग, रक्त-चाप, गठिया, वायुविकार, कुष्ठ रोग, श्वास का रोग, गंजापन, मूत्राशय का रोग आदि। विटामिन ए, बी, ई, की भी न्यूनता रहती है। वायु से संबंधित, जो भी रोग संभव हैं, हो सकते हैं। आपको हरी सब्जियां

अधिक से अधिक खानी चाहिए। फलों का रस, विटामिन ए, बी, ई, भी लाभप्रद हो सकती हैं। आप २७ से २८ के मध्य तथा ४४–४५ तथा ५७, ५८ वर्ष की आयु, ६३, ७१, ७२, ८१, ८७, ८८, ८९ की आयु में विशेष सावधानी बरतें। इन वर्षों में शनि दुर्घटना भी देता है। प्राय: शनि प्रधान व्यक्तियों को वायुयान से यात्रा करते समय निर्बल समय का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। आकाश में जब भी शनि-ग्रह की स्थित खराब होती है, तभी वायुयान दुर्घटनाएं होती हैं।

शुभ-दिनांक– ४, ८, १७, २२, २६, ३१

शुभ-दिन -- शनिवार

शुभ-रत्न-- नीलम

शुभ-धातु-- लोहा

शुभ-रंग-- हल्का नीला, नीला, श्वेत, काला, भूरा

निर्बल समय-- २१ मार्च से २७ अप्रल एवं २१ अक्तूबर से २७ नवंबर तथा जब आकाश में शनि ग्रह की स्थिति खराब हो।

उन्नत-समय---२१ दिसंबर से १९ फरवरी, २१ दिसंबर से १९ फरवरी के मध्य ८, १७, २६ तारीख तथा शनिवार का दिन श्रेष्ठ शुभ दिवस होता है। किसी भी नवीन कार्य को प्रारंभ कर सकते हैं।

शुभ-वर्ष--- ८, १७, २६, ३५, ३६, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० ८९, ९८।

शुभ सन १९८२, १९८४, १९९२, २०००, २००८, २०१६, २०२४, २०३३, २०४२

श्रेष्ठ मित्र, सहयोगी, पत्नी

जिनका जन्म २१ दिसंबर से १९ फरवरी के मध्य ८, १७, २६ तारीख तथा शनिवार के दिन हुआ हो, अथवा, कुंभ, मकर, वृष लग्न में जन्मे व्यक्ति आपके लिए अच्छे मित्र, सहयोगी, प्रेमी तथा पत्नी सिद्ध हो सकते हैं।

जो आस्था रखते हैं

आप का जन्म शनि-ग्रह के प्रभाव में है। यदि आप हिंदू धर्म में आस्था रखते हैं, तो आपको शनिवार का व्रत रखना चाहिए। हनुमानजी अथवा हनुमान जी की मां देवी अंजली की उपासना करनी चाहिए। मुस्लिम व्यक्तियों को काले वस्त्र अधिक लाभप्रद होंगे। व्यापारियों को शनिवार का व्रत विशेष लाभप्रद हो सकता है।

क्या करें?

सफलता प्राप्त करने की आपमें अनेक क्षमताएं हैं। यदि आप व्यापार करते हैं, तो आपको लोहा, कोयला, तेल, पेट्रोल पंप, होटल (रेस्टोरेंट नहीं) तिलहन, रेस, सट्टा, मादक वस्तुएं, बार, फ्लाईंग क्लब, वायुयान निर्माण, कल पुरजे, कारखाना, गैस आदि का व्यापार करना चाहिए। वैसे शनि का अर्थ सेवा है। डॉक्टर, इंजीनियर, उपदेशक, धार्मिक नेता, संपादक, राजनेता, पायलट, ज्योतिषी, लेखक, क्रांतिकारी, फिल्म-निर्माण कार्य, आकाशवाणी आदि विभागों से संबंधित व्यवसाय आपको शिखर पर पहुंचा सकता है।

जनवरी में जन्मे विशिष्ट व्यक्ति

१ जनवरी डॉ. सम्पूर्णानन्द, ५ जुलिफकार अली भुट्टो, ८ मोहन राकेश, श्रीमती भण्डार नायके, ९ रिचर्ड एम. निक्सन, १२ विवेकानन्द, १४ डॉ. विद्या निवास मिश्र, १७ राजेन्द्र अवस्थी, १८ स्वामी रामकृष्ण परमहंस, २१ अरब के राष्ट्रपति नासिर खां, २३ सुभाष चन्द्र बोस, २८ लाला लाजपतराय, ३० सर रूजवेल्ट।

एक जनवरी को डॉ० सम्पूर्णानन्द का जन्म हुआ। उन पर शनि एवं बुध का प्रभाव था, जिस कारण वे उत्तर-प्रदेश—जैसे विशाल प्रांत के मुख्यमंत्री हुए। राजनीति में होते हुए साहित्य की सेवा करते रहे। उनका प्रारंभ एक अध्यापक के रूप में हुआ। अध्यापक से साहित्यकार तथा मुख्य मंत्री तक के पद को प्राप्त हुए। शनि ने अत्यन्त सामान्य परिवार में जन्मे व्यक्ति को इतना महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बना दिया। शनि एवं बुध ने उन्हें साहित्यकार बनाया। भारतीय संस्कृति, दर्शन, ज्योतिष का ज्ञान दिया। एक अत्यंत सामान्य-सी घटना से शनि ने मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दिलाया।

५ जनवरी को पाकिस्तान के राष्ट्रपति जुलिफकार अली भुट्टो का जन्म हुआ था। भुट्टो के जीवन में शनि एवं मंगल का प्रभाव रहा जो कि एक दूसरे के शत्रु ग्रह हैं। मंगल ने सेना में उच्च पद दिलाया, शनि ने राष्ट्राध्यक्ष बनाया। नियंत्रक शनि के कमजोर होने के कारण अनेक स्त्रियों से संबंध रहा। शनि एवं मंगल की युक्ति ने भुटटो को फांसी पर चढ़ाया। जो व्यक्ति राष्ट्रपति के पद पर हो, उसी व्यक्ति को फांसी पर चढ़ाया जाए, यही तो शनि की आश्चर्यजनक शक्ति है।

८ जनवरी को लंका की प्रधानमंत्री श्रीमती भण्डारनायके का जन्म हुआ। शनि ने अनेक संघर्ष कराये पति की हत्या-जैसे दारुण दुख भी सहने पड़े। वहीं वे लंका की प्रधानमंत्री बनीं। असाधारण पद, शक्ति, सम्मान भी शनि ने दिया। जनशक्ति विपरीत हुई, तब पराजय मिली। आज उन पर उनके ही देश की सरकार ने सार्वजनिक भाषण तक पर प्रतिबंध लगा दिया, उनकी आवाज पर रोक लगी है क्योंकि शनि उनके आठवें हैं। सन १९८२ में यही शनि नवम भाव में, यानि भाग्य में होगा। १९८२–८३ उच्च के शनि, यानि तुला का शनि श्रीमती भण्डारनायके को प्रधान मंत्री पद दिलायेगा। सन १९८२ तक अवश्य ही उनके जीवन के प्रति भी षड़यंत्र हो सकता है। यदि वे जीवित रहीं, तो लंका की पुनः प्रधान मंत्री बनेंगी।

९ जनवरी को ही अमरीका के राष्ट्रपति निक्सन का जन्म हुआ। शनि एवं बुध के प्रभाव में वह व्यक्ति साधारण स्तर से उठकर एक लंबे समय तक अमरीका का राष्ट्रपति रहा। वहीं शनि ने वाटर गेट-जैसे असामान्य कांड पर, पद से

हटवा दिया।

१२ जनवरी का महान दार्शनिक एवं संत विवेकानंद का जन्म हुआ। शनि, गुरु, सूर्य एवं चंद्र के प्रभाव में उनका जीवन रहा। अत्यंत साधारण परिवार में जन्म लिया। विपरीत परिस्थितियों में संन्यास लिया। संसार में अद्वैतवाद के सिद्धांत का प्रसार किया। एक आत्मिक-बल दिया। जबकि उनके गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस का भी जन्म जनवरी की १८ तारीख को हुआ था। शनि मंगल एवं सूर्य का प्रभाव रहा। सूर्य-पुत्र शनि है; उनके शनि ने प्रभाव तब दिया, जब पुत्र तुल्य शिष्य विवेकानन्द आया। दोनों पर ही शनि एवं सूर्य का प्रभाव रहा। दोनों का ही जन्म एक दूसरे के लिए हुआ था। मंगल ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस को भारत से बाहर नहीं जाने दिया।

१७ जनवरी को प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र अवस्थी का जन्म हुआ। आप पर सूर्य, शनि एवं नेपच्यून का प्रभाव है। जिस कारण आदिवासियों के जीवन पर सर्वप्रथम उपन्यास लिखा और सामान्य परिवार से उठकर आज देश के प्रथम पंक्ति के साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। शनि १९८२–८३ में, यानि उच्च की स्थिति में सरकार के किसी महत्वपूर्ण पद, राज्यपाल या राजदूत के रूप में कार्य करेंगे। अनेक देशों की यात्राएं शनि करायेगा। शनि का यदा-कदा नियंत्रण कम हो जाता है जिस कारण अपनी प्रतिभा व्यय करते रहेंगे।

२१ जनवरी का अरब के राष्ट्रपति नासिर खां का जन्म हुआ था। नासिर पर शनि, चंद्र एवं गुरु का प्रभाव रहा। जिस कारण अरब के सर्वाधिक कीर्तिवान राष्ट्रपति के रूप में जाने गये।

२३ जनवरी को महान क्रांतिकारी सुभाषचंद्र बोस का जन्म हुआ। सुभाष बाबू पर शनि, चंद्र, गुरु, बुध एवं मंगल का प्रभाव रहा, परन्तु नियंत्रण शनि ने ही किया। बुध ने अत्यंत संपन्न परिवार में जन्म दिया। उच्च-शिक्षा, आई. सी. एस. की उपाधि दी। सुभाष बाबू पर तो शनि का प्रभाव था ही, कैसे कलक्टरी करते, उन्हें तो विलासिता पूर्ण जीवन-यापन से दूर जाना था, कंटकाकीर्ण मार्ग पर, आखिर वे स्वतंत्रता के आंदोलन में कूद पड़े। तूफानी वेग से अंगरेज सरकार से जूझ गये और तूफान में जैसे समस्त वृक्ष, भवन ढह जाते हैं, वैसे ही, सदियों से जमे अंगरेजों के पैर उखड़ गये और उन्हें भारत को स्वतंत्र करना पड़ा। शनि ने ही अनेक देशों की यात्राएं करायीं। मंगल ने सेनापति बनाया। परंतु मंगल शनि की युक्ति विनाश ही करती है। मंगल शनि की युक्ति ने सुभाष बाबू को हमसे छीन लिया। वे स्वतंत्र भारत को न देख सके। ज्योतिषीय आधार पर स्पष्ट है कि उनकी मृत्यु अस्वाभाविक तरह से हुई, दुर्घटना में अथवा किसी षड़यंत्र में।

फलता पानी है तो . . .

आप शनि के प्रभाव में हैं। यदि अकेले शनि का प्रभाव है, तब जीवन का दो तिहाई जीवन संघर्ष में जाएगा, परंतु लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित है। आप व्यसनों पर नियंत्रण करें। मंगल की युक्ति सर्वाधिक अनिष्टकारी सिद्ध हो सकती है। वह आपको दु:साहसी बना सकता है। तानाशाह प्रवृत्ति दे देगा लेकिन अंत अत्यंत घातक होता है। ऐसी स्थिति में मंगल के प्रभावों को क्षीण करने का प्रयास करें। सूर्य एवं शनि का पिता पुत्र–जैसा संबंध है फिर भी आपस में शत्रु हैं। अत: शनि-सूर्य का संबंध भी कष्टप्रद रहेगा। शनि के प्रभाव को बढ़ायें, क्षमताएं बढ़ेंगी। रुके कार्य होंगे, आत्म-विश्वास उत्पन्न होगा। शनि वायु प्रधान है, यदि आप प्राणायाम, यानि योग क्रियाएं करें तो नीरोग भी होंगे, तथा आत्म बल में भी वृद्धि होगी। वायु (श्वास) से संबंधित योगासन आप के लिए हितकर होंगे।

माह कैसा होगा

शनि कन्या राशि में है। उसी राशि में गुरु भी है। अत: तुला राशि से बारहवें तथा सिंह राशि से दूसरे एवं कुंभ राशि से आठवें, मेष से छठे, अत: मेष, सिंह, कन्या, तुला, कुंभ राशि के लोगों के लिए माह उलझन एवं परेशानी दायक है, परंतु यदि विदेश के लिए प्रयत्नशील हैं, तब सफलता अवश्य मिलेगी। शेष राशियों के लिए इस माह में जन्मे व्यक्तियों के लिए माह उत्साहवर्द्धक, सफलतादायक है। नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति देगा।

जनवरी १९८१ से दिसम्बर १९८१

१८ जनवरी से शनि वक्री हो रहे हैं, अत: वायु के वेग में तीव्रता आयेगी। २६से गुरु वक्री तथा २९ जनवरी को कुंभ राशि में मंगल प्रवेश ले रहे हैं, जो मंगल से आठवें होंगे। वायुयान यात्रा कम करें।

इस अवधि में कई अकाल-मृत्यु भी संभव हैं। स्थानांतरण के लिए उत्तम योग है। २५ फरवरी से २४ अप्रैल तक का समय व्यापारिक रूप से उन्नतिकारक है। सफलतादायक, मांगलिक कार्य भी संभव है। २८ अप्रैल से २७ जून तक उन्नति, व्यावसायिक सफलता, आकस्मिक लाभ के योग भी हैं। २५ जून से १४ जुलाई तक सामान्य समय है। १५ जुलाई से २० अक्तूबर तक विशेष उन्नति कारक है। भौतिक-रूप से सफलता, नौकरी, व्यवसाय में उन्नति, किये गये प्रयासों में उन्नति का योग। २४ अक्तूबर से २७ नवम्बर के मध्य अकारणभय, तनाव। २८ नवम्बर से ३१ दिसम्बर के मध्य आश्चर्यजनक सुखद घटना, सफलता उन्नति। यदि आपका १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० का वर्ष है, तब अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकता है। २८, ३६, ४५ ५४, ६३, ७२, ८१, ९० का वर्ष कोई अप्रिय घटना दायक वर्ष हो सकता है।

—१८, एम. आई. जी. रतनलालनगर,
कानपुर-२०८०२२

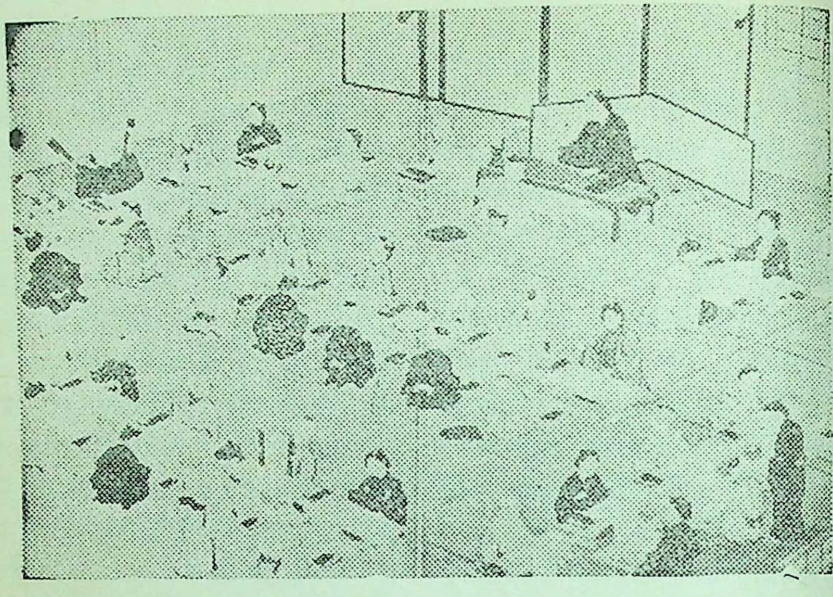

उसके आने से लेकर चाय तैयार करने तक हर विधि जैसे छंद के समान थी। धोना, पोंछना, आग जलाना, चायदानी का ढक्कन खोलना, गरम पानी का बरतन उतारना, प्याली में चाय ढालना, अतिथि के आगे उसे बढ़ाना, सबमें इतना सौंदर्य और संयम था कि . . .

जल जीवन है, तो चाय स्फूर्तिदायिनी, अवसादहारिणी साक्षात संजीवनी। चाय की एक प्याली शरीर की शिरा, शिरा और चक्र-चक्र को जगा कर, उन्हें स्फूर्ति–धारा से आंदोलित करने की सामर्थ्य रखती है। आधी से अधिक दुनिया इसका प्रतिदिन सेवन करती है। विश्लेषक भले ही कहें कि—'चाय का पोषक एवं आहार मूल्य नगण्य है, चाय में हानिप्रद 'टैनिन होता है,' आदि, किंतु चाय की 'दिव्य-शक्ति' से आज सभी परिचित हैं। झुग्गी-झोपड़ी से लगाकर राजप्रासादों तक सर्वत्र इसके एकछत्र राज्य का विस्तार है। चाय और नारी-मुख दोनों का स्वाद समगोत्रीय—कषाय मधुर होता है। दोनों कषाय होकर भी परिणाम-मधुर और

चाय और नारी समगोत्री हैं

• डॉ० ब्रजराज किशोर

इन नन्हें हाथों की
देन : गरम पेय

तृप्तिदायिनी होती हैं। नारी और अग्नि की ही भांति चाय भी सदैव पवित्र है, 'हरिमुख' और 'यज्ञमुख' है। चाय का सेवन आप कभी भी, किसी भी अवस्था में कर सकते हैं: मंदिर हो या मरघट, समुद्र-तट हो या पर्वत–शिखर, 'फाइव स्टार' होटल हो या ढाबा। यह कभी अपवित्र और जूठी नहीं होती।

श्रृंगारित चाय

चाय प्याले में पियें या प्लेट में, कुल्हड में, कप में, ग्लास में या मग में, सभी पात्र 'सुपात्र' हैं, क्योंकि सभी चाय-पात्र हैं। हर वक्त चाय का वक्त है। आप 'नग्न चाय' का सेवन करें अथवा सजी-सजायी श्रृंगारित चाय का, दोनों ही रूपों में यह आह्लादकारिणी है। 'नग्न चाय' से तात्पर्य है—निरी चाय, न दूध, न चीनी, और 'श्रृंगारित चाय' है—दूध, चीनी, इलायची आदि से भावित चाय, अन्य सुस्वादु वस्तुओं के साथ।

चाय का जन्म

चाय के जन्म और उत्पत्ति की कहानी भी

कम रोचक नहीं। कुछ गद्यगंधी, अरसिक लोगों ने प्रचारित कर दिया कि चाय का जन्म चीन में पानी उबालने के रूप में हुआ।

लेकिन सत्य-कथा कुछ इस प्रकार है: बोधिधर्म नामक एक दाक्षिणात्य बौद्धभिक्षु धर्मप्रचार के लिए भारत से चीन गया। एक दिन ध्यान करते समय धर्म को आलस्य ने आ घेरा, आलस्यवश उसके नेत्र निमीलित होने लगे। यह देख उसे क्रोध आ गया और उसने अपनी पलकें नोच कर फेंक दीं। जहां-जहां पलकें गिरीं, पौधे उग आये। उसने उनकी पत्तियों का सेवन किया जिससे वह पुनः निरलस हो, ध्यानमग्न हो गया। ये पौधे ही चाय के पौधे कहलाये!

चाय का नामकरण

विश्व की विभिन्न भाषाओं में चाय के नाम चीनी भाषा की देन हैं। पाश्चात्य जगत में चाय के लिए 'टी' 'टे' आदि नाम प्रयुक्त होते हैं, जो चीनी भाषा की ऐमूकीनी बोली से व्युत्पन्न हैं। हिंदी तथा अन्य भाषाओं के अतिरिक्त रूसी भाषा में चाय के नाम इसीसे प्रभावित हैं। पूर्वकाल में मंदारिन का प्रयोग राज्य-शासन में उच्च पदों पर नियुक्त व्यक्तियों द्वारा किया जाता था, जिनका काम शासकों को मंत्रणा आदि देना होता था। आगे चलकर इसने राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लिया।

चाय पुराण

हां, चाय का संबंध पानी उबालने से नहीं, ध्यान से है। चाय की प्रत्येक प्याली के साथ मन अचल और अडोल हो कर निर्वात, निष्कंप दीपशिखावत ध्यान की वज्र स्थिति को प्राप्त कर लेता है। बौद्ध धर्म के जेन संप्रदाय में तो ध्यान के लिए चायपान की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। तांग कवि और भिक्षु लुवह ने चाय-दर्शन और चायपान-रीति पर एक पुराण ही रच डाला था। चाय और जेन (ध्यान) दोनों का स्वाद उन्होंने समान रूप से समगोत्रीय पाया।

ध्यान का स्थान चायघर

प्रारंभ में जेन साधु, 'ध्यान-भवन' (मेडिटेशन हाल) में ही चाय पान करते थे, किंतु कालांतर में यह स्थान बदल दिया गया। उद्यान अथवा उपवन के किसी कोने में, जहां प्रकृति अपने सरलतम और सहजतम रूप में विद्यमान हो, यह स्थान रखा गया। इसे 'चा सेकी' (शून्यता का आवास) संज्ञा दी गयी। प्रवेश-द्वार छोटा और नीचा होता था, जिससे सभी विनम्रता पूर्वक झुककर प्रवेश करें। द्वार के समीप एक विशाल प्रस्तरपात्र होता था, जिसमें जल भरा रहता था। प्रवेशकर्ता इस जल से हाथ प्रक्षालित करके ही चायपान करता था। कभी कोई योद्धा-जाति का व्यक्ति होता, तो उसे अपने खड़ग आदि बाहर रखकर ही प्रवेश करना होता था। चाय-पात्र कला के अद्वितीय नमूने होते थे। चाय उबालने के पात्र में कुछ धातुखंड भी डाल दिये जाते थे, जिससे मं , मधुर संगीत

चाय और कला का स्वाद साथ-साथ

की सृष्टि हो सके। इस संगीत का आभास दूर चीड़वन से आते हुए पवन-संगीत अथवा पेड़-पौधों आदि से अदृश्य किसी झरने के कल-कल-निनाद से लगाया जा सकता है।

चाय पीने का ढंग

यदि चाय को जेन की ध्यान-शैली में पियें तो हमारा मन निर्गुण, निर्मल, कामना-हीन होकर दार्शनिकता और ध्यान की गहराइयों में डूब सकता है। हमें चाहिए कि हम चाय को सुड़-सुड़कर सुड़कें नहीं। चाय पीनी हो तो चुपचाप पियें, बिल्कुल मौन रहकर। क्षण-प्रतिक्षण एक-एक बूंद के साथ अनंत का स्वाद अनुभव करते हुए।

चायपात्र की सुंदरता और सुघरता, उस पर बनी रंग-बिरंगी मोहक फूल-पत्तियों आदि को प्रशंसात्मक दृष्टि से देखें। फिर चाय बनानेवाले हाथों की दक्षता, कोमलता और स्नेह के बारे में सोचें। चाय की प्याली में से उठती हुई भाप, मादक गंध व रंग में भी डूबा जा सकता है। पहले प्याली के किनारों तक अपने ओठों को ले जाकर दूर हटा लें। दूसरी बार हलका-सा स्पर्श, बस इतना कि आप चाय की गरमाहट उन पर महसूस करें और फिर एक चुस्की लें।

जापान में चाय

जापान में चायपान (चा ना यू) अपने आप में एक अनुष्ठान ही है, जिसके साथ एक विशिष्ट औपचारिकता और शिष्टाचार जुड़े हुए हैं। चाय के साथ ऋतु-अनुकूल रुचिकर व्यंजन परोसे जाते हैं।

कवींद्र रवीन्द्र का अनुभव

सन् १९१६ में कवींद्र रवीन्द्र जापान गये थे। वहां पर एक दिन किसी सज्जन के यहां चाय पर आमंत्रित थे। चाय-परिवेशन का भार गृहस्वामी की लड़की पर था। लड़की ने आकर नमस्कार किया और चाय तैयार करने लगी। उसके आने से लेकर

चाय तैयार करने तक हर विधि, जैसे छंद के समान थी। धोना, पोंछना, आग जलाना, चायदानी का ढक्कन खोलना, गरम पानी का बरतन उतारना, प्याली में चाय ढालना, अतिथि के आगे उसे बढ़ाना, सब में इतना संयम और सौंदर्य था कि उसे देखे बिना समझा नहीं जा सकता। इस चाय-पान का हर उपकरण दुर्लभ और सुंदर था।

विभिन्न देशों में चाय पान

लंदन को विश्व की 'टी-कैपिटल' संज्ञा से अभिहित किया जाता है। वहां औसत व्यक्ति, प्रतिदिन पांच प्याले चाय पीता है। मंगोलिया में 'ब्रिक टी' का प्रयोग होता है। 'ब्रिक टी' को पानी में सिझाते हैं और फिर मक्खन के साथ खाते हैं। चीन और जापान में तो चायपान धार्मिक अनुष्ठानों का एक अंतरंग अंग ही बन गया है। जापान में चमेली के फूलों के मिश्रण से 'चमेली चाय' तैयार की जाती है। सियाम में लोग चाय-पत्तियों का चर्वण करते हैं। अरब-लोग पोदीना-भावित चाय पीते हैं। अफगानिस्तान, ईरान और कश्मीर में हरी चाय प्रयुक्त होती है। तिब्बत में १०–१२ बार चाय पी जाती है और प्रत्येक बार चाय के साथ याक का मक्खन प्रयुक्त होता है।

रूसी किसान और आम लोग पहले चाय में चीनी नहीं घोलते थे, वरन चीनी की डली को अपने दांतों के बीच दबाकर रखते थे, और धीरे-धीरे चुस्कियां लेकर चाय पीते थे। पाश्चात्य देशों में अब इसके साथ मदिरा का प्रयोग भी होने लगा है। भारत में ही चाय पीने की अनेक पद्धतियां तथा शैलियां प्रचलित हैं। भारतीय चाय, विशेषकर दार्जिलिंग की चाय 'फ्लेवर' और 'लिकर' के लिए विश्व विख्यात है। चाय-निर्यात से भारत को विदेशी मुद्रा की एक बहुत बड़ी राशि प्राप्त होती है।

चविका, चाह, चा बाला और मिस चाखताई अपने आप में कितने सुंदर नाम हैं, कितने रोमांटिक।

चाय को श्रीमानों एवं सज्जनों के मुख तक पहुंचने के लिए क्या-क्या नहीं करना पड़ता? दुर्गम ऊंचाइयों पर जन्म, हड्डियों को कंपा देनेवाला शीत, वर्षा और तूफान, अत्यंत हरी-कच्ची उम्र में तोड़ लिया जाना, कोशिकाओं का तोड़ाजाना, जल-उन्मोचन, सुखाया जाना, विलयन और किण्वन, सभी एक करुण कोमल प्रसंग का सृजन करते हैं। इस कठोर साधना का ही परिणाम है कि चाय आज जन-जन के हृदय में बसी हुई है।

---- एफ-३४, आई. टी. आई. परिसर, पूसा
नयी दिल्ली-११०१२

अपना वजन घटाने के इच्छुक अमरीकी अब नीले रंग की तश्तरियों का इस्तेमाल कर रहे हैं क्योंकि कुछ विशेषज्ञों ने दावा किया है कि नीले या हरे जैसे ठंडे रंगों की तश्तरी में खाने से भूख कम लगती है और एक ही दिन में तीन पौंड तक वजन घटाया जा सकता है।

ा है।
द्रतियां
चाय,
लेवर'
त है।
द्रा की
।
मिस
नाम

नों के
नहीं
पर
शीत,
कच्ची
काओं
खाया
एक
ती हैं।
है कि
ई है।
, पूसा
२०१२

इच्छुक
यों का
शोधज्ञों
रे जैसे
व कम
पौंड

ाय की हरी पत्तियां तोड़ती महिला । यही हरी पत्तियां विभिन्न स्थि- से गुजरकर पीनेवालों के लिए यक स्वाद और स्फूर्ति का कारण हैं।

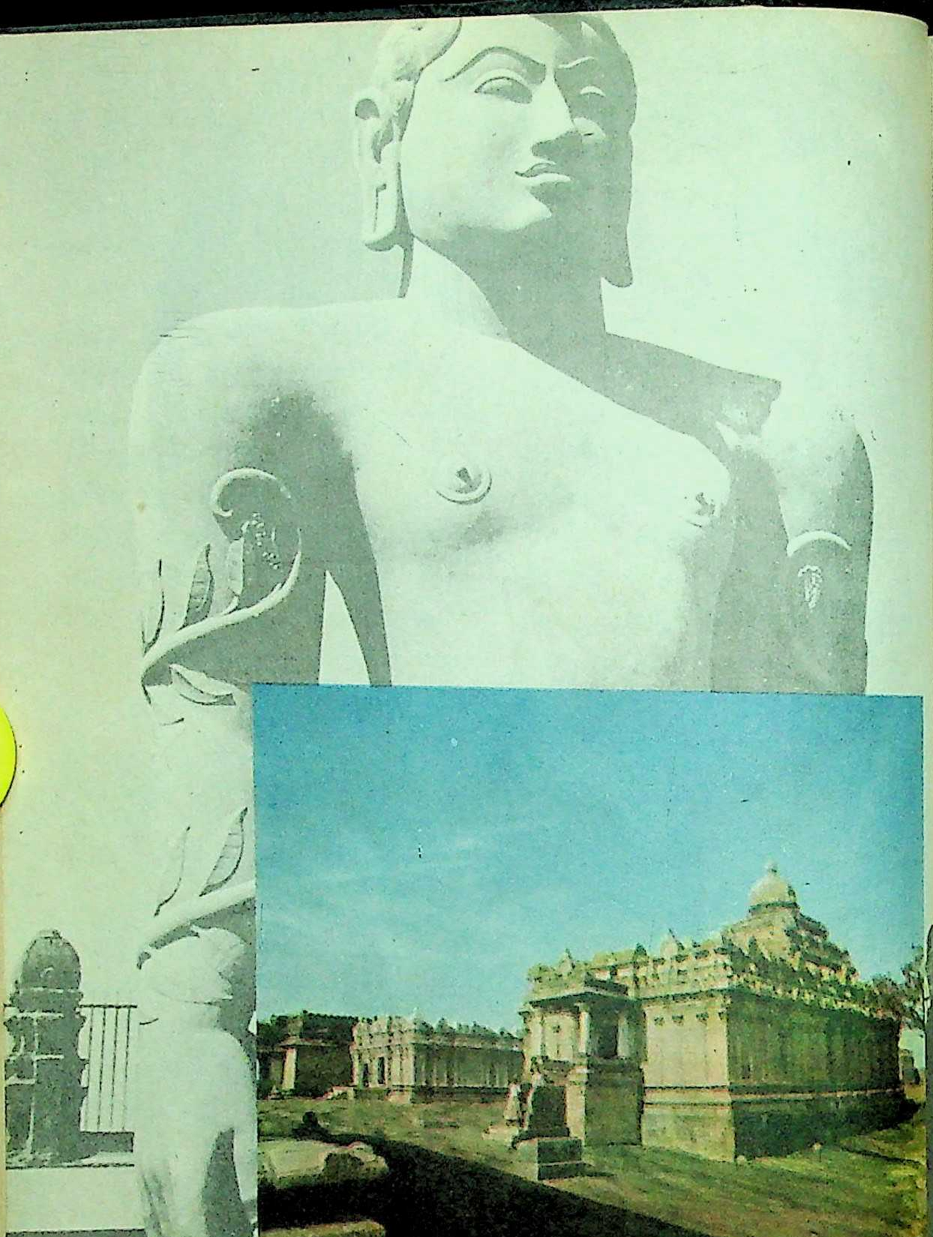

कर्नाटक के प्रसिद्ध जैन-तीर्थ श्रवण बेलगोल स्थित विशाल गोम्मटेश्वर मंदिर

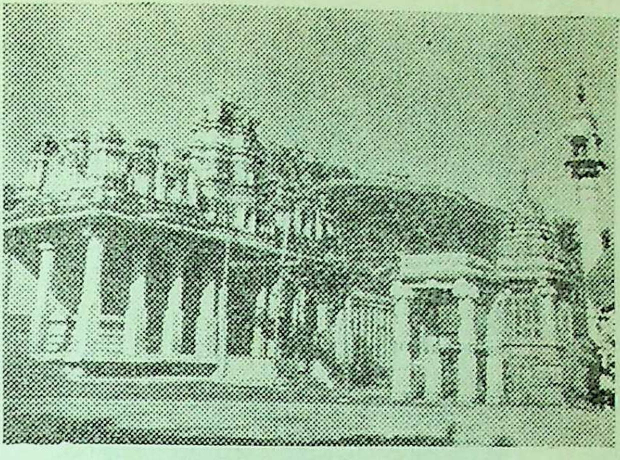

युद्ध और वैराग्य में झूलता एक राजकुमार

● सतीशकुमार जैन

"अद्भुत !", "अद्वितीय !", "कल्पनातीत !" कर्नाटक के हासन जिले के प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्रवण बेलगोल में विंध्यगिरि पर्वत पर स्थित गोम्मटेश्वर की विशाल मूर्ति देखकर बरबस उपरोक्त उद्गार अंतर से फूट पड़ते हैं। भूरे श्वेत वर्ण के ग्रेनाइट पाषाण की १७.५ मीटर ऊंची गोम्मटेश्वर बाहुबली की यह मूर्ति एक ही शिला काटकर तराशी गयी है।

बाहुबली प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र थे। जैन धर्म में प्रत्येक काल चक्र में चौबीस तीर्थंकरों के उत्पन्न होने और उनके निर्वाण प्राप्त करने की मान्यता है। वर्तमान काल-चक्र में चौबीस तीर्थंकरों में से प्रथम थे--चौदहवें मनु अथवा अंतिम कुलकर नाभिराज के एकमात्र पुत्र ऋषभदेव।

राजधानी अयोध्या से वे धर्मपूर्वक राज्य-कार्य देखते थे। उनकी दो रानियों में से प्रथम यशस्वती से भरत आदि सौ

सामने के पृष्ठ पर बाहुबली गोम्मटेश्वर श्वेत श्याम चित्र
पारदर्शी--चंद्ररि पर्वत पर स्थित एक अन्य जैन मंदिर

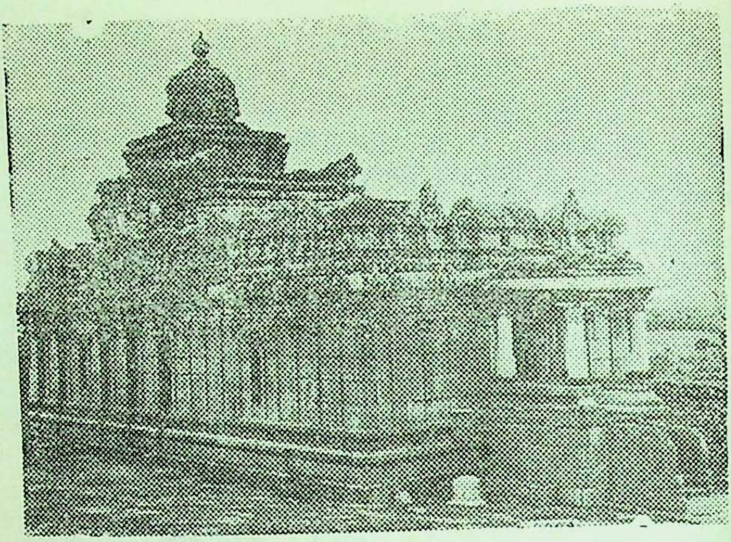

चन्द्रगिरी पर्वत स्थित एक प्रसिद्ध जैन बस्ति

पुत्र एवं एक पुत्री ब्राह्मी तथा दूसरी रानी सुनंदा से बाहुबली एवं एक पुत्री सुंदरी का जन्म हुआ। ऋषभदेव ने, संसार की क्षण-भंगुरता और अनित्यता का बोध होते ही, मुनि-दीक्षा लेने से पूर्व, भरत को अयोध्या का राज सौंपा और बाहुबली को पोदनपुर के राज्य का युवराज बनाया।

युद्ध और वैराग्य

भरत उनके सब पुत्रों में ज्येष्ठ थे। उनकी आयुधशाला में चक्रवर्तित्त्व का चिह्न 'चक्ररत्न' प्रकट हुआ तो प्रसन्नता की सीमा न रही। उनकी दिग्विजय-यात्रा में चक्ररत्न सबसे आगे रहता था। भरत की दिग्विजय की संपूर्णता में शेष रह गया था, बाहुबली का पोदनपुर का राज्य। बलिष्ठ बाहुबली को पराभव भाव से आधीनता स्वीकार करना सहन न हुआ और भाई भरत से युद्ध आवश्यक हो गया। इस युद्ध में यद्यपि विजय बाहुबली की ही हुई किंतु राज्य-लिप्सा के वशीभूत एवं पराजय से प्रताड़ित भाई भरत द्वारा 'चक्र' चलाकर प्राण ले लेने के प्रयास ने उनके हृदय में वैराग्य उत्पन्न कर दिया। वे राज्य-त्याग मुनि दीक्षा धारणकर तप में लीन हो गये। लेकिन उनके मन में यह क्लेश बना रहा कि घोर तपस्या करने पर भी उनके द्वारा बड़े भाई का अपमान हुआ है अथवा वे उन्हीं चक्रवर्ती सम्राट की भूमि पर खड़े हैं।

भरत द्वारा पिता ऋषभदेव से जिज्ञासा करने पर कि एक वर्ष की घोर तपस्या के पश्चात भी बाहुबली को केवल ज्ञान क्यों नहीं उत्पन्न हो रहा है, भगवान ऋषभदेव ने बाहुबली के हृदय में उपजी शंका को बताया। छोटे भाई की शंका दूर करते

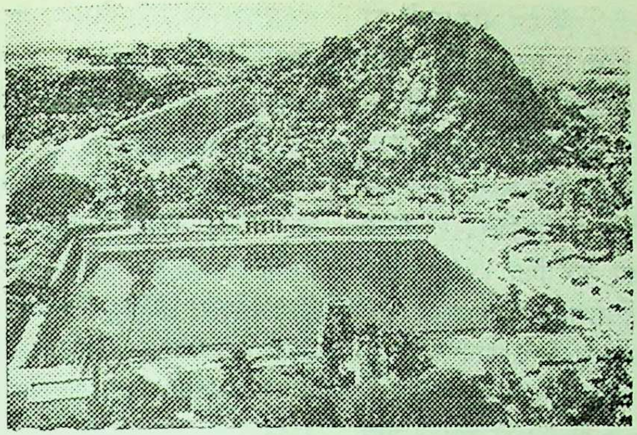

इंद्रगिरी पर्वत स्थित प्रसिद्ध कल्याणी सरोवर

के लिए जब भरत परिवार सहित तपस्थल पर पहुंचे तो बाहुबली को अडिग एवं निश्चल अवस्था में घोर तप करते हुए देखकर दंग रह गये। भरत के समझाने पर बाहुबली का शल्य दूर हो गया। और पिता तीर्थंकर ऋषभदेव से भी पूर्व बाहुबली मोक्षगामी हो गये।

विंध्यगिरि पहाड़ी पर, जिसे जैन उल्लेखों में इंद्रगिरि कहा जाता है, गंगवंशीय नरेश राजमल्ल चतुर्थ के सेनापति व मंत्री वीर चामुंडराय ने बाहुबली की मूर्ति का निर्माण करवाया। इसका उल्लेख मूर्ति की बाजू में बने पाषाण सर्प-विवर के लेख तथा अन्य स्थलों पर किया गया है।

शिल्पी का लोभ

विंध्यगिरि पर मूर्ति-निर्माण के लिए चामुंडराय को राज्य के प्रधान शिल्पी अरिष्टनेमि से अधिक योग्य और कोई व्यक्ति नहीं जंचा। कुशल अरिष्टनेमि ने पहाड़ी की ऊंचाई को मन ही मन नापा और मूर्ति के संभावित आकार तथा आकृति को हृदय-पटल पर अंकित कर लिया। किंतु, 'पारिश्रमिक की राशि क्या मिलेगी' इस लोभ से शिल्पी मुक्त न रह सका। शिल्पी को दुविधा में पड़े देख चामुंडराय एक बार तो निराश हो गये किंतु शिल्पी द्वारा पारिश्रमिक की चर्चा चलाये जाने पर, उन्होंने संतोष की सांस ली। शिल्पी को मुंह-मांगा स्वर्ण देने के लिए वे सहर्ष तैयार हो गये। पहाड़ी की चोटी पर उपयुक्त शिला को छांटकर शिल्पी ने कर्मचारियों सहित, मूर्त्ति-निर्माण कार्य आरंभ कर दिया।

पारिश्रमिक की पहली खेप लेकर उल्लसित-मन शिल्पी अरिष्टनेमि माता के पास अपने ग्राम पहुंचा। कहा जाता है कि जैसे ही उसने दोनों हाथों से स्वर्ण उठाकर माता के समक्ष रखना चाहा उसके हाथ जड़वत हो गये। स्वर्ण उनसे दूर न हो सका। संभवतः शिल्पी के स्वर्ण-

मोह के विकार ने उसके मन और हाथों को जड़ कर दिया था। मां की अंतरात्मा से निकले कर्त्तव्य उद्‌बोधन से शिल्पी को कर्त्तव्य-बोध हो गया। उसका मन मुक्त हुआ लोभ से और हाथ मुक्त हुए स्वर्ण से। पवित्र मन ने उसके शिल्प को दिव्य आभा से मंडित कर दिया।

सर्प विवर से निकलती लताएं

उत्तर की ओर मुख किये कायोत्सर्ग-मुद्रा में खड़ी इस मूर्त्ति का पूर्ण सौंदर्य अवर्णनीय है। मूर्त्ति के दोनों ओर, पैर से जंघा तक, पाषाण के सर्प-विवर बने हैं जिनमें से सर्प निकलते हुए दिखाये गये हैं। जंघा से ऊपर मूर्त्ति को कोई आश्रय प्राप्त नहीं है। इन विवरों में से निकलती हुई पत्रांकित सुंदर लताएं पैरों और हाथों से लिपटती हुई कंधों से कुछ ही नीचे तक अंकित की गयी हैं। ये लताएं उस घोर तपस्या की अवस्था को दर्शाती हैं, जिसमें बाहुबली शरीर के सुख-दुख की अनुभूति से मुक्त हो चुके थे। शरीर पर क्या बीत रहा है, इसका भी उनको ध्यान नहीं था।

इस मूर्त्ति के दोनों ओर, तनिक आगे, चंवर धारण किये यक्ष एवं यक्षी की लगभग १.८३ मीटर ऊंची कलापूर्ण एवं विशेष अलंकृत मूर्तियां निर्मित हैं। मूर्त्ति की बाईं ओर ललित सरोवर नामक पाषाण का छोटा-सा गोल कुंड बना है। इस मूर्त्ति के चरण जिस पादपीठ पर हैं, वह विकसित कमल-रूप में है। उस पर ३ फुट ४ इंच का एक पैमाना बना है। संभवतया मूर्त्ति के निर्माण में उसका उपयोग किया गया है।

मूर्ति का निर्माण-काल

सर्वसम्मत मत है कि इस मूर्त्ति की प्रतिष्ठा, काल-संवत ६०० में, विभव नाम संवतसर के चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी दिन रविवार को, मृगशिरा नक्षत्र कुंभ लग्न में, की गयी। प्रसिद्ध जैन विद्वान स्व. डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री ज्योतिषाचार्य के मतानुसार भारतीय ज्योतिष गणना से उपरोक्त नक्षत्र का योग १३ मार्च, ९८१ ईस्वी को होता है। मूर्त्ति की प्रतिष्ठा चामुंडराय के गुरु नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती द्वारा संपन्न हुई। वे स्नेह से चामुंडराय को गोम्मट कहा करते थे। चामुंड-

राय के निवेदन पर उन्होंने एक जैन सिद्धांत ग्रंथ की रचना की और उन्हीं के नाम पर उसका नाम गोम्मटसार रखा। चामुंडराय द्वारा निर्मित कराये जाने के कारण उन्होंने इस मूर्त्ति का नाम भी गोम्मटेश्वर रखा, अर्थात गोम्मट (चामुंडराय) द्वारा निर्मित बाहुबली मूर्त्ति। मूर्त्ति पर की गयी चमकदार 'पालिश' एक सहस्र वर्ष से इसकी वर्षा, धूप, ताप और आंधी मे रक्षा करती आ रही है।

श्रवणबेल्गोल श्रवण (श्रमण) एवं बेलगोल (बेल+कोला) शब्दों की संधि मे बना है। श्रवण अथवा श्रमण का अर्थ है जैन साधु अथवा यह गोम्मटेश्वर जैन मूर्त्ति। कन्नड़ शब्द (बेल) का अर्थ है श्वेत तथा कोला का सरोवर। इस मूर्त्ति और कल्याणी सरोवर से संबंध जोड़कर इस स्थान का नाम इस प्रकार श्रवणबेल्गोल प्रसिद्ध हुआ है। सुंदरकल्याणी सरोवर दोनों पहाड़ियों के मध्य स्थित है।

महामस्तकाभिषेक

मार्च १९८१ में गोम्मटेश्वर मूर्त्ति की प्रतिष्ठा को एक सहस्र वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। उसके अनुरूप वहां फरवरी-मार्च में सहस्राब्दि समारोह आयोजित किये जा रहे हैं। महामस्तकाभिषेक का मुख्य समारोह २२ फरवरी, १९८१ को संपन्न होगा। कितना अपूर्व होगा वह दिवस और कितनी शोभा होगी इस अद्वितीय मूर्त्ति की तब !

—६८८, बाबा खड़कसिंह मार्ग,
नयी दिल्ली

ज्ञान-गंगा

आत्मायत्ते गुणादाने नैर्गुण्यं वचनीयता।
दैवायत्तेषु वित्तेषु पुंसः का नाम वाच्यता॥

—गुणों को प्राप्त करना अपने अधीन हुआ करता है। ऐसी स्थिति में निर्गुण रह जाना निंदा का विषय है। किंतु दैवाधीन धन प्राप्ति के विषय में पुरुष की क्या निंदा की जा सकती है।

गुणैः सर्वज्ञकल्पोऽपि सीदत्येको निराश्रयः।
अनर्घमपि माणिक्यं हेमाश्रयमपेक्षते॥

—अत्यधिक गुणों के कारण सर्वज्ञ के तुल्य भी व्यक्ति यदि आश्रयहीन होता है तो वह सुखी नहीं होता। बहुमूल्य मणि को भी सुशोभित करने के लिए सोने की आवश्यकता होती है।

अर्थे वा यदि वा धर्मे, समर्थो देशकालवित्।
निःसंशयो नरः पूज्यो नेष्टः संशयिता सदा॥

—वह मनुष्य निःसंदेह पूजनीय है, जो कि धर्माचरण में तथा अर्थोपार्जन में समर्थ है। देश तथा काल का ठीक प्रकार से जानने वाला है। सदा संशयशील मनुष्य अच्छा नहीं होता।

जनापवादमात्रेण न जुगुप्सेत चात्मनि।
जानीयात्स्वयमात्मानं यतो लोकोनिरंकुशः॥

—केवल दूसरों द्वारा अपनी निंदा सुनकर मनुष्य अपने को निंदित न समझे। वह स्वयं अपने को जाने, क्योंकि लोक तो निरंकुश है, जो चाहता है, वह बोल देता है।

—प्रस्तोता : महर्षिकुमार पाण्डेय

कहानी

मेरा क्या अपराध है

• आर. बोलिनायन्

मेरा अपराध क्या था? मुझे नौकरी से क्यों निलंबित किया गया? बहुत दिमाग लड़ाने पर भी मेरी समझ में नहीं आता। आपकी समझ में आये तो मुझे भी बताइए। नहीं तो मगज-पच्ची कीजिए।

मैं झूठ क्यों बोलूं! एक प्याला चाय बनाने के लिए ये जो कागज जलते हैं न, ठीक ऐसे ही एक दिन मेरा दिल भी जला।

सच पूछिए तो मैं लिफाफे जलाकर ही अपने लिए चाय तैयार करता हूं। इसलिए यह शिकायत उठी है कि मैं डाक में जानेवाली चिट्ठियों को जला डालता हूं। मेरे हिसाब से यह शिकायत झूठी है, पर दूसरों की नजर में वह सच है।

सारी कहानी सुनने पर ही आप हकीकत समझ सकेंगे।

'न जाने, वे कब आयेंगे?' सोचती हुई राह पर आंखें बिछाकर बैठनेवाली प्रेमिका को, प्रेमी के आगमन की खुशखबरी लानेवाली चिट्ठी; नौकरी के सिलसिले में भ्रमण पर गये हुए विरह-दग्ध पति के दिल के उद्गारों से सराबोर चिट्ठी; माता के खर्च के लिए पैसा भेजते हुए पुत्र की प्रेमपूरित चिट्ठी; मां की खैरियत जानने को आतुर बेटी की चिट्ठी; पदोन्नति के लिए तरसनेवाले को आशा-निराशाओं के बीच झुलानेवाली चिट्ठी; खून के रिश्ते की मौत की खबर लानेवाली दुःखद चिट्ठी; —ऐसी कितनी ही चिट्ठियों को 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' की नीति अपनाकर पहुंचानेवाला डाकिया दामोदर हूं मैं।

हां, महल्ले के नन्हे-मुन्नों पर प्यार जताकर, दिल वारने की मैंने बड़ी गलती कर दी। यह क्यों? इसलिए कि मेरे ब्याह को कई साल बीतने पर भी, जब मेरे घर में खेलने को कोई नन्हा-मुन्ना नहीं आया, तब महल्ले के बच्चों से वह खामी पूरी करने की कोशिश में यह गलती हो गयी! इसे कोई गलती कहेगा? उन्हें खुश करने के लिए मैंने जो काम किया, वह भी हो सकता है, कि दुनिया की आंखों में गलती हो। सड़क पर फेंके हुए नाकाम कार्डों और लिफाफों को मैंने काम का

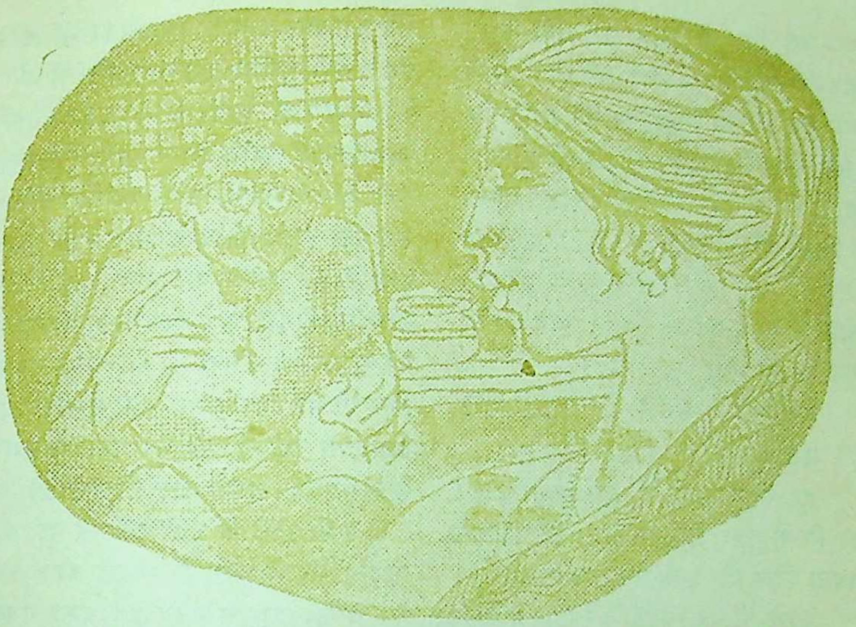

बनाया। उन्हें इकट्ठा कर ले जाता और 'क, ख' तक न जाननेवाले बच्चों के हाथ देकर कहता, 'यह ले चिट्ठी, तेरे मामा ने लिखी है?' 'यह नाना ने लिखी है!' बच्चों को मेरा वह नाटक पसंद आया तो वे मुझसे ऐसे हिल-मिल गये कि बिना उन्हें देखे, मुझे चैन नहीं पड़ता।

बच्चों के प्रति मेरी यह भावना देखकर भगवान पसीज गया। लाड़-प्यार करने को मेरे ही यहां एक लड़की का जन्म हुआ! मैंने उसका क्या नाम रखा होगा? आप अनुमान लगा सकते हैं? लाड़ली की उम्र जब स्कूल जाने की हुई, तो मैं उसके साथ भी वही खेल खेलने लगा। "यह ले, तेरी चिट्ठी!" मेरे मुंह से छूटते ही एक दिन वह पूछ बैठी, "मेरे नाम यह चिट्ठी किसने लिखी होगी?"

हंसते हुए मैंने कहा, "किसी दिन तेरे हाथ पीले करनेवाले ने!"

दो दिनों के बाद उसने मेरे हाथ में एक कार्ड थमाते हुए कहा, "इसे डाक में छोड़ दो!"

"किसको लिख रही है?"

"और किसको? मेरे हाथ पीले करनेवाले को!"

उसका उत्तर सुनकर हम मां-बाप लोट-पोट हो गये।

पढ़-लिखकर जब वह कालेज जाने को हुई, तब मैंने मन ही मन कहा, 'हमारे भाग्य में पढ़ना-लिखना नहीं बदा है तो क्या, कम से कम इसे बी. ए. तक पढ़ाकर ही छोड़ूंगा।'

उस दिन मैं काम पर नहीं गया। लाड़ली कहीं बाहर गयी हुई थी। उसके नाम एक चिट्ठी आयी, तो मैंने सोचा कि इसके नाम किसने चिट्ठी लिखी होगी? हां, हो सकता है कि कालेज की किसी सहेली ने लिखी हो। 'चिट्ठी में ऐसा क्या लिखा होगा?' यह प्रश्न मन में उठा तो उसे खोलकर पढ़ने का जी हुआ। पढ़ने पर तो सिर चकरा गया।

आजकल के कालेज क्या खाक पढ़ाते हैं! प्रेम का ही पाठ पढ़ाते हैं न!

हां, वह लाड़ली के नाम किसी मोहन का लिखा हुआ, प्रेम-पत्र था। उसमें उसने अपना दिल ही उतारकर रख दिया था।

पहले तो वह चिट्ठी मेरे दिल में शूल-सी चुभी। फिर शांत चित्त से सोचने पर मैं इस नतीजे पर पहुंचा, कि इसमें क्या दोष है? आजकल के जवान लड़के अपना जीवन आप ही संवारना चाहते हैं, तो हम मां-बाप को अड़ंगा नहीं डालना चाहिए। लड़का अच्छा हो तो हम ही बढ़कर दोनों का रिश्ता जोड़ दें।

इस बात को मन ही मन रखकर मैंने लड़के के बारे में पूछ-ताछ की तो पता चला कि उसके शील-स्वभाव अच्छे नहीं हैं और उसने कई लतें पाल रखी हैं। दोनों का रिश्ता तोड़ने के प्रयत्न में पत्र-व्यवहार दबाये, छिपाये। फिर भी उनका प्रेम रत्ती-भर भी कम नहीं हुआ। आखिर बेटी के सामने ही खुल्लमखुल्ला उसके स्वभाव की आलोचना की और उससे नाता तोड़ लेने की बात कही! पर उसका भी कोई असर नहीं हुआ। असर हो भी तो कैसे, प्रेम अंधा जो होता है! इधर उसने जिद पकड़ी और उधर मैंने निगरानी कड़ी की। बावजूद इसके, वह ठेंगा दिखाकर उस लड़के के साथ भाग गयी। उस दुःख में मेरी पत्नी ने बिस्तर पकड़ लिया और एक दिन आंखें मूंदकर चली भी गयी। मेरे सामने तो अंधेरा ही अंधेरा रह गया। फिर भी मेरे दिल के एक कोने में यह आशा टिमटिमा रही थी कि मेरी बेटी के भाग्य से वह लड़का सुधर जाए तो कैसा हो!

कभी दिल के उसी कोने से मुझे यह ताड़ना भी मिलती, कि सारा दोष तेरा है। बच्चों को इस तरह पत्र देकर उनके मन में इच्छाएं जगाने का बड़ा अपराध तूने किया है। कौन जाने, ऐसी घटनाए कितने परिवारों में घटी हों!

यह आदत तब तक नहीं छूटेगी, जब तक हम डाकिया बने रहेंगे। इस विचार के जोर मारने पर, मैंने अपनी तेंतालीस साल की उम्र में कड़ी मेहनत कर एस. एस. एल. सी. परीक्षा उत्तीर्ण की और अपने अधिकारियों से हाथ जोड़, मिन्नत कर 'सार्टर' की नौकरी पायी।

सार्टर के इस काम में ज्यों-ज्यों तजुर्बा बढ़ता है, हाथों को वजन का भान हो जाता है और वजन के माफिक डाक-टिकट लगे हैं या नहीं, इसका भी पता लग जाता है। प्रायः इसमें कभी भूल नहीं होती। वैसे ही इन आंखों में ऐसी शक्ति आ जाती

है कि इस बात का पता लग जाता है कि लिफाफे के अंदर क्या रखा होगा !

मेरी अनुभवी आंखों में एक दूसरी सामर्थ्य यह थी कि लिफाफों में बंद प्रेम-पत्रों को भी पहचान लेतीं। शत-प्रतिशत नहीं तो भी निन्यानवे प्रतिशत उनसे भूल नहीं होती। मेरी बेटी-जैसी गत दूसरों की न हो जाए, इस विचार से ऐसे पत्र मैं अलग छांटकर रख देता; उस दिन की डाक में नहीं भेजता।

आप यही जानना चाहते हैं न कि मेरी बेटी पर क्या गुजरी ? मेरा हिसाब

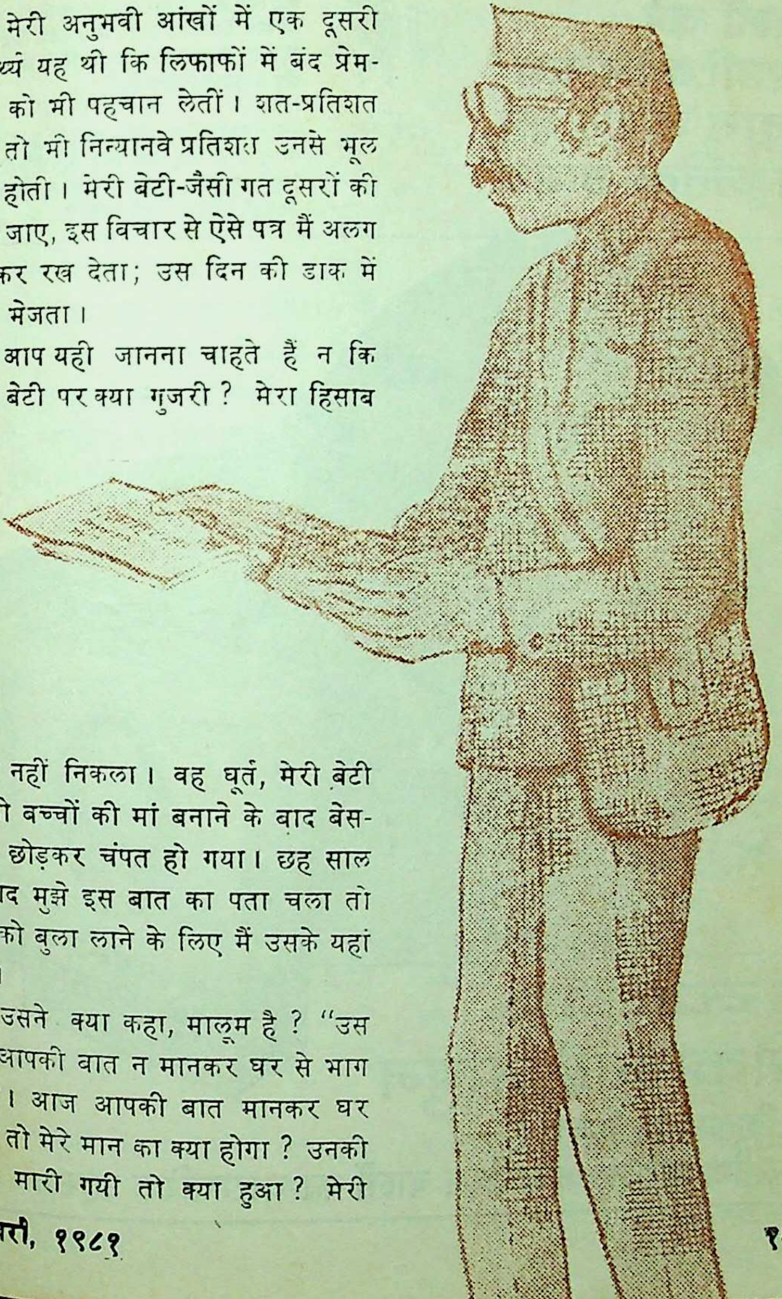

गलत नहीं निकला। वह धूर्त, मेरी बेटी को दो बच्चों की मां बनाने के बाद बेसहारा छोड़कर चंपत हो गया। छह साल के बाद मुझे इस बात का पता चला तो बेटी को बुला लाने के लिए मैं उसके यहां गया।

उसने क्या कहा, मालूम है ? "उस दिन आपकी बात न मानकर घर से भाग आयी। आज आपकी बात मानकर घर लौटी तो मेरे मान का क्या होगा ? उनकी अक्ल मारी गयी तो क्या हुआ ? मेरी

बालों को रेशमी कोमलता प्रदान करने का प्राकृतिक उपाय

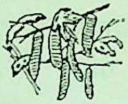

शुद्ध शिकाकाई के सारे प्राकृतिक गुणों का स्वस्तिक शिकाकाई साबुन में समावेश किया गया है, प्रयोग में बहुत ही आरामदेह किसी भी तरल शैंपू से ज़्यादा किफ़ायती.

भरपूर कोमल झाग आपके बालों को होले-होले परन्तु अच्छी तरह साफ़ धोता है. बालों को चमकदार, निरोग, ताज़गी से युक्त सुवासित और बहुत ही मुलायम बनाये रखता है.

卐 स्वस्तिक
शिकाकाई

卐 स्वस्तिक

शिकाकाई साबुन

में शिकाकाई मिला है—
भारतीय महिला के मनोरम बालों का पारम्परिक रहस्य

shilpi dm 25/79 hin

भी अक्ल मारी जाये ? मैं अपने पैरों खड़ी होकर, इन दोनों बच्चों का पालन-पोषण करूंगी और उनके कुल-गौरव को बचाने का बीड़ा मैं खुद उठाऊंगी । मेरी चिंता आप छोड़ दीजिए !"

मेरी बेटी की यह दिलेरी और लड़कियों में भी हो, यह आशा कैसे की जा सकती है ? इसलिए उन छांटे हुए पत्रों को, जिन पर मुझे शुबहा होता, बिना खोलकर पढ़े, डाक में नहीं छोड़ता । मैं मानता हूं कि दूसरों की चिट्ठी पढ़ना बुरी आदत है । लेकिन गुप्तचर विभागवाले भी तो चिट्ठियों को खोलकर पढ़ते हैं ।

मेरी आदतों से तो अब आप वाकिफ हो ही गये हैं । सड़क-गलियों पर पड़े कार्ड-लिफाफों को इकट्ठा करने की वह पुरानी आदत, 'सार्टर' होने के बाद भी छूटी नहीं । सच पूछिए तो मैंने ही छोड़ी नहीं । इसलिए कि वे चाय गरम करने के काम में आते हैं और उन पत्रों को भाप में खोलकर पढ़ने के काम में मुझे मदद देते हैं, जिन पर मुझे शुबहा हो !

मैं तो दूध का जला ठहरा ! अतः उन्हें जल्दी डाक में नहीं छोड़ता । यह नहीं समझा जाए कि सच्चे प्रेम के बीच मैं रोड़े अटकाता हूं । सच्चा प्रेम हो तो शादी तक पहुंचाता और झूठा प्रेम हो तो खाली लिफाफा भेजकर वैमनस्य पैदाकर शादी तोड़ देता ।

ऐसे पत्रों में, न जाने किसका पत्र किसे नहीं पहुंचा, उसने डाकविभाग को शिकायत कर दी । अधिकारी ने जांच-पड़ताल शुरू कर दी । कार्यालय ही में कागज जलाकर, चाय बनाकर मेरा पीना किसी को एक आंख नहीं भाया, तो अधिकारी के कान भर दिये ।

कुछ लोगों का यहां तक कहना है कि मेरी बेटी का जीवन तबाह होने से मेरा दिमाग फिर गया है ।

मैं मानता हूं कि मैं कसूरवार हूं लेकिन मुझे एक बात की खुशी है । तहकीकात के वक्त मैं कई चिट्ठियां अपनी कैफियत में पेश करनेवाला हूं । तब एक रहस्य का भंडाफोड़ होगा । जो अधिकारी मुझे अपराधी ठहराकर, कठघरे में खड़ा करेंगे, उन्हीं की बेटी को झूठे प्रेम में पड़कर तबाह होने से मैंने बचाया है—इस बात का पता होने पर दिल ही दिल में मेरा आभार मानेंगे ।

'निश्चित रूप से तुम यह कैसे कह सकते हो ?' यही न आप पूछते हैं !

अजी साहब ! उनकी बेटी को प्रेम-पत्र लिखकर अपने जाल में फंसाने की जो धूर्त कोशिश कर रहा है, वह मेरी बेटी का पति है ।

"बेचारी अब क्या कर रही है ?" मेरी बेटी आप लोगों की ऐसी हमदर्दी की प्यासी नहीं है क्योंकि वह बाप की बेटी है । बाप ही की तरह 'सार्टर' के काम में लगी हुई है ।

—१२/१३१, ईस्ट रोड, वेस्ट सी. आई.
टी. नगर, मद्रास-६०००५५

जेल डॉक्टर की डायरी-३

जेल में राजनीतिक भूचाल

• डॉ. महेश नारायण

सावन-भादो में नदी की क्या अवस्था होती है ? उफनती धाराएं, डूबते-उतराते जहाज और नौकाएं, उजड़ते तटबंध और गांव, थाह-अथाह का कहीं कोई ठौर-ठिकाना नहीं । दिन में जो बस्ती है, रात में वह रहेगी या नेस्तनाबूद हो जाएगी । कोई बता नहीं सकता । हर वक्त लोग आतंकित और आशंकित रहते हैं।

ठीक वैसी ही अवस्था जेल की दा

जाती है, जब वहां सामूहिक रूप से राजनीतिक बंदी आना शुरू होते हैं। सारी व्यवस्था और शांति अस्त-व्यस्त हो जाती है। हर आदमी परेशान और चौकन्ना रहता है, रोज नयी समस्याएं, नयी जिम्मेदारियां और उनके समाधान। और समाधान भी कैसे, जिनको नियम से कम, बंदियों की इच्छाओं से ज्यादा सरोकार है। 'जेल-मैनुअल' में क्या लिखा है, उससे अधिक यह ध्यान रखना पड़ता है कि नौकरी कैसे बचे, बदनामी कैसे कम हो! बदनामी नहीं होगी, यह तो सोचना ही व्यर्थ है। स्थिर जल में चलती हुई किश्ती बीच भंवर में आ पहुंचती है। एक शेर याद आ जाता है :

साहिल से निगाहें मोड़े हुए
पतवार से रिश्ता तोड़े हुए
टूटी हुई किश्ती को भी कभी
तूफां में चलाना पड़ता है

सुपरिंटेंडेंट और डॉक्टर, जेलर और जमादार, वार्डर और बाबू, हर वक्त इस भंवड़ और तूफान से जूझते, डूबते-उतराते रहते हैं।

एक अलग दुनिया

सत्याग्रहियों के रहने-खाने की व्यवस्था साधारण कैदियों से अलग करनी पड़ती है। अलग कक्ष, अलग चूल्हा-चौका, अलग सारा इंतजाम। किंतु हर हालत में इन्हें साधारण कैदियों से अलग ही रखा जाता है। साधारण कैदी ही सत्याग्रहियों की 'सेवा-व्यवस्था' में जोते जाते हैं। जैसे जल में एक मछली को दूसरी से अलग नहीं रखा जा सकता, वैसे ही सत्याग्रही एवं साधारण कैदी के मिलन को भी रोका नहीं जा सकता, सिर्फ व्यवस्था भर ही अलग रहती है।

टकराव के कारण

सत्याग्रही-बंदी दो प्रकार के होते हैं—एक राजनीतिक पार्टियों के लोग, दूसरे कालेज-कचहरी-सरकारी संस्थान के कर्मचारी। राजनीतिक पार्टियों में सत्याग्रह के निमित्त भरती या प्रशिक्षण तो होता नहीं। जोश में जेल जाने के आकर्षण पर लोग आ जुटते हैं और 'जेल भरो अभियान' शुरू हो जाता है। कभी-कभी प्रलोभन देकर निम्न-आय या बेरोजगार लोगों को इस निमित्त जुटाया जाता है। इन लोगों का मूल उद्देश्य रहता है, 'चलो, महीना दो महीना, सरकारी खाना खाकर कचरम-कूट किया जाए, फिर तो छूट ही जाएंगे।'

जेल में पहुंचते ही वे किसी लड़कीवाले के घर पहुंचे बरातियों-जैसा व्यवहार करने लगते हैं। राजनीतिक बंदी यानी 'सरकारी मेहमान'। उनकी मांगें सुरसा के मुंह की तरह फैलने लगती हैं। उनके नेता भी अपनी साख जमाये रखने के लिए उनकी अनाप-शनाप मांगों का समर्थन करने लगते हैं।

अधिकारियों को यथा-शक्य उनकी मांगें पूरी करनी ही पड़ती हैं। राजनीतिक बंदियों की सुख-सुविधा अन्य कैदियों के

माँ का दूध बच्चे के लिए सर्वोत्तम है

बच्चे के लिए स्तनपान का महत्व

माँ का दूध शुद्ध, कीटाणुरहित और शिशु की पाचनशक्ति के १००% अनुकूल होता है। स्तनपान से बच्चे को माँ की विभिन्न रोगों के प्रति असंक्राम्यता सहज ही मिल जाती है और आपके वात्सल्य द्वारा सुरक्षा की भावना भी उसे मिलती है जो उसके लिए ज़रूरी है. उसे वायु-रोग या नैपी-रैश भी बहुत कम होता है।

३ महीने बाद केवल दूध काफ़ी नहीं है

आपके बच्चे की पोषक-आहार सम्बन्धी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उसके आहार को बदलना ज़रूरी है। डॉक्टर, आयरन से भरपूर पोषक ठोस आहार लेने की सिफ़ारिश करते हैं जो आसानी से पचाया जा सके।

डॉक्टर फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश क्यों करते हैं?

सुपाच्य फ़ैरेक्स आपके मुन्ने की कोमल पाचन शक्ति के लिए विशेष रीति से बना ठोस आहार है। इसमें कार्वोहाइड्रेटस, फ़ैटस, कैल्शियम, फ़ास्फ़ोरस और विटामिन मौजूद हैं। फ़ैरेक्स आयरन से भी भरपूर है। इस प्रकार मुन्ने के सर्वांगीण विकास के लिए फ़ैरेक्स एक आदर्श ठोस आहार है।

मुफ़्त ! मुन्ने की प्रथमवर्ष पुस्तिका— नयी माताओं के लिए बच्चे की देखभाल सम्बन्धी सुलभ मार्गदर्शन। ५० पैसे का टिकट भेजकर मंगवाइये।

पो. ऑ. बॉक्स नं. 19119
(FAR 45 B) बम्बई-400 025

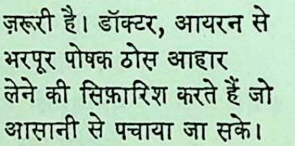

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है-फ़ैरेक्स
मुन्ने का आदर्श ठोस आहार—जल्द और सर्वांगीण विकास के लिए

CASGLF-11-173 Hi

मन में ईर्ष्या जगाती है। और इस कारण कभी-कभी विचित्र स्थिति पैदा हो जाती है।

मक्खन-मेवे की मांग

बिहार के एक जेल में सत्याग्रहियों के एक दल ने आते ही मक्खन, मेवा, बासमती, चावल, घी, अंडा-मांस, और काली गाय का सामने दुहा हुआ दूध दिये जाने की मांग की। नियमानुसार मांगें मान सकना संभव न था। एक सहायक जेलर सत्याग्रही दल के नेता से परिचित थे। अतः समझौते का मार्ग निकालने का दायित्व उन्हें सौंपा गया। वे अकेले में नेताजी से मिले। कहा, "हम लोग एक गांव के आदमी हैं। हमसे कहिए, क्या तकलीफ है, सब इंतजाम किया जाएगा। बेकार के हंगामे से क्या फायदा?"

नेताजी आश्वस्त हुए। विश्वास जमा। कहा, "जेलर बाबू, हमारा आपसे कुछ झंझट थोड़े ही है। असल में हमारे साथ ये लोग जो आये हैं, उनकी कुछ मांगे हैं। नौजवान हैं, बिना कुछ लिये शांत नहीं होंगे। आप ऐसा कीजिए; हम आपको लिस्ट दे देते हैं। तत्काल हमें कुछ नहीं चाहिए। रोज-रोज का हिसाब करते रहिए। जब हम लोग जाने लगें, तब जोड़कर जो पैसा हो, आप दे दीजिएगा। आप पर हमें विश्वास है। बस आपकी मंजूरी चाहिए। सरकार के पास पैसे की कमी नहीं। कुछ देने की भी जरूरत नहीं कि अन्य कैदियों की नजरों में खटके। हम सबों को मना लेते हैं। कोई हल्ला-हंगामा आज से नहीं होगा।"

यही गुप्त समझौता हुआ। समझौते की धाराएं नेताजी और सहायक जेलर के मध्य ही सीमित रहीं। जेल में उस दिन से शांति विराजने लगी। सब लोगों ने सहायक जेलर की बुद्धि की प्रशंसा की।

समय बीता। नेताजी और उनके दल के लोगों को दूसरी जेल भेजने का आदेश आया। नेताजी ने जाने से पूर्व सहायक जेलर से मिलने की मांग की।

सहायक जेलर बाजार गये हुए थे या यह समझिए, बहाना बना कर कहीं टल गये। सुरक्षा दल के लोग आगये। उन्हें ले जानेवाली पुलिस गाड़ी भी आ गयी। ट्रेन का समय हो गया। सारी तैयारी, लिखा-पढ़ी सब खत्म, पर न

क्या आप अपने ये भावी खर्चे पूरे कर सकेंगे?

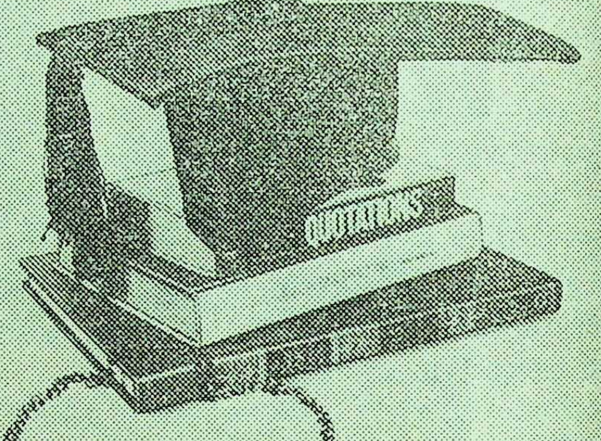

अपने बच्चों के भविष्य की सोचिए. आप चाहेंगे कि जीवन में विकास की सारी सुविधाएँ उन्हें मिलें लेकिन हो सकता है, कल ये आपके सामर्थ्य के बाहर हो. क्योंकि मामूली जीवन निर्वाह भी दिनों-दिन अधिक खर्चीला होता जा रहा है और धन की कमी आपके बच्चों की सारी खुशियाँ छीन सकती है. आखिर आपके बच्चों का जीवन आपके लिए बहुत मायने रखता है. चाहे आप अपने बच्चों को स्कूल भेजना चाहते हों या कॉलेज, उनका विवाह करना चाहते हों, उन्हें डॉक्टर बनाना चाहते हों या इंजीनियर- यह सब इस पर निर्भर है कि आपके पास कितना धन है. आपके बच्चों का सुख क्या आपका सुख नहीं है?

इसलिए अभी से सरकारी क्षेत्र के किसी बैंक में अपनी बचत शुरू कर दीजिए. अपनी जरूरतों के मुताबिक कोई भी बचत योजना चुनिए. हमारी ३०,००० से भी अधिक शाखाओं में से किसी एक में पधारिए और देखिये आपका धन कितनी सुरक्षा, सुविधा और तेजी से बढ़ता है.

सहवीर्यं करवावहै

जॉइण्ट
पब्लिसिटी
कमिटी
पब्लिक सैक्टर बैंक्स

सदस्य बैंक

इलाहाबाद बैंक • आंध्रा बैंक • बैंक ऑफ बड़ौदा • बैंक ऑफ इंडिया • बैंक ऑफ महाराष्ट्र • केनरा बैंक
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया • कॉर्पोरेशन बैंक • देना बैंक • इंडियन बैंक • इंडियन ओवरसीज बैंक • न्यू बैंक ऑफ इंडिया
ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स • पंजाब नेशनल बैंक • पंजाब एन्ड सिंध बैंक • भारतीय स्टेट बैंक
स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एन्ड जयपुर • स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद • स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर • स्टेट बैंक ऑफ मैसूर
स्टेट बैंक ऑफ पटियाला • स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र • स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर • सिंडीकेट बैंक
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया • युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया • युनाइटेड कमर्शियल बैंक • विजया बैंक.

पब्लिक सैक्टर बैंक-हर दिन, हर जगह सबके जीवन में नया विश्वास जगा रहे हैं.

Imageads-JPC-80312 B HN

सहायक जेलर आये, न नेताजी जेल से बाहर निकलने को तैयार हुए। लाचार आई. जी. (कारा. महानिरीक्षक) को सूचना भेजी। वे आये। नेताजी से उन्होंने बहुत पूछा, "आखिर सहायक जेलर से आपको क्या काम है ? कहिए। देर हो रही है। आपके न जाने से हमें सरकार को कैफियत देनी होगी।" तब नेताजी को खुलकर कहना पड़ा, "कटौती (सामान) का कुछ पैसा सहायक जेलर के पास जमा है। वह दिलवा दीजिए, तो जाएंगे।"

सहायक जेलर को ढूंढ़ा गया। वे आये। पूछने पर उन्होंने किसी भी गुप्त समझौते से साफ इनकार कर दिया। आई. जी. ने उन्हें अकेले में बुलाकर कहा, "क्या नेताजी ने कोई लिस्ट आपको दी और आपने उन्हें कुछ आश्वासन दिया था ?" सहायक जेलर ने कहा, "हजूर, जेल-अधीक्षक ने मुझे उन्हें शांत करने का आदेश दिया। शांति स्थापित करने के निमित्त इनकी लिस्ट की सब बातें मैंने मंजूर कर लीं। पर धारोष्ण दूध और मेवा, फल विशेष भोजन सो इन्हें मैं अपनी जेब से नहीं दे सकता था। आपके आदेश पर ही यह संभव होता। शांति स्थापना के निमित्त मैंने यों ही इन्हें आश्वासन दे दिया था, अन्यथा एक दिन भी हम यहां चैन से न रह पाते। लाठीचार्ज करना पड़ता, गोली चलानी पड़ती। ऐसी स्थिति इन लोगों ने उत्पन्न कर दी थी।"

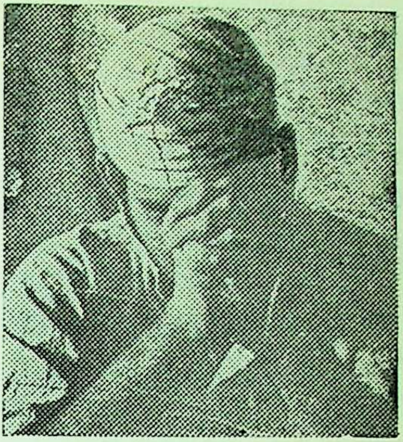

सहायक जेलर की बुद्धिमत्ता से आई. जी. बहुत प्रसन्न हुए। बिना किसी खर्च, और जोर जबरदस्ती के उसने जेल में शांति स्थापित कर दी।

एक सत्याग्रही दल जेल में इस्तेमाल किये गये बिछौने, कंबल, रिहा होते समय, साथ ले जाने की जिद पर अड़ गया। मजबूरन लाठीबंद सिपाहियों का दल जेल के गेट पर तैनात किया गया और एक-एक सत्याग्रही को बाहर निकाल-निकालकर बिछौना-कंबल रखवाया गया। सत्याग्रही जेल अधिकारियों के खिलाफ 'मुर्दाबाद' के नारे लगाते हुए चले गये।

मंत्री का बेटा : विपक्षी नेता

डॉक्टर श्रीकृष्णसिंह-मंत्रिमंडल के एक सदस्य के पुत्र विपक्षी दल के नेता थे। वे आंदोलन के सिलसिले में जेल आये। शाम को नंबरबंदी के समय बंद न होने पर अड़ गये। जिला कलक्टर से संपर्क किया गया, उन्होंने कमिश्नर से, कमिश्नर ने चीफ सेक्रेटरी से और चीफ सेक्रेटरी

ने मुख्यमंत्री से आदेश मांगा। मुख्यमंत्री डॉक्टर श्रीकृष्णसिंह का संक्षिप्त आदेश था, 'जेल-मैनुअल का पालन करो।' तब जेलवालों ने उन्हें जबरदस्ती बंद किया।

सेंट्रल जेल में दो-तीन डॉक्टर रहते हैं। और कैदियों की संख्या डेढ़-दो हजार से ज्यादा रहती है। एक मेला-सा लगा रहता है, दवा लेनेवालों का और दवा भी वही, जो रोगी चाहे। डॉक्टर एक, बीमार हजार।

स्वर्गीय डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद जेल में बिताये गये दिनों का पूरा सदुपयोग करते थे। उन्होंने तो जेल में नेवार बनाना भी सीख लिया था। राजेन्द्र बाबू से संबंधित एक घटना और है—१९४२ के आंदोलन के दिनों में बांकीपुर जेल में बंद थे। गरमी के दिन थे और उनकी कोठरी में पंखा नहीं था। गवर्नर सर फोर्ड जेल-निरीक्षण के नाम पर उनसे मिलने आये। पूछा, "कोई तकलीफ है। कुछ चाहिए।"

राजेन्द्र बाबू का उत्तर, "मुझे कोई तकलीफ नहीं, कुछ भी नहीं चाहिए।"

गवर्नर रदरफोर्ड उनकी सरलता और महानता से बहुत प्रभावित हुए। उसी दिन उनके विशेष आदेश से राजेन्द्र बाबू के कमरे में खस की टट्टी और बिजली का पंखा लग गया।

जेल साधना-स्थल

जेल सुख-शांति और साधना का स्थल होना चाहिए। यहीं लोकमान्य तिलक ने 'गीता रहस्य' और 'आर्यों का मूल स्थान', जैसी महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की रचना की। जवाहरलाल जी ने 'विश्व इतिहास की झलक', अपनी आत्म-कथा और 'भारत की खोज' लिखी, डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने 'खंडित भारत' और अपनी महत्त्वपूर्ण जीवनी लिखी। गांधीजी ने भी 'अनासक्ति योग' और 'सत्य के मेरे अनुभव'-जैसी पुस्तकों की रचना जेल में ही की। विनोबाजी ने यहीं कई भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया, कुरान का अध्ययन किया। संसार के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना जेल में ही हुई है। अतः जेल में सोचिए-सीखिए-समझिए-ज्ञान प्राप्त कीजिए।

—मधुबनी, पूर्णिया

●

सन १९४४ में आगाखां महल से गांधीजी छूटकर बाहर आये। उनके साथ उनकी पोती मनु गांधी भी थी। जेल-अधिकारियों ने उनसे छूटते समय कहा, "जेल नियम के अनुसार आपको इस कागज पर दस्तखत करना होगा कि नजरबंदी की अवधि की कोई बात लिखकर या बोलकर प्रकट नहीं करेंगे।" उन्होंने गांधीजी से सलाह की। गांधीजी ने कहा, "अगर ऐसा नियम है तो तुम दस्तखत कर दो। जेल से निकलने के बाद तुम स्वतंत्र हो, प्रकट करो, न करो, तुम्हारी इच्छा।" मनु गांधी ने हस्ताक्षर कर दिये।

विज्ञान के बढ़ते युग में भूत-प्रेत में विश्वास करना बड़ी दकियानूसी-सी बात जान पड़ती है। पहले मैं भी कभी इन सब बातों में यकीन नहीं किया करता था, लेकिन जब से प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है, तब से मानने लगा हूं कि प्रेत योनि होती है। मैंने दो बार प्रेत-दर्शन किये हैं और दोनों बार एक से अधिक मित्रों के साथ! प्रथम बार सन् १९२८ में, जब मैं काशी हिंदू विश्वविद्यालय का छात्र था, मैंने एक सात्विक प्रेत के दर्शन किये थे।

मैंने भी प्रेत देखे हैं!

- **आचार्य विनय मोहन शर्मा**

जाड़े के दिन थे। हम दो-तीन मित्र प्रातः सैर करने जाया करते थे। एक दिन जब हम कला तथा साइंस कालेज के पास की सड़क से जा रहे थे, तब जाड़े के धुंधलके में हमने अपने पीछे एक सफेद स्वच्छ चादर ओढ़े, हाथ में लालटेन लिये एक पुरुष को देखा। वह धीरे-धीरे 'राम जय, राम जय, जय जय राम' का जाप

बाबू श्यामसुंदरदास कहा करते थे कि तुलसीदास की आत्मा बनारस के हिंदू विश्वविद्यालय परिसर में घूमती रहती है। क्या वह सफेद चादरधारी व्यक्ति तुलसीदास ही थे!

हिंदी के सुप्रसिद्ध समीक्षक आचार्य विनय मोहन शर्मा की आपबीती

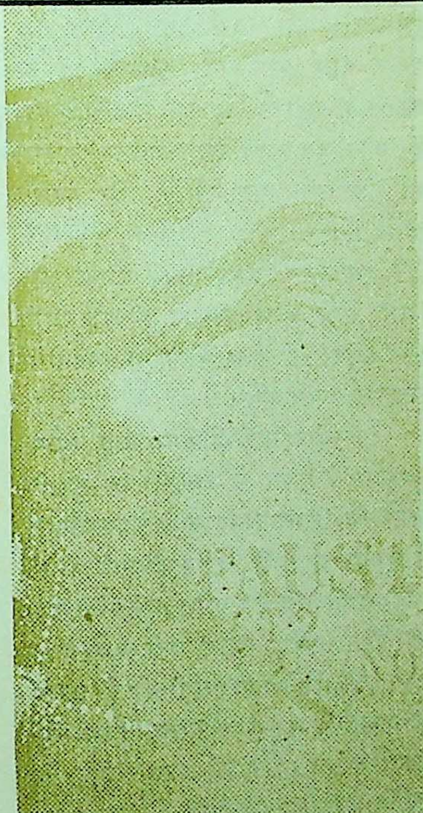

—सा करता जाता था। हमने सोचा, होगा कोई भक्त, जो गंगास्नान कर लौट रहा है। वह जब हमसे आगे बढ़ गया, तब हमें उससे बात करने का कुतूहल जगा और हमने उसके नजदीक जाना चाहा, पर वह तेजी से आगे बढ़ने लगा। हम भी उसके पीछे तेजी से बढ़े, लेकिन हम उसके निकट नहीं पहुंच पाये।

हमारा और भी कुतूहल बढ़ा। हमने जरा दौड़कर उसे छूना चाहा, पर वह दूर होता गया। हम उसके निकट नहीं पहुंच पाये और वह सड़क के अंतिम छोर पर, जहां से खेत शुरू होते थे, थोड़ी देर रुका, तब हमने देखा लालटेन आकाश की ओर ऊपर उठ रही है और व्यक्ति गायब है।

अब हमने ज्यादा साहस करना छोड़ दिया, सीधे अपने होस्टल में लौट आये और मित्रों के बीच घटना के संबंध में ऊहापोह करने लगे।

एक बार हिंदी-प्रोफेसर बाबू श्यामसुंदरदास ने कक्षा में कहा था कि तुलसीदास की आत्मा विश्वविद्यालय-परिसर में घूमती रहती है, जो कभी-कभी किसी को दिखायी देती है। हमें विश्वास हो गया कि जिस सफेद चादर-धारी व्यक्ति के हमने दर्शन किये, वह तुलसी की ही आत्मा हो सकती है, पर फिर सोचा, तुलसी-जैसे भक्त की तो मुक्ति हो जानी चाहिए थी, वह प्रेत-योनि में कैसे आये ? जिस व्यक्ति को हमने देखा वह भले ही तुलसी की आत्मा न हो, पर वह कोई न कोई प्रे अवश्य था।

बच्चों की कतार

दूसरी घटना संभवतः सन् १९५४ की है। मैं नागपुर धरमपेठ एक्सटेंशन में अपने ही मकान में रहता था। ग्रीष्मकाल था, चांदनी रात थी। संस्कृत-प्रोफेसर स्व. सरस्वती प्रसाद चतुर्वेदी और अर्थ-शास्त्र के प्रोफेसर वर्माजी मेरे यहां बैठे गपशप कर रहे थे। जब वे जाने लगे, तब मैं भी उन्हें पहुंचाने कुछ दूर तक गया।

सहसा हम लोगों ने देखा, सामने पहाड़ी के पास से सफेद वस्त्र पहने आठ-दस बच्चों की कतार चली आ रही है। वह हमसे कुछ दूर थी। फिर वे बच्चे एक मकान की आड़ में हो गये। हम भी मकान के निकट गये, तो बच्चों का कहीं पता ही नहीं था। सामने बैठे एक सज्जन से पूछा कि क्या उन्होंने इधर आये, सफेद वस्त्रधारी बच्चों को देखा है, तो उन्होंने कहा, "आप क्या कहते हैं ? दस बजे रात को दस-बारह बच्चे यहां कहां आयेंगे ?"

हमने चारों तरफ देखा, सचमुच बच्चे गायब थे। ज्ञात हुआ कि पहाड़ी के निकट छोटे बच्चों को गाड़ा जाता था।

मुक्ति का आकांक्षी

इन दो दृश्यों से मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि प्रेत-योनि है। एक बार मैंने 'कल्याण-संपादक' स्व. हनुमान

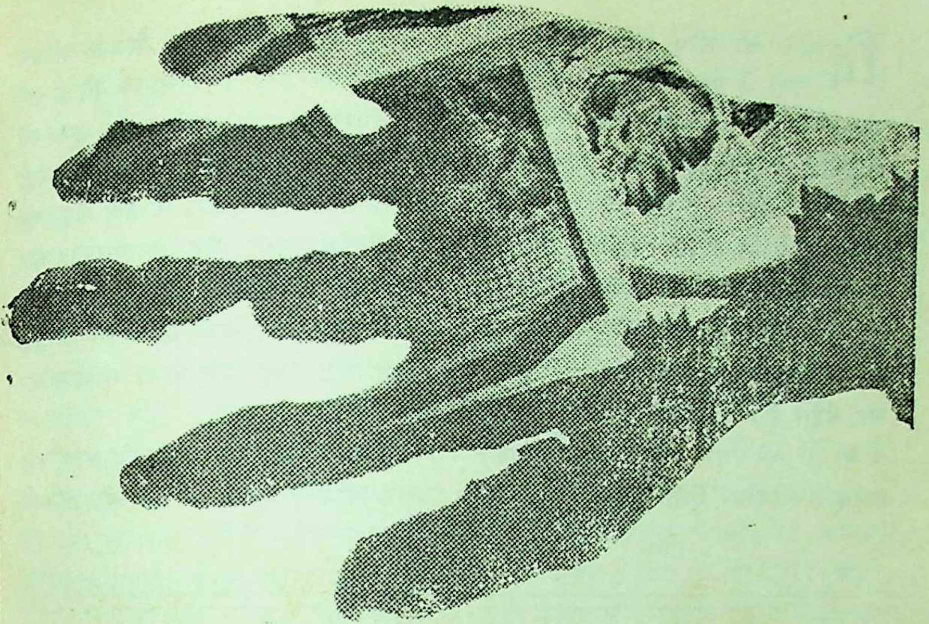

प्रसाद पोद्दार से भी इसकी चर्चा की तो उन्होंने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि वर्षों पूर्व वे बंबई की चौपाटी पर संध्या को सैर करने जाते थे और एक बेंच पर बैठ जाते थे। दो-तीन दिन से उनके पास एक पारसी सज्जन खड़े दिखायी देने लगे। वे मौन रहते और पीछे की ओर देखते रहते। एक दिन उन्होंने उससे पूछ ही लिया, "आप क्या चाहते हैं ?" उन्होंने कहा, " मैं प्रेत हूं। मेरा क्रिया-कर्म ठीक से नहीं हुआ। मैं हिंदू-धर्म में आस्था रखता हूं। माई ! आप गया में मेरा श्राद्ध करा दें, तो मैं इस यातना से मुक्त हो जाऊंगा।"

पोद्दारजी ने पता लगाया, तो प्रेत के कथनानुसार उसकी मृत्यु की बात सही सिद्ध हुई। पोद्दारजी ने 'गया' में उसका विधिपूर्वक श्राद्ध-कर्म करा दिया। उसके बाद वह प्रेत उन्हें पुनः दिखा और उन्हें धन्यवाद देकर गायब हो गया।

जबलपुर में स्व. जस्टिस ब्रजकिशोर चतुर्वेदी ने भी मुझसे कहा था कि उन्होंने इंगलैंड में अपने अपार्टमेंट में ही एक प्रेत को आते-जाते कुछ दिनों तक देखा था। यहां भी कभी-कभी उन्हें महिला-प्रेतों के दर्शन हो जाते हैं, पर उनसे उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ।

विज्ञान भी सिद्ध कर रहा है कि इस जीवन के उपरांत भी दूसरे जीवन की संभावना है। पराविज्ञान की खोज जारी है।

—ई-६/एम. आई. जी.-७,
अरेरा कालोनी, भोपाल-१४

सम्राट जो नमक बेचता था

● डॉ. प्रभात त्याग

विज्ञान का सीधा-सादा नियम है, पानी के घनत्व से किसी वस्तु का घनत्व कम होने पर, वह पानी पर तैरने लगती है। वस्तु को दबाकर पानी में रख जाने पर, वह उछलकर ऊपर आ जाएगी। कर्मठ व्यक्ति भी ऐसे ही होते हैं। साधारण जीवन व विपन्न परिस्थिति में भी वे ऊपर तैरना जानते हैं। जैसे ही अवसर मिलता है, वे सफलता के तट पर जा बैठते हैं। हेमचन्द्र, रिवाड़ी (हरियाणा) की गलियों में फेरी लगाकर नमक बेचनेवाला ऐसा ही जीवट साहसी व्यक्ति था। उसकी जगह कोई और साधारण व्यक्ति नमक बेचने को ही अपनी नियति मान लेता, पर वह अपने साहस व लगन से एक दिन भारत का सम्राट बन बैठा।

कुशल योद्धा हेमचन्द्र

हेमचन्द्र का जन्म, ब्राह्मण परिवार में हुआ था। भार्गव-गोत्र का होते हुए भी क्षत्रियों-जैसी वीरता उसमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। इसीलिए व्यवसाय को तिलांजलि देकर, उसने सैनिक जीव अपनाने की ठानी। घरवालों की इच्छ के विपरीत, उसने आदिलशाह शूर क सेना में प्रवेश प्राप्त कर लिया। व अपनी सैन्य सफलताओं के बल पर, व उसका प्रधानमत्री और सिपहसालार ब गया। यह तथ्य बहुत कम लोग जान हैं कि हेमचन्द्र ने अपने जीवन में प्रसि बाइस युद्ध लड़े और सभी में सफलत प्राप्त की।

अपनी कूटनीतिक-बुद्धि के बल प उसने जान लिया कि भारत की अस्थि राजनीति से, तुरत लाभ उठाया जा सकता है। शेरशाह सूरी व हुमायं दोनों ही भारत के राजनीतिक रंगमंच से विदा हो चुके थे। शेरशाह के उत्तराधिकारियों में सिकंदर शूर, मुहम्मद आदिलशाह व इब्राहीम सूर, तीनों अफगान शासन की पुनर्स्थापना के लिए जी तोड़ कोशिश कर रहे थे। अपने अधिष्ठाता आदिलशाह शूर

को उसने बता दिया कि मुगलों को भारत से भगाने का यह स्वर्णिम अवसर है। आदिल उसकी राय से सहमत था। बस, हेमचन्द्र ग्वालियर से फौजें लेकर दिल्ली व आगरे की ओर चल दिया। जिस समय अकबर को गुरुदासपुर के कलानौर में भारत का बादहशाह घोषित किया जा रहा था, हेमचन्द्र का दिल्ली और आगरा पर अधिकार हो चुका था। दिल्ली से तारदीबेग और आगरे से इस्कंदर खां उजबेग को भगाकर, वह भारत का वास्तविक शासक बन बैठा। अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए उसने अफगान सुल्तान की आधीनता का चोला उतार फेंका। एक स्वतंत्र शासक बनकर, अब वह सम्राट 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण कर चुका था।

इतिहास का उपेक्षित नायक : हेमचन्द्र

अंगरेज, मुस्लिम और भारतीय इतिहासकारों ने जहां अकबर की कठिनाइयों का वर्णन करने के लिए अगणित पृष्ठ रंग डाले हैं, हेमचन्द्र की उन्होंने घोर उपेक्षा की है। इसी उपेक्षा के कारण भारतीय इतिहास में आत्मविरोधी तथ्यों की भरमार हो गयी है। उदाहरण के लिए इतिहास में हमें पढ़ाया जाता है कि अकबर ने फतेहपुर सीकरी की स्थापना की! यदि ऐसा हुआ तो सीकरवाड़ राजपूतों के महल को क्या धरती निगल गयी? प्रश्न यह भी है कि पहले से स्थापित महल को अकबर ने कैसे स्थापित कर दिया? यह खोई हुई ऐतिहासिक तथ्यों की कड़ी हेमचन्द्र के जीवन से प्राप्त हो सकती है, यदि उसका ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन किया जाए। दिल्ली व आगरा पर अधिकार करने के साथ निश्चय ही हेमचन्द्र ने फतेहपुर सीकरी को भी मुगलों से छीन लिया। उसने इस हिंदू राजमहल का पुनर्निमाण कराया। आश्चर्य नहीं, यदि बुलंद दरवाजा भी उसी समय बना; अथवा वह पहले से ही बना हुआ था। मुस्लिम इतिहासकारों का यह कथन तो सर्वथा ही हास्यास्पद है, कि १५०५ ई. में जिस फतेहपुर सीकरी का अकबर ने राजधानी के रूप में त्याग कर दिया, उसी उजाड़ और वीरान स्थान में अकबर ने १६०२ ई. में बुलंद दरवाजा बनवाया। वास्तव में सीकरवाड़ राजपूतों व हेमचन्द्र द्वारा निर्मित और पुनर्निर्मित इस राजमहल को तोड़-फोड़कर अकबर ने इस पर मुगल शैली का सिर्फ मुलम्मा चढ़ा दिया, जैसा कि हिंदुस्तान की कई ईमारतों के साथ, मुगल बादशाहों ने किया। इसके प्रमाण हैं फतेहपुर सीकरी में दीप-स्तंभ का नाम—हिरण्यमय-स्तंभ, कमल की शक्ल का, दीवानेखास का स्तंभ व चौपड़-चौगान, पंचमहल, अनूप तालाब तथा मुख्यदरवाजों के लाल, वीर और चंद्र-पोल-जैसे नाम हिंदू-मंदिरों व अगणित मूर्तियोंवाले सीकरबाड़-महल में चिश्ती की मजार भी अकबर के समय में जोड़ी गयी थी, जो हेमचंद्र के समय में निश्चय ही

इलाहाबाद बैंक की डबल डिपॉजिट योजना से मुझे होता है—दोहरा फायदा।

जिसका मतलब है मेरा धन
दो तरह से बढ़ रहा है!

जी हाँ, इलाहाबाद बैंक की डबल डिपॉजिट योजना से दुगुना फायदा होता है : मुझे मिलता है एक अच्छा-खासा ब्याज—और ब्याज की रकम हर तिमाही मेरे मूलधन में जोड़ दी जाती है जिससे अगली तिमाही में मुझे और ज्यादा रकम पर ब्याज मिलता है।

और यदि मैं अपनी रकम ७ वर्ष के लिये जमा करूं तो मेरा मूलधन लगभग दुगुना हो जायेगा।

* जमा की अधिकतम अवधि १० वर्ष—१,००० रुपये के गुणितों में।
* बैंक जमा पर प्राप्य ३,००० रुपये तक का वार्षिक ब्याज आयकर से मुक्त है।
* इसके साथ ही बैंक में जमा १,५०,००० रुपये तक की राशि सम्पत्ति कर से मुक्त है।
* अर्जित ब्याज का प्रमाणपत्र हर वर्ष दिया जाता है।

आइये, अपनी बचत से इलाहाबाद बैंक में दोहरा फायदा उठाइये। अधिक जानकारी के लिये किसी भी निकटतम शाखा में पधारिये।

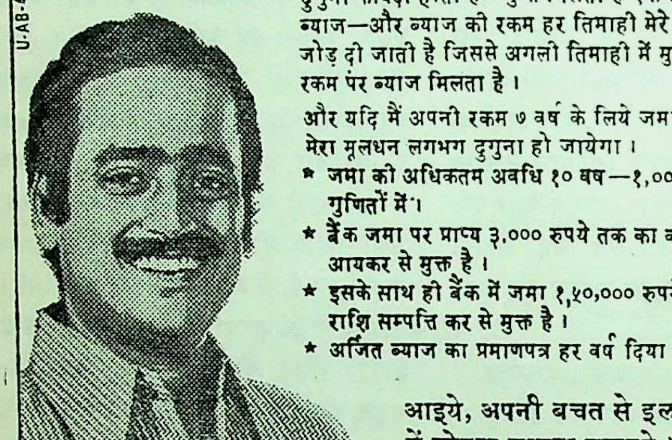

इलाहाबाद बैंक
आपका अपना बैंक
(भारत सरकार का एक प्रतिष्ठान)

U-AB-4 Hin

एक मंदिर था। जिस मुगलिया सल्तनत को हिंदुस्तान से बाहर निकाल देने की हेमचंद्र ने, शपथ ली थी, उससे वापस इस महल को प्राप्तकर अकबर द्वारा मूर्ति-भंजक बन जाना अस्वाभाविक नहीं था। अकबर के सामने हेमचंद्र को तो ये इतिहासकार गौण ही बताते, पर भारतीय इतिहासकारों ने भी आजतक हेम की उपेक्षा की। यह निश्चय ही खेदजनक बात है।

मुगलों के छक्के छुड़ाये

शिवाजी व प्रताप की साहसिक परंपरा में हेमचंद्र, मुगल फौजों से दो-दो हाथ करने को लालायित था। पानीपत के मैदान में एक लाख सैनिकों का संचालन, कोई हंसी-ठट्ठा नहीं था। १५०० हाथियों के साथ, उसने अकबर के विरुद्ध जिस मोर्चेबंदी का परिचय दिया—वह उसकी सैनिक व संगठन शक्ति का ज्वलंत प्रमाण था।

यह निर्विवाद सत्य है कि अकबर व बैराम खां के, इस विशाल सैनिक मोर्चेबंदी को देखकर, एक बार तो होश उड़ गये थे। यही नहीं मुगल सेना के दांये व बांये भाग पर तो हेमचंद्र का सफल अधिकार भी हो गया था। अचानक, मुगल सेना से आमना-सामना करते हुए, एक तीर उसकी आंख में लगा। वह बेहोश होकर, अपने हौदे में गिर पड़ा। जब तक उसकी बेहोशी टूटती, तब तक तो स्थिति परिवर्तित हो चुकी थी। उसे गिरता देखकर हिंदू सैनिकों में पुरानी परंपरा के अनुसार भगदड़ मच गयी। मुगल सैनिकों ने इस स्थिति का लाभ उठाकर हिंदू सैनिकों को, गाजर-मूली की तरह काट डाला।

अपने मालिक को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए, हेमचंद्र के महावत ने, हाथी को इशारा किया। तेज चाल से हाथी जंगल की ओर भागा। पर एक फौजदार शाहकुली खां को अकबर से इनाम की इच्छा थी। उसने भागते हुए हाथी के पीछे अपने घोड़े को तेज चाल से दौड़ा दिया। फलतः हेमचंद्र को बंदी बनाकर, अकबर के सामने प्रस्तुत किया गया। मुगल इतिहासकारों ने अकबर की दयालुता प्रदर्शित करते हुए बताया कि बैराम खा को मारा, पर वास्तविकता यह थी कि 'दयालु' अकबर ने ही अपने प्रधान शत्रु का सिर, धड़ से अलग किया था।

हेमचंद्र ने यह भी सिद्ध कर दिया कि किसी सुल्तान का वशंज तो सुल्तान बनता ही है। इसलिए अकबर ने बादशाहत प्राप्त कर, कोई नई बात नहीं की। प्रशंसनीय बात तो साधारण-पंसारी से भारत का सम्राट बनने की थी। अब समय आ गया है कि घिसे-पिटे मुगल और अंगरेज व्यक्तित्वों व उनकी नीतियों-जैसे विषयों को छोड़कर, हेमचंद्र के व्यक्तित्व व कृतित्व पर ऐतिहासिक शोधकर, नये तथ्य सार संसार के सम्मुख रखे जायें।

—बालाजी सेठ की हवेली,
आजाद चौक, कोटपूतली (राजस्थान)

नयी कृतियां

भारतीय विदेश-नीति : नये दिशा संकेत

लेखक—डॉ. वेदप्रताप वैदिक, प्रकाशक—नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली-२, मूल्य—४० रुपये

भारतीय विदेश-नीति पर अपनी तरह की पहली, इस पुस्तक में डॉ. वैदिक ने, भारतीय विदेश-नीति संबंधी घटनाओं का विचारोत्तेजक विश्लेषण प्रस्तुत कर, सरकारी नीति या रवैयों पर, अपनी दो-टूक राय प्रकट की है। इस पुस्तक में, यों तो जनता सरकार और पार्टी की ढाई साल की विदेश-नीति पर ही 'फोकस' है, लेकिन वैसे लेखक ने अपनी बात को मजबूती से कहने के लिए पिछले तीस साल की नेहरू और इंदिरा कांग्रेस की नीतियों को भी हर जगह सामने रखा है तथा भावी नीति के बारे में अपनी राय भी दी है।

श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने विदेश-मंत्री बनने के बाद, नारा दिया कि विदेश नीति के मामले में इस देश में राष्ट्रीय सहमति रही है। जिसका लेखक ने प्रमाणों के आधार पर खंडन करते हुए यह सिद्ध किया है कि वाजपेयीजी के दावे खोखले रहे हैं।

डा. वैदिक का मत है कि वाजपेयीज का यात्राओं से पड़ोसी देशों में मधुरत का सचार तो हुआ, लेकिन वह मधुरत मात्र मायाजाल बनकर रह गयी। जनत सरकार ने पाकिस्तान, बंगलादेश औ नेपाल के साथ सलाल, फरक्का औ पारगमन की संधियां कीं, लेकिन इ संधियों ने इन तीनों देशों में तानाशाह ताकतों को मजबूत बनाया। जनत पार्टी की विदेश-नीति में इन देशों क जन-आंदोलन की उपेक्षा की गयी, जबकि जनता पार्टी स्वयं 'तानाशाही बनाम लोक-तंत्र' के नारे पर ही सत्तारूढ़ हुई थी।

दक्षिण एशिया में, जिसे डॉ. वैदिक ने 'भारतीय महादेश' कहा है, जनता सरकार द्वारा किसी साझा बाजार, ए साझी संसद आदि की योजना भी नहीं चलायी गयी। दक्षिण-पूर्व एशिया 'आग्नेय एशिया' के प्रति भी नीति उपेक्षा की रही। चीनी हौवा वाजपेयीजी पर सवार था। उन्होंने तिब्बत को बार-बा चीन का अंग बताकर जनता पार्टी के लगभग सभी घटकों की विदेश-नीति को सिर के बल खडा कर दिया था। लेखक ने वाजपेयी की चीन-नीति की कड़ी

आलोचना की है ।

लेखक ने परमाणु नीति के बारे में भी जनता सरकार की दो-मुंही नीति को अनावृत्त किया है। वाजपेयीजी ने पहले तो मोरारजी की तरह परमाणु बम बनाने का एकदम विरोध किया, फिर आखिरी दिनों में मोरारजी के विपरीत, वे बम-लॉबी के प्रवक्ता बन गये । इससे भी ज्यादा गंभीर बात यह हुई कि परमाणु संप्रभुता का दम भरनेवाली मोरारजी सरकार ने रूस के साथ, 'भारी पानी' के एक समझौते पर सन १९७७ में दस्तखत कर दिये, जो मूल रूप से १९७६ में इंदिरा सरकार ने संपन्न किया था। 'भारी पानी' के बदले मोरारजी सरकार ने हमारे परमाणु संयंत्रों पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय निगरानियां स्वीकार कर लीं । जो कि हमारी परमाणु संप्रभुता पर गहरा आघात थीं। इस सारे मामले पर सरकार बराबर परदा डाले रहा, न तो इस पर अखबारों में बहस हुई, और न ही संसद में । लेखक ने इस समझौते के गोपनीय माने जानेवाले, मूल दस्तावेज को प्रकाशित कर, साहस का कार्य किया है।

लेखक ने जनता पार्टी के नेताओं के आत्म-विरोधी और परस्पर-विरोधी बयानों की, पाद-टिप्पणियां देकर आलोचना तो की ही है, साथ-साथ आखिरी दो अध्यायों में विदेश-नीति के बारे में कई महत्त्वपूर्ण एव रचनात्मक सुझाव भी दिये हैं । 'सांस्कृतिक विदेश-नीति' शीर्षक अध्याय में विदेश मंत्रालय से अंगरेजी के रुतबे को खत्म करने की जोरदार वकालत करते हुए बड़े तर्कपूर्ण ढंग से सिद्ध किया है कि अंगरेजी के एकाधिकार ने विदेश मंत्रालय की प्रतिमा पर कुल्हाड़ा चला दिया है। लेखक ने प्रवासी भारतीयों के लिए एक आयोग स्थापित करने का सुझाव भी दिया है।

--डॉ. परिमल कुमारदास

"अजी, गृहिणी हूँ न!
घर-गृहस्थी में चुस्त रहने के लिए आरामदेह कपड़े ही पहनती हूँ!"

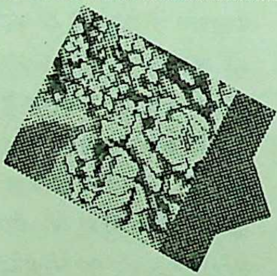

आपके अनुकूल कपड़े,
आपके अनुरूप कपड़े!

मफ़तलाल
फ़ैब्रिक्स

सूटिंग्स, शर्टिंग्स, साड़ियाँ, ड्रेस मटीरियल और डेनिम.

मफ़तलाल इंडस्ट्रीज़ न्यू शॉरॉक मिल्स मफ़तलाल फाइन

MF-18 HIN

दो उपन्यास

क्रांति से पहले

लेखक--राजेंद्रपाल सिंह, मूल्य--३ रुपये, हिंदी प्रचारक संस्थान, पिशाच मोचन, वाराणसी-२२१००१

'क्रांति से पहले' कथाशिल्पी राजेन्द्रपालसिंह की नवीनतम सशक्त औपन्यासिक कृति है। इसे लघु उपन्यास भी कहा जा सकता है, किंतु लघुता केवल आकार-प्रकार में है, कथा में नहीं।

महानगरीय जीवन और उसमें भी विश्वविद्यालय को केंद्र में रखकर कहानी बुनी गयी है। कॉफी हाउस तथाकथित आधुनिकता का प्रतिफलन है, जहां विश्वविद्यालय की राजनीति के सूत्रधार और बौद्धिक कहे जानेवाले तत्त्वों के दांव-पेंचों का खुलकर वर्णन आता है।

अत्यंत व्यंग्यात्मक शैली में लेखक ने युवा-वर्ग की 'क्रांतिदर्शिता' को पकड़ा है और उन चरित्रों का विश्लेषण किया है, जो इसके मसीहा बने फिरते हैं। उपन्यास निश्चय ही पठनीय, मननीय है।

--हीरालाल बाछोतिया

बणी-ठणी

लेखक--ध्यान माखीजा, प्रकाशक--प्रभात प्रकाशन, २०५, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६, पृष्ठ--१४४, मूल्य--२० रुपये

प्रेम-रस में रंगा-पगा एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें किशनगढ़ (राजस्थान) के महाराजकुमार सावंत सिंह के कला-प्रेम की कहानी कही गयी है। सावंत सिंह अपने साहस और वीरता के लिए बाल्यकाल से ही विख्यात थे, लेकिन युवावस्था में पहुंचने पर राजपाट का मोह त्याग स्वयं को कृष्ण और कला के लिए आत्मार्पित कर दिया। कुछ इतिहासकारों के अनुसार वीर सावंतसिंह के भक्त नागरीदास बनने के पीछे गृह-कलह ही मुख्य कारण था जब कि उपन्यास में इस हृदय-परिवर्तन का श्रेय मुगल हरम में अवैध रूप से जन्मी 'बन्नो', जो बाद में 'बणी-ठणी' के नाम से विख्यात हुई, को दिया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में सावंत सिंह और बन्नो के निष्काम -प्रेम की गाथा तत्कालीन राज-परिवारों में चलनेवाले षड़यंत्रों और संघर्षों में गुंथकर पिरोयी गयी है। उपन्यास से हमें तत्कालीन जन-जीवन का भी पता चलता है। उसके साथ ही उपन्यास 'किशनगढ़ की राधा' नाम से आज ख्यात अमूल्य चित्रकृति के चित्रकार निहालचंद की जीवनी पर भी प्रकाश डालता है, उपन्यास की भाषा-शैली प्रवाहमय है!

--प्रभा भारद्वाज

चार कविता संग्रह

नील कंठ बन न सका

लेखक--वेदप्रकाश 'बटुक', प्रकाशक--अलंकार प्रकाशन, पृष्ठ--७२, मूल्य--१० रुपये

कवि वेद प्रकाश 'बटुक' के अमरीका

सबसे कम क़ीमत में
सबसे ज़्यादा सफ़ाई

SWASTIK Detergent Washing Bar
नीली
स्वस्तिक
डिटर्जेण्ट धुलाई की बार
कम से कम दाम
ज़्यादा से ज़्यादा काम
SWASTIK

दूसरी सब डिटर्जेण्ट बार से कहीं
ज़्यादा अच्छी, कहीं ज़्यादा किफ़ायती और
साबुनों से १½ गुना ज़्यादा शक्तिशाली।

नीली 卐 स्वस्तिक
डिटर्जेण्ट धुलाई की बार
एक बार स्वस्तिक बार...फिर हमेशा स्वस्तिक बार

और यूरोप के प्रवासी-जीवन में लिखी गयी कविताएं इस काव्य-संग्रह में संग्रहीत हैं। इन कविताओं में स्वदेश का स्नेह और विदेशी अनुभवों की मौलिकता का प्राधान्य है। यह बटुकजी के कवि-जीवन का प्रथम आयाम है। उनकी कविताओं में भारतीय दर्शन की छाप और अमरीकी जीवन का विद्रोह एक साथ पनपा है—

हर किसी को
इसलिए किया प्यार
कि हममें से कोई था नहीं
ब्रह्मांड
और यूं संपूर्ण के लिए
मैंने चुना अंश अंश
कभी माधुर्य
कभी दंश !

अभिव्यक्ति की दृष्टि से कविताओं में एक तीव्र सम्प्रेषणीयता है, जो कवित्व के पहले आयाम की विशिष्ट उपलब्धि कही जाएगी। उनके सर्जन में शब्दों का जादू, विद्रोह का विस्फोट, इंद्रधनुष की-सी रंगीनी और कहीं-कहीं जीवन के क्षोभ की खिन्नता भी है। 'नीलकंठ' बनने के प्रयास में, जीवन के कटु-तिक्त अनुभवों का विषपान, कवि की सहिष्णुता और अनुभूति की सच्चाई का दर्पण है।

एक बूंद और

लेखक—वेदप्रकाश 'बटुक' प्रकाशक—भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ—१०४, मूल्य—२० रुपये

अनुभूति की तीव्रता और सशक्त अभिव्यक्ति का संप्रेषण अच्छे काव्य की कसौटी हुआ करते हैं। इस दृष्टि से वेद प्रकाश 'बटुक' का काव्य सग्रह 'एक बूंद और' एक प्रौढ़ और सफल कृति है। इसमें कुल मिलाकर छोटी बड़ी १०० कविताए संग्रहीत हैं। इन कविताओं में स्वदेश और विदेश का गहरा संवेदन बोलना है। जहां एक ओर लोक-जीवन का रस है वहीं दूसरी ओर नागरिक जीवन की विचार-प्रवणता और चेतना!

कविताओं में छोटी-छोटी तुकबंदियां पत्युत्पन्नमति, सत्य की सूक्ष्म पकड़ और अदम्य विनोद के भाव हैं। थोड़े में बहुत कुछ कह सकने की क्षमता कवि की अभिव्यक्ति सामर्थ्य का परिचय देती है।

स्वार्थों के तटों को मिलाते रहे
संबंधों के पुल/और प्यार की नदी
अछूती-सी/बहती रही/नीचे से ही!

'एक बूंद और' ऐसी बूंद है, जो एक ही साथ अमृत और तेजाब की अनुभूति देती है, जिसमें दार्शनिक गंभीरता और सहज अभिव्यक्ति दोनों ही एक साथ है—

हिमालय के शिखर को/पता है क्या
कि वह गल रहा/चरणों में
दयनीय अवस्था से/मंदानों की,
सरिता को ज्ञात है क्या/कि बहना ही
उसके लिए/अंत में न रहता है,
और सागर जानता है क्या/कि भरने से पहले
उसका तरल जल भी/गर्व से कठोर था ?

आग जल रही है

रचयिता--बलनील देवम्, प्रकाशक--निस्तंद्र प्रकाशन, पृष्ठ--१२८, मूल्य--२० रुपये

वादों और गुटों की प्रतिबद्धता से मुक्त प्रस्तुत काव्य-संग्रह में कवि ने अपने परिवेश में व्याप्त अस्थिरता और अनैतिकता की भड़कती हुई आग को व्यक्त किया है। अनुभूति की गहनता और संप्रेषण की तीव्रता से भरी छोटी-छोटी भावलहरियां कहीं-कहीं बहुत मर्मस्पर्शी हैं।

अनैतिकता और अनास्था की कटुता से जन्मी ये कविताएं आशा और विश्वास का संबल लिये एक ऊंचे लक्ष्य को पाने के लिए संघर्षरत हैं, यही स्वयं कवि की उपलब्धि भी है। **--विजय श्री**

बदलते भाव : उभरते स्वर

कवि--जगदीश चन्द्र 'जीत', प्रकाशक--श्री शांति-कुंज प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ--४८, मूल्य--६ रुपये

'बदलते भाव : उभरते स्वर' कवि का प्रथम काव्य-संग्रह है। संकलन में संग्रहीत रचनाएं अतीत से वर्तमान और वर्तमान से भविष्य की ओर एक अनुभूतिपरक यात्रा करती हैं, जिसमें परिस्थितियों के कई उतार-चढ़ाव हैं, समस्याओं के रेगिस्तान हैं और अध्यात्म का विराट विस्तार है। रचनाओं का शिल्प एवं कथ्य संतुलित है तथा भाषा सरल एवं प्रवाहमयी है। उल्लेखनीय बात यह है कि इस संकलन की रचनाओं के तेवर इस दशक की रचनाओं की अपेक्षाकृत भिन्न तथा अंतर्मुखी हैं। **--सुरेश नीरव**

विश्व के प्रमुख खेल और खिलाड़ी

लेखक--योगराज थानी, प्रकाशक--राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ--३३७, मूल्य--तीस रुपये

खेल-साहित्य पर हिंदी में शायद यह अपने ढंग की पहली पुस्तक है। इसमें लेखक ने देश-विदेश में खेले जानेवाले विभिन्न खेलों का इतिहास तो दिया ही है, साथ में उन खेलों में कीर्तिमान स्थापित करनेवाले खिलाड़ियों का परिचय व विभिन्न रिकार्डों का लेखा-जोखा भी प्रस्तुत किया है।

इस पुस्तक में पाठकों को अकारादि क्रम से खेलों और उनके खिलाड़ियों का विस्तृत परिचय मिल जाता है। एक तर यह पुस्तक खेल-कोश की भूमिका भी अदा करती है। पुस्तक से हमें भारतीय इतिहास के उन अनेक खिलाड़ियों और पहलवानों के बारे में भी अच्छी जानकारी मिलती है, जिन्होंने अपने समय में खासा नाम कमाया, पर जो अब विस्मृति के गर्भ में खो-से चुके हैं। श्री योगराज थानी एक प्रसिद्ध खेल-समीक्षक हैं और उन्होंने बड़े परिश्रम से यह प्रामाणिक जानकारी जुटायी है।

हिंदी में अच्छे खेल-साहित्य का लगभग अभाव ही है। श्री थानी ने अपनी अनेक पुस्तकों द्वारा इस अभाव को दूर करने का प्रयास किया है। **--धनंजय सिंह**

पतित पावनी गंगा जो शोक बन जाती है

• जगदंबीप्रसाद यादव

मुंगेर जिले का एक छोटा-सा गांव एकाशी, जो गंगा की तराई में बसा है। पांच सौ लोग वहां रहते हैं। बूढ़े कम, जवान अधिक, पर उससे भी अधिक किशोर और बच्चे। यूं तो गांव गरीब है, किंतु अन्य गांवों के मुकाबले सुखी, संपन्न भी कहा जा सकता है। गांव में किसानों की संख्या अधिक होते हुए भी, नौकरी करनेवालों की संख्या ही वहां अधिक है। यहां के लोग गांव से लेकर दिल्ली तक रहते हैं। गांव में गांव का प्रभाव ज्यों का त्यों है, जब कि यह गांव शहर के नजदीक बसा है।

जब श्रावण और भादों में बरसात का समय आता है और बाढ़ तथा कटाव प्रारंभ होने लगते हैं, तब सभी लोग सोचने लगते हैं कि अब दियारे का वास छोड़कर करारी (जहां गंगा का काट नहीं होता) में बसा जाए। किंतु, बाढ़ समाप्त होते-होते सब लोग घर-गृहस्थी में लग जाते हैं और इसको भूल जाते हैं। ऐसा सदियों से होता आया है। अब ऐसा लगता है कि कटाव इस बार जब गांव को काट देगा, तब लोग दियारे के पवित्र वास को प्रणाम कर करारी में अवश्य बस जाएंगे।

सोना उगलती मिट्टी

गंगा की तराई के वास को देखकर भक्त स्वयं को धन्य-धन्य मानते हैं। लेखक-

कवि यहां के निवासियों के भाग्य की सराहना करते हैं। स्वच्छ-स्वस्थ जलवायु देखकर वहां बस जाने की चाहत हो आना स्वाभाविक ही है। बाढ़ में नावों पर झिझरी (पानी का एक खेल) खेलनेवालों तथा जल-विहार करनेवालों को इन ग्रामवासियों के भाग्य पर ईर्ष्या करनी पड़ती है। वे मन ही मन सोचते हैं, स्वप्न देखते हैं, कि इस पुण्य-सलिला की मिट्टी में खेलने तथा इस पर पैदा होकर जन्म की सार्थकता को सिद्ध करने का अवसर भगवान उन्हें भी दे।

गांव की मिट्टी सोना उगलती है। गांववाले मस्ती के साथ इसका आनंद लेते हैं। सिंचाई की व्यवस्था होते हुए भी ये लोग भदई-फसल आकाश के भरोसे ही लगाते हैं। इसका लाभ गंगा लेती है और भदई की रोटी में छीना-झपटी कर लेती है। बाढ़ का पानी श्रावण के अंत तक घटता है। किसान उरीद (उड़द) भादों के प्रारंभ में लगा देते हैं। गंगा की महिमा का पाठ ग्रामवासी हमेशा करते रहते हैं। गंगा की लायी नयी मिट्टी से, दियारे का खेत बहुत ही उपजाऊ हो जाता है। इसमें रबी की फसल बहुत अधिक पैदा होती है।

दियारे के कास के जंगल में मवेशी-पालन का कार्य बड़ा ही सुविधाजनक है। यह यहां की दूसरी प्रमुख संपत्ति है। आपातकाल में जब गंगा किसी किसान की सारी जमीन काटकर उसे बिना जमीन-वाला बना देती है, तब यही गाय-भैंसें जीवन का मुख्य सहारा बन जाती हैं।

भदई फसल कटने के बाद गंगा की बाढ़ आने से, यहां के निवासी बड़े प्रसन्न होते हैं। गंगा मैया को पियरी चढ़ाते हैं, धागा लुटाते हैं। गीतों के बीच दीपमालिका जल में प्रवाहित करते हैं। यह गंगा, दियारे की जमीन पर नवीन और अच्छी मिट्टी की परतें डालकर, खेत को उर्वरा बना देती है। यह जमीन २०-२५ मन प्रति एकड़, बिना खाद-पानी के भी पैदावार देती है।

दियारे का काला धन

एक कहावत है कि दियारे में जब तीन बार काला धन उपजता है, तब यहां के लोग स्वभावत: धनी हो जाते हैं। वैसे शहर में भी लोग काले धन से मालामाल हो रहे हैं, पर किसान का काला धन दूसरा है। पहला है, गंगा का पानी। नयी तीन-चार फुट मिट्टी जमीन पर पड़ी हो, तो उसमें काली राई (रैंची) पाव-किलो प्रति एकड़ छिड़क देने से, बिना किसी प्रयास के ५ मन से १० मन प्रति एकड़ रैंची पैदा हो जाती है। इसके लिए जुताई, सिंचाई और खाद, किसी की आवश्यकता नहीं होती है। दूसरा काला धन है—उरीद। गंगा का पानी घटता जाता है और किसान ८ किलो से १० किलो उरीद प्रति एकड़ खेत में छिड़ककर बो देते हैं। इसमें भी जुताई, खाद और पानी की कोई लागत नहीं आती, और ८ मन से १२ मन तक

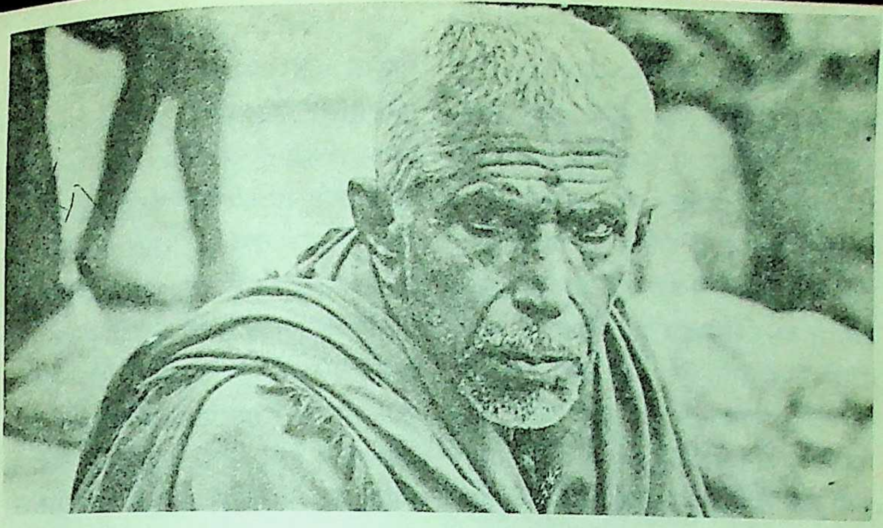

पैदावार किसान ले लेता है।

तीसरा कालाधन है—भैंस । नये वरार में 'रीशा' (जब कास पहले फुलका से जन्मता है, तो वह जब तक छोटा रहता है, उसे रीशा कहते हैं) स्वयं होता है, क्योंकि कांस का फुलका स्वयं हवा के साथ उड़कर मिट्टी पर जन्मता है। यह रीशा पानी ही नहीं पीता, बल्कि गरमी में गंगाजल में घंटों ठंडक का आनंद लेता है। इस प्रकार किसान अपनी ही भैंस से मुफ्त में ही अधिक दुग्ध कमाता है। अतः रैंची, उरीद और भैंस बिना लागत के पैदावार दे, तो कोई किसान धनी क्यों नहीं हो? पर ऐसा केवल विरले किसानों के साथ ही होता है। वह भी भाग्य के उदय होने तथा सही संयोग बैठने पर किंतु ऐसा संयोग कभी-कभी ही बैठता है।

आधुनिकता केवल फैशन

गंगा के दियारे में आधुनिकता नाम की चीज ने प्रवेश तो किया है, पर केवल फैशन के रूप में तथा जहां-तहां नलकूप और बिजली के रूप में भी। किसान घरों में भी बिजली का आनंद ले सकें, यह अभी संभव नहीं हुआ है। दियारे में मारपीट की पुरानी परंपरा है। पहले लाठी अधिक और भाले का प्रचलन कम था। अब आधुनिक-युग के आग्नेय-अस्त्रों को, गलत लोगों ने तेजी से अपना लिया है। जिस कारण यहां का वातावरण भय-ग्रस्त बन गया है। गलत ढंग से खेत की फसलें उखाड़ी जाती हैं तथा पकने पर काटी जाती हैं। खलियान भी लूटे जाते हैं। मवेशी भी चोरी जाते हैं। अब धीरे-धीरे चोरी के स्थान पर डकैतियों का प्रकोप बढ़ गया है। अंधेरी रात्रि, दियारे के गांव और थोड़े से संपन्न किसानों के लिए, काल-रात्रि के रूप में आती है। वैसे गांव का कृष्ण-पक्ष, काल-पक्ष के रूप में पहरेदारी में व्यतीत होता है।

दियारे के क्षेत्र में सड़कों का अभाव

है, और अभी बना रहेगा। यह पीड़ा बरसात में उस समय अपार संकट का कारण होती है, जब घर में कोई गंभीर वीमार हो जाए और डॉक्टर को बुलाना हो। यह एक प्रकार से कठिन हो जाता है। ऐसा मात्र दियारे में ही नहीं, बहुत से दूसरे ग्रामीण अंचलों की भी यही स्थिति है, जहां सड़कें नहीं बनी हैं। अभी तक सरकार की कोई सक्षम-सुविचारित योजना इस दियारे के क्षेत्र के लिए नहीं है। वैज्ञानिक अभी तक ठीक-ठीक अध्ययन भी नहीं कर पाये हैं, योजना कहां से बने ?

दियारे में अधिकांश पिछड़े लोगों का निवास है। यहां की गरीबी तथा अनिश्चित जीवन का रसास्वादन, भगवान की मरजी जानकर, कौन दूसरा समाधान के लिए कष्ट उठाने का प्रयास करेगा ! अब गांव-गांव प्राथमिक पाठशालाएं हैं, छात्र हैं, पर बिंदा दियारा, जो ८४ हजार एकड़ रकबे का क्षेत्र है, में एक भी उच्च विद्यालय नहीं है। शिक्षा का स्तर गिरा हुआ, प्रतिशत भी बहुत कम। यहां अब पढ़ने की ललक तो है, पर आर्थिक बेबसी आगे नहीं बढ़ने देती है।

एकाशी में पिछड़े लोगों की संख्या कम है। अतः अन्य ग्रामों के मुकाबले यहां शिक्षा-प्रतिशत अधिक है। फलतः नौकरी करनेवाले भी अधिक हैं। आर्थिक स्थिति यहां के लोगों की अच्छी नहीं, तो बुरी भी नहीं कही जा सकती। दियारा से एक-डेढ़ फर्लांग पर लोक निर्माण-विभाग द्वारा निर्मित एक सड़क है। यह दूरी भी बरसात में एक अच्छी दूरी में परिवर्तित हो जाती है। जब गांव और सड़क के बीच नदी अपना विशाल रूप धारण कर लेती है, तब नाव ही आवागमन के लिए उपलब्ध रह जाती है। यहां आधे लोगों के मकान फूस के बदले ईंटों के ही बने हैं। महिलाओं की सुख-सुविधा का, चाहकर और सामर्थ्य रखकर भी, अभाव है। गोबर गैस-प्लांट गांव में पहुंच चुका है। संडास भी कई बने हैं, पर अधिकांश महिलाओं को गढ्ढों का ही सहारा लेना पड़ता है। जलावन की कमी तो मां-बहनों को अपार कष्ट देती है, जो बरसात में और बढ़ जाती है। यदि जांच-पड़ताल ठीक से हो, तो सर्वेक्षण से पता चलेगा कि महिलाओं के ७५% रोगों का कारण संडासों का नहीं रहना तथा जलावन का अभाव है।

श्रावण-भादों की बरसात की भयंकरता का अनुभव और अंदाज, यहां रहकर ही किया जा सकता है। आसमान में बादल छा जाते हैं और पानी गांव के चारों ओर भरा पड़ा रहता है। हवा का झोंका धीरे-धीरे बढ़ता है। तरंग का रूप भी विशालता में बढ़ता जाता है। हवा आंधी का रूप धारण कर लेती है। तरंग समुद्र की लहर का रूप धारण कर लेती है, जो भीषण आवाज के साथ मकान से टकराने लगती है। हर व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार बचाव का पहले से ही प्रयास करता है। पर जहां आगे सीमेंटवाली

दीवार ही नहीं है, उसे यह गंगा की उत्ताल तरंगें तहस-नहस कर देती हैं। पूर्वी भाग के मकान एक छोर से दूसरे छोर तक तरंगों द्वारा धराशायी हो जाते हैं। एक घंटे में यह तूफान गांव के पूरबी भाग को वीरान बना देता है। कई पक्के मकानों की दीवारें भी इसकी शिकार हुई हैं।

तूफान जब अपनी गति पकड़ लेता है, तब लोग भगवान का नाम स्मरण करने लगते हैं क्योंकि इसके सिवा कोई बल या युक्ति उस समय काम नहीं देती है। मिट्टी जो ऊंचा करने के लिए भरी जाती है, वह भी काट दी जाती है। यह दृश्य कभी-कभी आतंक पैदा कर देता है। यह ठीक है कि फूस का घर 'बाढ़-प्रूफ' होता है, 'तरंग-प्रूफ' नहीं। अधिक बाढ़ होने से पानी घरों में प्रवेश कर जाता है। घरवाले अपने अनाज के रखनेवाली मिट्टी की कोठी को फोड़कर, ऊंचा स्थान बनाकर उस पर अपना खाना पकाते हैं। घर में ही छोटा-सा मचान बनाकर रहते हैं, ताकि यदि पानी छप्पर तक भी आ जाए, तो भी चार-छह घंटे लोग छप्पर पर ही बैठकर जान बचा सकते हैं। कभी-कभी तो कटाव में एकाएक घर गंगा में बहने लगता है। पानी का फैलाव तैरने लायक, सभी जगह हो जाता है। नाव नहीं रहती तो उस बहते घर पर ही लोग चढ़कर अपनी जान बचाते हैं। उजड़ने के बाद लोग दूसरी जगह बसते हैं। मैं स्वयं गांव के दो कटान देख चुका हूं। गंगाजी ने तीसरा कटान

सीपिकाएं

नदी (दो संदर्भ)

तुम्हारी मांग में
सिंदूर देखकर लगा
कि जैसे
किसी सूनी नदी के छोर पर
सूर्योदय हो गया हो . . .

हमारे गांव में
आइने नहीं मिलते
लोगों को आइने की
आवश्यकता ही कभी महसूस नहीं हुई
क्योंकि गांव के बीचोबीच
एक नदी बहती थी . . .

—डा० आनन्द अस्थाना

आप ही ने !

आप ही ने तो
बारूद बोया है जमीन में
अब हमसे पूछते हैं
कोढ़ कैसे हुआ आकाश को ?

—अम्बिका दत्त

भी दिखाने का रास्ता पकड़ लिया है।

गंगा पर पुल बनते हैं। बैराज और बांध भी बनते हैं। किंतु, आज तक न किसी वैज्ञानिक ने और न किसी सरकार ने यह विचार कर देखा है कि इसका प्रतिफल दियारे के वासी पर या जमीन पर क्या पड़ता है? फरक्का बैराज बनने के बाद से हमारे यहां अब जब भी बाढ़ आती है, तब असाधारण बाढ़ ही आती है। जो बाढ़ कभी दस-बीस वर्ष में आती थी, वह अब आम बात हो गयी है। 'मोशम पुल' के कारण गंगा नदी के कटाव में तीव्रता आयी है। इस पर कभी कोई सोच-विचार करने के लिए तैयार है? पानसी रेल-स्टेशन या लोक-निर्माण का पथ कटने लगता है, तो सरकार द्वारा करोड़ों रुपये खर्च कर, सार्वजनिक धन को लुटाकर उसे बचाने की कोशिश की जाती है। लोग देख-देखकर कहते हैं कि यहां तो लूट में छूट है। अगर यह भरोसा नहीं हो तो बड़ी आसानी से, इस कार्य में लगे अधिकारी और ठेकेदार की माली हालत को देखा जा सकता है।

भारत 'गांव' में बसता है, वहीं उसकी आत्मा है। कवि-कोविद जहां वसंत ऋतु में पहुंचकर, कोकिला के स्वर में गान लिख देते हैं। अगर वे यहां के लोगों के दु:ख-दर्द को देखते और उस पर लिखते, तो रोदन भी गान का सृजन कर देते, तब सरकार इस ओर देखती तो!

पूज्य सलिला गंगा को भगीरथ प्रयास करके राजा सगर के पुत्रों का उद्धार करने के लिए लाये। फिर जाह्नवी ऋषि ने इसके प्रखर एवं भयंकर रूप को देखकर इसे नियंत्रित किया था। आज भी पतित-पावनी गंगा, 'भोला' के लाखों भक्तों को अपना जल-प्रदान करती है। पर अपनी बाढ़ और कटाव से उसी सगर के पुत्रों को, जिनको गंगा के किनारे बसना रास आ गया है, तंग करती है। कभी-कभी उजाड़ देती है, शोक का वातावरण बना देती है। पढ़ता था, 'हो ह्वांगहो' चीन का शोक है—पर अब वह वरदान बन गयी। 'गंगा' जो वरदान बनकर अवतरित हुई, वही कभी-कभी शोक बन जाती है। पता नहीं, 'वरदान' में बदलने की योजना कब बने?

—एकाशी, बरियारपुर, मुंगेर

ब्रिटेन के लिंकनशायर के किसान सैमुअल जेसप ने अपने जीवन के आखिरी इक्कीस वर्षों में दवा की २२६९३४ गोलियां खायीं और ४० हजार बोतल दवाइयां पी डालीं। उसका जन्म १७५२ में हुआ था। वह आजीवन अविवाहित रहा और ज्यादातर वक्त अपनी तंदुरुस्ती का ख्याल रखने में खर्च करता। सन १८१४ में सालभर उसने प्रतिदिन १४१ के औसत से ५१५९० गोलियां खायीं। उसकी मौत ६५ साल की आयु में हुई।

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

गलत भावना

'सूरज' प्रतापगढ़ी, दियावां : स्नातक कक्षा में अध्ययनरत २१ वर्षीय युवक हूं। संगीत, कला और साहित्य के प्रति मेरी विशेष रुचि है। अब तक जीवन मौज-मस्ती में बीता। एक बच्ची का पिता भी बन गया हूं। रात में जब पत्नी व बच्ची सहित बिस्तर पर लेटता हूं, तब निद्रामग्न बच्ची की नाक की तेज घरघराहट से घुटन एवं उकताहट महसूस करता हूं। कभी-कभी इच्छा होती है कि बच्ची की नाक बंदकर दूं, या जोर से चिल्ला पड़ूं। इस विक्षिप्तता में मैं कान भी बंद कर लेता हूं। ऐसा तभी होता है, जब मैं चिंतन की अवस्था में रहता हूं। इन परिस्थितियों में प्रायः मुझे मानसिक संतुलन खोने का भय रहता है।

मनोविज्ञान की दृष्टि में आप भावुक व्यक्ति हैं, इसीलिए आप कल्पना के सागर में गोते मारते रहते हैं। बच्ची के पिता बनने से पूर्व आप अपने ही लिए जीते रहे। अब, विवाह व संतान-उत्पत्ति के बाद आपको अपनी संपूर्ण दिनचर्या बदलनी होगी। इसका आभास आप पत्र के माध्यम से दे ही रहे हैं। बच्ची इसी मानसिक द्वंद्व का प्रतीक है। इसीलिए आपके मन में उसके लिए गलत भावनाएं उमड़ रही हैं। आपको इस बात का दृढ़ अहसास हो जाना चाहिए कि आप अपने लिए ही नहीं, वरन पत्नी व बच्ची के लिए भी जी रहे हैं। इस सोच के बाद भी मनःस्थिति वैसी ही रही, तो आप मनो-चिकित्सक की राय लें।

चोट का असर कितना

क. ख. ग., गंगानगर : मैं २२ वर्ष का बेरोजगार युवक हूं। यद्यपि मैंने बी. एस-सी. कर ली है, परंतु ज्ञान के मामले में एकदम शून्य हूं। १०–१२ वर्ष पूर्व काफी ऊंचे कमरे की छत से गिरा हूं, पर उस समय न शरीर के किसी हिस्से से रक्त निकला, और न ही कोई चोट आयी; बेहोश अवश्य हुआ था। डॉक्टर साहब ! क्या सिर की चोट का दिमाग या आंखों से कोई संबंध होता है क्योंकि अब मुझे कुछ भी याद नहीं हो रहा है तथा पढ़ते वक्त आंखों की पुतलियां पूर्णतया ऊपर उठ जाती हैं। यदि ऐसा न करूं, तो मुझसे पढ़ा ही नहीं जाता। कृपया कोई उपाय बतायें।

सिर की चोट का संबंध स्मरण-शक्ति से तो अवश्य है, लेकिन आपकी दूसरी

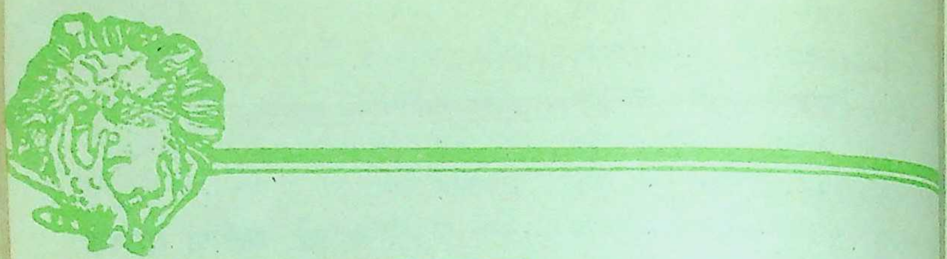

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। ——संपादक

तकलीफें मानसिक तनाव से हैं। तनाव का एक कारण कमजोर याददाश्त भी है। इसके बावजूद भी आप पढ़ाई करना चाहते हैं। अत्यधिक मानसिक तनाव में भी एकाग्रचित्तता तथा स्मरण-शक्ति पर असर पड़ता है। इस प्रकार यह एक दुष्चक्र बन जाता है, १० वर्ष पहले की चोट का असर कितना है—यह जानने के लिए आप न्यूरो सर्जन से मिलें, ताकि आपकी शंकाओं का निराकरण हो सके।

यह कौन-सी बीमारी है

रामलाल शर्मा, निवाई : मैं २५ वर्षीय युवक हूं। कभी-कभी हृदय की धड़कन बहुत तेज हो जाती है और कभी एकदम कम, फिर पसीने से तरबतर हो जाता हूं, सिर इससे चकराने लगता है। अजनबी से बोलते समय या विरोधी के प्रति विरोध प्रकट करते समय शरीर में कंपकंपी, हकलाहट के साथ सांस भी फूलने लगती है। कभी-कभी मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि बस अब थोड़ी-सी जिंदगी और है। चित्त एकाग्रता में कठिनाई और नींद अस्त-व्यस्त रहती है। किसी बीमार आदमी या दुर्घटना को देख-दिल की धड़कन तीव्र हो जाती है। दिल के दौरे का डर घर कर गया है। कई बार हृदय-विशेषज्ञ को दिखा चुका हूं——इलेक्ट्रो कार्डियोग्राम (ई. सी. जी.) स्थिति को साधारण बताता है। डॉक्टर साहब! यह कौन-सी बीमारी है जो ग्राफ पर भी नहीं आती?

आपकी बीमारी दिल से संबंधित कदापि नहीं, परंतु मस्तिष्क (मन) से संबंधित है। इसे हम 'एनेक्सिटि स्टेट एंड कार्डिक न्यूरोसिस' कहते हैं। ई. सी. जी. सही है, इसलिए दिल की बीमारी नहीं है। मेरे विचार में आपको आगे चलकर शायद ही दिल की बीमारी हो।

आपकी बीमारी के सभी लक्षण चिंताजनक स्थिति की वजह से हैं। घबराइए नहीं, इस स्थिति में आप मृत्यु की कगार पर कतई नहीं हैं। आप स्वयं अपने को सुधार सकते हैं; पहले आप घर पर दब्बू बनकर न बैठें, संकोची स्वभाव अन्ध

नहीं, इसी से आपके मन में 'डर', घर कर गया है। दिल का दौरा आपको नहीं पड़ सकता है। अपना मेलजोल स्वस्थ लोगों से रखें। उन्हें अपनी अस्वस्थता के बारे मे न बतायें और न पूछने दें।

धीरे-धीरे दबंगता से अपने विचार प्रकट करना सीखें, किसी आदर्श वक्ता को अपना प्रेरणा-स्तंभ बनायें।

चिंताजनक स्थिति को दवा-सेवन दूर किया जा सकता है; पर दवाओं व प्रयोग सीमित रखें, इसके आदी म बनिए। शादी अभी मत कीजिए। ज आप में आत्म-विश्वास पैदा हो जाए, त ही आगे कदम रखें।

शारीरिक विकास !

क. ख. ग., जबलपुर : मैं १७ वर्षीय ब एस-सी. द्वितीय वर्ष की छात्रा हूं, पर म सीने का विकास नहीं हो पाया, जिस मन में हीन-भावनाएं घर कर गयी दूसरों से बात करने में भी झिझक लग है, कृपया कोई घरेलू उपचार बतायें।

घरेलू युक्तियां हैं—मालिश व क रत, यह किसी भी 'ब्यूटी क्लिनिक' महिलाओं की पत्रिका से आप जान सक हैं। आप 'पैडेड ब्रा' का भी प्रयोग सकती हैं, मन में तनिक भी हीन-भाव न लायें। शहर में बहुत-सी महिलाएं इसी प्रकार की 'ब्रा' पहनती हैं।

यदि हो सके, तो आप डॉक्टरी जांच करायें, इससे यह पता आपको हो जाए कि कहीं 'हारमोन' की कमी तो नहीं है

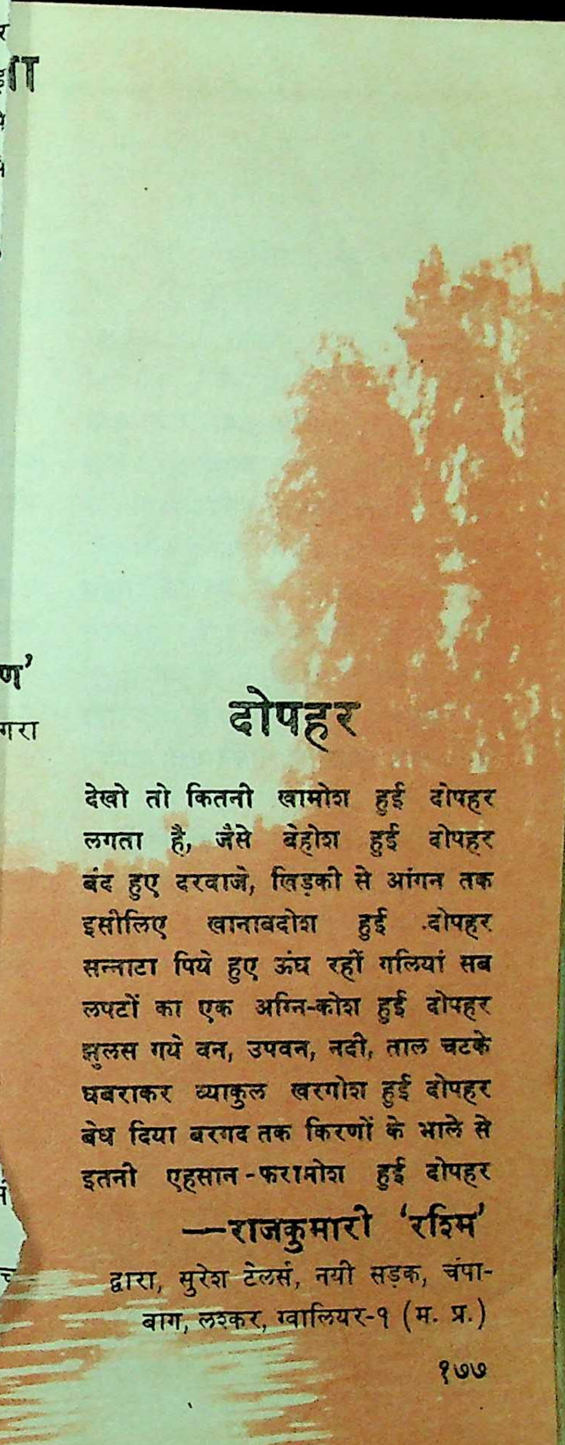

दोपहर

देखो तो कितनी खामोश हुई दोपहर
लगता है, जैसे बेहोश हुई दोपहर
बंद हुए दरवाजे, खिड़की से आंगन तक
इसीलिए खानाबदोश हुई दोपहर
सन्नाटा पिये हुए ऊंघ रहीं गलियां सब
लपटों का एक अग्नि-कोश हुई दोपहर
झुलस गये वन, उपवन, नदी, ताल चटके
घबराकर व्याकुल खरगोश हुई दोपहर
बेध दिया बरगद तक किरणों के भाले से
इतनी एहसान-फरामोश हुई दोपहर

—राजकुमारी 'रश्मि'

द्वारा, सुरेश टेलर्स, नयी सड़क, चंपा-
बाग, लश्कर, ग्वालियर-१ (म. प्र.)

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

तकलीफें मानसिक तनाव से हैं। तनाव का एक कारण कमजोर याददाश्त भी है। इसके बावजूद भी आप पढ़ाई करना चाहते हैं। अत्यधिक मानसिक तनाव में भी एकाग्रचित्तता तथा स्मरण-शक्ति पर असर पड़ता है। इस प्रकार यह एक दुष्चक्र बन जाता है, १० वर्ष पहले की चोट का असर कितना है—यह जानने के लिए आप न्यूरो सर्जन से मिलें, ताकि आपकी शंकाओं का निराकरण हो सके।

यह कौन-सी बीमारी है

रामलाल शर्मा, निवाई : मैं २५ वर्षीय युवक हूं। कभी-कभी हृदय की धड़कन बहुत तेज हो जाती है और कभी एकदम कम, फिर पसीने से तरबतर हो जाता हूं, सिर इससे चकराने लगता है। अजनबी से बोलते समय या विरोधी के प्रति विरोध प्रकट करते समय शरीर में कंपकंपी, हकलाहट के साथ सांस भी फूलने लगती है।

है कि
चित्त
व्यस्
या
हो
गया
चुका
जी.)
डॉक्ट
जो ग
क.दा
संबंधि
कार्डि
सही
है। मे
शायद
चित
रा
क
को
दब्बू ब

ह कौन-कौन है
किया कभी हिसाब भी
न पे किसलिए मिटे
दिया कभी जवाब भी
दूसरों की मौत पर
तुम्हीं जशन मना रहे
न देश की कसक
कि देश को मिटा रहे
आग स्वार्थ की भड़क
सभी सपन जला रही
का रंग उड़ रहा
घटा-सी रात छा रही

—डॉ. एम. एल. मधु

लोमोनोसोवस्की प्रौस्पैक्ट, डौम-१
फ्लैट-३६०, मास्को-११७

सूरज
सनस
सांध्य
सब
सँकड़
सारी
सतर्क
सो
सुप
सुबह
समा
'सूरज
जन

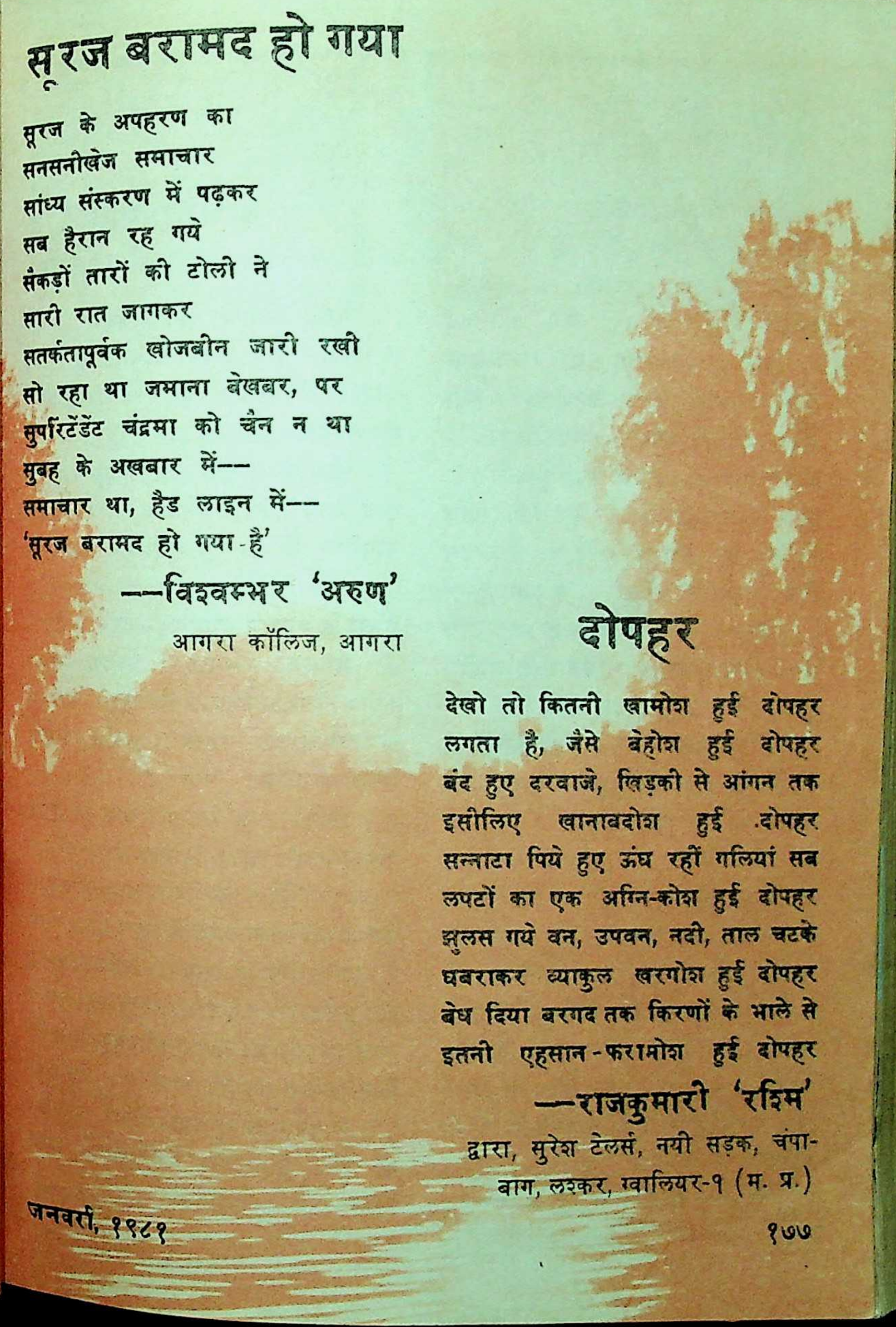

सूरज बरामद हो गया

सूरज के अपहरण का
सनसनीखेज समाचार
सांध्य संस्करण में पढ़कर
सब हैरान रह गये
सैकड़ों तारों की टोली ने
सारी रात जागकर
सतर्कतापूर्वक खोजबीन जारी रखी
सो रहा था जमाना बेखबर, पर
सुपरिंटेंडेंट चंद्रमा को चैन न था
सुबह के अखबार में---
समाचार था, हैड लाइन में---
'सूरज बरामद हो गया-है'

---विश्वम्भर 'अरुण'

आगरा कॉलिज, आगरा

दोपहर

देखो तो कितनी खामोश हुई दोपहर
लगता है, जैसे बेहोश हुई दोपहर
बंद हुए दरवाजे, खिड़की से आंगन तक
इसीलिए खानाबदोश हुई दोपहर
सन्नाटा पिये हुए ऊंघ रहीं गलियां सब
लपटों का एक अग्नि-कोश हुई दोपहर
झुलस गये वन, उपवन, नदी, ताल चटके
घबराकर व्याकुल खरगोश हुई दोपहर
बेध दिया बरगद तक किरणों के भाले से
इतनी एहसान-फरामोश हुई दोपहर

—राजकुमारी 'रश्मि'

द्वारा, सुरेश टेलर्स, नयी सड़क, चंपा-
बाग, लश्कर, ग्वालियर-१ (म. प्र.)

एक सांसद पर कितना खर्च?

देश की आधी जनसंख्या गरीबी की सीमा-रेखा के नीचे है और नये आंकड़ों के अनुसार औसत भारतीय की वार्षिक आय ६९० रुपये है। वहीं जन प्रतिनिधि— लोकसभा तथा राज्य-सभा सदस्यों, जिनकी संख्या क्रमशः ५४४ तथा २५० है, की औसत वार्षिक आय ६० हजार और ७० हजार रुपये से अधिक है, स्पष्ट है कि जनता में और उनके प्रतिनिधि की आय में सौगुना अंतर है, और इसे निम्न तथ्यों से परखा जा सकता है—

वेतन : ५०० रुपये प्रति माह तथा ५०० रुपये स्टेशनरी, सचिव भत्ता आदि। कुल मिलाकर एक हजार रुपये।

दैनिक-भत्ता : सत्र में, समितियों की बैठकों में, दौरों में, ड्यूटी पर रहने की अवधि में ५१ रुपये प्रतिदिन।

यात्रा-भत्ता : रेल-पास (समस्त देश की यात्रा के लिए) के अलावा बैठकों अथवा सत्रों में भाग लेने हेतु आने-जाने के लिए एक प्रथम श्रेणी का पति या पत्नी के लिए और द्वितीय श्रेणी का साथ में यात्रा करनेवाले व्यक्ति का किराया, विमान से सफर करने पर सवागुनी राशि, और सड़क द्वारा एक रुपया प्रति किलो मीटर।

● शंकरदयाल सिंह

(भू. पू. संसद-सदस्य)

मध्यवर्ती यात्रा की सुविधाएं: सभा के किसी सत्र के अथवा समिति की किसी बैठक के दौरान की गयी यात्राओं के लिए भी उपर्युक्त सुविधाएं प्राप्त हैं।

फोन की सुविधा : दो निःशुल्क टेलीफोन, एक उसके निवास और दूसरा कार्यालय के लिए। दोनों टेलीफोनों में से प्रत्येक टेलीफोन पर ७५०० स्थानीय कौलों के लिए भुगतान नहीं करना पड़ेगा।

आवास सुविधाएं : प्रत्येक सदस्य को आवास उपलब्ध, जिसका मासिक किराया सामान्य दर से २५ प्रतिशत कम लिया जाता है।

चिकित्सा सुविधा : सदस्य व उसके परिवार को केंद्रीय स्वास्थ्य सेवा योजना के अंतर्गत निःशुल्क चिकित्सा। बाहर से करायी गयी चिकित्सा के लिए प्रथम श्रेणी के अधिकारी के समान चिकित्सा-व्यय का भुगतान। डॉ. राममनोहर लोहिया व आल इंडिया मेडीकल इंस्टीट्यूट में आरक्षित विशेष कक्ष-'वी. आई. पी. कक्ष।'

आयकर की सुविधा : (क). आयकर की दृष्टि से मासिक पारिश्रमिक अन्य

भत्तों से आय' मानी जाती है। परिणाम स्वरूप स्रोत पर कोई आय कर की कटौती नहीं की जाती। दैनिक और यात्रा-भत्तों को आयकर से छूट दी जाती है। (ख). कार्यालय के रख-रखाव पर किये गये व्यय को आयकर संगणना की राशि में से घटाया जाता है, और (ग). जिन मामलों में ऐसा दावा किया जाता है, इनमें बिना किसी जांच के १०० रुपये प्रति माह की न्यूनतम कटौती की अनुमति है। जिन मामलों में १०० रुपये से अधिक व्यय का दावा किया जाए, उनमें वास्तविक व्यय की जो स्वीकार्य रसीदों द्वारा समर्थित हो, सरसरी तौर पर जांच की जा सकती है।

विशेष सुविधाएं : संसद भवन के अंदर ही स्टेट बैंक आफ इंडिया की शाखा, पोस्ट ऑफिस, रेलवे और विमान-बुकिंग, राशन-विभाग, दिल्ली दुग्ध योजना, टी-बोर्ड, काफी-बोर्ड, सड़क-कर आदि के कार्यालय उपलब्ध हैं, जिससे उन्हें कहीं जाना न पड़े, 'क्यू' न लगानी पड़े।

इस प्रकार एक संसद की कुल मासिक आय या बचत।

वेतन और स्टेशनरी	१००० रुपये
बैठकों द्वारा दैनिक भत्ते से	१००० रुपये
यात्रा-भत्ता	५०० रुपये
मकान-किराया (मार्केट रेट के अनुसार)	१००० रुपये
चिकित्सा-सुविधा	५०० रुपये
टेलीफोन सुविधाएं	५०० रुपये
पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं की सुविधा	२५० रुपये
रेलवे पास से बचत	७०० रुपये
योग मासिक	५४५० रुपये
वर्षभर में	६५४०० रुपये

ये हिसाब कम से कम है, इनके अलावा भी विदेश जाने की सुविधा, विदेशी मुद्रा की प्राप्ति, संसद सदस्यता से हटने के बाद पेंशन तथा रौब-दाब और सगे-संबंधियों को भी आगे बढ़ाने के अनेक अवसर। इस प्रकार सही अर्थों में सांसद असामान्य प्राणी है, सामान्य जन-प्रतिनिधि नहीं।

—संपादक, मुक्तकंठ,
डाकबंगला रोड, पटना-१

प्रवेश

इस बार पाठकों से परिचित करा रहे हैं हम, सुरंजन को। इनकी पांचों कविताएं पढ़ने बाद हमें लगा कि इस कवि की अभिव्यक्ति सशक्त है। एक आहत उदासी के बीच से गु रता यह कवि विसंगतियों पर व्यंग्य करता हुआ चलता है और अपना मार्ग प्रशस्त कर में संलग्न दृष्टिगोचर होता है।

यहां प्रस्तुत हैं, इस अग्रगामी युवा कवि की पांच कविताओं में से चुनी हुई तीन रचना

—संपादक

कैक्टस की चुभन

मेरी तलहथियों पर कैक्टस उग आये हैं
शायद इसलिए कि
मेरी सत्तर वर्षीया बुढ़िया दादी मां
बबूल का पेड़ बन गयी है
तीन बेटों के रहते हुए सड़कों पर भीख
मांगती है
अवहेलना और प्रताड़ना सहती है
मुझे तो कैक्टस से प्यार हो गया है
मैं सोचता हूं / कितना अच्छा होता
मेरे स्वर्गीय दादा की अर्जित संपत्ति में
कैक्टस ही कैक्टस उग आते
अब तो मेरी बुढ़िया दादी मां का जर्जर
शरीर . . .
फटी चिथड़ी पैवंद लगी रजाई पर
अनावृत लेटा है
नगर पालिका के स्नान-गृह में
जो वर्षों से उजाड़ पड़ा था
दादी मां ने अपना घर बसा लिया है
अब मेरी तलहथियों पर
कैक्टस की चुभन बढ़ती जा रही है
वह विकराल रूप अख्तियार कर चुकी
मैं अभी से ही दादी मां को जलाने के लि
लकड़ियां इकट्ठा कर रहा हूं
कफन के लिए चंदा मांग रहा हूं
और तलहथियों पे उगे कैक्टस को र
से सींच रहा हूं
ताकि दादी मां की अस्थि को जलाते हु
कैक्टस की चुभन सह सकूं
और घर लौटकर
अपने पूर्वजों से कह सकूं
'दादी मां' कैक्टस की जीत हो गयी

अपनी पहचान

शाम ढलने से पहले
मेरी जिंदगी का सूर्य
ढलने लगा है
मेरा अपना आत्मविश्वास भी
विकसित हो न सका
सोचता हूं
अपनी जिंदगी में नागफनी खिलाऊं
किंतु,
तम के घने वनों में
मैं प्रकाश कहां से बिखराऊं
जब कि मैं शक्तिहीन होता जा रहा हूं
लगता है
अनुपम बनने की चाह में . . . .
मैं अपनी पहचान भी खो दूंगा
मेरी कामना भी विधवा हो जाएगी
और
अंतहीन सायों के पीछे
मेरी जिंदगी
बेशर्म नंगी खाट पर खोजती रहेगी
तलाशती रहेगी
वह सुबह . . . . .
जिसकी तलाश में
मेरा मन
मृगतृष्णा बना

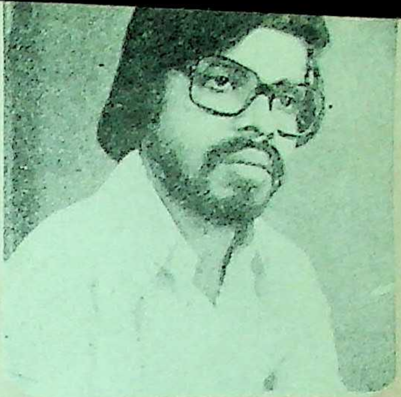

स्वेटर की कीमत

मैंने अपनी जिंदगी को
स्वेटर के फंदों की तरह बुना है
कितना वक्त गुजर गया
मैं ही जानता हूं
फिर भी
मेरा स्वेटर ढीला-ढाला है
शायद
अभी कुछ और वक्त लगेगा
मैं भी हर दिन फंदों-पे-फंदा डालता हूं
कसता हूं, बांधता हूं
जिस दिन
मेरा स्वेटर तैयार होगा,
उस दिन मेरी आकांक्षाएं
जश्न मनाएंगी
फिर मेरे स्वेटर की कीमत
अच्छी दी जाएगी

आत्म-कथ्य

लिखना मेरी मजबूरी है और अगर लेखन का सहारा न होता, तो शायद अब तक जिंदा भी न रहता। अपने-पराये से हमेशा उपेक्षा और तिरस्कार ही मिलता आया है। लेखन किसी के लिए भले ही पलायन हो, लेकिन मेरे लिए वह एक हथियार है।

जन्मकाल : १९५६। शिक्षा सातवें दर्जे तक।

——सुरंजन

चौक टावर के पास, गया, ८२३००१ (बिहार)

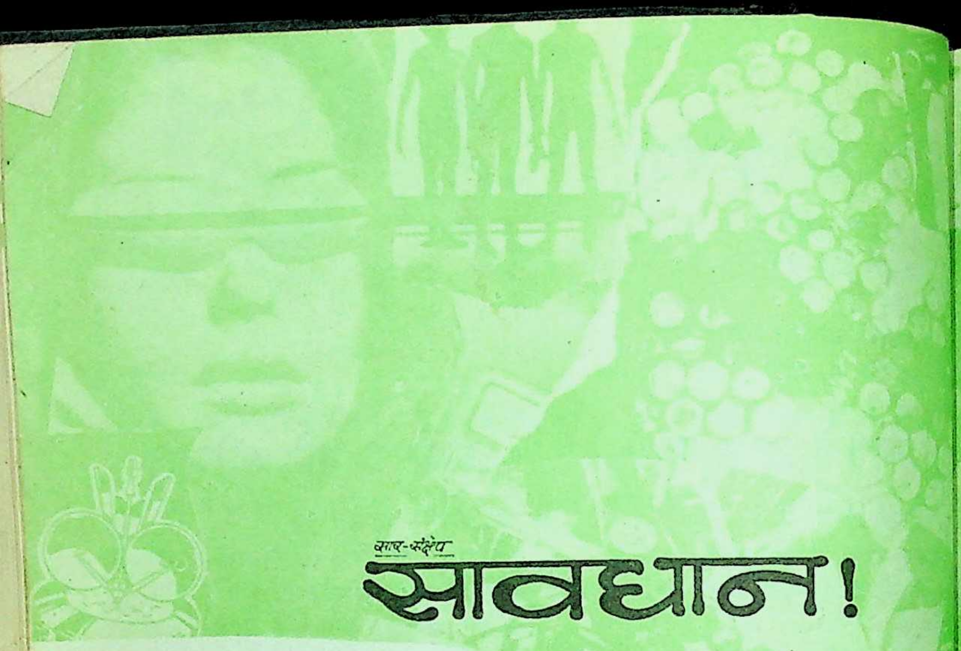

सार-संक्षेप

सावधान!

प्राचीन तथा मध्यकालीन साहित्य में इतिहास और सभ्यता की नयी बलवती लहरों का जिक्र मिलता है। मानव-इतिहास में दस हजार साल पहले कृषि की खोज में पहली लहर स्पष्ट हुई थी। और सत्तरहवीं शती के उत्तरार्ध में औद्योगीकरण के रूप में दूसरी लहर जाहिर हुई। कृषि और उद्योग—इन दोनों क्षेत्रों में क्रांति होने से दो बड़ी लहरें आयीं। पहली लहर को अपना पूरा खेल खेलने में दस हजार साल लगे। अब वह लगभग समाप्त है। हां, उसके कुछ अवशेष जहां-तहां कुछ ऐसे कबीलों में दिखते हैं, जिन तक कृषि अब तक पहुंच नहीं पायी है। दूसरी लहर ने पिछले तीन-सौ सालों से अपना खेल दिखाया है। यूरोप, उत्तरी अमरीका और संसार के कुछ हिस्सों में, जीवन का रूप ही बदल गया है, और जहां अभी वैसा नहीं बदला है, वहां भी औद्योगीकरण का प्रभा दिखायी देता है। दूसरी लहर का जो अभी बाकी है। हम दूसरी औ तीसरी लहरों की संधि पर खड़े हैं दूसरी अभी खत्म नहीं हुई है, और तीस ने अभी जोर नहीं पकड़ा है। जैसा हम देखते हैं, हर आनेवाली लहर की कम होती जाएगी। तीसरी लहर कु दशक ही चल पाएगी।

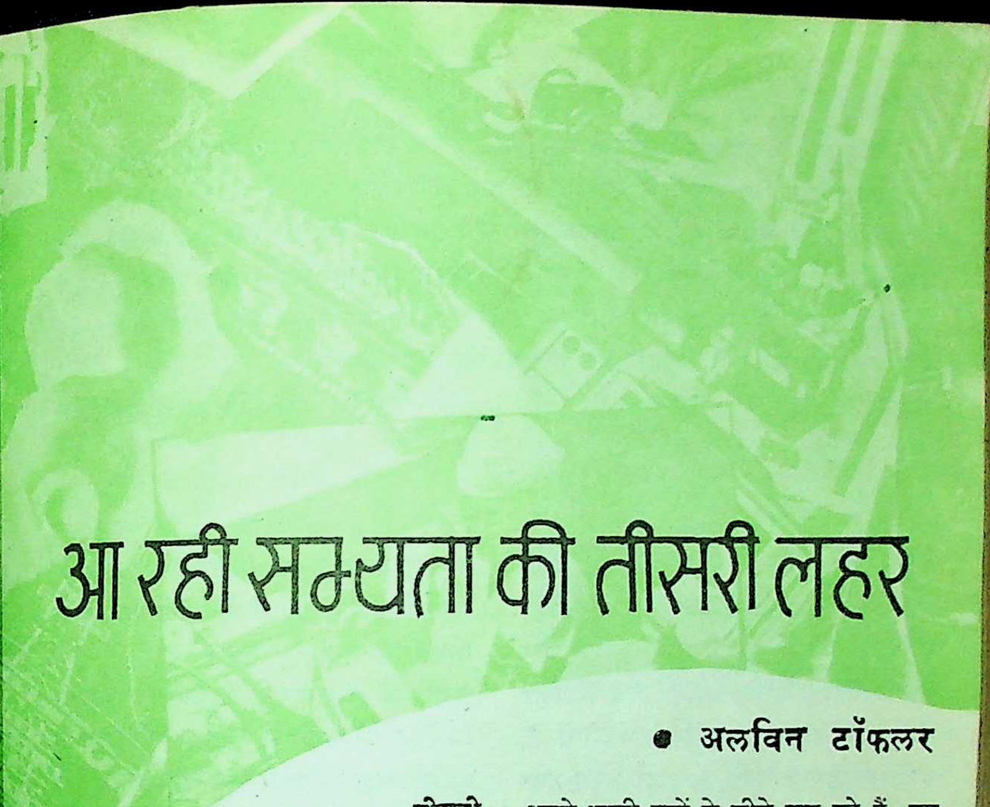

आ रही सभ्यता की तीसरी लहर

• अलविन टॉफलर

तीसरी लहर की पृष्ठभूमि

हमारे बीच तीसरी लहर का नया मानव उठ रहा है। उसकी पृष्ठभूमि क्या है ? दूसरे शब्दों में, हम जो दूसरी लहर के टूटते हुए शिखर पर खड़े हैं, अपने-अपने आस-पास क्या हालात देख रहे हैं? ऐसे समय में, जब खतरनाक गिरोह, निरीह लोगों को अपने यहां जबरदस्ती बंधक रखकर, उनसे मौत के खिलवाड़ करते हैं, तीसरे महायुद्ध की अफवाहों के बीच देश-विदेश की मुद्रा-स्थितियां डांवाडोल हो रही हैं। राजदूतावासों में आग के शोले भड़कते हैं और तूफानी सैनिक अपने भारी बूटों के फीते कस रहे हैं, तब हम अखबारों की सुर्खियों पर भय से नजर गड़ाये रह जाते हैं। सोने का भाव पिछले सब रिकॉर्ड तोड़कर बढ़ रहा है। बैंक कंपकंपी में हैं। बढ़ती हुई महंगाई काबू में नहीं आती। संसार की सभी सरकारों को जैसे लकवा मार गया हो। आम आदमी कहता है—दुनिया पगला गयी है। विशेषज्ञ आंकड़ों के बल-बूते पर बोलता है। ये प्रवृत्तियां दर्शाती हैं कि अंत समय निकट आ गया है।

नयी सभ्यता की करवट

हमारे जीवन-काल में नयी सभ्यता करवट ले रही है—नयी सभ्यता, जो

लगभग एक दशक पूर्व प्रख्यात अमरीकी लेखक टॉफलर ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'द फ्यूचर शॉक' में मनुष्य के भविष्य का अत्यंत निराशाजनक चित्र प्रस्तुत किया था। टॉफलर की भविष्यवाणियां रोमांचक और भयभीत करनेवाली थीं लेकिन अपनी सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'द थर्ड वेव' में टॉफलर ने आनेवाले कल की आशाजनक तस्वीर खींची है। 'कादम्बिनी' के पाठक कुछ वर्षों पूर्व इसी स्तंभ के अंतर्गत 'फ्यूचर शॉक' के अंश पढ़ चुके हैं। यहां प्रस्तुत हैं 'द थर्ड वेव' के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश।

—प्रस्तोता : डॉ. मोतीलाल जोतवाणी

नयी परिवार-पद्धतियों, तेजी से बदल रही कार्य-प्रणालियों, प्रेम के नये तौर-तरीकों आदि में स्पष्ट हो रही है। हम दूसरी लहर की आखिरी पीढ़ी, और तीसरी लहर की पहली पीढ़ी हैं। चूंकि हम दोनों हैं, इसीलिए हम बंटे-बंटे, अध-टूटे और अधबने हैं। जल्दी ही हमारी एक नयी आचार-संहिता होगी, और तीसरी लहर हमें वहां ले जाएगी, जहां ऊर्जा, धन और शक्ति का केंद्रीकरण नहीं होगा। यह नयी सभ्यता नौकरशाही तरीकों को खत्म करेगी। सरकारों को अधिक सरल, अधिक प्रभावकारी और अधिक लोकतंत्रात्मक बनाएगी। यही नहीं, उत्पादक और उपभोक्ता के बीच अब जो एक दरार पड़ गयी है, यह नयी सभ्यता उस दरार को पाट देगी और आगामी कल के उत्भोक्ता ('उत्पादक' का 'उत्' और 'उपभोक्ता' का 'भोक्ता' मिलाकर बना शब्द)—अर्थशास्त्र को जन्म देगी। यह सभ्यता, हमसे समझदार सहायता पाकर, अब तक के संपूर्ण मानव-इतिहास में, पहली वास्तविक मानवीय सभ्यता होगी।

ऊर्जा के परंपरागत साधनों के विकल्प

विगत आधी सदी से, दुनियाभर की ऊर्जा का दो तिहाई हिस्सा, तेल और गैस से पूरा होता आया है। पर्यवेक्षकों और ब्रीफ-केस उठाये घूमनेवाले सरकारी विशेषज्ञों का भी यही मत है, कि चाहे कितने भी तेल-क्षेत्रों की खोज होती रहे, सदा के लिए हम इन साधनों पर निर्भर नहीं रह सकते। तेल-युग तीव्र गति से समाप्त हो रहा है। ईरान, कुवैत, नाइजीरिया, सऊदी अरबिस्तान आदि को इस बात का पता है। इस बीच में कोयला, जिससे दुनियाभर की बाकी एक तिहाई ऊर्जा की पूर्ति होती है, मिलता रहेगा। आखिर में, वह भी नहीं मिल पाएगा। और फिर कोयला चाहे मिले भी, वह मोटरकार की टैंक में तो बैठाया नहीं जा सकता। कोयले

को गैस या द्रवमें बदलने के लिए बड़े-बड़े कारखाने (जिनका कोई भविष्य नहीं है) और बहुत-सारा पानी (जिसकी कृषि में जरूरत है) चाहिए । कारखाने और पानी, बड़े ही महंगे सिद्ध होंगे ।

सौर-ऊर्जा के टावर

लेकिन इससे दिल छोटा करने की जरूरत नहीं है। कुछ ही दशकों के अंदर ऊर्जा अधिकाधिक और सस्ते दामों में सुलभ होगी । अब यह कहना कठिन है कि किन तकनीकों को मिलाकर यह सब संभव होगा। आप देखते हैं, कई स्थानों पर सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करने के प्रयत्न हो रहे हैं । कुछ स्थानों पर धरती के अंदर की गरमी और समुद्र की लहरों से, बिजली पैदा करने की कोशिशें हो रही हैं। 'सदर्न कैलीफोर्निया एडिसन कंपनी' एक ऐसा पावर-टावर बना रही है, जो कंप्यूटर-नियंत्रित आईनों से, सौर-ऊर्जा एकत्र करेगा, तब वह कंपनी अपने ग्राहकों को नियमित रूप से देती रहेगी ।

अंतरिक्ष में प्लेटफार्म होंगे

इसके अतिरिक्त अंतरिक्ष और सागर में हो रहे परीक्षणों से हमारे जीवन को सुख-सुविधामय बनाने की दो अधिक, साधन-श्रृंखलाएं बन जाएंगी । शीघ्र ही महा-अंतरिक्ष शटल-सर्विस शुरू होगी, जिससे धरती और चांद के बीच, सामान और लोग आ-जा सकेंगे । इस सर्विस के लिए बिजली पैदा करने के लिए, अंतरिक्ष-प्लेटफार्म बनाने की योजना पर काम हो रहा है । ऐसे प्लेटफार्म अंतरिक्ष-नगर में होंगे । प्रिंसटन विश्वविद्यालय के भौतिकी-विशेषज्ञ ओ' नील इस संबंध में आम लोगों को शिक्षित कर रहे हैं, कि किस तरह चांद से या अंतरिक्ष में और कहीं से, खनिज पदार्थ प्राप्त कर, अंतरिक्ष में यह नगर बसाया जा सकता है ।

समुद्र में नगर बसेंगे

भुखमरी के संकट से दुनिया को बचाने के लिए समुद्र भी भरसक सहायता करेगा। अब समुद्र में मछली मारने का काम अंट-शंट रूप से होता है । यदि सही ढंग से 'मछली की खेती' की जाए, तो दुनिया को प्रोटीन की कमी न होगी । समुद्र में 'तेल उगाने'

का काम भी हो सकेगा। यही नहीं, उससे कई प्रकार के खनिज पदार्थ—चांदी, सोना और प्लैटीनम ही क्या—कच्चा फास्फेट भी मिलता है। जिससे धरती पर कृषि के लिए उर्वरक या फर्टिलाइजर बनता है। जैसे-जैसे नयी तकनीकों का विकास होगा, हम देखेंगे, कि अंतरिक्ष नगरों की तरह सागर-नगर (पानी में आधे या पूरे अंदर) बसे हुए हैं। ये नये नगर, नये देश बनेंगे जिन्हें आज के विभिन्न देश, राजदूत-कार्य-संबंधी मान्यता प्रदान करेंगे। यह तो बहुत बड़े तकनीक-क्षेत्र का एक छोटा-सा विवरण है। तकनीक-क्षेत्र के अतिरिक्त, सूचना-क्षेत्र में भी अप्रत्याशित प्रगति की पूरी संभावना है।

गुप्तचर—नये युग का नया प्रतीक

पहली लहर के समाज में गांव का एक बच्चा, मुट्ठीभर साधनों—अध्यापक, कुल-गुरु, पंच, जमींदार, पटवारी, मां-बाप और पविार द्वारा अपने जीवन-यथार्थ की संरचना करता था। उनके द्वारा प्रेषित बिंबों से यथार्थ का अपना रूप गढ़ता था। दूसरी लहर के बच्चे के समक्ष, ऐसी हकीकत का निर्माण करने के लिए कई रास्ते खुल गये हैं। वह घर में रेडियो या टेलीवीजन द्वारा, देश-विदेश के लोगों से मिलने लगा है। वह आस-पास की प्रकृति और प्रवृत्ति से ही बिंब-ग्रहण नहीं करता, बल्कि समाचार पत्रों से भी अपना बिंब-संसार विकसित करता रहता है। लेकिन इससे एक बात यह पैदा हो गयी है, कि जन-संचार के इन साधनों की शक्ति, समाज में एक-सा बिंब-विधान स्थापित करने में लगायी जाने लगी है। उदाहरणतः सलीब पर ईसा, लहराते लाल झंडे के नीचे लेनिन, दो उंगलियों से अंगरेजी वर्णमाला का 'वी' (V) बनाते चर्चिल, हवा में स्कर्ट झुलाती मार्लिन मनरो आदि दृश्यबिंब जनसाधारण के मानस में मूर्तियों की तरह प्रतिष्ठित किये जाने लगे। इन दृश्य-बिंबों के अलावा नारों के रूप में कई श्रव्य-बिंब हैं। इस तरह पांचों अहसासों के बिंबों का जंगल बर्पा हो गया। इससे औद्योगिक उत्पादन के ढांचे द्वारा, जनसाधारण के आचरण में वांछित एकरूपता लायी गयी। यहां तक कि पहनने के कपड़े भी, बड़े-बड़े कारखानों में बनने लगे। और लोग उनको जरा-सा बदलकर तन पर लादने लगे। तीसरी लहर के समाज में इस दिशा में तेजी से परिवर्तन आ रहा है। जैसे-जैसे ज्ञान-विज्ञान की नयी सूचनाएं मिलती हैं, हम अपने बिंबों की फाइल को नये सिरे से ठीक करते हैं।

नया आदर्श –००७

अब हमारे मानस में नयी-नयी तस्वीरें उभर रही हैं। दूसरे शब्दों में, ये तस्वीरें अस्थायी हैं। अब ऐसे कैमरे हैं, जो उसी समय चित्र लेते हैं, हर समय बदले हुए चित्र लेते रहते हैं। जीरोक्स पर आप चाहे कितनी ही प्रतिलिपियां कराइए। विचार और विश्वास त्वरा से परिमार्जित और परिवर्द्धित हो रहे हैं। अब लोगों को जन-

संचार साधनों द्वारा उगला हुआ 'सच' ही नहीं चाहिए, उन्हें अपना प्रामाणिक सच भी चाहिए। इससे खास, निजी मालूमात हासिल करने के साधनों का विकास हुआ है। इसीलिए इस युग का सबसे अधिक शक्तिशाली प्रतीक ००७ जासूस है, जो कई प्रकार के सूचना-एकत्रक साधनों से लैस है। यह ००७–गुप्तचर सैकड़ों फिल्मों और जेत्री पुस्तकों का नायक है। अब हमें शास्त्रीय नायक की आवश्यकता नहीं रह गयी है। जहां व्यक्तियों को निजी सूचनाएं चाहिएं, वहां बड़े-बड़े मुल्कों को भी। के० जी० बी० तथा सी० आइ० ए० जैसी कई गुप्तचर-संस्थाएं काम कर रही हैं। बड़े-बड़े मुल्क अपनी इन गुप्तचर संस्थाओं द्वारा दुनिया के चप्पे-चप्पे का नक्शा अपने पास रखे हुए हैं।

नये माध्यमों का सहारा

आम लोग अपनी रुचि की छोटी पत्रिकाएं, अपनी पार्टी के मुख-पत्र और अपनी भलाई के लिए खानगी जासूस (प्राइवेट डिटेक्टिव) आदि का सहारा लेते हैं। यही कारण है कि जन-संख्या में वृद्धि और जन-शिक्षा में प्रसार के बावजूद, जन-संचार के माध्यम बड़े समाचार-पत्रों का उतना प्रचार-प्रसार नहीं हो रहा, जितना कि होना चाहिए। कम खूबसूरत और ज्यादा महंगे होते हुए भी छोटे-छोटे पत्रों की भरमार हो रही है। आज की युवा-पीढ़ी ने कान लगाकर रेडियो सुनने का समय कम कर दिया है। जहां १९६७ में यह पीढ़ी एक दिन में ४.८ घंटे रेडियो सुनती थी, वहां १९७७ में उसने प्रति दिन केवल २.८ घंटे रेडियो सुना। टेलीविजन के भी उन कार्यक्रमों में उसकी दिलचस्पी रही, जो मनोरंजन से वास्ता रखते रहे। आज के युवा लोगों को तो अपने टेपरिकार्डरों और रिकॉर्ड कैसेट-प्लेअरों पर अपनी पसंद के प्रोग्राम चाहिएं। नयी शब्दावली में इसे 'डी—मासिफाइंग दि मीडिया' (संचार-साधनों का वि-जनसमुदायीकरण) कहा जा सकता है।

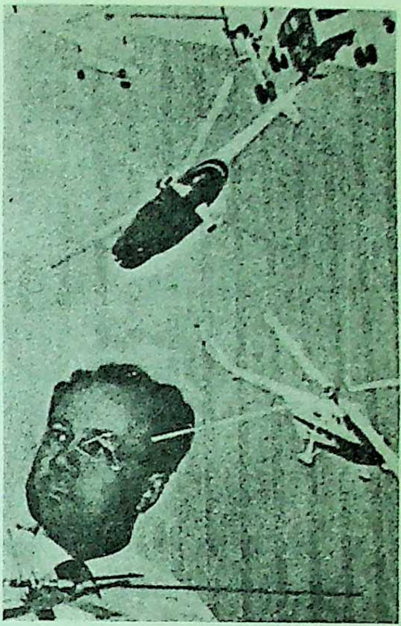

दूसरी लहर के दौरान जन-संचार के साधन एक ही प्रकार का जन-मानस तैयार करने में लगे थे। अब तीसरी लहर के

उत्थान की तैयारी में इस बात के आसार साफ नजर आ रहे हैं कि हम अधिकाधिक 'व्यक्ति' हो रहे हैं और उसके लिए अधिकाधिक साधनों—छोटे या बड़े साधनों—द्वारा सूचनाएं पाना चाहते हैं।

इलेक्ट्रानिक कुटीर

हमारे अधिकाधिक व्यक्तिपरक होने की बात इससे भी स्पष्ट हो जाती है कि अब हम यह नहीं चाहते कि बड़े-बड़े उद्योग-घर हमारे लिए एक-साथ, एक-जैसी ('मास प्रोडक्शन') चीजें बनायें। बड़े-बड़े उद्योग-घरों में कम, अपने इलेक्ट्रानिक कुटीरों में अधिक आस्था है। व्यक्तियों और वर्गों के लिए अलग-अलग पसंद तथा जरूरत के मुताबिक अलग-अलग वस्तुएं—चाहे एक ही वस्तु की अलग-अलग किस्में बनें। इससे यह निश्चित है कि आगामी दशकों में मौजूदा दफ्तर और कारखानों की भूमिकाएं बदल जाएंगी। व्यक्तिगत संचार-साधन मौजूद होने से कारखाने के कई काम घर में ही किये जा सकेंगे। चूंकि कारखाने सर्व साधारण के लिए सर्व साधारण उत्पादन करते हैं, अतः ऐसे उत्पादन को प्रश्रय नहीं मिलेगा, घरों में ही उत्पादन होना शुरू हो जाएगा। इससे घर के बड़े सदस्यों को घर में बच्चों की देखभाल का समय भी मिलेगा। घर के लोग एक दूसरे के पहले से कहीं अधिक निकट आएंगे। आम तौर पर, टाइप का काम करने, आय-व्यय का लेखा-जोखा रखने और चालान आदि भरने के लिए दफ्तर होते हैं। ये सभी काम यदि इलेक्ट्रान कुटीर में कंप्यूटर द्वारा होंगे, तो दफ्तर और उसके लोगों की जरूरत नहीं रहेगी।

संक्षेप में कहा जाए, तीसरी लहर के समाज में अधिक से अधिक कंपनियां वे होंगी, जिन्हें हम 'कंप्यूटर के चौ-गिर्द बैठे हुए कुछ लोग' कह सकते हैं। और ऐसी कंपनियां इन इलेक्ट्रानिक कुटीरों में से चलायी जा सकेंगी। उनके लिए अलग से बड़े-बड़े दफ्तर और कारखाने खोलने की जरूरत नहीं रहेगी। अब जो इतने सारे लोगों को घर से दफ्तर / कारखाने तक या दफ्तर / कारखाने से घर तक यातायात के कई प्रकार के साधन जुटाकर और पैसा खर्च कर (आगे चलकर इन साधनों पर कहीं अधिक खर्च बैठेगा) आना-जाना पड़ता है, उससे वे बच जाएंगे। तीसरी लहर का समाज घर-केंद्रित होगा। इसका मतलब यह हुआ कि तकनीक और सूचना के क्षेत्रों के अतिरिक्त समाज-क्षेत्र में भी कई नये परिवर्तन दृष्टि गोचर होंगे।

समाज-क्षेत्र में परिवर्तन

आजकल दूसरी लहर के उद्योगवाद से दुनियाभर में लाखों परिवार विश्रृंखल हो गये हैं, या हो रहे हैं। हम अभी जब 'परिवार' के बारे में सोचते हैं, तो उस समय हमारे मन में घर के लिए कमाई करनेवाला पति, घर के अंदर घर-गृहस्थी चलानेवाली पत्नी और दो छोटे बच्चों का चित्र उभरता है। यद्यपि परिवार के कई नमूने हैं, तथापि दूसरी लहर के

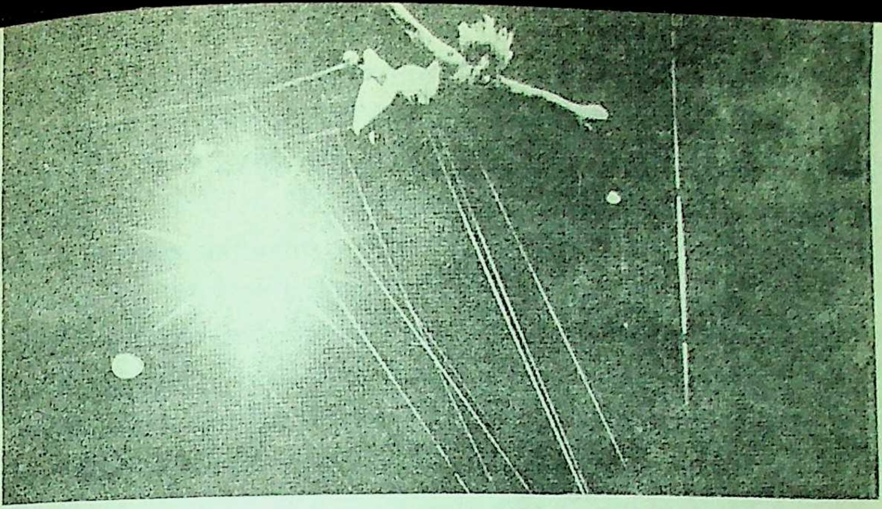

समाज ने इसी उपर्युक्त नमूने को बढ़ावा दिया। लेकिन सवाल उठता है कि इस आधुनिक कल्पना के परिवारों का कितना प्रतिशत ऐसा रह पाया है ?

अमरीका में तो इस परिकल्पना के केवल सात प्रतिशत परिवार रह गये हैं। यदि हम इसमें विस्तारकर ऐसे परिवारों को भी शामिल करें, जिनमें पति-पत्नी दोनों काम करते हैं, या जिनमें दो से कम या अधिक बच्चे हैं, तो दो तिहाई से लेकर तीन चौथाई तक परिवार दूसरी लहर की आदर्श स्थिति से बाहर मिलेंगे।

यही नहीं, वहां समस्त परिवारों का पांचवां हिस्सा अकेले रहनेवाले लोगों का है। अर्थात परिवार में एक ही सदस्य ! दूसरी ओर, ऐसे जोड़ों की तादाद लगातार बढ़ रही है, जो कानूनी पाबंदियों को ताक पर रखकर एक-साथ रहते हैं। इस बीच में, कंनेक्टीकट से लेकर कैलीफोर्निया तक की कचहरियां कानूनी और जायदाद के मामलों से जूझती नजर आ रही हैं। ऐसे जोड़े जब एक दूसरे से 'तलाक' लेते हैं, तब कचहरियों का सिर-दर्द बढ़ जाता है और नये-नये फैसले सामने आते हैं।

संतान रहित जीवन की चाह

एक और भी महत्वपूर्ण परिवर्तन सामने आया है। कई लोग जानबूझकर संतान-विहीन जीवन-यापन करना चाहते हैं। उदाहरणतः, पश्चिमी जरमनी के बॉन शहर में थिओ और ऐगनिज रोल नामक पति-पत्नी रहते हैं। उनकी उम्र ३५ वर्ष के लगभग होगी। दोनों लगभग समृद्ध स्थिति के हैं। उनका अपना छोटा मकान भी है। अवकाश के दिनों में कैलीफोर्निया या दक्षिणी फ्रांस पर्यटनार्थ जाते हैं। यह जानकर कि बच्चों से उनके जीवन का तरीका वैसा नहीं रहेगा, वे घर में बच्चे नहीं चाहते । वे संतान-विहीन, 'स्वतंत्र' जीवन पसंद करते हैं। यह स्थिति पूंजीवादी देशों में ही नहीं है, बल्कि सोवियत

रूस में भी दिखायी देती है।

मां-बाप से अलग बच्चे

यही नहीं, कई परिवार ऐसे हैं, जहां बच्चे माता-पिता में से किसी एक के संरक्षण में पलते हैं, क्योंकि वे दोनों संबंध-विच्छेद के कारण से अथवा किसी अन्य कारण से (जैसे पति-पत्नी दो अलग शहरों में नौकरी करते हैं) अलग रहते हैं। इंगलैंड में प्रति दस परिवारों में से एक परिवार ऐसा है।

परिवार के और भी नमूने हैं—समलैंगिक विवाह के परिवार, बढ़ती उम्र के उन लोगों के परिवार, जो खर्च (कभी-कभी सेक्स भी) बांटने के खयाल से साथ रहते हैं, वगैरह। हाल ही में शिकागो के तीन मनोचिकित्सकों ने काले लोगों की एक निर्धन बस्ती में परिवारों के नमूने इकट्ठे किये। वहां उन्हें वयस्कों में ८६ किस्म के नमूने मिले !

पारिवारिक माधुर्य की वापसी

इससे लगता है कि तीसरी लहर के समाज में पारिवारिक-जीवन में पद्धति-विभिन्नता रहेगी। अलग-अलग लोगों की रुचियों और आवश्यकताओं पर आधारित परिवारों का गठन होगा। तकनीक और सूचना के क्षेत्रों की तरह समुदायिक क्षेत्र में भी विकेंद्रीकरण होगा। लेकिन बड़े पैमाने पर घरों में ही दफ्तर खुल जाने से आधुनिक पारिवारिक-जीवन में स्वस्थ परिवर्तन आने की पूरी संभावना है। पति-

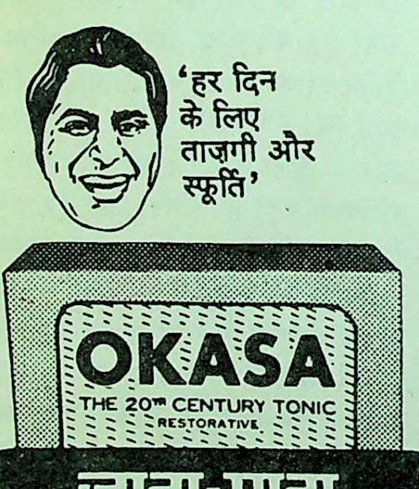

जाना-माना
ताक़तवर, असरदार
ओकासा

आज की भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी में
जो ताक़त आप खोयें...ओकासा की बदौलत
वही ताक़त फिर पा जाएँ!
ओकासा की हर टिकिया में ६ प्रमुख
बायोकेमिकल्स, ६ खनिज पदार्थ,
१० विटामिन और जड़ी-बूटियों का सत्व है.
इसीलिये, दूसरा कोई भी ताक़तवर नुस्खा
इसका मुक़ाबला नहीं कर सकता.
हर दिन जीवन को स्फूर्ति और उत्साह से
भर दीजिए, ओकासा की चाँदी चढ़ी
टॉनिक टिकियाँ लीजिए.
अब नये २० दिवसीय पॅक में
सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहां मिलती हैं.

ओकासा

ओकासा की मुफ़्त पुस्तिका के लिए लिखिए.
OKASA CO. PVT. LTD.
Post Box No. 396, Bombay-400 001.

048

पत्नी एक दूसरे से फिर अच्छी तरह बोलते हुए दिखायी देंगे, दोनों मिलकर बच्चों की देखभाल करेंगे। अब जो रिश्तों में ठंडापन आ गया है, उनमें फिर से गरमाई आएगी।

हमने यह देखा है कि दूसरी लहर के दौरान परिवार ने अपने कई काम अन्य संस्थाओं के हवाले कर दिये हैं—बच्चों की शिक्षा (अगर घर में बच्चे हैं तो) स्कूलों को, बीमारों की सेवा-सुश्रूषा अस्पतालों को, वगैरह। आगामी कल के परिवार अपने ऊपर और भी कई काम—जैसे घर में दफ्तर के काम—ले लेंगे। इससे विवाह-संस्था सुदृढ़ और प्रेम-भावना परिपक्व होगी। तीसरी लहर के दौरान कल जिन इलेक्ट्रानिक कुटीरों का प्रादुर्भाव होगा, उनमें प्रेम की समकालीन रोमानी परिभाषा बदल जाएगी। तब प्रेम में केवल यौन और रोमांस ही नहीं, बल्कि मस्तिष्क के विचारों और पारिवारिक उत्तरदायित्व की ओर सजगता का भाव भी होगा। कल के प्रेम-गीतों में आंखों और लबों से ही प्रेम की नहीं, बल्कि कंप्यूटर पर कुशलता से चलनेवाली उंगलियों से भी प्रेम की बात वर्णित होगी।

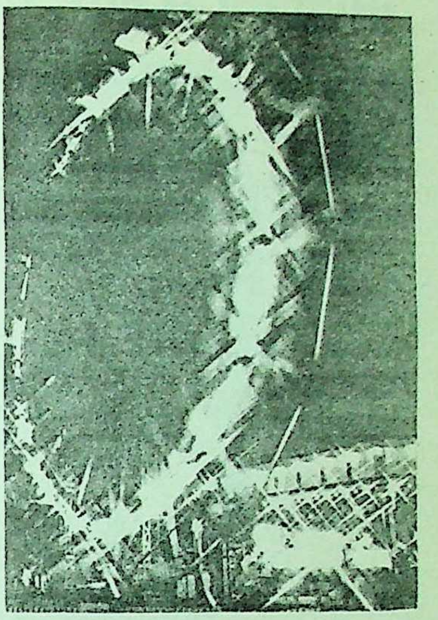

जैसे-जैसे नयी सभ्यता हमारे जीवन में प्रविष्ट होती जा रही है, हमें लग रहा है कि हम अपने ही जीवन-काल में मुद्दों से हट रहे हैं और दूसरी लहर की सभ्यता के अवशेष मात्र रह गये हैं। कल क्षितिज पर जो नया मानव जन्म लेगा, वह पहली बार 'नया' नहीं होगा। इससे पहले कई बार नया मानव पैदा हुआ है। उदाहरणतः निकट भूत में ही, अठारहवीं शती के अंत में, उत्तरी अमरीका में ऐसा नया मानव जन्मा, जिसमें यूरोप निवासियों की कमियां और कमजोरियां नहीं थीं। बीसवीं शती के मध्य जरमनी में, नये मानव के पैदा होने की बात चली थी। रूसी लोग अभी तक 'समाजवादी मानव' के आने का इंतजार कर रहे हैं।

कल का नया मानव कैसा होगा? भविष्य का क्या अलग व्यक्तित्व होगा? जहां ऊर्जा, तकनीक, पारिवारिक-जीवन और नर-नारी-भूमिकाओं में परिवर्तनों की पूरी संभावना है, वहां—जल्दी ही

माथे को सजाए, चेहरे की शोभा बढ़ाए

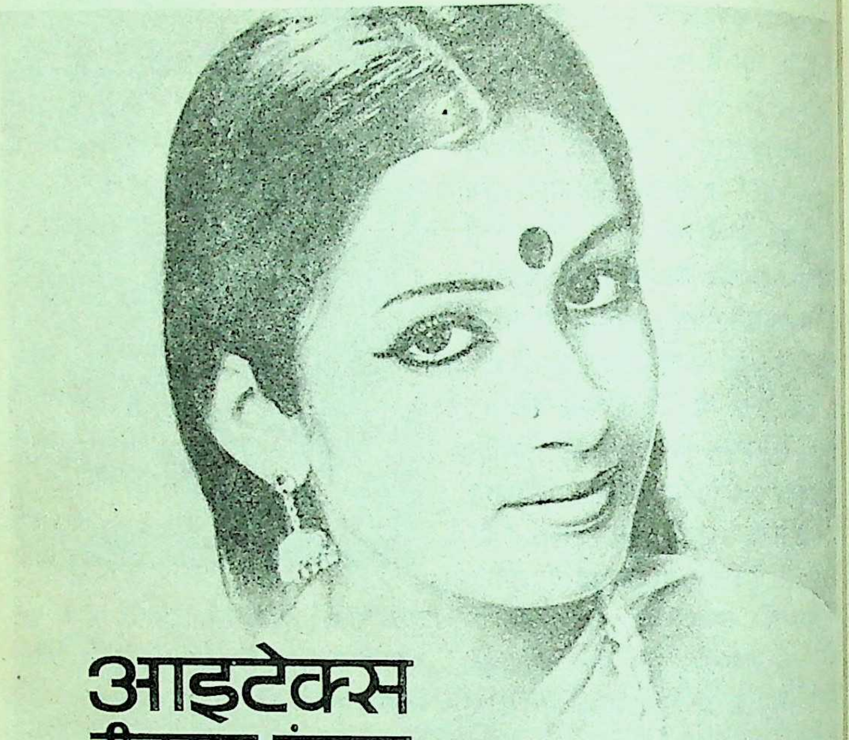

आइटेक्स
डीलक्स कुंकुम Matt Finish

आपकी खूबसूरती में चार चाँद लगाए ... चेहरे की सुन्दरता पर फूलों सा निखार लाए ... आइटेक्स डीलक्स कुंकुम १४ रंगों में आपके मन भाए.
वैज्ञानिक तौर से बने इस कुंकुम का आपकी त्वचा पर कोई बुरा असर नहीं होता.

आइटेक्स ३८ वर्षों से वेहतरीन उत्पादनों के लिए भरोसेमंद नाम

अरविंद लेबोरेटरीज, मद्रास ६०००३३

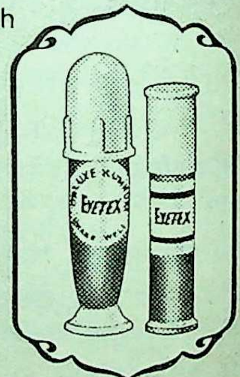
DELUXE KUMKUM
EYETEX
EYETEX

Imageads-AL-1240 Hin.

या जरा देर से—राजनीतिक क्षेत्र में भी क्रांति होने के भरपूर संकेत मिल रहे हैं। तीसरी लहर की सभ्यता दूसरी लहर की सभ्यता के पुराने राजनीतिक ढांचे पर नहीं चल सकती। आज हम इस या उस सरकार का गिरना या ह्रास-ग्रस्त होना ही नहीं देख रहे, बल्कि जहां कहीं लोकतांत्रिक प्रणाली की सरकारें हैं, उनमें भी गिरावट के आसार पा रहे हैं। मतदाताओं को अपनी-अपनी सरकारों में विश्वास नहीं रहा है। यही नहीं, वे अपने नेताओं से कटे हुए महसूस कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, १९७६ में हुए अमरीकी राष्ट्रपति पद के चुनावों में ४६ प्रतिशत मतदाता अपने घरों में ही बैठे रहे, वे अपना मत देने नहीं गये। इसका मतलब यह हुआ कि शेष मतदाताओं की बहुसंख्यक गणना से, अर्थात कुल मतदाताओं की लगभग एक चौथाई दुनिया ने एक शक्तिशाली लोकतंत्र के राष्ट्रपति का निर्वाचन किया। इस बात को हम अधिक निकट से देखें, तो पता चलेगा कि कुल मतदाताओं का केवल चौथा हिस्सा या देशभर की जनता का आठवां हिस्सा इस बड़े निर्णय में शामिल हुआ। उसी तरह, राजनीतिक दल और नौकरशाही के बड़े-बड़े अधिकारी अपना प्रभाव खो रहे हैं।

इक्कीसवीं शती का लोकतंत्र

पहली लहर की सभ्यता के अंतर्गत कृषि-प्रधान समाज में नेतृत्व जन्म से (व्यक्तिगत सफलता से नहीं) आता था। एक राजा में

वचन वीथी

उपनिषद् भारत के ब्रह्मज्ञान की वनस्पति है। वह केवल सुंदर श्यामल छायामय ही नहीं है, गहन और कठिन भी है। इनमें केवल सिद्धि का प्राचुर्य ही पल्लवित नहीं हुआ, तपस्या की कठोरता भी ऊर्ध्वगामी हो रही है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

जो कुछ नहीं करता केवल वही आलसी नहीं है, आलसी वह भी है, जो अपने काम से भी अच्छा काम पा सकता था।

—सुकरात

मैं बगुले को तीर का निशाना बनाने की अपेक्षा उसे उड़ते देखना चाहता हूं, किसी बुलबुल को खा जाने की अपेक्षा उसे गाते सुनना चाहता हूं।

—रस्किन

जिस प्रकार एक रत्ती संखिया से लोटाभर दूध बिगड़ जाता है, उसी प्रकार अस्पृश्यता से हिंदू-धर्म चौपट हो रहा है।

—महात्मा गांधी

अन्याय और अत्याचार करनेवाला उतना दोषी नहीं है, जितना उसे सहन करने वाला।

—बालगंगाधर तिलक

अच्छा उपहार
बेहतर साथी
एन. बी. टी. की पुस्तकें

नेशनल बुक ट्रस्ट की सभी भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में प्रकाशित पुस्तकें सस्ती होती हैं और स्तरीय भी। बच्चों, किशोरों, वयस्कों सबकी रुचि और आवश्यकता के लिए इसकी पुस्तकमालाएं हैं—नेहरू बाल पुस्तकालय; भारत-देश और लोग; तरुण भारती पुस्तकमाला; भारतीय लोक-संस्कृति और साहित्य माला; आदान-प्रदान; राष्ट्रीय जीवनचरितमाला; लोकोपयोगी विज्ञानमाला; आज का विश्व . . .

कुछ नये प्रकाशन

यात्रा का अंत (तमिल) : नील पद्मनाभन, रु. ७.००; **मुक्ति (कन्नड़)** : शांतिनाथ देसाई, रु. ११.५०; **ग्रामायण (कन्नड़)** : रायबहादुर कुलकर्णी, रु. १८.००; **सीढ़ी के डंडे (मलयालम)** : टी. एस. पिल्लै, रु. २६.००; **सरदार वल्लभभाई पटेल** : विष्णु प्रभाकर, रु. ५.००; **रानी चेन्नमा** : सदाशिव वोडेयार, रु. ७.२५

हमारे प्रकाशन नेशनल बुक ट्रस्ट पुस्तक केन्द्र, ए-४, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-११००१६; सिटी सेंट्रल लाइब्रेरी, अशोक नगर, हैदराबाद-५०००२०; ६७/२, महात्मा गांधी मार्ग, कलकत्ता-७००००९; राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टाउन हाल, अमृतसर के अतिरिक्त सभी प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं के यहां उपलब्ध हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ए-५, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-११००१६

सीमित क्षमताएं थीं, जैसे लड़ाई में लोगों की अगवानी करना, सामंतों को एक दूसरे के खिलाफ कराना, अपने लिए ऐसे विवाह रचाना, जिनसे राजनीतिक फायदे मिलें। दूसरी लहर के नेता को कई तरह के निर्णय, कई तरह की राजनीतिक संस्थाओं की सहायता से लेना और उन पर अमल कराना होता है। वह एक साथ शक्तिशाली और शक्तिहीन दोनों है। अमरीका के राष्ट्रपति की तरह वह विध्वंसकारी परमाणु-युद्ध के 'पुश-बटन' के पास बैठा हुआ है और साथ में इतना असहाय भी है कि उसकी टेलीफोन लाइन के दूसरे छोर पर उसकी बात सुननेवाला कोई नहीं है।

अल्पसंख्यकों की बात चलेगी

भविष्य में बहुसंख्यक लोकतंत्र का यह पुराना ढांचा काम नहीं आएगा, तो फिर इक्कीसवीं शती के लोकतंत्र का क्या स्वरूप होगा? वह अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। परंतु ऐसा लगता है कि आगे चलकर अल्पसंख्यक मत का उदय होगा। आज हम जैसे ही लगातार वि जन समुदायीकृत समाज बनाते जा रहे हैं, वैसे ही आधुनिक-रूप बहुसंख्यक सरकार का सत्ता में आना कठिन से कठिनतर होता जाएगा। जहां-जहां आज समाजवादी ढंग की सरकार है, वहां-वहां भी औद्योगिक समाज से काफी दूर निकल आने और वि-जनसमुदायीकृत होने के कारण आज की-सी सरकारें नहीं रहेंगी। उनके स्थान पर धर्म, वर्ण, लिंग, व्यवसाय, जाति के अल्पसंख्यक मतों पर आधारित मिली-जुली, प्रत्यक्ष रूप से लोकतंत्रात्मक सरकारें बनेंगी, जो अपने-अपने देशों में कारोबार के लिए उत्तरदायी होते हुए भी, समूची विश्व-व्यवस्था का अंग होंगी। परिणामतः, हमारे मतदान का तरीका भी बदल जाएगा। 'हां' या 'नहीं' के मतदान के बजाय इस तरह के कुछ सवाल

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ख, २. ख, ३. श्रीरंगपट्टम् स्थित गुंबज इमारत में (श्रीरंगपट्टम् मैसूर में कावेरी नदी में एक छोटा-सा द्वीप है, जिसे टीपू ने अपनी राजधानी बनाया था), ४. एन. के. मुखर्जी, मंत्रिमंडलीय सचिव पद से ३१ मार्च, १९८० को रिटायर हुए, ५. कोटा (राजस्थान), ६. क. चोगलमसार (लद्दाख में लेह से १५ कि. मी. दूर साढ़े १० हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित गांव), ख. शुचुली (एरिजोना, अमरीका), ७. पोलैंड के हेनरिक जसकुला ने ३४४ दिन में लगभग ३३ हजार मील की समुद्री यात्रा विगत मई में पूरी की (इस प्रकार की यात्रा करनेवाले चौथे नाविक), ८. दिल्ली, ९. जैकलीन कोचरान (अमरीकी) ने १९५३ में सेबर-जेट विमान से उड़ान की (९ अगस्त' ८० को ७३ वर्ष की आयु में निधन), १०. विष्णु दिगंबर पलुस्कर, ११. तिहाई (करीब ९० लाख), १२. बृहस्पति ग्रह।

मुनिया रानी बढ़ती जाये
घने काले, बालों का जादू जगाये
मोती से सफेद दांतों को चमकाये

गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तेल
—उसके बालों को और घने बनाये
सबको सुहाये मन में भाये
बालों का ये कालापन, घना व चमकीलापन

गाय छाप काला दन्त-मंजन
—उसके दांतों को चमकाये
मोती से सफेद व मज़बूत बनाये

सेवाश्रम का गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तेल
और काला दन्तमंजन

अपनी सुन्दरता को
नैसर्गिक रूप से बनाये रखिये

आयुर्वेद सेवाश्रम लिमिटेड
उदयपुर • वाराणसी • हैदराबाद

heros'-AS-161 B HN

BRAHMI AMLA OIL
ब्राह्मी आँवला तैल
COW BRAND
BLACK
TOOTH POWDER
काला दन्त मंजन

खड़े होंगे, "यदि मैं गर्भपात के सवाल पर आपका साथ देता हूं, तो क्या आप परमाणु शस्त्रीकरण के कारण हो रहे रक्षा-व्यय के विरुद्ध मेरा साथ देंगे ?" या "यदि मैं आगामी वर्ष से अपनी आय पर अधिक कर देने के लिए राजी हो जाऊं, तो आप इसके बदले मुझे क्या राहत देंगे ?"

मतदान केंद्र के बिना मतदान होगा

कल विकसित हो रहे जन-संचार के साधनों में मतदान का यह तरीका संभव होगा। किसी 'पोलिंग बूथ' या चुनाव-स्थल पर जाने की जरूरत नहीं होगी। जैसे आज बड़ी-बड़ी कंपनियों में छोटे-छोटे हिस्सेदारों के अधिकारों की भी रक्षा होती है, वैसे सरकार बनाने में अल्पसंख्यक मतदाताओं के अधिकारों की रक्षा होगी। ऐसे में, वे न केवल किन्हीं सवालों पर अपनी प्राथमिकताओं का निर्देशन कर सकेंगे, अपितु अपनी बाकी पसंद की बातों पर भी क्रमिक ढंग से निशान लगा सकेंगे। मौजूदा राजनीतिक ढांचे में अल्पसंख्यक जातियों का नुकसान होता है, इस बात को रेखांकित करते हुए अमरीकी संविधान विशेषज्ञ श्री बेकर का कहना है कि जहां अमरीका में २० प्रतिशत लोग काले हैं, वहां (१९७६ में) ऐसे काले लोगों को अमरीकी प्रतिनिधि-सभा में केवल ४ प्रतिशित स्थान प्राप्त हुए थे। या जहां अमरीकी जनसंख्या का ५० प्रतिशत से अधिक नारी-समाज है, वहां नारियों को अमरीकी प्रतिनिधि-सभा में केवल ४ प्रतिशत स्थान मिले थे।

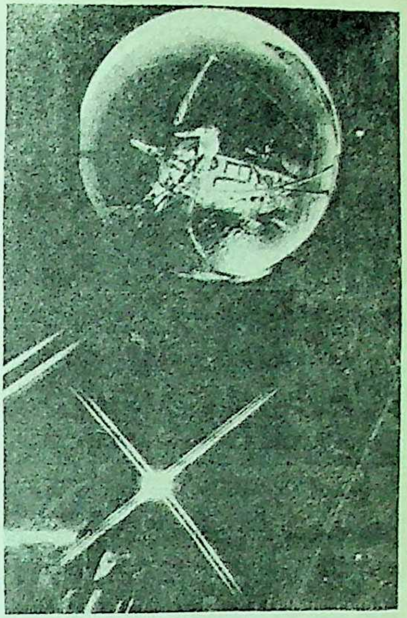

उसी तरह, निर्धन लोगों, युवा लोगों और अलग-अलग व्यवसाय के लोगों को अनुपातत: स्थान मिलने चाहिएं, जो नहीं मिले। तीसरी लहर के वि-जनसमुदायीकृत, अल्पसंख्यक वर्ग-आधृत समाज में ऐसा नहीं होगा। अब जो निर्णय विश्व की तथाकथित प्रतिनिधि-सभाओं में लिये जाते हैं, वे दरअसल सभी लोगों के फायदे में नहीं होते। धीरे-धीरे प्रत्यक्ष लोक तंत्र पनपेगा। वह संकीर्ण, परोक्ष लोकतंत्र के बजाय विशाल प्रत्यक्ष लोकतंत्र होगा, जिसमें तकनीकी विकास के उपकरणों के माध्यम से, घर बैठे ही, स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर सीधे ढंग से सोच-विचार होगा। ●

प्रतीक्षा विष्णु के नृत्य की

● डॉ. सत्यप्रकाश सिंह

मनुष्य को शक्ति चाहिए। जप-तप, आराधना-अर्चना, अनुनय-विनय में शक्ति प्राप्त करने की आकांक्षा निहित है। धन, जन-भक्ति, प्रेम, रूप, गंध सौंदर्य, ज्ञान आदि से शक्ति निर्गत होती है, क्योंकि वे शक्ति के रूप हैं। सत्ता और शक्ति अन्योन्याश्रित हैं। मत-याचक, सत्ता के लिए मतदाता की आराधना करता है। शक्ति की कुंजी मतदाता के हाथ में है, अगर मतदाता एक बार 'तथास्तु' कह दे तो याचक ऋद्धि-सिद्धि से परिपूर्ण हो उठता है।

'तथास्तु' प्रत्यावर्तित होकर दाता के लिए घातक भी सिद्ध होता रहा है। एक याचक था—भस्मासुर। शंकर नामक एक दाता ने उसे जब एक बार 'तथास्तु' कह दिया, तब वह याचक से 'मतवाला' हो उठा। एक भय मिश्रित शंका उत्पन्न हुई। बम भोले कहीं भंग की तरंग में धोखा तो नहीं खा गये। इतिहास साक्षी है सत्ता-शक्तिधारी पहले अपने उद् स्रोत पर ही वार करता है। यह ऐ हासिक सच्चाई है कि दाता (मत हो अथवा वरदाता) को भागकर अ शरण लेनी पड़ती है, यही उसकी नि है। याचक ने, दाता पर ही अपना ह उठा दिया। भय से शंकर भागकर वि की शरण में गये। विष्णु कुशल कला थे। अपनी बुद्धि-चातुर्य से उन्होंने कि प्रकार उस मतवाले याचक से शंकर जान बचायी। साथ ही उन्होंने चेताव दी कि भविष्य में फिर कभी किसी आसानी से 'तथास्तु' मत कहना।

भारतीय मतदाता एक बार 'त स्तु' कहकर पांच वर्ष तक चीखता-चि लाता और दर-दर की ठोकरें खाता फि है और मत याचक, जिसमें शक्ति आ पित हो चुकी है, उसे चैन से बैठने न देता है। मतदाता किसी विष्णु के च त्कारी-नृत्य की प्रतीक्षा, भविष्य के का चक्र में करता है। इस तरह बेचारा म दाता 'तथास्तु' के 'बूमरेंग' का शि होता रहता है।

> **सृष्टि में पहले सब कुछ जड़ था। जड़ में से जीवन निकला और जीवन के भीत मन अथवा मानस उत्पन्न हुआ। मनुष्य लाखों वर्षों से मन के धरातल पर खड़ा है। मन समस्याओं का समाधान वह मन के ही साधनों से करने में लीन है, किंतु समाधान उसे मि नहीं रहा है, न यह समाधान उसे मन के जरिये कभी प्राप्त हो सकता है। आवश्यकता इ बात की है कि मनुष्य एक छलांग मारे और मन की सीमा के बाहर पहुंच जाए।**
>
> **—महर्षि अरवि**

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस द्वारा
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

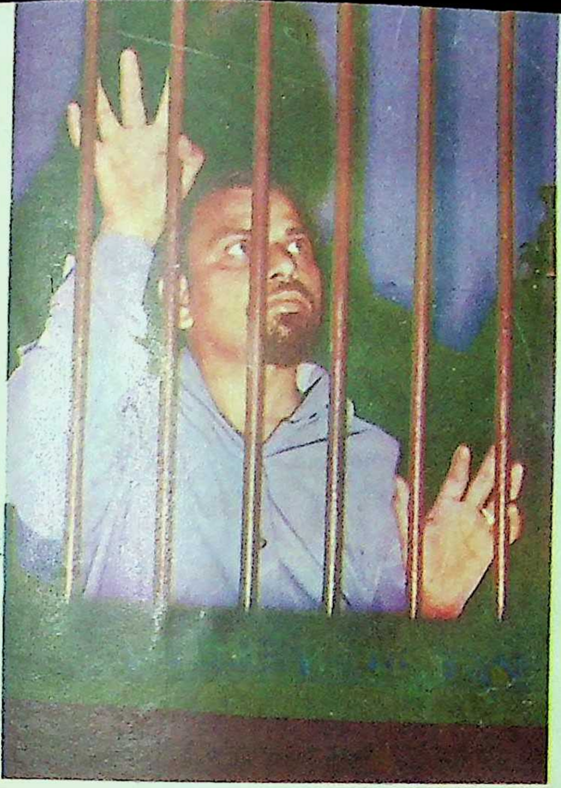

समस्या-पूर्ति--२१

कब तक

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इन्हें लेकर आपको एक कविता लिखनी है—गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी। आपकी रचना मौलिक तथा छह पंक्तियों की ही हो। प्रविष्टि पोस्टकार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार--२५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार—१५ रुपये
अंतिम तिथि—५ जनवरी, १९८१

ाया: प्रदीपचंद्र

300

पुस्तकालय
गुरुकुल का

10
GENERAL
GENERAL FILTER KINGS
FILTER KINGS
STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

स्वाद का
रौब
जमाईए

स्वाद की ऊंचाईयां तसल्ली की गहराईयां

अधिकतम मूल्य
रु०१२० में १०, रु० २.४० में २०
स्थानीय कर अतिरिक्त

जनरल
फ़िल्टर किंग्स

वैधानिक चेतावनी: सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है
STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

REACT-GFK4/

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

हास्य व्यंग्य और विनोद की सामग्री से भरपूर

मनोरंजन-विशेषांक

मार्च ८१

२.५० रु

हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

BRAHMI AMLA
BLACK
TOOTH POWDER
heros'·AS.161 B HN

मुनिया रानी बढ़ती जाये
घने काले, बालों का जादू जगाये
मोती से सफेद दांतों को चमकाये

गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तेल
—उसके बालों को और घने बनाये
सबको सुहाये मन में भाये
बालों का ये कालापन, घना व चमकीलापन

गाय छाप काला दन्त-मंजन
—उसके दांतों को चमकाये
मोती से सफेद व मज़बूत बनाये

**सेवाश्रम का गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तेल
और काला दन्तमंजन**

अपनी सुन्दरता को
वैज्ञानिक रूप से बनाये रखिये

आयुर्वेद सेवाश्रम लिमिटेड
उदयपुर • वाराणसी • हैदराबाद

26 MAR 1981

पुस्तकें : सबके लिए

संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, भारतीय जन-जीवन एवं बाल-साहित्य आदि अनेक विषयों पर अंग्रेजी तथा सभी भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तकें।

नेशनल बुक ट्रस्ट अपनी विभिन्न पुस्तकमालाओं (भारत—देश और लोग, राष्ट्रीय जीवन-चरित माला, लोकोपयोगी विज्ञान माला, भारतीय लोक-संस्कृति एवं साहित्य पुस्तकमाला, तरुण भारती पुस्तकमाला, नेहरू बाल पुस्तकालय, आदान-प्रदान पुस्तकमाला) के अंतर्गत हर उम्र, रुचि एवं आय वाले लोगों के लिए पुस्तकें प्रकाशित करता है।

हमारे नये प्रकाशन

हिमाचल प्रदेश : लोक संस्कृति और साहित्य - डा. गौतम शर्मा, रु. १३.५०, **हरियाणा** : डी. सी. शर्मा, रु. १०.७५, **सब्जियां** : विश्वजित चौधरी, रु. ११.५०, **हम और हमारा स्वास्थ्य** : डा. वी. एन. भावे, डा. एन. एस. देवधर, डा. एस. वी. भावे, रु. २१.७५, **बनहंसी और श्वेत पद्मा** : एम. दास व प्राण बंधुकर, रु. ८.००, **रानी चेन्नमा** : सदाशिव वाडेयार, रु. ७.७५, **श्री मां** : प्रेमा नन्दकुमार, रु. ५.७५, **मुक्ति** : शान्तिनाथ देसाई, रु. ११.७५, **नवान्न** : विजन भट्टाचार्य, रु. ७.२५,

हमारे प्रकाशन नेशनल बुक ट्रस्ट पुस्तक केन्द्र, ए-४, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली ११००१६, सिटी सेंट्रल लाइब्रेरी, अशोक नगर, हैदराबाद-५०००२०, ६७/२, महात्मा गांधी मार्ग, कलकत्ता-७००००९, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टाउन हाल, अमृतसर के अतिरिक्त सभी प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं के यहां उपलब्ध हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ए-५, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली ११००१६

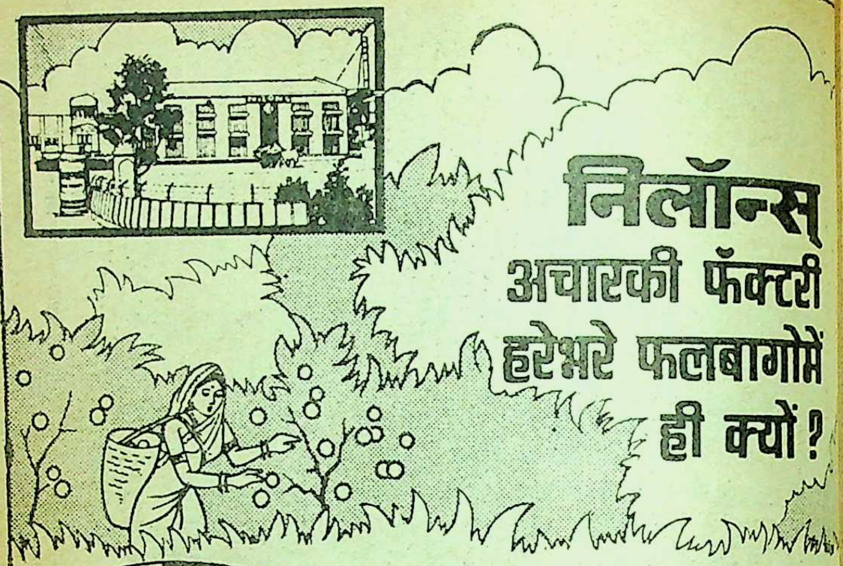

निलॉन्स अचारकी फॅक्टरी हरेभरे फलबागोमें ही क्यों?

सिर्फ आपको बेहतरीन अचार देने के लिये।

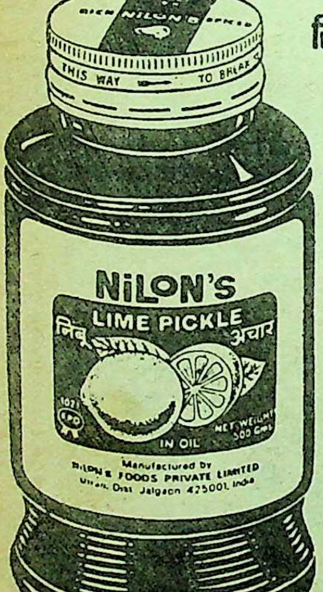
NILON'S
THIS WAY TO BREAK
NiLON'S
LIME PICKLE
निंबू अचार
IN OIL
NET WEIGHT 500 Gms
Manufactured by
NILON'S FOODS PRIVATE LIMITED
Utran, Dist. Jalgaon 425001, India

निलॉन्स अचारकी प्रमुख विशेषतायें—

१) निलॉन्स अचारकी फॅक्टरी किसी शहर में न होकर हरेभरे फलबागों में हैं. ताकि जो भी फल हो ताजे-से-ताजे हो. जो किसी शहर की फॅक्टरी में संभव नहीं हैं।

२) ताजे से ताजे फलों का पूर्ण परिपक्व अचार सिर्फ निलॉन्स की ही फॅक्टरी में संभव है। जो अनुभवी विशेषज्ञद्वारा जाँचा परखा भी जाता है।

निलॉन्स अचार के चार प्रकार—
आम • निंबु • मिर्च • मिश्र

निलॉन्स अचार सभी के सुरुचिपूर्ण अचार

निलॉन्स
फूड्स प्राईवेट लिमिटेड
उतरान, जलगांव-४२५००१, महाराष्ट्र

बिनप्रतिनिधीत विभागों में वितरक चाहिये।

3 BROTHERS/NFL/

26 MAR 1981

60 वर्षों से लोकप्रिय
शुद्धता तथा कम मूल्य के प्रतीक

एम डी एच

मसाले

एम.डी एच मसाले पोली-पैक में सील किये जाते हैं ताकि इनकी ताज़गी ओर स्वाद बने रहें। ये मसाले आपके लिये क्वालिटी की गारंटी हैं।

हमारे अन्य लोकप्रिय उत्पादन :

किचन किंग, देगी मिर्च, गरम मसाला,
चना मसाला, चाट मसाला इत्यादि

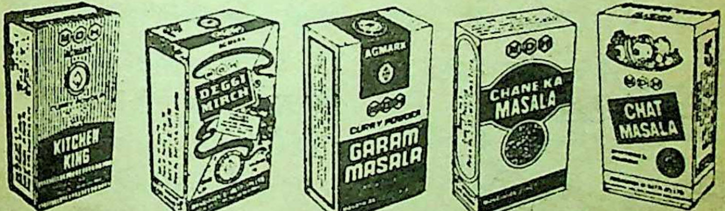
KITCHEN KING
DEGGI MIRCH
AGMARK
CURRY POWDER
GARAM MASALA
CHANE KA MASALA
CHAT MASALA

महाशियां दी हट्टी प्राइवेट लिमिटिड
8/44 इंडस्ट्रियल ऐरिया, कीर्ति नगर, नई देहली-110015 फ़ोन : 585122
सेल्स आफिस : खारी बावली, दिल्ली-110006 फ़ोन : 258714

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

निम्नलिखित शब्दों के जो सही अर्थ हों, उन पर चिह्न लगाइए और इसी पृष्ठ से आरंभ उत्तरों से मिलाइए।

१. **कौशल**——क. एक प्राचीन क्षेत्र, ख. सफाई, ग. निपुणता, घ. बुद्धिमानी।

२. **आसन्न**——क. बैठा हुआ, ख. निकट का, ग. बीमार, घ. बेचैन।

३. **जीवंत**——क. सचेत, ख. जीता-जागता, ग. सकुशल, घ. फुर्तीला।

४. **विपर्यय**——क. बाधा, ख. उलटा, ग. कुप्रबंध, घ. उलटफेर।

५. **सूत्रपात**——क. तारतम्य, ख. आरंभ, ग. उद्‌घाटन, घ. ढील।

६. **विमर्दन**——क. मालिश, ख. कुचलने की क्रिया, ग. रोकथाम, घ. अहित।

७. **समीकरण**——क. निकटता, ख. मापतौल ग. समाप्ति, घ. समान बनाने की क्रिया।

८. **योगक्षेम**——क. योगाभ्यास, ख. कुशल-मंगल, ग. प्रवीणता, घ. आतिथ्य।

९ **विभेद**——क. रहस्य, ख.
ग. नाश, घ. कई तरह के भेद।

१०. **सहेतुक**——क. कल्याणकारी,
जिसमें कोई हेतु या कारण हो, ग.
घ. सहज।

११. **इहलोक**——क. नरक, ख.
लोक, ग. कल्पना-जगत, घ. स्वर्ग।

उत्तर

१. ग. निपुणता, होशियारी।
भवन कारीगरों के **कौशल** का
नमूना है। **हस्तकौशल**=हाथ की
२. ख. निकट का, समीपस्थ,
भविष्य में होनेवाला। **आसन्न** संकट
बेखबर मत रहो। **आसन्नप्रसवा**=
स्त्री के शीघ्र बच्चा होनेवाला हो।
सन्न=जिसकी मृत्यु निकट हो।

३. ग. जीता-जागता, जिसमें
रहने की पर्याप्त क्षमता हो। हमारी
जीवंत है। **जीवंत** समाज अपराजेय
है।

४. घ. उलटफेर, गड़बड़ी,
ऋतु के **विपर्यय** से फसल चौपट हो
५. ख. आरंभ, शुरूआत।
के पश्चात देश में नये युग का
हुआ।

६. ख. कुचलने की क्रिया।
आकांक्षाओं का **विमर्दन** अशोभनीय है।
७. घ. समान बनाने की क्रिया।
के लिए विश्व-शक्तियों का
आवश्यक है। (अंग.—ईक्वेशन)।

समस्या-पूर्ति --२२

यह है भोलापन

प्रथम पुरस्कार

उन्मादों ने घेर लिया बेचारा चंचल मन
जाने कब बचपन की देहरी लांघ गया यौवन
काजल आंजे नयन-पलकपर आ बैठी लज्जा
अनजाने में बार-बार क्यों उठ जाता दर्पन
अजब सुंगधित देह हो गयी ज्यों रजनीगंधा
अंग-अंग में जाने कैसा यह है भोलापन

--सुशील कुडेसिया

हि. शु. मिल्स विद्यालय, गोला, खीरी

द्वितीय पुरस्कार

यह अल्हड़ता
यह मादकता
उस पर यह चितवन
और नहीं प्रिय . . .
और नहीं कुछ
यह है भोलापन

--गीता प्रधान

२/७३-ए, कटरा उमरखां, आगरा

८. ख. कुशल-मंगल। उसने तो किसी की **योगक्षेम** ही नहीं पूछी।

९. घ. कई तरह के भेद, विभिन्नता। हमारे सामाजिक **विभेदों** का कोई अंत ही नहीं है। (विशेषण—**विभेदक, विभेदकारी**=भेद या फूट उत्पन्न करनेवाला। **विभेदक** तत्त्व राष्ट्र को क्षति पहुंचा रहे हैं।)

१०. ख. जिसमें कोई हेतु या कारण हो। उसकी यह यात्रा **सहेतुक** है। (विलोम—**अहेतुक**)

११. ख. यह लोक, भौतिक जगत, यह जीवन। पहले **इहलोक** को सुधारो, फिर परलोक की बात करो।

पारिभाषिक-शब्द

प्रोपोजल=प्रस्ताव

थ्रू प्रापर चैनल=उचित माध्यम से

टु दि प्वाइंट=विषयानुकूल/सुसंगत

सेल्फ-कंटेंड=स्वतःपूर्ण

रिइंस्टेट=बहाल करना

डिस्पोजल=निपटान

ऑन डेपुटेशन=प्रतिनियुक्ति पर

नीडफुल=आवश्यक/अपेक्षित

जस्टीफिकेशन=औचित्य

कॉनकरेंट=समवर्ती

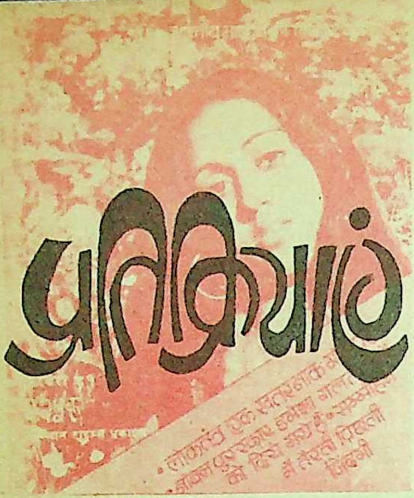

पुरस्कार

'कादम्बिनी', फरवरी ८१ का अंक निश्चय ही अति उत्तम, आकर्षक एवं पठनीय रहा। ऐसे तो सभी लेख तथा रचनाएं अच्छी लगीं, परंतु 'नोबल पुरस्कार गलत लोगों को', 'चीन के करोड़पति व्यापारी' तथा 'दिल्ली और दिल्ली के आस-पास' लेख बहुत पसंद आये।

नोबल पुरस्कार देने में टॉल्सताय, गोर्की तथा महात्मा गांधी-जैसे महान व्यक्तियों की उपेक्षा निश्चय ही दुःख का विषय है। भारत तथा एशिया, अफरीका के विकासशील देशों की उपेक्षा तथा उनके मुकाबले में यूरोप तथा उत्तरी अमरीका को वरीयता निष्पक्ष प्रतियोगिता तथा चयन के सिद्धांत के विरुद्ध है। लोकप्रियता की दृष्टि से विश्व में तीसरा स्थान रखनेवाली भाषा हिंदी का बहिष्कार भी नोबल पुरस्कार की गरिमा तथा उसके महत्त्व को कम करना है।

—शकुनचंद गुप्त, रायबरेली

पुरस्कार छह विषयों

फरवरी अंक में विजयश्री के लेख, 'नोब पुरस्कार गलत लोगों को' में लिखा नोबल पुरस्कार पांच-विषयों पर दि जाता है। आजकल 'नोबल पुरस्का निम्नलिखित विषयों पर दिया जाता है- १. भौतिकी, २. रसायन, ३. ओषधि ४. साहित्य, ५. शांति, ६. अर्थशास्त्र।

—मुकेशकुमार शर्मा, अलव

(अर्थशास्त्र पर पुरस्कार १९६९ से दि जाता है, पहले यह विषय नहीं था।—सं.

नोबल पुरस्कार से संबंधित लेख दुनि के इस सबसे बड़े इनाम को अंधे की रेवड़ -जैसा बांटे जाने की हकीकत उजाग करता है। इसमें संशय नहीं कि आ दुनियाभर में बड़े तौर पर माना जा लगा है कि इस पुरस्कार की अपनी राज नीति है, जिसके चलते पुरस्कार के मू लक्ष्य पर ही निरंतर कुठाराघात हु और आज इसकी वह गरिमा नहीं र जो कभी समझी जाती थी।

नोबल पुरस्कार अब पांच के बजा छह विषयों पर दिया जा रहा है। आठ दशक के शुरू में अर्थशास्त्र पर नोब पुरस्कार भी चालू हुआ, जो सबसे पह हालैंड के योजना विशेषज्ञ अर्थशास्त्र टिबरगन को दिया गया। अगले सा विख्यात अमरीकी अर्थशास्त्री पाल सेमु अलसन को। उसके बाद और भी क

अर्थशास्त्री इस पुरस्कार से धन्य हो चुके हैं।

—मनोहर नायक, इलाहाबाद

बर्मा में हिंदी साहित्य

कादम्बिनी का फरवरी अंक पढ़ा। काफी रोचक लगा। 'बर्मा में हिंदी साहित्य के प्रति प्यार है' लेख में बर्मी लेखक ऊ पारगू के विचार जानकर बहुत प्रसन्नता हुई। बर्मा में हिंदी साहित्य इतना प्रिय है कि टैगोर, राहुल सांकृत्यायन, प्रेमचंद, कृशनचंदर, जयशंकर प्रसाद, भगवती चरण वर्मा, और विष्णु प्रभाकर की कृतियों का बर्मी में अनुवाद किया गया है।

हमारे पड़ौसी देशों में तो हिंदी-साहित्य का इतना आदर है और हमारे देश में इसकी क्या स्थिति है, यह हिंदी जगत के लिए शोचनीय विषय है !

—मधुसूदन, कानपुर

कैदी छत पर क्यों चढ़े

'जब कैदी छत पर चढ़ जाते हैं' लेख जहां एक ओर जेल अधिकारियों की परेशानियां बताता है, वहीं कैदियों की समस्याओं पर भी सोचने को विवश करता है। सजा तो कैदियों को सुधारने के लिए दी जाती है, लेकिन यदि जेलों में कैदियों को अंधा बनाया जाए, मार-पीटकर उनकी जान ले ली जाए, तो भी क्या उन्हें अपने अधिकारों की मांग करने का कोई हक नहीं ?

लेख पढ़कर लगा कि कैदियों की जेल संबंधी समस्याओं पर—खाना, कपड़ा, मुकदमों की जल्दी सुनवायी आदि पर ध्यान दिया जाना चाहिए। लेख के अंत ने यह साबित कर दिया कि अपराधी भी वायदे के पाबंद हो सकते हैं !

—वीरेन्द्रमोहन, भरतपुर

अठारह दिल्ली ...

अभी फरवरी '८१ का, अंक मेरे हाथ में है और इसमें एक लेख है अठारह दिल्लियों की एक दिल्ली। पृष्ठ–१७६ पर आपने श्री ब्रजकिशोर चांदी वाला की पुस्तक "दिल्ली की खोज" के एक प्रसंग का कुछ वर्णन दिया है। जिसमें कि महाभारत से लेकर अब तक के सारे राज्यवंशों का वर्णन है। आप लिखते हैं कि महाराज युधिष्ठिर के बाद उनके वंशजों ने १७४५ वर्ष २ माह और २ दिन तक राज्य किया। और बाद के राज्यवंशों का भी वर्णन है मगर वह तो ठीक लगता है।

इस राज्य वंश के बारे में एक शंका है कि सिर्फ तीन पीढ़ियां १७४५ वर्ष तक राज्य कैसे कर सकीं? अगर यह ठीक है, तो एक राजा के हिस्से में लगभग ५८० वर्ष का समय आता है। हो सकता है कि यह छपाई की गलती हो। कृपया इस समस्या का समाधान करें।

—कैलाशचंद्र, दिल्ली

(आपकी शंका ठीक है। प्रूफ की भूल से तीस के स्थान पर तीन छप गया है। ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद।

—सं.)

कान्हा नेशनल पार्क

कान्हा नेशनल पार्क में कोई रेल नहीं है। कौर्बेट नेशनल पार्क, गिर अभयवन, भरतपुर पक्षी विहार आदि अभयवनों में टूरिस्ट जैसे आजादी से घूमते हैं वैसे ही कान्हा में घूमते हैं। कान्हा में चीते और हाथी तो पाये ही नहीं जाते। कुछ हाथी वहां दर्शकों को घुमाने के लिए पाले गये हैं।

वस्तुस्थिति से अवगत कराने के लिए आप मेरा यह पत्र प्रकाशित कर देंगे, तो पाठकों का लाभ होगा।

——रमेश बेदी, नयी दिल्ली

क्या आपका जन्म ...

'क्या आपका जन्म फरवरी में हुआ है' लेख में कुछ व्यक्तियों का उल्लेख छूट गया है। यथा—२ फरवरी-के. डी. सिंह बाबू, १० फरवरी बालकवि बैरागी, १२ फरवरी दीनबंधु चार्ल्स फ्रेयर एंड्रूज, १७ फरवरी जयशंकर प्रसाद, २१ फरवरी—जादूगर पी. सी. सरकार (वरि की जन्मतिथियां हैं।

——संजीवकुमार, जबल

शिवाजी की सही जन्म-ति

'कादम्बिनी' फरवरी '८१ के अंक प्रकाशित लेख 'क्या आपका जन्म फरव में हुआ है' में छत्रपति शिवाजी की जन्म तिथि १९ फरवरी लिखी गयी है। य गलत है। शिवाजी का जन्म १६ अप्रै १६२७ को हुआ था ऐसा इतिहासका का मत है। शिवाजी के जीवन पर सर्वा- धिक प्रामाणिक पुस्तक डेनिस किंकेड 'दि ग्रैंड रिबिल' में भी शिवाजी का जन्म अप्रैल माह का ही लिखा है। शिवाजी जयंती भी अप्रैल में ही मनायी जाती है आशा है आप अपने सुविज्ञ पाठकों सही जानकारी देने की कृपा करेंगे।

——तिलकराज गोस्वामी, खुल्दाबा

(सूचना के लिए धन्यवाद !—सं.

विचार-दीर्घा——१४

पुरस्कार : पचास रुपये

उर्दू की समस्या का हल, उसे देवनागरी लिपि में लिखे जाने में है।

विषय पर अपने विचार तीन सौ शब्दों में निम्न पते पर भेजें। विचार साथ वापसी के लिए लिफाफा संलग्न न करें। अंतिम तिथि ५ मार्च '८१

पता ——संपादक : 'कादम्बिनी', विचार-दीर्घा——१४
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८—२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

'कादम्बिनी' तृतीय कहानी प्रतियोगिता

एक हजार रुपये के पुरस्कार

केवल आंचलिक कहानियों के लिए

इस बार 'कादम्बिनी कहानी-प्रतियोगिता' का स्वरूप एकदम अलग है। इसके अंतर्गत केवल आंचलिक कहानियां ही विचारार्थ स्वीकार की जाएंगी। अंचल की परिभाषा के विवाद में गये बिना हमारा स्पष्ट संकेत है ग्रामीण पृष्ठभूमि की कहानियों से। यह अनुभव किया जा रहा है कि हिंदी कहानी गांवों से दूर जा रही है। उसे गांव और गांव की समस्याओं से जोड़ने के लिए हमने यह कदम उठाया है।

नियम

१. कोई भी कहानी २००० शब्दों से बड़ी न हो।

२. कहानी कागज के एक ओर सुवाच्य लिपि में लिखी गयी हो या टाइप की हुई हो।

३. प्रतियोगिता के लिए एक प्रति भेजना पर्याप्त होगा।

४. कहानी के साथ किसी प्रकार का डाक-टिकट अथवा डाक-टिकट लगा लिफाफा न भेजें। कहानी वापस नहीं की जाएगी। अतः हमारा सुझाव है कि उसकी एक प्रति अपने पास अवश्य रखें।

५. पुरस्कार का निर्णय एक निर्णायक मंडल करेगा और वह निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होगा।

६. पुरस्कार की राशि ५०० रुपये, ३०० रुपये और २०० रुपये क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय कहानी को दी जाएगी। इस संबंध में किसी भी प्रकार के परिवर्तन का अधिकार निर्णायक मंडल के पास सुरक्षित है।

७. कहानी भेजते समय लिफाफे पर 'कादम्बिनी तृतीय कहानी-प्रतियोगिता' लिखना आवश्यक है। कहानी आने की अंतिम तिथि ३० अप्रैल, १९८१ है।

८. इस प्रतियोगिता में हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह का कोई भी कर्मचारी भाग नहीं ले सकेगा।

पता—संपादक 'कादम्बिनी',
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-१

९. पुरस्कृत कहानियां 'कादम्बिनी' के अगस्त में प्रकाश्य विश्व-कथा-अंक में प्रकाशित की जाएंगी। कहानियों के संबंध में किसी भी प्रकार का पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा।

इस प्रतियोगिता में हिंदी के नये एवं पुराने सभी लेखक आमंत्रित हैं।

कादम्बिनी

वर्ष २१ : अंक ५
मार्च, १९८१

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

मनोरंजन विशेषांक

महादेवी वर्मा
नहीं भूलते ये प्रसंग २०
इन्दिरा गांधी
मेरी जीवन यात्रा २४
डॉ. शरदकुमार शर्मा
जहां मां बनना एक शर्त है २६
को. सं.
फिल्म समारोह : कुछ सार्थक प्रश्न. . . ३१
शिवकुमार गोयल
भारतीय संसद में व्यंग्य-विनोद . . . ३५
डॉ. महेश नारायण
जेल जहां कैदी राज करते हैं. ३६
डॉ. शरीफजादा
इन चमचों में बड़े-बड़े गुण ५२
स्वामी वाहिद काजमी
बगल में बैठे हो लेकर चमार की सूरत.. ५५
इकबाल बहादुर देवसरे
वेगमों का वियोग ६७
सत्य प्रकाश
चीनी लघु कथाएं ७६
जमनादास अख्तर
तीन सौ वर्ष पहले काबुल में होली... ८४
शारदा
ब्रिटिश संसद में ठहाके ८७
भारती दीक्षित
अंतरिक्ष में चहल-पहल ९१
प्रभा भारद्वाज
वकरी वोली / औरत वोली . . . ९
मनोज कुमार
पोस्टरों की जिंदगी १०३
बाला दुबे
निजाम का हाथी १०
डॉ. चन्द्र शेखर
तेरे कूचे में दम निकले ११
फारुख आफरीदी
जहां दस रुपयों में पाप धुलता है. . . १२
सुमन मेहरोत्रा
नये का वोध १२६
मृदुला सिन्हा
क. ख. ग. १३२
रवीन्द्रनाथ त्यागी
अखबार पढ़ने के वाद १३५
इंदिरा
हिंदी वर्णमाला का व्यंजन वर्ण . . १३
निशा व्यास
बुरे फंसे ट्यूशन में १४२
रोमेश जोशी
मेरे मकान का जंकर क्यों बदला . . १४७

निशीथ कुमार राय
मुंशी से महाराज तक १५२

परिपूर्णानंद वर्मा
सुनहला सेब १५८

शारदा पाठक
सुलतानपुर की चुड़ैल १६२

प्रो. के. ए. दुबे पद्मेश
क्या आपका जन्म मार्च में हुआ है . . १६७

राजेंद्र मेहता
उलझा न्यूटन १७२

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी
बाँस : किस्म-किस्म के १७५

धनंजय सिंह
प्रिया के काले बाल १७८

किसलय बंद्योपाध्याय
बंगला हास्य साहित्य में भूत . . . १८३

कविताएं

विद्रोही
विदेशी मेहमान से ६३

जैमिनी हरयाणवी
दिल्लियां ६३

देवीशंकर प्रभाकर
बात एक आम आदमी की ६४

प्रकाश जैन/रामावतार चेतन
गज़ल/इश्क बाबा ने किया ६५

अनामिका/जंगबहादुर सिंह
पुरानी कहानी/भंग ज्यों गुलाल में . . . ६६

सरजू प्रसाद दुबे
स्थिता ६६

गोपाल चतुर्वेदी
तीन तुक्के १७१

डॉ. शशि शर्मा
होली १७१

स्नेहमयी चौधरी
सिंड्रेला १८८

संपादक

राजेंद्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष

एस. एल. खुराना

हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

झूम री तलैया : खाम खयाली भरा तरही मुशायरा

मुशायरा-आयोजक : योगेन्द्र दत्त शर्मा । अज्ञेय, नरेश मेहता, डॉ. धर्मवीर भारती, भवानीप्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, गोपाल कृष्ण कौल, रमानाथ अवस्थी, वीरेन्द्र मिश्र, नीरज, सुरेन्द्र तिवारी, कन्हैयालाल नंदन, सुरेन्द्र शर्मा और काका हाथरसी (भाग लेनेवाले)

संपादक-मंत्री दोनों खड़े :

परिचर्चा-आयोजकः जगदीश किंजल्क । के. पी. सक्सेना, सूर्यबाला, डॉ. श्याम-नंदन किशोर, संतोष खरे, डॉ. सरोजनी प्रीतम (भाग लेनेवाले)

कवि-सम्मेलन कितने सार्थक कितने निरर्थक

परिचर्चा-आयोजक : सुरेश नीरव । गिरिजाकुमार माथुर, नीरज, उमाकांत मालवीय, डॉ. शेरजंग गर्ग, जगदीश चतुर्वेदी

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य--६, समस्या-पूर्ति--७, प्रतिक्रियाएं--८, समय के हस्ताक्षर--१, काल-चिंतन--१६, आस्था के आयाम--१९, हंसिकाएं--(डॉ. सरोजनी प्रीतम)--४४, सीपिकाएं--४५, बुद्धि-विलास--५१, विधि-विधान--७२, मुल्ला नसीरुद्दीन के कारनामे--९०, हंसाइयां--९१, ज्ञान-गंगा--१०६, इनके भी बयां हैं जुदा-जुदा--१०७, विचार-दीर्घा--१२४, सही कहानियां--१३०, तनाव से मुक्ति--१, घरेलू उपचार--१८२, गोष्ठी--१८९, नयी कृतियां--१९३

मुख-पृष्ठ : प्रेमकपूर, एम. एस. अग्रवाल
पारदर्शी-पृष्ठ १९९--अनिल के दुग्गल

संपादकीय सहयोगी

संयुक्त-संपादक : शीला झुनझुनवाला

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल, उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवतीप्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, विजयश्री, प्रूफरीडर : स्वामीशरण
चित्रकार : सुकुमार चटर्जी

पता : संपादक--'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१

वार्षिक मूल्य : २६ रुपये

अप्रैल अंक के विशिष्ट आकर्षण

एक विख्यात लेखक द्वारा आत्महत्या की लोमहर्षक कथा

कौन-सी वे स्थितियां थीं, जिन्होंने एक लेखक को हराकिरी करने पर विवश किया।

वह विष पीने के प्रयोग करता रहा

नशीले पदार्थों का कुप्रभाव और इक्कीस वर्ष की आयु में एक युवक की मृत्यु की कहानी तीन-चार किश्तों में

सृष्टि की आयु का अनुमान लगाना संभव है

एक सूक्ष्म और प्रामाणिक वैज्ञानिक अध्ययन

समय के हस्ताक्षर

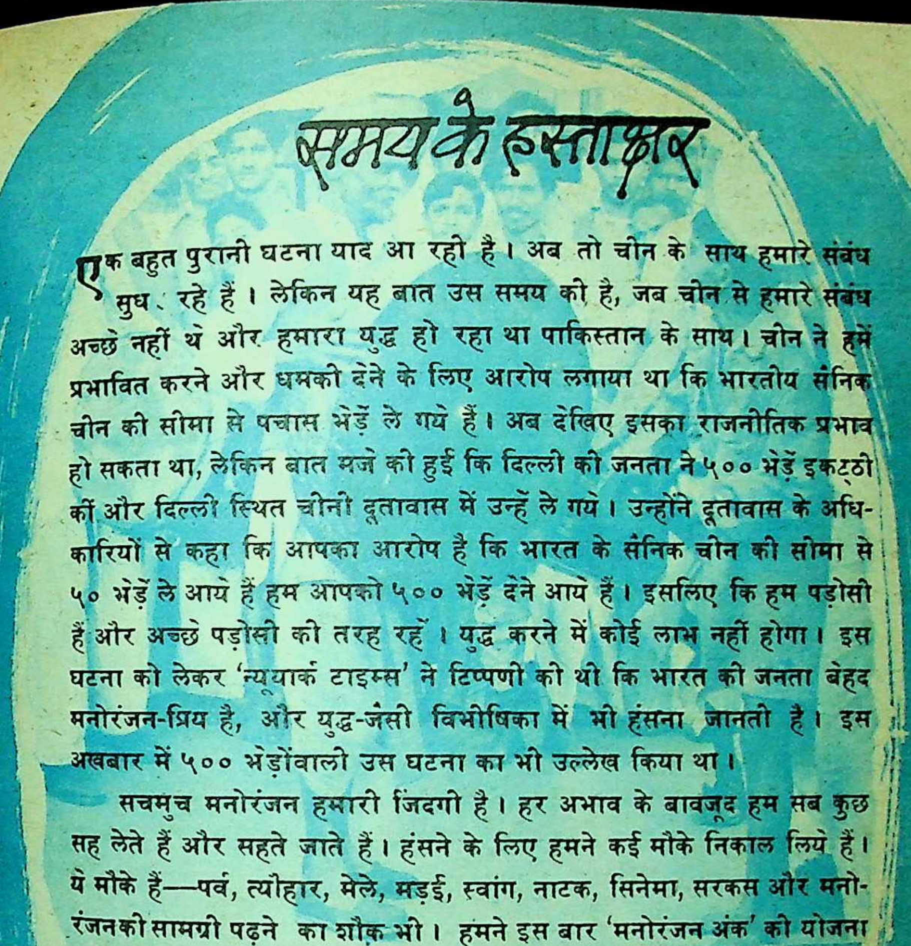

एक बहुत पुरानी घटना याद आ रही है। अब तो चीन के साथ हमारे संबंध सुधर रहे हैं। लेकिन यह बात उस समय की है, जब चीन से हमारे संबंध अच्छे नहीं थे और हमारा युद्ध हो रहा था पाकिस्तान के साथ। चीन ने हमें प्रभावित करने और धमकी देने के लिए आरोप लगाया था कि भारतीय सैनिक चीन की सीमा से पचास भेड़ें ले गये हैं। अब देखिए इसका राजनीतिक प्रभाव हो सकता था, लेकिन बात मजे की हुई कि दिल्ली की जनता ने ५०० भेड़ें इकट्ठी कीं और दिल्ली स्थित चीनी दूतावास में उन्हें ले गये। उन्होंने दूतावास के अधिकारियों से कहा कि आपका आरोप है कि भारत के सैनिक चीन की सीमा से ५० भेड़ें ले आये हैं हम आपको ५०० भेड़ें देने आये हैं। इसलिए कि हम पड़ोसी हैं और अच्छे पड़ोसी की तरह रहें। युद्ध करने में कोई लाभ नहीं होगा। इस घटना को लेकर 'न्यूयार्क टाइम्स' ने टिप्पणी की थी कि भारत की जनता बेहद मनोरंजन-प्रिय है, और युद्ध-जैसी विभीषिका में भी हंसना जानती है। इस अखबार में ५०० भेड़ोंवाली उस घटना का भी उल्लेख किया था।

सचमुच मनोरंजन हमारी जिंदगी है। हर अभाव के बावजूद हम सब कुछ सह लेते हैं और सहते जाते हैं। हंसने के लिए हमने कई मौके निकाल लिये हैं। ये मौके हैं—पर्व, त्यौहार, मेले, मड़ई, स्वांग, नाटक, सिनेमा, सरकस और मनोरंजनकी सामग्री पढ़ने का शौक़ भी। हमने इस बार 'मनोरंजन अंक' की योजना इसी आशय से तैयार की है कि हमारे पाठकों को श्रेष्ठ और सधे हुए हास्य-व्यंग्य से भरपूर सामग्री मिल सके। सामग्री बहुरंगी है। इसके कई आयाम हैं। कई तरह से कटाक्ष किये गये हैं राजनीति पर, समाज पर, रचनाकारों पर और अपने आप पर भी।

तो लीजिए, प्रस्तुत है 'कादम्बिनी'-जैसी गंभीर पत्रिका का मनोरंजन अंक। हम दावा तो नहीं करते, लेकिन विश्वास जरूर करते हैं कि इस अंक की सामग्री कई महीनों तक आपका मनोरंजन करती रहेगी और हंसाती रहेगी। कुछ व्यंग्य तो ऐसे हैं, जिन्हें आप शायद कभी न भूल पायें। इस अंक में जो कुछ भी छपा है उसे एक स्वस्थ और सामयिक मनोरंजन के रूप में लिया जाए यही हमारी पाठकों और लेखकों से अपेक्षा है।

—संपादक

काल-चिंतन

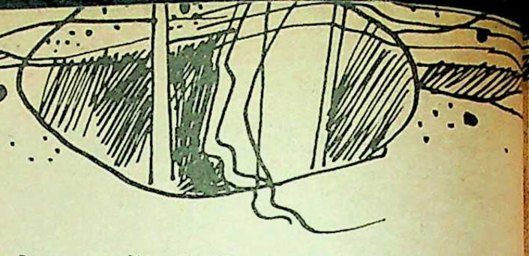

—वह मेरा जन्मदिन था। एक मित्र ने पुस्तक भेंट की 'रोड टु हैप्पीनेस'—सुखी होने का रास्ता क्या है ? कृतज्ञतापूर्वक स्वीकारते हुए मैं पृष्ठ पलटता गया; कौन नहीं चाहता, इतनी आसानी से यह रास्ता मिल जाए। मेरी तलाश . . . ?

●

—व्यतीत नंगा आकर सामने खड़ा हो गया ! शाम का समय, विवस्त्र संन्यासी, श्रद्धा का विराट केंद्र भीड़ और बेचैन व्यक्तियों की विकलांग आकांक्षाओं को उकेरता हुआ समय। मैं उस भीड़ में शामिल हो गया। भीड़ बढ़ी, बढ़कर छंट गयी ! संन्यासी निकला और फिर भीतर चला गया। अकेला रह गया मैं। मुझसे बातें की थीं उसने मेरे शरीर पर अपनी हथेलियां फेरी थीं, एक मुसकराहट और फिर शांति। . . . शांति किसे मिली—उसे या मुझे !

—मैं आज तक अशांत हूं और मैं शांति का यायावर हाथ में डंडा लिए एक पहरुए का काम कर रहा हूं।

—सारी रात खर्राटों के बीच मेरी चेतना सक्रिय है। लगता है, सुख के पड़ाव में एक चौकीदार खड़ा है, दुःख का डाकू हमला न कर दे !

—प्रश्नों के बोझ लौह-कवच की तरह आवृत्त किये हैं, क्या ये सब सुख की सांसें ले रहे हैं ?

—हर खर्राटे की अपनी अलग पहचान है। आखिर क्यों ? सभी के स्पंदन समान क्यों नहीं हैं ? . . . बार-बार करवटें, नींद की बड़बड़ाहट, स्थिर शरीर की बेचैनी-जैसे शव का सिहरना, और . . . बेसुध अलगाव !

—एक ही दायरे में असमानता का विस्तीर्ण विस्तार, अंधों के लिए लिखी गयी किसी पुस्तक का एक पृष्ठ है वह, शायद !

●

—सुख है कहां ?

- धन-संपत्ति और वैभव के बीच !
- सीलनभरी झोपड़ी !
- प्रिया की देह !
- पा लेने की तृप्ति !
- अपने विरोधियों पर विजय !

- स्वादिष्ट व्यंजन !
- दिन के पूर्व से पश्चिम की यात्रा के बीच अनहोनी का निषेध !

—और भी आयाम हैं बहुत से :

- धर्म
- पूजा-पाठ
- धर्माचारियों का सान्निध्य
- तथाकथित सिद्ध-पुरुषों का साक्षात्कार
- मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों और गिरजाघरों के व्यापक वातायन !

●

—मैं तब भी परेशान हूं।

—सारे अवयव निष्क्रिय जान पड़ते हैं मुझे, सुख पाने की लालसा रेसकोर्स का मैदान है !

—सारी दौड़-धूप कभी कुछ नहीं दे पाती, कभी बेलाग बैठे हुए, जैसे सोना बरस जाता है !

—दान देने में कभी सुख मिलता है, तो कभी किसी की हत्या करने में भी !

—हिलता हुआ पानी है, उसमें झांककर हम अपना चेहरा देखना चाहते हैं।

—कभी हम शुतुर्मुर्ग बन जाते हैं, तो कभी मदांध हाथी की तरह समूचे वातायन को वृक्ष की डाल समझकर अपने भीतर निगल जाने का उपक्रम करते हैं !

—हवा में बहते हुए झोंके हैं हम, या फटे हुए बेकार कागज अथवा सुबह का पढ़कर फेंका हुआ अखबार !

●

—सम्हालना हमारी सहज प्रक्रिया है !

—अपनी देह को सम्हालते हैं हम, तो अपने कपड़ों को भी। अपने सौंदर्य के प्रति सचेत हैं तो अपने अनुभवों की खाई में हीरों के स्वामी बनने का गर्व भी !

—युवा शक्ति से लेकर क्षीण-शक्ति तक की जीवन-यात्रा का हर पल हमारी आस्था है !

—इसी भ्रमजाल में रहने के हम आदी हैं; नहीं यही भ्रमजाल नैसर्गिक प्रक्रिया है शायद !

—मछुए के जाल में कैद होकर भी अथाह महासागर में स्वच्छंद तैरने का आनंद महसूस करने का भ्रम हमें सचेत नहीं करता !

—कैदी हैं हम, पर मन आजाद पक्षी है : वह मनमाने कुलांचे भरता है। कभी-कभी तो

चमगादड़ों की तरह अंधेरे में भी टक्कर खाता है !

—हर टकराहट का अपना मजा है !

—हर भ्रम का अपना स्वाद !

—हर दृष्टि की अपनी भाषा है !

—हर स्वार्थ के साथ सिद्धि और सिद्धि के साथ बृहत्तर जन-कल्याण की कल्पना है !

●

—कोई अपराधी नहीं बनना चाहता !

—कोई नहीं चाहता कि वह मनुष्यता से नीचे की सीढ़ी पर खड़ा किया जाए; आकांक्षा छत पर पहुंचने की है !

—फिर रोकता कौन है ?

—सारे आयाम विफल क्यों होते हैं ?

—महाशक्तिदायिनी पवित्र गंगा का तट भी तो रेत से भरा है !

—यही रेत हमारे मस्तिष्क के भीतर भी है; कितने लोग हैं जो इस रहस्य और तथ्य को जानते हैं !

—रेत का ताप मौसमी दबावों के अनुसार बदलता रहता है !

—तब बदलना या परिवर्तन एक धर्म हुआ, एक नियति हुई, एक ऐसी सार्थक संज्ञा हुई जिसका लिंग परिवर्तन हर क्रिया और कर्त्ता के बावजूद नहीं हो सकता !

●

—मेरे मित्र ! तुम्हारा आभारी हूं, कृतज्ञ हूं, मेरे जन्मदिन पर तुमने ज्ञान की पोथी दी है !

—काश! यह समझ पाते जिंदगी की हर पोथी अधूरी होती है ! हर ज्ञान अपूर्ण है और मनुष्यता की समूची जीवन-यात्रा उसी पूर्णता को पाने की है !

—ऐसे अगम्य और अनंत मार्ग के विस्तार में सुख की यात्रा की खोज मरुभूमि की मृगतृष्णा है। और इसलिए मृगतृष्णा के पीछे भटकने का अपना सुख है !

—मुझे यह सुख लूटने दो, शायद वही सारे दुःखों की दवा सिद्ध हो . . . शायद . . . शायद ही तो ! वरना एक दुःख से शुरू होनेवाली मानव-यात्रा अंततः दुःख में ही तो विलीन होगी; जैसे दुनियाभर के सारे सत्य अंततः परमसत्य में ही डूबते और तैरते हैं !

राजेन्द्र अवस्थी

आस्था के आयाम

बलिहारी गुरु आपने

बात सन १९४५-४६ की है, जब पाकिस्तान नहीं बना था उन दिनों लाहौर के एक कालेज में गणित के प्रोफेसर थे—अनिलेंद्र गंगोपाध्याय, बहुत सज्जन, कर्मठ और छात्रों के प्रिय 'मास्टर साहब' के नाम से लोकप्रिय थे। इन 'मास्टर साहब' का भी एक प्रिय छात्र था, बहुत ही होनहार और मेधावी।

३५ साल का लंबा समय गुजरता चला गया, गुजर गया। इस लंबे दौर में वह मेधावी छात्र विज्ञान के क्षेत्र में नये से नये आयाम खोलता हुआ सम्मान-दर-सम्मान पाता हुआ सर्वोच्च सम्मान को प्राप्त कर गया, और 'मास्टर साहब' लाहौर छोड़कर अपने घर कलकत्ता में आ बसे। लेकिन समय की इतनी लंबी दूरी उनके गुरु और शिष्य के संबंध में दूरी नहीं ला सकी।

विश्व का सर्वोच्च सम्मान, यानी भौतिक विज्ञान में नोबल पुरस्कार प्राप्त कर वह मेधावी छात्र जब भारत की यात्रा पर आया, तब वह अपने श्रद्धेय मास्टर साहब को नहीं भूला और दक्षिण कलकत्ता के एक भवन में निवास कर रहे वयोवृद्ध और रुग्ण 'मास्टर साहब' से मिलने गया। समय की दूरी को मिटाकर जब गुरु और शिष्य मिले, तो वह मिलन का दृश्य अद्भुत था।

शिष्य ने नोबल पुरस्कार में मिले अपने स्वर्ण-पदक को गुरु के चरणों में भेंटकर अपनी श्रद्धा अर्पित करते हुए कहा, "मास्टर साहब, आपने जो कुछ मुझे पढ़ाया था, वह इतना अधिक था कि उससे अधिक और कुछ मैंने नहीं पढ़ा, यह पदक आपके उसी ज्ञान की देन है, जो आपने मुझे दिया।"

वयोवृद्ध और रुग्ण 'मास्टर साहब' ने भावविभोर होकर स्वर्णपदक को अपने हाथ में उठा लिया। वह उसे देर तक गौर से देखते रहे और फिर अपने शिष्य को आशीर्वाद देते हुए उसे सौंप दिया।

प्रो. अनिलेंद्र गंगोपाध्याय का यह मेधावी छात्र कोई और नहीं, बल्कि पाकिस्तान के सुप्रसिद्ध भौतिकविज्ञानी प्रो. अब्दुस सलाम थे। प्रो. सलाम गत दिनों भारत की यात्रा पर आये थे और १९ जनवरी को अपने 'मास्टर साहब' से उनके घर पर मिलने गये थे। ●

जन्म १९०७... बधाई

नहीं भूलते ये प्रसंग

● महादेवी वर्मा

एक बार मुझे कालिदास समारोह में आमंत्रित किया गया। वहां कई मंत्रीगण भी आये हुए थे। मंत्रीजी को भाषण देना था और भाषण तैयार था नहीं। वे मुझसे कालिदास संबंधी जानकारी हासिल करने लगे। कालिदास कौन थे ? कहां जन्मे ? क्या-क्या लिखा आदि आदि। फिर उन्होंने पूछा, " कालिदास ने कोई नाटक भी लिखा है

मैं आश्चर्य से मंत्री महोदय की देख रही थी। जो कवि नाटककार के में ही जग-प्रसिद्ध हो, उसके जयंती-समा की अध्यक्षता करने आये मंत्री मह का साहित्य-ज्ञान कितना विशद था, आश्चर्य की बात है ?

मैं भिक्षु बनना चाहती

बहुत पुरानी बात है, तब मैं प्रीवियस पढ़ती थी। अचानक मन में विचार आ कि भिक्षु बन जाऊं। मैंने लंका के बौ विहार में महास्थविर को पत्र लिख उनसे कहा कि मैं भिक्षुणी बनना चाह

> अपने सृष्टा को अस्वीकार कर देना मनुष्य के हाथ में है, परंतु मनुष्य को अस्वीकार कर देना सृष्टा के हाथ में नहीं है। इसी से मेरे विचार में मृत्यु से अभय मनुष्य का उत्तराधिकार है।

हूं। दीक्षा के लिए मैं लंका आऊं या आप भारत आएंगे। उन्होंने उत्तर दिया--"हम भारत आ रहे हैं, नैनीताल में ठहरेंगे तुम वहां आकर मिल लेना।"

मैंने भिक्षुणी बनने का निश्चय कर लिया। अपनी सब संपत्ति दान कर दी। जब नैनीताल पहुंची, तो देखा वहां अंगरेजों का सा ठाठ-बाट है। मुझे लगा, यह कैसा भिक्षु है, भई! इतना तामझाम ही रखना है तो भिक्षु काहे को बनें। खैर, फिर भी मैं गयी। सिंहासन पर गुरुजी बैठे थे। उन्होंने चेहरे को पंखे से ढंक रखा था। उन्हें देखने को मैं दूसरी ओर बढ़ी, उन्होंने मुंह फेरकर फिर से चेहरा ढंक लिया। मैं देखने की कोशिश करती और वे चेहरा ढंक लेते। कई बार यही हुआ और हमें गुरु का चेहरा दिखायी नहीं दिया।

जब सचिव महोदय हमें वापस पहुंचाने बाहर तक आये, तब हमने उनसे पूछा—"महास्थविर मुख पर पंखा क्यों रखते हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया—"ये स्त्री का मुख-दर्शन नहीं करते!"

हमने अपने स्वभाव के वशीभूत उनसे साफ-साफ कह दिया—"देखिए, इतने दुर्बल व्यक्ति को हम गुरु नहीं बनाएंगे। आत्मा न तो स्त्री है न पुरुष, केवल मिट्टी के शरीर को इतना महत्त्व कि यह देखेंगे, वह नहीं देखेंगे।"

और हम वापस चले आये—बाद में, उनके कई पत्र आये, बार-बार पूछते—"आप कब दीक्षा लेंगी!" हमने कहा—"अब क्या दीक्षा लेंगे। इतने कमजोर मनोबल वाला हमें क्या देगा!"

यह बाजा जो आप बजा रहे हैं !

अखिल भारतीय संगीत का कार्यक्रम था। कई मंत्री महोदय भी आमंत्रित थे। अली अकबर खां सरोद बजा रहे थे। एक मंत्री महाशय, जो मेरे पास ही बैठे थे, मुझसे पूछने लगे, "बहन जी, इस बाजे का क्या नाम है?"

"इसे सरोद कहते हैं।" मैंने कहा।

वे बेचारे नाम रटते रहे। सरोद सरोद... सरोद। जब भाषण देने मंच पर पहुंचे तो नाम ही भूल गये। बहुत कोशिश की, लेकिन नाम याद ही न आया। हारकर अपने भाषण में उन्होंने वाद्य की ओर इशारा करते हुए कहा—"यह बाजा जो आप बजा रहे हैं....!"

सचिव महोदय का अपार ज्ञान !

मैं साहित्य अकादमी के सिलसिले में दिल्ली आयी थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से हमारे बहुत अच्छे संबंध

थे। उन्होंने मुझे अकादमी के सिलसिले में मौलाना आजाद से मिल लेने का सुझाव दिया।

मौलाना आजाद से मिलने मैं उनके ऑफिस पहुंची। उनके सचिव ने भीतर संदेश भिजवाया—

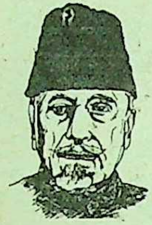

"साहब, कोई 'महा' आयी हैं, आपसे मिलने !" सचिव ने सोचा कि महिलाओं के नाम के साथ देवी लगता ही है। जैसे—सीता देवी, रमा देवी, राधा देवी। ऐसे ही ये भी महा देवी होंगी।

मुझे यह बात बहुत अजीब लगी। लौटकर मैंने जवाहर से शिकायत की—"कैसे कैसे लोगों के पास भेज देते हैं। जवाहर भाई ! सचिव को तो हमारा नाम तक नहीं मालूम !" और फिर वह किस्सा सुना दिया। जवाहर भाई ने यह शिकायत मौलाना तक पहुंचा दी। अगली बार मुझे एक पत्र मिला। सचिव ने अपनी गलती के लिए माफी मांगी थी। पत्र में लिखा था—'हम आपके नाम से भलीभांति परिचित हैं, जो कुछ हुआ उसके लिए खेद है।' सबसे हास्यास्पद बात अभी बाकी है, पत्र के ऊपर नाम लिखा था—'महादेव वर्मा !'

निरालाजी की स्वर्ण जयंती मनाने प्रस्ताव आया। बनारस में समारोह जाना था। निरालाजी ने मुझसे कहा—"संयोजक ने मुझे बुलाया है, वे मुझे थैली भेंट करेंगे।"

मैंने कहा—"देंगे तो क्या, देख लीजिए।" वे बोले—"तो पहले कर लें क्या ?" मुझे हंसी आ गयी, कहा—"न पहले बात न कीजिए, कुछ देंगे ही !"

निरालाजी बनारस गये। समा में संयोजकों ने उन्हें दस हजार रुपये करने की घोषणा की और एक बंद मंजू उनके हाथ में थमा दी।

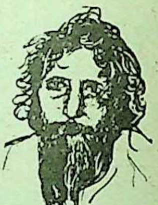

भाषण के अंत में निराला उठे मंच पर गये। घोषणा करने लगे कि भेंट की गयी धन-राशि में से एक ह अमुक व्यक्ति को दिया जाएगा, हजार अमुक व्यक्ति को, पांच सौ अ को और इस तरह सारी राशि बांट जब मंजूषा खोली, तब उसमें कुछ था ! निरालाजी ने संयोजकों से पूछा—"यह क्या मामला है ?"-

वे कहने लगे—"क्षमा कीजिए,

कम इकट्ठा हुआ था और जितना इकट्ठा हुआ था सब आयोजन में खर्च हो गया।"

"तो पहले क्यों नहीं बताया ? अब तो हम सबको दे चुके हैं।"

इलाहाबाद लौटे तो मेरे पास आये, बड़े दुखी, बहुत उदास ! हमने पूछा—"क्या बात है ?" कहने लगे—"हमने सब कुछ दे दिया और उसमें कुछ भी नहीं है !" हमें सारी बात समझ में आ गयी। "तो कहते क्यों नहीं कि कुछ भी नहीं दिया उन्होंने !"

आस्तिक जवाहरलाल

जवाहरलाल अकसर मुझसे कहा करते, "तुम बहुत आस्तिक हो पूजा-पाठ किया करती हो, मैं तो नास्तिक हूं भई, बिलकुल नास्तिक !"

"देखेंगे, यह तो वक्त ही बताएगा कि तुम आस्तिक हो या नास्तिक।" मैंने सहजता से यह बात कही थी।

कुछ दिनों बाद उनकी पत्नी कमला का देहांत हो गया। बीमार तो वे थीं ही। सारा घर शोक में डूब गया। जवाहरलाल को बहुत सदमा पहुचा था। वे शांत और गंभीर थे। खादी के सफेद कपड़े पहने, आस्था और श्रद्धा के साथ उन्होंने कमला का दाह-संस्कार किया। कमला की भस्म का थोड़ा-सा अंश सहेजकर उन्होंने डिबिया में रख लिया। उस डिबिया को वे अपने शयनागार में अपने सिरहाने रखा करते थे।

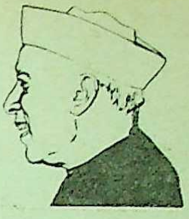

कुछ दिनों बाद, मैंने उनसे कहा, "अब बताओ जवाहर भाई, तुम आस्तिक हो या नास्तिक ?" "अभी तो आस्तिक हूं," वे बोले, "क्या करूं, मन नहीं मानता कि कमला नहीं है। मुझे लगता है, वह यहीं कहीं है, मेरे आस-पास चारों ओर उसी का चेहरा घूमता दिखायी देता है।" वे भाव विह्वल हो उठे थे।

व्यक्ति नहीं व्यंजन

एक बार कुछ आधुनिकाएं मुझसे मिलने आयीं। उन्होंने मुझसे पूछा—"बताइए, आपके जमाने में नारी अधिक मुक्त थी या हमारे आज के युग में ?" मैंने कहा, "हमारे जमाने में नारी अधिक मुक्त थी, वह व्यक्ति थी, और आप लोग तो व्यंजन हैं। व्यंजन में स्वतंत्रता होती ही कहां है ? उस जमाने में हम लोग जब खादी के कपड़े पहनकर सत्याग्रह या धरना के लिए निकला करतीं थीं, तो लोग बहुत आदर की दृष्टि से देखते थे। अगर शराब की दूकान पर भी चली जाती थीं, तो अच्छे-अच्छों का नशा उतर जाता था। आज तो नारी फैशन के जिस लिबास में रह रही है, उससे तो जो नहीं पिये हैं उन्हें भी नशा हो जाएगा और जो पिये हैं उनका तो कहना ही क्या ?

—१७ सी, अशोकनगर, न्याय मार्ग, इलाहाबाद

मेरी जीवन यात्र

● इन्दिरा गां

जिन दिनों मैं कान्वेंट में पढ़ रही थी, उन दिनों की बात है। नमक-सत्याग्रह के दौरान एक स्कूल में झंडारोहण समारोह था। फीरोज उसी स्कूल में पढ़ रहे थे। मेरे विचार से फीरोज ने पहले-पहल मुझे वहीं देखा। वहां किसी और व्यक्ति को झंडा फहराना था। मैं तो उनके साथ चली गयी थी, पर वहां लाठी चार्ज हो गया और झंडा फहरानेवाले व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया। मुझे झंडा थमाते हुए कहा, "इसे गि मत देना।"

उस समय मैं बहुत उत्तेजित हो थी। तनाव भी अनुभव कर रही थी, साथ ही मुझे झंडे की रक्षा करने का अ मान भी था। हालांकि धक्का-मुक्की मैं गिर पड़ी और मुझे चोट भी आ पर मैंने झंडा नहीं गिरने दिया इसके किसी ने मुझसे झंडा संभाल लिया। सहने का यह मेरा पहला अनुभव था।

बोलती नहीं कूक

इंगलैंड में मैं चीन विषयक समिति से भी संबंधित थी। एक कृष्ण मेनन ने मुझे एक बैठक के बारे फोन कर मदद मांगी। उन्होंने पूछा क्या मैं ऑक्सफोर्ड से आ सकती हूं? ऑक्सफोर्ड छोड़ने की अनुमति नहीं ऐसा करना वहां के कानून तोड़ना फिर भी मैं उस बैठक में गयी। कृष्ण मेनन की यह घोषणा सुनकर अब कुमारी नेहरू आपके सामने भा

श्रीमती इंदिरा गांधी की पुस्तक 'माई ट्रुथ' मूलरूप से फ्रांसीसी भाषा में छपी थी। उसके अंगरेजी अनुवाद से हिंदी में अनूदित होकर वह 'मेरी जीवन यात्रा' नाम से प्रकाशित हुई है। श्रीमती गांधी के जीवन-दर्शन और विचारों को समझने के लिए 'आत्मकथा' के रूप में देखी जा सकनेवाली यह संभवतः पहली पुस्तक है। यहां प्रस्तुत हैं इसी पुस्तक के कुछ रोचक अंश।

—संपादक

करेंगी।

मैं हतप्रभ रह गयी। मैंने केवल बचपन में ही बच्चों के सामने भाषण किये थे। बड़े लोगों में मैंने कभी भाषण नहीं किया था। मैं काफी घबरा गयी थी, खासकर इसलिए भी कि वह हाल काफी बड़ा था। वह शायद केक्सटन हाल था। पहले तो मैं कुछ बोल ही नहीं पायी, फिर जैसे-तैसे मुंह से कुछ निकला तो हाल में मौजूद शायद एक शराबी ने फिकरा कसा—"यह बोलती नहीं, कूकती है।" इसके साथ ही सारा हाल ठहाकों से गूंज उठा। उस दिन मैंने आम सभा में कभी भी भाषण न करने की कसम खायी थी।

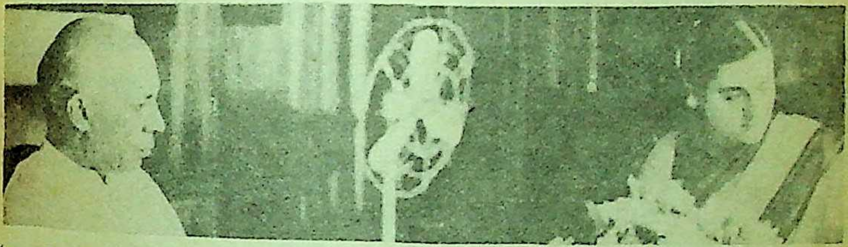

एक शब्द भी नहीं कहना है

जब हम दक्षिण अफरीका पहुंचे, तब अफरीकियों ने कहा—"हम एक हाल में आपके स्वागत का आयोजन करेंगे। हम आपका अभिनंदन करेंगे। उसके बाद आप भाषण कीजिएगा।"

मैंने कहा, "नहीं, नहीं, मैं एक शब्द भी नहीं कहूंगी। इसी शर्त पर मैं सभा में आऊंगी।"

वे तो सकते में आ गये। उन्होंने हाल तय कर, सारा इंतजाम कर लिया था, हार कर उन्होंने कहा, "आप मंच पर बैठी रहिएगा, हम किसी तरह लोगों को समझा देंगे कि आप क्यों नहीं भाषण कर रही हैं।"

नहीं, मुझे कुछ बोलना है

हमारा स्वागत शाम चार बजे रखा गया था। सुबह का सारा समय उन्होंने मुझे अफरीकी रेल कामगारों की बस्ती दिखाने के लिए रखा था। इस बस्ती की हालत इतनी बदतर थी कि मुझे इतना जोश आ गया कि जब शाम को सभा में घोषणा की गयी कि 'कुमारी नेहरू भाषण नहीं करेंगी' तो मैंने टेबल पर घूंसा मारते हुए कहा, "नहीं, मैं कुछ बोलना चाहती हूं।"

बेचारा अध्यक्ष अचरज में पड़ गया।

वह कुछ कहता कि मैं माइक्रोफोन के सामने पहुंच गयी। आज मुझे याद नहीं कि उस दिन मैंने क्या कहा, पर इतना तय है मैं बेहद जोश में थी। मैंने सर बांधू और अन्य लोगों की जिंदगी के बदतर हालात के बारे में जरूर कुछ कहा होगा। अफरीकी अखबारों में मेरे भाषण की खबरें छपीं। और दूसरे दिन मैं जहां भी गयी, लोगों की भीड़ ने मुझे घेर लिया। स्त्रियां मुझे चूमतीं, मुझसे हाथ मिलातीं। जाहिर था कि जहां तक उनका मामला था, मैंने सही तस्वीर खींची थी।

बच्चे अधिक संवेदनशील होते हैं

बच्चों में असाधारण ग्रहणशीलता होती है और झूठी या बनावटी बातों को वे फौरन पकड़ लेते हैं। यदि वे आप पर विश्वास करते हैं, आपका आदर क हैं, तो बहुत छोटी उमर में भी आ साथ सहयोग करने लगते हैं। मेरा बेटा राजीव बचपन में बेहद हं बच्चा था, पर जब वह तीन साल था, तब मेरे दूसरे बेटे का जन्म हु संयोग से इसी समय हमें इलाहाबाद अपने परिचित वातावरण को छो पड़ा। ऐसी और भी कई बातें एक घटित हुई। इससे वह कुछ परेशान गया। उन दिनों मेरी तबीयत भी नहीं थी और उसकी चीख-पुकार से बेहद खीझ होती थी। डांट-डपट से उ हालत और खराब हो गयी थी। इसलि मैंने समझाने-बुझाने से काम लेना चा मैंने उसे बताया कि मुझे उससे कि

यह आजादी के पहले की बात है। उन दिनों मैं स्वाधीनता-आंदोलन के सिल में कैद थी।

एक रात की बात है। हम सब नींद में थे कि एक दिल दहलानेवाली चीख सु उठ बैठे। चीख वार्डर जोहरा की थी। हालांकि, जोहरा सबसे खराब और ब वार्डर थी, फिर भी उस रात हमें उससे हमदर्दी हो आयी। हुआ यह कि ह कोठरी के सीखचों से कोई एक गज की दूरी पर, घंटे के नीचे एक भयानक बड़ा नाग कुंडली मारे बैठा था। कोठरियों का चक्कर लगाते वक्त जोहरा को यह घंटी ब पड़ती थी। जोहरा बुरी तरह डरी हुई थी। जहां उसे नाग के काटने का खतरा था, उसे नौकरी जाने का भी डर था। हम बैरक के भीतर तालाबंद थे। वह बाहरी के भीतर थी। वहां न तो लाठी थी और न कोई दूसरा हथियार ही था। जोहरा चीखों का बाहर खड़े संतरी पर कोई असर नहीं हो रहा था। वह कभी डर से ची कभी बेजान-सी होकर पुकारती, कभी कोसती, पर संतरी था कि टस से मस नहीं रहा था। वह वहीं से सांप के बारे में पूरी जानकारी चाहता था कि सांप ठीक किस स्थान पर है, कितना लंबा-चौड़ा है।

प्यार है, उसकी चीख-पुकार से मुझे उतनी ही परेशानी होती है।

"मैं क्या करूं।" उसने कहा, "मैं रोना नहीं चाहता पर रुलाई फूट ही पड़ती है।"

रोने का इलाज फव्वारा

मैंने उससे कहा, "अच्छा तो देखो, बगीचे में एक सुंदर-सा फव्वारा है। जब भी तुम रोना चाहो या चीखना चाहो तो वहीं जाकर रोया या चीखा करो।"

इसके बाद तो जब भी मैं देखती थी कि वह रोने ही वाला है, तब उसके कानों में फुसफुसा देती, "फव्वारा!" और वह तुरंत दौड़ जाता। बगीचे में उसका ध्यान बंटाने लायक बहुत-सी चीजें थीं। जल्दी ही, वहां पहुंचते ही वह अपनी परेशानिया

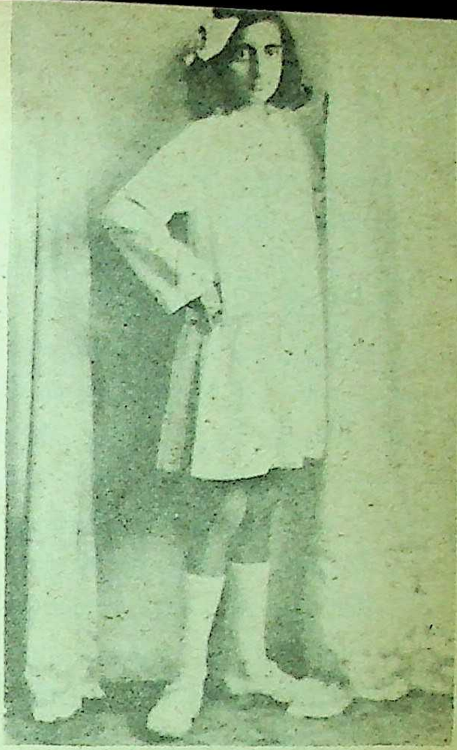

"अरे कमबख्त!" जोहरा चिल्लायी, "क्या मेरे पास दरजी का इंची-टेप है, जो मैं उसे सिर से पूंछ तक नापूं।"

काफी देर तक समझाने के बाद संतरी को मेट्रन को बुलाने के लिए मनाया जा सका। मेट्रन का घर तीन फर्लांग की दूरी पर था, संतरी ने उसे जगाया, और फिर उसने सुपरिंटेंडेंट को जगाया। इसके बाद दोनों महिला-बंदियों की कोठरियों की चाबी लेने मुख्य ऑफिस गये। जितनी देर में उनका यह छोटा-सा जुलूस हमारी कोठरी तक पहुंचा, हम सब खुद को ईश्वर-भरोसे छोड़कर सो गये। उधर सांप भी खिसक गया।

और एक दिन तो हम सब लोग जलकर मर जाने से ही बाल-बाल बचे। वह लड़ाई का जमाना था। और कैंटोनमेंट न केवल अंगरेजों, वरन अमरीकियों और कनाडियनों से भरा पड़ा था। एक कुशल कनाडियन विमान-चालक हमारी जेल के सुपरिंटेंडेंट की आकर्षक बेटी पर फिदा हो गया था। उस दिन वह अपनी आदत के अनुसार उसके घर के ऊपर काफी नीचे उड़ रहा था कि उसके विमान के पंख टेलिग्राफ के तार से टकरा गये और विस्फोट के साथ जल उठे। उसे बड़ी तेजी से गिरता देखकर हम घबरा उठे, पर वह जेल की दीवार को छूता हुआ पास के ही एक अधूरे बने बंगले से जा टकराया।

भूलने लगा।

आलू खाकर जिंदा रहेंगे

सितम्बर १९४७ में दिल्ली में भारत विभाजन के कारण दंगे भड़क उठे। उन दिनों मैं मसूरी में थी। दिल्ली से फोन आता, "अभी यहां बिलकुल मत आओ।"

मैं तरह-तरह के संदेहों से घिर गयी। मैं नहीं जानती थी कि वहां क्या हो रहा है। आखिरकार एक दिन मेरी फीरोज से, जो मेरे पिता के साथ थे, बात हो ही गयी। उन्होंने कहा, "और बातों के अलावा यहां हमारे पास खाने के लिए भी पर्याप्त सामग्री नहीं है, और आप यहां बच्चों को नहीं ला सकतीं।"

मैंने कहा, "मैं अपने साथ ढेर सारे आलू ले आऊंगी। आलुओं पर तो जिंदा रहा जा सकता है।"

तब उन्होंने बताया कि हालात बहुत खतरनाक हैं। मैंने कहा, "यदि हालात खतरनाक हैं, तो बजाय यहां अकेले बैठे रहने के मुझे वहां पहुंचना चाहिए।"

हम लोग देहरादून पहुंचे ही थे कि पता चला कि वहां अभी-अभी दंगा हुआ था। इसके बाद शाहदरा या किसी और स्टेशन तथा दिल्ली के बीच गाड़ी रुक गयी। यों, गाड़ी वहां रुकनी न थी। कोयले के कारण भारत की गाड़ियां काफी गंदी रहती हैं। दिल्ली पास आ गयी थी, मैं हाथ-मुह धो रही थी। यह देखने के लिए कि गाड़ी क्यों रुक गयी है,मैंने खिड़की के बाहर झांका, तो देखा, लोग किसी का पीछा कर रहे हैं। मैं तुरंत गाड़ी से उ पड़ी और किसी तरह स्थिति पर नियंत्र किया। मैं एक व्यक्ति को तो बचाने सफल हो गयी, पर दूसरा व्यक्ति का दूर था और बहुत सारे लोग उसका पी कर रहे थे। मैं टॉवल-गाउन में थी औ इसलिए कुछ ज्यादा कर भी नहीं सक थी। इसके बाद मैं घर पहुंची। मेरी तबी यत खराब थी। दरअसल इसी का मैं मसूरी भी गयी थी।

मेरे पिता ने मुझे शरणार्थी शिवि की देखभाल की सलाह दी। मैंने श्रीम जॉन मथाई के साथ इन शिविरों में का शुरू कर दिया।

यदि माओ भारत आ जा

सन १९५३ में हम चीन गये। व मैंने चाऊ एन लाई और माओ-त्से-तुंग भेंट की। माओ भारत नहीं आये। बाद मुझे बताया गया कि वे निमंत्रण की प्रती कर रहे थे। यदि हमने निमंत्रित किया हो तो कई बातें बिलकुल अलग होतीं। हमें तब पता चल जाता, तो निश्चित यह देश उनका जोरदार स्वागत कर उन्हें सम्मान देता।

मुझे चाऊ एन लाई अच्छे लगते वे सुविज्ञ थे। चीन में हम जितने लोगों मिले, उनमें केवल चाऊ एन लाई विदेश हो आये थे। वे बेहद नफासत प और विदेशी मामलों में कुशाग्र थे। वे ए दूसरी दृष्टि से सारी चीजों को देखते

जहां मां बनना एक शर्त है

● डॉ. शरद कुमार शर्मा

अमस्टरडम—हालैंड का विश्व-प्रसिद्ध बंदरगाह—आधुनिकता की चहल-पहल से भरपूर । अमस्टरडम से पचास मील दूर ही एक नगर है—स्टैफोर्स्ट, जहां की आधी आबादी (लगभग पांच हजार लोग) आज भी मध्य युग के संस्कारों और नियमों में जीती है ।

इन नियमों का पालन करने वाले समाज में लड़कियों को अपरिचितों और डाक्टरों से बात करने की सख्त मनाही है। उन्हें टेलिविजन देखने, पब में जाने, यहां तक कि नाचने की भी अनुमति नहीं होती । वे किसी प्रकार का बनाव-सिंगार भी नहीं कर सकतीं। लेकिन हर लड़की के लिए यह जरूरी है कि वह शादी के पूर्व ही मां बने। मध्ययुग से भी प्राचीन एक कबीले का यह कानून एक आधुनिक चर्च संगठन के अनुयायियों पर आज भी उतनी ही सख्ती से लागू होता है ।

एक अनोखी शर्त

प्रचलित कानून के अनुसार हर लड़की की विवाह से पहले जांच अवश्य की जाती है। उसी लड़की को विवाह के योग्य माना जाता है जो मां बनने की अपनी योग्यता प्रमाणित कर चुकी हो, शादी से पहले ही मां बनकर और लड़की को उसी पुरुष से शादी करनी पड़ती है, जिसके बच्चे की वह मां बनने वाली हो, भले ही वह उसे प्यार न करती हो। एक मुक्तभोगिनी महिला मार्ट स्खोमेकर के अनुसार “यह हमारे यहां की रीति है। हम स्त्रियों को शादी से पहले यह साबित करना जरूरी है कि हममें बच्चे पैदा करने की क्षमता मौजूद है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ।

मुझे भी अपने बच्चे के पिता से ही शादी करनी पड़ी हालांकि मैं उससे प्यार नहीं करती थी।"

मां-बाप की सहमति

लड़की के मां-बाप विवाह-पूर्व मां बनने में उसकी सहायता करते हैं। जिस घर में विवाह-योग्य लड़की होती है, उसके दरवाजे में अंदर झांकने के लिए बने छेद के पास तांबे की एक प्लेट लगी रहती है। यह दिल के आकार की होती है। इस प्लेट की पॉलिश के चमकती हुई होने का अर्थ है कि लड़की खाली है। इस प्लेट को देखकर युवक लड़की के मां-बाप के पास आता है। उनके साथ देर रात तक खाता-पीता है। खाने-पीने के बाद मां-बाप जान-बूझकर थके होने का बहाना करते हैं और सोने चले जाते हैं। युवक भी विदा लेकर मकान से बाहर निकल आता है।

प्यार की खिड़की

लड़की का कमरा निचली मंजिल पर ही होता है। उसका दरवाजा भी बाहर की ओर ही खुलता है। इसे 'प्यार की खिड़की' कहा जाता है। मां-बाप से विदा लेकर बाहर निकला युवक इस 'प्यार की खिड़की' के रास्ते लड़की के कमरे में आ जाता है।

यदि यह रात शनिवार की रात तो युवक अधिक समय तक लड़की के सा रहने का सुख प्राप्त नहीं कर सकता आधी रात से पहले ही उसे वहां से जाना पड़ता है क्योंकि रविवार को प्या करने पर प्रतिबंध होता है। सप्ताह अंतिम दिन के विश्राम का यह निय इतनी कठोरता से लागू होता है कि इ दिन पालतू मुरगों तक को मुरगियों अलग कर दिया जाता है। यहां तक तस्वीरों और शीशों का मुंह भी उल कर दीवार की ओर कर दिया जाता है।

दुर्भाग्य को निमंत्र

यदि कोई युवक अपने 'संपर्क' में आ लड़की से प्यार न करने के कारण शाद से इनकार करता है तो उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। उसे गोबर भरी गाड़ी में चढ़ाकर नगर भर में घुमाया जाता है। टहनियों और पत्तियों पर गोबर थोपकर एक द्वार उसके घर के आगे बना दिया जाता है। इसे 'शर्म का द्वार' कहा जाता है। यही हाल उस विवाहित स्त्री पुरुष का होता है जिस पर अपने जीवन साथी के अलावा अन्य व्यक्ति से मैत्री रखने का आरोप हो।

शादी से इनकार का दंड

दूसरे विश्वयुद्ध के कुछ ही दिन बाद की बात है। स्टैफोर्स्ट में रॉलोफ टाईमैन नाम एक व्यक्ति पर आरोप लगाया गया कि उसने अपने संपर्क में आयी लड़की से शाद करने से इनकार किया है। फलस्वरूप उसे तीन दिन तक गोबर की गाड़ी में नग में घुमाया गया। अंत में, उसे उसी लड़की से शादी करनी पड़ी।

इस घटना के कई वर्ष बाद उसने कहा, "मुझे सजा ठीक ही दी गयी थी।

फिल्म समारोह: कुछ सार्थक प्रश्न

स्थान: विज्ञान भवन
फिल्म: सबीना

हाल में प्रवेश के लिए एक लंबा क्यू, आंखों में बच्चों-जैसी उत्सुकता लिये चुस्त-दुरुस्त पुरुष, सजी-धजी स्त्रियां। हम अपना परिचय-पत्र दिखलाकर किसी तरह भीतर प्रवेश करते हैं। एक मेले का आलम। मद्धम रोशनी में एक सुंदर-सी मार्गदर्शिका हमारा परिचय-पत्र देखकर एक पंक्ति की ओर इशारा करती है। हम वहां पहुंचते हैं, पर हर कुरसी पर कोई बैठा है। ये कुरसियां फिल्म-समीक्षकों और फिल्म-समारोह में आये प्रतिनिधियों के लिए सुरक्षित हैं, पर उन पर और लोग जमे हुए हैं। हम एक पंक्ति में कुछ कुरसियां खाली देखकर बैठ जाते हैं। कुछ देर बाद हमारे दोस्त बासु भट्टाचार्य भी

द अननोन सोल्जर्स पेटंट लेदर शूज' (बलगारिया) एवं 'आक्रोश' (भारत) को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए संयुक्त रूप से स्वर्ण मयूर।

ए पीरियड ऑव ट्रांजिशन' (डेनमार्क) सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म : स्वर्ण मयूर (इटली)

फीचर फिल्म में सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए रजत मयूर--'वेनेशियन लाइज़' (इटली) के निर्देशक स्टीफानो रोला लघु फिल्म के लिए--'अराइवल' (भारत) के निर्देशक मणि कौल को।

सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए रजत मयूर 'बेलिट फेबियन मीट्स गॉड' (इटली) के 'गबोर कोवेज' एवं 'सबीना' (स्वीडन-स्पेन) की अभिनेत्री एंजेला मोलिना को।

फीचर फिल्म 'लव ब्रुइड इन द अफ्रीकन पॉट' (घाना) एवं लघु फीचर फिल्म 'सिनोटेक्निका' (इटली) को, रजत मयूर पुरस्कार।

सदल-बल आ जमते हैं।

परदे पर फिल्म शुरू होती है और हाल में नाटक। 'पुलिस'—'पुलिस' की चीख-पुकार। मारपीट की सीमा को छूने से जरा-सा बचती लोगों की उत्तेजना। सबका कारण एक—व्यवस्थापकों की घोर अव्यवस्था।

'सबीना' एक स्पेनिश फिल्म थी। दोपहर में भी दिखायी गयी थी और शहर में हवा फैल गयी थी कि वह 'हॉट' है। दक्षिणी स्पेन की पृष्ठभूमि पर बनी यह फिल्म बेहद खूबसूरत थी। उसकी नायिका एंजेला मोलिना को सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए 'रजत मयूर' का पुरस्कार भी बाद में मिला।

'सबीना' दो प्रतिद्वंद्वी लेखक मित्रों—माइकेल और फिलिप—एवं तीन स्त्रियों डेजी, मोनिका और पेया की पारस्परिक स्पर्धा की कहानी थी। एक अर्धविक्षिप्त भाई की बहन पेया पर विवाहित माइकेल आसक्त है। पेया का एक मंगेतर है, पर वह माइकेल को भी चाहती है, लेकिन समर्पण फिलिप को करती है। ईर्ष्या की आग में जलता माइकेल 'सबीना' को ढूंढ़ने के बहाने एक रहस्यमयी गुफा में फिलिप को ले जाता है, कभी न वापस लौटने के लिए। 'सबीना' के बारे में किंवदंतियां प्रचलित हैं कि वह प्रणय के बाद अपने प्रेमी को मार डालती है।

फिल्म बेहद रोमांचक थी और उससे भी रोमांचक थी हॉल में जगह-जगह कुरसियों के लिए होनेवाली लड़ाई, जो बाद के दो दिनों में इतनी भयंकर हो गयी कि स्वयं केंद्रीय सूचना मंत्री श्री वसंत साठे को हस्तक्षेप करना पड़ा। हमने स्वयं देखा कि बासु भट्टाचार्य-जैसे निर्माता-निर्देशक को भी स्थान के लिए अधिकारियों एवं 'टिकट-होल्डर' दर्शकों से 'जूझना' पड़ा। विज्ञान-भवन दुर्व्यवस्था का जीता-जागता नमूना था।

स्थान : प्लाजा
फिल्म : ऑटम सानेटा

इंगमार बर्कमेन द्वारा निर्देशित एवं इंग्रिड बर्गमेन एवं लिव उल्लीमान द्वारा अभिनीत 'ऑटम सानेटा' अपने 'कैरियर' के लिए परिवार को भूल जानेवाली प्यानोवादिका शारलोटे की दुखद कहानी थी। शारलोटे के 'कैरियर' के प्रति समर्पण ने उसके परिवार को पंगु बना दिया है। शारलोटे पति को, दोनों बेटियों को, जिनमें एक अपंग है, उपेक्षित कर अपने एक इतालवी प्रेमी के साथ जीवन बिताती है। प्रेमी की मृत्यु के बाद वह अपनी बेटी ईवा के अनुरोध पर उसके पास कुछ समय बिताने आती है।

ईवा पहले तो अपनी मां से प्यार से मिलती है, लेकिन बाद में वह मां पर घर की, पति की, बेटियों की घोर उपेक्षा का आरोप लगाकर उसे अपराधी करार कर देती है। लेकिन मां का अपना बचपन भी इसी तरह की उपेक्षा में बीता है। 'ऑटम - सानेटा' एक दुखांत कविता की तरह मर्मस्पर्शी थी, लेकिन कुछ दर्शक थे, जिन्होंने उसे 'बोर' समझा।

यह भारतीय दर्शकों के एक वर्ग की उस मानसिकता का प्रमाण था, जो हर पश्चिमी फिल्म में 'नग्न दृश्यों' की चाहना करती है।

स्थान : अर्चना
फिल्म : दि गार्डन ऑब डिलाइट

एक कार-दुर्घटना में अपाहिज और फिर पक्षाघात से ग्रस्त ४५ वर्षीय एंटोनियो कानो, एक धनाढ्य, मेधावी व्यवसायी। एंटोनियो का एकाएक अपाहिज हो जाना न केवल उसके परिवार वरन उसकी मित्र-मंडली के लिए भी गहरी विपदा सिद्ध होता है। कारण, बैंकों से केवल एंटोनियो के हस्ताक्षर द्वारा ही पैसा निकाला जा सकता है, और एंटोनियो ऐसा करने में बिलकुल असमर्थ है। मगर वह इस स्थिति का मजा ले रहा है, तरह-तरह की विचित्र कल्पनाएं कर! स्पेन के विख्यात निर्देशक कारलोस सौरा की यह एक सशक्त कृति थी।

हाल से निकलने के बाद हमसे एक अधिकारी-मित्र ने पूछा, "कहिए, फिल्म

अच्छी लगी ?" हम कोई उत्तर देते कि पीछे से आवाज आयी, "जी खाक अच्छी थी, बिलकुल बकवास। ऐवेई वक्त बरबाद हुआ।"

स्थान. विज्ञान भवन

फिल्म : 'दि विलेज गर्ल'

एक छोटे से देश इंडोनेसिया की फिल्म होने के नाते 'दि विलेज गर्ल' के प्रति औरों की तरह हममें भी कोई विशेष उत्साह नहीं था, लेकिन पूरी फिल्म देखने के बाद हम स्वयं को खुशकिस्मत समझते रहे कि यदि न आते तो एक बहुत अच्छी फिल्म देखने से वंचित रह जाते। 'दि विलेज गर्ल' में उठायी गयी समस्याएं किसी एक देश की नहीं, बल्कि सारे विकसित, अर्द्ध-विकसित, अविकसित देशों की भी समस्याएं हैं। एक ओर हैं पश्चिमी नृत्य-संगीत के प्रेमी युवक-युवतियां, जिनके नेता चार तस्कर युवक हैं। दूसरी ओर हैं, परंपरागत जीवन में विश्वास रखनेवाले मध्य-वर्गीय लोग। सुमीराह एक अंडे बेचनेवाली नवयुवती है, जो उन चार तस्करों के बलात्कार का शिकार होती है। सतर्क प्रेस सुमीराह का मामला उठाता है तो भ्रष्ट पुलिस उसे (सुमीराह को) ही अपराधी सिद्ध कर देती है। पुलिस गवाहों द्वारा सिद्ध करना चाहती है कि सुमीराह ने स्वेच्छा से वह सब किया था, लेकिन अंत में अदालत सुमीराह को निर्दोष घोषित कर देती है।

यह फिल्म देखते हुए हमें इसी समस्या पर अपने देश में बनी एक बहुचर्चित फिल्म याद आती रही। दोनों फिल्मों में समस्या एक ही थी लेकिन उसके निर्वाह में आकाश-पाताल का अंतर था। 'दि विलेज गर्ल' में युवकों की वासना की शिकार सुमीराह के प्रति दर्शक के मन में सहानुभूति पैदा होती थी। और, पुलिस से आतंकित सुमीराह ने जब सारा भय त्यागकर अदालत में अपने साथ हुए अत्याचार की रुलाईभरी स्वीकृति दी, तो सांस थामे दर्शक, जो चाहते थे कि वह अन्याय के खिलाफ जबान खोले, ताली बजा उठे। तालियां तो भारतीय फिल्म में भी बजीं, पर तब जब (खल) नायक एक किशोरी को विवस्त्र करने का अनुरोध करता है और वह रोते-रोते विवस्त्र होती है। इस फिल्म की विडंबना यह है कि इस दृश्य पर, जहां दर्शक के मन में आक्रोश पैदा होना चाहिए, वह आनंद से सीटियां बजाता है!

आठवां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह समाप्त हो चुका है। कुछ लोगों ने उं जाने क्यों 'फ्लॉप' कहा है। हमारी राय में ऐसा कहना ज्यादती होगी। इस फिल्म-समारोह की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसमें प्रदर्शित फिल्मों ने पहली बार भारतीय दर्शकों का यह भ्रम तोड़ा है कि वे मात्र 'हॉट' होती हैं। पुरस्कार के लिए प्रतियोगिता में आयी 'डेथ मेड टू मेजर', 'द अननोन सोल्जर्स पेटेंट शूज', 'चार्ली ब्रेवो', 'मि. स्लाटर्स सिलवर जुबली' और 'वेलित फेबियन मीट्स गॉड' कुछ ऐसी ही अच्छी फिल्में थीं। ●

सं

प्रसंग

लोटपो

यदि

बीच

सदन

का क

लोकस

अपनी

भारतीय संसद जिंदादिलों की दास्तान

• शिवकुमार गोयल

संसद के दोनों सदनों राज्यसभा तथा लोकसभा में अनेक बार ऐसे रोचक प्रसंग आते हैं, जबकि सदस्य हंसते-हंसते लोटपोट हो जाते हैं। कुछ वरिष्ठ सदस्य यदि संसद की कार्यवाही के दौरान बीच-बीच में व्यंग्य-बाणों का प्रयोग न करें तो सदन की गंभीरता सदस्यों के लिये ऊब का कारण बन सकती है। इसीलिये प्रथम लोकसभा के अध्यक्ष श्री मावलंकर ने अपनी विदाई के समय कहा था—"मैं सबसे अधिक आभारी उन सदस्यों का हूं जो बीच बीच में व्यंग्य-विनोद का पुट देकर, गंभीर वातावरण को रोचक बनाने में योगदान करते रहे हैं। यदि ऐसा न हो पाता तो शायद मैं कभी का अध्यक्ष पद छोड़कर मैदान से भाग लेता।"

पहली लोकसभा में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी, श्री हरिविष्णु कामथ, आचार्य जे. बी. कृपलानी, डॉ. नारायण भास्कर खरे, श्रीपाद अमृत डांगे जैसे धाकड़ विपक्षी सदस्य थे जिनके व्यंग्य-बाणों की बौछारों से प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू तक तिलमिला उठते थे। परंतु नेहरूजी का व्यक्तित्व ऐसा था कि वे इन व्यंग्यों का प्रत्युत्तर और भी तेज व्यंग्य से देकर सदन का माहौल ही बदल डालते थे।

पहली लोकसभा में प्रायः नेहरूजी तथा विपक्ष के तेजस्वी नेता डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के बीच तेज-तर्रार नोक-झोंक होती रहती थी। इस नोकझोंक को पुराने नेता डॉ. खरे, अपने मसखरे स्वभाव से, हास्य-विनोद में बदल डालते थे।

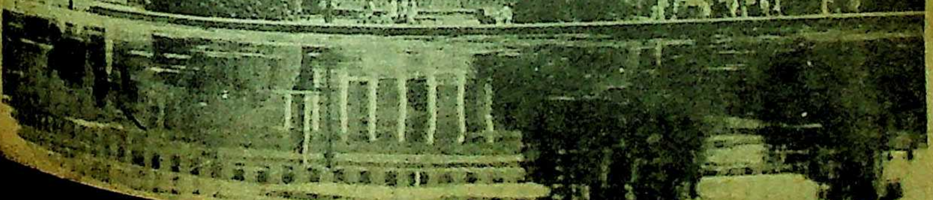

तारकेश्वरी सिन्हा

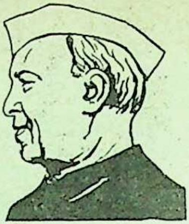

प· नेहरू

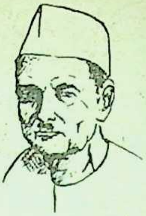

जी·वी· मावलंकर

जे·बी·कृपलानी

पुरुष हैं या महिला

लोकसभा में महिलाओं के संबंध में गैर सरकारी विधेयक पर जोरदार चर्चा हो रही थी। एक विपक्षी सदस्य ने महिलाओं पर अत्याचारों के बारे में जोरदार भाषण किया। भाषण जैसे ही समाप्त हुआ और सदस्य करतल ध्वनि कर रहे थे कि नेहरूजी सदन में आ पहुंचे।

वे बोले—"मैं जानना चाहता हूं कि महिलाओं के समर्थन में जिन्होंने अभी जोरदार भाषण किया था वह सदस्य पुरुष हैं या महिला" ? इतना कहना था कि सदन पुनः जोरदार तालियों से गूंज उठा।

बुद्धिमान

एक बार लोकसभा में श्री चिन्तामणि देशमुख ने संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन का समर्थन करते हुए कहा—"महाराष्ट्र का हर बुद्धिजीवी इस आंदोलन के साथ है।" गृहमंत्री श्री पंतजी भला कब चूकनेवाले थे। उन्होंने बीच में ही कहा—"परंतु बुद्धिमान लोग तो महाराष्ट्र छोड़कर अन्य राज्यों में बस चुके हैं।" (पंतजी के पुरखे महाराष्ट्र से ही अल्मोड़ा आकर बसे थे।)

इतना कहना था कि श्री देशमुख ने हंसी के बीच कहा—"पंतजी ठीक कह रहे हैं। बुद्धिमत्ता राज्य से बाहर चली गयी है, परंतु सूझबूझवाले व्यक्ति अभी वहीं हैं।"

आंखें लड़ाने का मौका

श्री रामसहाय पाण्डेय प्रश्नोत्तरकाल के दौरान पूरक प्रश्न पूछ रहे थे। तीसरी बार प्रश्न पूछने पर सभापति गंभीर हो गये तथा बोले—"आप बार-बार क्यों उठ खड़े होते हैं ?"

"श्रीमन यही समय तो आपसे आंखें लड़ाने का होता है"—श्री पाण्डेय के कहते ही सभापति मुस्करा दिये।

हम तो हैं तेरे दीवानों में

इसी प्रकार शिक्षामंत्री श्री छागला साहब एक बार प्रकाशवीरजी की किसी टिप्पणी से नाराज हो गये।

शास्त्रीजी धीरे से उठे और बोले—

"तुम प्यार करो या ठुकराओ
हम तो हैं तेरे दीवानों में"

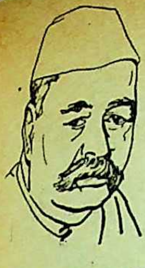
गो॰वल्लभ पंत

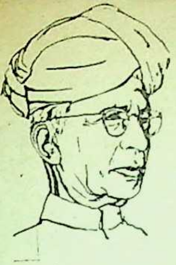
डा॰राधाकृष्णन

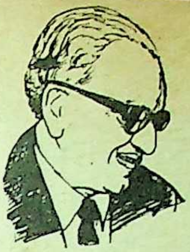
मो॰क॰छागला

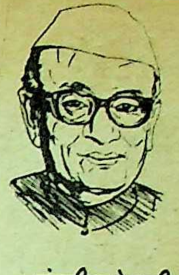
संजीव रेड्डी

किसे देखकर आप शरमाइएगा ?

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी लोकसभा में बोलने खड़ी हुईं कि विरोधी पक्ष के सदस्यों ने बीच में खड़े होकर होहल्ला मचाना शुरू कर दिया।

"अध्यक्ष महोदय, इन सदस्यों को समझाइये कि जब मैं उनके वारों को चुपचाप सहन करती हूं तो वे मेरे भाषण में हस्तक्षेप क्यों कर रहे हैं ?"—श्रीमती गांधी ने कहा।

इस पर अध्यक्ष श्री संजीव रेड्डी ने विरोधी सदस्यों को झिड़की दी—"आपके इस व्यवहार से तो सदन की कार्यवाही चलनी मुश्किल हो जायेगी।"

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा ने खड़े होकर शेर पढ़ा—

"जो हम न होंगे तो क्या रंगे महफिल
किसे देखकर आप शरमाइएगा"

तिलक बनाम जनसंघी

लोकसभा में कृषिमंत्री राव वीरेन्द्रसिंह ने जैसे ही एक सदस्य के माथे के तिलक को देखकर कहा—"आप तिलक के कारण जनसंघी मालूम पड़ते हैं।"

प्रतिदिन माथे पर गहरा लाल टीका लगानेवाले काशीवासी पंडित कमलापति त्रिपाठी भला इस पर चुप कैसे रह सकते थे ? उन्होंने खड़े होकर कहा—"श्रीमान, मुझे इस बात पर आपत्ति है कि हर तिलकवाले को जनसंघी कहा जाए। मैं जनसंघी नहीं हूं, पर तिलक लगाता हूं।

पूरा सदन हंसी में डूब गया।

सीता, ही नहीं राधाकृष्ण भी

राज्यसभा में प्रश्नोत्तरकाल का समय था। पहला प्रश्न पूछा सीता परमानंद ने। दूसरा प्रश्न किया सावित्री देवी ने तथा तीसरा पार्वती देवी ने। सभापति डॉ. राधाकृष्णन हंस पड़े—"ओह हमारे बीच तो सीता, सावित्री, पार्वती और लक्ष्मी सभी विद्यमान हैं।"

"जी हां, सभापति महोदय," रक्षामंत्री श्री महावीर त्यागी बीच में ही बोल उठे—"सीता, सावित्री और पार्वती ही नहीं साक्षात राधाकृष्ण भी तो उपस्थित हैं" और सदन अट्टहासों से गूंज उठा।

राशि जमा करो

राज्यसभा में एक उद्योगपति सदस्य ने शिकायत की कि नेहरू स्मारक कोष में जमा धन के बारे में अनेक शिकायतें मिल रही हैं। इस कथित घोटाले की जांच करायी जानी चाहिये। प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री तुरंत खड़े हुए तथा बोले—"माननीय सदस्य को अपनी ओर से अच्छी बड़ी राशि इस कोष में दान करनी चाहिये। फिर उन्हें पता चल जायेगा कि उनकी दी गयी रकम जमा की गयी है या नहीं?"

गधों की कमी नहीं है

उन्हीं दिनों चीनी आक्रमण को देखते हुए रक्षा व्यवस्था को और मजबूत बनाने के बारे में लोकसभा में चर्चा चल रही थी।

ऊंचाई के क्षेत्रों तक सेना को रसद पहुंचाने के लिये खच्चरों की कमी को दूर करने के लिये खच्चरों के आयात का सुझाव दिया गया।

श्री तुलसीदास जाधव ने कहा—"क्या देश में गधों व खच्चरों की कमी है जो बाहर से मंगवाने को बाध्य होना पड़ रहा है?" रक्षा मंत्री श्री चव्हाण उत्तर देने के लिये जैसे ही खड़े हुए कि नेहरूजी ने उन्हें संकेत से बिठा दिया और स्वयं बोले—

"अध्यक्ष महोदय, अभी तक तो सरकार का अनुमान यही था कि कमी है। परंतु अब माननीय सदस्य की बात सुनने के बाद सरकार को पता चल गया है कि गधों की कोई कमी नहीं है तथा अब उनका आयात नहीं किया जायेगा।"

इस पर सदन में जोरदार ठहाका लग गया।

आपत्ति मेरी पत्नी को हो सकती है

सरदार गुरदयालसिंह ढिल्लों पहली बार लोकसभा के अध्यक्ष चुने गये तो दिल्ली के एक अंगरेजी दैनिक में असावधानी के कारण उनकी जगह पंजाब के ब्रिगेडियर ढिल्लों का चित्र छप गया।

दूसरे सदन में एक सदस्य ने इसे संसद की अवमानना बताते हुए विशेषाधिकार का प्रश्न उठा दिया। उन्होंने कहा—"ढिल्लों साहब चुना तो हमने आपको है परंतु पत्र ने दूसरे का फोटो छाप दिया।"

श्री ढिल्लों खड़े हुए और बोले—"मेरी जगह दूसरे का चित्र देखकर आपत्ति मेरी पत्नी को हो सकती है, माननीय सदस्य को नहीं"। सदन खिलखिलाकर हंस पड़ा।

—पिलखुवा, गाजियाबाद

जेल-डॉक्टर की डायरी (५)

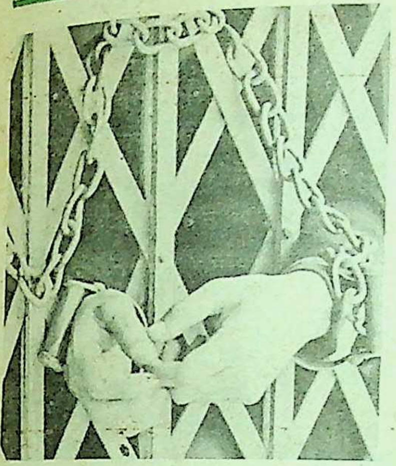

जेल जहां कैदी राज करते हैं

● डॉ. महेशनारायण

एक सेंट्रल जेल है। वह प्रांत के ऐसे कैदियों के लिए बना है, जो लाइलाज हैं, कानून को मान्यता ही नहीं देते। सारे प्रांत के ऐसे बंदी यहीं लाकर रखे जाते हैं। किसी जेल में जो कैदी अधिकारियों के लिए सिर-दर्द बना रहता है उसे यहीं भेज दिया जाता है। कहने का मतलब यह कि यहां साधारण नहीं केवल असाधारण बंदी रखे जाते हैं। स्पेशल जेल, स्पेशल बंदी। वहां उन्हें बहुत तरह का सुभीता रहता था। जो चाहें खायें, जब चाहें तब बंद हों। शायद इससे मानस का सुधार हो सके। पर सुधार की जगह इस सुभीते का दुरुपयोग हुआ। मनमाना भोजन, मनमानी बात। मुसटंड बने घूमते-फिरते। ऐसे बदमाशों का वहां धीरे-धीरे एक बड़ा गिरोह तैयार हो गया। किसी दूसरी जेल जाना नहीं था। सब जगहों से तो निष्कासित थे। सुपरिटेंडेंट, जेलर, जमादार, सिपाही सब उनसे भयभीत रहते। अगर कहीं कुछ कांड कर बैठे, तो बदनामी, बदली, निलंबन सब हो सकता है। सरकार बंदियों का ही पक्ष लेगी, उनका बहुमत है। जनतंत्र बहुमत की ही भावनाओं का आदर करता है। ऐसी धारणा जेल-कर्मचारियों की हो गयी थी। अतः उन पर प्रेम से ही शासन होता, बल-प्रयोग नहीं किया जाता। इससे उनका मन बढ़ गया।

जेल कैदियों के कब्जे में

कई छोटी-मोटी घटनाएं लगातार होती गयीं। सिपाहियों से मुठभेड़, छत पर चढ़ना, शाम को बंद नहीं होना इत्यादि। कई बार कई-कई दिन समूचे जेल पर ही कब्जा कर लेते। किसी स्टाफ को भीतर ही नहीं घुसने देते। कई जेल सुपरिटेंडेंट बदले गये। नतीजा यह हुआ

कि कोई स्टाफ वहां बदलकर जाना ही नहीं चाहे। छुट्टी ले ले। जेल एक तरह से कैदियों द्वारा स्वशासित हो गया। लाचार एक कड़ियल जेल-सुपरिंटेंडेंट की वहां बदली की गयी। उन्होंने एकदम कड़ाई से काम लेना शुरू किया। कैदी उन्हें डराने के लिए छत पर चढ़ गये। साहब इससे जरा भी डिगे नहीं। सब समझाना-बुझाना बेकार हो गया, जेल के भीतर किसी स्टाफ का जाना असंभव हो गया, तब साहब ने साहसकर लाठी-गोली का सहारा लिया। एक बड़ी सशस्त्र फोर्स के साथ स्वयं भीतर घुसे। अंधाधुंध गोली-लाठी चली। कैदियों की ओर से तीर, ढेला और पिस्तौल। मुठभेड़ के पश्चात कैदी परास्त हुए। बहुत मारे गये, कुछ जख्मी हुए। कुछ को दूसरी जेलों में हटाया गया। तलाशी ली गयी। उसमें बम-पिस्तौल, बंदूक-छुरा, तलवार, घातक अस्त्र कैदियों के कक्ष से बरामद हुए। जेल में शांति हुई। पर यह प्रश्न उठता है ऐसे सामान उनके पास बाहर से पहुंचा कैसे? कौन ले गया। उद्देश्य क्या था? क्या वह वफादार कर्मचारी था? रोका क्यों नहीं गया? यह व्यापार चलता रहा और अधिकारियों को मालूम क्यों नहीं हुआ? क्या जान-बूझकर उन्होंने लापरवाही की, या स्थिति पर उनसे काबू नहीं हो रहा था। वैसी हालत में सरकार को उन्होंने सूचना क्यों नहीं दी? और अगर दी, तो सरकार ने क्या कार्यवाही की? पहले ही सेना की मदद से सब को निरस्त्र क्यों नहीं किया जा सका, ताकि इतना खून-खराब नहीं होता। इस जवांमर्द सुपरिंटेंडेंट के इस साहसिक कार्य, पुराने वर्षों के खतरनाक खूनियों को उखाड़ फेकने का क्या पुरस्कार दिया गया, जिससे दूसरे उत्साहित हों? सुपरिटेंडेंट साहब, जेल में शांति का वातावरण उपस्थित हो जाने के कुछ दिन बाद सस्पेंड कर दिये गये। बहुत दिनों तक वे दिल्ली से दौलताबाद करते रहे, तब जाकर उन्हें उससे नीचे दर्जे की जगह दी गयी।

ऐसी घटनाएं क्यों होती हैं

तब प्रश्न उठता हैं, ऐसी घटनायें आखिर होती क्यों है? क्या इन्हें रोका नहीं जा सकता? क्या कुछ सुधार संभव है या यह लाइलाज मर्ज है? कैदियों में कुछ, जो इस तरह की कार्यवाहियों का नेतृत्व करते हैं, वे बड़े कट्टर और कठजीव होते हैं। मरने-मारने की, मार खाने की उन्हें परवाह नहीं रहती। घर-गृहस्थी के सुख को सदा के लिए तिलांजलि दिये रहते हैं। 'लूट के लाना और कूट के खाना' यही अपना उद्देश्य, आदर्श वाक्य बनाये रहते हैं। इसके लिए सब तरह की कुरबानी करने को तैयार रहते हैं। समझे रहते हैं, 'हमें इसी तरह जीवन व्यतीत करना है। समाज से हमें कुछ सरोकार नहीं। हमारा वर्ग ही उन सबसे अलग है। चाहे उसने हमें बाध्य किया यह पेशा अपनाने के निमित्त या हमने अपनी मर्जी

से इस रास्ते को अपनाया अब हम दोनों के रास्ते सदा के लिए अलग हैं। उनके एक होने की बात सोचना मूर्खता है। कोई भी सरकार होगी, हमें जेल ही में रखेगी।

जंगलों की ख़ाक छानते रहें या जेल में सड़ें-मरें, यही दो पंथ हमारे लिए हैं। जहां रहो चैन से नहीं रहो। लड़-झगड़-कर खाओ। दिल से तो कोई देगा नहीं। बाहर रहते थे। एक पैर इस जिले में एक पैर उस जिले में रहता था। रात कहीं दिन कहीं। कभी घन-घना, कभी मुट्ठी चना, कभी वह भी मना।

हम पंछिन का कौन ठिकाना
इत उत उड़ना, दाना चुगना
कहीं दिवस कहीं रैन बिताना

हां, तो मैं कह यही रहा था, कि जेल का बंधा-बंधाया जीवन इन्हें पसंद नहीं आता। कुछ नाटक रचते रहने में ही इन्हें आनंद आता है। उससे ये सक्रिय रहते हैं। अतः छत पर और पेड़ पर भी चढ़ने का नाटक करते हैं, जिससे कुछ रंग आ जाये, हलचल मच जाये, अफसरों की बदनामी हो, उन पर धौंस जमे, कुछ सुभीता प्राप्त हो, नेता समझे जाएं। मार-पीट तो सहते-सहते देह पत्थर हो ही गयी है। बाहर हों या भीतर, हमारे नसीब में तो सर्वत्र यही बदा है। अपनी धुन में किसी के कष्ट की यह परवाह नहीं करते।

बड़ा दोष सिपाहियों का

छत और पेड़ पर चढ़ने में सबसे बड़ा दोष सिपाहियों का है। अगर वे सजग रहें, चुस्त रहें, तो ऐसी घटनायें, हों ही क्यों? उनकी ढिलाई से ही सब कुछ होता है। कैदी जेल से भाग जाते हैं, रास्ते से कचहरी जाते हुए या कचहरी के संडास से। सब जगह सिपाहियों का पहरा रहता है, चौकसी रहती है। फिर ये घटनायें कैसे होती हैं? कुछ दिन पहले सदर अस्पताल से एक कैदी भाग गया। उसके पहरे पर तीन सिपाही तैनात थे। एक बूढ़ा दो जवान। जवानों में से एक खाना खाने पुलिस लाइन चला गया। बाकी दो में से एक पास देहात में अपने घर चला गया। कोई छुट्टी लेकर नहीं, सब नाजायज। बूढ़ा सिपाही ड्यूटी पर रहा। कैदी ने कहा, सिपाहीजी, हथकड़ी बहुत गड़ती हैं, थोड़ा ढीला कर दीजिए। सिपाहीजी ने हथकड़ीवाली ड्यूटी कभी की नहीं थी। जरूरत से ज्यादा ढीली

कर दी और सामने बाजार में खाना खाने चले गये। कैदी अकेला रहा। हथकड़ी ढीली थी ही। उसे खिसकाकर निकाल दिया और रफूचक्कर हो गया। जब तक बूढ़ा सिपाही खाना खाकर लौटा, तब तक आसामी भाग चुका था।

पिस्तौल दिखाकर कैदी भागा

एक कैदी सेंट्रल जेल से बहुत दिनों तक फरार रहा, उन्हीं दिनों डकैत पकड़कर आया। उसके बारे में लोगों ने कहा, यह यहीं से भागा था। कुछ दिन यही बीमारी पीछे रही। बहुत हल्ला किया,हमको सदर अस्पताल दिखला दीजिए। सिपाहियों के पहरे में सदर अस्पताल भेजा गया। शाम तक नहीं लौटा। तब पता चला कि वह रास्ते से ही गायब हो गया था। हुआ यह, वह सदर अस्पताल से दवा लिखाकर निकला। सिपाही लोगों को उसने कहा, "सिपाही जी, दोपहर के खाने-पीने का टाइम हो गया। चलिए, सामने बढ़िया होटल है, वहीं खाया-पीया जाए।" सब लोग वहां गये। खाने-पीने के साथ बोतल भी चली। फिर जैसा कि वहां के कैदियों ने बताया, वेश्या के कोठे पर भी गये। नाच-मुजरा, राग-रंग। कैदी फरार हो गया। एक जेल की बात है; कैदी लोग सिपाहियों के संरक्षण में तारीख पर कोर्ट गये। वहीं मुलाकातकर एक कैदी को उसके साथी पिस्तौल दे गये। कोर्ट से लौटते हुए रास्ते में सिपाही को पिस्तौल दिखाकर वह कैदी भाग निकला। सिपाहियों ने पीछा किया। पास ही गंगा नदी थी। उसमें वह कूद गया। सावन-भादों का महीना। नदी बाढ़ के पानी से लबालब। पानी में जाकर पकड़ने की किसी की हिम्मत नहीं हुई। हल्ला हुआ। जेल अधिकारियों के साथ मैं भी किनारे पर आकर यह रोचक घटना देखने लगा। कैदी कभी पानी में डुबकी लगाता, कभी तैरता। बहुत जोर-जोर से आवाज दी गयी उसे 'लौट आओ कुछ मार-पीट नहीं की जाएगी,' पर उसपर; इसका कोई असर नहीं हुआ, शाम हो रही थी। तैरते-तैरते वह दूर निकल गया। हम लोग चले आये। पता नहीं वह कहां गया। कुछ लोगों का अनुमान है। अंतिम बार डुबकी मारी तो वह बाहर निकला ही नहीं, डूब गया। कुछ लोग कहते हैं, उस पार उसकी नाव खड़ी थी। उसी पर चढ़कर निकल गया।

कड़ी सजा मिले

इन घटनाओं के निमित्त सिपाहियों को छोड़ और किसे दोष दिया जा सकता है। सिपाही ही क्यों उन्हें ड्यूटी पर भेजने वाले अफसर भी कम दोषी नहीं, सिपाहियों पर नामी डकैतों की देख-रेख का भार देकर खुद निश्चित हो जाते हैं। देखते तक नहीं कि वे अपनी जिम्मेदारी निबाहते हैं या नहीं। कैदी के भागने या छत और पेड़ पर चढ़ने पर, ड्यूटी पर तैनात सिपाही और ऊपर के जमादार, हवलदार को हल्की सजा नहीं मिले। नौकरी जाने

का भय रहेगा, तो ऐसी घटनाओं की संख्या घटेगी। इस दंड में पैरवी कतई नहीं सुनी जाए, तभी अवस्था सुधरेगी। सस्पेंड हुए फिर कुछ दिन बाद ड्यूटी पर ले लिए गये, इससे असर नहीं पड़ता है।

कुछ लोगों का यह भी मत है कि विपक्षी दल के लोग जब जेल जाते हैं, तब पेशेवर कैदियों में अनुशासनहीनता फैलती है, जिससे उत्साहित हो ये पेड़ और छत पर चढ़ते हैं। इस बात में सत्य का अंश कहां तक है—कहा नहीं जा सकता।

जेल विभाग सुझाव माने !

नगर के गणमान्य गैरसरकारी लोगों को सरकार जेल परिदर्शक (विजिटर) बहाल करती है। समय-समय पर जेल जा वहां का दुख-दर्द सुन सरकार को अपना सुझाव देने के निमित्त। इस कमेटी के लोग अपने इस काम में कोई रुचि नहीं लेते। क्रय-समिति की मीटिंग तीन महीने में होती है, उसी में इन मेंबरों को अनुनय विनय कर ठेकेदार लोग ले आते हैं, कोरम पूरा कराने के लिए। ए. डी. एम. सभापति रहते हैं। कभी-कभी तो इन मेंबरों के अभाव में बैठक स्थगित हो जाती है। पता नहीं, इस काम में मेंबरों को क्यों अनाकर्षण होता है। जेल विभाग इनके सुझावों को नहीं मानता, ये अपने को शक्तिहीन अनुभव करते हैं कि लिखकर क्या होगा, कोई सुनेगा नहीं। बेकार जेलवालों से भी टंटा होगा। अपना खर्चा, काम धंधे का हर्जा कर कौन जेल जाए बेकार। गैर सरकारी लोग समय-समय पर जेल जा कैदियों का दुख-दर्द सुनें, सरकार को लिखें, अपना सुझाव दें, सरकार उस पर फौरन कार्यवाही करे, यदि संभव हो तो उन्हें यात्रा-भत्ता दिया जाए तो मैं समझता हूं, जेल की स्थिति में काफी सुधार हो। कैदियों का क्रंदन-कलरव सरकार के कानों में पड़े ही नहीं, सरकार को वास्तविक स्थिति की जानकारी ही न हो—यह उचित नहीं। सरकारी अफसर जेल की स्थिति का ठीक मूल्यांकन सरकार के समक्ष उपस्थित नहीं भी कर सकते हैं। अतः सरकार का यह कर्तव्य है कि जेलों में शांति और सुचारु रूप से काम करने के निमित्त पढ़े-लिखे प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सारी सुविधा प्रदान कर ज़ेल परिदर्शक नियुक्त करें। कलक्टर जिले के सर्वेसर्वा होते हैं। वे भी महीने में एक दिन जाकर जेल की हालत अपनी आंखों देखें। कुछ समय दें इसके लिए। कैदी अपनी समस्याएं उनके सामने रखें। उनका तत्काल निराकरण हो। इन उपायों से ही जेल में अनुशासनहीनता कम होगी, आग लगने पर तो पानी और दमकल बुझाने के काम आते ही हैं, पर फूस की झोपड़ी से बने गांव में यदि सुरक्षा की व्यवस्था पहले से हो, घटनाएं हों ही नहीं या हों तब रोकी जा सकें। जेल की समस्याओं को भी इसी प्रकार सुधारा जा सकता है तभी वहां शांति संभव है।

—मधुबनी, पूर्णिया, बिहार

नारों का असर

उफ
कैसा असर है
नारों का
डूबते लोग
पता पूछ रहे
हाय! मंझधार से
किनारों का

मदारी से

पहले
सिर काट लिया
आरी से
सिर कटे लोग
कहें कैसे अब
अपने शिकवे-गिले
मदारी से

—मधुप पांडेय

हंसिकाएं

सुविधाएं

सुविधा पुरुष—
सुविधा महिलाएं
कहां मिलेंगी—ऐसी सुविधाएं!

चुनाव

हर बार एक नए गधे को
बाप बनाना
और फिर सिर मुंडाना!

श्रेय

श्रेष्ठ लेखन को
श्रेय यही मिला
प्रेमचन्द शताब्दी के बाद ही
विकलांग वर्ष मनाना पड़ा!

अन्योक्ति

विवाह के लिए
भारी-भरकम प्रत्याशी को देखकर
कन्या सुकुमार
दबे स्वर में बोली
'चले जाहु . . . यहां को करे
हाथिन को व्यापार!'

रोग

प्रेम रोग के बारे में
वे बताते हैं—
कुछ अंधे होते हैं
और कुछ कर दिये जाते हैं

—डॉ० सरोजनी प्रीतम

सीपिकाएं

परिवर्तन

शादी से पहले था 'लवर'
शादी पर कहलाया 'वर'
अब है, ड्राइ-वर
सुना है कि वह ड्राइवर से
मिस्त्री हो गया है

सरकार

कच्ची नींव पर खड़ा ऊंचा मकान
जो कब गिर पड़े, पता नहीं

नेता

रमता जोगी बहता पानी
आज यहां, कल वहां

——अवधेश कुमार

मुसकराहट

जब पत्नी की बनावटी
मुस्कराहट का
हल्का सा एक झरना फूटता है
अपनी पाकिट के
सौ पचास रुपये
आसानी से ले डूबता है

—प्रेमकिशोर 'पटाखा'

झूम री तलैया

• योगेन्द्रदत्त शर्मा

सुनिए मेहरबान ! कविता के कद्र-दान ! 'कादंबिनी' के पाठकान ! यह तरही मुशायरा है ! इसका अपना दायरा है ! शायर-कवि ढेरों हैं, एक भी न शायरा है ! होली का मौका है ! फागुनी हवाओं का रसभीना झोंका है ! अरे, अरे ! भीगो, तुमको किसने रोका है ! हंसने का मौसम है ! हंसने की सामग्री भी क्या कोई कम है ! जो है गंभीर, वही खूसट है, बौड़म है !

भले तंगदस्ती है। हालत में पस्ती है ! पर दुनिया हंसती है ! चाहे फिर फंसती है ! कीचड़ में धंसती है। मन में जो मस्ती है। मनोरंजन का रंग ! भंग की तरंग ! मन में उमंग। इसीलिए हाजिर है यह भंग का प्रसंग।

भंग की तरावट है। बाहर है नमी, मगर भीतर गरमाहट है ! कविता की आहट है !

कवियों की फौज है ! मस्ती है, मौज है ! मनोरंजन के लिए भरी रंगों की हौज है ! नहीं ! नहीं। हौज नहीं, 'झूम री तलैया' है ! डुबकियां लगाइए ! यों मत शरमाइए। इस मुशायरे का है यही तो 'तरह मिसरा' ! याद रखें, कहीं न दें आप इसे बिसरा ! पहले आ रहे हैं—ज्ञान की तरफ पीठ किये, वही जो जानने योग्य नहीं हैं, यानी 'अज्ञेय' :—

बहुत-बहुत था एकाकी मन
जैसे कोई द्वीप नदी का
लघु मानव था कल तक
"इस थकी हुई बीसवीं सदी का

यह असाध्य वीणा-सा जीवन
चहक उठा था 'साधन', भैया
उड़ चल, हारिल ! इस दिल्ली से
पहुंचें अब झूम री तलैया !

'अज्ञेय' जी का बुढ़ापा सार्थक हुआ, तो कष्ट हुआ वैष्णव कवि नरेश मेहता को। उनका कष्ट जाहिर हो रहा है उनकी कविता से :

झूम री तलैया !

तुम कोई ऋचा हो
मेरे वैष्णव स्वरों पर निनादित
वारुणी मंत्र हो तुम
मेरी कारुणी प्रार्थना की !
सहस्त्राब्दियों से मैं तुममें बहता हूं
यों तो त्रिवेणी में रहता हूं
'पुरुषत्व' खोया हुआ नर
एक दीन-हीन कवि नरेश मेहता हूं !

नरेश मेहता ने स्वयं को 'त्रिवेणी' यानी इलाहाबाद का बताया, तो सबसे ज्यादा मर्माहत हुए दूसरे वैष्णव कवि धर्मवीर भारती ! इलाहाबाद कभी छायावाद का पर्याय था, मगर भारतीजी अब इसे अपना पर्याय साबित करते हैं। बकौल अपनी ही कविता के 'कुछ दगाबाज पर बहुत प्यारे' दोस्तों से पहले ही वह कृष्ण से संवाद करने लगे :—

प्रभु, इस रस को क्या कहते हैं
जिसमें आत्मा को कोई क्लेष नहीं
कनक की मादकता का यमक है पर श्लेष
नहीं, यह तुम्हारी विराट सत्ता का
सक्षात्कार है, मेरे कनु !
इसे मैं पी रहा हूं
और बिना 'ज्ञानपीठ' पाये जी रहा हूं
बताओ मेरी झूम री तलैया,
क्या मैं कोई इलाहाबादी अमरूद हूं !

भारतीजी के इस अमरूदवादी विज्ञापन से 'गीत फरोश' गांधीवादी भवानीप्रसाद मिश्र ऐसे उखड़े कि शिवांबु तक याद हो आया :

झूम री तलैया !
जरा मस्ती में झूम
मत बन इतनी मासूम
मैं तुझे जानता हूं
और पहचानता हूं
तू झूमेगी
तो अपनी यह धरती
आसमान को चूमेगी
झूमना राग है
नहीं तो सारा जीवन शिवांबु का झाग है !

भवानीजी के शिवांबुवाद से शमशेरजी का जनवाद अंगड़ाई लेने लगा—

मैंने यह कब कहा
कि झूमना मना है
वाम-व्यवस्था में
और काम-अवस्था में
निष्क्रिय बैठना है हराम
मैं बुर्जुआ 'बैल' नहीं

○ अज्ञेय ○ नरेश मेहता ○ डॉ. धर्मवीर भारती ○ भवानीप्रसाद मिश्र ○ शमशेर बहादुर सिंह ○ गिरिजाकुमार माथुर ○ रमानाथ अवस्थी ○ गोपालकृष्ण कौल ○ सुरेन्द्र शर्मा ○ वीरेन्द्र मिश्र ○ सुरेन्द्र तिवारी ○ नीरज ○ कन्हैयालाल नंदन ○ काका हाथरसी

मैं हूं सिर्फ जनवादी 'गैया'
जरा झूम री तलैया !

शमशेरजी के बैल और गाय ने सौंदर्यवादी गिरिजाकुमार माथुर को मदमाते बिजार की याद दिला दी :

वक्षस्थल-सा उठता/गिरता उन्मुक्त ज्वार
चौराहे पर जैसे/मदमाता है बिजार
हाथी के कानों-सी/हिलती पंकिल सिवार
मुग्ध है वृद्ध फिर भी/माथुर गिरिजा कुमार
यह शीतल आंच/मेरा मन-गुलाब पी ले तो
टूटी-सी खाट/मखमली पलंग हो जाए !
झूम री तलैया/यह मन मलंग हो जाए !

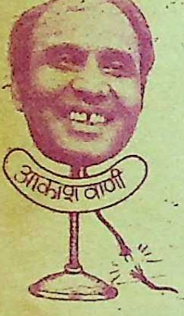

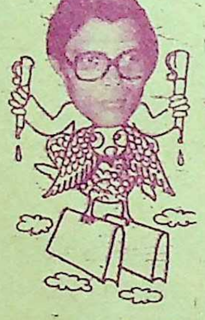

गिरिजा कुमार माथुर अपनी कविता पूरी भी नहीं कर पाये कि पीछे से आवाज आई—"वाह प्यारे ! गिर जा !" मुड़कर देखा, तो रूमानियत की गंध पाकर अपनी नाक पर रूमाल लगाए बैठे हैं, सूमानियत के धनी कवि-आलोचक गोपालकृष्णकौल ! लीजिए अब उनका धूम-धड़ाका सुनिए :

उस दिन उड़कर/एक फूल कागज का
मेरे गुलदस्ते से
पहुंच गया असली फूलों की बस्ती में
मुझे यह लगा—देवता फंसा
जाल में इस प्रवंचक के !
आकाशवाणी से तुझे बदनाम किया इसी ने
हाय ! मेरी झूमरी तलैया !

कौलजी ने एक गांव को धोखा क्या दिया कि रमानाथ अवस्थी खखारने लगे,

भीड़ से जरा-सा दूर/झूम री तलैया !
मेरे नर्म होठों को/तू चूम री तलैया !
तू है तारने वाली/किसी को क्यों पुकारूं ?
अपनी नाव और किसी घाट क्यों उतारूं ?
भीड़ में भी रहता/मैं दूकान के सहारे ?
जैसे कोई खोमचा/बाजार के किनारे !
पास आकर सुन ले तू/ओ झूम री तलैया,

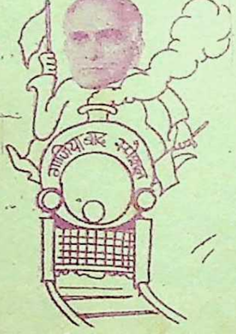

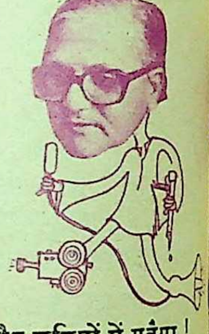

गवैयों में कवि मैं/और कवियों में गवैया !

रमानाथजी झूमते-झूमते मंच पर लदपदाकर ऐसे लुढ़के कि बेचारे सुरेंद्र शर्मा उछलकर सीधे माइक से जा चिपके और ठेठ राजस्थानी शूरवीरता की तर्ज में गिड़गिड़ाने लगे :

चार लाइनां सुना रियो हूं . .

इनकम-टैक्स वालां की चिट्ठी आयी
कि ईं साल कवि सम्मेलन में कितनो कमायो
ऊको ब्यौरो औ टैक्स भिजवा दो

मैं जवाब दियो
ई साल कवि सम्मेलन में हजार जूता पड़ा है
ऊंको कितनो परसेंट भेजूं बतल्या दो
थे कहो तो जइयां मेरे पड़े हैं वइयां थारे
पड़वा दूं

कवि सम्मेलन में आयकर आयुक्त टी. पी. झुनझुनवाला भी बैठे थे। उन्होंने विभाग की ओर से जवाब दिया :

ये आयकर विभाग है, नहीं है झूम री तलैया
म्हारी तरफ ते बारह हजार तक छूट है
थे ग्यारह हजार और खा सको हो।
इबी तो थारी ग्यारह हजार की कमी है
वान्नें पूरी करल्यो

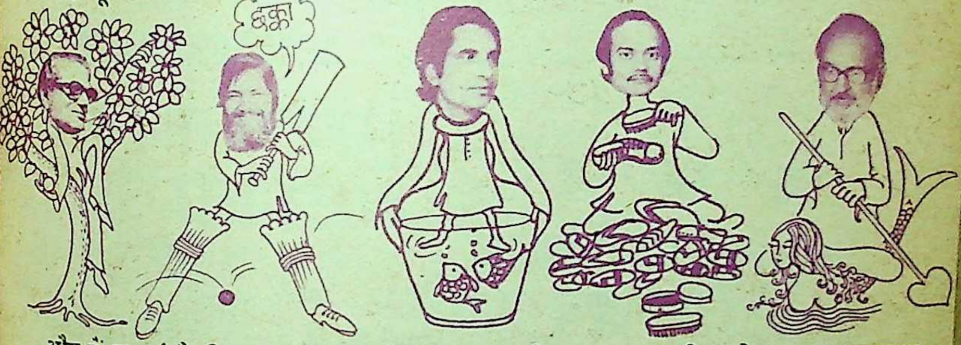

और मैं जान्यां है कि बारह हजार खाया
थे पूरा हो ल्योगा।

छूट की बात सुनते ही गवैया कवि वीरेन्द्र मिश्र के ओठों पर मुसकान तैर गयी। वे राग अलापते हुए आये, माइक पर चढ़ दौड़े :

सागर तीरे/धीरे – धीरे
मेरे मन तू बजा मंजीरे
रहा न इल्मी/बना न फिल्मी
तेरी अजब त्रासदी भैया
आ जा आ जा. . .
बुला रही झूम री तलैया !

वीरेन्द्र मिश्र ने फिल्मों का राग क्या छेड़ा कि नीरज की दुखती रग को छेड़ दिया। वह खिसियाए से माइक की तरफ रेंगे और प्रायश्चित का विमोचन करने लगे :

कैसे थे दिन वो शराबो-शबाब के
अब हैं बस झूम री तलैया के ख्वाब के
यूं फंसाया है कमबख्त ज्योतिष ने हमें
न कवि ही रहे, न रहे किसी 'खिताब' के ;

नीरज ने शराबो-शबाब की बातें की, तो लखनवी नजाकत के अलमबरदार उर्फ रागदरबारी के फरमाबरदार 'खबरदार' कवि सुरेन्द्र तिवारी ने (हाथ की) सफाई पेश की :

कवियों में अफसर हूं
और अफसरों में कवि
यही है मेरी छवि !
इश्क बुढ़ापे मे फल रहा है
हाथ ताशों में रम रहा है
मन कहीं रमे या न रमे
झूम री तलैया में रम रहा है

सुरेन्द्र तिवारी के बाद संयोजक महोदय को फौरन उनके 'हम चोली' (हमजोली) कला नंदन (कन्हैया लाल नंदन) की याद सतायी। संयोजक जी ने उन्हें हांक लगायी। वे आये :

ओ पिया दुख दे बोगन बेलिया
जाल लिये घूम रहा हूं मैं बहेलिया...

नंदन साहब आगे की पंक्तियां ही नहीं पढ़ पाये, बिजली नौ दो ग्यारह हो गयी। अंधेरे में जनता का श्रोता जागृत हो गया। हूटिंग और टमाटरों से शूटिंग। तभी अंधेरे में ही पटाका कवि काका ने चीखना शुरू कर दिया। काका ने अंधेरे में पुकार लगायी, अब पूछने वाला ही कौन था :

नाम शहर का हाथरस, रस ही लगा न हाथ
उम्र पिचत्तर हो गयी, फिर भी रहे अनाथ
फिर भी रहे अनाथ, केशव की गति करो न दैया
हो भले काकी से रोमांस चलो झूम री तलैया

काका ने झूम री तलैया चलने की बात की तो बस संयोजकजी ने झटपट तैयारी शुरू कर दी। क्योंकि संयोजक शायर हैं, वही अंपायर हैं, उनकी एंपायर है 'झूम री तलैया' भी। संयोजकजी ने करके फायर, बयान किया दायर कि कवि सम्मेलन को जो करें एडमायर बाद में लिखें हमको। अब तो बस झूमिये और आपसे हो सके तो 'झूम री तलैया' को चूमिये।

—महल्ला कन्हैयालाल, गाजियाबाद

हास्य कवि
पटाखा के
सुनिये रिकार्ड
लगाइये ठहाके
हास्य कविताओं के
धमधड़ाके

INRECO

INDIAN RECORD MFG. CO. LTD
15/1 Asaf Ali Road New Delhi
PHONE : 273621

बुद्धि-विलास

१. एक संख्या है, जिसमें से ७ घटाने पर जो शेष आता है उसे ७ से भाग किया जाता है। फिर भागफल में ७ जोड़ने पर ७ ही योग-फल आता है। बताइए, वह संख्या क्या है——३, ५, ७, ६ ?

२. गत वर्ष अक्तूबर में **अल असनाम** नामक नगर में आये एक भयंकर भूकंप में लगभग २०,००० व्यक्ति मर गये थे। बताइए, यह नगर किस देश में स्थित है—— इटली, मिस्र, अलजीरिया, ईरान ?

३. ईरान के पदच्युत **शाह** मोहम्मद रजा पहलवी की मृत्यु किस देश में हुई थी—— पनामा, अमरीका, मिस्र, ब्रिटेन ?

४. क. विगत दो दशकों में भारत में सबसे अधिक **अध्यादेश** किस वर्ष लागू किये गये थे—१९८०, १९७१, १९७४, १९७५ ?

ख. किस वर्ष कोई अध्यादेश जारी नहीं किया—१९६०, १९६३, १९७७ ?

५. एशिया के किस देश में सबसे पहले **परमाणविक बिजलीघर** की स्थापना की गयी—जापान, भारत, चीन, इंडोनेशिया ?

६. क. संयुक्त राष्ट्रसंघ की सदस्य-संख्या इस समय कितनी है— ११३, १३४, १५४, १५६ ?

ख. अब तक अंतिम सदस्य कौन-सा देश बना है—जिम्बाबवे, सेंट विंसेंट एवं ग्रेनाडाइन्स द्वीप, सेशेल्स ?

७. उच्चतम न्यायालय में नियुक्त सबसे पहले हरिजन न्यायाधीश कौन हैं ?

८. किस भारतीय को गत वर्ष इंगलैंड की **रायल ज्यौग्रैफिकल सोसाइटी** का सदस्य (फेलो) चुना गया है ?

९. अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए १९८० का **जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार** किसे प्रदान किया गया है ?

१०. इस वर्ष (१९८१) को किस **अंतर्राष्ट्रीय वर्ष** के रूप में मनाया जा रहा है ?

११. क. नाटो का क्या अर्थ है ?

ख. कौन-सा देश ६ वर्ष बाद पुनः इसमें सम्मिलित हुआ है ?

१२. अंतरिक्ष में अब तक सबसे अधिक समय तक रहने का **रिकार्ड** किसने कायम किया है ?

१३. नीचे दिये गये **चित्र** को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

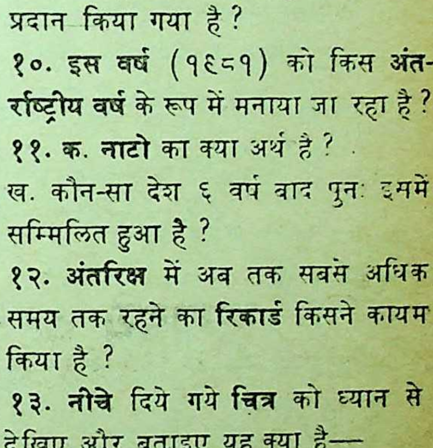

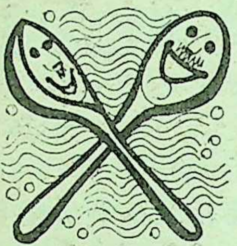

इन चमचों में बड़े बड़े गुण

● डॉ. शरीफ जा

आजादी के बाद हमारे देश में अगर किसी समाज ने प्रगति की है तो वह है चमचों का समाज। बड़े गर्व के साथ हम कह सकते हैं कि चमचों के राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में हमारा देश पूरी तरह आत्मनिर्भर हुआ है। चमचों के उत्पादन की अगर यही गति रही, तो कुछ ही समय बाद हम स्वदेशी चमचों का थोक में निर्यात भी कर सकेंगे। आज हमारे देश में लोग कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक दूसरे को 'फलाने का चमचा' कहकर सम्मानित कर रहे हैं। कुछ चमचे शासकीय स्तर पर 'चमचाश्री' की उपाधियों से भी विभूषित हो गये हैं।

विकास उसका होता है, जिसमें कुछ गुण होते हैं। फिर चमचे तो गुणों की खान होते हैं। कहा गया है कि-
'होनहार बिरवान के होत चीकने पा
इन चमचासुत बिरवानों के पात तो ब
से ही इतने चीकने होते हैं कि इनके
कमलों से निरंतर नवनीत बहता
है, जिसे आम आदमी की भाषा
मक्खन कहते हैं। यह मक्खन, चमचा
बिरवान को पैतृक संपत्ति के रू
मिलता है। इसी मक्खन का स्था
स्तर से प्रयोग करते हुए नवोदित च
कालांतर में अखिल भारतीय हो जाता है

चमचों की

चमचों के यदि हम भौतिक और
रासायनिक गुणों का अध्ययन करें,
हमें इनमें कुछ विशिष्ट चरित्रगत खूबि
दिखायी पड़ेंगी। ये गुण जिसमें जि

डा. शरीफ जादा अमरीका में एक प्रवासी भारतीय हैं। अपने विनम्र कृतित्व और अहिंसक व्यक्तित्व के कारण उन्हें भारत के एक विश्व विद्यालय ने मानद डी. लिट. दी थी तथा अभी हाल में अमरीका के एक विश्वविद्यालय ने भी उन्हें मानद उपाधि से सम्मानित किया है। भारत और भारतीय जनता से उन्हें बेहद प्यार है। प्रस्तुत लेख उनके अप्रकाशित शोध ग्रंथ का महत्त्वपूर्ण अंश है, जिसे कादम्बिनी के लिए उन्होंने अमरीका से भेजा है।

अधिक मात्रा में पाये जाते हैं, उसके 'चमचत्व' का घनत्व उतना ही अधिक होगा। वह चमचा उतना ही खानदानी माना जाएगा। यों तो हमारे देश में चमचों की अनेक नस्लें पायी जाती हैं। फिर भी मुख्य रूप से हमारे देश के विकास में चमचों की ये पराक्रमी नस्लें इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाएंगी—(१) राजनैतिक चमचे, (२) प्रशासनिक चमचे, (३) साहित्यिक चमचे, (४) आध्यात्मिक चमचे, (४) क्रांतिकारी चमचे, (६) चमचों के चमचे, (७) कुछ आदिम और अनुसूचित नस्लें भी विकसित हो रही हैं।

चमचों की विभिन्न नस्लों के बावजूद उनके कुछ गुण ऐसे हैं, जो हर नस्ल की 'जींस' में समान रूप से पाये जाते हैं। पाठकों की ज्ञान-वृद्धि हेतु संक्षेप में उन्हें इस प्रकार तालिका-बद्ध किया जा सकता है—

इनके शरीर में रीढ़ की हड्डी फोल्डिंग होती है, जो अपने बॉस, नेता या मालिक को देखते ही चुंबकीय गति से झुक जाती है। चमचे की रीढ़ की हड्डी का झुकना 'नमस्कार' कहलाता है। जैसे ही बॉस के कुटिल अधरों पर मुस्कान का चतुर्भुज बढ़ता जाता है, चमचे की रीढ़ की हड्डी का कोण उर्ध्वमुखी होता जाता है। अर्थात, बॉस का हंसना और चमचे की रीढ़ की हड्डी का झुकना एक दूसरे के समानुपाती हैं।

बॉस से वार्तालाप के समय इनके पूंछ निकल आती है, जो पूरी वार्ता के दौरान हिलती रहती है और बॉस बीच-बीच में, इस सांस्कृतिक क्रिया से खुश होकर चमचे को पूर्ण 'कुतत्त्व' की भावना से दुलारता रहता है।

'निंदा-ग्रंथि' इनकी काफी विकसित होती है। अपने सहयोगियों की निंदा का कुटीर उद्योग, ये बॉस के सम्मान में हमेशा चलाते रहते हैं।

इनका व्यक्तित्व बड़ा चिपकनशील होता है। इसलिए ये अपने बॉस से इस तरह चिपक जाते हैं, जैसे लिफाफे से टिकिट। लिफाफा भले ही फट जाए पर टिकिट नहीं उचलेगा।

बॉस के समक्ष ये स्काउट की तरह तैनात रहते हैं और उनके चले जाते ही क्रांतिकारी हो जाते हैं।

विभागीय चमचे बड़े स्वतंत्र विचारों के होते हैं। ये जब मन आता है, तब कार्यालय आते हैं और जब इच्छा होती है, घर चले जाते। मगर, साहब के बंगले पर सब्जी ठीक टाइम पर पहुंचाते हैं। स्वतंत्रता और अनुशासन का कितना सम्यक उदाहरण हैं—ये चमचे।

दबे पांव आते हैं ये

इन चमचों का मस्तिष्क मक्खनबाजी की नयी-नयी योजनाओं के चिंतन के लिए इतना उर्वरा होता है, जैसे पेट्रोल के लिए अरब की जमीन। और कुछ पैदा हो ही नहीं सकता, इसके अलावा! ये अपनी कला में इतने दक्ष होते हैं कि कलाकंद बनानेवाले को भी ये कलाकार घोषित कर सकते हैं। इनके नवनीत-लेपन का शिल्प बड़ा ही सूक्ष्म होता है। मक्खन लगता रहता है, मक्खनबाजी चलती रहती है, पर किसी को भी दिखायी नहीं पड़ती।

जिस प्रकार शनि, राहू और केतु-जैसे अशुभ और पाप ग्रह किसी भी शरीफ आदमी को बिना सूचना दिये, उसके साथ संलग्न हो जाते हैं, वैसे ही ये चमचे भी दबे-दबे पांव आते हैं, अफसर को, मंत्री को अपने हिसाब से नचाते हैं, और जब उस बेचारे की नाव मंझधार में होती है, तो ये दूसरी नाव में बैठ जाते हैं। ये चमचे फर्नीचर नहीं होते कि साहब पुराना पड़ जाने पर बदल दें, बल्कि ये तो फर्नीचर में लगी दीमक के समान होते हैं, जो फर्नीचर को चाट-चाटकर पोला करती जाती है और गाती जाती है कि 'हम तुम चोरी से बंधे इक डोरी से।'

चमचों का कुंभ-पर्व

चमचे समाज के दर्पण होते हैं। जैसे ही समाज बदलता है, ये अपनी डिजाइन बदल देते हैं। आजकल इनका निवास मंत्रियों के बंगले, अकादमियों के भवन, सचिवालयों की इत्म भरी दीवारें, दूरदर्शन-आकाशवाणी केंद्र, विश्वविद्यालय प्रांगण तथा पत्रिकाओं के कार्यालयों में बहुतायत से देखने को मिल जाते हैं। चुनाव का समय 'चमचों का कुंभ-पर्व' होता है, पार्टी-कार्यालय इनके तीर्थ-स्थल तथा प्रदेश और देश की राजधानियां इनके बंदरगाह बन जाते हैं। एक बात बहुत अजीब हुई है, जब से चमचे साहित्य में सक्रिय हुये हैं, पाठक निष्क्रिय हो गये हैं। फिर भी ये निराश नहीं हुए हैं क्योंकि इनके जीवन का दर्शन है—

नवनीत लेपन हो, जीवन का काव्य है
चमचा कवि हो जाए, सहज संभाव्य है

और साहब, इन्हीं पंक्तियों को जीवन का मूल-मंत्र माने ये समस्त आस्थाओं सहित शोध प्रबंध में जुट गये हैं। इनके व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित होकर, एक विश्वविद्यालय बिना शोध किये ही मानद डी. लिट. की उपाधि देने के लिए उन्हें उतारू हो गया है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि माननीय चमचेजी अपनी थीसिस अवश्य छपवाएं, ताकि गैर-चमचेवादी लोगों को भी युगबोध हो सके।

बगल में बैठे हो लेकर चमार की सूरत

● स्वामी वाहिद काजमी

पुराने समय की वेश्याएं कई बातों में बड़ी समृद्ध होती थीं। उनके स्वभाव में जहां और खूबियां होती थीं वहीं वे धर्मभीरु भी होती थीं। अपना जीवन जिस प्रकार कल्ले-ठस्से से व्यतीत करने की आदी थीं, उसी प्रकार धर्म-कर्म के मामले में वे बड़ी उदारता से और अपार धन खर्चती थीं। दिल्ली की शीरीं नामक तवायफ बड़ी धनवान थी। एक वार उसने हज के लिए मक्का-यात्रा का निश्चय किया। और बड़ी धूम से हज-यात्रा की तैयारी की। उन दिनों दिल्ली में 'औज' उपनामी एक प्रसिद्ध शायर भी थे। आशु-रचना, हाजिर-जवाबी तथा विनोदप्रियता में उनका जवाब नहीं था। जब औज साहब को शीरी की हज-यात्रा की खबर लगी, तो उनकी नस फड़क उठी। और नतीजे में उन्होंने जो एक मुहावरेदार फबती कसी, वह आप भी सुनिये। कहा है—

बजा है शीरीं अगर छोड़ दिल्ली हज को चली
मसल है नौ सौ चूहे खाके बिल्ली हज को चली

पता नहीं यह सुनकर खुद शीरीं पर क्या बीती। किंतु जिसने भी यह शेर सुना, उसे मजा आ गया।

हथिनी का दान

पटियाला के रईस राजा चेतसिंह दिल्ली में भी रहा करते थे। उन दिनों उनकी उदारता नगरभर में प्रसिद्ध थी। अपने समय के प्रसिद्ध शायर और हकीम मोमिन खां 'मोमिन' की शायरी की उस वक्त काफी शोहरत थी। किंतु राजा साहब से उनकी भेंट का अवसर नहीं आया था। एक दिन राजा साहब अपनी कोठी की ऊपरी मंजिल पर बैठे, इष्ट मित्रों के साथ गपशप कर रहे थे। इतने में सामने सड़क पर से मोमिन का गुजर हुआ। लोगों ने उन्हें बताया कि शायर मोमिन खां साहब यही हैं। राजा साहब ने अपना आदमी भेजकर उन्हें बुलवाया। बड़ा आदर सत्कार किया। मोमिन न केवल हकीम तथा शायर, अपितु ज्योतिष-शास्त्र के भी पारंगत ज्ञाता थे। अतः बड़ी देर तक शायरी व

ज्योतिष पर चर्चा होती रही । राजा साहब उनसे इतने अधिक प्रभावित हुए कि एक हथिनी कसकर लाने की आज्ञा दी । हथिनी लायी गयी और वह मोमिन साहब को सप्रेम भेंट कर दी गयी । वे बोले—'महाराज ! मैं मामूली आदमी ठहरा, इसे कैसे रखूंगा और कहां से खिलाऊंगा ?' तो राजा साहब ने कुछ नकद राशि भी प्रदान की । मोमिन खां बड़ी शान से हथिनी पर आरूढ़ वापस लौटे । 'औज' देहलवी मोमिन खां के समकालीन थे। जब उन्हें इस घटना की खबर लगी तो हंसे और चट से एक शेर कह डाला——

जहन्नमों में वो 'मोमिन' मकान लेता है
नजूमी बन के जो हथिनी का दान लेता है

मोमिन भी एक ही शायर थे। उन्हें हथिनी से क्या वास्ता। अत: पहले तो नकदी रुपये उड़ाये और बाद को हथिनी बेचकर मामला ही समाप्त कर दिया।

किस्मत कपड़े की

दैवयोग से मिर्जा गालिब को किसी कारण से एक बार जेल-यात्रा भी करनी पड़ी थी । एक तो यों ही आर्थिक वि मता, तिस पर जेल। उन दिनों उन बड़ी दयनीय स्थिति रही। सिर के व दाढ़ी बेतरतीब, कपड़े इतने मैले उनमें जुंएं पड़ गयीं थीं। एक दिन बैठे कपड़ों की जुंएं बीन रहे थे कि एक मि वहीं मिलने आये। पूछा—'कहिए मि साहब ! क्या हाल-चाल हैं ?' गालिब बिना एक पल की देर किये, तत्क्षण शेर कहकर उत्तर दिया——

हम गमजदा जिस दिन से गिरफ्ता बलां हैं
कपड़ों में जुंएं, बखियों के टांकों से सिवा

तदुपरांत जिस दिन जेल से रिहाई मिल जेल के कपड़े आपने वहीं, यह कहते ह फाड़कर फेंक दिये——

हाय ! इस चार गिरह कपड़े की किस्
'गालिब'
जिसकी किस्मत में हो आशिक का गरे होना

औरों पर फबती कसकर उपहास उड़ा आसान है, स्वयं का उपहास उड़ाना जीवट का काम है——

गजल पर ग

लखनऊ की प्रसिद्ध तवायफ उमरा जान 'जोहरा' बड़ी प्रतिभासंपन्न शा भी थी। उसके काव्य-गुरु थे प्रसिद्ध शा आगा अली 'शम्स'। जो अपने अ काव्य-शिष्यों की अपेक्षा जोहरा व उस बहिन मुश्तरी पर तनिक अधिक तव देते थे। यह बात न केवल उनके शि

बल्कि समकालीन शायरों को भी सह्य नहीं थी। अतः शेरो-शायरी के माध्यम से वे उनसे उलझ भी पड़ते थे। उन दिनों मुंशी हसीबुद्दीन 'सोजां' लखनवी शायरों में अपनी काफी ख्याति रखते थे। और वही शम्स साहब के प्रबलतम प्रतिद्वंदी भी थे। शम्स साहब जब अधिक झुंझला जाते, तब उनको नीचा दिखाने के उद्देश्य से, अपनी शिष्याओं से 'सोजां' साहब की गजलों पर गजलें तैयार कराते और बड़े गर्व से लोगों को सुनाते। सोजां भी चुप नहीं रहते और कुछ न कुछ शगूफा छोड़ ही देते थे। उनकी न मालूम किस हरकत से अप्रसन्न होकर जोहरा ने अपनी एक गजल तैयार की, जिसके कुछ शेरों में सोजां साहब पर इस प्रकार अप्रत्यक्ष प्रहार किये गये थे। दो शेर प्रस्तुत हैं—

रकीबे-स्यहरु को नामा न लिक्खो
वो हर्फे-गलत है मिटाने के काबिल
मुफस्सल कहो माजरा हाशियों का
जो हों जमा सारे जमाने के काबिल

और अंतिम शेर में तो कोई छुपाव-दुराव भी नही बरता गया, बल्कि सीधे ही तेज प्रहार कर दिया गया था।

न कह 'जोहरा' उसकी गजल पर गजल तू
कि 'सोजां' नहीं मुंह लगाने के काबिल

इस बात से ऐसी ले दे मची, कि सोजां व शम्स में एक अर्से तक बोल-चाल बंद रही।

भोपाल के प्रसिद्ध शायर व लेखक उपनाम 'उम्मीद' एक काव्य-गोष्ठी में अपनी ताजी रचनाएं सुना रहे थे। एक गजल पेश की, जिसके काफिये बहार की सूरत, खार की सूरत, करार की सूरत इत्यादि शव्दों के थे, मित्रों ने बड़ी सराहना की। जब गजल सुना चुके तब उनके एक निःसंकोच मित्र तनिक गंभीर होकर बोले—'उम्मीद साहब ! आपने एक बहुत बढ़िया काफिया छोड़ दिया' पूछा—'वो कौनसा ?' मित्र महोदय जिनका उपनाम 'असमत' था, बोले—'चमार'। उम्मीद साहब ने फौरन उत्तर दिया—'तो लीजिए अब इस काफिये पर भी शेर सुन लीजिए। लेकिन ये शेर सिर्फ आपके लिए है। फिर शेर पढ़ दिया—

जगह तो दिल में है, लेकिन न जाने क्यूं 'असमत'
बगल में बैठे हो लेकर चमार की सूरत !

२ ई/८७, एन, आई. टी. फरीदाबाद—
१२१००१ (हरियाणा)

कवि सम्मेलन कितने सार्थक कितने निरर्थक

● सुरेश नीरव

कवि-सम्मेलनों की सार्थकता तथा प्रासंगिकता को लेकर श्रोताओं, पाठकों त बुद्धिजीवियों के मन में अनेक प्रश्न उठते रहे हैं प्रस्तुत हैं हिंदी के कुछ सुपरिचित कवि के विचार---वे इस बारे में क्या सोचते हैं !

---सम्पाद

डिमांड एंड सप्लाई फारमूला

---गिरिजाकुमार माथुर

आजकल जो कवि-सम्मेलन हैं वे नितां रितुलिस्तिक होकर रह गये हैं। अब इनका सांस्कृतिक महत्त्व उतन नहीं रहा जितना कि पहले था। अर्था कवि-सम्मेलन अब एक फार्मूला बनकर र गया है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक संस्था द्वार रंगारंग कार्यक्रम किये जाते हैं उन कवि-सम्मेलन भी दर्ज हो गया है।

कवि-सम्मेलन के स्तर में गिराव की अंतरप्रक्रिया में संयोजक, कवि, श्रोत

० गिरिजाकुमार माथुर ० नीरज ० उमाकांत मालवीय ० डा० शेरजंग गर्ग ० जगदीश चतुर्वेदी ।

तीनों शामिल हैं। कवि-सम्मेलनीय कवियों के संदर्भ में मेरा कहना है कि—"जो पेट से कलम बांधे हैं, तो जो पेट भरेगा वह अपने ढंग से नचवायेगा।" कवि-सम्मेलन पर बाजार के 'डिमांड एंड सप्लाई' का नियम लागू होता है। आयोजकों और श्रोताओं की डिमांड ऐसे मनोरंजन की है, जिसमें दिमाग न लगाना पड़े। आज कवियों के तीन वर्ग बन गये हैं—

(१) मात्र साहित्यिक कवि (अध्ययन-मनन, शोध के विषय), (२) मनोरंजनकर्ता कवि (एंटरटेनर), (३) उप साहित्यिक कवि (लोकप्रिय कवि)। लालकिले छाप कविसम्मेलनों में श्रोता का मानसिक स्तर अपरिपक्व होता है। आयोजक तथा श्रोता असंस्कृत, कुपढ़ तथा कुरुचिपूर्ण टेस्ट के होते हैं।

श्रोता और आयोजक गंभीर कवियों को नहीं चाहते। वे सिनेमा के स्थान पर कवि-सम्मेलन चाहते हैं। इसलिए वहां प्रतिष्ठित कवि नहीं जाते। कैशोर्य मानसिक स्तर के कवि मंच पर जाते हैं और उसी मानसिकता के श्रोता वहां होते हैं। मंच के कवियों की साहित्यिक स्थिति नहीं है। यदि उन्हें 'कोल्डप्रिंट' में देखें तो वे प्रभावी नहीं लगते हैं। इनकी रचनाएं सामूहिक-श्रव्य कविता हैं, इसलिए पत्रिकाओं में नहीं छपतीं। मंचीय कवि इसीलिए साहित्यिक गरिमा से वंचित होता गया।

मंचीय कवि चुनाव कभी नहीं जीत सकते। ये मात्र मनोरंजनकर्ता हैं।

सुझाव : स्तर का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है। वैसे साहित्यिक समझ के कवियों को कवि-सम्मेलन में जाने से रिफ्यूज कर देना चाहिए।

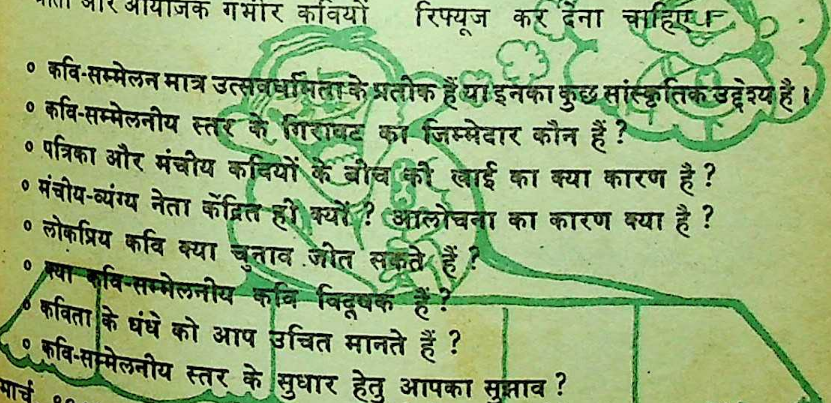

- ० कवि-सम्मेलन मात्र उत्सवधर्मिता के प्रतीक हैं या इनका कुछ सांस्कृतिक उद्देश्य है।
- ० कवि-सम्मेलनीय स्तर के गिरावट का जिम्मेदार कौन हैं ?
- ० पत्रिका और मंचीय कवियों के बीच की खाई का क्या कारण है ?
- ० मंचीय-व्यंग्य नेता केंद्रित ही क्यों ? आलोचना का कारण क्या है ?
- ० लोकप्रिय कवि क्या चुनाव जीत सकते हैं ?
- ० क्या कवि-सम्मेलनीय कवि विदूषक हैं ?
- ० कविता के धंधे को आप उचित मानते हैं ?
- ० कवि-सम्मेलनीय स्तर के सुधार हेतु आपका सुझाव ?

गलेबाजी ऐरे गैरे नत्थू खैरे की

—नीरज

आज से दो दशक पूर्व कवि-सम्मेलनों का उद्देश्य देश में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना की भूमिका तैयार करना भी था। लेकिन अब कवि-सम्मेलन मनोरंजन का साधन मात्र ही रह गये हैं।

कवि-सम्मेलनों के स्तर में गिरावट के जिम्मेदार मैं कवि-सम्मेलनों के संयोजकों, संचालकों और स्वयं कवियों को मानता हूं। सस्ती बाजारू कविताएं और हल्की पैरोडियां सुनाकर तथाकथित कवियों ने ही श्रोताओं की रुचि को विकृत किया है।

मंच से पढ़ी जानेवाली व्यंग्य कविताएं सचमुच ही नेताओं पर केंद्रित होती हैं। ऐसा सिर्फ सस्ती ताली बटोरने के लिए ही किया जाता है।

हां, मैं लोकप्रिय कवि हूं लेकिन चुनाव लड़ूंगा तो हार जाऊंगा। क्योंकि प्रजातंत्र में चुनाव व्यक्ति के नाम पर नहीं पार्टी के नाम पर लड़ा जाता है

मंच के हास्य-व्यंग्य कवियों को अगर विदूषक कहा जा रहा है, तो गलत नहीं कहा जा रहा है। उनकी कविताओं का हल्कापन भी इसका कारण है

कवि-सम्मेलनों के स्तर में सुधार
आयोजन बंद हाल में होना चाहिए।
ऐरे गैरे नत्थू खैरे को गलेबा
भाषणबाजी के बल पर कवियों की
में स्थान नहीं देना चाहिए।

फूहड़ नौटंकी

—उमाकांत माल

कवि-सम्मेलन सचमुच उत्सवधर्मि
के संवाहक हो सकते तो अच्छा
होता, परंतु वे एक फूहड़ नौटंकी बन
रह गये हैं। कवि सम्मेलन के स्तर में गिरा
वट के जिम्मेदार हास्य-रस के नहीं, वर
हास्यास्पद कवि, वीर रस के नाम प
नाहक चीखनेवाले कवि, मिनमिना
मटकनेवाले कव्वाल गीतकार, दूसरों की
रचनाओं पर चलनेवाली परोपजीवी
वे कवयित्रियां, जो काव्यपाठ को बाजा
अंदाज देती हैं। संचालक और कवियों के
बीच नोक-झोंक, अश्लीलता की परा
काष्ठा पार कर जानेवाले संचाल
बाजारू, विकृत रुचि के आयोजक, सौदे
बाज आयोजक-कवि, कुरुचिपूर्ण चंदा दे
वालों का कवियों के चयन में दखल और
अंत में श्रोता समाज।

'ताली छाप' कवि कतई चुनाव नहीं जीत सकते। किसी लहर विशेष के अधीन किसी दल की दुम में बंधा कोई कवि, मंत्री भी बन जाए यह बात दीगर है।

कवियों का सावधानी पूर्वक चयन, फूहड़ भदेस हास्यास्पद तत्वों का निर्वासन, गरिमामय संचालन, मनोंरंजन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण, गंभीर अच्छे रचनाकारों का मंच से परहेज छोड़ना, परोपजीवी कवियत्रियों का लोप, मंच को पुनः प्रतिष्ठा दिला सकता है।

विदूषकों का बहिष्कार हो

—डॉ. शेरजंग गर्ग

कवि-सम्मेलन निश्चय ही उत्सवधर्मिता के प्रतीक नहीं हैं, उनका उद्देश्य सांस्कृतिक होता है। देश की मिट्टी की गंध, मानवीय भावनाओं को, संवेदनाओं को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्ति देना तथा जनरंजन तथा सज्जन प्रियता का वातावरण तैयार करना कवि सम्मेलनों का प्रयोजन है। कवि सम्मेलनों की प्रयोजन-भ्रष्टता के पीछे न तो श्रेष्ठ कवियों का हाथ है, न ही सुधि श्रोताओं का। इन्हें भ्रष्ट करने के लिए जिम्मेदार हैं अधकचरे कवि और पेशेवर संयोजक। क्योंकि न तो श्रेष्ठ कवि कवि-सम्मेलनों का आयोजन करता है, न ही श्रोता।

हालांकि पत्रिकाओं में हमेशा ही श्रेष्ठ कवि नहीं छपते, पर यह एक वास्तविकता है कि मंच से श्रेष्ठ कवि गायब कर दिये गये हैं। कारण है—व्यांवसायिकता। जब कवियों के परिश्रमिक की मात्रा, तालियों की मात्रा से तय होगी, तो और क्या होगा?

घटिया कवियों को तो हमेशा ही विदूषक कहा गया है। रचनाओं में जब छद्म यथार्थ होगा, तब फिर आप कवियों को विदूषक कहने वालों को कैसे रोकेंगे? कवि सम्मेलनों का स्तर सुधारने के लिए जरूरी है कि साहित्यिक कवि, मंच से कतरायें नहीं। कवि-सम्मेलनों में मात्र गाने बजाने-वाले, हंसी-मजाक करने-वाले कवियों को कतई न बुलाया जाए और संवेदनशीलता से ओतप्रोत, यथार्थ को वाणी देनेवाले, विचारप्रधान साहित्यिक कवियों के बिना, किसी भी कवि-सम्मेलन का आयोजन न किया जाए।

कानूनी नियंत्रण आवश्यक

—जगदीश चतुर्वेदी

देश के विभिन्न नगरों और कस्बों में जो कवि-सम्मेलन किये जाते हैं वे

मात्र उत्सवधर्मिता के प्रतीक बन गये हैं। इनका सांस्कृतिक महत्व नगण्य है।

कवि-सम्मेलन में गिरावट की जिम्मेवारी सबसे पहले उन कवियों पर जाती है जो कि निकृष्ट कोटि की कविताएं श्रोताओं को सुनाते हैं।

जिस प्रकार की कविताएं गंभीर कवि लिखते हैं, उनका प्रकाशन लब्ध-प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में कदाचित संभव नहीं। होता यह है कि ये कवि मात्र विदूषक के रूप में मंच पर आते हैं और अपनी भावभंगिमा द्वारा जन-सामान्य को आकर्षित करते हैं। यह न तो इस योग्य ही हैं कि इनको अच्छी पत्रिकाए छापें और न ही वह स्वयं वहां रचनाएं भेजते हैं क्यो कि उन्हें अपने कविकर्म और कविता के स्तर का पता है। प्रतिष्ठित कवि ऐसे वर्ग के कवियों के साथ बैठने में अपने को अपमानजनक महसूस करते हैं।

यह मंचीय कविताएं तो सदा ही इस प्रकार की रहेंगी। नेता या राजनीति केंद्रित होने से जनमानस को मोटी-मोटी बातों में बहलाया जा सकता है और यह काम यह कवि बखूबी कर रहे हैं।

मेरा विश्वास है कि जनता भी इन कवियों को खूब पहचानाती है और ऐसे भांड कवि यदि चुनाव लड़ें तो कभी जीत नहीं सकते।

अधिकांश लोग इन कवियों को जो विदूषक या मूर्ख मानते हैं, वह उचित ही है। इसका कारण कविताओं का हल्कापन

तो है ही, इन कवियों की अपढ़ता और मानसिक रूप से उनका रुग्ण होना भी है।

कविता पाठ में जो ये हजारों रुपए कमा रहे हैं, उसके बारे में मैं अपनी कोई राय नहीं देना चाहता हूं। केवल मात्र इतना कहना चाहता हूं कि सामंतकालीन युग में बहुत-सी वेश्याएं भी एक रात में गाना गाकर बहुत-सा पैसा कमा लेती थीं।

कुछ मंचीय कवि उन कुकुरमुत्तों की तरह हैं जिनको जनता मंच से एक-दो माह भी दूर रहने पर भूल जाएगी।

कवि-सम्मेलनीय स्तर के सुधारने के लिये यह अधिक आवश्यक होगा कि इस प्रकार के हास्य कवि सम्मेलनों पर कानूनी नियंत्रण लगाया जाए। समझदार लोगों के बीच गोष्ठियां और सम्मेलन आयोजित किये जाएं और उनमें मात्र उन कवियों को सम्मिलित किया जाए जो साहित्य में प्रसिद्ध हैं तो समीचीन होगा।

आगामी अंक में पढ़ें—
बालकवि बैरागी, निर्भय हाथरसी,
दिनकर सोनवलकर, सुरेन्द्र शर्मा

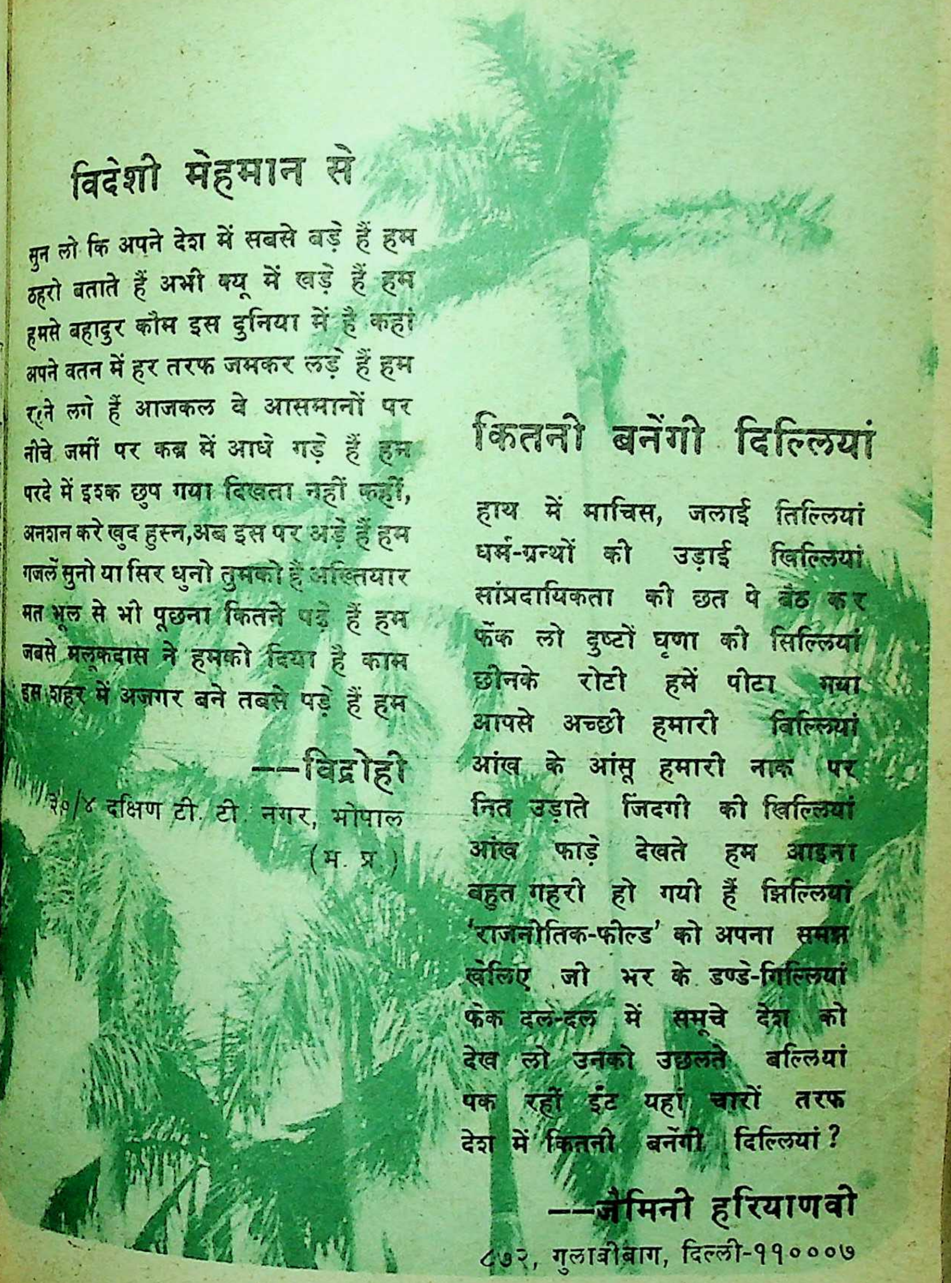

विदेशी मेहमान से

सुन लो कि अपने देश में सबसे बड़े हैं हम
ठहरो बताते हैं अभी क्यू में खड़े हैं हम
हमसे बहादुर कौम इस दुनिया में है कहां
अपने वतन में हर तरफ जमकर लड़े हैं हम
रहने लगे हैं आजकल वे आसमानों पर
नीचे जमीं पर कब्र में आधे गड़े हैं हम
परदे में इश्क छुप गया दिखता नहीं कहीं,
अनशन करे खुद हुस्न, अब इस पर अड़े हैं हम
गजलें सुनो या सिर धुनो तुमको है अख्तियार
मत भूल से भी पूछना कितने पढ़े हैं हम
जबसे मलूकदास ने हमको दिया है काम
इस शहर में अजगर बने तबसे पड़े हैं हम

——विद्रोही

२०/४ दक्षिण टी. टी. नगर, भोपाल
(म. प्र.)

कितनी बनेंगी दिल्लियां

हाथ में माचिस, जलाई तिल्लियां
धर्म-ग्रन्थों की उड़ाई खिल्लियां
सांप्रदायिकता की छत पे बैठ कर
फेंक लो दुष्टों घृणा की सिल्लियां
छीनके रोटी हमें पीटा गया
आपसे अच्छी हमारी बिल्लियां
आंख के आंसू हमारी नाक पर
नित उड़ाते जिंदगी की खिल्लियां
आंख फाड़े देखते हम आइना
बहुत गहरी हो गयी हैं झिल्लियां
'राजनीतिक-फील्ड' को अपना समझ
खेलिए जी भर के डण्डे-गिल्लियां
फेंक दल-दल में समूचे देश को
देख लो उनको उछलते बल्लियां
पक रहीं ईंट यहां चारों तरफ
देश में कितनी बनेंगी दिल्लियां ?

——जैमिनी हरियाणवी

८७२, गुलाबीबाग, दिल्ली-११०००७

बात एक आम आदमी की

मैं एक आम आदमी हूं
तुम्हारी नजरों में चाहे गावदी हूं
परंतु तुम्हारा गुरु हूं--
दुनिया की नजरों में सुर्खरु हूं
पिछले तीस बरसों में--मैं
बहुत समझदार हो गया हूं
सदाबहार हो गया हूं
तुम मुझे जड़-बुद्धि समझते रहे
और मैं तुम्हारी नादानी पर
हंसता रहा
तुममें से हर एक को परखता रहा
जब जब तुम में से किसी को
मैंने ताज पहनाया कुरसी पर बैठाया
तुमने समझा--कि
मैं सदा के लिए तुम्हारा हो गया हूं
और तुम्हें कुरसी सौंप कर सो गया हूं
परंतु मैं तो सदा अधमुंदी आंखों से
तुम्हें ताकता रहा--
अपने पैमाने से तुम्हें नापता रहा
अफसोस की बात है कि
आज तलक कोई भी--
मेरे पैमाने पर पूरा नहीं उतरा
हर किसी ने कुरसी को कुतरा
और जब-जब भी तुम
अपनी औकात पर आये
सपने लटके दिखाये तो मैं सतर्क हो गया
और मन में सोच लिया
कि ताज छीनूंगा ताजदार को धुनूंगा
सो शुरू से मेरे हाथों
तुम्हारी धुनाई हुई है
मैंने हर उस ताजदार को सजा दी है--
जिसने कहा कुछ किया कुछ
लिया कुछ, दिया कुछ
सन इकहत्तर हो चाहे सत्तर
और चाहे उन्नासी हो या अस्सी
मैंने दो टूक फैसला किया है
अपने भाग्य का स्वयं निर्णय किया है
अवसरवादियों को, बकवादियों को
दूध से मक्खी की तरह फेंक दिया है
मैंने कुछ प्रयोग भी किये हैं
दबंग फैसलें भी किये हैं
दंडितों को पुरस्कृत भी किया है
'भूल-सुधार' का मौका भी दिया
बार-बार ताज पहनाया है
इस आशा से कि अब वे
पिछली गलतियां नहीं दोहराएंगे
मुझे भली प्रकार समझ पाएंगे
तीन बरस पहले मैंने जिन को
ताज सौंपा था वे --
कुरसी के लिए लड़ते रहे और--
उनके गधे खुले चरते रहे
मैंने उन्हें पटखनी दे दी
और पहलों को इतनी शक्ति दे दी
कि--वे धड़ल्ले से फैसले लें
मेरे लिए कुछ करें
यदि फिर से, वे भी
गलतियां दोहराएंगे
मुझे नारों से बहलाएंगे
मेरी भूख नहीं मिटाएंगे
तो मैं उन्हें भी धर लूंगा
और यह बाद में सोचूंगा कि
अगली बार किस को ताज पहना
या खुद ही नेता हो जाऊं

--देवीशंकर प्रभाकर
कोठी नं. ८९३/७ बी, चंडी

ग़ज़ल

क्या अजब कारोबार है यारो
हर इक शैं बेकरार है यारो
मुद्दआ ये, वो आदमी है कहां?
जिसपे दारोमदार है यारो
शहर में देखने-काबिल क्या है?
मकबरा और मजार है यारो
कटी जबानें सिर्फ लेता है
कौन ये खरीदार है यारो
मुझको एहसासे जीस्त है जैसे
खानदानी उधार है यारो
आज सब लोग हैं ख़ामोश-ख़ामोश
बंद सट्टा-बजार है यारो
मेहरबानी-सी मेहरबानी है
पर मुझे नागवार है यारो
मेरी बहकी हुई बातों का सबब
कल की मै का खुमार है यारो

—प्रकाश जैन

गीत तथा नाटक प्रभाग
१५/१६ दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२

इश्क बाबा ने किया

इश्क बाबा ने किया था बाप को रोना पड़ा
और बेटे को अदालत में खड़ा होना पड़ा

अक्ल की जब घास नीलामी चढ़ी मैदान में
तब हिरन को भी उसे बाजार तक ढोना पड़ा

बेजगह यह मुट्ठियों में कसमसाता कब तलक
ख्वाहिशों का बीज रेगिस्तान में बोना पड़ा

दिल कहीं रख कर हमारा भूल वे जाने लगे,
एक दिन आया कि दिल से हाथ ही धोना पड़ा

जब कभी हम जिन्दगी की राह चौड़ाने चले,
फिर वही मसजिद शिवाले का कहीं कोना पड़ा

सांस रोके रात भर आकाश के तारे गिने,
स्वप्न में दुनिया बसाने को सुबह सोना पड़ा

ढूंढ़ तो लाये बरेली में गिरा झुमका, मगर,
फिर उसे इस बंबई की भीड़ में खोना पड़ा

शब्द-जालों के बहुत भांजे गये मुगदर नये,
हार आखिरकार कविता को गजल होना पड़ा

—रामावतार चेतन

८१ सुनीता, १४वां माला, कफ परेड
बम्बई-४००००५

भंग ज्यों गुलाल में

पिसी हुई इलायची की गंध-सा है प्यार
बांटिए कि बांधिए रुमाल में कहीं
दरवाजे पर दस्तक देते ही हैं ख्वाब
खोलिए कि टालिए मलाल में कहीं
लालटेन यादों की बस गरम धुआं
फूंकिए कि बालिए जलाल में कहीं
शर्माती हंसने में तलफ जिंदगी
गड्ढे- से पड़ते हैं गाल में कहीं
रस्ता तो सीधा है लबेगोर का
खम थोड़ा है सबकी चाल में कहीं
हल्की-सी शोखी, हल्का-सा नशा है
मिल गयी हो भंग ज्यों गुलाल में कहीं
जिससे भी पूछा, वह शख्स चिढ़ गया
लगता है, खोट है सवाल में कहीं

—अनामिका

अनिकेत, मुजफ्फरपुर-२

पुरानी कहानी

जो लब लबों पर ललक कर थे
जो नयन नयनों में थे सहज ही समा
जो बाल बालों से थे खेल में उलझ
जो हाथ हाथों-हाथ से दो दिलों को मि
न जाने उनको अब क्या हो गया
उनका दम खम सब एकदम खो गया
जो थी प्रेमी-हिम्मत वह अब सहमी हया
पुरानी कहानी में यह अध्याय निरा न

—जंगबहादुर

सी-७, निजामुद्दीन ईस्ट, नयी दि

रिश्ता

डाक से आना मनियाडर अच्छा लगता
रिश्ता केवल साली सलहज का जचता
ज्यों की त्यों प्रकाशित करदे मेरी र
वह पत्र मुझे प्रिय लगता है।
एक मेरी कमजोरी और वह भी बतला
बीबी गैरों की
बच्चा अपना अच्छा लगता

—सरजूप्रसाद

६, सुभाष नगर, उरई (उ.

बेगमों का वियोग सहना नामुमकिन है!

• वाजिदअली शाह

मेरा ताजो-तख्त छिन गया। मुसीबतों से संघर्ष करते हुए, मुझे लखनऊ भी छोड़ना पड़ा। कहा ये गया कि मैं कलकत्ता चलूं। फिरंगियों की सभी चालें एक-एककर कामयाब हो रही थीं। मैं मजबूर था। लखनऊ से चलकर कानपुर और इलाहाबाद होते हुए बनारस पहुंचा। बनारस में चौदह दिन कयाम किया। इस मौके पर बनारस के राजा ने मुझे जो सम्मान दिया, उसके लिए मैं क्या लिखूं? मैंने उम्मीद भी न की थी कि ताजो-तख्त छिन जाने के बाद भी कोई मुझे इस तरह

'हुस्ने अख्तर' को नवाब वाजिदअली शाह ने कलकत्ते में अपनी कैद के दौरान लिखा था। उनका उपनाम 'अख्तर' था और उन्होंने इस पुस्तक को उर्दू कविता में लिखा था। सन १८५९ में कैद से छूटने पर मटियाबुर्ज, कलकत्ता में उन्होंने उर्दू का एक छोटा-सा छापाखाना खोल लिया था। 'हुस्ने अख्तर' पहले वहीं छपी। इसकी केवल सौ प्रतियां छपी थीं। सन १९२१ में मौलवी महबूबअली ने पुस्तक की एक प्रति कहीं से खोजकर इसे दोबारा छापा। इस पुस्तक में नवाब वाजिदअली शाह ने अपने अंतिम दिनों का सच्चा हाल लिखा है। प्रस्तोता : इकबाल बहादुर देवसरे।

प्यार से गले लगाएगा। दरअसल राजा के रूप में मैंने ईश्वर के दूत को देखा था।

बनारस से जहाज में बैठकर मैंने कलकत्ता की यात्रा की। कलकत्ता पहुंचते ही बीमार पड़ गया। पूरे एक साल तक हम बीमारी से लड़ते रहे।

आखिर खुदा ने हमारी सुन ली। धीरे-धीरे तबीयत में सुधार होने लगा। जिस दिन हमने स्नान किया, उस दिन उस कोठी में जैसे खुशियां बरस पड़ीं। जश्न मनाया गया।

हम अपने बिस्तर पर ही लेटे थे। पता चला कि गोरे सिपाहियों ने कोठी को चारों तरफ से घेर लिया है।

गवर्नर जनरल का जो प्रतिनिधि घेरा डालने आया था, उसने हमें बताया कि मुल्क में कंपनी सरकार के खिलाफ बगावत शुरू हो गयी है। बागियों से यह सुनने में आया है कि आप उनकी मदद करेंगे। इसलिए कंपनी सरकार को आप पर शक है, बेहतर यही होगा कि आप चलकर कुछ दिन फोर्ट-विलियम में रहें।

हमारे साथ चलने के लिए बहुत से लोग तैयार हो गये। लेकिन अंगरेज अफसर ने सिर्फ आठ आदमियों को चलने की इजाजत दी। बेगमों को एकदम रोक दिया गया।

कुली दरवाजा में कैद

फोर्ट विलियम का एक दरवाजा 'कुली दरवाजा' कहलाता है। आठ दिन तक हम सबको इसी फाटक के अंदर बने कमरों में रखा गया। बेहद परेशानी थी। कोई खैर-खबर लेनेवाला न था। जाहिर था कि हम कैदी बना दिये गये थे।

किले के कुली दरवाजे में रहना मुश्किल हो रहा था। वहां बेहद तकलीफ थी। आखिर जब हमने बार-बार शिकायत की, तो अंगरेज अफसरों ने हमें वहां से हटाने का फैसला किया। किले के अंदर एक कोठी थी। हमें वहां रखा गया।

अब तक हमारा खाना मटियाबुर्ज से ही आता था। हमारी बेगमें हमारे लिए एक से एक बढ़िया खाना भेजती थीं। लेकिन पहरेवाले गोरे सिपाही खाने-पीने की हर चीज को देखते। कभी-कभी तो उंगली डालकर चख भी लिया करते थे।

बेगमें रुपये ले भागीं

लखनऊ से हमारे साथ जो बेगमें कलकत्ता आयी थीं, उनके नाम हैं—नवाब खास महल, मल्लिकाए मुल्क नवाब माशूक महल, नवाब दिलदार महल, आशिक उल सुल्तान नवाब कैसर बेगम, नवाब खुजस्ता महल, नवाब जाफरी बेगम। लेकिन बाद में मालूम हुआ कि कैसर बेगम ग्यारह हजार रुपयों की थैली लेकर लखनऊ भाग गयीं और उन्हीं की तरह खुजस्ता महल भी लखनऊ चली गयीं।

हमें खासतौर पर दिलदार महल और जाफरी बेगम से मोहब्बत है। इनमें जाफरी बेगम की खूबसूरती का क्या बयान करूं? वह बहुत शरीर, शोख, लड़ाकी

बदजबान और हर समय तलवार की धार बनी रहनेवाली भी है। चंचलता, चपलता के कारण वह अपनी जबान को काबू में नहीं रख सकती। ऐसा रूठती है कि मैं मनाते-मनाते थक जाता हूं। हजारों की थैलियां पेश करने पर ही कुछ सीधी होती है। लेकिन कुछ हो, उससे मुझे बेहद मोहब्बत है। पर करूं क्या ? इस कैद की जिंदगी ने मुझे कहीं का न रखा। तेंतीस साल की इस उम्र में बेगमों का वियोग सहा नहीं जाता।

शहजादे भिखारी बनाये गये

एक दिन सुबह के समय कर्नल कोनिया साहब ने एक बंद लिफाफा लाकर हमें दिया। इसको लखनऊ से दारोगा मीर वाजिदअली ने भेजा था। वह हमारी बेगम नवाब सुल्तानजहां महल की ड्योढ़ी का दारोगा था। इन दिनों लखनऊ की अंगरेजी हुकूमत उससे खुश थी। कारण ये था कि लखनऊ में बगावत जोरों से फैल रही थी। कुछ अंगरेज स्त्रियां और बच्चे बागियों के कब्जे में आ गये थे। उनकी जान संकट में थी। दारोगा ने कुछ बेगमों की सहायता से उन सबके प्राण बचाये थे। इसलिए लखनऊ की अंगरेज-हुकूमत मीर वाजिदअली से खुश थी। हमारी जो बेगमें और उनके बच्चे हमारे साथ कलकत्ता नहीं आ सके, वे सब लखनऊ में ही थे, अंगरेज सरकार ने उनकी देखमाल की जिम्मेदारी मीर वाजिदअली को सौंपी थी। अपने खत में लिखा था

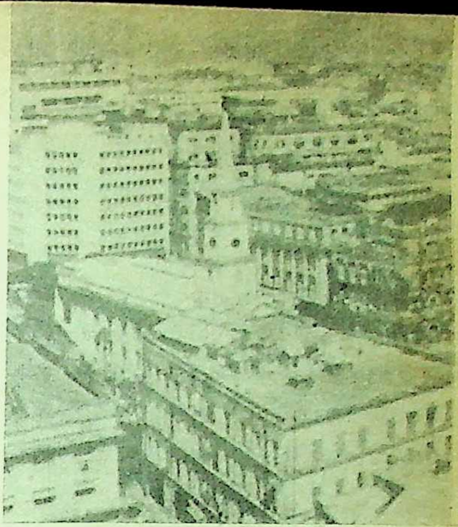

कि यहां बेगमें और बच्चे खैरियत से हैं। फिर उनके दुख:दर्द और खस्ता हालत के बारे में जो कुछ लिखा था, उसको पढ़कर हमें दुख हुआ। उन्होंने लिखा था, ‘दर,-असल बेगमों की हालत बहुत चितनीय है। उनमें भुखमरी-सी फैल रही है। उदर-पोषण का कोई जरिया नहीं है। शाहजादे और शाहजादियां दर-दर के भिखारी बन गये हैं। बेगमों के पास, जो कुछ था, उसे विद्रोही बागियों ने छीन लिया था। जो कुछ साज-सामान बचा था, उसे अभी हाल में हुकूमत ने कुर्क करके कोतवाली में रख लिया है। यद्यपि सामान सब बंद है, लेकिन उसके वापस मिलने की कोई उम्मीद नहीं है। यों दिखाने के लिए अंगरेज सरकार आठ बेगमों पर अपनी विशेष कृपा दिखा रही है। लेकिन इससे क्या होता है ? बेगमों का हाल तो बुरा है, ये बेगमें हैं—नवाब खुर्दमहल, नवाब सुल्तानजहां महल, शाहंशाह महल, नवाब

अमीर महल, शाहजादा कमरकदर की मां, नवाब फख्र महल, नवाब चित्र महल, नवाब उमराव महल, और नवाब सैयद महल। इनमें नवाब खुर्दमहल और नवाब सुल्तान जहांमहल ने बहुत बड़ा काम किया है। उन्हीं लोगों ने अंगरेज स्त्री-बच्चों को अपने यहां छिपाकर बचाया था। बाकी सभी बेगमें और बच्चे उन्हीं के साथ हैं। सरकार ने यों तो सबको अमां दे रखी है, लेकिन सिर्फ बातों से दुर्दशा तो नहीं सुधरती। ये सभी बेगमें हुजूर की भक्त हैं। जानमाल की दुआ करती हैं और चाहती हैं कि जहांपनाह किसी तरह उनकी तबाही को सुधारें। अंत में मेरी भी जहांपनाह से यही अर्ज है कि अपनी कलम से लखनऊ के अंगरेज सरकार को उचित रूप में कुछ लिखकर बेगमों को द्वार-द्वार की भीख मांगने से बचा लें। बेगमों के उदर-पोषण के लिए कम से कम पचास रुपया मासिक मिलना

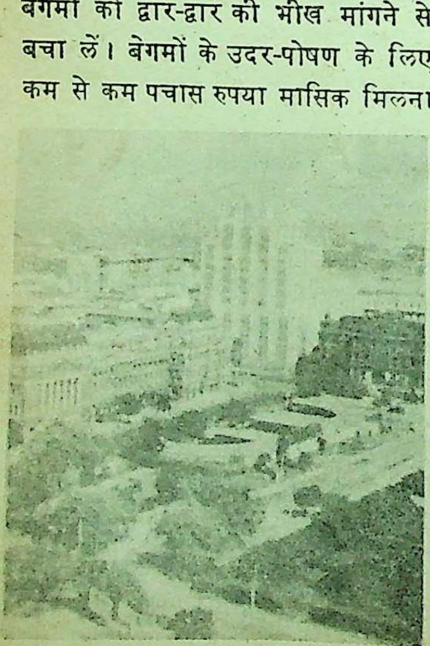

शुरू हो जाए, तो उन सबकी जानें ब जाएं, फिदवी उन सबकी रक्षा और सहायता के लिए जी-जान से तैयार है।'

बेगमों का वियोग

इस खत को पढ़कर हमने लाट सहाब को एक खत लिखा और उसके साथ दारोगा के खत की नकल भी भेज दी। गवर्नर जनरल ने जवाब में लिखा—'आप पूरा भरोसा रखें। लखनऊ में आपकी जो बीवियां और बच्चे मौजूद हैं, उन सबकी बहुत जल्द खबर ली जाएगी।'

गवर्नर जनरल के इस जवाब से हमें तसल्ली हुई। हमने लिखा—

अजब क्या कि जागे हमारे नसीब
जो बिछड़े हैं फिर हों वो हमसे करीब

हमारी बीवी जिसका नाम खुजस्ता महल है, मटियाबुर्ज की कोठी में रह रही थी। वह पंद्रह बरस से हमारे साथ थी। लखनऊ में उसे ढाई हजार मासिक गुजारा मिला करता था। इस कैद की हालत में भी हम उसे सौ रुपया माहवार दिया करते थे। हम उसे बहुत प्यार करते थे। लेकिन वह बहुत हलके दिल की और नासमझ साबित हुई। मटियाबुर्ज की कोठी से निकलकर लखनऊ जाने के लिए तैयार हो गयी। हमने सुना, बहुतेरा समझाया, मनाया। मोहब्बत के वादे इकरार भी किये। लेकिन वह न मानी। वह लखनऊ चली गयी, हालांकि उसने बहाना यह बनाया था कि वह कर्बला जा रही है। इन सब तमाम बातों के लिए हम यहीं

कह सकते हैं—

सुना कुछ जनों की रुखाई का हाल
खुद आराई-व-खुदनुमाई का हाल

माशूक महल, दिलदार महल, अख्तर महल, जाफरी बेगम और कैसर बेगम—ये पांचों हमारी बीवियां ही नहीं, इश्क व मोहब्बत की रंगीन तसवीरें हैं। फिर भी हमारा दिल, दिलदार महल तथा जाफरी बेगम को ज्यादा प्यार करता है।

निशानियां बेगमों की

इन पांचों बेगमों के वियोग को सह पाना हमारे लिए नामुमकिन था। फिर कैदखाना तो आखिर कैदखाना ही है। वहां दिलबहलाने का भला क्या सामान हो सकता है ? एक शायरी ही दिलबहलाव का जरिया थी। जिस समय अपनी माशूकों की याद आती, दिल तड़प जाता था। आखिर दिल को तसल्ली देने के लिए हमने एक तरीका निकाला। हमने अपनी बेगमों से प्रेम की निशानियां मंगायी। जिसने भेज दीं उसे हमने बावफा कहा, जिसने न भेजी उसे बेवफा कह दिया।

इस दिलबहलाव के सिलसिले में हमने कैसर बेगम से उनके पैर के अंगूठे का छल्ला मंगाया। कैसर बेगम ने जवाब में कहला भेजा—'आप अब मुझे अपनी माशूकों में न गिनें। मेरे पास छल्ला कहां है ? वह तो बहुत पहले चोरी चला गया। शायद आप ही ने चुरा लिया था।' चोरी की यह तोहमत लगाने पर हमारे दिल में उसके लिए दूनी मोहब्बत पैदा हुई।

हमने नवाब माशूक महल से उनके हाथों के नाखून मंगवाये। माशूक महल ने भी कोरा जवाब दिया। उन्होंने कहला भेजा—'आप जानते हैं कि मैं दुनिया में माशूक के नाम से प्रसिद्ध हूं। जो आपको प्यार करती हों, उनके हाथों के नाखून मंगा लीजिए और जो आप की सच्ची राजदार हों, वही भेज दें। आपने जो नाखून चाहे हैं, वह अब मेरे हाथों में नहीं हैं। लेकिन मैं हैरत में हूं कि आपने ये नाई का काम कब से सीख लिया है ?'

इसी तरह बाकी बेगमों को भी लिखा और उनसे निशानी के रूप में कुछ न कुछ मंगवाया, और इसी तरह वक्त गुजारते रहे। साथ-साथ जो कुछ दौलत थी, वह भी खर्च होती गयी। बेगमों, मुसाहबों और नौकरों को रुपये बांटने के बाद हमारे पास एक लाख सिक्के बच रहे हैं। वह भी खर्च हो जाएंगे। आमदनी की कोई सूरत नजर नहीं आती। समझ में नहीं आता कि ये खर्च कैसे चलेगा—

खुदा से ये कर अर्ज अख्तर बस अब,
रिहाई हो जल्दी मिटे ये तअब

जो भी हो, अब अपनी दास्तां का ये बयान यहीं खतम करता हूं।

बस अख्तर कर अब तर्क तर्जे बयां
हुई खत्म ये मसनवी गुलसितां
रखा 'हुस्ने अख्तर' जो शेरों का नाम,
यही नाम रखकर किया है तमाम।
पढ़े जो कोई, देवे इस्लाह नेक
कि रोशन रहे दिन को मसबाहे नेक

इलाही रहें शाद याराने हिंद,
फिर आबाद सेवें जवानाने हिंद
हुई मसनवी इस सुखन पर तमाम,
सलाम आलेकुम आलेकुम अस्सलाम। ●

विधि विधान

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून विशेषज्ञ——रामप्रकाश गुप्त

ताराचंद, नरेला——मैं दिसंबर १९७९ से किराये के मकान में रह रहा हूं और लगातार किराया दे रहा हूं। यह एरिया दिल्ली कंट्रोल एक्ट के अधीन नहीं है। मेरा मकान मालिक मुझे रसीद नहीं देता है। इस महीने से दस रुपये बढ़ाने के लिए भी कह रहा है। कृपया निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

(१) क्या मकान मालिक किराया बढ़ा सकता है?

(२) अगर वह किराया लेने से इंकार करता है, तो क्या किया जा सकता है?

(४) क्या इस मामले में पुलिस हस्तक्षेप कर सकती है?

(५) अगर किराया नहीं लेता है, तो कैसे दिया जा सकता है?

(६) क्या मालिक जबरदस्ती मेरा सामान बाहर निकाल सकता है?

मकान किराये पर लेते समय आपने आपस में कुछ शर्तें तय की होंगी। वह शर्तें आपके अधिकार निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगी। संपत्ति हस्तांतरण अधिनियम की धाराएं भी आप पर लागू होंगी।

किराया बढ़ाने का अधिकार मकान मालिक को नहीं है। शर्तों में निर्दिष्ट अवधि के पूरा होने तक वह मकान खाली नहीं करा सकता। समय पूरा होने पर संपत्ति हस्तांतरण अधिनियम के अंतर्गत मकान खाली करवाने की कार्यवाही की जा सकती है। किराया लेने से मना करने पर किराया मनीआर्डर से भेजा जा सकता है, या दीवानी न्यायालय में जमा करवाया जा सकता है। क्योंकि विवाद दीवानी है, इसलिए पुलिस इन मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। मकान मालिक जबरदस्ती सामान बाहर निकाले, तो पुलिस में रिपोर्ट कर सहायता ली जा सकती है। न्यायालय से निषेधादेश लाकर भी मकान-मालिक को ऐसा करने से रोका जा सकता है।

किराया लेने से इंकार

हर्षबहादुर सिंह, नयी दिल्ली—हम एक किराये के मकान में रहते हैं। मकान मालिक किराया लेने नहीं आता। वह चाहता है कि हम उसे स्वयं किरया देने जाएं। किराया लेने आना मकान मालिक की जिम्मेदारी है या किरायेदार की। क्या मकान मालिक को किराया मनीआर्डर द्वारा भेजा जा सकता है।

मकान मालिक को तलाश करके उसे किराया देने की जिम्मेदारी किरायेदार की होती है। किराया नगद दिया जाना चाहिए। यदि वह किराया लेने से इंकार करे, तो किराया मनीआर्डर से भेजा जा सकता है। डाक अधिकारियों द्वारा मनीआर्डर से किराये की रकम प्रस्तुत किया जाना, हमारे देश में किराये का वैध प्रस्तुतीकरण माना जाता है। मकान मालिक द्वारा किराया लेने से इंकार किये जाने की स्थिति में किराया न्यायालय में भी जमा करवाया जा सकता है। दिल्ली उच्च न्यायालय के मान्य न्यायाधीश एम. एल. जैन ने आदेश के विरुद्ध दूसरी अपील संख्या ४७ वर्ष १९८० का निर्णय देते हुए उपरोक्त सिद्धांत को मान्यता दी है।

ससुराल द्वारा क्रूर व्यवहार

मीनूसिंह चौहान, इलाहाबाद— मैं २४ वर्षीय विवाहित महिला हूं, मेरा विवाह ४ वर्ष पूर्व हुआ था। लेकिन दो वर्षों से मैं अपने मायके में हूं, मेरा वैवाहिक जीवन दुःखपूर्ण है, क्योंकि मेरे ससुरालवालों का व्यवहार मेरे प्रति बहुत क्रूरतापूर्ण है। मेरे पति और मेरी सास ने मुझे बुलाने के लिए कई टेलीग्राम भेजे हैं, लेकिन मैं वहां उनके क्रूर व्यवहार के कारण जाने में घबराती रही और उनसे इस बात की गारंटी चाहती रही कि वे अपने व्यवहार को ठीक करें, तभी मैं वहां जा सकती हूं। लेकिन उन्होंने मेरी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और उन्होंने इसी बीच दूसरी शादी भी कर ली है। आप यह बताने का कष्ट करें, कि क्या वह अपने टेलीग्रामों के माध्यम से मेरे विरुद्ध कोई मुकदमा दायर कर सकते हैं ?

आपको किस प्रकार की कार्यवाही की आशंका है, इसका आपने पत्र में उल्लेख नहीं किया। दूसरा विवाह कर लेने के बाद आपके पति आपके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं कर सकते। एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करने की गलती आपके पति ने की है, जिसके विरुद्ध कार्यवाही करने का अधिकार अगर किसी को प्राप्त होता है, तो वह आप हैं, न कि आपके पति।

सुकुमार, जयपुर—मैं एक २७ वर्षीय अच्छी पर्सनेलिटी का नवयुवक हूं, एक सरकारी विभाग में सुपरवाइजर के पद पर कार्यरत हूं और मेरी मासिक आय १००० रुपये है। आठ-दस मास पूर्व पारिवारिक भावुकता में आकर, मैंने एक ऐसी लड़की से शादी कर ली है, जो न तो

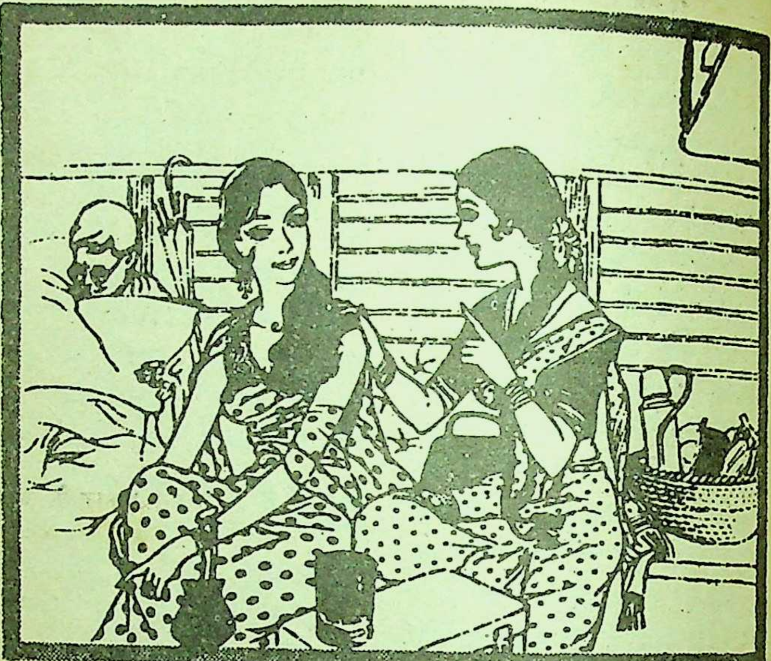

हर जगह आपके साथी

तानसेन
सुगन्धित पान मसाले

धर्मपाल प्रेमचन्द लि० चान्दनी चौक देहली-११०००६

देखने में सुंदर है और न ही व्यवहार-कुशल। साथ ही वह तुतलाती भी है। परंतु, इसका पता मुझे शादी के बाद ही चल सका।

अब मैं अपनी पत्नी के कारण अत्यधिक हीन-भावना से ग्रस्त हूं, मैं कहीं भी उसे साथ नहीं ले जा सकता, क्योंकि हर समय मुझे यही आशंका रहती है कि लोग मन ही मन मुझ पर हंस रहे हैं। मैं इसी कारण से हमेशा तनाव ग्रस्त रहता हूं, कृपया सुझाव दें, कि क्या मुझे अपनी पत्नी से तलाक मिल सकता है और क्या मैं अपनी इच्छा से पुनः विवाह कर सकता हूं ?

हिंदुओं में तलाक की व्यवस्था हिंदू विवाह अधिनियम १९५५ के द्वारा की गयी है। उक्त अधिनियम में उल्लिखित आधार पर ही तलाक मिल सकता है।

विवाह करने से पूर्व आपको सोचने-समझने का पूरा अधिकार था। तनावग्रस्त रहना आपको तलाक मिलने का आधार नहीं बन सकता। एक पत्नी के रहते दूसरे विवाह की अनुमति भी हिंदू विवाह अधिनियम नहीं देता, अतः आप दूसरा विवाह नहीं कर सकते।

दूकान खाली कराना

ललित कुमार, मुजफ्फरनगर—हमने अपने मकान में १९७० में एक दूकान किराये पर दी थी, जिसे अब हम खाली कराना चाहते हैं। हम किरायेदार से आधी ही दूकान खाली कराने तथा उसका किराया भी बहुत कमकर देने को तैयार हैं, अगर वह कम समय में ही आधी दूकान खाली कर दे। ऐसी परिस्थिति में दूकान खाली कराने के लिए हमें किस नियम के अंतर्गत क्या कार्यवाही करनी चाहिए ?

अपनी आवश्यकता के लिए दूकान खाली करवाने की कार्यवाही की जा सकती है। इस हेतु आपको उत्तर प्रदेश शहरी-भवन (किराया, खाली करवाने, व किराया देना के प्रबंध करने) अधिनियम १९७२ की धारा २१ के अंतर्गत नियत अधिकारी से समक्ष आवेदन देना होगा। उल्लेखनीय है कि इस प्रकार के आवेदन पर दूकान खाली करने का आदेश दूसरे पक्ष की सुनवायी के बाद ही दिया जा सकता है तथा नियत अधिकारी आदेश देते समय किरायेदार को क्षतिपूर्ति के रूप में दो वर्ष के किराये के समकक्ष राशि देने का आदेश भी देंगे। ●

वकील :—कोई ऐसा कारण बताइए, जिसके आधार पर मैं तलाक का मुकदमा दायर कर सकूं, जैसे, क्या वह जुआ खेलते हैं ? शराब पीते हैं ? दूसरी औरतों के पास . . .

महिला :—यही तो मुसीबत है कि वह ऐसा कुछ नहीं करते। इसी कारण तो सहेलियों में और सोसायटी में मुझे इज्जत नहीं मिलती।

—शकील अख्तर

चीनी लघु कथाएं

● सत्यप्रकाश

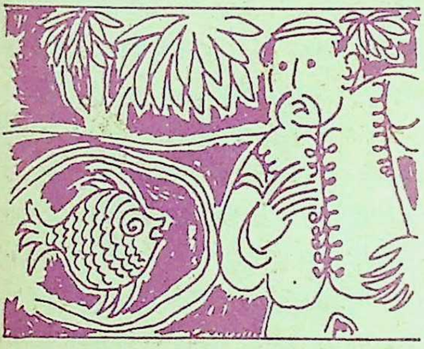

किस्सा सूखे गढ़े में फंसी मछली का

चीन में छुवांग नामक एक व्यक्ति बहुत गरीब था। वह एक दिन वेई नगर के एक साहूकार मारकिस से कुछ पैसे उधार लेने गया।

मारकिस उसकी याचना सुनकर बोला, "ठीक है, पर तुम्हें तब तक इंतजार करना पड़ेगा जब तक कि मैं अपने सारे कर्ज और टैक्स वसूल नहीं कर लेता हूं। तब मैं तुम्हें तीन सौ चांदी की टायलें उधार दूंगा।"

मारकिस की बात सुनकर छुवांग को अत्यंत क्रोध आया। उसने मारकिस से कुछ न कहकर केवल उसे एक आपबीती सुनायी, "कल जब मैं अकेला जा रहा था तो मैंने एक सूखे गढ़े में एक मछली फंसी देखी। मुझे देखकर उसने आवाज लगायी, 'बूढ़े आदमी, जब मैं पूर्वी सागर से आ रही थी तो दुर्भाग्य से इस सूखे गढ़े में फंस गयी। अब मैं प्यास से तड़प रही हूं। कृपया मुझे पानी की एक बाल्टी ला दो और मेरी जान बचा लो।' मैंने सिर हिलाया और कहा, 'अवश्य, मैं दक्षिण में कुछ शाहजादों से मिलने जा रहा हूं। उधर बहुत से दरिया हैं। मैं तुम्हारे लिए किसी दरिया से अवश्य पानी लेता आऊंगा।' मेरी बात सुनकर मछली उत्तेजित हो गयी और उसने मुंहतोड़ जवाब दिया, 'वह पानी मेरी क्या भलाई करेगा? अगर अभी तुम मुझे पानी दे दोगे तो मैं बच जाऊंगी लेकिन यदि मैं दरिया के पानी के लिए तुम्हारा इंतजार करती रही तो अवश्य ही मैं मर जाऊंगी और जब तक पानी मुझ तक पहुंचेगा तब तक तुम मुझे नमकीन मछली के रूप में बाजार में देख सकोगे।' मेरी यह आप बीती कैसी लगी?"

छुवांग की आपबीती बात सुनकर मारकिस ने उसे चुपचाप बिना इंतजार कराये, सबसे पहले ही पैसा दे दिया।

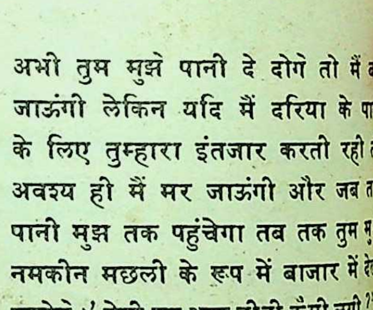

चोर की कथा

एक रात कुछ चोरों ने आवंती के घर चोरी की। सामान लेकर वे अभी कुछ ही दूर गये थे कि उन्होंने आवंती को अपने पीछे छोटी-छोटी चीजें उठाये हुए आते देखा।

"कहो आवंती, तुम इतनी रात गये कहां जा रहे हो?" एक चोर ने पूछा।

"ऐसा है," आवंती ने उत्तर दिया, "मैं बहुत समय से कहीं और जाना चाहता था लेकिन किसी गाड़ी का इंतजाम नहीं कर सका था। आप लोगों ने मेरी सहायता कर बड़ी कृपा की।"

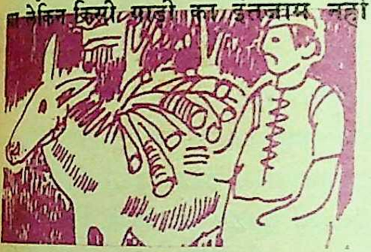

प्रायश्चित

एक बार आवंती को एक भटकी हुई भेड़ मिली। वह उसे घर ले गया तथा उसे मारकर खा गया। उसके एक मित्र ने यह सुना तो उससे पूछने लगा, "तुम भगवान को इस पाप के बारे में क्या सफाई दोगे?"

"मैं कहूंगा कि मैंने भेड़ को नहीं खाया।" आवंती ने उत्तर दिया।

"लेकिन! अगर गवाही देने के लिए भेड़ स्वयं उपस्थित हो गयी तो?" उसके मित्र ने पूछा।

"तब तो बहुत अच्छा होगा, "सारा झगड़ा निपट जाएगा।"

जलवायु का प्रभाव

एक बार की बात है कि चीन के 'छी' राज्य का दूत यान-त्ज 'छू' राज्य के निमंत्रण पर 'छू' राज्य आया। एक दिन 'छू' राज्य के राजा ने उसे अपने यहां दावत दी। जिस समय दावत चल रही थी, उसी समय राजा के दो सिपाही एक आदमी को पकड़ कर राजा के सामने लाये।

'छू' राज्य के राजा ने पूछा "इस आदमी ने क्या अपराध किया है?" सिपाहियों ने उत्तर दिया, "यह आदमी चोर है और 'छी' राज्य का निवासी है।"

यह सुनकर राजा ने 'छी' राज्य के दूत यान-त्ज की तरफ मुड़ते हुए कहा, "क्या यह सत्य है कि 'छी' राज्य के तुम सभी निवासी चोरी करना पसंद करते हो।"

यान-त्ज ने शांतिपूर्वक उत्तर दिया, "कहा जाता है कि यदि हुआय नदी के दक्षिण में पैदा होनेवाले संतरे के पेड़ को लाकर उत्तर में आरोपित कर दिया जाय तो उस पेड़ पर फलनेवाले मीठे फलों का स्वाद खट्टा और कड़वा हो जाता है। फलों के स्वाद में इस परिवर्तन का कारण जलवायु है। हम 'छी' राज्य के लोग चोर नहीं होते, पर 'छू' राज्य में प्रवेश करते ही चोर बन जाते हैं। मेरे विचार से इस परिवर्तन का कारण भी जलवायु ही है।"

—११, सतलुज छात्रावास जवाहरलाल
नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

संपादक-मंत्री दोनों खड़े...

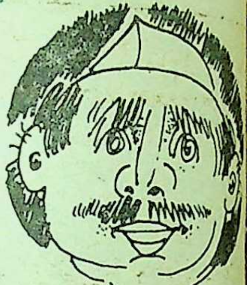

भारत-जैसे महाप्रजातांत्रिक देश में, दो ही जाति के लोग बड़े हैं। संपादक और मंत्री ! यदि लेखकों के लिए संपादक बड़े हैं तो आम जनता के लिए मंत्री ! यह तो निश्चित ही है कि बड़े दोनों ही हैं ! समस्या तो इस बात की है, इन दोनों में से भी बड़ा कौन है.? अर्थात पहला दर्जा किसका ! लेखक और पाठक, संपादक को पहला दर्जा देते हैं, जबकि जनता मंत्री को ? यह अत्यधिक गंभीर समस्या है, जो प्रजातंत्र को खतरे में डाल सकती है। वास्तव में यह विवाद एक समारोह में उठ खड़ा हुआ था। आयोजकों की गलती से एक समारोह की अध्यक्षता के लिए, एक संपादक और एक मंत्री आमंत्रित कर लिये गये। बस, मंच पर ही तू-तू, मैं-मैं हो गयी। संपादक-मंत्री मंच पर भिड़ गये, समारोह धरा का धरा रह गया। तभी यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ ! इसके पहले कि यह विवाद तूल पकड़े, मैंने विवाद को सुलझाने के लिए कुछ जनता के लोगों को, जो लेखक किस्म के हैं, आमंत्रित कर लिया। उन लोगों ने जो निर्णायक मत दिये, वे यथावत प्रस्तुत हैं यहां !

पहाड़ा मंत्री और संपादक का

—के. पी. सक्सेना

यार किंजल्क ! मैं तो तुम्हें बड़ा होनहार समझता था ! मगर लगता है कि अपना फ्यूचर तुम खुद ही तीन-तेरह करने में लगे हो ! संपादक का मुकाबला मंत्री से ?... कहां मंत्री, कहां संपादक ! ... फारसी में, 'चे निस्बत खाक रा बा आलमे पाक' (जमीन की खाक और जन्नत का क्या मुकाबला !... एक मंत्री

• संयोजक : जगदीश किजल्क

सिर्फ एक फोन मार दें तो दस संपादक खड़े कर दे. . .दस संपादक मिलकर पूरा प्रेस सिर पर उठा लें, तो एक मंत्री नहीं बना सकते। मंत्री मंत्री होता है ! 'मंत्र' के साथ 'इऽऽऽऽऽ' का चाहे जितना लंबा अलाप लो, मगर मंत्री की महिमा का स्वर नहीं बांध सकते । आदमी का पहाड़ा पढ़ो तब समझोगे कितने पहाड़ पार करके आदमी मंत्री बनता है ! आदमी का पहाड़ा सुनो—'आदमी एकम आदमी, आदमी दूनी दल, आदमी तिया तिकड़म, चौक्के चुनाव, पंज्जे. . . पार्टी बंदी, आदमी छक्के एम. एल. ए., आदमी सत्ते सत्ता, आदमी अट्ठे ... आवा गमन, आदमी नेवां नमन, आदमी घाम—मंत्री'—अब जरा संपादक का पहाड़ा पढ़ो ! संपादक एकम संपादक—संपादक घाम संपादक ! किसी तरफ से पलटो सिर्फ संपादक ।

...और मंत्री ? हाय राम ! पांच बरस पब्लिक को सिर्फ दांत गिनने में लग जाते हैं, कि खाने के कहां हैं और दिखाने के कितने हैं ? कभी मुसकराहट देखी है मंत्री की ? मां के बाद सबसे अधिक स्नेही मुस्कान मंत्री की होती है। चौंतीस वर्ष हो गये, सिर्फ मुसकराकर ही जिंदा रखे हुए हैं! . . . तुम्हारा संपादक मुसकरा देगा, तो एक रचना छाप देगा ! सौ रुपल्ली दे देगा, बस ! इधर मंत्री मुसकरा दे, तो दो बोरा शक्कर ले जाओ . . . ! मुकाबला भी करने चले मंत्री का तो बेचारे संपादक से ! हुहं ! . . . किसी ऊंचे स्मगलर या नटवरलाल से किया होता। मैं सन '३४ में सोच समझकर पैदा हुआ था, इसलिए कि जवान होते-होते तक मंत्रियों का बोलबाला हो चुका होगा और टिप्पस लड़ा लूंगा ! . . .अब यह कौन जानता था कि मेरी सारी जवानी तुम्हारे संपादकों के चक्कर में बरबाद हो जाएगी ! मैं ठहरा घर-गृहस्थी ! कोई बैरागी होता, तो संपादकों को भी साधे रहता और मंत्री भी हो जाता ! रिंद के रिंद रहे, हाथ से जन्नत न गयी ! . . .मगर मेरा एक उसूल है कि सत्यानाश एक ही चीज का करो! ... सो साहित्य का कर ही

जगदीश किंजल्क

के. पी. सक्सेना

सूर्यबाला

रहा हूं ! ...राजनीति का क्यों करूं ! ...और फिर, राजनीति वैसे ही कौन कम सत्यानासियों से भरी पड़ी है ? ... ब्याह नहीं हुआ, तो क्या बारातें भी नहीं देखी हैं ? मैं मंत्री न हुआ, पर मंत्री पद की गरिमा तो जानता हूं। ... कोई संपादक थोड़ा ही है कि तड़ से सखेद रचना लौटा दी ! ... मंत्री किसी को यों ही नहीं लौटाता ! एक अदद मुसकराहट भरा आश्वासन तो देता ही है। वैसे मैं जानता हूं कि मैं लाख बकूं मगर तुम 'मंत्री महिमा' नहीं समझोगे ! संपादकों के दुलारे जो हो, वरना यह परिचर्चा छापेगा कौन ? मुझे चाहे तुम्हारा संपादक परिचर्चा से निकाल दे, मगर मैं मंत्री-मोह नहीं छोड़ सकता ! मेरे भाई, पत्रिका से देशहित बड़ा होता है ! मुंह में गंगाजल पड़ते तक मैं कहूंगा. . .मंत्री बड़ा. . .मंत्री बड़ा !

प्रो॰ श्यामनंदन किशोर

संतोष खरे

डा॰ सरोजनी प्रीतम

एक 'कंपरेटिव स्टडी'

--सूर्य बाला

हाय ... क्या बात पूछी है बंधु ! दिल में सोच रही थी कि कुछ अदद संपादक के नख-शिख वर्णन हो पाते, तो कैरियर के लिहाज से अच्छा रहता ! सो आपने उबार लिया बंधु, बुरा न मानिए सवाल आपका खासा अहमकों-जैसा है। अरे इसमें भी किसी छपनेवाले लेखक के दो मत हो सकते हैं कि संपादक बड़ा या मंत्री ? यानी वह जिस पत्तल में खाये उसी को छेद करके छलनी बना दे ? तो खायेगा किसमें ? कालिदास-जैसे युगांतकारी कवि रोज-रोज पैदा नहीं होते कि जिस डाल पर बैठे हों, उसी को काटें ! अजी हमें तो तमाम डालें काटनी हैं गिन-गिनकर ! रही 'कंपरेटिव स्टडी' की बात, तो मैं डंके की चोट पर कहती हूं कि बलिहारी गुरु आपने जिन रचना और फोटो भी दई छपाय ! और महीनाभर पीछे जब पारिश्रमिक का चेक आता है तब इस चेक को देखकर क्या हालत होती है, उसका बिहारी ने बड़ा यथार्थ चित्रण किया है—

बौरी लौं दौरी फिरत, अंगना-अंगना, मांहि

कहां यह विह्वल, ब्रह्मानंद सहोदर की स्थिति, और कहां मंत्री के रूखे सूखे भाषण आश्वासन ... । जिसे देखिए वही दे रहा है। वादे पै मारे गये, बंदे हम सीधे सादे।

...चिंदीभर कागज के टुकड़े के लिए बेचारे दर-दर हाथ फैलाते घूमते हैं और यहां! क्विटलों कागज सखेद लौटा दिये जाते हैं। क्या रुतबा है ! क्या चश्मा है ? क्या हस्ताक्षर हैं. . . ! कंपरेटिव स्टडी चल रही है ! अरे मंत्री की बात क्या पूछते हैं मुझसे? पूछिए कबीर से कि--

पानी केरा बुदबुदा अस मंत्री की जात
लड़त, गिरत, फिर लड़त
जमानत, जब्त, जात पछतात

दोनों मौसेरे भाई

--डॉ. श्यामनन्दन किशोर

बड़े धर्म संकट में डाल दिया आपने ! संपादक को छोटा कहूं, तो मेरी रचनाओं का प्रकाशन खतरे में पड़ जाए और मंत्री को छोटा कहूं, तो कुलपतित्व के विरुद्ध षड्यंत्र शुरू हो जाए ! भाई किंजल्क-जी! आपसे मेरा कोई वैर तो नहीं, क्यों आपने इस परिचर्चा में मुझे डाल दिया ? लेकिन जब ओखल में सिर पड़ ही गया, तब मूसल की क्या परवाह ! सौभाग्यवश बड़े से बड़े संपादक और छोटे से छोटे मंत्री तथा छोटे से छोटे संपादक और बड़े से बड़े मंत्री से मिलने का अवसर मिला है। संपादकों की कृपा न होती, तो मुझे पहचानता ही कौन और छतरपुर से मुजफ्फरपुर तक आपका पत्र दौड़ा-दौड़ा आता कैसे ? विदेशों में निश्चित रूप से मंत्री से संपादकों का महत्त्व अधिक है। संपादकों के मत से बड़े-बड़े मंत्री चारों-खाने चित्त हो जाते हैं। संपादकों द्वारा किये गये छोटे-बड़े आंदोलन पूरी राजनीतिक विचारधारा को बदल देते हैं। भारत में स्थिति उल्टी है।

संपादक को मैं बड़ा मानता हूं कि वह और कुछ नहीं, तो कविता या लेख का शीर्षक ही बदल दे सकता है--बिना इस बात की चिंता किये कि उसका प्रभाव पाठकों पर क्या पड़ेगा ! उन्हें इसलिए भी बड़ा मानता हूं कि उनकी रद्दी की टोकरी का पेट बहुत बड़ा होता है, जो कभी-कभी अच्छी रचनाएं भी गटक जाती है। मंत्री को भी इसलिए बड़ा मानना पड़ता है कि उसकी रद्दी की टोकरी अच्छा से अच्छा आवेदन पत्र पचा जाती है, और वह बिना गुण-दोष का निर्णय किये छोटे पदवाले को बड़े पद पर, और बड़े पदवाले को छोटे पद पर, प्रतिष्ठापित कर सकता है। इस संदर्भ में, संपादक और मंत्री, दोनों ही मौसेरे भाई हैं।

गुरु और गोविंद से दोउ

--संतोष खरे

हकीकत तो यह है कि संपादक और मंत्री, मैं दोनों को समान रूप से महत्त्व देता हूं ! संपादक से मिलने पर मैं उसे मंत्री से बड़ा और मंत्री से मिलने पर उसे सबसे बड़ा कहकर साष्टांग दंडवत करता हूं। साहित्य जगत में, जब मुझे कोई नहीं जानता था, तब संपादक ने मुझे लोकप्रिय बना दिया--रद्दी रचनाएं छाप-छापकर। जब लगातार मेरी रचनाएं प्रकाशित हुई, तब मजबूर होकर

हिन्डन की बहार... लाई निखार

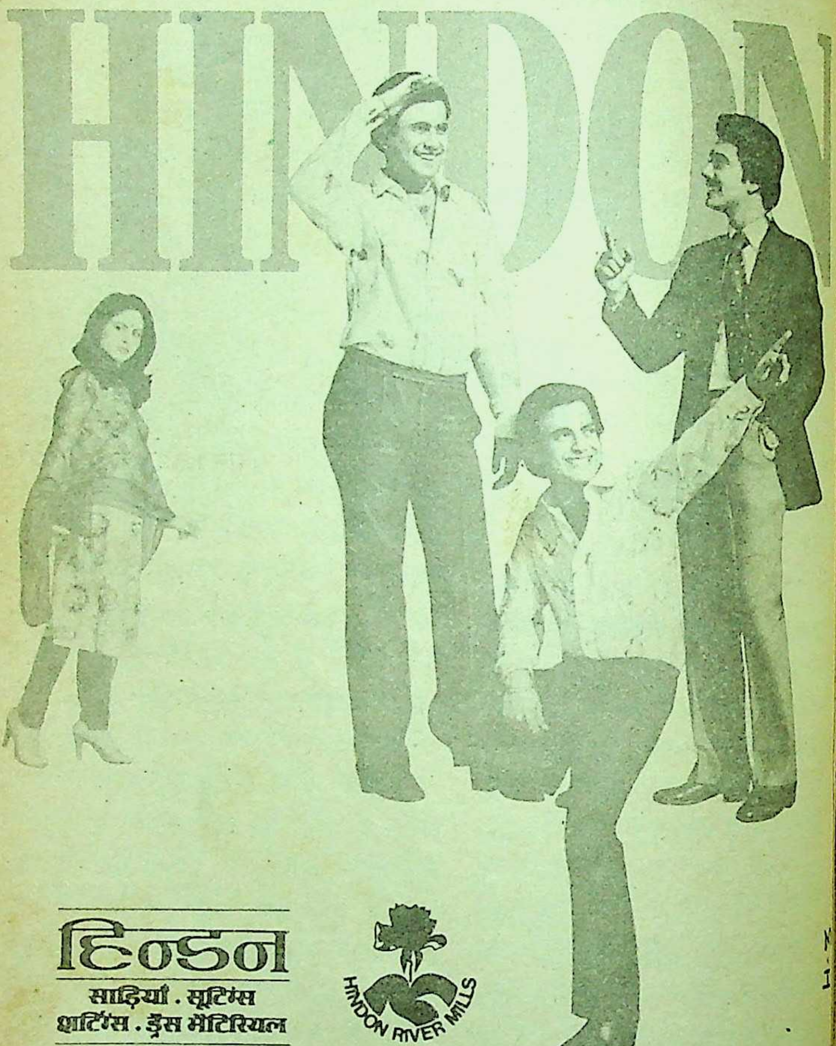

हिन्डन

साड़ियाँ . सूटिंग्स
शर्टिंग्स . ड्रेस मैटिरियल

सर्वाधुनिक मिल द्वारा
निर्मित कपड़े

HINDON RIVER MILLS

DCM
TEXTILES

५०० से भी अधिक डी सी एम रिटेल स्टोर्स
तथा अन्य रिटेल स्टोर्स पर उपलब

पाठकों-समीक्षकों को मुझे लेखक मानना पड़ा। यह एक रहस्य है कि रचनाओं के प्रकाशन के पीछे, रचना से अधिक संपादक के चरणवंदन का महत्त्व अधिक था! उसकी स्तुति में लिखे गये लंबे-लंबे पत्र, उसके विरोधी गुट की निंदा और संपादक के गुट में रहने का पूरा लाभ मुझे मिला, और मैं साहित्याकाश में धीरे-धीरे ऊपर ... और ऊपर चढ़ता गया। ऐसे संपादक महान को क्या मैं कभी भूल सकता हूं? ऐसे अवसरों की ताक में रहता हूं कि उसके चरण-कमल उपलब्ध हों और मैं उनकी वंदना कर सकूं। संपादक की प्रशंसा में मैं अधिक कुछ नहीं लिखूंगा! (लिखना होगा, तो सीधे संपादक को ही क्यों न लिखूं?) बंधु ! संपादक और मंत्री मेरे लिए गुरु और गोविंद की तरह हैं और मैं दोनों को प्रणाम करता हूं।

अजगरी जकड़न

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

मंत्री और संपादक की उत्पादन शक्तियों में ही अंतर स्पष्ट है। मंत्री सिर्फ चमचे पैदा करता है . . .। संपादक की कृपा होते ही बंजर भूमि पर भी प्रतिभा के अंकुर फूटते हैं। और जहां भूमि उपयुक्त हो. . . प्रतिभा के खेत लहलहा रहे हों, वहां यदि संपादकों की कृपा दृष्टि न हुई, तो वे प्रतिभाएं मुरझा जाती हैं। लोग कहते हैं कि कवि पैदा होते हैं—संपादक, इन पैदा हुए कवियों, लेखकों, बुद्धिजीवियों के परिवार-नियोजन का संचालक है। आज के युग में जब हर व्यक्ति कवि या लेखक ही पैदा हो रहा है, संपादकों के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है।

मंत्री का शासन-काल औरों की कृपा पर निर्भर है। संपादक कुछ ही दिनों में उसका ऐसा-वैसा चित्र खींच दे, अन्य शासनकर्ताओं की पोल खोल दे, उनके बखिये उधेड़ दे, तो बेचारे मंत्री को असमय ही अपने पद से कूच करना पड़ता है। उसकी बाहें लंबी जरूर हैं, पर संपादक की अजगरी जकड़न के सम्मुख कुछ भी नहीं। बड़ा वह होता है, जो औरों को मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करता रहे! जो भी इन दोनों के बारे में सही राय दे बैठेगा, वह काम से जाएगा। संपादक तो—अपारे काव्य संसारे—संपादकैव प्रजापति। संपादक ब्रह्म सहोदर कहा जा सकता है। मंत्री इस तथाकथित ब्रह्म के लिए एक उल्टी-सीधी रचना है, जो कार्टून बनती है, कुछ ऐसे कृत्य करती है, जिससे संपादक को अपनी पत्रिकाओं के लिए कुछ भोज्य सामग्री मिल सके। संपादक कुशल पाक-कला निष्णात गृहणी है, जो कच्ची सामग्री को तल-भूनकर नमक मिर्च लगाकर तीखा कुरमुरा जायकेदार बना देती है।

—आकाशवाणी, छतरपुर, (म. प्र.)

अमरीका के ओहियो राज्य के क्लीवलैंड नगर में एक पुराना मकान गिराये जाते समय अचानक डालरों के नोटों की बारिश होने लगी। हजारों डालरों के नोट हवा में उड़ते हुए गिरने लगे और पड़ोसी उन्हें लूटने के लिए दौड़ पड़े। मकान एक धनी व्यक्ति का था, जिसने अपनी संपत्ति मकान के फर्श में दबा रखी थी।

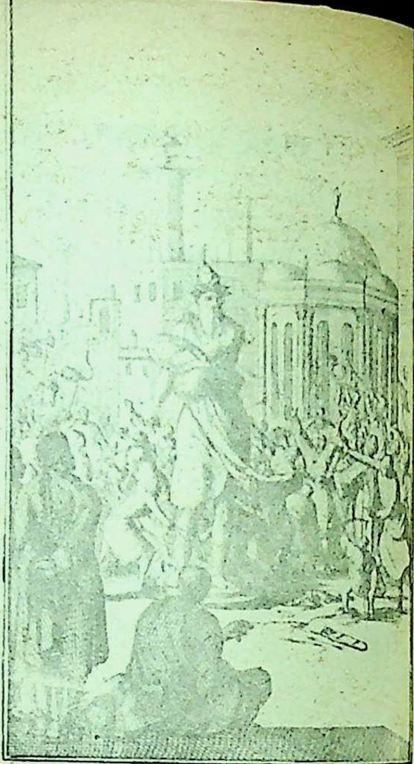

ऊपर प्रकाशित चित्र : तीन सौ वर्ष पूर्व काबुल में होली का एक दृश्य। एक झांकी में कृष्ण कंस पर तीर चलाते हुए।

तीन सौ वर्ष पहल

अफगानिस्तान शायद संसारभर में एक मात्र इस्लामी देश है, जहां सैंकड़ों वर्ष से हिंदू दूसरे त्योहारों की तरह होली का त्यौहार मनाते हैं। १९५४ में मास्को जाते हुए मुझे रास्ते में काबुल में हिंदुओं को होली का त्यौहार मनाते हुए देखने का अवसर प्राप्त हुआ। काबुल में हिंदुओं के दो मंदिर है। एक शिव-मंदिर है और दूसरे का नाम पीर रतननाथ की दरगाह है। पीर रतन नाथ गुरु गोरखनाथ की गद्दी से संबंध रखते थे। यह गद्दी काबुल, कंधार और पेशावर में है और इन तीनों स्थानों पर आज भी हिंदू-त्यौहार मनाये जाते हैं। पेशावर में इस गद्दी के उत्तराधिकारी देश के विभाजन के बाद दिल्ली में आ गये थे। उन्होंने झंडेवालां के इलाके में नयी दरगाह का निर्माण किया, परंतु पेशावर का मंदिर बंद नहीं हुआ। अब भी वहां पूजापाठ होता है।

काबुल में कई हजार हिंदू रहते हैं। कहा जाता है कि विक्रमादित्य के दिनों भारतीय हिंदू काबुल में आबाद हुए। कहना मुश्किल है कि यह दावा कहां तक सत्य है। परंतु यह तो सत्य है कि औरंगजेब के शासनकाल में भी काबुल भारत का एक प्रांत था और राजा जसवंत सिंह काबुल के मुगल राज्यपाल थे। वर्तमान काबुल का वर्तमान शिव मंदिर अहमदशाह अब्दाली की स्वीकृति से बना था। कहा जाता है कि एक कश्मीरी साधु ने एक लाठी गाड़ के, उसे शहतूत के पेड़ में बदल कर अपना चमत्कार दिखाया, जिस पर अब्दाली ने उसे मंदिर का निर्माण करने की इजाजत दे दी। शाह अमानउल्ला खान के प्रधान मंत्री जनरल निरंजनदास छिब्बर ने इस मंदिर में एक मूर्ति की स्थापना की। जनरल साहिब का बेटा अब भी परिवार सहित काबुल में रहता है।

काबुल में होली

जमनादास अख्तर

१९५४ में इस युवक ने होली का आयोजन किया था। इस दिन हमारे यहां की भांति रंग छिड़ककर होली मनाते हुए, यहां के लोगों को लोगों देखने का अवसर मिला।

३०० वर्ष पहले की होली

३०० वर्ष पहले काबुल में होली मनाने का दस्तावेजी प्रमाण एक फ्रेंच यात्री मोसियो डी थेवेनोर की यात्रा-संबंधी पुस्तक से मिलता है। यह पुस्तक पेरिस में १६६४ में फ्रेंच भाषा में प्रकाशित हुई थी। बाद में डच और जरमन भाषाओं में यही पुस्तक प्रकाशित हुई। १६८४ में लंदन में इस पुस्तक का एक भाग अंगरेजी में प्रकाशित हुआ। १९४८ में भारत सरकार ने इसे प्रकाशित किया।

फ्रेंच यात्री के काल में अफगानिस्तान नाम का कोई देश नहीं था। इसे काबुलस्तान कहते थे। उसने अपनी पुस्तक में लिखा है कि काबुलस्तान के पूर्व में कश्मीर और पश्चिम में जाबुलस्तोन (अर्थात गजनी) है। काबुलस्तान का प्रमुख नगर काबुल है। काबुलस्तान में कई छोटे-छोटे नगर और गांव हैं। काबुल में दो बड़े-बड़े किले हैं, जहां शासक अपने दरबार लगाते हैं।

फ्रेंच यात्री ने लिखा है कि काबुल में रहनेवाले अधिकतर हिंदू हैं। ये लोग अपने संवत का हिसाब चंद्रमा से लगाते हैं। हिंदू होने के कारण काबुल में बहुत से मंदिर हैं। ये लोग बड़ी श्रद्धा से होली का त्यौहार मनाते हैं। यह त्यौहार दो दिन मनाया जाता है। इन दिनों मंदिर श्रद्धालुओं से भरे रहते हैं। ये लोग यहां आकर पूजा-पाठ करते हैं।

फ्रेंच यात्री लिखता है कि होली पर काबुल के हिंदू टोलियां बनाकर जुलूस के रूप में नाचते और गाते हुए नगर के

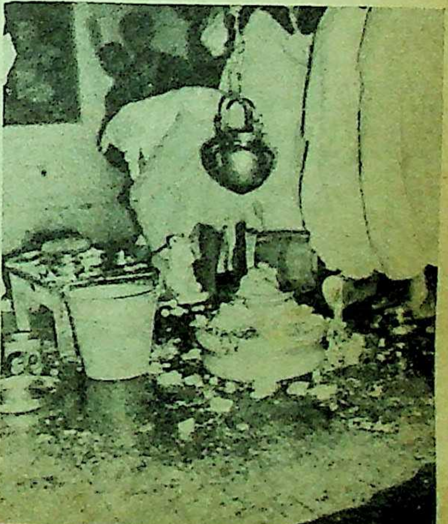

शिवजी की पूजा

"मुझे चाहिए तो बस कॉम्प्लान®
मेरे परिवार के लिए
एक परिपूर्ण नियोजित आहार."

सिर्फ़
कॉम्प्लान® ही,
सबके लिए ज़रूरी
२३ अत्यावश्यक पोषक तत्वों से परिपूर्ण है.

सिर्फ़ कॉम्प्लान में ही वैज्ञानिक अनुपात से नियोजित २३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्व हैं, जिनकी शरीरको रोज़ाना ज़रूरत होती है...प्रोटीन्स, कार्बोहाइड्रेट्स स्निग्ध-पदार्थ, विटामिन्स और खनिज-पदार्थ. यह एक ऐसा स्वास्थ्यवर्धक पेय है, जिसकी डॉक्टर अधिकतर सिफ़ारिश करते हैं.

कॉम्प्लान चॉकलेट, इलायची-केसर और स्ट्रॉबेरी के स्वाद-भरे जायकों में तथा प्लेन भी मिलता है.

Glaxo
Complan
COMPLETE PLANNED FOOD

लिंटास-GLC. 10-1510 HI

कॉम्प्लान®
-परिपूर्ण नियोजित आहार.

बाजारों से गुजरते हैं। इस त्यौहार में उन्होंने लाल रंग के वस्त्र पहने होते हैं और वह रंग फेकते हुए अपने मित्रों और संबंधियों के घरों में जाते हैं।

कृष्ण और कंस

फ्रेंच यात्री ने लिखा है कि एक ही जाति के लोग मिलकर बैठते, गाते और भोजन करते हैं। रात को गलियों और बाजारों में होली जलाते हैं। यह त्यौहार हर वर्ष फरवरी के महीने में पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसके अंत में एक राक्षस का विनाश किया जाता है। एक छोटा-सा बालक इस राक्षस की मूर्ति को तीर मारता है। इससे यह जाहिर किया जाता है कि परमात्मा 'क्रुश्मन' (कृष्ण) के नाम से संसार में इस राक्षस का संहार करने के लिए आता है। यह राक्षस इस भय से कि यह बालक उसे मार देगा, उस पर हमला करता है, परंतु यह बालक उस पर अपने तीर से ऐसा वार करता है कि राक्षस धरती पर गिरकर मर जाता है।

सात बार परिक्रमा

फ्रेंच यात्री को गलत-फहमी होती है। वह यह समझता है कि होली के अवसर पर यह नाटक करनेवाले पहले ईसाई थे। यही गलत-फहमी एक सौ वर्ष बाद एक प्रसिद्ध इसाई पादरी को भी हुई थी। जब उसने कृष्णमंदिर में भक्तों को सात बार परिक्रमा करते देखा, तब उसने अपनी डायरी में लिखा कि 'कृष्ण' वास्तव में 'क्राइस्ट' शब्द का अपभ्रंश है।

'गुरु ग्रंथ साहब' का पाठ

फ्रेंच यात्री ने लिखा है कि काबुल के हिंदू जगह-जगह कुंए खुदवाना एक अच्छा काम समझते हैं। और अकसर सड़कों पर यात्रियों के विश्राम के लिए सरायें बनवाते हैं।

फ्रेंच यात्री ने एक दिलचस्प बात यह लिखी कि काबुलस्तान बाकी के हिंदुस्तान को बहुत से वैद्य सप्लाई करता है। यह लोग बनिये होते हैं। इनके पास औषधियों के कई रहस्य होते हैं। मुगल शासक को इस प्रांत से पचास लाख रुपये वार्षिक आमदनी होती है।

—पटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली-२

एक स्त्री को ज्योतिषी ने बताया, "विधवा होने को तैयार हो जाओ, तुम्हारे पति अचानक मार दिए जाएंगे।"
स्त्री ने पूछा—'उसके बाद...क्या मैं बरी हो जाऊंगी ?"

वेस्ट मिंस्टर (लंदन) में एक बार राजनीतिक बैठक चल रही थी। हकलानेवाले एक सदस्य, लेडी एस्टर से पूछ उठे, "श्री . . . श्री . . . श्री . . मत . . . मतीजी, बताइए तो एक सूअर के पंजे में कितने अंगूठे होते हैं?" लेडी एस्टर कब चूकनेवाली थीं। बोलीं, "अपने जूते उतारकर खुद क्यों नहीं गिन लेते ?"

लेडी एस्टर हाउस आफ कॉमंस की सदस्य बननेवाली पहली महिला थीं।

ब्रिटिश संसद में ठहाके

● शारदा पाठक

बेविन का तीखापन

एन्यूरिन बेविन की जबान का तीखापन लाजवाब था, सन १९४३ में जब मित्र सेनाओं ने इटली पर हमला किया तो अपनी आलोचना में उन्होंने कहा, "सदन मुझे माफ करे, तो कहने को मजबूर हूं कि मित्र सेनाएं इटली की सरजमीं के पास उसी तरह पहुंची हैं, जैसे उम्र और आशंका से शिकस्त बूढ़ा युवा दुल्हन की ओर कदम बढ़ाता है।

श्रम दल के एक साथी संसद सदस्य ने एक बार कहा कि उन्हें रोटरी और चैंबर ऑव कामर्स के ऐसे भोजों में लगातार शरीक होना पड़ता है जहां भोजन उनकी पसंद का नहीं होता। बेविन ने कहा, "आप संसद सदस्य नहीं हैं, पेटुओं के दलाल हैं।"

एक बार बेविन ने चर्चिल से कहा था, "आप हार जाते हैं, तो हार को दुर्घटना बता देते हैं और जीतते हैं, तो ऐसे पेश आते हैं कि जीत आपकी वजह से हुई।"

चर्चिल के भाषण के बारे में बेविन ने कहा था, "आपकी शानदार भाषा के वाक्‌जाल में आपके चिंतन की दरिद्रता छिपी रहती है।"

बर्क का न्याय

एडमंड बर्क का नाम वेस्टमिंस्टर के धुरंधर वक्ताओं में आता है। सन १७७२ में बजट पर बहस के दौरान उन्होंने कहा था, "साफ-सुथरे, और गंदे हर तरह के जीव-जंतु साथ लेकर मंत्री आता है, अपना बजट खोलता है और आधा सदन उठकर चला जाता है। फिर दूसरे पक्ष के माननीय सदस्य खड़े होकर देश की दुर्दशा का रोना रोते हैं, और दूसरे आधे सदस्य चलते बनते हैं। तीसरे वक्ता सदस्य की उपस्थिति और आधी कर देते हैं। मैं गुनहगार हूं कि जब कभी अपनी बातों से सदन को जिंदादिल बनाये रखा है, तब मुझे संतोष अनुभव हुआ है।

बर्क जब बोलने खड़े होते तब सदस्य आवाजें लगाकर उन्हें बैठ जाने को कहते। एक बार बर्क को कहना पड़ा—"इससे ज्यादा सुर में सफाई से गुर्राना मैं शिकारी कुत्तों को सिखा सकता हूं।"

जन्म-दिन बनाम बजट

सादगी के मसीहा वित्तमंत्री सर स्टैफर्ड क्रिप्स एक बार अपने जन्म दिवस पर बजट पेश करने खड़े हुए। लार्ड चैंडोज ने उन्हें शुभकामनाएं दीं कि जन्म-दिन बार-बार आये और बजट अब कभी नहीं।

निजी राय और निजी सिर

विंस्टन चर्चिल की हाजिरजवाबी का तो सानी नहीं था। एक बार सर वियलयम जायंसन हिक्स भाषण दे रहे थे। चर्चिल इंकारी में सिर हिला रहे थे। हिक्स बोले, "मैं देख रहा हूं कि मेरे दोस्त सिर हिला रहे हैं जबकि मैं अपनी निजी राय जाहिर कर रहा हूं।" चर्चिल ने उत्तर दिया, "मैं भी अपना निजी सिर हिला रहा हूं।"

नयी उम्र का प्रेम

सर सेमुअल होर्स ने १९३५ में जब इंडिया बिल पेश किया, तब चर्चिल ने कहा था, "राज्य सचिव की हालत उस गाय, जैसी है, जिसने भरपूर दूध दिया और फिर लात मारकर बर्तन लुढ़का दिया।"

जब राजनीति के लिए आवश्यक योग्यता की बात पूछी गयी, तब उन्होंने कहा, "यह कहने की योग्यता कि कल, अगले सप्ताह अगले माह और अगले साल क्या होनेवाला है। फिर यह समझाने की कि ऐसा हुआ क्यों नहीं।" एक बार किसी ने पूछा कि परिवार कैसे शुरू होता है, वे बोले, "भले आदमी नयी उम्र का आदमी किसी लड़की से प्रेम के चक्कर में पड़ जाता है और हो जाती है शुरूआत। इससे बेहतर तरीका अभी तक नहीं देखा गया।"

—डी-७, कोटला फिरोजशाह,
नयी दिल्ली-११०००१

मुल्ला नसीरुद्दीन के कारनामे

एक बार की बात है, एक दार्शनिक ने मुल्ला नसीरुद्दीन से मिलने का समय निश्चित किया। मुल्ला ने हामी भर दी, पर जब दार्शनिक उसके घर आया तब मुल्ला पिछले दरवाजे से निकल भागा। उसे घर में न पाकर दार्शनिक झल्ला उठा और गुस्से में उसने मुल्ला के दरवाजे पर खड़िया से लिख दिया—'गधा!'

थोड़ी देर बाद जब मुल्ला घर लौटा तब दरवाजे पर 'गधा' लिखा देखकर मुसकरा उठा।—वह फौरन दार्शनिक के घर पहुंचा और उससे बोला, "माफ कीजिएगा, मैं आपसे मिलने की बात भूल गया था। वह तो मैंने घर के दरवाजे पर खड़िया से लिखा आपका नाम देखा। मैं समझ गया कि आप आए थे और अपनी याद दिलाने के लिए अपना नाम लिख गए थे। सो, मैं दौड़ा-दौड़ा आपके पास आया हूं।" दार्शनिक दांत पीस कर रह गया।

शिक्षक कक्षा में लड़कों को बता रहे थे—मनुष्य को सिंह की तरह निर्भीक, चीते की तरह चुस्त-चालाक, ऊंट की तरह सिर ऊंचा करके चलनेवाला, गिद्ध की तरह दूरदृष्टिवाला और कंगारू की तरह हर गूढ़ बात को अपने पेट में छिपाए रखनेवाला होना चाहिए।

तभी एक छात्र बोल पड़ा—मास्टर जी, तब तो पैदा होने के बाद कुछ समय के लिए हमें चिड़ियाघर में छोड़ देना चाहिए।

—कृष्णचन्द्र शर्मा

*

नयी नवेली दुल्हन से पहली मुलाकात पर दूल्हे ने पूछा, —"विवाह से पहले कितने युवकों के साथ तुम्हारी दोस्ती थी?"

जब दुल्हन खामोश रही तो दूल्हे ने फिर पूछा, "क्या जवाब नहीं दोगी?"

दुल्हन शरमाकर बोली, "आप तो एकदम जल्दी करते हैं। जरा, गिनने तो दीजिए।"

—कमल सौगानी

जब विंध्याचल नारी बन जाता है

तुलसीदास कम मजाकिया नहीं थे। अहिल्या एक ऋषि के शाप के कारण पत्थर बन गयी थी। राम ने अपने पैरों से उस पत्थर का स्पर्श किया और वह पत्थर एक अच्छी-खासी सुंदर नारी के रूप में बदल गया। बस, फिर क्या था! यह समाचार जैसे हवा में फैल गया। तुलसीदास की सूझबूझ देखिए, लिखते हैं:

बिंध्य के बासी उदासी तपोब्रत-धारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतम तीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।।
ह्वैहैं सिला सब चंद्र मुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायकजू करुना करि कानन को पगु धारे।।

देखिए, साधना में रत ऋषि-मुनि भी अपने सुख के आवेश को नहीं रोक सके। गौतम की पत्नी अहिल्या जब पत्थर से स्त्री बन गयी है, तो फिर क्या कहने हैं। राम विंध्याचल पर्वत जरूर आएंगे और उनके पैरों के स्पर्श से सारी शिलाएं चंद्रमुखी स्त्रियों के रूप में बदल जाएंगी। धन्य हो राम! आपने ऋषियों पर तरस खाकर विंध्याचल पर्वत पर जाने का निश्चय किया।

देखिए, महाकवि तुलसी ने बड़े बड़े ऋषियों पर भी कितनी मीठी चुटकी ली।

एक महिला का वक्तव्य

"मेरे पति की और मेरी एक ही पसंद है लेकिन यह बात समझने में उन्हें बारह वर्ष लगे।"

—राजकुमार जैन,

★

नेता जी भाषण दे रहे थे—'हमें उत्पादन बढ़ाना चाहिए। हमें अनुशासन रखना चाहिए। हमें गेहूं अधिक उपजाना चाहिए और...।'

'और घास भी।' भीड़ में से किसी श्रोता की आवाज उछली।

नेताजी ने मुस्कराते हुए कहा—'इस वक्त मैं इंसानी खुराक का जिक्र कर रहा हूं। घबराइए नहीं, आपके विशिष्ट आहार पर मैं अभी आता हूं।'

—सुरेन्द्र श्रीवास्तव,

★

एक तानाशाह की जेल में तीन व्यक्ति बंद थे। वे आपस में बतियाने लगे। पहले ने कहा, "मैं कभी-कभी लेट हो जाता था। उन्होंने कामचोरी के आरोप में यहां भेज दिया।"

दूसरा बोला—"मैं कुछ समय पहले पहुंच जाता था, जासूसी के आरोप में सजा काट रहा हूं।"

तीसरे ने कहा—"मैं ठीक समय पर पहुंचता था विदेशी घड़ी रखने के आरोप में आया हूं।

—विजय भारद्वाज

अंतरिक्ष में चहलपहल

• भारती दीक्षित

चंद्रलोक के सम्राट ने अभियानदल के सदस्यों से कहा, " 'पृथ्वी-अभियान' का लक्ष्य होगा, वहां के दो बाशिंदों को पकड़कर यहां जिंदा लाना।"

पृथ्वी पहुंचकर चंद्रलोक की टोली की नजर दो पेट्रोल पंपों पर पड़ी। बस क्या था! उन्होंने झटपट दोनों पेट्रोल पंपों को उखाड़कर अपने यान पर सुरक्षित लाद लिया। वापस चंद्रलोक पहुंचे।

दरबार में उन्होंने बड़े गर्व के साथ दोनों कैदियों (पेट्रोल पंपों) को सम्राट के सामने पेश करते हुए कहा, "महाराज, हमारा 'मिशन' सफल रहा।"

सम्राट ने शाबाशी दी, "आप लोगों ने बड़ा अच्छा काम किया है। हम इनका तेजी से प्रजनन करेंगे, जिससे हमारे नागरिकों के लिए गुलामों की कोई कमी न रहे।"

सम्राट का यह कहना था कि दरबारी वैज्ञानिक ने अभियान दल के सदस्यों से कहा, "आप बेवकूफ हैं, खाक अच्छा काम किया है। भलेमानस इतना भी नहीं पहचान सकते कि आप लोग दो नर पकड़ लाये। बिना मादा के गुलाम कहां से पैदा होंगे?"

★

संयोग की बात। मंगललोक के उड़ाका की उड़न तश्तरी पृथ्वी पर प्रकृति-प्रेमी नंग-धड़ंगों की 'नूडिस्ट कालोनी' के करीब खेत पर जा उतरी। उसकी नजर जो पहले निर्वसन इनसान पर पड़ी, तो उससे कहा: "जनाब का लिबास निहायत खूबसूरत है। मेहरबानी करके मुझे अपने दरजी से मिलवाइए।"

मंगललोक के बाशिंदे को 'नूडिस्ट कालोनी' की फिजां पसंद आयी और वहां सबसे मेल-मुलाकात की। एक बात उसकी समझ में नहीं आयी। सभी नूडिस्ट क्लीन शेव थे, एक को छोड़कर। उसके दाढ़ी थी और वह भी घुटनों तक लंबी। मंगल के अजनबी से न रहा गया। पूछ बैठा, "जनाब, खैरियत तो है? आप इस हालत में कैसे हैं?"

★

दढ़ियल ने जवाब दिया, "भई किसी न किसी को तो कालोनी से बाहर जाकर चाय-काफी लाने का काम करना ही था।"

मंगल लोक का यात्री भीड़-भाड़वाली सड़क के किनारे खड़े होकर उत्सुकता से नजारा देखने लगा। बड़ा लंबा 'ट्रैफिक

जाम' था। सबसे आगे डबलडेकर बस और उसके पीछे छोटी-छोटी स्पोर्ट्स कारें थीं।' उसने मुसकराते हुए उस से कहा, "आज रात अंतरिक्ष यान पर हमारे साथ डिनर पर आइए और हां . . . अपने बच्चों को भी साथ लाइए।"

एक मालवाही ट्रक मोड़ पर कुछ तेजी से गुजरा, तो एक पेटी गिर पड़ी। मंगललोक के यात्री ने ट्रक का पीछा किया और बगल में पहुंचकर कहा, "सुनिए, सुनिए, अरे मैडम! पीछे आप अपना बटुआ गिरा आयी हैं।"

दो मंगलवासी अमरीका के टेक्सास तेल-क्षेत्र में जा उतरे। उड़नतश्तरी से बाहर कदम रखकर जो पहली चीज उन्होंने देखी, तो यह कि बड़े मोटे पाइप से काले-काले तरल पदार्थ की धारा तेजी से बही जा रही है। एक बोला, "हे भगवान! यह क्या हो रहा है। चलो चलो, जल्दी उस आदमी को अस्पताल ले चलें, नहीं तो बेचारा इस तरह खून खारिज करते-करते तो मर ही जाएगा।

★

एक मंगलवासी 'हार्डवेयर' की दूकान पर जा पहुंचा। उसने तरह-तरह के बिजली के बल्बों का पूरा डिब्बा खरीद डाला। दूकानदार ने डिब्बे को रखने के लिए थैला उठाया, तो ग्राहक ने टोका, "रहने दीजिए, 'पैक' करने की क्या जरूरत। मैं अभी सब खा जाऊंगा।"

★

एक मंगलवासी पृथ्वी अभियान से घर लौटा। लोगों ने उससे पूछा कि तुमने उस दुनिया में सबसे अजीबोगरीब चीज क्या देखी।

उसने बयान किया, "वहां वैसे तो बहुत कुछ देखा, लेकिन एक बड़ा अजूबा देखा। लोग उसे हाथी कहते थे। भारी भरकम जानवर होता है। मगर बड़ा अजीब जानवर है। अपनी दुम का बतौर हाथ इस्तेमाल करता है। उससे खाना खाता है।

—ई-१२०/II, डी. डी. ए. फ्लैट्स
नारायणा, नयी दिल्ली

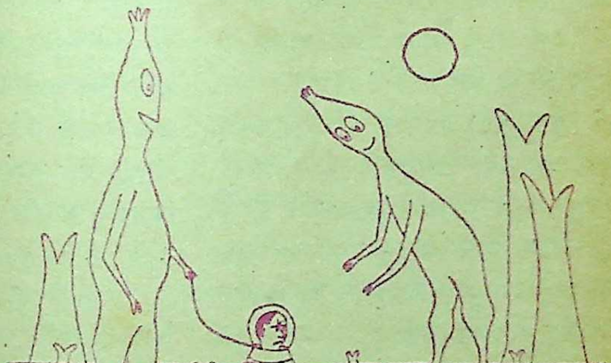

यह तो पता नहीं कि यह क्या है, लेकिन बच्चा बहुत सुंदर है

बकरी बोली औरत बोली आदमी बोला

● प्रभा भारद्वाज

चमेली का बाग ! और बाग में अकेला घूमता पति ! उसे ख्याल भी नहीं है कि उसकी पत्नी कहीं दूर से उसे घूर रही है। पत्नी को भ्रम है कि चमेली के उस बड़े बाग में कोई और स्त्री भी है। वह एकदम से आ धमकती है और कहती है, "मेरे राजा, तुम चमेली के बाग में अकेले घूमोगे तो मैं मायके चली जाऊंगी।" आदमी हंसता है, "ओ मेरी बहुत भली पत्नी, तुम जरूर मायके चली जाओ, मैं दूसरी स्त्री ले आऊंगा।"

"तुम दूसरी स्त्री भले ही ले आओ, लेकिन वह मेरी सौत बनकर ही रहेगी।" —"तुम ऐसा हंगामा खड़ा करोगी, तो मैं तुम्हें जान से मरवा दूंगा।" —"तुम जान से मुझे मरवा दोगे, तो मैं भूत बनकर उस सौत को डस लूंगी।"

—"तुम भूत बनकर अगर उसको डसोगी, तो मैं तीर्थ करने के बहाने बाहर चला जाऊंगा और प्रेत-बाधा शांत कराऊंगा।" पत्नी जोर से खिलखिलाकर हंस देती है, "तुम मुझे कहीं ले तो जाते नहीं, इसी बहाने मैं भी तीरथ-यात्रा कर लूंगी और तर जाऊंगी।"

उसका इतना कहना था कि पति उसे अपने गले से लगा लेता है और कहता है, "चलो भीतर चलें, मैं चमेली के बाग में नहीं घूमूंगा।"

अवध का एक गांव। पति भी देहात का है और पत्नी भी, लेकिन हंसने की जो कला इन्हें आती है, हम शहरियों के नसीब में कहां ? यह जिंदगी के हर पल को हंसी में ढाल सकते हैं और दुःख के हर लोहे को सोना बना सकते हैं। जिंदगी में यदि हंसी न हो, तो वह सड़ी-गली नाली का कीचड़ बन जाए। होली के दिन कीचड़ खेलकर शायद इसी बात को तरोताजा किया जाता है।

यह तो हुई पति-पत्नी की दास्तान, ऐसी कितनी कहानियां लोक-साहित्य में देखने को मिलेंगी, जो गुदगुदाती हैं, और हंसाती भी हैं !

मजा सिट्ठणियों का

पंजाब के लोग अपनी बेफिक्री और मस्ती के लिए प्रसिद्ध हैं, पंजाब का लोक-

नृत्य 'भंगड़ा' उनकी मस्त-मौला प्रकृति का ही परिचायक है। पंजाब में विवाह के अवसर पर वर और वधू पक्ष के लोग अपना भरपूर मनोरंजन करते हैं। ऐसे अवसरों पर स्त्रियां भी पीछे नहीं रहतीं। यही एक मौका होता है, जब उन्हें अपनी भड़ास निकालने की छूट होती है। पुरुषों को इंगित करके, वे ऐसी-ऐसी चुटकियां लेती हैं, जो कभी-कभी अश्लीलता की सीमा भी लांघ जाती हैं। इन चुटकियों या गालियों को पंजाबी में 'सिट्ठणियां' कहा जाता है। विवाह के अवसर पर समधी-समधिन या उनके परिवार के सदस्य सिट्ठणियों के माध्यम से आपस में हास-परिहास करते हैं।

हंसने की कला, जो ग्रामवासियों को आती है, वह हम शहरियों के नसीब में कहां? वे जिंदगी के हर पल को हंसी में ढाल सकते हैं और दुःख के हर लोहे को सोना बना सकते हैं। जिंदगी में यदि हंसी न हो, तो वह सड़ी-गली नाली का कीचड़ बन जाए। होली के दिन कीचड़ खेलकर शायद इसी बात को तरोताजा किया जाता है।

एक सिट्ठणी देखिए—

विवाह का समय है। समधी ने समधिन को देखा। उसके आसपास मक्खियां मंडरा रही हैं, उसका कारण है विवाह में बननेवाली मिठाई, पर समधी ने तो इसी बात को पकड़ लिया और फटाक से समधिन पर व्यंग्य कस दिया—

लड्डू खा के चबारयों निकली मक्खियां भिनक दियां!

अर्थात, तुम कक्ष में लड्डू खाकर बाहर आयी हो (जबकि हम अभी भोजन की प्रतीक्षा में ही हैं) इसी कारण तुम्हारे आसपास मक्खियां भिनभिना रही हैं।

किसी के स्वभाव की विवशता भी मनोरंजन का एक साधन बन जाती है। ऐसी कथाओं को पंजाबी में 'अखाण' कहा जाता है।

एक थी—बूढ़ी औरत, वह प्रायः हर बात को गाली देकर ही शुरू करती थी। बिना यह देखे कि मौका शुभ है या अशुभ। उसे एक विवाह में बुलाया गया, क्योंकि मौका शुभ था, अतः उसकी 'बुरी बात' के डर से उससे कह दिया गया कि वह मौन रहे। जब बारात आयी, लोग बारात देख रहे थे। बुढ़िया को वर का चेहरा सेहरों में छुपा होने के कारण दिखायी नहीं पड़ रहा था। उससे रहा नहीं गया, वह बोल उठी—

दद्दड़ी जबान रहेन्हदी नहीं, फूकन जोगे

सेहरे नूं टंग्ग लै !

—(मेरी बुरी जुबान तो अब रुक नहीं पाती, मैं बोलने के लिए विवश हूं। तेरा सेहरा जल जाए (गाली) तू जरा अपने सेहरे को ऊपर उठाकर टांग ले, जिससे मैं तेरा मुख देख सकूं।)

वर की मां को उस बूढ़ी की अपने बेटे के लिए ऐसी 'शुभकामना' बहुत बुरी लगी, लेकिन उसके स्वभाव की विवशता देख बारातियों में हंसी गूंज गयी।

देवर-भाभी की नोक-झोंक

लोक-गीतों तथा गाथाओं में देवर-भाभी के चुलबुले कारनामे भी कम गुदगुदानेवाले नहीं होते हैं। उनकी आपसी नोक-झोंक और कटाक्ष देवर-भाभी के प्रेम को तो दर्शाते ही हैं, लेकिन उस समय के समाज द्वारा देवर-भाभी को परस्पर एक दूसरे को छेड़ने की मिली हुई 'छूट' की झलक भी उससे देखने को मिलती है। छत्तीसगढ़ी लोक-गीतों में 'मड़वनी' एक ऐसी ही विधा है, जिसमें देवर-भाभी का आपसी वार्तालाप बड़े ही मनोरंजक ढंग से गाया जाता है—

भाई विदेश में है, और भाभी अकेली कमरे में सो रही है। देवर की नीयत कुछ बिगड़ रही है। भाई की अनुपस्थिति में वह भाभी से छेड़खानी की 'छूट' लेना चाहता है।

वह भाभी के कमरे के धीरे-से कपाट खोलता है और सो रही भाभी की अंगुली मरोड़कर उसे जगा देता है। भाभी जग जाती है, लेकिन वह क्या कहे। देवर अभी उम्र में छोटा है, उसे गहरी बात नहीं समझायी जा सकती। अतः वह अभिनय करती है और यह जानकर भी कि देवर है, वह बहाना करती है, जैसे किसी कुत्ते या बिल्ली ने उसे जगा दिया है। उनका वार्तालाप इस प्रकार चलता है—

भाभी: भाग जा कुत्ता, भाग रे बिल्ली।

देवर: मैं कुत्ता नहीं हूं, बिल्ली नहीं हूं। छोटा देवर हूं।

भाभी: आ गये हो तो भाई के पलंग पर सो जाओ।

देवर: भाई के पलंग पर मच्छर काटते हैं, तुम्हारे पलंग पर सोऊंगा।

भाभी: मेरे पलंग पर काली नागिन है, वह तो डसकर दिल निकाल लेती है।

देवर: यदि तुम्हारे पलंग पर काली

नागिन है, तो वह भाई को क्यों नहीं डसती ?

भाभी : तेरे भाई नागिन का वशीकरण मंत्र जानते हैं। उसी से अपने प्राणों की रक्षा कर लेते हैं।

देवर समझ जाता है कि भाभी बड़े सलीके से उसे टाल रही है और वह वहां से चल देता है।

'राम' बनाम 'बलराम'

हास-परिहास का यह आलम केवल लोक-गीतों या लोक-गाथाओं में ही नहीं है, लोक-नाट्यों में भी बड़े उन्मुक्त रूप में पाया जाता है। निमाड़ी ग्राम-जीवन में लोक-नाट्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। निमाड़ में गांव के चौराहे पर बीचों-बीच रस्सों के सहारे खंभा गाड़कर बड़ी-सी एक चादर तान दी जाती है। वह परदे का काम करती है और बीचों-बीच एक लकड़ी का तख्त-सा बिछाकर उसे मंच का रूप प्रदान किया जाता है।

रात को नौ-दस बजे के आसपास गांववाले झांझ और मृदंग पर भगवान की लीला गाते हुए, समारोह का आरंभ करते हैं। एक खेल जो निमाड़ में प्रचलित है, इस प्रकार है—

रंग-मंच पर एक पुरुष और एक स्त्री पात्र आते हैं। पुरुष अपनी स्त्री से कहता है, "देखो, हम लोग रोज-रोज मजदूरी करते हैं, फिर भी पेट नहीं भरता। शहर में तो लोग गादी (गद्दी) बिछाकर पंखा लगाकर पड़े रहते हैं और भोग-विलास करते हैं। भगवान उनको दोनों समय खाने को देता है। क्यों न हम भी बिना श्रम किये उसी प्रकार पड़े रहें ?"

स्त्री स्वीकृति देती है। फौरन घर की व्यवस्था बदल जाती है, एक कोने में एक गुदड़ी की गद्दी बिछाकर, दूसरी गुदड़ी को पंखे की तरह लटकाकर वह पुरुष आराम से चारों खाने चित्त लेट जाता है। बारह बज जाते हैं और रोटी नहीं आती। वह कोने में रखी मूर्ति के सामने राम-नाम का जाप करता है। सारा दिन उपवास भी रखता है, लेकिन शाम तक कोई नतीजा नहीं निकलता, उसके आगे भोजन की थाली नहीं आती।

अंत में वह खीझ जाता है और मूर्ति के सामने कहता है, "मैंने सारा दिन पूजा-पाठ किया फिर भी तूने मुझे रोटी नहीं दी। तू तो उनको रोटी देता है, जो झूठ बोलते हैं, मक्कारी करते हैं।" और फौरन वह गद्दी को उठाकर फेंकता है! पंखे को

निकालकर पटक देता है, और अपने हाथ में 'हल की मूठ' पकड़कर कहता है, "मैंने देख लिया, भगवान किसी को आराम की रोटी नहीं देता, जो आराम की रोटी खाते हैं, वे 'राम' की नहीं 'हराम' की रोटी खाते हैं। हमारा बल 'राम' है। वह उसी को रोटी देता है, जो कुल्हाड़ी की डांड या हल की मूठ पकड़कर खेतों में मेहनत करते हैं।" इस तरह 'हलधर' और 'बलराम' की जय के साथ खेल खत्म हो जाता है।

कथा का आशय है कि श्रम से ही रोटी नसीब होती है। हाथ पर हाथ धरकर, केवल प्रभु का नाम लेने से ही रोटी नहीं मिल जाती।

हास्य-प्रेमी पशु

लोक-साहित्य में ऐसी विचित्र कथाएं भी उपलब्ध हैं, जो पशु-समाज के हास्य-प्रेमी होने का भी परिचय देती हैं। पशुओं के आपसी वार्त्तालाप भी कभी-कभी कम मनोरंजक नहीं होते। छत्तीसगढ़ के लोक-साहित्य में बकरी और बाघ से संबंधित एक कथा प्रचलित है, जो बकरी और बाघ की चतुराई को बड़े मनोरंजक और व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करती है।

एक दिन एक बकरी का सामना एक बाघ से हो गया। बकरी को डर था कि बाघ उसे खा जाएगा। अतः वह इधर-उधर भागने लगी। बाघ ने उसे देखा तो, कहा, "मुझे तुम तीन सच बताओगी तो मैं तुम्हें नहीं खाऊंगा। अगर नहीं बता पायीं तब तो अवश्य आज का मेरा भोजन तुम ही होओगी।"

बकरी ने चतुराई से काम लेना उचित समझा और उसने शब्द-जाल में बाघ को फंसाना चाहा। उसने कहना शुरू किया "पहला सच तो यह है कि जब तुम मुझे छोड़कर अपने साथियों के बीच जाओगे और कहोगे कि एक बकरी मुझे जंगल में मिली थी और मैंने उसे छोड़ दिया। तो वे कहेंगे कि 'यह झूठ है'।"

"नहीं, नहीं यह सच है" बाघ बोला। बकरी ने कहा. "दूसरा सच यह है कि जब मैं यहां से मुक्त होकर अपने मित्रों को बताऊंगी कि एक बाघ से मेरी भेंट जंगल में हुई थी, पर मुझे उसने मारा नहीं, तो वे कहेंगे कि 'यह झूठ है'।"

"नहीं नहीं यह सच है," बाघ बोला।

तीसरा सच कहते हुए बकरी ने बाघ पर व्यंग्य कसा, "ऐसा जान पड़ता है कि तुम भूखे नहीं हो, तभी इतनी बातें कर रहे हो। मैं जाती हूं।" इतना कहते हुए बकरी ने विजयी मुसकान से एक व्यंग्यात्मक दृष्टि फेंकते हुए वहां से खिसकना चाहा, तो बाघ ने झट से नहले पे दहला मारा "यह भी सच है, क्योंकि अभी-अभी मैं गाय खाकर आ रहा हूं, नहीं तो मैं तुम्हें कब का खा चुका होता।" और बाघ हंसता हुआ अपने रास्ते चला गया। बकरी भी खिसियानी-सी वहां से भाग खड़ी हुई।

—द्वारा 'कादम्बिनी',
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन, नयी दिल्ली-१

मोजन

उचित
घ को
किया
न मुझे
ाओगे
ाल में
। तो

बोला।
क जब
ों को
जंगल
, तो वे

बोला।
वाघ
है कि
कर रहे
बकरी
ात्मक
चाहा,
मारा
भी मैं
तुम्हें
हंसता
बकरी
हुई।
बनीं।
ली-१
वनी

-कुमकुम में बसा कर,
ली नव मेघ-चूनर,
मत घुल जायेगी
लहरियों में लोल री!
की इच्छाएं हंस-हंस
पागल करतीं बरबस,
पर रुकती मैं उन्मन
मुझे लुभाया!

छाया : आर. एन. प्रसाद

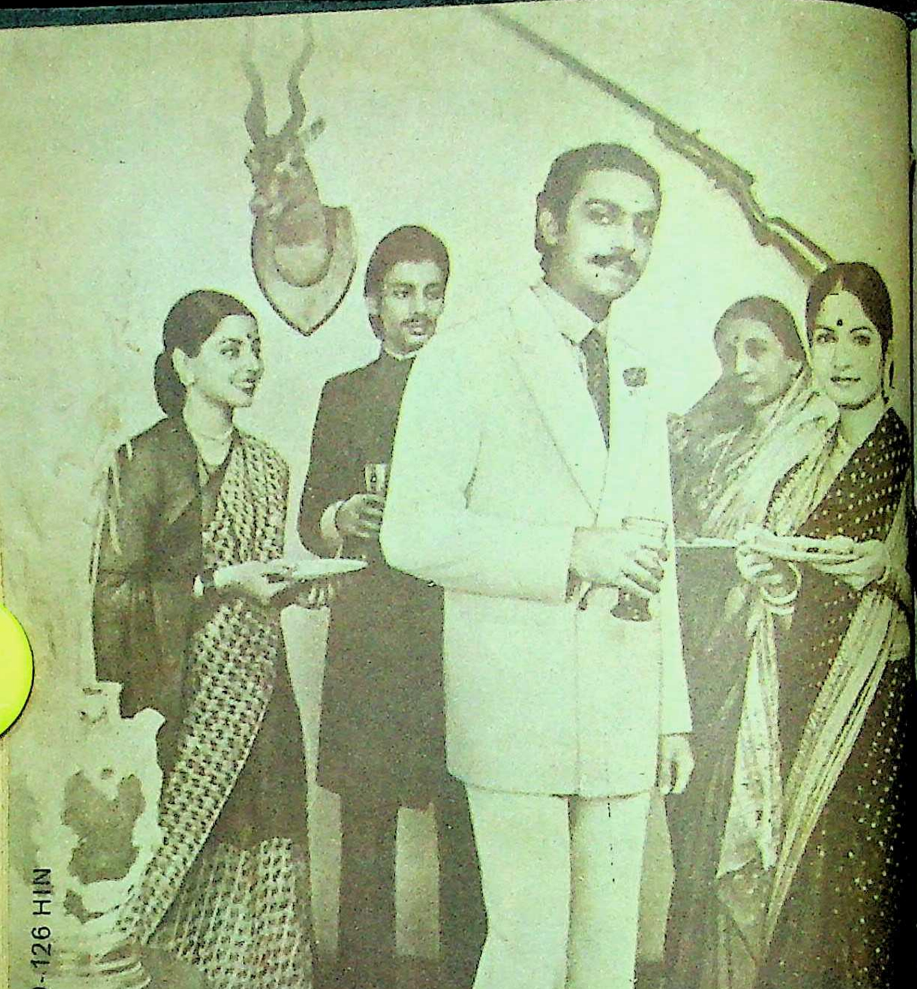
MAPP-GR-80-126 HIN
भारत के सबसे पहले सूट
ग्वालियर से आए थे...

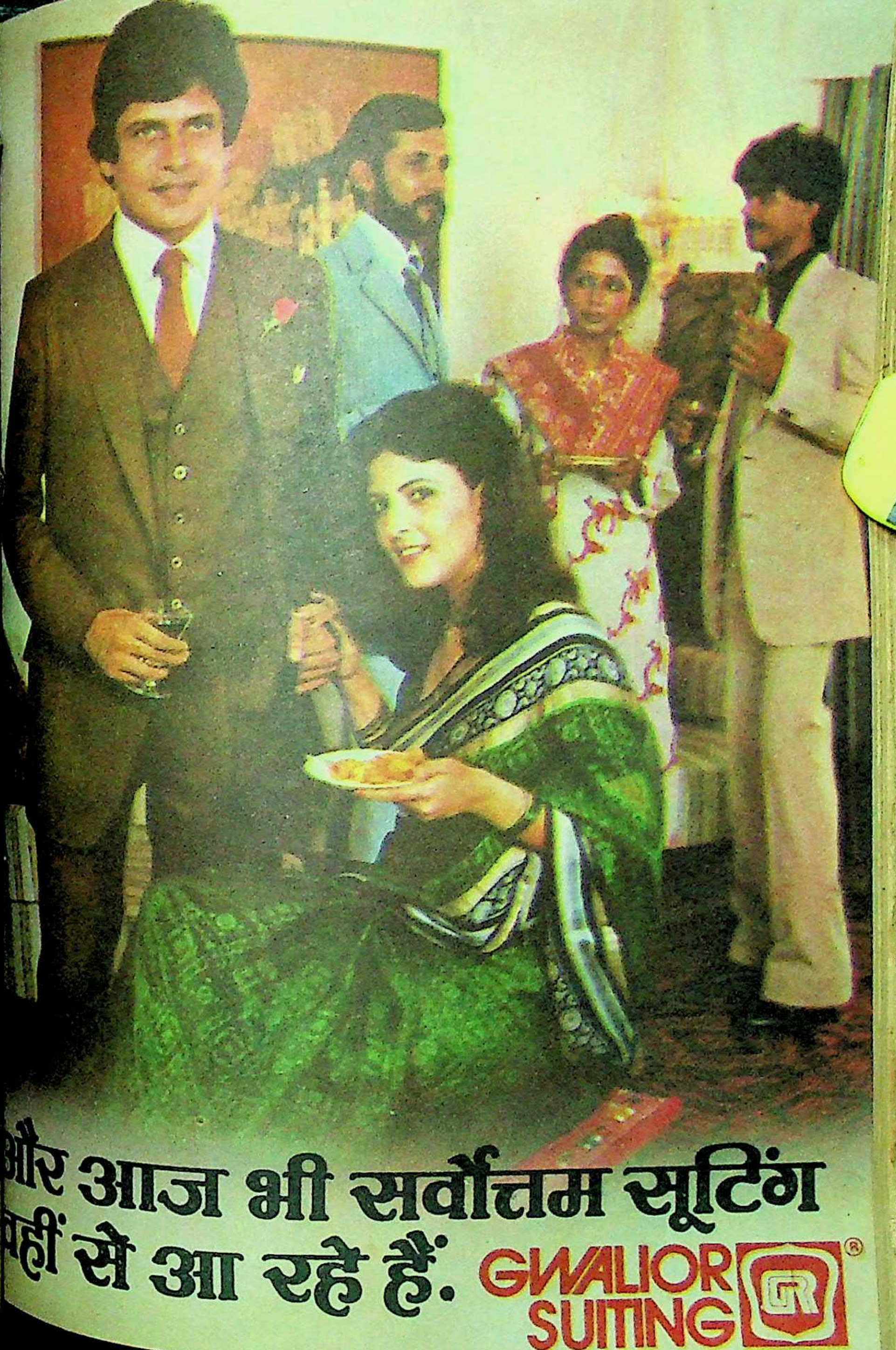
ति और आज भी सर्वोत्तम सूटिंग
हीं से आ रहे हैं.
GWALIOR
SUITING
GR
®

यदि मनोरंजन न हो तो
जिंदगी का सफर बेमानी
और बोझ बन
जाएगा।

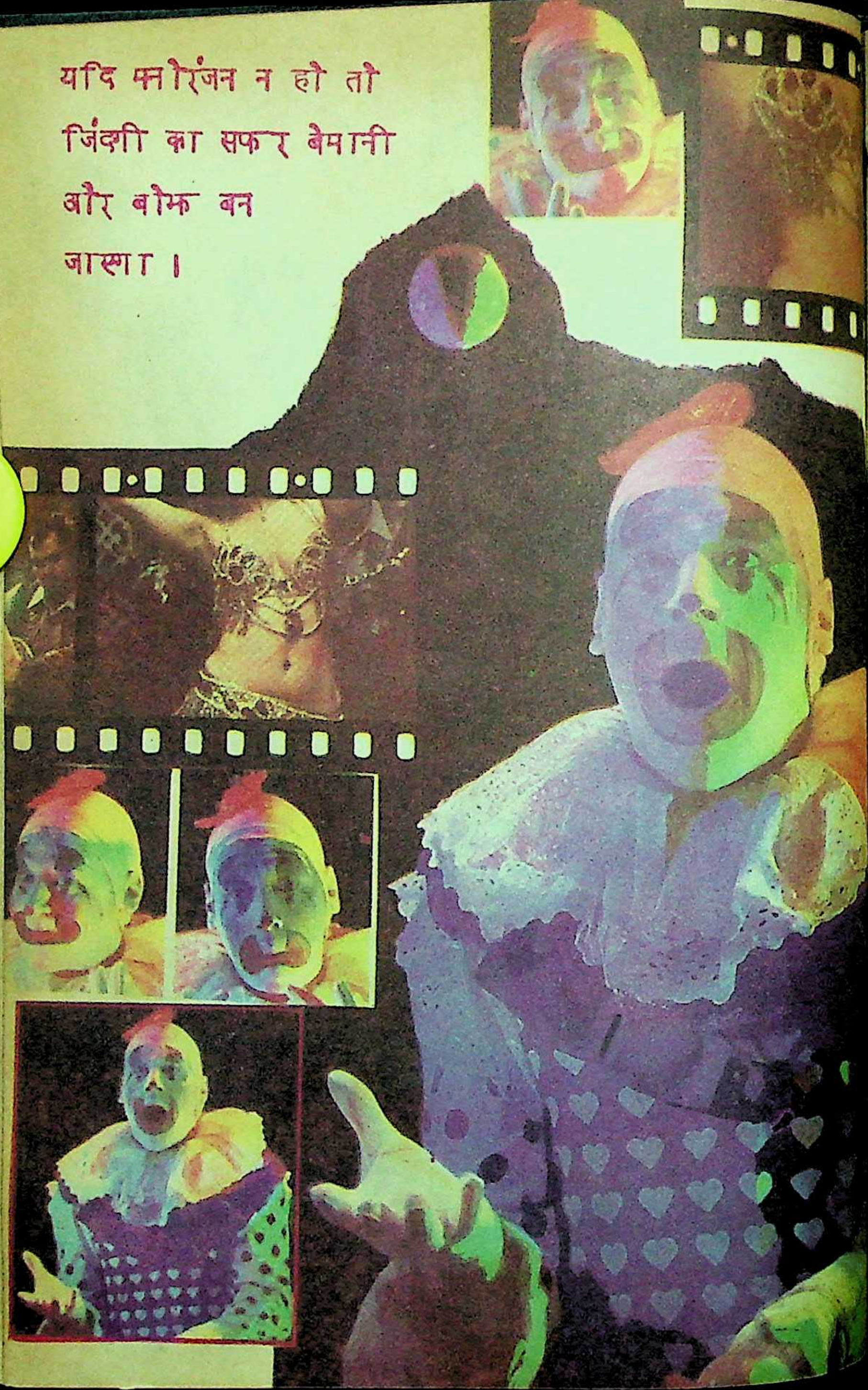

पोस्टरों की जिंदगी

• मनोज कुमार

वयोवृद्ध खाट संविद सरकार-सी टूट जाती है, अथवा जानीवॉकर की मक्खी मूंछ, हवा में उड़ती किशोर कुमार की मोटर साइकल, अमरीकी अंतरिक्ष यानों को मुंह चिढ़ाती हमें हास्य अभिनेताओं की उस गुदगुदाती अदाकारी की याद हमेशा दिलाती रहेगी।

हंसी का कोई मजहब नहीं होता। हंसी चाहे पूरब की हो या पश्चिम की वह तो केवल हंसाती है बड़े ही धर्मनिरपेक्ष ढंग से। यह हंसी कभी-कभी तो इतना हंसाती है कि हंसते-हंसते आदमी रो भी पड़ता है। ऐसी बहुत-सी फिल्में हैं, जिन्हें देखा और भूल गये कि उस फिल्म की कहानी क्या है, परंतु कोई एक पात्र है, जो मन के आंगन में कालपात्र की तरह कहीं बहुत गहरे गड़ गया है। लीजिए पात्र प्रस्तुत हैं—

एक दृश्य, एक ज्योतिषी एक बालक का हाथ देख रहा है। भाग्य देखकर वह बताता है, "यह लड़का बहुत भाग्यशाली है। बड़ा होने पर इसके आगे-पीछे मोटर-गाड़ियां चक्कर लगाएंगी।" सीन कट . . .!

याकूब मियां खड़े हैं, चौराहे पर पुलिस कांस्टेबल की वर्दी में। चारों तरफ मोटर-गाड़ियां चक्कर लगा रही हैं। फिल्म का नाम है 'पतंगा'।

नाजुक बदन, छुई मुई भारतीय अबला नारी का व्यंग्य संस्करण टुनटुन जब अपने पॉकिट साइज पति के साथ वीररसी मुद्रा में सुहाग की सेज पर बैठती है और

अपनी मेहबूबा के नर्म बालों की तारीफ करता एक नौजवान कहता है कि 'सावन के बादल की तरह मुलायम, रेशम की तरह चिकने इन बालों को लाओ मैं संवार दूं।' यह कहते हुए, जैसे ही महबूब साहब अपनी मेहबूबा की जुल्फों में कंघी फेरते हैं, कंघी टूट जाती है। कंघी को बालों से अलग करने में उन्हें इतना जोर लगाना पड़ता है कि वे फर्श पर गिर जाते हैं। यह दृश्य है फिल्म 'माई फ्रेंड इरमा' का। और यह पात्र है हॉलीवुड फिल्मों का सदाबहार कॉमेडियन जैरी लेविस। लेविस इतना हास्यमय अभिनेता है कि उसके पर्दे पर आते ही हॉल ठहाकों, तालियों और सीटियों की आवाजों से इतना गूंज जाता है कि उसके संवाद दर्शकों को सुनायी

नहीं पड़ते। यूं भी हास्य संवादों की बैसाखी पर नहीं चला करता है, वह तो अभिनेता की मांसपेशियों के स्टेडियम में दौड़ता है। इस बात का सबूत है मो हावर्ड, शेंप और लेरी का हंसोड़ तिगड्डा। देखिए एक दृश्य— यह हंसोड़ तिकड़ी जासूस बनी एक सैनिक अड्डे का फोटो उतार रही है। अचानक पुलिस का सिपाही इन्हें धर दबोचता है। इन तीनों को शाम टलने तक की जेल की सजा सुनायी जाती है। शेंप सिपाही से कहता है कि जरा सिगरेट पी लूं, फिर जेल चलेंगे। और, यह कहकर जब वह चार फुट लंबा सिगार निकाल कर पीता है, तब शाम हो जाती है, सिपाही बोर होकर सो जाता है और जनाब सिगार है कि अलाउद्दीन के चिराग की तरह खत्म होने का नाम ही नहीं लेता। सोते हुए सिपाही के मुंह में सिगार लगाकर वे तीनों भाग जाते हैं और हॉल ठहाकों से भर जाता है। 'ड्यूटी फुल बट डंब' फिल्म का यह दृश्य सचमुच इतना जीवनोपयोगी है कि जब भी हंसने का मन हो इसे याद करके आदमी हंस सकता है।

"सुन-सुन-सुन। अरे बेटा सुन। इस चंपी में बड़े-बड़े गुन। लाख दुखों की एक दवा है। क्यों न आजमाये। काहे घबड़ाये?"

'प्यासा' फिल्म के इस फलसफे ने कई प्यासी आत्माओं को अखिल भारतीय चंपिस्ट बना दिया। जिन्होंने साहित्य, संस्कृति और धर्म के विभिन्न क्षेत्रों में अपने-अपने खलीफाओं की आस्थापूर्ण चंपी करके अपना तथा देश का भरपूर भला किया। इसी चंपी का मंत्र सिद्ध करते हुए असरानी जब जेलर बन गये, तब उन्होंने बड़ी बहादुरी से लकड़ी के एक टुकड़े की नोक को रिवाल्वर की नली समझकर, जेल का फाटक खोल दिया और सब कैदियों को जेल से निकाल कर विदा कर दिया। खुद बंद हो गये। फिल्म शोले के इस हिटलरी जेलर का पराक्रम आज भी श्रोताओं को निःशुल्क मनोरंजन कर रहा है, और तब तक करता रहेगा। जब तक कि 'चला मुरारी हीरो बनने' का हीरो सुधर नहीं जाता।

आंसू हंसाते भी हैं

और अदा की ही बात चल पड़ी है तो जरूरी नहीं कि ये हास्यअभिनेता अपनी हंसोड़ अदाओं से ही आपको हंसाएं ये तो रोते भी इस अदा से हैं कि इनके

रोते समय आंसू गालों पर नहीं ढुलकते, बल्कि इंजेक्शन की सीरिंज की तरह तेज धार के साथ समांतर कहानी की तरह भोगे हुए यथार्थ के साथ नब्बे डिग्री का कोण बनाते हुए दर्शकों के हार्ट पर अटैक करते हैं। फिल्म 'पड़ोसिन' में महमूद की आंख से निकलते एक-एक फुट लंबे आंसू दर्शकों को आज भी हंसाते हैं। सचमुच इन हास्य-अभिनेताओं की नस्ल ठहाकों के अणु-परमाणु से इतनी भरी-पूरी है कि इनकी चिता और क्रोध में भी हास्य का ही संचार होता है। इन हास्य-अभिनेताओं की चिता बड़ी सुखपूर्वक संपन्न होती है। बकौल अकबर इलाहाबादी के—'इन्हें रंज भी होता है आराम के साथ।'

एक दृश्य है फिल्म 'थोड़ी सी बेवफाई' का। क्विंटल कामिनी, गज गामिनी सुकुमारी फिल्मी नायिका (प्रीति गांगुली) को देश की खाद्य-समस्या के अनुपात में अपने उर्वरी शारीरिक भूगोल के अनऑथराइज्ड विकास ने चिंतित किया, तो वो पतले होने का नुस्खा जानने डॉक्टर के पास पहुंचीं। डॉक्टर ने जब पूछा आप कितना खाती हैं। उत्तर में उन्होंने जो मीनू बताया, वह किसी बारात के मीनू से कम नहीं था। सुनकर डॉक्टर ने सलाह देते हुए उनसे कहा कि आज से आप पूरे दिन में सिर्फ १ नीबू, १ चपाती, १ कप सूप, १ चाय, १ फ्रूट प्लेट ही लें, तो उस नायिका ने बड़े सहज ढंग से पूछा, "डॉक्टर साहब यह नुस्खा खाना खाने से पहले लेना है या बाद में?" और हॉल में बैठे सभी दर्शकों को हंसते-हंसते भूख लग आती है।

भूख के बाद आदमी को क्रोध आना स्वाभाविक है। क्रोध के इसी मूड में कुमारी बॉबी के पूज्य पिताजी श्री ओमप्रकाश बड़ी विनम्रतापूर्वक अपना हाथ उठाते हैं और पूरी दृढ़ता के साथ विलेन के गाल पर जमाते हैं, तो वह पूछता है कि 'क्या आपने मुझे चांटा मारा?' वे बड़े अहिंसक भाव से कहते हैं—"नहीं भाई, मैं तो अपने रास्ते जा रहा था। मेरे हाथ के रास्ते में तुम्हारा गाल आ गया। मैं क्या करूं?" और सच दर्शकों को तब पहली बार ही यह तत्वज्ञान हुआ था, इस सीन को देखकर कि पिटने-पीटने की सांस्कृतिक क्रिया में भी हास्य का संचारी भाव होता है।

और अंत में पोस्टरों की दुनिया

हास्य का यह संचार हास्य-कलाकारों के

ज्ञान-गंगा

भवन्त्यन्योपदेशार्थे, धूर्ताः साधुसमाः सदा।
स्वकार्यार्थं प्रकुर्वन्ति, ह्यकार्याणां शतं तु ते।।

—धूर्त प्रायः दूसरों को उपदेश देने के लिए संतों के समान अपने आपको दिखाते हैं। परंतु वे अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए सैकड़ों बुरे कर्मों को किया करते हैं।

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा क्वचित्।
पौरुषेण प्रयत्नेन यन्नाप्नोति गुणान्विताः।।

—पृथ्वी लोक में, द्युलोक में अथवा देवलोक में कहीं भी, ऐसी वस्तु नहीं है जिसे गुणवान मनुष्य अपने प्रयत्न से प्राप्त न कर सके।

आपत्यां प्रतिकारज्ञस्तदात्वे दृढ़निश्चयः।
अतीत कार्य शेषज्ञो नरोऽर्थैर्न प्रहीयते।।

—जो पुरुष अपने आनेवाले दुःख का प्रतिकार करना जानता है और आये हुए दुःख का दृढ़ता से सामना करता है तथा बीते हुए दुःख के लिए पछताता नहीं वह कदापि अर्थ की हानि नहीं उठाता।।

येन खट्वां समारूढ़ः परितप्येत कर्मणा।
आदावेव न तत्कुर्यादध्रुवे जीविते सति।।

—जिस कर्म के करने से चिंतावश खाट पर बैठकर एकांत में संतप्त होना पड़े, इस अनिश्चित जीवन में उस कर्म का आरंभ ही नहीं करना चाहिए।

——प्रस्तोता : महर्षिकुमार पाण्डेय

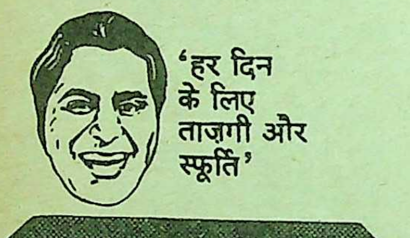

'हर दिन के लिए ताज़गी और स्फूर्ति'

जाना-माना
ताक़तवर, असरदार
ओकासा

आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में जो ताक़त आप खोयें...ओकासा की बदौलत वही ताक़त फिर पा जाएं!
ओकासा की हर टिकिया में ६ प्रमुख बायोकेमिकल्स, ६ खनिज पदार्थ, १० विटामिन और जड़ी-बूटियों का सत्व है. इसीलिये, दूसरा कोई भी ताक़तवर नुस्खा इसका मुक़ाबला नहीं कर सकता
हर दिन जीवन को स्फूर्ति और उत्साह से भर दीजिए, ओकासा की चाँदी चढ़ी टॉनिक टिकियाँ लीजिए.

अब नये २० दिवसीय पॅक में
सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहां मिलती है.

ओकासा

ओकासा की मुफ़्त पुस्तिका के लिए लिखिए.
OKASA CO. PVT. LTD.
Post Box No. 396, Bombay-400001.

048

इनके भी बयां हैं जुदा-जुदा

किस वक्त आप मेरी अयादात को आयें हैं
जब सुन चुके गले से उतरती दवा नहीं
—मुश्तर लखनवी

यह आधी रात को उनका पयाम आया है
हम आज आ नहीं सकते, अब इंतजार न हो
—रियाज खैराबादी

दवाओं में मुश्क उनके उठता है ढेरों
वोह कपड़ों में इत्र अपने मलते हैं ढेरों
—मौलाना अलताफ हुसैन 'हाली'

मियां तू हमसे न रख कुछ गुबार होली में
कि रूठे मिलते हैं आपस में यार होली में
मची है रंग की कैसी बहार होली में
हुआ है जोरे चमन आश्कार होली में
—नजीर अकबराबादी

मुसीबत और लंबी जिंदगानी
बुजुर्गों की दुआ ने मार डाला
—मुजतर खैराबादी

कद्रदानों की तबीयत का अजब रंग है आज
बुलबुलों को ये हसरत है कि वे उल्लू न हुए
—अकबर इलाहाबादी

वाज में फर्मा दिया कल आपने यह साफ-साफ
पर्दा आखिर किससे हो जब मर्द ही जन हो गये
—शेख मुहम्मद इकबाल

अभिनय से ही नहीं होता है, हमारे देश की दीवारें भी हास्य के निःशुल्क वितरण में सक्रिय कार्य कर रही हैं। इन दीवारों पर लगे पोस्टरों ने हास्य के क्षेत्र में हमारे देश को बाकायदा आत्म निर्भर बनाया है। और हमारी जिंदगी को नयी कविता की तरह शुष्क होने से बचाया है। कितना मजा आता है जब 'जय बोलो बेईमान की' के पोस्टर के ठीक नीचे किसी अखिल भारतीय नेता का ईस्टमैन कलर चेहरा हमें एक दूसरे पोस्टर में चिपका दिखायी पड़ता है।

पता नहीं हमारे समीक्षकों ने पोस्टर चिपकानेवाले कलाकारों के हास्यबोध को, आम आदमी के चिंतन से क्यों अलग किया हुआ है। इनकी ही प्रतिभा का कमाल है कि एक बहुत बड़ी दीवार, जिस पर विभिन्न पार्टियों के नेताओं की अपीलों के आदमकद पोस्टर लगे हुए थे, के ऊपर 'हम सब चोर हैं' का विराट पोस्टर लगाकर उसने बड़े ही सहज ढंग से युग-सत्य का उद्घाटन कर दिया। कोतवाली की दीवार पर लगा पोस्टर 'जेबकतरों से सावधान' हमें हमारे परिवेश का आईना दिखाता है। यानी कि साहब पोस्टर अब प्रदर्शन के साथ-साथ 'दर्शन' का भी माध्यम बन गये हैं। पोस्टरों की इस दुनिया में हंसते-हंसाते ही आप दार्शनिक हो जाएंगे।

—१६१९/३६, नवीन शाहदरा, दिल्ली

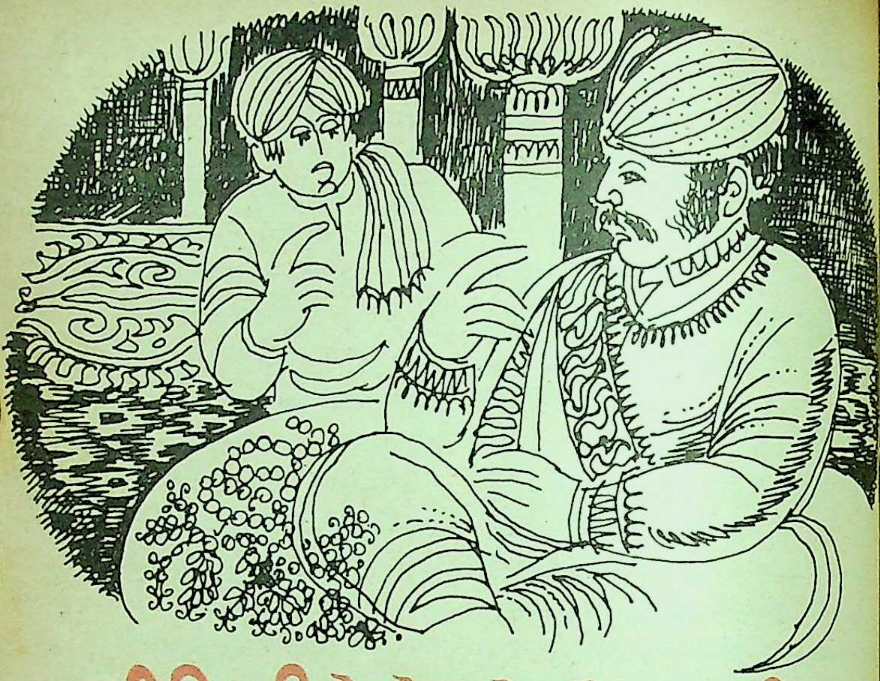

नयी दिल्ली के रेलवे प्लेटफार्म पर निजाम का हाथी !

• बाला दुबे

वो सबका महबूब था और नाम भी उसका महबूब अली खां था—लेफ्टिनेंट जनरल हिज हाइनेस आसफ जाह मुजफ्फर उल मुल्क, वल मुमालिक निजामुद्दौला नवाब सर मीर महबूब अली खां बहादुर फतहजंग जी. सी. बी., जी. सी. एस. आई.—हैदराबाद का निजाम !

अपनी प्रजा के चहेते महबूब अली ने हिंदू-मुसलमान का भेद कभी नहीं माना। बहुत ही नाजुक मिजाज और बात का धनी था महबूब अली। किसी बात पर अड़ जाता, तो उसकी जिद 'अंगद का पांव' बन जाती। जब हैदराबाद में महारानी विक्टोरिया के तृतीय पुत्र ड्यूक ऑव कनॉट मेहमान बनकर आये, तब चलते वक्त शिष्टाचार के नाते पूछ बैठे, "क्या

मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूं ?"

महबूब अली बोला, "जी हां । मैं चाहता हूं कि जब मैं दिल्ली जाऊं, तब रेलवे प्लेटफार्म पर मेरे लिए हाथी भेजा जाए। आम लोगों की तरह प्लेटफार्म पर चलकर बाहर निकलना मुझे अखरता है।" ड्यूक ऑव कनॉट ने इस छोटी-सी बात को मान लिया, पर यही बात बड़ी बन गयी दिल्ली आकर। वाइसराय के हुक्म के मुताबिक स्टेशन के अंदर हाथी नहीं जा सकता था।

जब दिल्ली दरबार के लिए महबूब अली खां दिल्ली सेंट्रल स्टेशन पहुंचे, तब हाथी तलब किया। फरमाबरदारों ने बतलाया कि हाथी स्टेशन के बाहर खड़ा है। महबूब अली पाशा ने सुनकर न क्रोध किया और न ही कोई वावेला। जैसे कुछ हुआ ही न हो, उन्होंने रेल की 'कैरिज' में खाना खाया और फिर अपने रईसों के साथ ताश खेलने लगे। दो दिन तक निजाम हैदराबाद, स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़े 'कैरिज' में ही रहे। झख मारकर वाइसराय को प्लेटफार्म पर हाथी भेजना ही पड़ा और तभी निजाम हैदराबाद महबूब अली पाशा ट्रेन से उतरे।

निजाम का पश्चात्ताप

अपनी पुस्तक 'दि डेज ऑव दि बिलविड' में हैरियट रोंसन लिटन ने वर्णन किया है कि नशे की हालत में महबूब अली पाशा को किसी गरीब की लड़की बहुत पसंद आयी। उन्होंने फौरन उसकी मां को बुलवाया और कहा, "मुझे तुम्हारी लड़की बहुत पसंद आयी है। क्या तुम इसे मुझे देने को तैयार हो?"

निजाम हैदराबाद महबूब अली खां

मां ने गिड़गिड़ाकर कहा "हजूर, हम सब आप पर कुर्बान होना फख्र समझेंगे।"

लड़की रोने लगी और बोली, "मैंने हमेशा आपको पिता समान समझा है।"

महबूब अली पाशा उसी वक्त वहां से उठकर चल दिये और अपने धर्मगुरु बाबा शर्फ उद्दीन के मजार 'पहाड़-ए-शरीफ' पहुंचकर तीन दिन तक व्रत रखा और रोकर गुनाहों की माफी मांगते रहे।

चोर की सजा चांदी के बरतन

'पहाड़-ए--शरीफ' पर वे सालाना उर्स मनाते थे। मजार के पास ही एक अदना मकान में वह रहते थे और दो दिन तक हिंदू-मुसलमान सबको खाना खिलाते थे। हिंदुओं के लिए अलग इंतजाम होता था। उनका हुक्म था कि कोई भी जितना भी

खा सके वहीं पर खायेगा, पर साथ बांधकर नहीं ले जा सकेगा। दूसरे दिन उनके नौकरों ने एक हिंदू लड़के को पकड़ लिया, जो छुपाकर खाना लिये जा रहा था। शोरगुल सुनकर निजाम साहब स्वयं आये और लड़के से पूछने लगे कि उसने ऐसा क्यों किया? लड़का उनके पांवों पर गिरकर रोने लगा और बोला, "मेरी बहन गर्भिणी है और यहां से पांच मील दूर रहती है। उसने कहा था कि मैं इतनी दूर चल नहीं पाऊंगी, इसलिए तू मेरे लिए रोटियां ले आना।"

महबूब अली पाशा ने अपना एक आदमी लड़के के साथ गाड़ी पर भिजवाया कि बात सच है या झूठ। बात सच निकली। महबूब अली पाशा ने फौरन हुक्म दिया कि लड़की के लिए चांदी के बर्तनों में खाना भेजा जाए और बर्तन वापस नहीं मंगवाये जाएं।

बहुत बड़ा दिल था उनका। एक बार वे महल में मोतियों की मालाओं का निरीक्षण कर रहे थे कि लौटते वक्त उन्होंने एक नौकर को एक माला चुराते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया। नौकर के काटो तो खून नहीं। निजाम साहब उसके पास फुसफुसाकर बोले, "अरे कमबख्त, इसे जल्दी से छुपा ले वरना वे लोग तुझे पकड़ लेंगे।" और यह कहकर स्वयं दबे पांव आगे बढ़ गये।

रोम में आम चुनाव से एक सप्ताह पहले सब जगह एक पोस्टर चिपकाया हुआ देखा गया। उसमें पलंग के पास खड़ा एक नन्हा बच्चा कह रहा था—'अगर अम्मी और बाबूजी साम्यवादी पार्टी को वोट नहीं देंगे, तो मैं तीन महीने तक रोज रात को बिस्तर में मुत्ती करता रहूंगा।'

हैदराबाद! और उसका आकर्षण-केंद्र—चारमीनार। बतलाते हैं सुल्तान इब्राहीम कुतुबशाह के बेटे मुहम्मद कुली किसी सुंदरी के प्रेम-पाश में बंध गये थे। उससे मिलने वह रोज घोड़े पर जाते थे। एक दिन जब मूसी नदी में भयंकर बाढ़ आयी थी, तब भी मुहम्मद कुली ने अपना वादा वफा करने के लिए अपना घोड़ा धारा में छोड़ दिया था। इश्क के दीवाने की जीत हुई आखिर, और वह ठीक समय पर अपनी प्रेयसी के पास पहुंच गये। अपने बेटे के इश्क के तेवर देखकर ही सुल्तान इब्राहीम कुतुबशाह ने सन १५७८ में पुल बनवाया था। अंत में मुहम्मद कुली ने अपनी उस प्रेयसी से विधिवत विवाह किया। जिस जगह उसने सर्वप्रथम अपनी प्रेयसी को देखा था, वहीं एक यादगार भी बनवायी—चारमीनार। मोहर्रम के दिनों चारमीनार पर जन समुद्र उमड़ पड़ता है। वैसे हैदराबाद रियासत में मुहर्रम बड़ी धूमधाम से मनाये जाते थे, जिसका एक कारण भी था। करीब साढ़े तीन सौ वर्ष पहले गोलकुंडा के कुतुबशाही खानदान के कम

वयस्क सुल्तान अब्दुल्ला हाथी पर बैठकर हैदराबाद से बाहर घूमने निकले। यकायक हाथी बिगड़ गया और उन्हें लेकर जंगल की ओर बदहवास होकर भागा। यह खबर सुनकर सुल्तान की माता ने अपने बेटे की सलामती की दुआ मांगी। भाग्य से मुहर्रम के पांचवें दिन सुल्तान अब्दुल्ला हंसी-खुशी गोलकुंडा वापस आ गये। सुस्तान की माता ने सोने की भारी जंजीर बनवायी और दोनों मां-बेटे पैदल चलकर उस जगह पर पहुंचे, जहां हैदराबाद की जनता जमा होकर नमाज पढ़ती थी। वहां पहुंचकर सुल्तान की माता ने जंजीर को तोड़कर उसके टुकड़े गरीबों में बांट दिये। इस त्यौहार को 'लंगर का जुलूस' कहते थे। आसफजाही खानदान में यह त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाया जाता था और रियासत के हिंदू-मुसलमान मिलकर बड़े उत्साह से इसमें शामिल होते थे।

रंज और खुशी

और एक दिन वह भी आया जब कि ऐन होली के दिन 'लंगर का जुलूस' भी निकलना था। मोहर्रम और होली—रंज और खुशी, दोनों साथ-साथ। लंगर जुलूस के आगे शिआयों के पवित्र 'अलम' निकल रहे थे और जुलूस में ही निजाम महबूब अली पाशा अपने हाथी पर बैठे जा रहे थे।

महबूब अली पाशा के कान में तभी होली का हुड़दंग सुनायी पड़ा, तो वे चौंक पड़े। अगर कहीं होली खेलनेवालों ने जुलूस के पवित्र 'अलम' पर रंग डाल दिया, तो खून की होली शुरू हो जाएगी।

अमरीका में सन १९६० में किये गये भूमिगत अणु-विस्फोट परीक्षणों के दुष्परिणामों का पता अब लग रहा है। मिसीसिपी के १४०० एकड़ क्षेत्र को रेडियोधर्मिता से ग्रस्त घोषित कर दिया गया है। इस क्षेत्र की छिपकलियों और मेंढकों की शरीर-रचना ही बदल गयी है।

पाशा फौरन ही अपने हाथी से नीचे उतर पड़े और जल्दी-जल्दी चलकर होली के हुड़दंग में शामिल हो गये। और होली के जुलूस के सरगना बन गये। उन्होंने होली के जुलूस का रुख मोड़ दिया। जिस तरफ से मोहर्रम की सवारी आ रही थी, उसके बरतरफ होली का जुलूस दूर निकल गया। महबूब अली पाशा बाद में नहा-धोकर मोहर्रम में शामिल हो गये।

ऐसे थे जनता के महबूब—महबूब अली पाशा, जिनकी नजर में काबा और कलीसा दोनों ही पवित्र थे।

सन १९११ में अपने दोनों बेटों—हिंदू और मुसलमान—को छोड़कर वे हैदराबाद से सदा के लिए उठ गये।

—एफ-४८, ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली-११००१६

घाव करें गंभीर

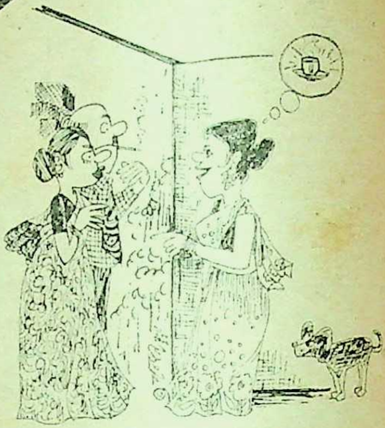

आइए आइए ...... आपको तो 'अपचरोग' है न।

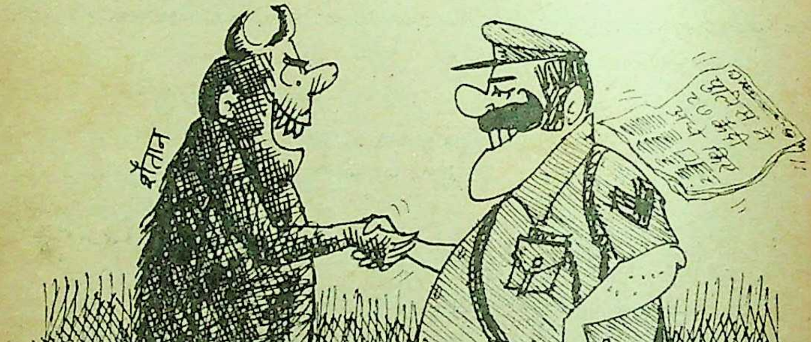
शैतान
पुलिस ने
२९ कैदी
अंधे किए
©चंचल 80

पुलिस भाई। हम तो अब तुम्हें अपना गुरु मानते हैं।

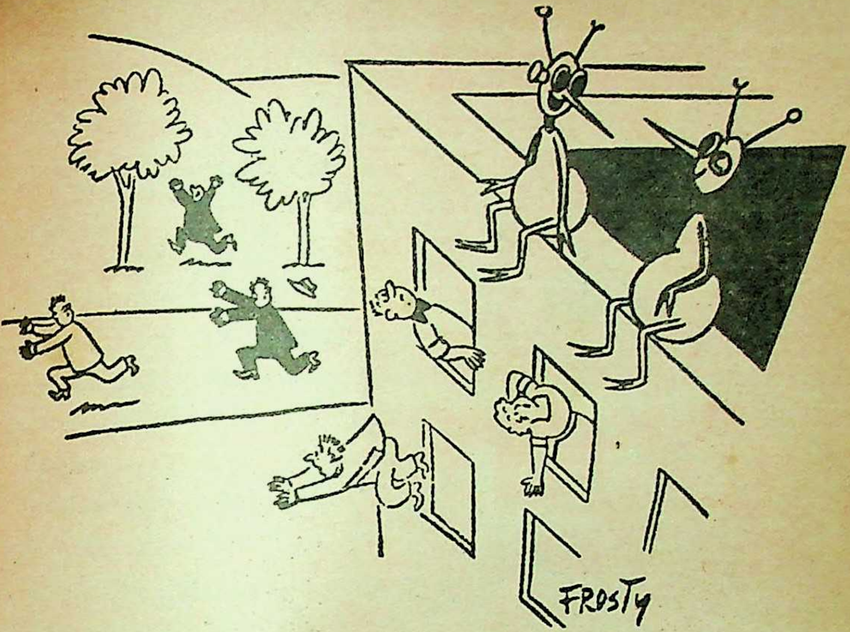

FANTASTIC

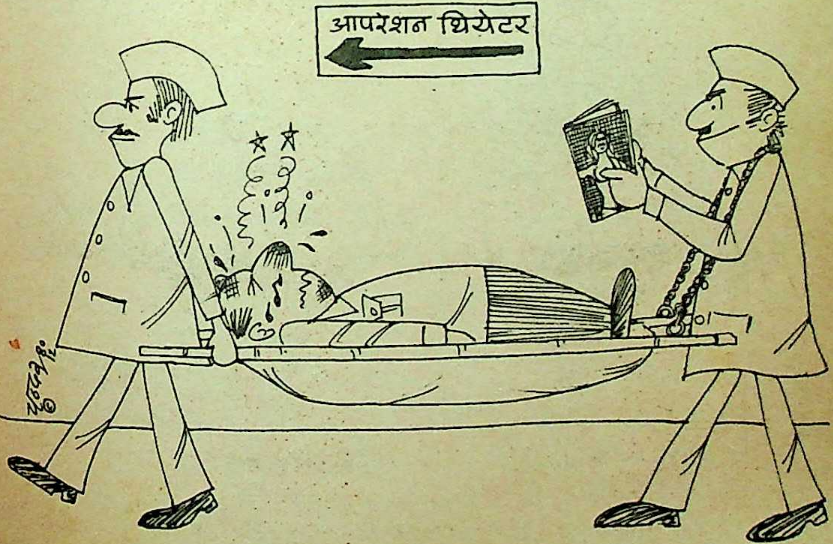

तेरे कूचे में दम निकले

● डॉ. चन्द्रशेखर

हाय ! ! !

बारहा लब पे यह किसका नाम आया !!!

अपनी दिलफरेब महबूबा का कूचा इतना दिलकश है कि बंदा सौ दिलोजान से उस पर कुर्बान होने को बेताब रहता है। जब से उस जालिम दिलदार पर यह दिले-नादान फिदा हुआ है, तब से अपना दिले-नातवान उसी के कूचे के चक्कर काटता आया है।

और हमारी महबूबा !!! तौबा उसकी न पूछिये ? अपनी महबूबा खास बिजली है। कोह काफ को खाक बना देनेवाली बिजली। एकदम बर्के-तजल्ली है। जिसके नूर की हजरत मूसा भी ताब न ला सके थे। बस वही बिजली तब से उस कूचे में बंद है। ठीक वैसे ही जैसे कि थरमामीटर में पारा बंद रहता है।

आप बराये मेहरबानी उस कूचे में न जाएं। इसमें जाना खुद से जाने के जोखिम से कम नहीं है। हमने लाख बार चाहा यह खतरा मोल लेना। कई बार तो ऐसा हुआ कि सर पर बांधने के लिए कफन तक मंगवा लिया। मगर हमें अपना यह नेक इरादा भी बलाएताक रखना पड़ा। हमने उसे एकदम तर्क कर डाला। इस ख्याल से कि यह खास कपड़ा तो जिंदगी में एक मरतबा ही काम आता है।

बस इसी ख्याल से हमने सर पर कफन बांधकर अपनी महबूबा के कूचे में जाने का इरादा तर्क कर दिया। उसके गले पर छुरी चला दी। वैसे छुरी चलाने में हमें कोई परेशानी नहीं आयी, हमारे दिल पर एक अरसे से बेशुमार छुरियां आये दिन चलती आ रही हैं। हमने उन्हीं में से एक छुरी लगे हाथ अपने उस इरादे के टेंटुए पर भी चला दी।

मगर ऐ मेरे कदरदान दोस्तो !! मैं अपने इस दिले-नादान का क्या करूं?

इसमें मचल रही तमन्नाओं का क्या करूं? सो हमें एक दिन इनके आगे अपने घुटने टेकने ही पड़े। हमने कमर कसी। दिल पर एक बड़ा-सा पत्थर रखा। पत्थरों की हमारे यहां कोई कमी नहीं। अपने मुमताज और हरदिल-अजीज लीडरों ने अपनी कौम की किश्तियों में आज तक सिर्फ पत्थर ही भरे हैं। हमने उनके वजन को कम करने के इरादे से एक बड़ा वजनदार पत्थर उठाकर अपने दिल पर रख लिया। अपनी महबूबा का वह फोटो, जो हमारी जान के लिए वबाल साबित हो रहा था, उसे अपनी आंखों की मारफत अपने दिल के फ्रेम में उतार लिया। हमने बाकायदा तैयारी की। और एक सिपाहसालार की मानिंद महबूबा के कूचे में कदम रखने की तमाम हिदायतों पर मुकम्मल अमल किया। उस कूचे में जाना मैदानेजंग में जाने से किसी कदर कम नहीं। सर पर कफन तो बांधना ही पड़ता है। लेकिन उसे अपनी हथेली पर भी रखना पड़ता है। बड़ा ही दुश्वार काम है। आप एक काम ही कर सकते हैं। मगर महबूबा के कूचे में जाने के लिए आपको ये दोनों ही काम सर-अंजाम देने पड़ेंगे। सर पर कफन भी बांधिए और उसे काट कर हथेली पर भी रखिए। वैसे हमारी संगेदिल महबूबा की भी यह पहली शर्त थी कि 'अगर हजरत! हमारे कूचे में कदम रखना है तो सर पर कफन भी बांधना होगा और उसे काटकर हथेली पर भी रखना होगा।'

सर पर कफन तो बांधना ही पड़ता है। लेकिन उसे अपनी हथेली पर ...

सो, हमने तयकर लिया कि क्यों न इस फानी दुनिया में दो दिन के मेहमान सर को कुर्बान कर दिया जाए। लगते हाथ इस ससुरे नाक का भी काम तमाम कर दिया जाए। ऐसा नहीं कि हमने इस फैसले से पहले सोचा नहीं। हमने अपनी महबूबा के नाम लोटन के मारफत पैगाम भी भेजा कि 'मेरे सर से यह पाबंदी उठा लो! ऐसा

जलन से सताती, खुजलाती घमोरियों की बेचैनी भूल जाइये।

नायसिल
अपनाइये!
शीघ्र आराम दिलानेवाला
घमोरियों का
पाउडर
२ पैक-
'ब्लू'
और
'सॅण्डलवुड'
नायसिल लाइये
घमोरियों को
भूल जाइये
टॅल्कम पाउडर से
भी कम क़ीमत में!
Glaxo
Glaxo
nycil
PRICKLY HEAT
POWDER
GN-79-PR .HIN

विशेष औषधियुक्त नायसिल हर दृष्टि से घमोरियों की रोकथाम करता है।

१. अत्यधिक पसीने को रोकता है।
२. पसीने को सोखता है।
३. दुर्गंध के कीटाणुओं की नाश करता है।
४. त्वचा को आराम पहुंचाता है।

न करने की सूरत में आपको ही आगे चल कर दिक्कत पेश आएगी। सवारी के लिए मेरे सर से बढ़िया गद्दी कहीं भी नसीब नहीं होगी। और फिर इसी सर पर ही हम सेहरा बांधकर आपके कूचे में तशरीफ लाने का इरादा रखते हैं . . . वगैरा वगैरा . . .।'

हमारी फरियाद कारगर सावित नहीं हुई। हमने अपने लोटन मियां को एक बार फिर अपनी महबूबा की अटरिया की जानिब परवाज भरने के लिए आमादा किया। और अपनी एक अर्जी भी अरसाल की बेगम ! यूं हमारे सर को कलम करवा हमारी हथेली पर न रखवाओ। अभी तो हमें इसी सर पर आसमान उठाना है और इस हथेली पर सरसों भी उगानी है ।'

हमारी महबूबा का जवाब वड़ा ही सख्त था, उसकी दहलीज के पत्थर की मानिंद। आप उसकी दहलीज की न पूछिए !! उस पर कितनी वार सजदे किये हमने। अपने माथे को उस संगदिल के संग पर इस कदर रगड़ा कि अपनी तकदीर में जो भी तहरीर था, वह सब का सब मिट गया। मगर उस दहलीज पर जरा-सी भी खरोंच तक नहीं आयी। इन हालात में हमारे इरादे और भी पुख्ता हो गये ।

हमने आव देखा न ताव और आन की आन में अपने सर पर कफन बांधा, उसे कलमकर अपनी हथेली पर रखकर निकल पड़े अपनी महबूबा के कूचे की जानिब। दोस्तो ! हम ऐसे अपनी महबूबा के कूचे में बड़ी शान से डंके की चोट पर और नगाड़े पीटते हुए दाखिल हुए। हमारा स्वागत किया महवूबा के कुत्ते ने। वाद में हमें पता चला कि हमारी जान महवूबा ने इसी कुत्ते को अपने आगोश में लेकर अपनी तनहाई के आलम पर कावू पाने की कोशिश की है। इसी के लवों से लगाकर हमें भेजे जानेवाले लिफाफे बंद किये जाते रहे हैं। उन्हें ही हमने बड़ी शान से चूमकर खोला है। हाय ! ! आज तक हम यह किसे चूमते आये हैं ! !

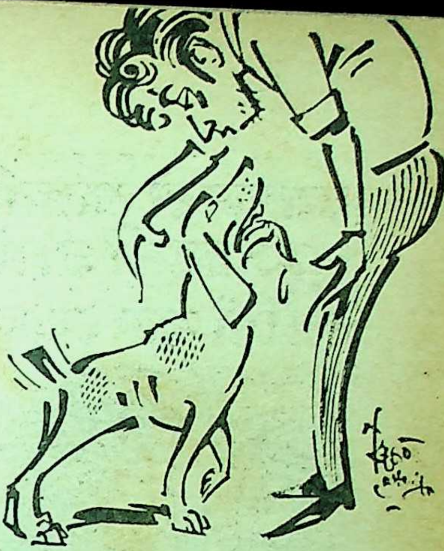

महबूबा का कुत्ता दुम हिलाता हुआ हमारी जानिब आया। हमने उसे हिकारत की नजर से देखा, "अबे जा बे ! तू है तो आखिर कुत्ते का कुत्ता ही ।" वह अपनी जुबान को एकदम अंदरकर गुर्राया। गोया बोला हो, "अजी ! हजरत आप मुझे चूमे बिना अंदर दाखिल नहीं हो सकते। आपकी महबूबा हमारी महबूबा भी है।"

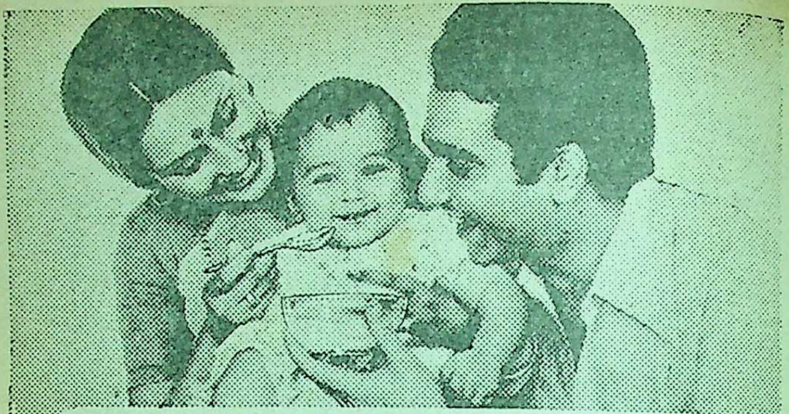

जब मुन्ना ३ महीनेका हो जाए, तो उसे सिर्फ़ दूध ही काफ़ी नहीं है

आपके मुन्ने को चाहिए फ़ैरेक्स

मुन्ने का आदर्श ठोस आहार

३ महीने की उम्र—ठोस आहार का समय

३ महीने का होनेपर, मुन्ने की बढ़ती माँगों के लिए केवल दूध काफ़ी नहीं है। दिन-ब-दिन बढ़ते उसके शरीर को अब दूध से मिलने वाली कॅलोरीज से कहीं अधिक की जरूरत रहती है। साथ ही अब मुन्ने को ठोस आहार की भी जरूरत है जो उसके तरल आहार की मात्रा कम करके थोड़ेमें उसे अधिक कॅलोरीज दे सके और उसको चबाना सिखा सके।

३ महीने की उम्र—
अधिक आयरन की आवश्यकता

"बच्चे को ठोस आहार देना शुरू करने का सबसे अच्छा समय है— जब वह २-४ महीने का हो जाए। हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण अपने आप में पूर्ण आहार नहीं है। इसीलिये बच्चे को आयरनवाले ठोस आहार की जरूरत होती है।"

—डॉ. सुभाष सी. आर्य :
"इन्फ़ेंट एण्ड चाइल्ड केअर फ़ॉर दि इण्डियन मदर"

डॉक्टर फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश क्यों करते हैं?

फ़ैरेक्स विशेष रीति से बना सुपाच्य आहार है। इसमें कार्बोहाइड्रेटस, फ़ैट्स, कॅल्शियम, फ़ॉस्फ़ोरस और विटामिनस हैं और पर्याप्त मात्रा में आयरन भी है। इस प्रकार मुन्ने के सर्वांगीण विकास के लिये फ़ैरेक्स एक आदर्श ठोस आहार है।

……

मुफ़्त! मुन्ने की प्रथमवर्ष पुस्तिका— नयी माताओं के लिए बच्चे की देखभाल सम्बन्धी सुलभ मार्गदर्शन। ५० पैसे का टिकट भेजकर मंगवाइये।

पो. ऑ. बॉक्स नं. 19119, (FAR 45 T)
बम्बई-400 025.

……

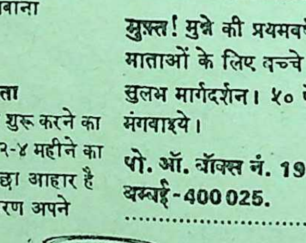

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है-फ़ैरेक्स
मुन्ने का आदर्श ठोस आहार- जल्द और सर्वांगीण विकास के लिए

CASGLF-10-172 Hin

अपनी महबूबा का कुत्ता किसी ऊंची नस्ल का लग रहा था। पहली निशानी यह कि उसकी दुम ही नहीं थी, सो वह दुम के टेढ़े और सीधे होने के चक्कर से बाहर था। यह भी पता चला है कि उसे घी तक हजम हो जाता है। वह जब दिल चाहे जिस भी हंडिया में मुंह मार सकता था। इससे न तो कुत्ते की जात का ही पता चलता था और न हंडिया की पाकदामनी पर कोई हरफ ही आता था। उसे एक खास दफा के तहत यह हक हासिल था। अब तक कोई भी पार्टी इस दफा को नहीं तोड़ सकी थी। जिसने भी तोड़ने की कोशिश की, वह खुद-ब-खुद ही टूट गयी। कुत्ता भी पाक रहे और हंडिया भी नेकचलन मानी जाए! और क्या चाहिए!! मजे ही मजे हैं।

मैंने निहायत ही आजिजाना लहजे में अरज की, "ऐ मेरे यारों के यार !! मेरे हमराज ! मेरे हमदम !! मेरे दोस्त !! तू मेरी बोटी को इस मुल्क का एक हिस्सा जानकर नोच डाल। अपने नेताओं की तरह मेरी जुबान से उफ्फ तक न निकलेगी।"

दोस्तो ! हमने अपनी टांग उस कुत्ते के हवाले कर दी। उसने आन की आन में उसके परखचे उड़ा दिए। मैंने बड़ा ही वाबेला मचाया। फौरन अपने सर से कफन उतारकर उस पर आसमान तक उठा डाला। जिस सर को हमने खंजर से कलम किया था। जिसके बल चलकर हम अपनी महबूबा के कूचे में दाख़िल हुए थे, अब उसी सर पर हमें आसमान भी उठाना पड़ गया। आसमान का हिलना था कि हमारी महबूबा का तख्त भी एक शदीद जलजले का शिकार हो गया। उसके दिमाग में एक बिजली कौंध गयी, "कौन यह सखी पीर, कोई पहुंचा हुआ दरवेश आ गया है मेरे कूचे में।" वह फौरन पेशतरअपनी चिलमन के पीछे नमूदार हो गयी।

सावन के अंधे को हरसू हरा ही हरा दिखायी देता है और महबूबा के कूचे में हुए अंधे को हरसिम्त महबूबा का कूचा ही कूचा नजर आता है। अब हमारा यह आलम है कि जिधर भी रास्ता टटोलते हुए जाते हैं अपनी जान महबूबा का कूचा ही पपोटों में तिरता है। सारा आलम ही कूचा बन गया है। अब तो यही हसरत है कि इसी कूचे में अपना दम निकले।

—२९बी बचित्तर नगर, पटियाला

कंडक्टर : बारह साल से कम उम्र के बच्चे का आधा टिकट लगता है। तुम्हारी उम्र क्या है ?
लड़की : ग्यारह साल ?
कंडक्टर : और बारह साल की कब होगी ?
लड़की : बस से उतरते ही !

राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्र महाराणा प्रताप के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखता है। राष्ट्रीय एकीकरण के बाद यह इलाका उदयपुर संभाग कहलाया। इसी संभाग का एक जिला है—वीर-वीरांगनाओं की धरती के रूप में विख्यात—चितौड़गढ़। इस जिले की तहसील प्रतापगढ़ की भी अपनी अंतर्कथा है।

प्रतापगढ़ क्षेत्र आदिवासी क्षेत्र है तथा मध्यप्रदेश की सीमा से एकदम सटा हुआ। यह क्षेत्र राजस्थान का मालवा क्षेत्र भी कहलाता है। श्री शंकराचार्य के उदय से पूर्व यह स्थान बौद्ध और शैव प्रभावों से प्रभावित रहा, किंतु शंकर दिग्विजय के पश्चात यह पूर्णरूपेण शैव संप्रदाय की शरण में आ गया।

शिवभूमि : गौतमेश्वर

गौतमेश्वर-स्थल का पाषाणी वैभव अति विराट है, गौतमेश्वर का मेला हर वर्ष वैशाखी पूर्णिमा को लगता है। यह बुद्ध की जन्म-तिथि है।

स्कंध-पुराण के महान पौराणिक ने 'अरुणोदय खंड' में गौतमेश्वर के माहात्म्य का वर्णन किया है। ग्यारहवीं शताब्दी में तंत्र-साधना के प्रसिद्ध केंद्र दक्षिण के श्रीशैल पर्वत से निकलकर एक रमता जोगी 'शिव' की खोज करता, भटकता और आगे ही आगे बढ़ता गया। मालव-मेदिनी का यह भू-भाग उसे लुभावना लगा और वह वहीं रुक गया।

श्रीशैल पर्वत से आनेवाले जोगी के पूर्व ही यह स्थान शैव संप्रदाय का सर्वमान्य केंद्र और मालवी नरेंद्रों द्वारा आयोजित शत-शत रुद्राभिषेक-धाराओं का अर्चना-स्थल बन गया था। आर्यों, हूणों, गुप्तों, मारशिवों, नागों, प्रतिहारों, परमारों, राठौरों, चौहाणों, सिसोदियों और अन्यानेक शैवों के अतिरिक्त यवन क्षत्रपों के लिए यह पुण्य-धाम बन चुका था। प्रतिहार महेंद्रपाल-द्वितीय ने गौतमेश्वर क्षेत्र

● **फारुक आफरीदी**

जहां दस रुपयों में पाप धुलता है!

के निमित्त अग्रहार की व्यवस्था की। इसके तंत्रपाल हाकिम, दंडनायक दामोदरसुत माधव ने खर्परपद्रक ग्राम देवालय को भेंट करने का आदेश प्रदान किया था। खर्परपद्रक को आजकल 'खेरोट गांव' के नाम से जाना जाता है। मेवाड़पति खुंमाण द्वितीय ने इस देवालय के दर्शन के पश्चात १७ जुलाई, ९४२ को पलासकूपिका ग्राम की आय इसे भेंट कर दी। सत्रहवीं शताब्दी में कांठल के महारावत के शासन में जब यह क्षेत्र आया, तबसे इसकी निरंतर अभिवृद्धि होती रही।

अपराजेय शिवलिंग

भारत में शायद यह पहला मंदिर है जहां खंडित शिवलिंग की पूजा की जाती है। गौरी आक्रांताओं ने गौतमेश्वर के शिवलिंग को तोड़ने का कुत्सित प्रयास किया था, लेकिन वह टूटा नहीं, तड़क गया। नंदी को तोड़कर एक ओर फेंक दिया गया, जो आज भी वैसा ही पड़ा है।

इस अंचल में एक दंतकथा प्रचलित है कि मुहम्मद गजनी खां गौरी ने इस शिवालय के विराट लिंग पर प्रहार किया था। जब गौरी ने इस शिवालय पर आक्रमण किया, तब उसका शाहजादा भी साथ था। उस वक्त आदिवासी मीणों ने गुरिल्ला युद्धनीति का प्रयोग किया। फौज जिस समय पहाड़ के नीचे मंदिर के प्रांगण में विध्वंस कार्य में रत थी, उस समय आदिवासियों ने पहाड़ी छज्जे पर लगे एक बहुत

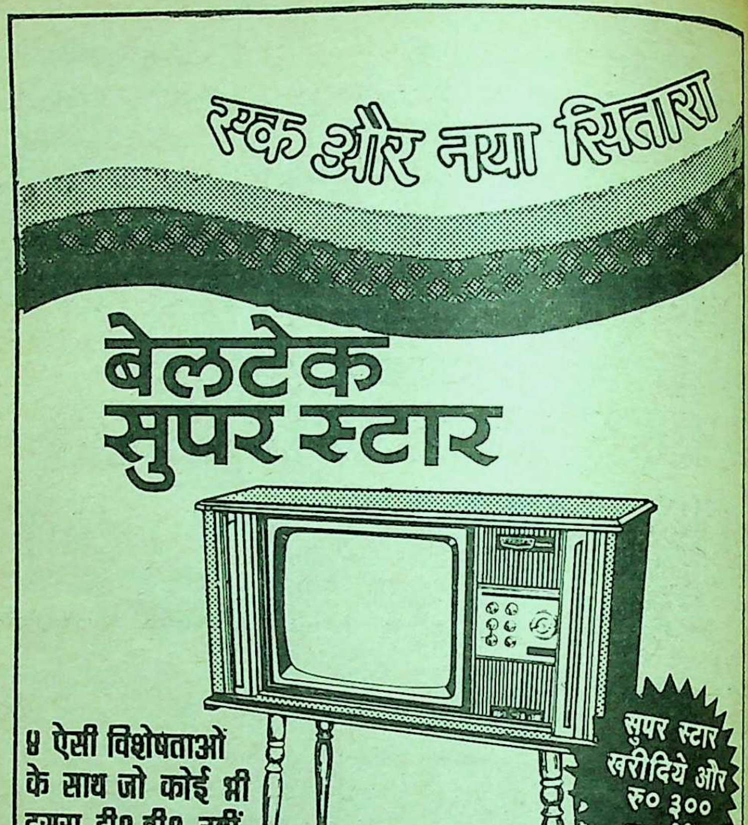

एक और नया सितारा

बेलटेक सुपर स्टार

सुपर स्टार खरीदिये और रु० ३०० बचाईये

४ ऐसी विशेषताओं के साथ जो कोई भी दूसरा टी० वी० नहीं देता

१
६ आई सी
सालिड स्टेट
टी०वी०

२
विडियो
चलाने
की सुविधा

३
आई सी नियंत्रित
बिल्ट इन
आटोमेटिक
वोल्टेज
स्टैबेलाईज़र

४
ट्रेबल एवं बैस
कन्ट्रोल्स
स्टीरियों जैसी
ध्वनि के लिए

६ आई सी टेक्नोलाजी में अग्रसर

बेलटेक

बड़े जंगली भ्रमरों के छत्ते को छेड़ दिया और देखते ही देखते लाखों भंवरे शाही फौज पर टूट पड़े। भ्रमरों के छत्ते आज भी वहां देखे जा सकते हैं।

दूसरी ओर सन १५०० के आस-पास जब नासिरशाह मालवा का सुल्तान बना, तब गौतमेश्वर को विशेष सुविधाएं प्राप्त हुईं।

पाप-मुक्ति का स्थान

प्रकृति के इस सम्मोहक क्षेत्र गौतमेश्वर में मालव और मेवाड़भर के यात्री पाप मुक्ति के लिए आते हैं। हत्याओं का प्रायश्चित यहां होता है। जाने-अनजाने किसी व्यक्ति के हाथ से हत्या हो जाने पर समाज में वह तभी शामिल किया जाता है, जब वह स्थानीय कचहरी से प्रदत्त दोष-मुक्ति पत्र प्रस्तुत करता है कि अमुक व्यक्ति अब प्रायश्चितकर 'पाप-मुक्त हो गया है।' कचहरी में बैठे सामाजिक न्यायकर्ता सामान्यत: ऐसे व्यक्ति से दस रुपये वसूलकर उसे प्रमाण-पत्र देते हैं कि 'अपराधी व्यक्ति पाप-मुक्ति-कुंड में स्नानकर दोषमुक्त हो गया है।' आदिवासी भील, मीणा और इस क्षेत्र के गरासिये इस धर्मधाम के अनन्य भक्त हैं, और प्रतिवर्ष वैशाखी मेले में वे हजारों की संख्या में एकत्र होते हैं। यहां वे केवल स्नान या दर्शन ही नहीं करते, बल्कि कई सामाजिक व्यवहारों का निर्वाह भी करते हैं। यहीं वे अपने पुराने वैर का बदला लेते हैं। परकीया के प्रेमी तलवार के घाट उतारे जाते हैं और यहीं प्रथम दर्शन पर विवाह की वल्लरी लहराती है। प्रेमावस्था में भील, मीणा आदिवासी जाति की नवयौवना अपने दूरस्थ प्रेमी को गौतमेश्वर मेले में उसके संकेत-स्थल पर मिलने का वचन देती है और उस समय वह अपने परिजनों को छोड़कर चुपके से निकल आती है। दोनों मजे से मेले की सैर करते हैं, झूला झूलते हैं और फिर लड़की सप्ताहभर में सुहाग की मुस्कान और पार्वती का आशीष लेकर अपने नैहर लौट आती है। इस तरह शादी की प्रथम रस्म का निर्वाह और भावी जीवन की रूपरेखा का निर्माण होता है।

आजकल यहां लगने वाले मेले के अवसर पर कठपुतली का नाच, फिल्म-प्रदर्शन और प्रदर्शनियों आदि का भी आयोजन किया जाता है। मेले का वातावरण बड़ा रंगीन और रागात्मक होता है, जिसे देखकर कोई भी यह सहज अनुभव करने लगता है कि वह आदिवासियों के रोचक जनजीवन के निकट पहुंच गया है।

—सहायक जन-संपर्क अधिकारी,
सूचना केंद्र, मोहता पार्क, उदयपुर

मार्सलीज (फ्रांस) में एक कैदी ने पैरोल पर रिहा किये जाने की अपीलें बार-बार नामंजूर किये जाने पर भूख-हड़ताल कर दी और इस आशंका से कि कहीं उसे जबरन भोजन न खिला दिया जाए, उसने अपने होंठ सी लिये।

कतिपय कारणों से गत अंक में विचार-दीर्घा स्तंभ नहीं जा सका। इस बार विचा दीर्घा–१२ व १३ के परिणाम दिये जा रहे हैं। विचार दीर्घा––१२ में चर्चा विषय था––'क्या देश को एक नयी शासन-व्यवस्था की आवश्यकता है?' इस च में भाग लेनेवाले अधिकांश पाठकों का मत था कि आवश्यकता नयी व्यवस्था नहीं, बल्कि मौजूदा व्यवस्था को ही ठीक ढंग से क्रियान्वित करने की है।

पुरस्कृत विचार - १२

नयी शासन व्यवस्था की आवश्यकता

● **जे. पी. श्रीवास्तव**

भारतीय प्रजातंत्र की वर्तमान पद्धति के अंदरूनी विकल्प को जनता और राजनीतिज्ञों ने उलट-पलटकर देख लिया है, सिद्ध हो गया है कि व्यवस्था बुरी नहीं है और यह भी कि तथाकथित राजनीतिज्ञ और जन नेता ही खोटे हैं, जिनके हाथों पड़कर उज्ज्वल अभीप्सित भविष्य बार-बार रीत गया है। हालत यह है कि कोई पार्टी विश्वस्त और जनकल्याणकारी नहीं रही।

ऐसे में इस विचार का जन्म लेना कि भारत को एक नयी शासन-व्यवस्था की आवश्यकता है, सहज भी है और आरोपित भी। सहज है, झुंझलाहट भरे हताश बुद्धिजीवियों की समझ से, जो स्वर्णिम भविष्य को शासन-पद्धति बदलकर पा लेना चाहते हैं और आरोपित है उन थके-हारे-असमर्थ राजनीतिज्ञों की समझ से, जो अपनी असफलताओं को वर्तमान शास व्यवस्था के मत्थे मढ़कर अपनी भ्रष्ट और पंगुता को छिपाना चाहते हैं।

दरअसल, हिंदुस्तान की वर्तमा शासन-व्यवस्था कहीं भी दूषित, 'असम या चुकी हुई नहीं है। वर्तमान संविधा का मूल ढांचा बहुत विचारवान, अनुभ और पारखी विद्वानों की गहरी सूझ-बू दूरदर्शिता और चिंतन-मनन का परिणा है, जिसमें निहित स्वार्थवश और तात्का लिक उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त कि जानेवाला कोई भी परिवर्त्तन राष्ट्र लिए अहितकर ही सिद्ध होगा।

विचार

जरूरत शासन-व्यवस्था के परिवर्त की नहीं है—जरूरत है ऐसे शुद्ध, समर्पि सक्षम, ईमानदार और जागरूक नेता त दल की, जो स्वच्छ और सक्षम प्रशासन दे देश और जनता की भलाई करे; जीव की न्यूनतम आवश्यकताओं की सक्षम पू करे, और समस्याओं से सही ढंग से निपटे

—५/५, म्यूनिसिपल कालोनी, खरगो

पुरस्कृत विचार - १३

हास्य-व्यंग्य क्यों लुप्त होता जा रहा है ?

• जगदम्बीप्रसाद यादव

विचारदीर्घा—१३ में चर्चा का विषय था—'हमसे हास्य-व्यंग्य क्यों लुप्त होता जा रहा है।' इस चर्चा में भाग लेनेवाले पाठकों ने इसके अनेकानेक कारण बताये हैं।

र दीर्घा

पचास रुपये के पुरस्कार पर सैंकड़ों का हुलिया खराब करना मजाक नहीं, तो और क्या है ? संपादकजी, आप नहीं जानते कि हम-जैसे लोग पत्रिका में दो शब्द छपवाने के लिए कितने हंसी के पात्र बनते हैं। इस पर भी आप कहें कि लिखो एक वक्तव्य कि 'हमसे हास्य-व्यंग्य क्यों लुप्त होता जा रहा है ?' यह हमारा मजाक उड़ाना है कि नहीं ?

हम गंगा नदी के दियारे में रहते हैं। हर साल बाढ़ आती है, घर, गांव, खेत फसल सब कुछ डूब जाता है। पर इस पर भी शहर के लोग गाजे-बाजे के साथ बाढ़ में जल-क्रीड़ा करने आते हैं। बताइए, यह मजाक है कि नहीं ?

नगरों में रहते, कार्य-व्यस्तता के कारण परिवार में भी हंसी-मजाक का समय नहीं मिलता। लेकिन हिंदू परिवार का एक भाग ससुराल का है—जहां साली, सरहज, साले की भाषा चाहे वह गाली दे, मजाक करे, रगड़ा दे, सब हास्यरस में ही सराबोर रहता है। काश ! आपको मिथिला में विवाह का अवसर मिला होता, तो आप हमसे इस विषय पर लिखने को कदापि नहीं कहते।

दिल्ली के बगल में मथुरा-वृंदावन है, जहां की होली प्रसिद्ध है। जिस देश में एक माह, फागुन हास्य-व्यंग्य का रसदार माह हो, वहां आप यह विचार करने को कहें, यह हंसी नहीं तो और क्या है ?

भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति के लिए दौड़-धूप, पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण, समय का अभाव, संबंधों का परित्याग, जीवन-रस से दूर-दूर रहनेवाले न तो हास्य व्यंग्य की रचना कर सकते हैं, और न उसका रसास्वादन।

मुझे आपको पत्र लिखने में मजा आया, इसलिए लिख दिया—पुरस्कार अगर आप मुझे देना चाहें, तो उसको अपने खाते में जमा कर लें—मजाक नहीं समझें !

—एकाशी, बरियारपुर, मुंगेर

नये का बोध

● सुमन मेहरो

जनाब, सच मानिए, आज की दुनिया इक्का, तांगा, मोटर, हवाई जहाज, राकेट छोड़कर सांप से मुकाबला कर रही है। ये मुकाबला चाल में नहीं है, ढाल में है। सांप तंग आकर अपनी केंचुल उतार नयी राह पकड़ता है उसी प्रकार यह दुनिया भी इस कोशिश में लगी है कि अपनी पुरानी केंचुल को एकबारगी ही उतार फेंके। पर बात इतनी ही है कि जब भी यह दुनिया प्रयत्न करती है, कहीं न कहीं से इसकी पूंछ अटक जाती है। इसीलिए इसका संबंध पुराने से छूट नहीं पाता है।

मनुष्य को नये का बोध क्यों और हुआ? इसका भी एक इतिहास है। समय की बात है कि बेचारा एक सी सावा ब्राह्मण गणेशजी का बड़ा था। नित्य मोदकम का भोग ल करता था। एक दिन लंबी सूंडवाले उकता गये और उसके सपने में आ विरा कहने लगे "कल से लड्डू न चढ़ाना, नयी चीज का भोग लगाना।" बे ब्राह्मण ने सपने में ही गणेशजी के

पकड़ लिये, बोला, "महाराज, मैं बेचारा गरीब ब्राह्मण, न पढ़ा, न लिखा, मेरी बुद्धि, तो जो परंपरा से चला आ रहा है उसी तक सीमित है। मैंने तो क्या मेरे बाप-दादों ने भी कभी कालिज का मुंह नहीं देखा। नयी चीज क्या होती है, मैं क्या जानूं। आपके हाथ जोड़ूं, जो चला आ रहा है, उसी से उदरपूर्ति कीजिए।" पर भला देवताओं को तो, जो धुन सवार हो जाए वह हो जाए। उनका लाल मुंह और लाल हो गया और क्रोध में फुंफकार उठे, "जा, मैं आज से कुछ नहीं खाऊंगा।" बेचारा ब्राह्मण बड़ा परेशान कि लड्डू न चढ़ाकर और क्या चढ़ाऊं? तीन-चार दिनों तक इसी सोच में डूबा रहा, न खाए न सोये। हारकर ब्रह्माजी के पास पहुंचा। अपनी समस्या उनके सामने रखी। ब्रह्माजी की बुद्धि भी हल न निकाल सकी, तो उन्होंने शंकर भगवान को बुलाया। दोनों सोच में डूबे रहे। अंत में, यह निश्चय हुआ कि सब देवताओं की एक कांफ्रेंस हो। अट्ठारह घंटे पचपन मिनट की मीटिंग में गर्मागर्म बहस होने पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि इस विषय पर शोध-कार्य करने के लिए एक कमेटी बनायी जाए। शोध का विषय हो 'मोदकम का रूपांतर और गणेशजी की तृप्ति।' शोध-कार्य के लिए पुस्तकों का प्रबंध करने हेतु एक पुस्तकालय बनाया गया। पुस्तकालय का निर्माण सुन सारे साहित्यकारों में होड़ लग गयी। सभी

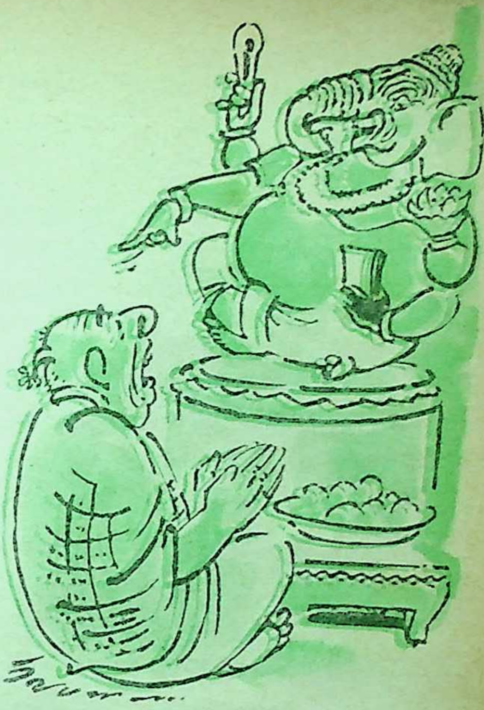

अपनी-अपनी पुस्तकों के लंबे-चौड़े गुणगान करने लगे। पुस्तकों की धूल झाड़ने और शोधकार्यकर्त्ताओं के माथे का पसीना पोंछने के लिए असंख्य सेवक रखे गये।

बेचारा ब्राह्मण इधर दिन-दिन सोच में घुलने लगा। शोधार्थियों का कार्य पूरा ही नहीं हो पा रहा था। वे मगजपच्ची करते पर हल कुछ न निकल रहा था। कुछ दिन बीत जाने पर फिर एक दिन उस ब्राह्मण ने सोचा कि अब तो गणेशजी अपनी बात भूल चुके होंगे। सो उसने एक थाली में लड्डू रखे और अन्य पूजा की सामग्री जुटाने लगा। इधर चूहों ने जो अपने स्वामी की थाली सजी देखी, तो बड़े खुश हुए और प्रसन्नता के अतिरेक में

जो उछले तो अपने साथ लिए-दिए थाली उलट दी। ब्राह्मण बेचारा यह सब देखकर दु:ख के सागर में डूब गया, माथे पर हाथ रखकर बैठ गया। पर जब उसने थाली सीधी की तो लड्डुओं को एक नयी शक्ल में देखा। भागा-भागा गणेशजी को भोग लगाने गया, "भगवान देखिए, आज मैं आपके लिये लड्डू नहीं पेड़ा लाया हूं।" गणेशजी ने अपने तंदूरी पेट पर हाथ फेरा और प्रेम से भोग लगाया। खबर आग की भांति फैलती हुई ब्रह्माजी के पास पहुंची। उनके मुख से जो प्रथम वाक्य निकला वह था, "चूहेजी को शोध-कार्य कमेटी का अध्यक्ष बना दिया जाए।" तभी से पुराने पर नये का मुलम्मा चढ़ाकर दुनिया आनेवाली पीढ़ी को नये का बोध कराती है। शरीर रूपी चोला वही है, पर चोले में लगे पैबंद सब नये हैं। अंगरेजी की एक कहावत है, 'ओल्ड वाइन इन न्यू बॉटल।' बस तो यह मुलम्मा ही नया होता है। अरे, देश में सरकार बदलती है पर आदमी वही होते हैं। नयी योजनाएं बनती हैं पर घूस, रिश्वत, आरामतलबी पुरानी बातों की नींव पर ही। नया साहित्य रचा जाता है पर पुराने की बखिया उधेड़कर, सामाजिक रीति-रिवाज, पुराने संस्कार को नये से नया बनाया जाता है पर सामाजिक चक्रव्यूह के अंदर ही। कुछ झलकियां देखिये—

मरीज : डॉक्टर साहब इस दवा से कुछ फायदा नहीं हो रहा है।

डॉक्टर : हूं। अच्छा देखो, यह एक नयी दवा अमरीका से आयी है, इससे अवश्य फायदा होगा। इस दवा से तुम्हारे अंदर की नस-नस की बीमारियां उभर जाएंगी और तुम एक साथ ही बिलकुल ठीक हो जाओगे। अच्छा यह बताओ तुम्हारे बच्चे कितने हैं?

मरीज : दो।

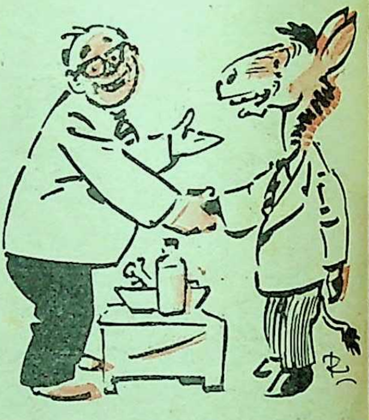

डॉक्टर : अच्छा तो कल उन्हें भी ले आना। उनको भी यह दवा दे दूंगा।

मरीज : परंतु क्यों डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : तुम्हारे परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु कर दी जाए, तो फिर तुम कभी बीमार पड़ ही नहीं सकते। यह इलाज का एकदम नया ढंग है।

★

पहला व्यक्ति : चांद पर पहुंचकर

मनुष्य ने नयी दुनिया का आविष्कार किया है।

दूसरा व्यक्ति : हां, पर इस नयी दुनिया के लिए हमें नयी मनुष्य जाति की आवश्यकता है, यह मनुष्य जाति पुरानी पड़ चुकी है।

★

हम वैज्ञानिक गधे पर अपना शोध-कार्य करेंगे। ताकि वह दो पैरों पर खड़ा हो सके। और वह अपनी आवाज में न रेंककर मनुष्य की आवाज में रेंकने लगे। उसके सिर पर बड़े बड़े बाल निकल आएंगे। उसके कान यों ही रहने दिये जाएंगे ताकि आनेवाली पीढ़ी उसके कानों को देख शान से सिर उठा यह कह सके कि वह गधे की संतान है।

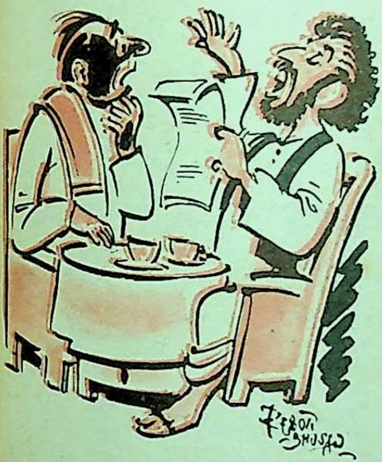

★

कवि : नयी कविता का जमाना है, कुछ ऐसा लिखना चाहिए, जो पुरानी कविता से एकदम अलग हो। तुम्हें एकदम नयी कविता सुनाता हूं।

व्यक्ति : सुनाओ।

कवि : जमादार ने सड़क पर झाड़ू दी/उसकी धूल के गुब्बार में एक काली चिड़िया उड़ी।

और गिर पड़ी।

चंद्रमा का टेढ़ा मुंह/जमादार की धूल से और भी टेढ़ा हो गया / खिड़की के पल्ले भड़भड़ाने लगे/रसोई से आती महक नाक में भर गयी/मैंने मुंह खोला/ पर कुछ कह न सका।

क्योंकि मैं आदमी नहीं / उनका कुत्ता हूं।

व्यक्ति : इस कविता का मतलब ?

कवि : यह नयी कविता है। तुम नहीं समझ सकते। तुम्हारी कल्पना यहां तक नहीं पहुंच सकती। मेरी इस कविता का शीर्षक होगा—चढ़ता सूरज।

व्यक्ति : अरे ! यह सूरज कहां से आ गया। तुम तो चंद्रमा की बात कर रहे थे।

कवि : तुम यह बात नहीं समझ सकोगे। इसके लिए तुम्हें नयी पीढ़ी का होना पड़ेगा, जो गधे की संतान कहलानेवाली है।

—पी-४, विश्वविद्यालय प्रांगण, जयपुर

सही कहानियां

पाठकों की : लेखकों की नहीं

- इस स्तंभ के लिए रचनाएं भेजते समय ध्यान रखिए :
- कोई रचना वापस नहीं की जाएगी इसलिए एक प्रतिलिपि अपने पास रख लें।
- साथ में टिकट लगा लिफाफा न भेजें।
- इस स्तंभ में किसी तरह का पत्र व्यवहार नहीं किया जाएगा।
- अगली प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ५ मार्च, १९८१

हम आपकी कहानी भी छापेंगे--१०

दैट ग्रेटेस्ट बैगर

• राजकुमार पाण्डेय

अक्तूबर सतहत्तर में मैं अपनी एक कोलंबियन मित्र मिस वैलिमा लोवेज को दार्जिलिंग दिखाने ले गया। हम दार्जिलिंग के सूर्योदय के फिल्मांकन हेतु 'टाइगर हिल' गये। इंद्रधनुष के सात रंगों में क्रमवार परिवर्तित होते सूर्य को अपने कैमरे में कैद कर लेने के बाद वैलिमा बहुत प्रभावित हो गयी थी। बोली—"मि. राज! आय वांट टु एक्सपोज द सन.सेट टू। इ वुड बी मॉरवलस एंड वैल्युएबल फॉ मी।" मुझे अपने देश पर गर्व हो आया। हम शाम तक रुके रहे। इसी मध्य ए पहाड़ी भिखारी को अपने आस-पा चक्कर काटते देख वैलिमा की आंखों में उपजे प्रतिकूल भावों को मैंने पढ़ लिया। मैं झुंझला उठा और सारा क्रोध अकेले उ भिखारी पर उड़ेल दिया। वह उदा ओझल हो गया।

पहाड़ी स्थान पर शाम शीघ्र घि आती है। हम उतरते-उतरते रास्ता भट गये। धीरे-धीरे रात काफी घिर आयी। ठंड और भयानकता से हम दहल उठे थे। किसी तरह हम नीचे दिखते छह झो ड़ियों के गांव में पहुंचे। किसी सहाय की अपेक्षा में मैंने एक दरवाजा खट-खटाया। थोड़ी देर में द्वार पर एक वृद्धा नजर आयी। बड़ी आत्मीयता से हमें भीतर ले जाकर ना-ना करते भी, अपनी गरीबी का प्रदर्शन करते पात्रों में सूखी रोटियां ले अ यी। भूख से हम बेहाल थे अतः व भी रुचिकर लगा। वृद्धा ने रात में हमें जाने नहीं दिया।

प्रातः मैं अवाक रह गया। सामने वही भिखारी हाथ में भेड़ के दूध की चाय लिए हमें जगा रहा था। रातभर हम उसी भिखारी के घर, उसी की रोटियां खाकर सोते रहे थे, जिसको मैंने बहुत बुरी तरह डांट दिया था। वैलिमा

भी हतप्रभ रह गयी थी। हमारी गरदन शर्म से झुक गयी।

आज भी जब वैलिमा का पत्र आता है, तब उसमें एक वाक्य अवश्य होता है—"वेस्टर्न कंट्रीज आर इन दी डार्कनेस, योर कंट्री इज ग्रेट, बिकॉज इट स्टैंड्स ऑन द लेग्स ऑव दैट ग्रेटेस्ट, अनलिट्रेट वैगर।"

—२२, डिप्टीगंज, मुरादाबाद

मैं तो तीन दिन से तुम्हारी बाट जोह रहा हूं

• अंजनी कुमार

मेरे बाबूजी ने बहुत पहले मुझे एक घटना सुनायी थी। घटना के एक पात्र रामसुंदरजी हजारीबाग (बिहार) में प्राध्यापक हैं। उनके एक मित्र थे—रामचंद्र। भागलपुर से आई. एस-सी. के बाद रामचंद्र पढ़ने सिंदरी चले गये और रामसुंदर मुजफ्फरपुर। छुट्टियों में दोनों रोज मिलते और एक-दूसरे से मिलकर अपने-अपने घर जाते थे। १९५७ की गर्मी की छुट्टियों की बात है। रामसुंदर को भागलपुर लौटने में दो-तीन दिन का विलंब हो गया। रामचंद्र उनकी एक दिन प्रतीक्षा कर लगभग आठ बजे रात में अपने घर को चले। उन्हें उस दिन हैजा हो गया था। मिरजानहाट महल्ले से बाहर होते ही थोड़ी दूर सुनसान स्थान था। वहीं एक विशाल वट-वृक्ष भी था। वहां तक पहुंचते-पहुंचते उनकी हालत बिगड़ गयी और उस पेड़ के नीचे ही उनका प्राणांत हो गया।

रामसुंदर जब तीसरे दिन भागलपुर पहुंचे, तब मिरजान हाट के बाद उसी वट-वृक्ष के नीचे उन्होंने देखा कि रामचंद्र हाथ में थैला लिये खड़ा है। रामसुंदर ने उससे पूछा, "अरे यार, तुम कैसे पहले आ गये?" "मुझे आये तो तीन दिन हो गये। मैं तुम्हारी ही बाट जोह रहा था।" उत्तर में रामचंद्र ने कहा और फिर दोनों हंसते-बोलते घर की ओर चल पड़े।

लगभग तीन सौ गज चलने के बाद दोनों के घर के रास्ते अलग होते थे। रामसुंदर ने कहा, "मेरे घर पर चलो।" तो रामचंद्र ने जिद की कि 'नहीं मुझे अपने घर जाने दो।' इस पर रामसुंदर ने उसका हाथ पकड़ना चाहा, तो वह एक ही छलांग में उससे पचासों गज दूर जा खड़ा हुआ। रामसुंदर ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, "यह क्या?" रामचंद्र ने बताया, "परसों जब मैं भागलपुर में तुम्हें खोजकर निराश घर लौट रहा था, तब हैजे के कारण वट-वृक्ष के नीचे मेरी मृत्यु हो गयी। अब मेरी आत्मा भटक रही है। केवल तुम्हारा ही सहारा है। आते-जाते मुझसे तुम अकेले में मिल लिया करो। तुम्हारा कोई नुकसान नहीं होगा। लेकिन किसी और को कभी साथ नहीं लाना।" यह कहकर वह गायब हो गया।

—अरुण निकेत, पुनाईचक, पटना

क ख ग

● मृदुला सिन्हा

मास्साहब ने भट्ठा और पाटी पकड़ाते ही 'क' लिखना सिखाया। 'क' को सीखना कठिन था। इसके बाद तो सारे अक्षर आसान लगे। अपने बबलू को 'क' सिखाते समय कितने थप्पड़ मैंने लगाये। कोई मंद बुद्धि का न था मेरा मुन्ना, फिर भी 'क' सीखने में कठिनाई हुई। 'क' पहले ही क्यूं लिखना पड़ता है। इसकी सार्थकता शाश्वत है। 'क' से यदि तात्पर्य कमाने का हो, तो 'ख' खाने एवं 'ग' गाने के अर्थ में प्रयुक्त हो सकता है।

'क' मतलब कमाई, यानी मुद्रा। स्रोत कुछ भी हो, लेकिन अर्थोपार्जन तो होना ही चाहिए। इसकी सीमा अब तक किसी ने निर्धारित नहीं की। निर्धारित हो भी नहीं सकती। ग्रंथों में भी लिखा है—'धन की लिप्सा उसकी निर्धारित सीमा तक पहुंचकर भी बढ़ती ही जाती है।' तभी तो भिखारी पैसा चाहता है, मजदूर रुपया, कर्मचारी सैंकड़ा, व्यापारी हजार-लाख-करोड़। लखपति, करोड़पति अथवा अरबपतियों की भी संसार में कमी नहीं।

'ख' का तात्पर्य 'खाने' से नहीं वरन हमारी अनिवार्य आवश्यकताओं से है। भोजन, वस्त्र तथा आवास। ये तीनों हमारी अनिवार्य आवश्यकताएं बतायी गयी हैं। ये अनिवार्य आवश्यकताएं भी बहुतों को नसीब नहीं, फिर भी वह जिंदा हैं। ईश्वर कृपा!

'ग' से मतलब 'गाने' का है यानी मनोरंजन का। ऐश-आराम करने का। इसकी भी सीमा नहीं।

सीमा तो 'ख' और 'ग' की भी नहीं। 'क' दोनों पर नियंत्रण रखता है। कमाई के अनुसार ही तो भला आदमी खाता, पहनता और गाता है। जिसके जीवन में 'ख' और 'ग' ने 'क' का कहा न माना,

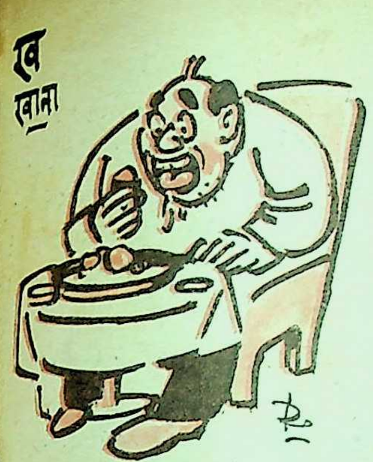

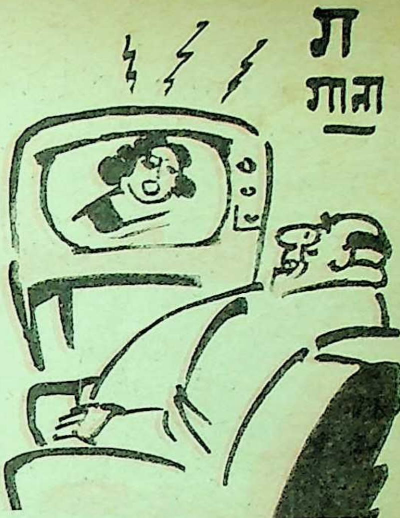

उसके जीवन में अव्यवस्था आ गयी। 'ख' से पहले यदि 'ग' आ गया तो भी बुरा।

इतनी-सी बात है। यही व्यवस्था हमें कितने उपदेशों-उपाख्यानों द्वारा सिखायी जाती है। स्कूल-कालेजों के पाठ्यक्रमों में भी बजट बनाना सिखाया जाता है। मास्साहब ने कितना आसानी से सिखा दिया था। पहले 'क' फिर 'ख' और तब 'ग'।

मनोवैज्ञानिक आज बहुत सारी मानसिक बीमारियों का कारण कुंठा (फ्रस्ट्रेशन) बताते हैं। फ्रस्ट्रेशन क्या है, कुछ नहीं। बस इन्हीं तीनों अक्षरों की प्राथमिकता में कमी। यदि 'क' का अनुगामी 'ख' न हुआ और 'ख' के बाद यदि 'ग' न आया, तो इतना बड़ा अनर्थ हो गया।

अंगरेजी में एक कहावत है 'कट योर कोट एकार्डिंग टु योर क्लॉथ'। आपने अपने कपड़े की माप न ली, कोट का एक हिस्सा बड़ा कर लिया। बचे हुए कपड़े में ही तो बांह और कालर बनेगा। कल्पना कीजिए बाहें छोटी हो गयीं, कालर बना ही नहीं, कैसा दिखेगा वह कोट। बिल्कुल बेढंगा। वैसा ही बेढंगा दिखता है आपका जीवन यदि आपने 'क', 'ख' और 'ग' का तारतम्य कायम न रखा।

तीनों में सबसे स्वार्थी 'ग' है। यह तो 'क', 'ख' की ओर देखना नहीं चाहता। सीधे अपनी इच्छाओं की पूर्ति चाहता है। मनोरंजन के साधनों की तो आज की दुनिया में कमी नहीं। नित नये आविष्कार हो रहे हैं। सैर-सपाटे के भी साधन बढ़े हैं। मनुष्य तो आरामतलब होता ही है। लेकिन 'ग' को पीछे मुड़कर देखना ही नहीं चाहिए वरन 'ख' के पीछे-पीछे चलना चाहिए। 'क' का मुहताज होना चाहिए।

'ग' हमारी सारी इंद्रियों के इशारे

पर नाचता है। आंखें सुंदर दृश्य देखना, कान सुरीली तान सुनना, त्वचा सुखदायी स्पर्श, जिह्वा सुस्वादु भोजन, नाक सुगंध चाहती ही है लेकिन 'ग' को इनके आदेश पालन करने के पहले 'क' से अवश्य अनुमति लेनी चाहिए।

माना कि 'ख' और 'ग' की स्थिति आपके जीवन में जबरदस्त बीवियों की भांति है। उनकी जिद्द के आगे आपकी एक नहीं चलती, लेकिन ऐसी बेकश परिस्थिति को झेलने के लिए 'क' की रफ्तार तो तेज करनी ही होगी। बैलगाड़ी नहीं, इसे मोटर कार पर चलाना होगा। डटकर कमाइए और खाकर लेटिए। कौन मना करता है आपको ?

लेकिन महज 'ख' और 'ग को अपने जीवन की बागडोर दे दी तब तो छुट्टी समझिए। ये बड़े स्वेच्छाचारी एवं स्वार्थी होते हैं। ये 'क' को किसी भी रास्ते पर ले जा सकते हैं। कमाई के अनेक गलत रास्ते भी विद्यमान हैं, समाज में। ये कमबख्त 'ख' और 'ग' आपको उन रास्तों के दहलीज ही नहीं दिखायेंगे, वरन धक्का मार-मारकर उन रास्तों पर चलायेंगे। आप हैं कि उन्हीं के इशारों पर नाच रहे हैं। अरे भई ! मुझे तो पता है कि आप तो अपनी पत्नी एवं बच्चों तक के 'ख' 'ग' की हुकूमत बजाते हैं। महर्षि वाल्मीकि का भी डकैत-जीवन कुछ ऐसा ही था। मां, बाप, पत्नी एवं बच्चों का भरण-पोषण करना उनके जीवन का उद्देश्य था। कमाई जहां से भी हो। नजर मु ही इतने बड़े कवि बन गये।

दिन दहाड़े बढ़ती हुयी मंहगाई है, क्या ? मंहगाई के अनुसार आपकी कम तो नहीं बढ़ सकती। 'क' में बढ़ोत्तरी न तो 'ख' 'ग' में कटौती होगी। आप सो कर देखिए, दूसरा कोई रास्ता ही न है। आप हैं जो 'ख' 'ग' के कहे में पड़ नाहक ही परेशान हो रहे हैं। कभी अ को कभी भाग्य को, तो कभी सरक को कोसते हैं। भूल इतनी-सी हो रही कि आप 'क', 'ख', 'ग' के तारतम्य क खयाल नहीं रखते। मेरी मानिए, त इतना-सा ध्यान रखिए। डगमगाइए नहीं बेढंगा भी नहीं दीखिएगा।

पड़ोसियों को भी दुखःद आश्च होगा कि आप गृहस्थी कैसे चला र हैं ? यह भी शक हो सकता है कि कहीं लक्ष्मी का कोई गुप्त दरवाजा तो आप नहीं देख लिया ? तभी तो एक ही आम दनी में आपके दोनों पड़ोसियों को मा की २० तारीख से ही आपके आगे हा फैलाना पड़ता है और एक आप हैं कि मा की ३० तारीख को बैंक के खाते में कु जमाकर आए। यही राज है। "पर रा को राज रहने दें" की आवश्यकता नहीं। आप पड़ोसियों को भी सिखा दीजिए। सीखना कोई कठिन भी नहीं है 'क', 'ख', 'ग'।

—२०१, सी. बी. पी. हाउस
रफी मार्ग, नयी दिल्ली-

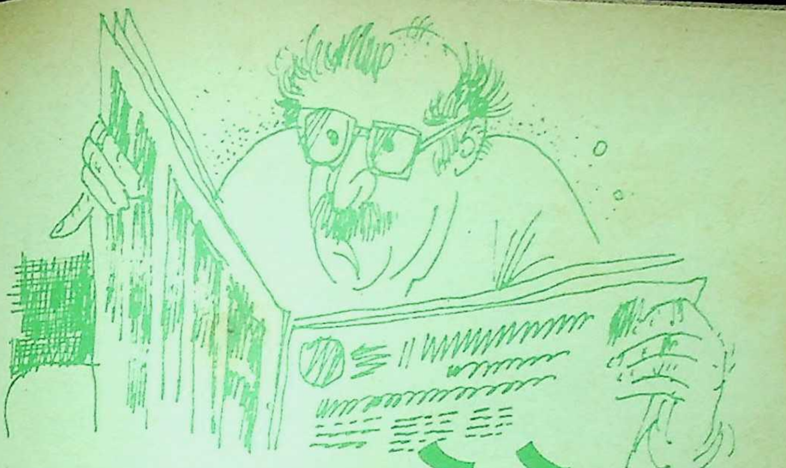

अखबार पढ़ने के बाद

• रवीन्द्रनाथ त्यागी

अपने बचपन की जो चीज मुझे सबसे ज्यादा याद आती है वह है नौटंकी। मशहूर और मारूफ मास्टर मुंशीराम की कंपनी कस्बे में हर साल आती थी और कमाल दिखाकर चली जाती थी। खेल जो होते थे वे ऐसे होते थे कि उनके नाम तो हैरतअंगेज होते और उपनाम जो होते थे वे सनसनीखेज होते थे। कुछ नाम तो मुझे अभी तक याद हैं जैसे "गुलबदन" उर्फ "मुहब्बत का फूल" या "शैंबा की बेगम" उर्फ "कातिल हसीना" या "सुलताना डाकू" उर्फ "शेर बिजनौर"। यह बड़े ही दुख की बात है कि सिनेमा के आने से नौटंकी की लोककला समाप्ति को प्राप्त हो गयी। शैलेंद्र की "तीसरी कसम" में नौटंकी की झलक देखने को मिली तो अपना सारा बचपन वहीदा रहमान की भांति मेरी आंखों के सामने नाचने लगा।

आज सुबह अखबार जो खोला, तो कुछ ऐसी सनसनीखेज और हैरतअंगेज खबरें पढ़ने को मिलीं कि उनके सामने मैं नौटंकी तक को भूल गया। समाचार क्रम संख्या एक तो यह था कि उड़ीसा में भुवनेश्वर के पास एक पति ने अपनी पत्नी की शादी उसके प्रेमी के साथ स्वयं कर दी। दावत भी दी और दहेज भी दिया। समाचार क्रमसंख्या दो के अनुसार आयरलैंड की राजधानी डबलिन में एक ऐसे सांड का निधन हो गया, जिसके कि दो लाख बारह हजार बच्चे थे। अधिकारियों के अनुसार उस सांड में अद्भुत पौरुष था और उस कर्तव्यपरायण सांड ने उसका

प्रयोग गायों की सेवा करने में, अंत समय तक किया। समाचार क्रम संख्या तीन के अनुसार एक स्थान पर एक विशिष्ट नेता ने इतना ओजस्वी और लंबा भाषण दिया कि उसके सुनते-सुनते ड्यूटी पर तैनात सिपाही को बेहोशी आ गयी। इन तीन समाचारों के झटके से किसी तरह बाहर निकला ही था कि यह पढ़ने को मिला कि एक स्थान पर एक ऐसा काशीफल पाया गया है, जो कि मात्र अड़तालीस किलो का वजन रखता है। इस काशीफल से मुक्ति मिली तो अगले पृष्ठ पर यह हर्षदायक सूचना पढ़ने को मिली कि संसार के सारे देश मिलकर जो खर्चा सैन्य-कार्यों पर कर रहे हैं, उसका औसत दस लाख डालर प्रतिमिनिट आता है। इन देशों को हमारी मृत्यु की इतनी चिंता है, यह जानकर मैंने अखबार पढ़ना बंद कर दिया। मैंने चश्मा उतारा और उस गधे को देखना शुरू किया जो सामने की दीवार को काफी बेतकल्लुफी के साथ कमजोर कर रहा था। इतना कार्यतत्पर गधा इससे पहले मैंने कभी नहीं देखा था।

[illegible]

अखबार पढ़ना बंद करने के बाद मैंने सिगरेट सुलगाई और आंखें मींचकर चिंतन में डूब गया। चिंतन की प्रक्रिया के लिए सिगरेट उतनी ही जरूरी है जितना कि कभी वटवृक्ष के नीचे बैठना या जप करना होता था। चिंतन की इस प्रक्रिया में मैंने सबसे पहिले तो उस नरपुंगव को मन ही मन प्रणाम किया जिसने अपनी सगी और इकलौती पत्नी को खुलेआम उसके प्रेमी के हवाले कर दिया। आप लोगों में से कितने ही ऐसे हैं जो अपनी पत्नी से निजात पाना चाहते हैं, पर इतनी हिम्मत किसी में भी नहीं कि खुले आम वैसा कर सकें। इस संदर्भ में मुझे सहसा यह खयाल भी आया कि यदि इस देश के बीस-पच्चीस व्यक्ति भी इतना साहस बटोर लें, तो खाकसार की बची हुई जिंदगी में फिर से वसंत ऋतु आ सकती है। मेरी निगाह देश की कोई बीस, पच्चीस विवाहित युवतियों पर ही है; बाकी स्त्रियां जो हैं वे मेरे लिए सदा माता के तुल्य ही रही हैं और मेरी जो निजी पत्नी है वह भी इन बाकी स्त्रियों में ही आती है। इसके उपरांत मेरा ध्यान उस सांड पर गया जिसने एक ही जन्म में दो लाख बारह हजार बच्चों का पितृत्व हासिल किया। हम लोग दो लाख, बारह हजार तो क्या,

बारह हजार बच्चे भी पैदा नहीं कर सकते। यकीन न हो तो कोशिश करके देख लीजिए। धृतराष्ट्र के भी सौ ही कुलदीपक थे जिनमें दुर्योधन इतना होनहार था कि यदि वह नहीं होता, तो वेदव्यास को महाभारत लिखने की कभी भी जरूरत नहीं पड़ती और तो और राजा सगर के भी साठ हजार ही पुत्र थे। सांड से निगाह हटी, तो उस अड़तालीस किलोग्राम के काशीफल पर अटक गयी। जितनी उम्र का वह कद्दू था, उतनी उम्र में हमारा खुद का वजन इतना नहीं था। दूसरे शब्दों में हम एक कद्दू से भी बाजी हार गए। कद्दू जो था वह हमें पीछे छोड़कर आगे निकल गया। और उस नेता का तो कहना ही क्या, जिसके भाषण को सुनकर देश की पुलिसफोर्स को भी मूर्च्छा आ गयी।

दूसरी सिगरेट जलाने पर मुझे एहसास हुआ कि मैं भी एक कठपुतली हूं। हर जगह कठपुतलियां ही कठपुतलियां हैं। छात्र लोग हैं वे अवसरवादी शिक्षकों के इशारों पर नाचते हैं, शिक्षक हैं वे प्रधानाध्यापक के इशारे पर नाचते हैं और प्रधानाध्यापक जो हैं वे कालेज की कार्यकारिणी के इशारे पर कभी कत्थक नृत्य प्रस्तुत करते हैं और कभी भरतनाट्यम्। कार्यकारिणी के सदस्य जो हैं वे इतने होनहार हैं कि बिना किसी बाहरी सहायता के खुद ही नाचते रहते हैं और कभी-कभी तो यह नाच काफी नंगा भी हो जाता है। इसी प्रकार लेखक हैं, वे संपादक के इशारे पर नाचते हैं, संपादक है कि प्रकाशक की आज्ञा से नृत्य करता है और प्रकाशक जो है उसके नृत्य का कार्यक्रम या तो पूंजीपति तय करते हैं या फिर कोई विदेशी सत्ता। पूंजीपति जो है वह अपनी पत्नी के इशारों पर नाचता है और तब तक नाचता रहेगा, जब तक कि ऊपर बताए गए उदाहरण के अनुसार वह अपनी पत्नी को उसके प्रेमी के हवाले नहीं कर देता। कर्मचारी हैं, वे अफसर के आगे नाचते हैं और अफसर जो है वह या तो किसी हसीन स्टेनोग्राफर के हाथ की कठपुतली है या फिर वह किसी वजीर के इशारों पर नाचता है। वजीर जो हैं वे बेचारे पार्टी के गुलाम हैं और पार्टी जो है उसकी स्थिति यह है कि वह एक दूसरे की टोपी उछालने में ही इतनी व्यस्त है कि किसी और रचनात्मक कार्य के लिए समय ही नहीं बचता। सोचता हूं कि अखबार पढ़ना बंद कर दूं।

—१०७ राजपुर रोड, देहरादून (उ. प्र.)

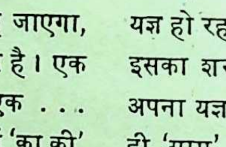

हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवां व्यंजन वर्ण

● इंदिरा

जी हां चौंकिए मत।

यह हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवां व्यंजन वर्ण है।जानते हैं आप,इसका उच्चारण स्थान दांत है,जो धवल है, धवल अर्थात पवित्र, इसके अतिरिक्त भी इस व्यंजन की पवित्रता का प्रश्न जहां तक है, वह श्रेष्ठ ही नहीं विशिष्ठ भी है। ईश्वर, जीवात्मा, कांति आदि में यही षडज स्वर का सूचक है।

'बत्तीस',

बड़ा महत्व है।

तीन और दो को मिला दीजिए, तो पांच का आंकड़ा तुरंत तैयार हो जाता है, पांच का अंक, जो जन्म से मरण तक अति शुभ अंक माना जाता है। इसी प्रकार तीन में से दो को घटा दीजिए, बस एक रह जाएगा, एक अपने में कितना सशक्त शब्द है। एक लाख, एक करोड़, एक अरब, एक . . . कितनी शक्ति है, और इसी एक में 'का की' जोड़ दें तो 'एकाकी' जीवन बोझ बन जाता है। सामर्थ्य की तो बात ही क्या ? कल्पना नहीं कर सकते इस विवशताभरे शब्द के साथ जीवन व्यतीत करने की।

थोड़ा-सा आगे आइए,

उम्र पर कहर !

काम-सूत्र के अनुसार बत्तीस वर्ष का पुरुष प्यार में दीवानगी का अतिक्रमण करने का साहस रखता है।

बत्तीस वर्ष की युवती, आदर्श-ललना, पूर्ण त्यागमयी वात्सल्यमयी हो जाती है। बत्तीस, वास्तव में विचित्र शब्द है, और यह व्यंजन वर्ण "स" भी शब्द-कोश में बत्तीसवां ही स्थान रखता है।

'स' से ही सृष्टि का निर्माण हुआ, सृष्टि एक मेघ्व अश्व है; मेघ्व अर्थात पवित्र, जहां पर चिरनिरंतर अश्व मेघ यज्ञ हो रहा है। 'स' से ही संवत्सर बना, जो इसका शरीर है, संवत्सर के अंदर ही यह अपना यज्ञ पूरा कर लेता है। 'स' शब्द से ही 'साम' बना, जो तीनों लोक के समान है। और प्राण भी है। वाणी 'सा' है, 'प्राण' 'अम', जो 'साम' के धन को जानता

है, वही वास्तविक धनी होता है, जो इसकी प्रतिष्ठा को समझ सकता है, वह स्वयं भी प्रतिष्ठित हो जाता है।

इसने ही प्राण फूंका

सृष्टि के पिता ने मेधा (बुद्धि), तप (परिश्रम) से सात अन्न उत्पन्न किये, इसमें से ही एक अन्न—जीवन को जीवित रखने की सामग्री बना। 'स' से ही संसार शब्द की उत्पति हुई, 'स' से ही संन्यास शब्द सामने आया, जिसने मनुष्य लोक के स्वार्थ, लिप्सारत मानव के मुख से कहलवाया, 'पुत्र अब दुनियादारी तू संभाल।' इसी प्रकार 'स' से सात शब्द बना, जो स्वयं के अर्थ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। सात इंद्रियां, सात ऋषि, सात यज्ञ, सात पुत्र, सप्त पदी, सप्त भगिनी एवं सप्त ऋषि तारामंडल। यह तो 'स' शब्द का पारंपरिक आदिकालीन महत्त्व हुआ, जो ज्ञान और बुद्धि के आधार पर अपना आधिपत्य जमाये हुए है, जटिल भी, जिसके एक अर्थ में अनेक अर्थ समाहित हैं।

मानव के विकास के साथ-साथ इस बत्तीसवें व्यंजन वर्ण के विकास का इतिहास कम महत्वपूर्ण नहीं है। बड़ी सशक्त भूमिका निभायी है इसने !

'स' से समाज शब्द का उद्‌गम हुआ।
'स' सभ्यता शब्द का निर्माण-कर्त्ता बना।
'स' ने संस्कार को जन्म दिया।
'स' ने साहित्य को गढ़ा।

अपना अतीत देख सकता है

इसके उपरांत, देश के बंटवारे का श्राप, सांप्रदायिक तांडव नृत्य, इस सबको साहित्य ही सजो कर रख सकेगा। आगे आनेवाला कल इसी साहित्य द्वारा, ज्ञान की शिराओं को खोलेगा, और तब मानव

२१ लाख नये लोगों ने पिछले साल डेट टिकिया को आज़माया, अपनाया

इसकी ठोस वजह–
डेट की शानदार धुलाई

आज पहले से कहीं ज़्यादा लोग डेट टिकिया की शानदार धुलाई पसन्द करते हैं; कहते हैं यह चकाचौंध सफ़ेदी लाती है, कहीं ज़्यादा किफ़ायत करती है.

उत्तम डिटर्जेण्ट टिकियों का विकास	
	नये ग्राहक
डेट टिकिया	२१,००,०००
दूसरी उत्तम टिकिया	१४,००,०००
कुल ४९,००,००० नये ग्राहक	

स्रोत: रिटेल स्टोर ऑडिट रिपोर्ट: जनवरी – दिसम्बर, १९७९
इस्तेमाल का आधार: १ टिकिया, हर महीने, हर व्यक्ति

२१,००,००० नये लोग तो डेट टिकिया इस्तेमाल करने ही लगे
क्या आप भी?

सुप्रीम
डेट
डिटर्जेण्ट धुलाई की टिकिया

डेट टिकिया

आज़माइए
सफ़ेदी अपनाइए

Shilpi-DM-14A/80-Hin

अपने अतीत में झांक सकेगा।

समाज से सभ्यता, सभ्यता से संस्कार और संस्कार से वह 'स' शब्द साहित्य तक पहुंच गया। 'स' शब्द का मंथन मुख द्वारा किया, तो अग्नि उत्पन्न हुई अर्थात वाणी के रूप में ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ। हाथ से भी अग्नि पैदा हुई। उसका तात्पर्य आग की उष्णता से है। उष्णता से वाणी प्रस्फुटित हुई और लेखनी में बंद हो गयी। **'शार्ट एंड स्वीट'**

मानव के विकास के साथ-साथ इस बत्तीसवें व्यंजन वर्ण के विकास का इतिहास कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। बड़ी सशक्त भूमिका निभाई है इसने 'स' से ही सृष्टि का निर्माण हुआ, सृष्टि एक मेध्व अश्व है, मेध्व अर्थात पवित्र, जहां पर चिर निरंतर अश्वमेघ यज्ञ हो रहा है ...

गर्भ से लेकर मृत्यु तक जीवन में इस 'स' व्यंजन वर्ण की बड़ी महत्ता है।

इसके अतिरिक्त 'स' व्यंजन वर्ण से कुछ विशिष्ठ व्यक्तियों के नाम हैं, जो भारतीय पृष्ठ भूमि पर प्रारंभ से अंत तक श्रद्धा, शौर्य, त्याग एवं ज्ञान की दृष्टि से वंदनीय है।

'स'—सव्यसाची : महासति कुंती का पुत्र, एक पत्नी का तीसरा पति, द्रोणाचार्य का अति प्रिय शिष्य, स्वर्ग के देवता इंद्र का पुत्र। गीता के रचयिता का प्रणेता। महाभारत का न भूलनेवाला अत्यंत महत्वपूर्ण पात्र।

'स'—संजय : जन्मांध धृतराष्ट्र का मंत्री। महाभारत का एक अकेला पात्र, जो कहीं भी बैठकर युद्ध (दिव्य दृष्टि द्वारा) का वर्णन सुना सकता था; बिना युद्ध देखे।

'स'—संवरिया : गीता के उपदेशक का नाम। विश्व का सबसे बड़ा कर्मयोगी। जनजीवन की मान्यताओं के अनुसार भगवान कृष्ण का नाम।

'स'—संक्षव्य : विश्वामित्र, अत्यंत क्रोधी क्षत्रियों का २१ बार संहार करनेवाले ऋषि के पुत्र का नाम।

'स'—सकलाधार : तांडव नृत्य करे, तो प्रलय आ जाए, तीन नेत्रों के स्वामी शिव का नाम।

'स'—सकलेश्वर : विष्णु **सत्कृत सतशीर्ष, सदातन**, सृष्टि की रचना करनेवालों में से एक का नाम।

'स'—सत्व: लक्ष्मीपति।

'स'—सेनजित : कृष्ण के एक पुत्र का नाम

'स'—सक्रारि : रामायण का अति बलशाली योद्धा। रावण का पुत्र मेघनाद।

'स'—सतानंद : गौतम ऋषि के पुत्र तथा

राजा जनक के पुरोहित।

'स'—सत्यायु : इंद्र के अखाड़े की अप्सरा उर्वशी का पुत्र।

'स'—सनतकुमार : ब्रह्मा, सृष्टि के रचयिता के मानस पुत्रों में से एक पुत्र।

'स'—सप्त संगीत के सात स्वरों के समूह का प्रतीक।

'स'-सात जिह्ववी के नाम कली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता।

'स'—पुराण के अनुसार पृथ्वी के सात मुख्य भाग; जंबूद्वीप, कुशद्वीप, लक्षद्वीप, शाल्मलिद्वीप, क्रौंचद्वीप, और पुरस्करद्वीप।

'स'—सप्त ऋषि, ब्रह्मा के मानस पुत्र। मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, ऋतु, अंगिरा और वशिष्ठ।

'स'—सम्मर्दन : वासुदेव के एक पुत्र का नाम।

'स'—सर्ग, सर्व, सर्वोतमुख :

सृष्टि के रचयिताओं, ब्रह्मा, विष्णु, एवं महेश, तीनों का एक नाम। जीवन में सुख के अतिरेक का क्षण इसी व्यंजन वर्ण द्वारा उत्पन्न हुआ। 'समाश्लेष' अर्थात आलिंगन। जीवन फूल नहीं आग है। इसकी टंकार भी इसी व्यंजन वर्ण ने दी। 'समिध' मनोवृति को अच्छे लगनेवाला शब्द 'सुख' भी इसी बत्तीसवें व्यंजन वर्ण की देन है।

अंत भी अति सुंदर किया है इस बत्तीसवें व्यंजन ने।

'सौमनस्य' जिसका एक अर्थ श्राद्ध भी है। श्राद्ध के समय ब्राह्मण के हाथ में फूल दे दो, और सृष्टि के आवागमन से मुक्त हो जाओ। कितनी पीड़ा होती है, जिन शब्दों का निर्माण स्वयं मानव ने अपनी बुद्धि द्वारा किया, उन्हीं शब्दों के अर्थ और तर्कों की मोटी-मोटी श्रृंखलाओं में वह जकड़ गया है। यह तो एक व्यंजन वर्ण 'स' है! कहीं भूलकर सब वर्णों की वीथिका में मत उलझ जाइएगा। बड़ा दुष्ट है यह संसार, यहां हर शब्द, हर व्यंजन वर्ण-बंधनों में जकड़ दिया जाता है। अगर आप 'सहायता' के लिए भी आवाज लगाएंगे, तो भी आपको 'स' की आवश्यकता पड़ेगी। बताइए है कहीं बचाव?

मैंने तो मात्र एक व्यंजन वर्ण 'स' की चर्चा की है, वैसे बत्तीस व्यंजन वर्ण और हैं। यह तो मात्र बत्तीसवां व्यंजन वर्ण है। होशियार रहिएगा। आज के जीवन में सब कुछ आप पा सकते हैं। नहीं अगर कुछ पा सकते, तो वह है 'समय'। यह 'समय' भी 'स' की ही देन है।

—३१, सावन सोसाइटी वाटवारोड,
मणीनगर, अहमदाबाद

एक व्यक्ति—"तुमने मेरी जेब में हाथ क्यों डाला?"

जेबकतरा—"माफ कीजिए! मैं बहुत भुलक्कड़ हूं। दरअसल मैं पहले ठीक ऐसी ही पैंट पहना करता था, जैसी आपने पहन रखी है।"

बुरे फंसे ट्यूशन में

• निशा व्यास

सकीना के यहां जाने में मेरा आज दिल घबरा रहा है। कुछ बात ही हो गयी है ऐसी। कल। आप शायद जानना चाहेंगे कि क्या बात हुई ? ठहरो, जरा अभी बताता हूं ! कल जब मैं सकीना को पढ़ाकर जीने से उतर रहा था, तब वह मेरे पीछे ही आ रही थी, अकसर वह मुझे नीचे तक छोड़ने आती है। मैं जब पूरी सीढ़ियां उतर चुका, तब उसे दो तीन सीढ़ियां और उतरनी थीं कि एकाएक उसका पैर फिसल गया और वह मुझ पर आ गिरी !

अब आप कहेंगे, इसमें क्या बड़ी बात है। अकसर ऐसा ही हो जाता है। अब ट्राम-बस की बात ही ले लो। आये दिन सैकड़ों बार लड़कियों से टक्कर हो जाती है। बस 'सॉरी' कहा और आगे बढ़ गये। कुछ लोग तो जानबूझकर लड़कियों से टकराते हैं, और हमारे हिंदी पिक्चरों में नायक-नायिका के बीच तो प्रेम का आधार भी यही टक्कर है। बस, इधर से नायक आ रहा है और उधर से नायिका, दोनों की जबरदस्त टक्कर हो जाती है। नायिका गुस्से में भनभनाती नायक पर गालियों की बौछार करती है, "ईडियट, आवारा, बदतमीज दिखायी नहीं देता" और नायक नीचे झुककर सारी पुस्तकें उठाकर (जो टक्कर की वजह से नायिका के हाथ से गिर गयी हैं) नायिका के हाथ में दे देता है। फिर बड़े ही नम्र स्वर में, एक बार फिर नायिका से माफी मांग लेता है। बस खलास, इधर टक्कर, उधर नायक-नायिका बेकरार !

और, तभी नायक को दूसरे दिन पता चलता है कि उसकी एक कापी भी नायिका के पास चली गयी है। उधर नायिका उस कापी में लिखी नायक की कविताएं पढ़ती है। उसे ऐसा लगता है, मानो वही नायक की कविताओं का केंद्र

बालों को
रेशमी कोमलता
प्रदान करने का
प्राकृतिक उपाय

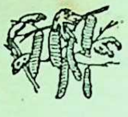

शुद्ध शिकाकाई के सारे प्राकृतिक गुणों का स्वस्तिक शिकाकाई साबुन में समावेश किया गया है, प्रयोग में बहुत ही आरामदेह किसी भी तरह शैंपु से ज़्यादा किफ़ायती.

भरपूर कोमल झाग आपके बालों को हौले-हौले परन्तु अच्छी तरह साफ़ धोता है. बालों को चमकदार, निरोग, ताज़गी से युक्त सुवासित और बहुत ही मुलायम बनाये रखता है.

卐 स्वस्तिक
शिकाकाई साबुन
में शिकाकाई मिला है—
भारतीय महिला के मनोरम बालों का पारम्परिक रहस्य

shilpi dm 25/79 hin

है, प्रेरण
अदा से
वापस क
और नाय
में ऐसे इ
दौलत उ
तो
इसमें क
शायद अ
मग
कारण
चलता है
वरना
पुरुष जन
इस माम
कड़े हैं।
एक दूस
किस्मत
में से हैं।
को पढ़ा
सावधान
सुनाया
तो
बहन को
भी सकी
सूरत थ
एकटक
दुपट्टा खि
पुस्तक
छुआ दे
शादी नह

मार्च,

है, प्रेरणा है और बस दूसरे दिन ही बड़ी अदा से नायिका-नायक को उसकी कापी वापस करेगी, 'बहुत अच्छा लिखते हैं आप' और नायक का कहना ही क्या ! प्रसन्नता में ऐसे झूम पड़ेगा, जैसे सारी दुनिया की दौलत उसे मिल गयी हो।

तो फिर सकीना से टक्कर हो गयी इसमें कोई बड़ी बात नहीं, यह टक्कर शायद आपको भी नायक बना दे।

मगर सच पूछो तो घबराहट का कारण दूसरा है, सकीना के घर पर्दा चलता है। मैं पढ़ाता हूं, इसलिए ठीक है वरना सकीना—इनके यहां कोई गैर पुरुष जनाने में झांक भी नहीं सकता है। इस मामले में सकीना के पिताजी बहुत कड़े हैं। सकीना की बड़ी बहन को, पहले एक दूसरे साहब पढ़ाते थे। मेरी खुशकिस्मत या बदकिस्मत कि वे मेरे दोस्तों में से हैं। उन्हें जब पता चला कि मैं सकीना को पढ़ाने जाता हूं, तभी उन्होंने मुझे सावधान करने के लिए अपना किस्सा सुनाया था !

तो हां, मेरे दोस्त सकीना की बड़ी बहन को पढ़ाने जाते थे। सकीना की बहन भी सकीना की तरह ही आकर्षक व खूबसूरत थी। अब जब वे पढ़ाते, तो वह एकटक प्रेम भरी आंखों से उन्हें देखती। दुपट्टा खिसक जाता, तो ठीक नहीं करती। पुस्तक लेते या देते समय हाथ से हाथ छुआ देती। मेरे दोस्त की उस समय शादी नहीं हुई थी, किसी लड़की के स्पर्श का नया-नया अनुभव था। एक दिन भावनाओं में बहकर उसने सकीना की बहन का हाथ चूम लिया। फिर तो, उन दोनों का मेलजोल बढ़ता ही गया। मेरा दोस्त समझता था कि सकीना की बहन सचमुच उसे प्यार करती है। वह उस पर खूब पैसे खर्च करता। बाजार से उसके लिए चुपके-चुपके मिठाइयां व तोहफे लाता। फिर एक दिन सकीना की मंगनी उसकी ही जाति में हो गयी। प्यार का मरीज, मेरा दोस्त, जब एक दिन सकीना की बहन के यहां गया, तब उसे ट्यूशन से जवाब मिल गया। उस कठोर दिल ने उसे चाय तक के लिये नहीं पूछा और बिना मिले, लौटा दिया !

अब तो आप समझ सकते हैं कि मैं टक्करवाली बात से इतना घबरा क्यों रहा हूं। क्या कहा आपने, मैं सकीना को आगे बढ़ने ही न दूं। कैसी बात करते हैं आप ! सकीना एक स्त्री है, मैं एक पुरुष हूं। पुरुष की सबसे बड़ी कमजोरी स्त्री ही है। कितना ही मैं संभलने की कोशिश क्यों ना करूं, मेरा पैर तो फिसलनेवाला ही है, और मैं दावे से कह सकता हूं कि मेरा भी मेरे दोस्त जैसा ही हाल होगा। क्या कहा ? सकीना को पढ़ाना बंद कर दूं और दूसरी ट्यूशन ढूंढ लूं, नहीं ! नहीं। दूसरी ट्यूशन तो मिल जायगी, मगर सकीना-जैसी सुंदर लड़की कहां मिलेगी ?

—३४/१०७, पैलेस रोड,
रतलाम (म. प्र.)

साफ़, ताज़ा सांस
मज़बूत, स्वस्थ दांत

कोलगेट
डेन्टल क्रीम से

हर भोजन के बाद अपने दांत कोलगेट से साफ़ कीजिए. यह ठीक उसी तरह दांतों की रक्षा करता है, जैसे दुनियाभर के दांतों के डाक्टर कहते हैं.

दांतों में छुपे हुए अन्नकणों में कीटाणु बढ़ते हैं. इनसे सांस में बदबू पैदा होती है, और बाद में दांतों में सड़न.

इसीलिए, हमेशा भोजन के फ़ौरन बाद कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ कीजिए. यह सांस को ताज़ा, दांतों को सफ़ेद और दांतों की सड़न रोकने में असरदार साबित हो चुका है.

देखिए, कोलगेट के भरोसेमंद फ़ार्मूले का काम:

दांतों में छिपे हुए अन्नकणों में, सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु बढ़ते हैं.

कोलगेट का अनोखा, असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों को और कीटाणुओं को निकाल देता है.

नतीजा : आपके दांत आकर्षक सफ़ेद, आपकी सांस तरोताज़ा और दंतक्षय की रोकथाम.

कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट-जैसा स्वाद मन में बस जाता है.

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की बदबू रोकिए-दंतक्षय का प्रतिकार कीजिए...

Colgate
DENTAL CREAM
Colgate
1
2
3

DC.G.74 HN

मेरे मकान का नंबर क्यों बदला?

• रोमेश जोशी

नाम में क्या धरा है। डकाच्या को अगर आप डेनमार्क कहने लगें, तो भी डकाच्या-डकाच्या ही रहेगा। पूरी शान से डकाच्या रहेगा। नाम से कोई अंतर नहीं पड़ता। कहने को यह बात सच है, लेकिन असल में जरा फल्टे पहलवान को बनवारीलाल के नाम से बुलाकर देखिए। समझ में आ जाएगा नाम में क्या धरा है। नाम में परिवर्तन कोई पसंद नहीं करता। टेलिफोन और कार का मनचाहा नंबर लेने के लिए भी लोग लाइनें लगाते हैं। ५५५५-जैसा नंबर पाने के लिए ऊपर से या नीचे से पैसा देने के लिए भी तैयार रहते हैं। एक बार जब नंबर मिल जाता है, तब वह नंबर व्यक्तित्व का अंग बन जाता है। किसी १२३४ कार-नंबरवाले से आप कहिए कि वह ४३२१ नंबर ले ले। जनाब, दुश्मन हो जायेगा वह आपका। कार और फोन के नंबरों की तो बात क्या करें, मैंने तो ऐसे-ऐसे लोग देखे हैं,जो अपने बनियान का नंबर भी बदलने के लिए तैयार नहीं होते।

इस स्वतंत्र दिखायी देने वाले देश में, व्यक्ति अपनी पसंद का कार-टेलिफोन और बनियान का नंबर लेने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन मकान नंबर के मामले में स्थिति ठीक इससे उल्टी है। सुबह देर से उठने के आदी हमारे शहर के लोगों ने एक दिन आंख खुलने पर, एकाएक पाया कि उनके मकानों के नंबर बदल दिये गये हैं। सब चकित थे, मैं भी चकित था। जिस ५५ नंबर का उपयोग पिछले बीस वर्षों से, मैं अपने आप को पते का आदमी बताने के लिए कर रहा था, वह बदल कर ५१ कर दिया गया था।

निशा ने जो प्रेम-पत्र मुन्नी गुरु को लिखे, वे ७३ के बजाय ६८ में डाल दिये गये, जहां गुरु के ताऊजी रहते थे। प्रेम परवान चढ़ने से पहले ही फिस्स कर दिया गया।

मां ने बताया, सुबह-सुबह कोई चपरासी-जैसा आदमी आकर नया नंबर ठोंक गया। हद हो गयी। एक चपरासी-जैसा आदमी हमारा नंबर बदलनेवाला बन गया। डूब मरने की बात है।

अड़ौसी-पड़ौसी भी दुःखी थे। सबसे

बड़ा दुःख आर्थिक था। लालगे मास्टर विलाप कर रहे थे, "अब करो अपने सारे परिचितों को इत्तला। हम ५२ थे ४८ हो गये हैं। लिखो पोस्टकार्ड।

"कोने काटना मत भूलना।" शुक्ला जी ने फब्ती कसी।

चुन्नी गुरू की उदासी का कारण सबसे अलग था, "अरे अब नंबर बदलने से क्या होता है, यार! अब ७३ से ६८ हों या ८० कोई फर्क नहीं पड़ता।"

इस मोहल्ले के मुझ जैसे पुराने लोग चुन्नी गुरू के दर्द की गहराई जानते हैं। बरसों पहले उनकी कालेज की प्रेमिका निशा ने पिताजी का ट्रांसफर होने के बाद, दूसरे शहर से जो प्रेम-पत्र चुन्नी गुरू को लिखे, वे ७३ के बजाय ६८ में डाल दिये गये, जहां गुरु के ताऊजी रहते थे। प्रेम परवान चढ़ने से पहले ही फिस्स कर दिया गया।

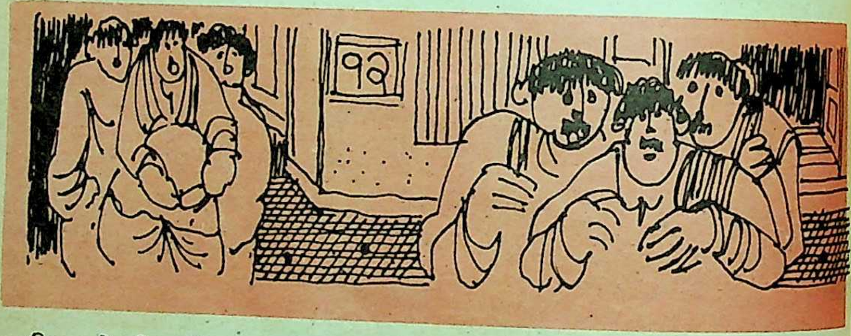

कम या अधिक, मकान नंबर बदलने से सभी दुःखी थे। मगर अपना दुःख जग से न्यारा। मेरे दुःख की थाह नहीं थी। मैंने मामले को ऊपर ले जाने का निश्चय किया। पड़ौसियों को मेरी पहल हास्यास्पद लगी। मैं अकेला ही चल दिया —कलक्टरेट। वहां से साफ जवाब मिल गया—फजूल की जमीन पर अवैध मकान हो तो ले-दे कर यहां मामला रफा-दफा हो सकता है, मगर, मकान नंबर के मामले में कलेक्टरेट के हाथ बंधे हुए हैं। यह शुद्ध रूप से म्युनिसपैलिटी की सीमा में आता है।

मैं न्यायालय पहुंचा। वहां नया ज्ञान मिला? "मकान नंबर में आपका कुछ नहीं होता। नगर-निगम, नगर-पालिकायें ये नंबर देते हैं। वे इसे बदल भी सकते हैं।"

पैर पटकता, खुद पर लानत भेजता मैं नगर-निगम पहुंचा। लेकिन अकेले आदमी की बात वहां कौन सुनता। मुझे अकेलापन त्यागना पड़ा। तीन-तीन रुपये के हिसाब से दस जुलूस मजदूरों की व्यवस्था करके, हाथ में तख्ती लेकर, नारे लगाते हुए, मैंने अपने साथियों के

साथ निगम प्रांगण में प्रवेश किया।

मैं—मेरे मकान का नंबर

साथी —क्यूं बदला -क्यूं बदला

हम लोग नारे लगाने लगे। जल्दी ही बुलावा आ गया। जुलूस के नेता के रूप में मैं चपरासी के साथ हो लिया। मजदूर बाहर रुक गये। निगम परिषद प्राचीन-काल से भंग है। स्वायत्त शासक प्रशासक से भेंट बड़े अनौपचारिक ढंग से हुई। वे मान ही नहीं रहे थे कि ५५ को बदल कर ५१ कर देने से किसी को कोई नुकसान हो सकता है। मैंने उनके सामने लालगे मास्टर का पोस्टकार्ड-लेखन कष्ट रखा।

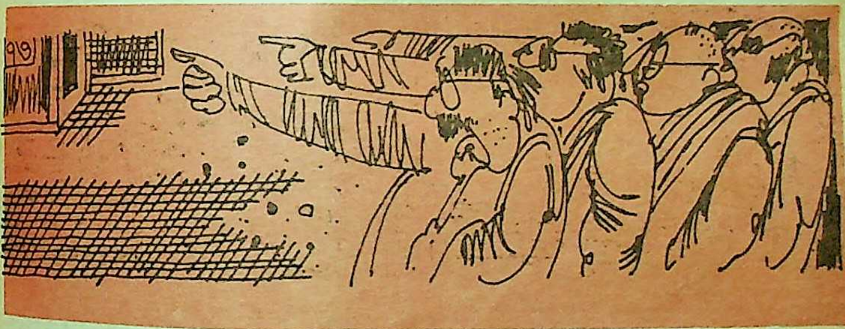

"इसकी सूचना देने में भी जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं है। जब आप किसी अन्य कारण से पत्र लिखें, तभी उन्हें सूचित कर दें।"

"बहुत से लोगों ने अभी-अभी नये लैटरपैड छपवाये हैं। उन्हें कितना नुकसान होगा ?"

"अरे साब, इतने बड़े शहर के नंबरों का युक्तियुक्तकरण हो गया और आप लैटरपैड का रोना रो रहे हैं। यहां मेरे पास ला देना। मैं फुरसत में बैठे-बैठे उनको ठीक कर दूंगा।"

मुझे युक्तियुक्तकरण जैसे वैज्ञानिक शब्दों का अर्थ मालूम नहीं था, इसलिए असली मुद्दे पर उतर आया। "देखिए श्रीमानजी, असल में मकान का नंबर बदल जाने से मेरे लिए जीवन-मरण की समस्या पैदा हो गयी है।"

"वो कैसे ?" प्रशासक चौंके।

"वो ऐसे कि मेरा जन्म एक तारीख को हुआ है। एक मेरा भाग्यांक है इस हिसाब से ५५ नंबर अगर बदल जाएगा तो उस मकान में रहना मेरे लिए असंभव हो जाएगा। ५१ याने पांच और एक बराबर छः, तो मेरे जन्म दिनांक के बिलकुल विपरीत पड़ता है। आप ऐसा कीजिए कि ५५ नंबर अगर बदलना ही है, तो ५१ के बजाय ४६ या ३७ नंबर दे दीजिए। ५१ नंबर लेने का, तो मतलब है, मेरे भाग्य का सितारा अस्त हो जाना।"

"क्या जन्म तारीख है आपकी ?"

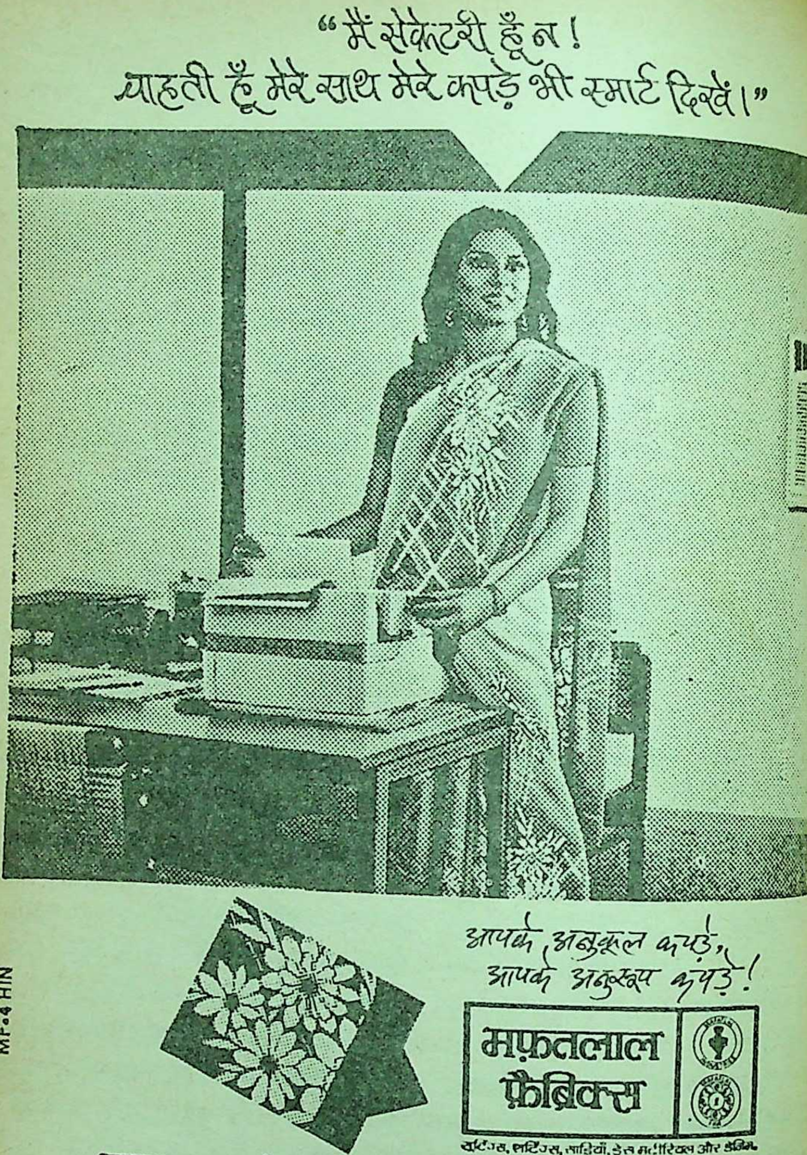

"मैं सेक्रेटरी हूँ न!
चाहती हूँ मेरे साथ मेरे कपड़े भी स्मार्ट दिखें।"

आपके अनुकूल कपड़े,
आपके अनुरूप कपड़े!

मफ़तलाल फ़ैब्रिक्स

शर्टिंग्स, सूटिंग्स, साड़ियाँ, ड्रेस मटीरियल्स और डेनिम.

मफ़तलाल इंडस्ट्रीज़ न्यू शॉरॉक मिल्स **मफ़तलाल फाइन**

MF-4 HIN

प्रशासक महोदय के सवाल ने मुझे चौंका दिया। मैं कोई लड़की तो हूं नहीं, जो जन्म तारीख छुपाता। जन्म तारीख एक कागज पर लिखकर प्रशासक महोदय न जाने क्या-क्या जोड़ बाकी करने बैठ गये। काफी देर बाद उनका गणित पूरा हुआ और वे तैश में आकर मुझसे बोले, "कैसे कहते हैं आप कि आपका भाग्यांक एक है ? आपका भाग्यांक ६ है। आपका जन्मांक एक है। इस नये नंबरवाले मकान में रहने के बाद ही आपका भाग्योदय होगा। आप विश्वास रखिए, जो भी कुछ हुआ है आपके और आपके नगर के भले के लिए हुआ है। अब बताइए आपका नाम क्या है ?"

नाम सुनकर वे फिर बाकी जोड़ करने लगे, "लीजिये जनाब, आपका नामांक ही आपके जन्मांक से मेल नहीं खाता है। आपके भाग्यांक और मकानांक में तो मेल है। जाइए और अपना नाम बदलकर बनवारीलाल या ऐसा ही कुछ रखिए, तब जाकर आपका भाग्य चमकेगा।"

"लगता है, आप ज्योतिषी हैं ?"

"अजी बस यों ही, फुरसत में बैठे-बैठे कुछ सीख लिया है।"

"तो कुछ बतायेंगे क्या ?" मैंने जेब से अपनी वृश्चिक लग्नी निकालते हुए कहा।

"लाइए।" उन्होंने हाथ आग बढ़ाया। तभी चपरासी ने आकर सूचना दी, "साब

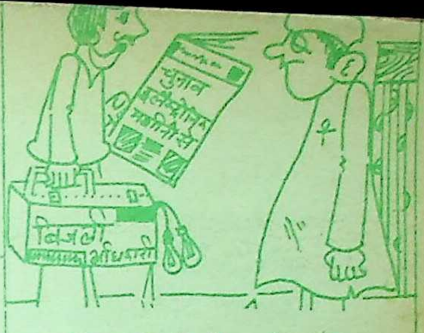

हमारे इलाके में जो मंत्री बनेगा, हम लोगों की मेहरबानी से बनेगा।.....

बाहर मकान नंबरी जुलूस के लोग शोर मचा रहे हैं।"

"नॉनसेंस", मैंने गुस्से के साथ कहा, "उनसे कहो जाएं अपने घर। उनका पेमेंट मैं एडवांस दे चुका हूं।"

"कितने मजदूर लाये थे आप ?"

"यही कोई दस होंगे।"

"छह लाते, तो सफल रहते।"

चपरासी जुलूस-मजदूरों को भगा चुका था। प्रशासक और मैं आफिस-टाइम की पूरी फुरसत से जनमपत्री पर निगाहें गड़ाये हुए थे। "मिस्टर जब तक ये शनि मार्गी होकर वापस कन्या में नहीं पहुंचता आपको किसी रचना का पारिश्रमिक नहीं आने का। मगर हां मकान नंबर ५५ से बदलकर ५१ हो जाने से रचनायें छपेंगी जरूर।"

"ठीक है साहब, ऐसे ५५ से ५१ बेहतर हैं।" कहते हुए मैं अपने अकेले मकान नंबरी जुलूस को भी वापस लौटा लाया।

--किसान बीज भंडार, गोल चौराहा-नयी आबादी, मंदसौर-४५८००१

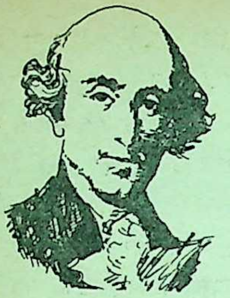

वारेन हेस्टिंग्स

मुंशी से महाराजा तक

निशीथकुमार राय

जैसे कीचड़ में कमल जन्म लेता है, उसी प्रकार बंगाल में पहले-पहल कांग्रेस ने जन्म लिया था एवं भारत को स्वाधीन बनाने का संग्राम लड़नेवाले वीर भी वहीं जन्मे थे, जिन्होंने आजादी के लिए हंसते-हंसते प्राण दिये थे।

परंतु उसी बंगाल में ऐसे लोग भी थे जिन्होंने अंगरेजों को भारत में घुसपैठ करने में मदद कर देश को गुलाम बनाने में हाथ बटाया था। इस देशद्रोहिता के बदले दरिद्र मुंशी से वे 'महाराजा' तक बने थे और आज के दिन तक उनके नाम से कलकत्ता में स्मारक एवं सड़कें हैं।

ऐसे ही लोगों में एक थे बंगाल के महाराजा नवकृष्ण बहादुर! वे पहले तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के मुंशी थे। वारेन हेस्टिंग्स के विरुद्ध बेईमानी एवं बेरहमी का महाभियोग विलायत की पार्लियामेंट में लाया गया। वह सभी को मालूम है।

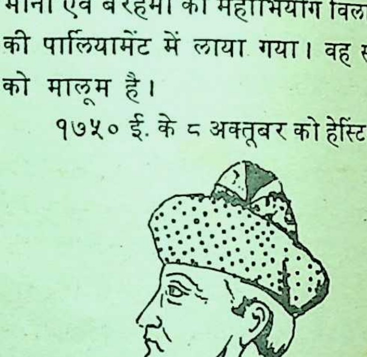

१७५० ई. के ८ अक्तूबर को हेस्टिंग्स जैसे ही गंगाजी के घाट पर उतरे थे कि नवकृष्ण ने उन्हें घेरा था। उन दिनों नवागत अंगरेजों की नौकरी करने के लिए अनेक बंगाली लालायित रहा करते थे। छह साल के अंदर ही नवकृष्ण वारेन हेस्टिंग्स के प्राइवेट ट्यूटर से पदोन्नत होकर ईस्ट इंडिया कंपनी के 'परशियन क्लर्क' नियुक्त हुए थे।

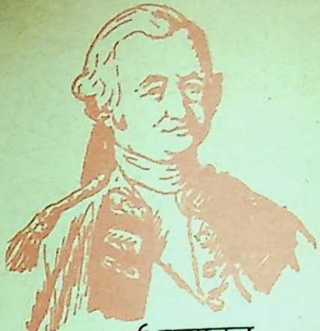

लार्ड क्लाइव

जिन दिनों नवाव सिराजुद्दौला ने कलकत्ता पर अधिकार कर लिया था और अंगरेज विस्थापित होकर 'फलता' गांव चले गये थे, उन दिनों नवकृष्ण प्रधान सहायक थे। लार्ड क्लाइव तो उनसे मुंशी गीरी के अलावा और काम भी लिया करते थे। सन १७५७ ई. फरवरी के महीने में जब नवाव सिराजुद्दौला दोबारा कलकत्ते पर आक्रमण करने के इरादे से 'हालसी बगान' में सेठ अमीचंद की बगिया में शिविर लगा कर रह रहे थे, तब नवकृष्ण को 'उपढौकन' (भेंट) के साथ दूत के रूप में क्लाइब ने भेजा था। नवकृष्ण चतुर थे। लौटकर उन्होंने अपने प्रभु लोगों को शिविर एवं सिराजुद्दौला की सेना का जो विशद विवरण दिया था, उससे प्रोत्साहित होकर क्लाइब ने अगले दिन तड़के सिराजुद्दौला पर आक्रमण किया था।

प्लासी के युद्ध के समय भी नवकृष्ण अंगरेज प्रभु की खैरख्वाही में लगे थे। साथ ही साथ अपना स्वार्थ भी पूरा कर रहे थे। १७६७ ई. में वे मुंशी नहीं रह गये थे बल्कि 'बेनियान' बन गये थे। 'बेनियान' वे कहलाते थे, जो अंगरेजों को आवश्यकता पड़ने पर रुपये उधार देते थे। उन्हें धनोपार्जन करने का उपाय सुझाया करते थे। एक मायने में अंगरेजों के वित्तीय सलाहकार होते थे।

नक्कू धर की कहानी

एक और अंगरेजपरस्त सज्जन थे—नाम था लक्ष्मीकांत धर उर्फ नक्कू धर! उनके बारे में लिखा गया है, 'नक्कू धर प्रसिद्ध धनी थे। भारत में अंगरेजों की जड़ जमाने में वे अग्रणी थे।' शुरू-शुरू में जब अंगरेज भारत में व्यापार करने के इरादे से आये थे, तब यहां के लोग उनकी भाषा नहीं समझते थे।

उन दिनों अंगरेजों की एक नाव गंगा में डूब गयी थी। उस नाव का सारा सामान, सभी यात्री डूब गये थे सिर्फ एक गोरा बच गया था। नक्कू गंगा के तट पर बैठे 'जप' कर रहे थे। गोरा बहता हुआ वहीं पहुंचा। नक्कू ने नौकरों द्वारा उसे पानी से उठवाकर सेवा की, होश में लाये और पहनने के लिए कपड़े दिये! उसका इलाज करवाकर उसे बचा लिया। वह गोरा काफी दिनों नक्कू धर के घर

उत्साह भरे जीवन
के लिये
नेस्कैफे
Nestlé
NESCAFÉ
instant coffee
दुनिया भर में सबसे
ज्यादा बिकने वाली
इन्स्टैन्ट कॉफी
एकमात्र इन्स्टैन्ट कॉफी
जो १०० % शुद्ध कॉफी से बनी है

CAS-FSL-373 HIN

पर रहा। उसी से नक्कू धर ने अंगरेजी सीखी और उसी अंगरेजी के बूते पर वे द्विभाषी नियुक्त किये गये थे। और फिर आगे चलकर वे भी राजा बन गये। प्रसिद्ध राजा सुखमय के वे पूर्व पुरुष थे।

धोबी से दुभाषिया

रतु सरकार नामक रजक ने तो अनजाने में साहब फंसा लिया था।

सन १६७९ ई. की बात है। बरतानिया का जहाज बंदरगाह के उस स्थान पर आ पहूंचा, जिसे आजकल 'गार्डन रीच' कहा करते हैं। सेठ लोग साहब पकड़ने के लिए आपाधापी कर रहे थे। साहब लोग उनकी बातें नहीं समझ पा रहे थे और न ही वे साहब की बातें समझ पा रहे थे। कैप्टिन स्टैफोर्ड ने कहा 'द्विभाषी' चाहिए। लोग समझे धोबी चाहिए! उन लोगों ने समझा-बुझाकर रतु सरकार को भेज दिया। रतन चालाक, चतुर था। उसने शीघ्र ही कामचलाऊ अंगरेजी सीख ली। आगे चलकर वह वास्तव में द्विभाषी बन गया। उसी रतन सरकार के नाम से बड़ा बाजार में कई सड़कें हैं।

श्री प्रदीप सिंह ने अपनी पुस्तक 'कैलकटा इन अर्बन हिस्ट्री' में जिन धनी व्यक्तियों के धन का ब्योरा दिया है (सन १७६४ ई. के धनी लोगों का इतिहास) उसमें रतन सरकार के पास लाखों रुपये नकद और सोना, चांदी, तांबा आदि का होना बताया है।

विलियम केरी साहब से वार्तालाप का जो ब्यौरा उपलब्ध है, उससे भी पता चलता है, किस प्रकार खानसामा मुंशी बन गया था। साहब ने खानसामा को बुलाकर एक दिन कहा, "खानसामा, मैं इस देश की एक भी बात समझ नहीं पाता, इसका क्या उपाय होना चाहिए।"

"साहब किसी 'माकूल' आदमी को मुंशी नौकर रखना पड़ेगा।" खानसामा ने उत्तर दिया।

"मुंशी नौकर कहां मिलेगा?" साहब ने पूछा।

"साहब, मुंशी यहीं मिल जाएगा हुक्म दें, तो एक योग्य मुंशी ला दूं?"

फिर एक दिन नवीन मुंशी आया। नियुक्त किया गया। उसने नजराना पेश किया। साहब चौंके, पूछा, "तुम कौन हो, यह रुपये क्यों दे रहे हो?"

"साहब, मैं मुंशी हूं। इस देश की भाषा सिखलाता हूं। ये रुपये नजराना हैं। इस देश का यही दस्तूर है।"

"तुम मुंशी कौन 'लोग' हो?"

"साहब, मैं इस देश का कायस्थ हूं।"

"तुम कौन-कौन-सी भाषा जानते हो?"

"साहब, मैं तीन-चार किस्म का अलग-अलग जुबान जानता हूं।"

"तब तो तुम कई भाषाएं जानते हो!"

"जी हां।"

"कौन-कौन-सी भाषा जानते हो बताओ।"

"साहब, मैं फारसी, अरबी, हिंदुस्तानी, बंगला और अंगरेजी भी जानता हूं।"

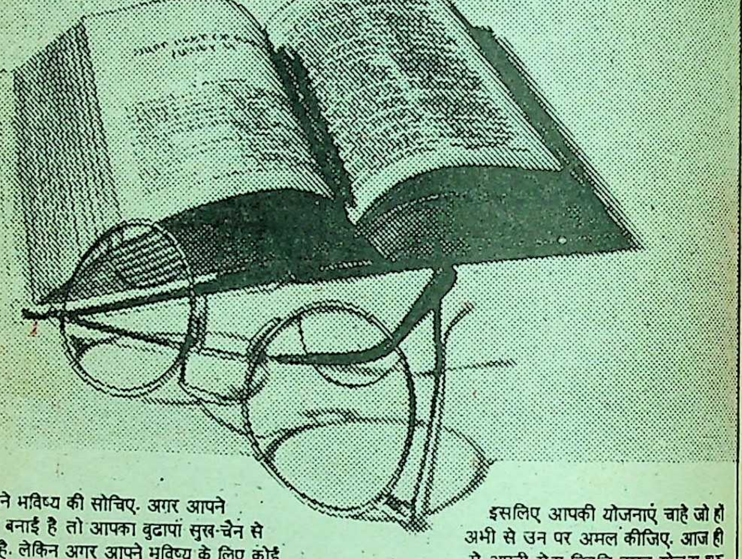

क्या आप अपने भविष्य के बारे में चिंतित हैं?

अभी से अपने भविष्य की सोचिए. अगर आपने सही योजना बनाई है तो आपका बुढापां सुख-चैन से कट सकता है. लेकिन अगर आपने भविष्य के लिए कोई व्यवस्था नहीं की तो बुढ़ापे में आपको अनेक परेशानियों का शिकार होना पड़ सकता है. दर असल बात यह है कि दिन पर दिन मुश्किल होती हुई जिंदगी में बहुत जरूरी हो गया है कि सेवा-निवृत्त होते समय आपके पास पर्याप्त धन हो.

इसलिए आपकी योजनाएं चाहे जो हों अभी से उन पर अमल कीजिए. आज ही से अपनी सेवा-निवृत्ति बचत योजना शुरू कर दीजिए. क्योंकि एक दिन ऐसा भी आएगा जब सेवा-निवृत्ति के बाद आप कोई काम नहीं कर पाएंगे; तब ये धन शेष जीवन में आपके काम आएगा निश्चित सेवा-निवृत्त जीवन के लिए अभी से किसी सरकारी क्षेत्र के बैंक में बचत कीजिए जिनकी ३०,००० से भी अधिक शाखाएं हैं.

सहवीर्यं करवावहै

जॉइण्ट पब्लिसिटी कमिटी

पब्लिक सैक्टर बैंक्स

सदस्य बैंक

इलाहाबाद बैंक • आंध्र बैंक • बैंक ऑफ बड़ौदा • बैंक ऑफ इंडिया • बैंक ऑफ महाराष्ट्र • केनरा बैंक
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया • कॉर्पोरेशन बैंक • देना बैंक • इंडियन बैंक • इंडियन ओवरसीज बैंक • न्यू बैंक ऑफ इंडिया
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स • पंजाब नेशनल बैंक • पंजाब एन्ड सिंध बैंक • भारतीय स्टेट बैंक
स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर • स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद • स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर • स्टेट बैंक ऑफ मैसूर
स्टेट बैंक ऑफ पटियाला • स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र • स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर • सिंडीकेट बैंक
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया • युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया • युनाइटेड कमर्शियल बैंक • विजया बैंक.

पब्लिक सैक्टर बैंक-हर दिन, हर जगह सबके जीवन में नया विश्वास जगा रहे हैं.

Imageads-JPC-80312 D/HN

"तुम मेरे नौकर बनकर मुझे भाषाएं सिखलाना !"

"क्या वेतन लोगे ?"

"साहब, तीस रुपए से कम नहीं दिया जाता। मगर अधिक भी दिया जाता है। जो आपकी मरजी हो दीजिए।"

"अच्छा जो मुनासिब हो मैं दूंगा" साहब ने कहा और मुंशी नियुक्त कर लिये गये। इसके बाद चोरी, दस्तूरी और दगाबाजी से मुंशी ने बेतहाशा कमाना शुरू किया।

उसी बंगाल में ऐसे लोग भी थे जिन्होंने अंगरेजों को भारत में घुसपैठ करने में मदद कर देश को गुलाम बनाने में हाथ बटाया। इस देशद्रोहिता के बदले दरिद्र मुंशी से वे 'महाराज' तक बने . . .

प्रभावशाली बेनियान

सन १७६१ ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी ने आदेश निकाला, 'कंपनी का कोई भी कर्मचारी काले कर्मचारी या बेनियानों को न रखा करे। यह हमारा आदेश है और हमें अपेक्षा भी है ! यदि इस आदेश का पालन किसी ने नहीं किया तो जवाबतलब किया जाएगा।'

१७६४ ई. में आदेश निकला, कमांडर-इन-चीफ के अलावा कोई अफसर बेनियान, मुंशी, कलमची या भाषाविद नहीं रख सकेगा।

उन दिनों में 'सरकार' 'बेनियान' में बहुत कम लोग ऐसे थे, जिनके पास चैरियट, फिटन, बग्घी, या पालकी न हो ! किसी-किसी के पास तो चारों सवारियां थीं। उन दिनों के ब्रिटिश सांसदों को चौंकाकर बर्क ने ऐलान किया, 'हेस्टिंग्स के बेनियान ने एक नीलाम के बाद देखा कि वे एक ऐसी जमींदारी के मालिक बन बैठे हैं, जिसकी सालाना आमदनी डेढ़ लाख पाउंड यानी चौबीस लाख रुपये है।'

१७८६ ई. में बेनियानों ने अपने भृत्यों को कंपनी-जैसी वर्दियों से सज्जित किया। फिर १७८८ ई. में लिखा गया—'बेनियान बिना काम चल नहीं सकता।' करीब-करीब सभी अंगरेजों का एक न एक बेनियान था। १८७७ ई. में लिखा गया, 'बेनियान बिना काम चलाना संभव नहीं।' कालेज के अंगरेज छात्रों के लिए भी बेनियान अपरिहार्य था।

बंगाली बेनियान उन अंगरेज छात्रों को इच्छानुसार उधार देकर बरबाद किये दे रहे थे। लड़के खूब रुपये लेते—पीते और गुलछर्रे उड़ाते। बंगाली बेनियानों ने कितने लड़कों को रुपये दे-देकर बरबाद किया था, इसका लेखा-जोखा नहीं है !

—नं. ३, मदनमोहन मालवीय रोड,
जार्ज टाउन, इलाहाबाद

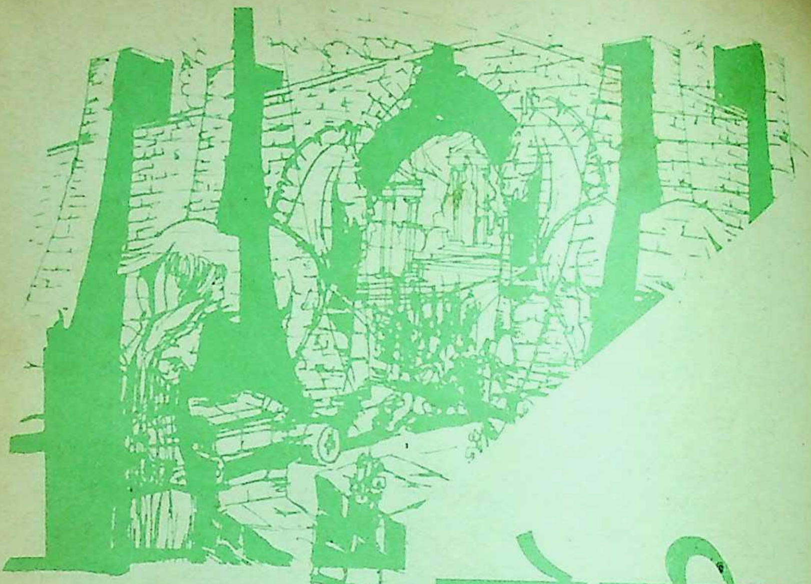

कहो चाहिए सेव सुनहला?

• परिपूर्णानन्द वर्मा

कुछ वर्षों पूर्व जब मैं यूनान की राजधानी एथेंस के सुंदर नगर में पहुंचा, तब वहीं, हवाई अड्डे पर, हमसे मिलने आये हुए एक यूनानी सज्जन ने पूछा—"यहां सुनहला सेव मिले, तो आप क्या करेंगे ?" मैंने सुनहला सेव न कभी देखा और न सुना था। मैंने साश्चर्य कहा--

"मैं जानता नहीं कि सुनहला सेव कैसा होता है, यदि मिल जाय, तो उसे सयत्न रखूंगा, खाऊंगा नहीं। अपने देश में लोगों को दिखलाऊंगा।"

आगंतुक हंस पड़े, बोले—

"भगवान न करे यह आपके देश जाय। मालूम होता है आप इससे अपरिचित हैं।"

मेरा कौतूहल बढ़ा, तब रहस्य खुला : यूनान के ट्राजन युद्ध की कथा से प्रसिद्ध अंधे यूनानी कवि होमर के 'इलियड' महाकाव्य से सभी परिचित हैं। आज तक ऐतिहासिक शोध से पता ही नहीं चल सका कि यह होमर कहां के रहने वाले थे, कब पैदा हुए और कब मरे। ट्राजन युद्ध कब हुआ और राम-रावण युद्ध की तरह वास्तव में हुआ भी, या कवि की रचना है--कुछ नहीं कहा जा सकता। जिस तरह आज के जमाने में जगह-जगह आल्हा-ऊदल गाया जाता है, उसी तरह 'इलियड' यूनान में

गाया जाता था। 'इलियड' का तात्पर्य 'ट्राय' है। इसी से ग्रंथ का नाम 'इलियड' पड़ा।

लकड़ी के घोड़े में छुपे सैनिक

बहुत संक्षेप में कथा है कि ट्राय के नरेश पेरिस उस समय यूनान की परम सुंदरी (यूनानियों के अनुसार संसार की सबसे सुंदर स्त्री) हेलेन पर रीझ गये। वह स्पार्टा नरेश मेनेलाज की पत्नी थी। उसे जबरन उठा लाया गया। पेरिस हेलेन के साथ बलात्कार करता रहा। स्पार्टा ने ट्राय पर हमला कर दिया। प्राचीन यूनानी अकियन लोगों की यह राजधानी थी। दस वर्षों तक युद्ध चला। अंत में गैर-अकियन यूनानियों ने एक बहुत बड़ा लकड़ी का घोड़ा बनाया और उसके पेट में साहसी यूनानी सैनिक छिपा दिये। फिर यूनानी सेना ने उसे ट्राय के फाटक तक पहुंचा दिया और दूर हट गयी। एक यूनानी सिपाही ने बहाना किया कि उसने शत्रु-पक्ष में मिल जाने का निश्चय किया है। उसने बाहर से संदेश भेजा कि वह जादूगर भी है। ऐसा घोड़ा बनाकर लाया है, जिसे नगर के भीतर रख दिया जाय, तो नगर अजेय हो जाएगा। कुछ बुजुर्गों ने मना किया, पर दस वर्षों की लगातार लड़ाई से थके हुए लोगों ने अजनबी की बात पर विश्वास कर लिया। फाटक खुला। घोड़ा भीतर आया। रात को उसके पेट से निकलकर यूनानी सिपाहियों ने नगर का फाटक खोल दिया। पास में छिपी यूनानी सेना नगर में घुस पड़ी। ट्राय का पतन हुआ। हेलेन फिर स्पार्टा नरेश को वापस मिल गयी।

इस युद्ध में यूनानियों का नेता मिरमिडान का नरेश एंसीलेज था। इसके शरीर पर कोई अस्त्र-शस्त्र असर नहीं कर सकता था, इसलिए कि इसके जन्म लेते ही इसकी माता ने इसे मंत्र पढ़कर स्टिक्सन नदी में डुबाकर निकाला था।

पर, पानी में डुबाते समय बच्चे का तलवा पकड़े थी, इसीलिए केवल तलवा ही दुर्बल तथा भेद्य स्थान रह गया। इस युद्ध में एक जहरीला तीर तलवे में लगा और वह मारा गया। न वह मारा जाता न ट्राय का पतन होता। तभी से अंगरेजी वाक्य बना—'स्कीलेज का तलवा' (हील) यानी दुर्बल स्थल।

यह सब मैं जानता था। मैंने ऊबकर

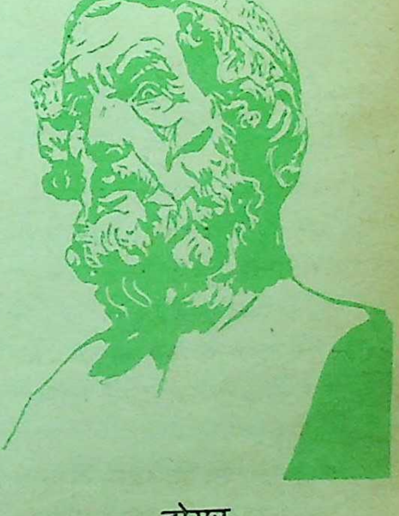

होमर

कहा—

"मुझे यह सब मालूम है। ट्राय एक होगा।"

यूनानी को यह बात चुभ गयी। उसने कहा—

"आपकी जानकारी कुछ भी नहीं है। जिस तरह आपका नालंदा विश्वविद्यालय एक खंडहरी टीले के नीचे मिला, वैसे ही सन १८९३ में एजियन सागर के निकट १६२ फीट ऊंचे खंडहरी टीले के भीतर यह नगर मिल गया। इसमें एक के ऊपर एक ९ परते हैं, यानी ९ बार नगर बसा और ध्वस्त हुआ। इतना बड़ा नगर जमीन के पेट में पड़ा था।"

पर मैं उतावला हो रहा था—सुनहला सेव देखने-जानने के लिए। मैंने पुनः पूछा—

"पर सुनहले सेव का क्या मतलब है।"

यूनान की पुरानी गाथाओं में ट्राय के पतन की गाथा है। सुनहले सेव का ही अभिशाप था, इसीलिए कहा कि ईश्वर न करे यह सेव तुम्हारे देश जाए।

ट्राय के नरेश प्रियाम का पुत्र पेरस था। जब वह पैदा हुआ, तब यूनान के भविष्य वक्ताओं ने नक्षत्र विचारकर घोषणा की कि यह अपने देश पर घोर दुर्भाग्य का कारण बनेगा। यह भविष्य वाणी इडा की पहाड़ी पर की गयी। प्रियाम राजा ने नवजात शिशु को पहाड़ी पर छोड़ दिया, ताकि वहीं भूख-प्यास से मर जाय, पर कुछ गड़रिये उधर से निकले उन्होंने बच्चे को उठा लिया और पेरिस गड़रियों के बीच पलने लगा। पिता की मृत्यु पर पेरिस ट्राय की गद्दी पर बिठा दिया गया। पर इसके पहले सुनहरे सेव की घटना हो गयी।

ट्राय में एक विवाह उत्सव हुआ, उसमें 'कलह की देवी' को लोग निमंत्रण देना भूल गये, अन्य सब देवी देवताओं को निमंत्रित किया गया था। कुछ लोगों ने कलह देवी को इसलिए नहीं बुलाया कि विवाह का लड़ाई-झगड़े से क्या सरोकार, कलह देवी क्रुद्ध हो गयीं। उन्होंने क्रोध में एक सोने का सेव, विवाह के लिए आयोजित विशेष भोज में ऊपर से फेंक दिया और आकाशवाणी हुई—

"जो सबसे सुंदर हो उसके लिए।"

अब सभी उपस्थित देवियां आपस में सुंदरता का दावा करने लगीं। फैसला कौन करता। गड़रिया पेरिस उधर से गुजर रहा था। देवता ज्यूस की सलाह थी कि उसी से फैसला कराया जाए। सभी देवियां उसे अपने पक्ष में करना चाहती थीं।

देवी हेरा ने कहा—

"यदि मेरे पक्ष में फैसला दोगे, तो साम्राज्य भोग करोगे।"

देवी एथोमा ने कहा—

"यदि मेरा पक्ष लोगे, तो चतुर्दिक सैनिक विजय का वरदान मिलेगा।"

कामवासना की देवी अफ्रोदाइत ने प्रलोभन दिया—

"यदि फैसला मेरे पक्ष में होगा, तो संसार में श्रेष्ठ सुंदरी प्राप्त करोगे ।"

पेरिस ने सोच-विचार कर सुनहला सेव कामवासना की देवी अफ्रोदाइत के हाथ में रख दिया ।

प्राइम नरेश के मरने पर पेरिस पिता की गद्दी पर बैठा और उसने स्पार्टा की परम सुंदरी हेलेन को छीनकर दस वर्ष तक उसका भोग किया । यह सब सुनहले सेव का प्रताप था । पर, बाद में इसी के कारण, ट्राय तथा उसका राज्य नष्ट हो गया ।

पेरिस के मित्र एकीलेज के तलवे में, जहरीला तीर लगा । वह मारा गया । विजय की आशा भी मर गयी । पेरिस को एक, जहरीला तीर लगा । वह मरणासन्न हो गया ।

गद्दी पर बैठने के पहले उसने इडा की पहाड़ी पर विचरनेवाली अप्सरा 'ओयेनोने' से विवाह कर लिया था, पर गद्दी मिलने के बाद उसे त्याग दिया था । जब वह तीर के जहर से मरने लगा, तब उसे अप्परा की याद आयी । वह उसके पास आया और बड़ी अनुनय-विनय की कि अपनी दैवी शक्ति से उसे अच्छा कर दे ।

फिर उसी तालाब में पत्थर गिरा है दूर से
जिस पे यादों के कमल थे देर से सोये हुए
—सईद सुहरावर्दी

हंसी क्यों लब पे आकर रुक गयी है
वो दिल का खून शायद मांगती है
—सयदार आसिफ

पर अप्सरा सौतिया डाह-वश हेलेन के साथ उसके संबंध से बहुत रुष्ट थी । उसने पेरिस की सहायता करना अस्वीकार कर दिया । पेरिस हताश होकर वापस लौटा और उसने प्राण त्याग दिये ।

मेरे यूनानी साथी ने पूछा—

"कहो, सुनहला सेव ले जाओगे अपने देश ।"

मैं उठ खड़ा हुआ । एथेंस की रमणीयता मुझे खींच रही थी, मैंने प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया ।

—४ ल.र. बंगला कालपी रोड, कानपुर

एक भुलक्कड़ प्रोफेसर अपने एक मित्र को बता रहे थे—"मैं बेहद भुलक्कड़ हूं । मैंने अपनी डायरी में बहुत सारे लोगों के नाम लिख रखे हैं, लेकिन मैं उन लोगों के बारे में यही बात भूल जाता हूं कि वे किस क्षेत्र के हैं और क्या करते हैं । अभी पिछले दिनों मैं अपनी डायरी उलट रहा था कि एक आदमी का नाम देखकर मुझे उसके बारे में जानने की उत्सुकता हुई । मैंने उसे पत्र लिखकर पूछा,' क्या तुम मुझे जानते हो और मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूं ।' उस भले आदमी ने बड़ी नम्रता से मुझे उत्तर लिखा—'आप मेरी सहायता बहुत पहले ही कर चुके हैं ।' तब मुझे याद आया कि वह मेरी पत्नी का भूतपूर्व पति था ।

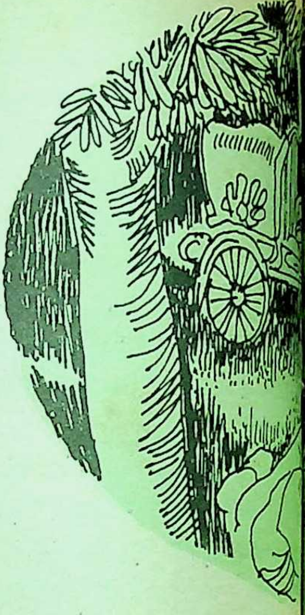

सुलतानपु की

पिछली सदी के अंत की बात है, रायबरेली में निबल नामक एक अंगरेज अधिकारी था, जिसका तबादला सन १८८६ में रायबरेली से सुलतानपुर को हो गया था। आज इन दोनों जगहों के बीच तेजी से दौड़ती रेलगाड़ियां और बसें यह फासला कुछ ही घंटों में तय कर लेती हैं। पर उन्नीसवीं सदी के अंत तक यह यात्रा बड़ी कठिन होती थी। यह दूरी ज्यादातर धीरे चलनेवाली घोड़ागाड़ियों से तय की जाती थी और रास्ते में तरह-तरह की मुश्किलें उठानी पड़ती थीं। निबल साहब के पास अपने घोड़े और अपनी गाड़ी थी, इसलिए वे कुछ हद तक उन असुविधाओं से बचे थे, जो किराये की घोड़ागाड़ियों में हुआ करती थी।

यात्रा के दौरान बीच-बीच में घोड़े बदलने का इंतजाम करके निबल साहब यात्रा पर रवाना हुए। उन्हें रायबरेली से चलने में देर हो गयी थी, पर चूंकि सरदी का खुशनुमा मौसम था, इसलिए उन्हें यात्रा अपराह्न के समय शुरू करने में भी कोई हिचक नहीं हुई।

निबल साहब की घोड़ागाड़ी सुलतानपुर की ओर बढ़ती जा रही थी और रात के अंधकार में उन पर किसी अनहोनी आशंका की चादर उतरती जा रही थी। इसी बीच एक उल्लू चीखा और उसके बाद दूसरा। उनकी आवाज कान फाड़नेवाली थी। पर दो-तीन आवाजों के बाद ही उनका चीखना बंद हो गया और फिर गाड़ी के चाकों तथा जूतों की नाल की आवाज ही रह गयीं। निबल साहब कुछ सोच रहे थे कि पीछे बैठे साईस की आवाज उनके कानों में आयी, "साहब, आप एक मिनट ठहर जाएं, तो मैं गाड़ी की बत्तियां जला लूं," अपने साईस परौती की बात सुनकर साहब ने घोड़े की लगाम खींच ली और गाड़ी के रुकते ही पूरी निस्तब्धता महसूस होने लगी।" परौती बत्तियां जलाकर घोड़ा-

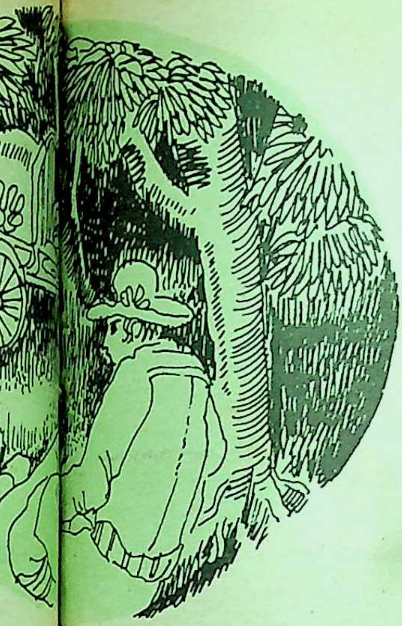

नपु की चुड़ैल

● शारदा पाठक

गाड़ी में पीछे की ओर बैंठनेवाला था कि निबल साहब के कानों में किसी के रोने की धीमी-सी आवाज पड़ी। ऐसा लगता था कि जैसे कोई औरत बहुत तकलीफ की वजह से रो रही हो, साहब ने परौती से कहा, "सुनो, कोई औरत रो रही है," उस समय तारों की झिलमिलाती रोशनी हो रही थी। उसी में निबल साहब ने देखा कि परौती की आंखों में भय की छाया है। परौती बोला, "साहब, यह जरूर कोई चुड़ैल है। गाड़ी तेजी से चलाइए। यहां से जल्दी भागिए।" साहब बोले, "परौती भूत-चुड़ैल जैसी कोई चीज दुनिया में नहीं होती। मुझे लगता है कि आवाज और पास आती जा रही है। गाड़ी के पहिये की आवाज के बीच भी हम लोग उसे साफ सुन रहे हैं। अब तेजी से भागें तो भी कोई सार नहीं निकलेगा।"

साहब ने आगे कहा, "बेकार की बात मत करो। किसी बेवकूफ ने कह दिया होगा कि तुम्हारे पिता को चुड़ैल ने मार डाला और और तुमने मान लिया। यह सब बकवास है।" परौती चुप हो गया और मन ही मन भगवान को याद करने लगा। रोने की आवाज और साफ होती गयी और धीरे-धीरे पास आती गयी।

कुछ देर में ऐसा लगा कि आवाज सड़क के किनारे से आ रही है। तभी साहब ने देखा कि पीपल के वृक्ष के नीचे एक साया खड़ा है, साहब ने लगाम खींचनी चाही, तो परौती चीख उठा, "साहब, भगवान के लिए यहां न रुकें। वह चुड़ैल है साहब ! मैं भगवान की कसम खाकर कहता हूं कि वह चुड़ैल है।" साहब ने उसे डांट दिया, "तुम चुप रहो। मैं इस औरत से बात करूंगा।"

गाड़ी की बत्ती से सड़क किनारे पड़ रही रोशनी में साहब ने देखा कि एक बूढ़ी

औरत खड़ी है, जिसका चेहरा झुर्रियों से भरा है। वह झुकी-झुकी आगे बढ़ी और धीरे-धीरे चलती गाड़ी की तरफ आयी। उसके पास आते ही गाड़ी में जुता घोड़ा 'जूनो' बिदक गया, पर साहब ने उसे काबू में कर लिया। घोड़ा बिदकने के ऐसे मौकों पर अकसर परौती ही उसे काबू में करता था पर इस समय वह गाड़ी के पीछे दुबका हुआ कांप रहा था। साहब ने औरत से पूछा, "तुम यहां क्या कर रही हो ?" औरत ने घरघराती आवाज में कहना शुरू किया, "मेरा लड़का सुलतानपुर में बहुत बीमार है। मौत की घड़ियां गिन रहा है। मैं उसके पास जा रही थी कि रास्ते में रात हो गयी। मैं बूढ़ी हूं और लगातार दूर तक नहीं चल सकती। इसीलिए मुझे यह सोचकर रोना आ रहा है कि कल जब तक मैं उसके पास पहुंचूं तब तक शायद वह जीवित न रह पाये।" औरत की इस बात से साहब के दिल में दया जाग उठी। उन्होंने सोचा कि वे उसे गाड़ी के पायदान पर ही बिठा लें, तो बेचारी सुलतानपुर पहुंच जाएगी। वे बोले, "आओ, आ जाओ, मैं तुम्हें सुलतानपुर छोड़ दूंगा।"

बूढ़ी औरत ने कांपते हाथों से गाड़ी का पायदान पकड़ा और उस पर पैर रखकर ऊपर आ गयी। परौती पीछे एक किनारे पर बैठा हुआ जलती आंखों से उसे देखता रहा। दोनों को बैठा देखकर साहब ने सामने देखा और और गाड़ी बढ़ा दी। थोड़ी दूर पर उन्हें दूर पर आग जलती हुई दीख पड़ी। उस आग की रोशनी में पास ही एक घोड़ा खड़ा था। यह उनके सफर का अगला पड़ाव था, जहां घोड़ा बदलना था। यहां पहुंचकर साहब ने लगाम खींची। परौती अपनी जगह बैठा रहा और हमेशा के मुताबिक बढ़कर आगे नहीं आया। साहब बोले, "परौती, जल्दी करो। देर हो रही है। क्या औरत तुम्हें इतनी अच्छी लगी है कि तुम उसके पास से उठना ही नहीं चाहते।" इतना कहकर जैसे ही उन्होंने मुड़कर पीछे देखा, तो पाया कि परौती गाड़ी से उतर रहा है और औरत का कोई अता-पता नहीं है। यह देखकर साहब के सारे शरीर में सिहरन-सी दौड़ गयी। वे गाड़ी से कूदकर बूढ़े परौती को मारने दौड़े और बोले, "बदमाश! काले आदमी! तूने उस बूढ़ी औरत को रास्ते में कहीं सड़क पर ढकेल दिया है।" परौती, साहब के पैरों पर गिर पड़ा और कहने लगा, "मालिक, मैंने आपका नमक खाया है। सच कहूं, उस बुढ़िया को मैंने हाथ भी नहीं लगाया। हम लोग आग के पास पहुंच ही रहे थे कि वह अचानक गायब हो गयी।"

परौती के इन शब्दों से साहब का गुस्सा ठंडा पड़ गया। इसी बीच साहब को सूझा कि क्यों न पीछे जाकर वहां तक देख आयें, जहां बुढ़िया को आखिरी बार गाड़ी में बैठा देखा था। यह दूरी करीब मील भर की थी और नये घोड़े सीजर

ने बहुत जल्दी तय कर ली, लेकिन समूचे रास्ते में बुढ़िया का कोई नाम-निशान नहीं मिला। इसी बीच रात में चलनेवाली हवा की सरसराहट जैसी आवाज सड़क के ऊपर की ओर लगे वृक्षों की छाया से आती सुन पड़ी। तभी झाड़ी में कोई गीदड़ चीख उठा और बूढ़ी औरत झुककर चलती और गाड़ी के पास आती हुई दिखी। उसे देखकर घोड़ा सीजर रुका और हिनहिनाया। बूढ़ी औरत रोती हुई सामने आयी और पहले ही की तरह घरघराती आवाज में लड़के के बीमार होने की अपनी पुरानी कहानी दोहराने लगी। साहब ने उसे टोका, "यह सब मैं पहले ही सुन चुका हूं। अब फिर से सुनने के लिए मेरे पास वक्त नहीं है। हमें देर हो रही है। जल्दी से गाड़ी में बैठ जाओ। जब हम सुलतानपुर पहुंच जाएं तो बताना कि तुम कैसे गिर पड़ी थीं।"

साहब ने देखा कि एक बार फिर वह बूढ़ी औरत गजब की फुर्ती से पायदान पर पैर रखकर गाड़ी में चढ़ गयी। वे परौती से बोले, "परौती तुम गाड़ी में आ जाओ और गाड़ी को चलने दो।" परौती बोला, "गरीबनवाज, आप अपने पैरों के पास मुझे आगे बिठा लें पर पीछे उस चुड़ैल के साथ न बिठाइए।" पर साहब नहीं माने। परौती एक क्षण के लिए हिचकिचाया पर साहब ने जोरदार आवाज में 'बैठ जाओ' कहकर घोड़े की लगाम खींच दी। परौती पीछे छूटा जा रहा था। घोड़े को बढ़ते देखकर उसने छलांग लगायी और पीछे पायदान पर बैठकर बूढ़ी औरत को ताकने लगा।

गाड़ी बढ़ी। सीजर नया बछेड़ा था और हवा की गति से भाग रहा था। निबल साहब की यात्रा का यह आखिरी चरण था और उन्हें भूख लग आयी थी। वे सुलतानपुर पहुंचकर गर्मागर्म खाना खाने के विचार में डूबे हुए थे। सड़क के किनारे मील के पत्थर एक-एककर पीछे छूटते जा रहे थे। थोड़ी देर में दूर पर सुलतानपुर की बत्तियां दीखने लगी थीं। साहब रोमांच से भर उठे। यात्रा की सारी थकान खत्म होती-सी लगी। गाड़ी में जुता सीजर अपनी गरदन मोड़े हुए तेज रफ्तार से बढ़ा जा रहा था। साहब ने पीछे मुड़कर देखा कि उनकी गाड़ी के दोनों यात्री

ठीक टाक हैं कि नहीं। उन्होंने उड़ती नजर डालकर आगे की ओर सिर घुमाया ही था कि अचानक गाड़ी में ऐसा झटका लगा कि जैसे कोई बड़ा बोझ उस पर से नीचे गिर गया हो। उन्होंने खून जमा देनेवाली चीख सुनी और किसी चीज के जोर से नीचे गिरने की आवाज भी।

गाड़ी में जुते सीजर ने अपनी कुलाचें और लंबी कर दीं और वह ऐसे भाग रहा था, जैसे पागल हो गया हो। साहब समझ ही नहीं पा रहे थे कि आखिर हुआ क्या है। एक बार तो उन्हें ऐसा लगा कि गाड़ी का पीछे का आधा हिस्सा ही टूटकर गिर गया है। उन्होंने सिर घुमाकर पीछे देखा, तो पाया कि गाड़ी तो ठीक-टाक है पर पीछे किसी आदमी का कोई नाम निशान नहीं है। तभी उन्हें सड़क के किनारे पड़ी एक छाया की मिमयाती-सी आवाज सुनायी पड़ी। साहब ने दौड़कर सीजर की लगाम पकड़ी और गाड़ी को घुमाकर उस छाया के पास ले आये। गाड़ी की बत्ती की रोशनी उस छाया पर पड़ी तो साहब ने देखा कि वह परौती था। वे पीछे की ओर कुछ दूर तक और गये पर बूढ़ी औरत का कोई चिह्न नहीं मिला। वे लौटकर परौती के पास आये। परौती की डर के मारे जान निकली जा रही थी। वह रुक-रुककर झटके से इतनी धीमी आवाज में दो-चार शब्द बोल पा रहा था कि उन्हें सुन पाना मुश्किल था। रुंधती आवाज में वह एक-एक शब्द बोलकर कहने लगा, "मालिक मैं बड़ी खुशी से मर रहा हूं क्योंकि मेरा सिर आपके चरणों में है। मैं जानता हूं कि मेरी मौत आ गयी है। साहब यह चुड़ैल वही थी, जिसने मेरे बाप की जान ले ली थी। उसने मुझे नीचे ढकेल दिया और गायब हो गयी। मालिक अपने बेटे की जिम्मेदारी मैं आपको सौंपता हूं।"

—डी–७, कोटला फ़िरोजशाह
नयी दिल्ली—११०००२

अमरीकी व्यंग्यकार मार्कट्वेन तब गरीब युवक थे और साहित्य में अपना स्थान बनाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। एक बुजुर्ग महिला उनकी बहुत हितचिंता करती थीं। इस रूप में अकसर उन्हें नसीहत किया करती कि सिगार न पिया करो, शराब छोड़ दो, वगैरह-वगैरह। एक दिन ट्वेन सिगार का डिब्बा बगल में दबाये मजे से सड़क पर चले जा रहे थे कि एकाएक सामने से उनकी वही शुभचिंतक महाशया प्रकट हो गयीं। मार्कट्वेन को देखते ही बरस पड़ीं—"कितनी बार समझा चुकी हूं कि सिगार मत पिया करो, फेफड़े सड़ जायेंगे...।"

ट्वेन मासूम-सा चेहरा बनाकर बोले, "मदाम, सच मानिए, इस डिब्बे में एक भी सिगार नहीं है। असल में मैंने पुराना लॉज छोड़ दिया है, और अपना माल-असबाब इस डिब्बे में भरकर नये लॉज में ले जा रहा हूं।"

भविष्य

(९)

क्या आपका जन्म मार्च में हुआ है?

● प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'

मार्च की २० तारीख तक सूर्य मीन में रहता है, तत्पश्चात सूर्य मेष में चला जाता है। २० मार्च तक जन्मे व्यक्तियों की राशि मीन है। २१ मार्च से ३१ मार्च के मध्य जन्मे व्यक्तियों की राशि मेष है। मीन का स्वामी गुरु है और मेष का स्वामी मंगल है। २० तारीख तक जन्मे व्यक्ति गुरु प्रधान, उसके बाद जन्मे व्यक्ति मंगल प्रधान हैं।

आप एक सहृदय, भावुक व्यक्ति हैं। मन व हृदय दोनों से ही पवित्र हैं। अप्रिय से अप्रिय बात को अत्यंत सरल ढंग से व्यक्त कर देते हैं। अनेक लोग आप को धोखा देते रहते हैं, आप दूसरों का हित चाहते हैं। फलत: इस कमजोरी का दूसरे व्यक्ति लाभ उठाते हैं। आपको व्यक्ति की पहचान करना आता है। भले ही कोई आप पर कितना ही दबाव क्यों न डालें, पर आप गलत कार्य नहीं करते। मन से पवित्र होने के कारण यदि आप किसी पर नाराज होते हैं या उसका विरोध करते हैं, तो केवल मौखिक रूप से ही करते हैं, हृदय से उसका अहित नहीं सोचते।

आप में साहस, दृढ़ता व शक्ति की कमी नहीं है। विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग रहते हैं। प्रारंभिक जीवन काफी संघर्षपूर्ण रहा है। सिद्धांतवादी होने के साथ आप अहं भी पाले रहते हैं। आत्म-

मार्च में जन्मे विशिष्ट व्यक्ति

४ मार्च : स्वामी दयानंद सरस्वती, ११ मार्च : हेराल्ड विल्सन, १४ मार्च : एल्बर्ट आइंस्टीन, १७ मार्च : शेख मुजीबुर्रहमान, १८ मार्च : फिल्म अभिनेता शशि कपूर, १९ मार्च : डेविड लिविंग स्टोन, २१ मार्च : शहनाई-वादक उस्ताद बिसमिल्ला खां।

प्रशंसा भी करते रहते हैं, जिद्दी व स्वाभिमानी होने के कारण कई बार परिवार-जनों से भी विरोध कर बैठते हैं। आपके व्यक्तित्व में एक विशेषता है कि कैसा भी कार्य हो, आप विरोधियों से भी अपना कार्य करा लेते हैं।

दिखावा करते हैं आप

आप अत्याधिक महत्त्वाकांक्षी हैं। छोटा पद, छोटा कोष, छोटा कार्य करना पसंद नहीं करते, जबकि दूसरे लोग समझते हैं कि आप एक निःस्वार्थ व्यक्ति हैं, त्यागी हैं, आपने दूसरों के लिए यह पद, कोष, कार्य छोड़ दिया है। आप बड़े पदों, कोष, कार्य को तुरंत स्वीकार कर लेते हैं, और यह भी दिखावा करते हैं कि आपको पद से मोह नहीं है, बल्कि यह तो दबाववश स्वीकार किया है। लोग आपके इस कथन पर सहज ही विश्वास कर लेते हैं।

आप मर्यादापूर्ण जीवन जीने के साथ किसी के व्यक्तिगत कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं, और न स्वयं सहन करते हैं। आप क्रोध पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं, यह भी आपकी प्रगति में बाधक बनता है।

आइंस्टीन

स्वामी दयानन्द

मुजीबुर्रहमान

भावुक होने के कारण आप मित्रता के नाम पर अधिक से अधिक करने को तत्पर रहते हैं, परंतु मित्र अवसर मिलते ही विश्वासघात कर जाते हैं। आप को कम से कम मित्रों की संख्या रखनी चाहिए। वैसे, आपके मित्रों की संख्या नगण्य ही है।

आपको कोई भी कार्य चाहे, वह व्यापार हो या कोई अन्य कार्य, साझे में नहीं करना चाहिए, क्योंकि अंत में हानि ही हाथ लगेगी।

प्रेम के क्षेत्र में भी आपको असफलता ही मिलेगी। भावुक व सरल हृदय के व्यक्ति होने के कारण आपको प्रेमिका धोखा ही देती है। धन, समय, यश, सम्मान पर चोट देकर चली जाती है। आपको अपनी पत्नी के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए।

सतर्क रहें इन रोगों से

गुरु व मंगल के प्रभाव के कारण रक्त-विकार, चर्म-रोग, उदर-विकार, काम-वासना में तीव्रता, गुप्त-रोगों की भी संभावना रहती है। गुरु की वक्रीय, अशुभ स्थिति होने पर हृदय-रोग, खुजली, चर्म-रोग, सन्निपात, उदरशूल, सेप्टिक, प्रमेह, उदर-विकार आदि के बढ़ने की संभावना रहती है।

अति-निद्रा, स्वादिष्ट भोजन, मादक वस्तुएं आपके स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद हैं। आपको हरी सब्जियां, फलों का रस, अनार, केला, अमरूद अधिक से अधिक खाने चाहिए। आयु के १३, २६, ३६, ४५, ४७, ५४, ५६, ६२, ६५, ७१, ७४, ८०, ८३, ८६वें वर्ष में विशेष सावधानी रखनी चाहिए, क्योंकि ये वर्ष स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं हैं।

शुभ तारीखें: ३, ९, १२, १८, २१, २७

हेराल्ड विल्सन

लिविंग स्टोन

बिस्मिल्ला

शशि कपूर

शुभ दिन: गुरुवार, सोमवार

शुभ रत्न: पुखराज (जिनका जन्म २० मार्च तक हुआ हो)
मूंगा (जिनका जन्म २० मार्च के बाद हुआ हो)

शुभ धातु: सोना

शुभ रंग: पीला, गुलाबी, बैंगनी, हलका-लाल रंग, ताम्र रंग

शुभ वर्ष: १२, १८, २१, २७, ३०, ३३, ३९, ४५, ४८, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९, ७२, ७५, ८१, ८४, ९०,

शुभ सन: १९८३, ८६, ८९, ९२, ९८, २००१, ७, १०

उन्नत समय: १९ फरवरी से २१ मार्च तथा २१ नवम्बर से २१ दिसम्बर के मध्य १, ३, १२—२१, ३० या ९, १८, २७ तारीखें, सोमवार या गुरुवार के दिन श्रेष्ठ शुभ दिवस हैं। इन दिनों में किसी भी नवीन-कार्य को प्रारंभ कर सकते हैं।

निर्बल समय: २० जून से २५ जुलाई के मध्य तथा जब आकाश में गुरु या मंगल ग्रह की स्थिति खराब हो।

समाज-सुधारक स्वामी दयानंद

महान संत, आर्य समाज के जन्मदाता स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म ४ मार्च को हुआ। गुरु के प्रभाव ने उन्हें महान संत बनाया। हिन्दू संस्कृति, धर्म की पुनर्स्थापना गुरु एवं मंगल ने करायी। परंतु हर्षल के प्रभावों को वह कम न कर सके। हर्षल ने उनके काफी आलोचक बनाये, उन्हें अविवाहित रखा, और दारुण दुःख के साथ जीवन का अंत दिया।

महान वैज्ञानिक आइंस्टीन का जन्म १४ मार्च को हुआ। आइंस्टीन का जीवन गुरु, सूर्य, बुध ग्रहों द्वारा संचालित होता रहा। गुरु, बुध ने उन्हें एक अन्वेषक वैज्ञानिक बनाया। सूर्य ने अपार कीर्ति व मान-सम्मान दिया। शरीर न होते हुए भी आत्मा का कारक ग्रह सूर्य आइंस्टीन को आज तक जीवित रखे है।

१७ मार्च को बंगला देश के निर्माता बंगबंधु शेख मुजीबुर्रहमान का जन्म हुआ। गुरु, सूर्य, शनि, नेपच्यून के नियंत्रण में शेख़ मुजीब का जीवन-यापन हुआ। गुरु सूर्य ने संघर्ष एवं निर्माण दिया। जीवनभर वह पाकिस्तान से संघर्ष करते रहे। सूर्य ने उन्हें एक सफल नेता के रूप में कीर्ति दी, आत्मबल दिया, अन्यथा तो शनि उन्हें जेल-यातनाएं व अनेक दारुण दु:ख ही देता रहा। शनि ने उन्हें निरंतर भटकाना चाहा, परंतु सूर्य, गुरु ने उन्हें भयंकर संघर्षों के दौरान बल दिया। गुरु, सूर्य ने उन्हें राष्ट्रपति का पद भी दिलाया, परंतु शनि के प्रभाव से उनकी हत्या हुई।

कैसा रहेगा यह माह ?

आपकी राशि का स्वामी गुरु वक्रीय है। राशि मीन में मंगल का प्रवेश हो गया है। आपमें गुरु के गुणों की न्यूनता व मंगल के गुणों में वृद्धि होगी। झगड़ा, वाद-विवाद, उदर-विकार, ऋण-वृद्धि, व्यय विशेष, आलस्य में वृद्धि आदि की संभावना बनती है। शनि भी २० मार्च को वक्रीय हो गया है, अतः २० से २८ मार्च के मध्य सावधानी बरतें, कोई अप्रिय घटना घट सकती है। गुरु कन्या में भी वक्रीय होने पर आपको अनेक संकटों से बचाता रहेगा। गुरु का उपाय करना हितकर है। मांगलिक कार्य होते-होते रुकेंगे।

कैसा रहेगा यह वर्ष

यह वर्ष आपके लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहेगा। २० मार्च तक का समय सामान्यत: अच्छा है। तत्पश्चात १४ अप्रैल तक दुर्घटना, व्यय, स्वास्थ्य-क्षीणता का भय रहेगा। उसके पश्चात व्यस्त अधिक रहेंगे। सामान्य आर्थिक लाभ आदि की भी संभावना। २० जून से २७ जुलाई के मध्य स्थानांतरण, मानसिक व शारीरिक क्लेश, गृह-कलह अथवा पारिवारिक कष्ट, व्यावसायिक उलझनें परेशानी देंगी। २८ जुलाई से २७ अक्तूबर तक का समय विविध प्रकार के विरोध, उलझनों, तनावों से भरा है, परंतु सामान्य रूप से सकुशल निकल जाएगा। २७ अक्तूबर को गुरु शनि से विलग होकर तुला राशि में प्रवेश करेगा, जिससे २४ दिसम्बर तक का समय उत्तम रहेगा। विवाह, संतान, मांगलिक कार्य, रुके हुए कार्य, नौकरी, प्रोन्नति आदि की संभावना है। २५ दिसम्बर से १० फरवरी, १९८२ तक सामान्य प्रगति। १० से २८ फरवरी तक का समय उन्नतिकारक। परिवार-वृद्धि, पद-वृद्धि, आय-वृद्धि के लिए यह वर्ष उत्तम होगा, परंतु संघर्षपूर्ण वर्ष कहा जाएगा।

—१८ एम.आई.जी.

रतनलाल नगर, कानपुर

होली : दो व्यंग्य परिदृश्य

होली

मुसकानों की
पिचकारी मारती
चार लड़कियों के बाप से
अस्पताल नर्स यूं बोली--
"लो संभालो
पांचवीं होली !"

फागुन

सतरंगी पिचकारी ले
तारकोली सड़क से
होली यूं बोली--
"आ, धो दूं तेरे
बदरंगे दाग
फागुन में आज !"

—डॉ. शशि शर्मा

१३-ए, डी.डी.ए. फ्लेट्स, बेर सराय
नयी दिल्ली-१६

तीन तुक्के

(बच्चनजी से क्षमा-याचना सहित)

पास प्रिये तुम हो !

पास प्रिये ! तुम हो, चीनी हो
गेहूं - घी सस्तावाला
पल-दो पल ही कभी आ सके
घर, सूरज का उजियाला
भाग-दौड़ का शोर, न नारे
भाषण हों समाजवादी
यह स्थल ही स्वर्ग बने
यह खोली अपनी मधुशाला

कहां सुधा अंगूरी !

कहां सुधा अंगूरी अब तो
सिर्फ अभावों की हाला
पीस रहा बौनी जनता को
महंगाई का यम काला
गोदामों के चूहे राशन
अधिक पा रहे इंसा से
और जले पर नमक छिड़कता
नेता हर बक-बकवाला

मेरी अर्थी के संग रखना !

मेरी अर्थी के संग रखना
चंद फाइलें, कुछ हाला
'राम-राम' का जाप न करना
जपना 'सर-सर' की माला
मेरी अस्थि विसर्जित कर के
दपतर में लिखवा देना
'जब तक संभव था जीवन में
इसने हर निर्णय टाला'

—गोपाल चतुर्वेदी

-डी १/२१०, चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली-२३

तबादलों की राजनीति में उलझा ट्यूटन

शिष्टमंडल अत्यंत क्रुद्ध नजर आ रहा था। नेता के नथुने बार-बार फड़क रहे थे। अन्य सदस्यों की भृकुटियां भी तनी हुई थीं, वे अत्यंत उत्तेजित थे। उनकी मुख-मुद्रा से ऐसा लग रहा था गोया कि आज वे आखिरी फैसला कराये बिना नहीं मानेंगे। घड़ी की टिक-टिक के साथ प्रतीक्षा की घड़ियां लंबी होती चली जा रही थीं। बंगले के बाहर सैंकड़ों की संख्या में उनके साथी जमा थे, जो उन्हीं के साथ जुलूस बनाकर आये। उनके द्वारा लगाये गये नारे बार-बार वातावरण को गुंजा रहे थे। मुख्यमंत्री का निजी-सचिव शिष्ट-मंडल को बार-बार आश्वस्त करने का प्रयास कर रहा था, मगर उतनी ही तेजी से उनकी व्यग्रता बढ़ती जा रही थी।

तभी दो-तीन सहयोगियों और कुछेक अधिकारियों के साथ मुख्यमंत्री ने हाल में प्रवेश किया। अभिवादन के आदान-प्रदान के बावजूद हाल में व्याप्त तनाव कम नहीं हुआ।

"ओह! आइए, आइए। बहुत खुश हूं मैं, अपने आपको आपके बीच पाकर," मुख्यमंत्री महोदय ने गला खंखारते हुए कहना शुरू किया, "मैं शिक्षा की समस्या पर ही विचार कर रहा था। इसी कारण आप लोगों को कुछ प्रतीक्षा करनी पड़ी।"

"जी, आप शिक्षा की ही समस्याएं देखते रहेंगे या कि हम शिक्षकों की ओर भी ध्यान देंगे," शिष्टमंडल के नेता ने तीखे स्वर में कहा।

"शिक्षकों की समस्याएं सुलझाये बिना मैं भला शिक्षा के बारे में क्या सोच

सकता हूं ?" स्थिति की गंभीरता देखते हुए मुख्यमंत्री ने वातावरण को हलका करने की चेष्टा करते हुए कहा, "अरे हां, आप लोग अभी तक खड़े कैसे हैं ? बैठिए भई, बैठकर निश्चिंतता से बात कीजिए। आखिर आप की समस्या क्या है ?"

"जब से माननीय शिक्षामंत्री ने कार्य संभाला है, हम लोगों का तबादलों के मारे बुरा हाल कर दिया गया है," शिष्ट मंडल के नेता ने ज्ञापन की एक प्रति आगे बढ़ाते हुए कहा।

मुख्यमंत्री ने अपना चश्मा लगाया और ज्ञापन पर सरसरी निगाह डालते हुए कहा, "अरे भई, इतनी-सी बात पर आप परेशान हो गये। अरे, तबादले तो प्रशासनिक कार्यविधि का एक अंग है। सभी कर्मचारियों के तबादले होते ही रहते हैं।"

"मगर इतनी तेजी से नहीं," शिष्ट मंडल के एक अन्य सदस्य ने बीच में ही बोलना शुरू किया, "श्रीमानजी, शायद आपको पता न हो, मगर हालत यह है कि एक-एक शिक्षक के तीन महीनों में चार-चार, पांच-पांच बार तबादलों के आदेश निकले हैं।"

"क्या यह एक गरीब शिक्षक के साथ अन्याय नहीं कि उसे फुटबॉल की भांति एक स्थान से दूसरे स्थान पर इतनी जल्दी-जल्दी स्थानांतरित कर दिया जाए ?" एक अन्य उत्तेजित सदस्य ने कहा।

"यह सब सरासर बदले की भावना से किया जा रहा है। जहां कुछ शिक्षकों का बार-बार तबादला हो रहा है, वहीं कुछ ऐसे शिक्षक भी हैं, जिन्हें संभवतः आपके राजनीतिक दल का संरक्षण प्राप्त है और वे वर्षों से एक ही स्थान पर टिके हुए हैं। उनका तबादला क्यों नहीं होता ?" नेता फिर गरजे।

"और तो और, हम लोग जब जुलूस बनाकर नारे लगाते हुए आपसे मिलने आ रहे थे, तो पुलिस ने हम पर डंडे बरसाये और हमारे कुछ साथियों को गिरफ्तार कर लिया," शिष्ट मंडल का एक अन्य सदस्य बोला।

"मैं समझता हूं . . .।" मुख्यमंत्री कहने लगे कि शिष्ट मंडल के अन्य सदस्य बीच में ही बोलने लगे, "हम यह अन्याय नहीं सहेंगे। हमें न्याय चाहिए।"

"शांत ! शांत !!" मुख्यमंत्री ने अपील की, "देखिए, इतना उत्तेजित मत होइए। आप लोग राष्ट्र के निर्माता हैं। कुछ समझदारी से काम लीजिए।"

"मगर हमने जो आरोप गिनाए हैं, उनका आपके पास क्या जवाब है ?" शिष्ट मंडल के नेता ने पूछा।

"आप लोग शिक्षक हैं। पढ़े-लिखे हैं। आप में से कुछ विज्ञान के शिक्षक भी होंगे," मुख्यमंत्री ने भोलेपन से पूछा।

"हां, हां, हम विज्ञान पढ़ाते हैं," चार-पांच सदस्य एक साथ बोले।

"तो फिर आप न्यूटन के नियमों से अनभिज्ञ हैं क्या ?" मुख्यमंत्री ने जिज्ञासा प्रकट की।

"न्यूटन का तबादलों से क्या संबंध ?" एक विज्ञान-शिक्षक ने हैरानगी से पूछा।

"अरे भई, यह जो सारी स्थिति आप बता रहे हैं, उसे न्यूटन के गति के नियमों के संदर्भ में समझने की कोशिश करें, तो कुछ भी अटपटा नहीं लगेगा। सब कुछ निहायत वैज्ञानिक ढंग से और सही-सही रूप से हो रहा है," कहकर मुख्यमंत्री मुसकुराए।

"क्या मतलब है आपका ?" शिष्ट-मंडल के एक सदस्य ने पूछा।

"भई मतलब साफ है। न्यूटन का गति का प्रथम नियम कहता है कि कोई वस्तु यदि स्थिर है, तो स्थिर ही रहेगी, जब तक कि उस पर कोई बाहरी बल न लगाया जाए। इसी प्रकार न्यूटन का दूसरा नियम यह बताता है कि जो वस्तु चल रही है, वह तब तक चलती रहेगी, जब तक कि उस पर भी कोई बाहरी बल न लगे।" मुख्यमंत्री महोदय हॉल में छा रही निस्तब्धता से प्रभावित होकर आगे बोले, "मतलब साफ है। कुछ शिक्षक तबादलों के आदेश लिये चल रहे हैं। एक जगह से दूसरी जगह। निरंतर चलते भी रहेंगे। न्यूटन का गति का नियम भी यही कहता है। अरे भई, जब तक किसी विधायक का या प्रभावशाली आदमी का बाहरी बल नहीं लगेगा, तब तक वह क्यों नहीं चलता रहेगा।"

"उसी प्रकार जो शिक्षक एक ही जगह अटल है, वह भी अटल ही रहेगा। बतर्ज न्यूटन जब तक कोई बाहरी बल आकर उसको वहां से नहीं हटाएगा, भला वह वहां से कैसे 'मूव' करेगा, सब कुछ नियमानुसार ही तो है। रही 'लाठी चार्ज' या गिरफ्तारी की बात, तो उसे समझने के लिए हमें न्यूटन के तीसरे नियम का अध्ययन भी करना होगा। तीसरा नियम यह कहता है कि किसी भी क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होगी। मतलब यह कि आप लोगों ने नारेबाजी, जुलूस आदि के रूप में जो क्रिया की, उसकी प्रतिक्रिया होना न्यूटन के नियम के अनुसार बिलकुल ठीक है। क्यूं, है कि नहीं ?"

हॉल में उपस्थित सभी लोग स्तंभित से एक-दूसरे का मुंह देख रहे थे।

—६३, मेड़तिया सिलावटों का बास,
जोधपुर

एक नवविवाहिता दुल्हन विधवा हो गयी और बीमा कंपनी के आफिस पहुंचकर बोली, "मैनेजर साहब, मेरे पति के बीमे का रुपया दिलाइए।"
मैनेजर ने कहा, "इस दुर्घटना को सुनकर बहुत दुःख हुआ।"
विधवा ने कहा—"जी हां, मर्दों का हर स्थान पर यही हाल होता है, जब औरत को चार पैसे मिलने का मौका आता है, तब उन्हें बड़ा दुःख होता है।" —मदनमोहन लोहिया

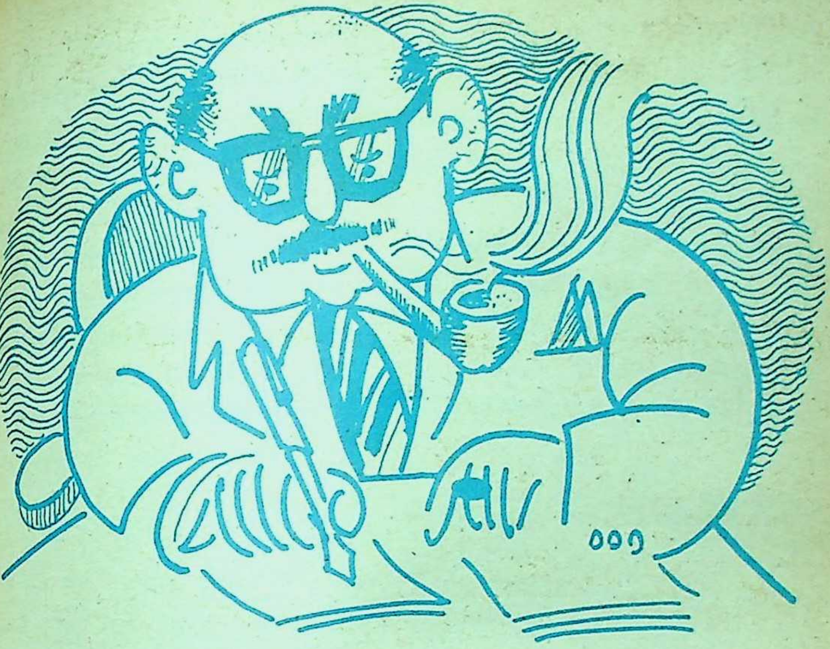

बॉस किस्म किस्म के

• बरसानेलाल चतुर्वेदी

बॉस बड़ा अफसर होता है। चूहे बिल्ली से डरते हैं, मातहत बॉस से डरते हैं। कुछ लोगों को सपने में भी बॉस दिखलायी पड़ते हैं। बॉस बैसाखनंदन का बच्चा हो; तो भी बॉस के नाते शेर का बच्चा माना जाता है। मातहत शेर का बच्चा हो, तो भी वैसाखनंदन का बच्चा माना जाता है--ये धारणा अप्रिय सत्य है, कहना नहीं चाहिए।

बॉस जन्मजात नहीं होता, पृथ्वी पर जन्म लेकर, बॉसत्व को प्राप्त करता है। बॉसत्व प्राप्त करने के अभियान में बड़ा बाप, बड़ा ससुर, बड़ा मामा, बड़ा ताऊ, ये सब सहारा लगाते हैं।

बॉस बनते ही वह अकड़कर चलने लगता है, चमचे उसे जकड़ लेते हैं, ज्यादा

अकड़ने पर चपरासी उसे पकड़ लेते हैं। बॉस नर और मादा दोनों प्रकार के पाये जाते हैं। बॉस सुंदर-असुंदर, मूर्ख-चतुर, क्रोधी-शांत स्वभाव, ईमानदार-बेईमान, योग्य-सिफारिशी यानी तरह-तरह की किस्म के होते हैं।

जानकार बॉस : इस तरह के बॉस कम पाये जाते हैं। समझदार मातहत इनसे बहस नहीं करते। ये निराले ढंग से ही सही, काम निबटाते हैं। खाली बॉस मातहत को परेशान करता है, ये व्यस्त रहें, इसी में मातहत का कल्याण है।

अज्ञानी बॉस : 'नाच न जाने, आंगन टेढ़ा--' ऐसे ही लोगों के लिए कहा गया है। ऐसा भी देखा गया है कि जिस विभाग के ये बॉस होते हैं, उस विभाग के कार्य से इनका तनिक भी संबंध नहीं होता। लेकिन इन्हें भागलपुर की जेल में भी ले जाकर पूछा जाए कि उन पर उस कार्य की बारहखड़ी भी आती है क्या? वे कहेंगे वे उस कार्य में पूर्ण निष्णात हैं। ऐसे बॉस की टेबल के आगे दरबार लगा हुआ पाया जाता है। घुटे हुए मातहत ये जानते हुए कि वह अनर्गल बक रहा है, फिर भी उसकी 'हां' में 'हां' मिलाते हैं। ऐसे बॉस के कमरे में 'फ्री फार ऑल' का मनोरम दृश्य दृष्टिगोचर होता है। मूर्खतापूर्ण वाद-विवाद को दफ्तर की भाषा में 'डिस्कशन' कहा जाता है। कार्य न करना हो, या करना न आता हो, या उसे टालना हो, तो 'डिस्कशन' रामबाण का कार्य देता है। शरीर को तथा मस्तिष्क को क परेशान करना हो, तो दफ्तर प्रारंभ हो ही 'डिस्कशन' प्रारंभ कर देना चाहि और कार्यालय के समाप्त होने के बाद कुछ समय उसे चालू रखना चाहिए।

उपदेशक बॉस : ऐसा बॉस जो अ आपको सर्वज्ञ समझता हो तथा जिसे बिन उपदेश दिये खाना न पचता हो, तथा समझता हो कि अपने मातहतों के ज्ञान-चक्षु खोलने के लिए ही उसने अवतार लिया है। उसके उपदेशों तथा ज्ञान की बातों को एक आस्थावान भक्त की तरह ग्रहण करना चाहिए। 'मेरो तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' मीरा की यह पंक्ति सदैव ध्यान में रखनी चाहिए। 'मो सम कौन कुटिल खल कामी'-जैसा भाव प्रदर्शन करना लाभदायक रहता है। ऐसे बॉस से बहस करना 'मेमो' को निमंत्रण देना है, तथा अपनी गुप्त चरित्रावली में 'जिद्दी, अकारण बहस करनेवाला' आदि 'गुणों' को अंकित कराने का बीमा-जैसा कराना है।

फाइल-वाहक बॉस : जो बॉस कोई कार्य दफ्तर में निपटाने में अक्षम हो, उसे आप फाइल घर ले जाते हुए पाएंगे। इसके अनेक लाभ हैं। दुनिया ये समझे कि दफ्तर के कार्य के लिए कैसा समर्पित बॉस है कि घर पर भी फाइल निबटाने में व्यस्त रहता है। दूसरा, फाइल घर ले जाने से आफिस की कार को घर ले जाने का औचित्य सिद्ध हो जाता है। प्रातः पुनः दफ्तर वापस लाने में भी फाइलें ही सहा

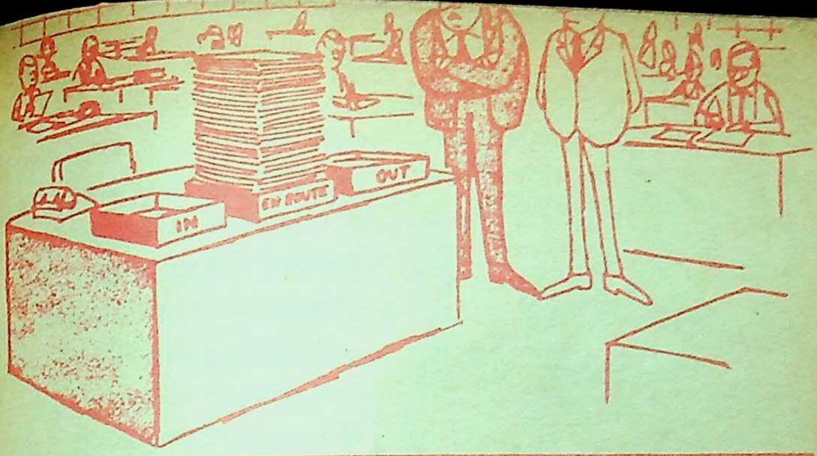

"बॉस, इन फाइलों के लिए बीच का रास्ता ही नहीं है..."

यक होती हैं। अक्षमता छिपाने के लिए घर कवच का काम देता है, चमचा-मातहत घर आता है और वहीं फाइल निपटा जाता है। कहीं-कहीं 'मेडम बॉस' भी फाइल निपटाते देखी गयी हैं।

मीन-मेख बॉस : ऐसा बॉस, जो हमेशा मीन-मेख निकाले। आप अच्छे से अच्छा 'ड्राफ्ट' बनाकर ले जाएं, वह चाहे 'कामा' ही काट देगा, किंतु नाक-भौं अवश्य सिकोड़ेगा। मातहत के कार्य की पूर्ण प्रशंसा करना वह गो-हत्या समझता है। वह शक्की स्वभाव का होता है। उसे भ्रम होता है कि कहीं मातहत के कार्य का अनुमोदन करने पर उसकी छुट्टी तो नहीं कर दी जाएगी। इस चक्कर में वह कभी-कभी शुद्ध को अशुद्ध भी कर देता है। 'किसी ने 'माइंड' ही 'एप्लाई' नहीं किया', यह उसका तकिया कलाम होता है। बने-बनाये काम में रोड़ा अटकाने में, देर करने में उसे अत्याधिक सुख प्राप्त होता है।

टूर-प्रेमी बॉस : कुछ बॉस ऐसे होते हैं कि उनका दफ्तर में मन नहीं लगता। या तो अकारण ही कोई मीटिंग रख लेंगे या कोई कांफ्रेंस रख लेंगे और उसमें अपना पूरा दिन निकाल देंगे। ऐसे टूर-प्रोग्राम बनाएंगे, जिनका उद्देश्य भारत-दर्शन या विदेश-भ्रमण होता है। मातहतों की 'प्लेटून' रहते हुए भी वे टूर पर स्वयं जाने को तत्पर रहते हैं। मातहत बॉस के टूर-अभियान में पूर्ण निष्ठा से सहायता करते हैं। साहब टूर पर गये, तो आफिस में पूर्ण शांति का वातावरण छा जाता है। आप अपने किसी कार्य के बारे में पूछिए, एक ही उत्तर मिलेगा, "साहब टूर पर हैं।" कहीं क्रोध में यह मत पूछ बैठिएगा कि, "क्या साहब पूरे दफ्तर को अपने साथ टूर पर तो नहीं ले गये?"

बॉस अनंत, बॉस-कथा अनंता।

—१३/७ शक्तिनगर, दिल्ली—७

संस्कृत-साहित्य में व्यंग्य-विनोद

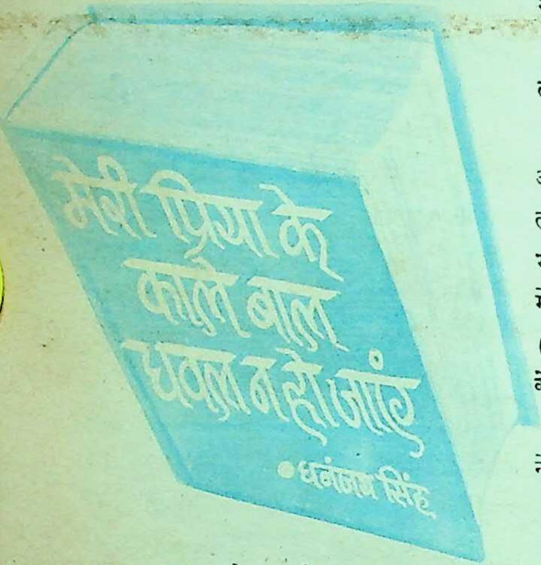

मेरी प्रिया के काले बाल धवल न हो जाएं

• धनंजय सिंह

संस्कृत साहित्य को बहुत गहन विषयों से संपन्न कहा जाता है। यह सच है, लेकिन यह भी सच है कि संस्कृत साहित्य के अमर-काव्यों के महान लेखकों ने गंभीर से गंभीर वर्णनों के बीच हास्य-व्यंग्य तथा विनोद को भी छोड़ा नहीं है। संस्कृत साहित्य में ऐसे अनेक प्रसंग व्यंग्य-विनोद की छटा से बिखरे पड़े हैं। यहां प्रस्तुत हैं कुछ ऐसे ही अंश।

एक बार अनेक कवि राजा भोज की प्रशंसा में श्लोक रचना कर के राजा को सुना रहे थे। अंत में कालिदास की बारी आयी। कालिदास ने श्लोक सुनाना आरंभ किया, तो सब स्तब्ध रह गये और अनिष्ट की आशंका से उनके हृदय कांप उटे। लेकिन कालिदास अविचलित भाव से पूरा श्लोक सुना गये। श्लोक का अंतिम चरण सुनकर सबके मुख-मंडल पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। श्लोक इस प्रकार था --

यथा यथा भोज-यशो विवर्धते
सितां त्रिलोकीमिव कर्तुमुद्यते।
तथा तथा मे हृदयं विदूयते
प्रियालकाली धवलत्वशंकया।"

अर्थात--जैसे-जैसे अपनी उज्ज्वलता से तीनों लोकों को धवल करता हुआ राजा भोज का यश फैलता जा रहा है, वैसे-वैसे मेरा हृदय विदीर्ण हुआ जाता है कि कहीं (उसके प्रभाव से) मेरी प्रिया के काले केश धवल न हो जाएं।

ऐसे चमत्कारपूर्ण वर्णन से कालिदास ने सबका हृदय जीत लिया।

कालगोटक शंकया

राजा भोज को, जो कोई भी श्लोक रचकर सुनाता, वह उसे एक हजार स्वर्ण-मुद्राओं का पुरस्कार देता। एक व्यक्ति ने अपनी निर्धनता से तंग आकर सोचा क्यों न इसी प्रकार धन प्राप्त करने की कोशिश की जाए। लेकिन उसकी समस्या थी कि श्लोक कैसे रचे? वह नदी के किनारे खड़ा सोच-विचार में पड़ा हुआ था। तभी उसे नदी के तट पर खड़े जामुन के पेड़ पर पके जामुन दिखायी पड़े। तत्काल

उसे सूझा—'**जंबू फलानि पक्वानि**'

वह उत्साहित हुआ कि श्लोक का एक चरण तो बना। तभी उसने पके जामुनों को नदी के जल में गिरते देखा। उसे फिर सूझा—'**पतन्ति यमुना जले**' फिर उसने देखा कि गिरे हुए जामुनों को मछलियां नहीं खा रहीं। इसीलिए उसने जोड़ा—

'**मत्स्याः तान्न खादन्ति**'

इस प्रकार श्लोक के तीन चरण पूरे हो गये। लेकिन चौथे चरण पर आकर समस्या फिर अटक गयी। बहुत सोचने पर भी उसे कुछ नहीं सूझा, तो उसने सोचा और क्या हो सकता है मछलियां नहीं खातीं तो जामुन डूब जाते हैं। अतः उसने चौथा चरण यों जोड़ा—'**अग्रे डुब्बक डुब्बका**' श्लोक पूरा हो गया, तो वह खुशी-खुशी भोज के दरबार की ओर चल दिया।

रास्ते में उसकी भेंट कालिदास से हो गयी, जिसे राजा ने किसी बात पर अप्रसन्न होकर नगर-निर्वासित कर दिया था। वह व्यक्ति कालिदास को जानता नहीं था। कालिदास के पूछने पर उस व्यक्ति नें बताया कि वह धन पाने की लालसा से श्लोक रचकर राजा को सुनाने जा रहा था। कालिदास ने उससे अपना श्लोक सुनाने को कहा, तो उसने सुना दिया। श्लोक सुनकर कालिदास ने सोचा राजा काव्य-प्रेमी है। श्लोक के चौथे चरण में काव्य-दोष के कारण राजा अप्रसन्न हो जाएगा और इसे पुरस्कार नहीं देगा। अतः उसने चौथे चरण को बदलकर उसके स्थान पर '**कालगोटक शंकया**' कर दिया।

राजा भोज ने कालिदास को निर्वासन का आदेश तो दे दिया था, पर बाद में उसके सद्गुणों के कारण, उसके लिए व्याकुल रहने लगे थे। तभी उस निर्धन व्यक्ति ने आकर राजा को श्लोक सुनाया। श्लोक के तीन चरण साधारण थे, अतः राजा को कोई शंका नहीं हुई। लेकिन चौथा चरण सुनते ही राजा समझ गये कि इतनी चमत्कारपूर्ण उक्ति इतने साधारण व्यक्ति की नहीं हो सकती। अवश्य इसकी भेंट कहीं कालिदास से हुई है। अतः कालिदास का पता लगाने की इच्छा से उन्होंने उस निर्धन व्यक्ति को कारावास में डाल देने का आदेश दे दिया। निर्धन व्यक्ति ने राजा से इसका कारण बताने की प्रार्थना की, तो राजा ने कहा कि यह श्लोक उसका नहीं हो सकता, अवश्य ही उसने कहीं से चोरी किया है। राजा की बात सुनकर निर्धन व्यक्ति हाथ जोड़कर बोला, "महाराज अपराध क्षमा करें। श्लोक तो मेरा ही है। हां, इसका चौथा चरण अवश्य एक आदमी ने बदलवा दिया था," यह कहकर उसने अपने श्लोक का चौथा चरण राजा को सुना दिया। राजा समझ गये कि चौथा चरण बदलनेवाला व्यक्ति निश्चय ही कालिदास है। उन्होंने प्रसन्न होकर निर्धन व्यक्ति को एक सहस्र स्वर्ण-मुद्राएं भेंट कीं और उसके बताये स्थान से कालिदास को सम्मानपूर्वक दरबार में बुलवा लिया।

—द्वारा, 'कादम्बिनी', नयी दिल्ली

तनाव से मुक्ति

● **डॉ. सतीश मलिक**

के. डी. एम., भद्रपुर (नेपाल) : मुझे कभी-कभी बहुत ही डरावने सपने आते हैं। उस समय, सपने में ही मैं चिल्लाने तथा भागने की कोशिश करता हूं, लेकिन कर कुछ भी नहीं पाता। मैं अपने शरीर में अजीब तरह की तरंगें उठती हुई अनुभव करता हूं। नींद खुलने पर मैं अपने आप को पसीने से लथपथ पाता हूं। ऐसा क्यों और कैसे होता है ? और इससे छुटकारे का उपाय बताइए।

मन के दो भाग हैं—चेतन और अचेतन। चेतन मन का आपको ज्ञान रहता है, परंतु अचेतन मन का नहीं। आपको जो सपने आते हैं, उनसे ज्ञात होता है कि आपके अचेतन मन में तनाव व चिंता अधिक हैं। आपकी यह चिंता मनोस्थिति हो सकती है यह हाल कुछ घटनाओं से संबंधित न होकर अ में घटी घटनाओं से संबंधित कभी-कभी बचपन में घटी कोई दुर्घटना मन में घर कर जाती है, जि आपकी भावनाओं को भारी आघात हो। यदि आप हमें अपने बीते हुए जी की घटनाओं-दुर्घटनाओं को सविस्त लिख भेजें, तो उनके विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष निकाला जा सकता है। एक और क्या आप अपने को जितना स्वप्न विवश पाते हैं, कहीं उतने ही विव आप वास्तविक जीवन में तो नहीं हैं

बातों का सिलसिला मेरे अंद

कल्पना शर्मा, भटिंडा : मैं बी. पास ३५ वर्षीय गृहणी हूं। बच्चा अ हुआ नहीं, और आर्थिक अभाव व मान सिक तनाव के कारण मैं अभी बच्चे इच्छुक भी नहीं हूं। बचपन में मुझे मातृ हीन, घुटता-टूटता-सा वातावरण मिला। पिताजी ये इल्जाम देते रहे कि मैं उनकी बेटी नहीं हूं। एक मनचाहे आदमी से शादी करनी चाही, तो पिताजी ने इंकार कर दिया।

तीन वर्ष पूर्व पिताजी की मृत्यु हो गयी, तो भाई ने मुझे धोखा देकर सारी संपत्ति हथिया ली और मुझे दुत्कारना शुरू कर दिया। तंग आकर मैंने एक गैर-जातीय व्यक्ति से उसके मां-बाप की मर्जी के विरुद्ध शादी कर ली।

मेरी परेशानी यह है कि मुझे लगता है कि मेरी कमर के नीचे के हिस्से से कोई बोलता है और मैं सुनती हूं। मैं तो किसी से बात नहीं करती, पर लगता है कि मेरे अंदर बातों का अटूट सिलसिला जारी है। कभी-कभी एकदम ठंडा-सा पानी बहता हुआ-सा, कभी छाती पर कुछ खिंचता हुआ-सा महसूस होता है। बताइए मैं क्या करूं?

आप एक प्रकार के मनोरोग से पीड़ित हैं। यह मनोरोग किसी एक कारण से नहीं, अपितु कई कारणों के मिल जाने से हो जाता है। जैसा कि आपको बचपन से दुःख, अपमान व आक्षेपों को सहना पड़ा, प्यार-सम्मान नहीं मिला। फिर भाई ने धोखा दिया। फिर असंतुष्ट दांपत्य-जीवन, आर्थिक विषमता और बच्चे का अभाव आदि कई ऐसे कारण हैं, जिन सबके मिल जाने से ऐसा हुआ है। आपको तुरंत मनोचिकित्सक से मिलकर इलाज कराना चाहिए। अपनी यह समस्या और हमारा यह उत्तर भी अपने पति को पढ़वा दीजिए।

मिरगी के दौरे पड़ते हैं

रमेश वेगड़, रायपुर : मेरे ३० वर्षीय भाई को पिछले ढ़ाई वर्ष से दौरे पड़ने लगे हैं, अब तक पांच बार पड़ चुके हैं। दौरा आने पर वह गिर पड़ता है, उसके मुंह से झाग आने लगता है। कुछ देर बाद वह ठीक हो जाता है। उसे इस बात का जरा भी ज्ञान नहीं रहता कि वह कैसे गिरा, उसे क्या हुआ। एक डॉक्टर का कथन है कि उसे मिरगी है, जिसका एलोपैथी में कोई उपचार नहीं है। क्या करना चाहिए?

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय, एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें।

—संपादक

आपके भाई को मिरगी की बीमारी है। इस बीमारी के कुछ लक्षण ये भी हैं कि दौरे के दौरान मल-मूत्र का त्याग, दांतों के नीचे आकर जीभ का कट जाना, नींद के दौरान दौरे आने पर चारपाई से नीचे गिर जाना। सोचिए, क्या ऐसा भी आपके भाई के साथ हुआ है? यदि हुआ है तो निश्चित ही उसे मिरगी है।

मिरगी की बीमारी उसे क्यों हुई, यह जानना बहुत जरूरी है। इसके लिए दिमाग के एक्स-रे व ई. ई. जी. तथा आंख की जांच (फंडस एक्जामिनेशन) कराइएगा। किसी बड़े अस्पताल में ये जांचे कराने के उपरांत उपचार करायें। ऐलोपैथी में इस रोग का इलाज है, जिसमें आपका भाई ठीक हो सकता है।

आप उसे आग, पानी (नदी, तालाब आदि) के पास और छत आदि पर अकेला न जाने दें, तथा उसे किसी भी प्रकार के वाहन को न चलाने दें। ये सावधानियां अवश्य बरतें।

सर्दी में भी पसीना

सुमन, लखनऊ : मेरे पति २५ वर्षीय, एम. एस-सी., प्रथम श्रेणी, बैंक में क्लर्क

घरेलू-उपचार

अनिद्रा रोग

काम, क्रोध, लोभ, मोह व असंतोष आदि मानसिक-विकारों के कारण व्यक्ति आज इतना अशांत बन चुका है कि उसको स्वभाविक नींद के लिए तरसना पड़ता है, आज अनिद्रा-रोग सारी दुनिया में एक महारोग की तरह फैलता जा रहा है। निम्नलिखित किसी एक उपाय से यह रोग दूर हो सकता है—

रात में सोते समय एक सेव का मुरब्बा खाकर गर्म दूध, चार सप्ताह तक पीयें।

दस ग्राम हरा धनिया एक चम्मच चीनी के साथ पीसें और उसे एक प्याले पानी में घोलकर एक माह तक रात में सोने से पहले लें।

दस ग्राम सौंफ, २५० ग्राम पा २५० ग्राम दूध मिलाकर उबालें। उ आधे रह जाने पर एक चम्मच गाय क शुद्ध घी तथा एक चम्मच चीनी मिलाक चार सप्ताह तक पीयें।

२५ ग्राम काली मिर्च, ५० ग्रा सोफ, ५० ग्राम चीनी को एक साथ पीसक चूर्ण बनाकर रख लें। २० ग्राम दही मे आधा चम्मच इस चूर्ण को मिलकार सुबह शाम खायें।

जायफल को पानी या आग के धु में पीसकर पलकों पर लगाकर सोयें।

रात में सोने से पूर्व गर्म पानी से स्नान कर लें।

एक चम्मच नीबू के रस को दो चम्मच शहद में मिलाकर सोने से पूर्व खायें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा
बी ५/७, कृष्णानगर, दिल्ली-११००५१

हैं। यद्यपि वह अपने पद से संतुष्ट नहीं हैं, लेकिन फिलहाल यह उनके लिए विशेष चिंता का कारण नहीं है। वह भावुक किस्म के हैं और आसपास की उन घटनाओं से भी, जिनसे उनका कोई संबंध नहीं होता, मानसिक रूप से परेशान हो जाते हैं। शारीरिक रूप से भी बहुत स्वस्थ नहीं है। पिछले साल टाइफाइड से भी दो माह पीड़ित रह चुके हैं।

पिछले दो सप्ताह से दिसंबर को ठंडी रात में भी सोते समय उनके शरीर से पसीना निकलता रहता है। क्या यह किसी रोग का लक्षण है या फिर चिंताओं का परिणाम ?

क्योंकि आपके पति भावुक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं तथा चिंताओं से जल्दी ही प्रभावित हो जाते हैं। शरीर से भी कमजोर हैं और पूर्णरूपेण स्वस्थ नहीं हैं, ऐसी स्थिति में चिंताएं मन को ही नहीं, शरीर को भी प्रभावित कर डालती हैं। परंतु मेरे विचार से इस प्रकार पसीने आने की बात को हम केवल चिंता के कारण ऐसा हो रहा है, मानकर छोड़ नहीं सकते। आप उनकी थाइराइड नामक ग्रंथि का परीक्षणकरायें। इस प्रकार के परीक्षण की लखनऊ मैडीकल कालेज में व्यवस्था है। ●

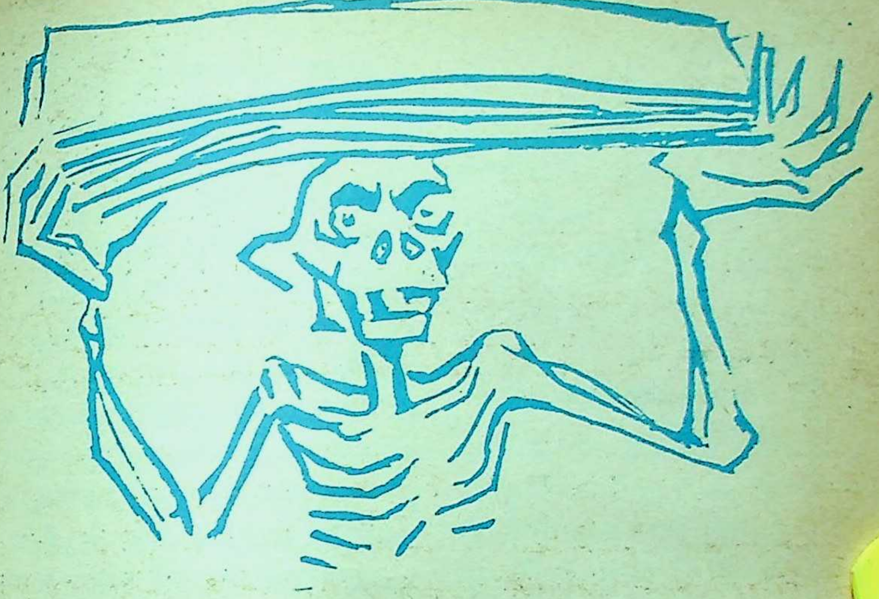

बंगला हास्य-साहित्य में भूत

• किसलय बंद्योपाध्याय

पता नहीं कब, किसने, सबसे पहले, भूतों के अस्तित्व के बारे में सोचा था, और इनके बारे में सबसे पहले लिखा था, लेकिन आज भी हम इस अतिमानवीय अस्तित्व के बारे में फिर भी अंधेरे में हैं। युगों से भूतों के अस्तित्व को नकारा जाता रहा है, और लेखकों, साहित्यकारों ने इसी नकारे जानेवाले अस्तित्व को अपना विषय बनाया है--बंगला-साहित्य में भूतों का अस्तित्व विशेष रूप से दर्शनीय है।

हालांकि, उपदेशात्मक लेखों में अक्सर यह लिखा जाता रहा है कि भूतों का कोई अस्तित्व नहीं है। इस बारे में, क्यों बच्चों को आरंभ से ही आगाह कर दिया

ऊपर के रेखाचित्र : 'भूत-पुराण' के आवरण से साभार, चित्रकार : सूर्य सेन

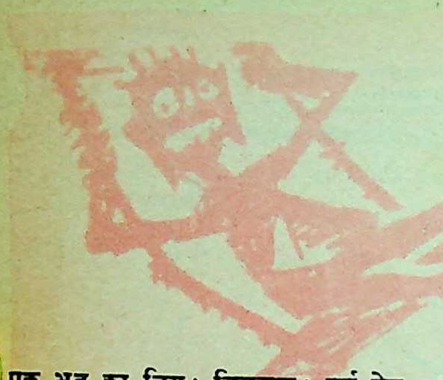

एक भूत का चित्र : चित्रकार : सूर्य सेन

जाना चाहिए और उन्हें ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए कि वे भूतों के बारे में सुनकर डरें नहीं, लेकिन बंगला में बच्चों के ही साहित्य में भूतों की भरमार है और यहां तक कि साहित्य के घुरंधर विद्वानों ने भूतों के बारे में लिखने के अलावा उनके काल्पनिक चित्र भी बनाये हैं।

रवींद्रनाथ ठाकुर ने १९३६ में एक कहानी 'से' (हिंदी शब्दार्थ-'वह') में एक अशरीरी की कल्पना की है, और उसके ढेर-सारे चित्र भी बना डाले हैं—

> ऐन उसी वक्त कमरे में एक आवाज हुई, जैसे कोई हवा से बनी चप्पलों को पहनकर पूरे कमरे में 'हुस-हुस' आवाजकर टहल रहा हो। चौंक के उठ बैठा और लैंप को उजागर कर देखा, तो लगा कि कमरे में कुछ आया है, किंतु वह क्या है, कैसा है, कौन चीज है—कुछ भी समझ नहीं पाया। दिल जोरों से धड़कने लगा, लेकिन फिर भी गले में जोर देकर चिल्लाया, "कौन हो तुम, पुलिस बुलाऊं क्या?"
>
> अद्‌भुत घड़घड़ाहटभरे स्वर में उस जीव ने कहा, "क्यों भई, पहचान नहीं पाये क्या?...मैं हूं, तुम्हारी पूपूदीदी का 'वह'...यहां पर मेरा न्यौता था..."
>
> मैंने कहा, "फालतू बात मत करो, ये क्या चेहरा बना रखा है तुमने?"
>
> उसने कहा, "चेहरा तो खो बैठा हूं।"
>
> "खो बैठे हो?...क्या मतलब?"
>
> "मतलब कहूं।...पूपूदीदी के घर में खाना था...इसीलिए सुबह-सुबह उठकर नहाने चला गया। कुल डेढ़ बजे थे। तेलीनी पाड़ा के घाट पर बैठकर, कसकर मुंह रगड़ रहा था कि मजे-मजे में नींद आ गयी और 'झप' से पानी में गिर गया। उसके बाद पता नहीं कि क्या हुआ, ऊपर आया या नीचे गया

रवींद्र रचनावली (सातवा खंड) से साभार

चित्रकार : रवींद्रनाथ ठाकुर

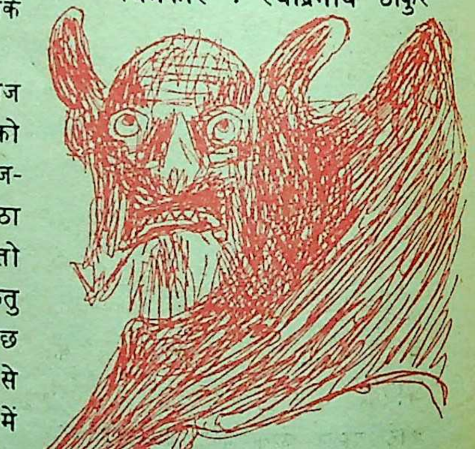

कुछ भी नहीं मालूम...स्पष्ट पता चला कि मैं नहीं हूं।"

"तुम्हारी सौं..."

"अरे-अरे...सौगंध की बात नहीं, कहे जाओ...।"

"खुजली मच रही थी शरीर पर, खुजलाने लगा, तो पता चला कि न तो नाखून हैं, और न ही खुजली। भयानक दुःख हुआ। जोरों से रोने लगा, किंतु बचपन से जो 'हू-हू' मिली थी, वह कहां गयी? ... जितना भी रोऊं, न तो आवाज ही निकले, और न ही कोई सुन पाये...सबसे अधिक दुःख तो इस बात का था कि बारह बज गये, लेकिन भूख कहां...भूख कहां गयी? तालाब के किनारे घूमता रहा, लेकिन भूख नाम के बंदर का कहीं भी पता नहीं चला।"

रवींद्रनाथ ठाकुर के बड़े भइया अवनींद्रनाथ ठाकुर ने भी बच्चों के लिए बहुत कुछ लिखा और हर चरित्र को साफ-साफ समझाने लिए उन्होंने चित्रकला का भी सहारा लिया। उनकी सबसे चर्चित पुस्तक है—'हानाबाड़ीर कारखाना।' एक नमूना वहां से भी—

> 'उस दिन पहर रात, आदमी न आदमी की जात, हाट में भैरव दीवान अकेले जाते हैं, गुप्ति थामें, गुमगुमि की तलाश में। रिवाल्वर सिर के ऊपर, चमड़े की अंबियादार कापू, कमरबंध में कलम काटनेवाला चाकू और कलंदरी अलखल्ला से तमाम शरीर ढका हुआ...

'गुमगुमि' एक अशरीरी का नाम है, और उसी अशरीरी की कल्पना कर ही भैरव दीवान का भी चेहरा सोचा है अवनींद्रनाथ ठाकुर ने।

वैसे तो, भौतिक गल्पों की भरमार है बंगला-साहित्य में, लेकिन मुख्यतः जिन लेखकों का उल्लेख किया जा सकता है इस क्षेत्र में विशेष भूमिका के लिए, वे हैं—विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, शरदेंदु बंद्योपाध्याय, प्रेमेन्द्र मित्र, शैलजानंद मुखोपाध्याय, अचिंत्यकुमार सेनगुप्त, बुद्धदेव बोस, प्रबोधचंद्र घोष और सत्य-

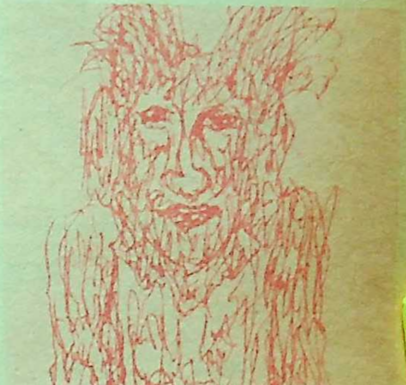

एक भूत का चित्र
चित्रकार : रवींद्रनाथ ठाकुर

जित राय।

सत्यजित राय ने अपने दादा उपेंद्रकिशोर रायचौधरी की कहानी 'गुपी गाईन और बाघाबाईन' को फिल्माया भी और इसी फिल्म में भूतों के नृत्य और भूतराज के दरबार के एक लंबे 'सिक्वेंस' को बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया। सत्यजित राय के पिता, जिन्हें बंगला के 'लिविस कैरोल' कहा जाता है—श्री सुकुमार राय ने भी अशरीरो शक्लों को ही अपने लेखन का ध्येय बनाया।

लेकिन भूत विषय को लेकर एक संपूर्ण पुराण लिखने की कल्पना सिर्फ ताराशंकर वंद्योपाध्याय ही कर पाये और मनुष्य एवं भूतों के बीच, जो वर्षों का संबंध है, उसे पूरी तरह से खोजकर उन्होंने लिखा —'भूत-पुराण'। प्रस्तुत है इसके कुछ अंश--

'भूतों से डरे नहीं, तो भूतों से प्रेम भी नहीं हो सकता है। मनुष्य भूतों से डरता है और भूत मनुष्य से। और इसीलिए है भूत और मनुष्य के बीच अज्ञात प्रेम। इसीलिए मनुष्य मरकर भूत होता है, और भूत मर-

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ७, २. अलजीरिया (अफ्रीका), ३. मिस्र (२७ जुलाई, १९८०), ४. क. १९७५ (२९ अध्यादेश), ख. १९६३, ५. भारत--तारापुर (महाराष्ट्र) में, १९६९, ६. क. १५४, ख. सेंट विंसेंट एवं ग्रेनाडाइन्स (भूतपूर्व) ब्रिटिश उपनिवेश, जो अक्तूबर १९७९ में स्वतंत्र हुआ--(पूर्वी कैरीबियन द्वीपसमूह में एक छोटा-सा द्वीप, आबादी लगभग १ लाख), ७. अप्पाजी वर्धराजन (१९८०), ८. मिहिर सेन (प्रसिद्ध तैराक, लंबी-तैराकी में विश्व रिकॉर्ड, पद्मभूषण से विभूषित), ९. श्रीमती बारबरा वार्ड (ब्रिटिश अर्थशास्त्री, पत्रकार तथा तृतीय विश्व के हितों की समर्थक), १०. विकलांगों के लिए अंतर्राष्ट्रीय वर्ष, १५. क. नार्थ अटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइजेशन (उत्तरी अतलांतक संधि संगठन), ख. ग्रीस (१९७४ में साइप्रस पर तुर्की के हमले के विरोध में पृथक हुआ था), १२. सोवियत अंतरिक्ष यात्री लियोनिद पोपोव तथा वेलेरी रियूमिन (११ अक्तू. ८० को 'सैल्यूत–६, में १८५ दिन की अंतरिक्ष यात्रा पूरी की। इससे पूर्व सोवियत अंतरिक्ष यात्रियों का १७५ दिन का रिकॉर्ड था), १३. स्वेज नहर के नीचे (४,२२० मीटर लंबी सुरंग, ४० मीटर से अधिक गहराई पर ७ मीटर चौड़ी सड़क तथा सिनाई में पानी पहुंचाने के लिए एक पाइप लाइन भी, निर्माण-व्यय १५ करोड़ डालर, विगत अक्तूबर में सीमित प्रयोग के लिए खुली), १४. शेखर मेहता (केनिया), १५. कुम्हार का चाक।

कर मनुष्य। श्रवण करो, भूत-पुराण की कथा—वही आदिकाल। पानी नहीं, जमींन नहीं, सिर्फ हवा है। मनुष्य नहीं, भूत नहीं, न देवता नहीं, स्वर्ग नहीं, मर्त्य नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तीनों बैठे हैं, कोई काम नहीं, कृत्य नहीं, क्या करें? समय काटे नहीं कटता। तभी तीनों ने कहा, "आओ हम खेलें . . .।"

"क्या खेलें ?"

"आओ हममें से एक जना गढ़े, एक उसे सजाये और एक जना उसे तोड़े।"

'वाह, बहुत बढ़िया।"

ब्रह्मा ने पहले दिन गढ़ा। विष्णु ने सूर्य को पूर्व से पश्चिम में पहुंचा दिया। शिव ने उसके हाथ पकड़कर डुबो दिया।

इसके बाद ब्रह्मा ने एक राज्य गढ़ा। और उसमें रहने के लिए उन्होंने गढ़े देवता। विष्णु उनका पालन करने लगे। उसके बाद देवता समुद्र मंथनकर, सुधा प्राप्तकर, अमर हो गये। शिव ने क्रोधित हो कहा, "देवता अमर हो गये अब मैं मारूंगा कैसे?"

शिवजी ने गढ़े भूत

यह कहते हुए गुस्से में उन्होंने भूतों को गढ़ दिया। वैसे तो शिव बलवान थे, पर कारीगर अच्छे नहीं थे। समझे! इसीलिए भूतों का चेहरा अच्छा नहीं बना—वैसे वे जैसा चाहें, वैसा ही रूप धारण कर सकते हैं। इसी से एक झगड़ा हुआ, और फिर एक समझौता भी। ब्रह्मा ने बनाया मर्त्य-भुवन और वहां पर बनाया मनुष्य। शिव ने भूतों को भेजा ब्रह्मा के पास, ब्रह्मा ने उन्हें मनुष्य बनाकर मर्त्यधाम में भेज दिया।

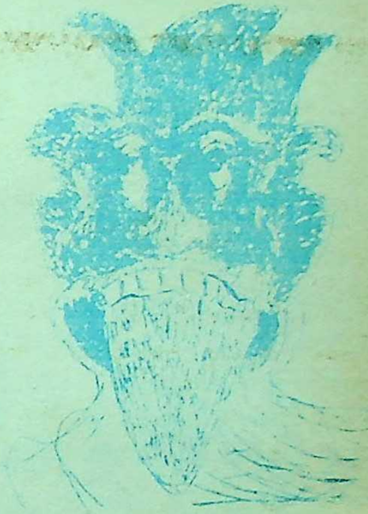

भूत का चित्र, चित्रकार : रवीन्द्रनाथ ठाकुर

यह कहानी सुना रही है श्रीमती गयेश्वरी देवी और उन्हें यथावत लिख रहे हैं श्री ताराशंकर।

गयेश्वरी देवी ने अकस्मात आसन पर बैठ, आचमन कर कहा 'नमः भूतेश्वर, नमः भूतेश्वर, नमः भूतेश्वर।' अर्वाचीन लोगों, श्रवण करो! मनुष्य मरकर जैसे भूत होते हैं। वैसे ही भूत मरकर मनुष्य होते हैं। सोचकर देखो, गत युद्ध में, महामारी से कितने लोग मरे थे? समस्त देशों में ही मनुष्य का अभाव हो

गया था और आज इस बीस-बाईस साल में क्या बना है ? देखो, मनुष्य बढ़े हैं या घटे हैं ? बढ़ गये हैं, तो कहां से आये हैं ये मनुष्य ?

अरे, ये भूत ही मरकर मनुष्य बन रहे हैं। ये जो आजकल पतली मोहरी की पैंट और सिर पर कौए का घोंसला लिये किम्भुत किमाकार सब कपड़े पहने, खपच्ची की तरह दुबले पतले, चेहरों का अजीब आविर्भाव को देखकर भी समझ नहीं पाये हो क्या ?

देवताओं को मार दिया

तुम लोगों ने भूतों को मारा है, भगवान को भी मारा है, और उनके साथ देवताओं को भी, सिर्फ एक देवता को छोड़कर। ...ब्रह्मा को भी मार दिया है, विष्णु को भी मारा है, सिर्फ शिव को नहीं मार पाये और जब ब्रहमा ही मर गये हैं, तो इतने सारे लोग आये कहां से ?...

मनुष्यों ने विज्ञान-बुद्धि द्वारा भूतों का नाश किया है; भूत के डर को खत्म किया है। एटम बमों, हाइड्रोजन बमों को तैयार किया है। और अब भूत मनुष्य का जन्म लेकर, इन्ही हथियारों के सहारे युद्ध छेड़कर मनुष्य को खत्म करेंगे। युद्ध जरूर होगा और तमाम मनुष्य मर जाएंगे। मनुष्य मरकर, भूत बनकर इस पृथ्वी को सुंदर भूतों से लद देंगे।

—सी-१०, नया गांधीनगर,
गाजियाबाद

सिंड्रेला

मुझे भ्रम हो गया है कि
मैं सिंड्रेला हूं
दिनभर कामकाज में जुटी
डांट फटकार सुनती
रात में कल्पित परी द्वारा सजकर
नाचने पहुंच जाती हूं
हर रोज यही होता है
पर मैं जानती हूं
मेरा अंत सिंड्रेला की तरह
सुखद नहीं होगा

दिन वाला अंश
अब मैं धीरे-धीरे
रातों में भी जीने लगी हूं
भ्रम कभी भी कहीं नहीं ले जाता
भ्रम तो बस भ्रम ही होता है
बच्चों की कहानियां
सुखांत ही होती हैं

अब मैं आयु के अंतिम प्रहर में
पहुंच गयी हूं
सिंड्रेला बच्ची थी फिर जवान हुई
उसकी रात की दुनिया
दिन में मिल गयी
मुझे दिन की दिनचर्या
रात में मिलेगी
फिर मैं कैसे सिंड्रेला
हो सकती हूं ?

—स्नेहमयी चौधरी

जी-६, माडल टाउन, दिल्ली-६

गोष्ठी

सरोज सक्सेना, कानपुर : किसी गुंबद के नीचे जोर से चिल्लाने पर हमारी आवाज प्रतिध्वनित होकर सुनायी देती है, तो क्या आवाज कोई भौतिक वस्तु है, जो टकराकर लौटती है ?

जी हां, ध्वनि एक विकिरक ऊर्जा है, और यह विकिरक ऊर्जा जब किसी परावर्ती सतह से टकराकर लौटती है, तब प्रतिध्वनि या गूंज उत्पन्न करती है। ध्वनि और उसकी प्रतिध्वनि दोनों का अलग-अलग सुनायी पड़ना, इसलिए संभव होता है कि दोनों में समय का अंतराल होता है। यह अंतराल उतना ही होता है, जितना ध्वनि को परावर्ती सतह से टकरकर लौटने में लगता है। यह एक भौतिक नियम है और भौतिकी में ध्वनि-प्रतिध्वनि का अध्ययन होता है, अतः आपको अपनी आवाज के भौतिक होने में संदेह नहीं होना चाहिए।

आमोदकुमार शर्मा, हल्द्वानी : आर्थर स्टेनली एडिंगटन नामक वैज्ञानिक किस देश और किस काल का है? वह किस कार्य के लिए प्रसिद्ध है ?

सर आर्थर स्टेनली एडिंगटन नामक यह वैज्ञानिक इंग्लैंड का निवासी था। उसका जन्म १८८२ में हुआ था और मृत्यु १९४४ में हुई। उसने खगोल-भौतिकी के क्षेत्र में १९१६ से कुछ अनुसंधान शुरू किये और १९२६ में उनके आधार पर 'दि इंटर्नल कांस्टीट्यूशन ऑव दि स्टार्स' नामक पुस्तक प्रकाशित करायी, जिससे नक्षत्रों की चमक के आपसी संबंधों के बारे में कई नयी बातें सामने आयीं और श्वेत 'बौने' नक्षत्रों की प्रकृति पर भी प्रकाश पड़ा। '१९२१-२२ में उसने आइंस्टीन के 'सापेक्षता' के सिद्धांत की अपने ढंग से एक 'सैद्धांतिक' व्याख्या की और प्रकृति में निहित कुछ 'शाश्वत' तत्वों के अनुसंधान की एक 'सैद्धांतिक' पद्धति के आविष्कार का भी दावा किया। हालांकि, वह अपने दावों की सत्यता प्रमाणित नहीं कर सका, लेकिन एक विचित्र-सी बात कहने के कारण उसका नाम काफी चर्चित हुआ। इससे संबंधित उसके विचार उसकी मृत्यु के दो वर्ष बाद, १९४६ में 'फंडामेंटल थ्योरी' पुस्तक में प्रकाशित हुए।

नीरजा सिंह, मुजफ्फरपुर : सोडावाटर या अन्य बोतलबंद पेय-पदार्थों में बोतल खोलते ही बुलबुले क्यों उठने लगते हैं ?

बात यह है कि इन पेय-पदार्थों में कार्बन डाइ ऑक्साइड गैस होती है, जो दबाव के जरिए इनमें मिलायी जाती है। ज्योंही बोतल का ढक्कन खुलता है, दबाव कम हो जाता है और यह गैस पेय-पदार्थ में से बाहर निकल जाती है। उसके बाहर

दिल्ली में यातायात-समस्या

दिल्ली में यातायात की व्यवस्था में सुधार के लिए अनेक प्रयोग किये जा रहे हैं। चौराहों पर सी. सी. टी. बी. कैमरा लगाये जाने के अतिरिक्त बच्चों को यातायात प्रशिक्षण देने के लिए एक बहु-उपयोगी पार्क भी पंजाबी बाग में बनाया गया है। इसमें बच्चे विभिन्न वाहन स्वयं चलाएंगे और ट्रैफिक नियमों का पालन करना सीखेंगे।

चित्र में बाएं से दाएं—सर्वश्री आर. के. नायर (सी. एल. ओ), राम प्रकाश (असि. कमिश्नर), पी. एस. बावा (डी. सी. ओ.) तथा अशोक कुमार टंडन (अतिरिक्त कमिश्नर) इसी पार्क में खड़े दिखायी दे रहे हैं।

निकलने की प्रक्रिया में ही बुलबुले बनते हैं। इस प्रक्रिया को अंगरेजी में 'एफरवेसेंस' और हिंदी में 'बुदबुदन' कहते हैं। यह प्रक्रिया उन तमाम द्रवों में देखी जा सकती है, जिनमें से अवशोषित या समाविष्ट गैसें बाहर निकलती हैं।

प्रदीपराय, मुंगेर : 'एक्सोटिसिज्म' क्या है?

साहित्य में विदेशी राज्यों या समाजों के जीवन के चित्रण की प्रवृत्ति को अंगरेजी में 'एक्सोटिसिज्म' और हिंदी में 'विदेशीयता की प्रवृत्ति' कहते हैं। इस प्रवृत्ति की रचनाओं में किसी विदेशी समाज के जीवन, रहन-सहन, स्थानीय विशिष्टताओं आदि का चित्रण होता है। यह साहित्य मानव की एकता की प्रतिष्ठा के स्थान पर राष्ट्रीय विभिन्नताओं पर अधिक बल देता है। सामान्य रूप से इसे पलायनवाद का ही एक रूप माना गया है, क्योंकि इस प्रवृत्ति से प्रेरित कलाकार अपने आसपास के वातावरण से पलायन करके किसी दूर-देशीय वातावरण का निर्माण करता है। सोलहवीं शताब्दी से, अर्थात नये देशों की खोज के आरंभ के बाद से, इस प्रकार के साहित्य की रचना

अधिक हुई। पश्चिमी लेखकों में विक्टर ह्यूगो, मोपासां, एडगर एलन पो, बोदलेयर, एच. जी. वेल्स आदि की रचनाओं में यह प्रवृत्ति पायी जाती है।

बिस्मिल बदायुंनी, बदायूं : फ्रांस की 'एफिल टॉवर' का नामकरण किसके नाम पर हुआ है ?

एफिल (पूरा नाम--अलेक्जांद्रे गुस्ताव एफिल; जन्म १८३२—मृत्यु १९२३) एक फ्रांसीसी इंजीनियर था। मूलतः वह पुलों के डिजाइन और निर्माण का काम करता था। पनामा नहर के फ्रांसकालीन निर्माण के दौरान एफिल ने बड़े-बड़े जलद्वारों का निर्माण किया था। पेरिस के शँप डि मार्स नामक इलाके में ७३०० टन लोहे से बनी और ९४८ फुट ऊंची मीनार चूंकि एफिल के ही निर्देशन में निर्मित हुयी थी, इसलिए वह एफिल टॉवर कहलाती है।

पांडेय शंभुशरण 'दीप्त', भोपाल : एम्पीडोक्लीज कौन था और उसके बताये हुए चार मूल तत्व क्या हैं ?

एम्पीडोक्लीज ईसा पूर्व पांचवीं शताब्दी का एक यूनानी दार्शनिक था और सिसिली में एग्रीगेंडम नामक स्थान का निवासी था। उसने अपने दार्शनिक चिंतन को 'प्रकृति' और 'पवित्रताएं' नामक दो कविताओं में व्यक्त किया था। ये कविताएं संपूर्ण रूप में उपलब्ध नहीं हैं, केवल उनके कुछ अंश मिलते हैं। उसकी मान्यता यह थी कि पृथ्वी, वायु, जल और अग्नि चार मूल तत्व हैं, और ये चारों तत्व—प्रेम और घृणा अथवा आकर्षण और विकर्षण की शक्तियों से परिचालित होते हैं, जिससे समूची सृष्टि का उद्भव और विकास हुआ है। वस्तुतः उसके चिंतन में उसके काल तक विकसित प्रारंभिक विज्ञान का प्रतिबिंब पाया जाता है, जिसके द्वारा जीवन और जगत को एक तर्कसंगत रूप में समझने की चेष्टा की जा रही थी। अत. उसकी मान्यताओं का खंडन हो जाने के बाद भी उनका ऐतिहासिक महत्व है।

बिमलेंदु राहा, आसनसोल : भवन-निर्माण में प्रयुक्त होनेवाली कंकरीट का आविष्कार कब और किसने किया ?

कंकरीट मूलतः रोमन भवन-निर्माताओं का आविष्कार था। आधुनिक काल में इसका प्रयोग १८२४ से शुरू हुआ माना जाता है जब कि इंग्लैंड निवासी जोसेफ एस्पडीन (१७७९–१८५५) ने कृत्रिम सीमेंट का आविष्कार किया, जो पोर्टलैंड सीमेंट के नाम से जाना जाता है। इस्पात के साथ कंकरीट का प्रयोग आधुनिक काल की ही विशेषता है।

चलते-चलते एक प्रश्न और...

वंदना मोहिले, नागपुर : पुरुष में नारी जैसी संवेदनशीलता क्यों नहीं होती ?

काश, नारी इतनी संवेदनशील होती कि पुरुष की संवेदनशीलता को समझ पाती।

—बिंदु भास्कर

हा! हा!!

'खट-खट-खट' द्वार पर किसी ने दस्तक दी; "कौन है जो इतनी रात गये आया है," अंदर से आवाज आयी। "मैं हूं फकीर।"

"चल भाग इतनी रात में भीख नहीं मिलती।"

"अरे मैं हूं आपका फकीर," बाहर-वाले ने कहा।

"मेरा हो या किसी और का, कह दिया न इतनी रात को भीख नहीं मिलती, चल भाग।" अंदरवाले ने फिर डाटकर कहा।

"अरे बाबा ! मैं फ़कीरचंद आपका दामाद," बाहर खड़े व्यक्ति ने खीझकर कहा।

"अरे पूरन ! जल्दी से दरवाजा खोल जाकर।"

—कमाल अहमद 'जैदी' सिरसवी

मास्टर साहब कक्षा में पढ़ा रहे थे, "हम सब ईश्वर की संतान हैं।"

"लेकिन मास्टर साहब, हमारे पूर्वज तो बंदर थे," तभी एक लड़के ने कहा।

इस पर मास्टर साहब खीझ उठे और उसे बैठाते हुए बोले, "चुपचाप बैठ जाओ, मैं तुम्हारे परिवार की बात नहीं कर रहा हूं।"

—उमेशचंद्र शर्मा

*

एक साहब को फिल्म देखते-देखते सिगरेट पीने की तलब उठी, लेकिन हाल में सिगरेट पीना मना था। उन्होंने इधर-उधर देखा, तो पाया कि आगे की सीट पर बैठा एक व्यक्ति सिगरेट पी रहा है। वह उठकर गेटकीपर के पास गये और बोले, "क्या मैं सिगरेट पी सकता हूं।"

"नहीं, हाल में सिगरेट पीना मना है।"

"मगर वह महाशय भी तो पी रहे हैं।" सिगरेट पी रहे व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा।

"लेकिन वह मुझसे पूछकर तो नहीं पी रहे।"

—बिष्णु प्रसाद मेहता

व्यंग्यबाण चलाने में माहिर जार्ज बर्नार्डशा भी कभी-कभी व्यंग्य का शिकार हो जाते थे। शेक्सपीयर-दिवस पर एक बार स्ट्रैटफर्ड ऑन एवन के शेक्सपीयर स्मारक थिएटर में शेक्सपीयर का एक नाटक खेला जाना था। अनेक बिशिष्ट साहित्यकार निमंत्रित होकर पधारे थे। अचानक जार्ज बर्नार्डशा भी वहां पहुंच गये। इससे सबको बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि सब जानते थे कि शेक्सपीयर के बारे में अनेक विचार बहुत अच्छे नहीं हैं। जी. के. चेयरमैंटन उनका स्वागत करते हुए बोले, "बहुत अच्छा हुआ मि. शा कि आप पधारे। मरे शेर से जिंदा कुत्ता ज़्यादा अच्छा होता है।"

जिंदगी से जुड़ी मर्मस्पर्शी कहानियां

उजली रेखाएं भी

घटना-प्रधान कहानियों में पाठकों को बांधे रखने की अद्भुत क्षमता होती है, और फिर यदि ये घटनाएं आज की जिंदगी से जुड़ी हुई हों, तो पाठक उनमें स्वयं को खोकर बहुत-कुछ पाता है। 'उजली रेखाएं भी' में संकलित डॉ. गौरीशंकर राजहंस की कहानियों की यही एक प्रमुख विशेषता है। इस संकलन में उनकी ये नौ कहानियां संकलित हैं—'उजली रेखाएं भी', 'रिश्ते नये-पुराने', 'आंटी', 'समानांतर रेखाएं', 'दो घड़ी का अपनापन', 'सहारा', 'मुखौटे', 'अपने-पराये' एवं 'शेफाली।' इनमें से कुछ कहानियां 'कादम्बिनी' में पाठक पढ़ चुके हैं—जैसे 'समानांतर रेखाएं' और 'आंटी।'

'उजली रेखाएं भी' अस्तित्व के लिए संघर्षरत सुजाता की मार्मिक कहानी है। वाई. डब्ल्यू. सी. ए. में 'आफिस मैनेजमेंट'-का 'कोर्स' करते हुए सुजाता का परिचय एक इंजीनियर देवेश से होता है। परिचय, प्रणय में बदल जाता है, लेकिन सुजाता का दुर्भाग्य कि एक फूल-सी बेटी—प्रीति के जन्म के बाद देवेश की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है और फिर सुजाता का जीवन संघर्षमय हो जाता है।

'रिश्ते नये-पुराने' भी मेहता, अनुराधा एवं उसकी बेटी शीला आप्टे की मर्मस्पर्शी कथा है। 'आंटी', 'समानांतर रेखाएं', 'दो घड़ी का अपनापन', 'अपने-पराये' एवं 'शेफाली' की भावभूमि भी विभिन्न पात्रों के इसी तरह के मिलकर बिछुड़ने की घटनाओं पर आधारित है।

'सहारा' एवं 'मुखौटे' कहानियों की भावभूमि कुछ अलग है। 'सहारा' वर्माजी

नामक एक पेशकार-टाइपिस्ट की दर्दनाक जिंदगी की तस्वीर खींचती है। परिश्रमी वर्माजी से उनका बड़ा हाकिम स्मिथ साहब इतना प्रभावित है कि वे क्रांतिकारियों के हैंडबिल टाइप करते हुए पकड़े जाते हैं और कारावास भुगतते हैं, तो स्मिथ साहब उन्हें एक टाइपराइटर भेंट करते हैं। और यही टाइपराइटर, जब वर्माजी का बेटा पत्नी के साथ आस्ट्रेलिया जा बसता है, तो उनका सहारा बनता है।

'मुखौटे' में आज की दोहरी जिंदगी का सफल चित्रण है। एक साधारण लेक्चरर अविनाश आई. ए. एस. बनता है और उसमें भ्रष्ट नौकरशाही के सारे 'गुण' आ जाते हैं। अविनाश की मुखौटाभरी जिंदगी से अच्छे संस्कारों में पली उसकी पत्नी रेखा बेहद दुखी है।

डॉ. राजहंस की इन कहानियों में मनुष्य के हृदय में सतत चलनेवाले अंतर्द्वंद्वों का बेहद मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। इन कहानियों की एक अन्य विशेषता है—भाषा और शैली की सहजता, जो पाठक को अंत तक बांधे रखती है। दरअसल, हर कहानी अपने में एक-एक उपन्यास की कथावस्तु को समाये हुए है।

इस संकलन को समानांतर प्रकाशन ७/८ दरियागंज, नयी दिल्ली ने प्रकाशित किया है। मूल्य है—पंद्रह रुपये।

—डॉ. इंद्रनील मिश्र

कुछ हास्य-व्यंग्य कृति

विकलांग श्रद्धा का दौर

प्रस्तुत संग्रह में प्रख्यात व्यंग्यका हरिशंकर परसाई की सन ७५ से के बीच लिखी गयीं व्यंग्य-रचनाएं संकलि हैं। परसाई की व्यंग्य-रचनाओं में आ की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक वि गतियों पर तिलमिला देनेवाली चोट हो है। वह पाठक का मनोरंजन नहीं कर वरन उसकी विचार-प्रक्रिया को सही दि में सक्रिय होने की प्रेरणा देती हैं। चाहे 'अश्लील-पुस्तकें'-जैसी छोटी व्यंग्य-रच हो, या 'तीसरी आजादी का जांचकमीशन' जैसी तीन किश्तों की लंबी रचना। इ राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ने प्रकाशि किया है। मूल्य है—१६ रुपये।

मिस्टर चोखेलाल

सही अर्थों में बहुत कम लिखी जा र हास्य-व्यंग्य विधा के प्रसिद्ध लेखक डॉ. बरसा लाल चतुर्वेदी के उन्तालीस लेखों के इ संग्रह में सूक्ष्म एवं शिष्ट हास्य, तीखा गंभीर तथा पैना व्यंग्य, जहां होंठों प मुसकान फेरता है, वहां विचारों में हलच भी पैदा करता है। लेखों में सम-सामयिक परिस्थितियों को मुखरित करती लेखक की परिचित भाषा है, जिसमें संदर्भ रूप में साहित्यिकता का पूरा पुट विद्यमान है। इसका प्रकाशन सरस्वती विहार, शाहदरा, दिल्ली ने किया है। मूल्य है—१६ रुपये।

नसबंदगी

इस लेख-संग्रह में लेखक श्याम गोइन्का ने जीवन के कुछ जीवंत क्षण एवं समस्याओं को हास्य-व्यंग्य की नोक पर उतारा है। 'साहिबी की बाढ़', 'चिट्ठी रसिकाएं', 'दूल्हों का सौदागर', 'फज्ल खुदा का', 'कमाल परखनली का' इस दृष्टि से दृष्टव्य हैं। 'आबादी का व्याकरण' में लेखक ने विषय का काफी खुलासा कर दिया, जैसे एक स्थान पर 'तो आजकल मैं एक हरे-भरे उपजाऊ 'फील्ड' की खोज में हूं। एक 'लैबोरेटरी' की तलाश में हूं . . .पर कोई बेटी का बाप तैयार ही नहीं हो रहा। लेख रोचक एवं पठनीय हैं और भविष्य की ओर संकेत करते हैं। इसका प्रकाशन विवेक प्रकाशन, दिल्ली ने किया है। मूल्य है—१२ रुपये।

प्रेमचंद कथा-साहित्य में हास्य-व्यंग्य

प्रेमचंद शताब्दी वर्ष में उनके कथा-साहित्य के अनछुए पक्ष—हास्य-व्यंग्य पर इस कृति का प्रकाशन प्रेमचंद के प्रति एक और सार्थक श्रद्धांजलि है। प्रारंभ में लेखक डॉ. कृपाशंकर मिश्र निर्द्वंद्व ने हास्य-व्यंग्य के संबंध में सैद्धांतिक व्याख्या प्रस्तुत की है और बाद में निरूपित किया है कि साहित्य में हास्य-व्यंग्य का सटीक, सार्थक और सफल प्रयोग वही रचनाकार कर सकता है, जिसने मानव को, समाज को, मनोवृत्तियों-प्रवृत्तियों को अच्छी तरह जांचा-परखा हो और ऐसी सामर्थ्य क्षमता अर्जित कर ली हो कि औरों से पहले स्वयं पर हंस सके। मुंशी प्रेमचंद एक ऐसे ही साहित्यकार थे। उनकी रचनाओं में अंतर्निविष्ट हास्य-व्यंग्य के रूपों में उनका वही अधिकारिक तेवर देखने को मिलता है।' लेखक ने प्रेमचंद के उपन्यास-साहित्य का गहन अनुशीलनकर उनमें प्रयुक्त हास्य-व्यंग्य के उद्धारणों को एक क्रमिक-व्यवस्था दी है। यह कृति प्रेमचंद साहित्य के अनुशीलन का एक नवीन परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करती है। इसका प्रकाशन राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर, अमीनाबाद, लखनऊ ने किया है। मूल्य है—३० रुपये।

—डॉ. रामाश्रय सविता

दो उपन्यास

वो शाम

वो शाम, किशोर बुद्धि के दो नवयुवकों ऋतुराज और पवन की नादानियों तथा असामाजिक तत्वों से जूझती एक अपहृता युवती अनीता की मनोव्यथा को चित्रित करनेवाला उमेश सैगल का मनोरंजक उपन्यास है।

ऋतुराज और पवन बाल-सखा हैं और बचपन की 'गलतियों' को युवावस्था में दोहराये जाते समय अभिभावकों द्वारा देख लिये जाने पर भय से, घर से भाग खड़े होते हैं। पहले ऋतुराज किसी पर्वतीय

नगर में पहुंचता है, जहां उसकी भेंट बड़े ही नाटकीय परिस्थितियों में एक अपहृत और 'पेशे' के लिए मजबूर की जानेवाली बीमार युवती अनीता से होती है। ऋतुराज अनीता से विवाह कर लेता है, पर पवन को भी अपने बीच में पाकर अनीता पति को इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने की छूट देने के लिए गायब हो जाती है। अंततः पुरानी कहानियों की तरह उपन्यास 'जिसका अंत भला, उसका सब कुछ भला'-वाली शैली में समाप्त होता है। भूमिका में श्री सच्चिदानंद वात्सायन 'अज्ञेय' ने ठीक ही लिखा है, कि **'दो शाम'** जिस पाठक वर्ग के लिए है वह निश्चय ही दो एक खाली शामें इस उपन्यास के साथ बिताकर तृप्त होगा।'

इसके प्रकाशक हैं—हिंदी साहि संसार, अमीरचंद मार्ग, दिल्ली। मू है—२० रुपये।

—दुर्गाप्रसाद शु

अंत नहीं

यह एक गंभीर उपन्यास है, जो शि के क्षेत्र में प्राचीन आश्रम-पद्धति के सा आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि का समन्व करके एक पूर्ण शिक्षा-प्रणाली एवं दृष्टि प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त नाय अखंडानंद के मन में अपनी बाल-सहच मही को लेकर, जो झीना द्वंद्व चलता है, वह उपन्यास को मनोवैज्ञानिक धरात प्रदान करता है। जिस स्तर पर यह पात्र चित्रित किया गया है, वहां यह उसकी

For Soft & Quick Washing

Hindustan washing Machine

- Sturdy Motor
- Beautiful Body
- Lowest Running Cost
- Economical Prices

And a huge range to choose from

COLD ? WHAT COLD ?
I AM GOING TO HAVE
HOT WATER BATH WITH
HINDUSTAN GEYSER AND WHY NOT!

Hindustan Traders Co. • 32, South Patel Nagar, 589546, 583261 • R-5, Green Park—669768, 663765 • B-10, 12 Rajagarden—588238 • 96 Panchkuin Road (Near Lady Harding Hospital)—310247 Also Available at leading Stores

कमजोरी न होकर एक सबल शक्ति के रूप में उभरता है। बीच-बीच में तथ्यों की दार्शनिक व्याख्या कर लेखिका इंदिरा ने उपन्यास में गंभीर वातावरण पैदा करने का प्रयास किया है। प्रकाशक हैं—अतुल आलोक, प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली। मूल्य है—१५ रुपये।

—डॉ. शशि शर्मा

दो काव्य-संग्रह

श्रेष्ठ कविताएं

प्रति वर्ष हिंदी में सबसे ज्यादा कविताएं लिखी जाती हैं। हिंदी की कुछ चुनी हुई कविताओं का एक संकलन सन १९७२ में प्रकाशित हुआ था। यह उसी क्रम में दूसरा संकलन है—'हिंदी की प्रतिनिधि श्रेष्ठ कविताएं (दूसरी पंखुड़ी)' इस संकलन में सन १९७२ और १९७९ के बीच लिखी गयी कविताओं में से चयन किया गया है। चयन करते हुए संकलन के संपादक डॉ. बच्चन ने लिखा है 'मुख्य रूप से जिन पाठकों के लिए यह संकलन किया गया है, उनकी दिलचस्पी तो कविताओं में है, बहस में नहीं। इसलिए उनके वास्ते कविताएं मौजूद हैं इस टिप्पणी के साथ कि आज की कविता को आज की बहस से पूरी तरह अलग नहीं किया जा सकता।'

बच्चनजी को इस संकलन के लिए धन्यवाद दिया जाना चाहिए, क्योंकि इसमें जहां हिंदी कविता के बहुत प्रतिष्ठित नाम हैं, वहां नये से नये नाम भी हैं। इस संग्रह के प्रकाशक हैं–सरस्वती विहार, दिल्ली, और मूल्य है–३५ रुपये।

खूंटे

कवयित्री रमणिका गुप्ता ने अपनी सत्रह कविताओं के इस संग्रह 'खूंटे' में नारी-पुरुष संबंधों तथा नारी के प्रति पुरुष सत्ता द्वारा की गयी ज्यादतियों का पर्दाफाश किया है और स्वतंत्रता के उन स्वरों को वाणी दी है, जो नारी-मुक्ति की भारतीय परंपरा का शुभारंभ करती है।

इन कविताओं में पुरुष-सत्ता की स्वार्थी, क्रूर, अधिकार-प्रिय लिप्सा के दुर्दमनीय व्यवहार के प्रति तीव्र आक्रोश है। समानाधिकार के लिए सर्वस्व उत्सर्ग करने की कवयित्री की भावना कहीं 'वर-माला रौंद दूंगी' कविता में किसी विद्रोह के एक सरोकार को व्यंजित करती है, तो 'मैंने रिश्ते तोड़ दिये हैं' में किसी दूसरे रूप में, किंतु पुरुष के प्रति एक तीव्र विद्रोह की भावना सर्वत्र व्याप्त है। वह कहती हैं—

मैं अब सीता नहीं बनूंगी
सावित्री का भी रूप नहीं बनूंगी
राधा का रूप भी पर्याप्त नहीं मेरे लिए
मीरा का तो सवाल ही नहीं उठता
द्रौपदी पर विचार कर सकती थी
पर समय बहुत दूर निकल आया है
प्रचलित मूल्यों को तोड़कर
विद्रोह का झंडा बुलंद करूंगी

इन कविताओं में एक ही कमी है कि वक्तव्यों को शिल्प में ढालने की क्षमता का अभाव। प्रकाशक है—पराग प्रकाशन, नवीन शाह[illegible]रा, दिल्ली। मूल्य—दस रुपये।

—जगदीश चतुर्वेदी

फार्म-IV

(नियम ८ देखिए)

कादम्बिनी

१. **प्रकाशन स्थान**	:	नई दिल्ली
२. **प्रकाशन अवधि**	:	मासिक
३. **मुद्रक का नाम**	:	गौरीशंकर राजहंस
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	× × ×
पता	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-११०००१
४. **प्रकाशक का नाम**	:	गौरीशंकर राजहंस
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	× × ×
पता	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-११०००१
५. **सम्पादक का नाम**	:	राजेन्द्र अवस्थी
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	× × ×
पता	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-११०००१
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली-११०००१

मैं, गौरीशंकर राजहंस, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक २८ फरवरी, १९८१

गौरीशंकर राजहंस
प्रकाशक।

दी हिन्द[illegible]ान टा[illegible]स [illegible]मिटेड की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस द्वारा [illegible] प्रेस, नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

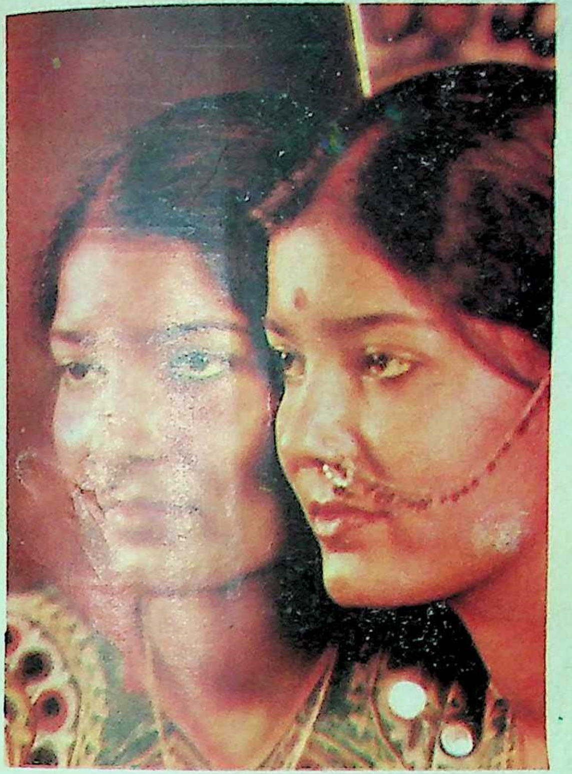

समस्यापूर्ति--२३

प्रतिबिंब

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है--गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी। आपकी रचना मौलिक तथा छह पंक्तियों की ही हो। प्रविष्टि पोस्टकार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार--२५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार--१५ रुपये
अंतिम तिथि--५ मार्च, १९८१

RATNA BRAND
ZAFRANI PATTI
रत्ना
ज़ाफरानी पत्ती
NO 300
50 GRAMS WHEN PACKED
No.300
TRADE MARK
REGD. No. 2955

ताज़े फूलों की सुगन्ध एवं उत्कृष्ट स्वाद के लिये.

रजिस्टर्ड

रत्ना छाप

ज़ाफरानी पत्ती

नं. - 450, 300, 200, 150, 64, 30, 20, 13

निर्माता

प्रभात जर्दा फैक्ट्री, मुजफ्फरपुर, बिहा

पुस्तकालय
गुरुकुल कांग

नं. डी.-(
TRADE MARK
REGD. No.2955
20,13
र, बिहार

क प्रकाशन

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

लोमहर्षक क्षण • वह विषपान के प्रयोग करता था • मणिपुर में विद्रोहियों की तलाश

अप्रैल ८
२.२५
हिंदुस्तान टाइ
प्रका

मसूड़ों में तकलीफ़ की पहली निशानियाँ

प्लाक (Plaque)
प्लाक याने दाँतों और मसूड़ों पर हमेशा जमती रहनेवाली कीटाणुओं की अदृश्य परत। अगर साफ़ न किया जाय तो प्लाक के कारण टारटर जम जाती है।

टारटर (पपड़ी)
दाँतों की जड़ की ओर जमी हुई पपड़ी से मसूड़ो में सूजन और तकलीफ़...बाद में मसूड़ों व हड्डियों के सिकुड़ने से दाँत गिर भी सकते हैं।

मसूड़ों से खून
कमज़ोर और खोखले मसूड़ों से ब्रश से साफ़ करते समय खून निकल सकता है। इससे दर्द भ ही न हो फिर भी कई गंभीर समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

आपके मसूड़ों की देखभाल के लिये फोरहॅन्स, दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

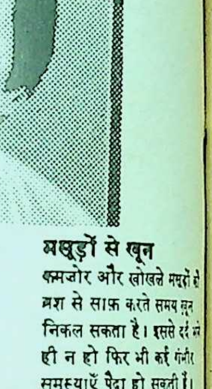

डॉक्टर फोरहॅन्स का अनोखा फ़ॉर्मूला

डॉक्टर फोरहॅन्स का फ़ॉर्मूला अपने असरकारक एस्ट्रिंजेंट के कारण मसूड़ों की सतह मज़बूत बनाकर मसूड़ों की तकलीफ़ से दूर रहने में आपकी मदद करता है।

दाँतों के डॉक्टर कहते हैं

मसूड़ों की खराबियों से अच्छे दाँत भी गिर सकते हैं।

इसलिए हर रात और हर सवेरे फोरहॅन्स टूथपेस्ट और फोरहॅन्स डबल एक्शन टूथब्रश से अपने दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश कीजिए।

मसूड़े ख़राब तो तन्दुरुस्ती ख़राब

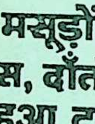

मुफ़्त! "आपके मसूड़ों और दाँतों की देखभाल"— दाँतों की देखभाल सम्बन्धी रंगीन सूचना पुस्तिका। डाकखर्च के लिये ३० पैसे के टिकट साथ भेजकर इस पते पर लिखिये :
फोरहॅन्स डेन्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. ११४६३.
डिपार्टमेंट P123-224, बम्बई-४०० ०२०
पुस्तिका किस भाषा में चाहिये, हमें अवश्य लिखिये।

फोरहॅन्स
दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

224F-1

Regd. T.M: Geoffrey Manners & Co. Lt

आपके बच्चों को इंटैलीजेंट बनाने वाला
अद्भुत नॉलिज बैंक

एक ही माह में दूसरा संस्करण

बच्चों के मस्तिष्क
में घुमड़ने वाले सैकड़ों
अनबुझे 'क्यों और कैसे ?'
जिज्ञासा भरे प्रश्नों के
उत्तर बताने वाला
अनूठा प्रकाशन

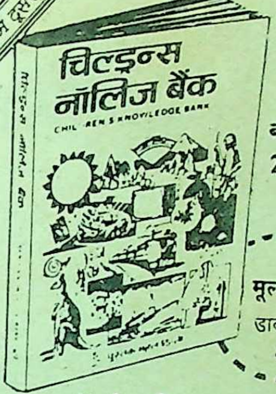

बड़ा साइज
240 पृष्ठ

मूल्य 20/-
डाकखर्च
4/-

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक
Volume-I

'जनरल नालिज' की अन्य सभी पुस्तकों से परे हटकर अपने किस्म की भारत की पहली पुस्तक जिसमें दिए गए सैकड़ों प्रश्नों मे से कुछ की झलक

- लोग गंजे क्यों होते हैं ?
- ओलम्पिक खेल क्या है ?
- लोग बेहोश क्यों होते हैं ?
- आदमी बूढ़ा क्यों होता है ?
- बैंक की शुरूआत कैसे हुई ?
- आंधी और तूफान कैसे आते हैं ?
- चश्मे से सही कैसे दिखाई देता है ?
- महिलाओं की दाढ़ी क्यों नहीं होती ?
- आतिशबाजी रंगीन क्यों दिखती है ?
- सूर्य प्रातः-सायं लाल क्यों दिखता है ?
- बन्द आंखों से हम सीधे क्यों नहीं चल पाते ?

नॉलिज बैंक की अपनी ही विशेषताएं

- ★ पढ़ाई से जी चुराने वाले बच्चों मे पढ़ने का शौक पैदा करके उनका दिमागी स्तर बढ़ाती है।
- ★ होशियार बच्चों की जानकारी और बढ़ाकर उन्हें इण्टैलीजैण्ट बनाती है।
- ★ ऐसे-ऐसे प्रश्न, जिनके उत्तर मां-बाप और टीचर भी नहीं दे पाते।
- ★ हर प्रश्न का उत्तर चित्रों सहित बच्चों की अपनी सरल भाषा में।
- ★ अनुभवी सम्पादक मण्डल द्वारा सम्पादित एक प्रामाणिक पुस्तक।

स्त्री-पुरुषों, पशु-पक्षियों, प्रकृति, भूमण्डल, जीव-विज्ञान, समुद्र आदि से सम्बन्धित अजीबो-गरीब प्रश्नों के उत्तर तथा वैज्ञानिक आविष्कारों की पूर्ण जानकारी।

अपने निकट के बुक स्टाल एव रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मांग करें अन्यथा वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का पता।

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-1[illegible]006

60 वर्षों से लोकप्रिय
शुद्धता तथा कम मूल्य के प्रतीक

एम डी एच

मसाले

एम.डी एच मसाले पोली-पैक में सील किये जाते हैं ताकि इनकी ताज़गी और स्वाद बने रहें। ये मसाले आपके लिये क्वालिटी की गारंटी हैं।

हमारे अन्य लोकप्रिय उत्पादन :
किचन किंग, देगी मिर्च, गरम मसाला,
चना मसाला, चाट मसाला इत्यादि

KITCHEN KING
DEGGI MIRCH
AGMARK
CURRY POWDER
GARAM MASALA
CHANE KA MASALA
CHAT MASALA

महाशियां दी हट्टी प्राइवेट लिमिटिड
9/44 इंडस्ट्रियल ऐरिया, कीर्ति नगर, नई देहली-110015 फ़ोन : 585122
सेल्स आफिस : खारी बावली, दिल्ली-110006 फ़ोन : 258714

लाखों टी वी दर्शकों की पसन्द
आखिर टैक्सला ही क्यों ?

शानदार
कार्य कुशलता
बेमिसाल गारण्टी
लाजवाब
बिक्री-उपरान्त-सर्विस

हर टैक्सला टी वी पूर्णत: जाँचे परखे हिस्से पुर्जों से तैयार किया जाता है। हर सैट, साफ़ तस्वीर एवं बढ़िया आवाज़ की प्रतिमूर्ति है क्योंकि हम आधुनिकतम आई सीज़ तथा नवीनतम सॉलिड स्टेट टैक्नॉलोजी का प्रयोग करते हैं। और सोने पर सुहागा हैं हमारी लाजवाब गारण्टी और बिक्री-उपरान्त-सर्विस, जिनके कारण ही लाखों परिवारों का मन भावन है, टैक्सला।

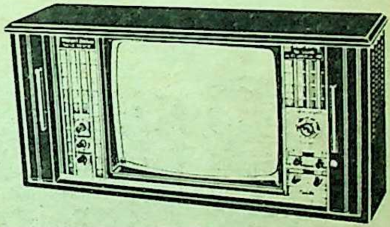

Texla TV
सही पसंद

भारत में सर्वाधिक
लोकप्रिय
सॉलिड स्टेट टी वी

Sobhagya

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

निम्नलिखित शब्दों के जो सही अर्थ हों, उन पर चिह्न लगाइए और इसी पृष्ठ से आरंभ उत्तरों से मिलाइए।

१. **इतिवृत्त**—क. विस्तार, ख. घटना का विवरण, ग. आदि और अंत, घ. समाप्ति।

२. **उच्छल**—क. उच्छृंखल, ख. ऊंचा, ग. उछलता हुआ, घ. ओछा।

३. **निर्भृति**—क. निबटना, ख. व्यर्थ, ग. बेरोजगारी, घ. बेगार।

४. **परिप्रोत**—क. डूबा हुआ, ख. अच्छी तरह से पिरोया या गुंथा हुआ, ग. संतुष्ट, घ. उठा हुआ।

५. **शूरम्मन्य**—क. अत्यंत जर, ख. योद्धा, ग. झूठी बहादुरी की डींग हांकनेवाला, घ. शूरों की पूजा करनेवाला।

६. **भावप्रसू**—क. अत्यंत भावुक, ख. विचारवान, ग. भाव उत्पन्न करनेवाला, घ. भावों को स्पर्श करनेवाला।

७. **दिग्भ्रम**—क. पागलपन, ख. दि
का भ्रम, ग. दिन बीतना, घ. आभास।

८. **निक्षेप**—क. फेकना, ख.
रना, ग. दृष्टि, घ. धरोहर।

९. **सुगबुगी**—क. जागृति, ख. हल्
सी हलचल, ग. बेचैनी, घ. जल्दबाजी।

१०. **वीरांगना**—क. महिला,
पत्नी, ग. वीर स्त्री, घ. सेविका।

११. **अनगढ़**—क. अप्राकृतिक,
बेडौल, ग. अनियमित, घ. व्यर्थ।

१२. **विसर्जन**—क. विनाश, ख. उपे
ग. समाप्ति, घ. त्याग।

१३. **दुधमुंहा**—क. अबोध, ख. दुर्ब
ग. मूर्ख, घ. लघु।

उत्तर

१. ख. घटना का विवरण।
इतिवृत्त तो बड़ा ही रोचक है।

२. ग. उछलता हुआ, तरंगयुक्त।
यह तो जीवन-सरिता का **उच्छल** प्रवाह है।

३. घ. बेगार। **निर्भृति** का विरोध
न्यायोचित है।

४. ख. अच्छी तरह से पिरोया
गुंथा हुआ। उसका अंग-अंग देशप्रेम
परिप्रोत है।

५. ग. झूठी बहादुरी की डींग हांकनेवाला। वह दुर्बलों के सामने ही शूरम्मन्य
बनता है। (संज्ञा-**शूरम्मन्यता**)

६. ग. भाव उत्पन्न करनेवाला।
चित्र **भावप्रसू** है।

७. ख. दिशा का भ्रम, भटकन, बहक। **दिग्भ्रम** का परिणाम प्रायः घातक होता है।

८. घ. धरोहर, अमानत। उसने **निक्षेप** की राशि का दुरुपयोग किया।

९. ख. हल्की-सी हलचल या कंपन। उसकी वक्तृता से श्रोताओं में **सुगबुगी** हो गयी। (**सुगबुगाहट** का भी प्रयोग)

१०. ग. वीर स्त्री। देश में **वीरांगनाओं** की कमी नहीं रही है।

११. ख. बेडौल, भद्दा। इस **अनगढ़** कृति को कौन पसंद करेगा।

१२. घ. त्याग, परिसमाप्ति। कूड़े का **विसर्जन** यहां होता है। मूर्ति का **विसर्जन** नदी में हो गया।

१३. क. अबोध, शिशु की तरह (शाब्दिक-दूधपीता)। क्या वह **दुधमुंहा** है, जो अपना भला बुरा न समझ सके।

पारिभाषिक-शब्द

टेलीप्रिंटर=**दूरमुद्रक**
टेलीफोन=**दूरभाष**
प्रोबेशन=**परिवीक्षा**
कनफर्मेशन=**पुष्टि**
लीफलेट=**पर्णिका, पर्चा**
बुकलेट=**पुस्तिका**
बुलेटिन=**विज्ञप्ति**
स्टेटमेंट=**वक्तव्य**
ग्रैफिक्स=**बिंदुरेखिकी**
ट्रिग्नामेट्री=**त्रिकोणमिति**

समस्या-पूर्ति--२३

प्रतिबिंब

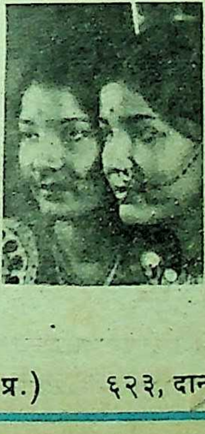

प्रथम पुरस्कार--

आप धोखा खा रही हैं
व्यर्थ ही शरमा रही हैं
ये किसी का फोटो नहीं
समस्या स्तंभ है
जिसमें खुद आप हैं
और आपका प्रतिबिंब है

-एम. सी. सांख्यधर
महात्मा गांधी इंटर कालेज,
मंडावर, बिजनौर (उ. प्र.)

द्वितीय पुरस्कार--

जगती के दर्पण में
जिंदगी का प्रतिबिंब
उस षोडशी के
शृंगार-सा लगता है
जिसकी आत्मा
नैतिक मूल्यों के
अलंकार से अलंकृत हो

--रवि सारस्वत
६२३, दानूमहल्ला, बाजार मोतीलाल, बरेली

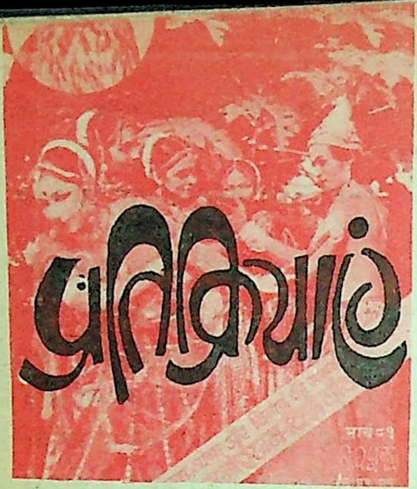

प्रतिक्रियाएं

रोचक सामग्री की सुखानुभूति

'कादम्बिनी' का मनोरंजन विशेषांक पढ़कर इस बार अत्यंत रोचक सामग्री की सुखदानुभूति हुई। परंतु-'झूम री तलैया' पर कवियों के साथ होली खेलने के बाद जब 'कवि-सम्मेलन कितने सार्थक कितने निरर्थक' प्रकाशित लेख में लोकप्रिय साहित्यिक कवियों के विचार-गुबार पढ़े तो संवेदनशील अंतरात्मा क्षुब्ध हो उठी। उनकी तथाकथित धारणाएं लेख में अनर्गल नहीं कही जा सकतीं।

—रजावलि खिल्जी, दिल्ली

मार्च '८१ का मनोरंजन विशेषांक पढ़ा। 'भारतीय संसद जिंदा दिलों की दास्तान', 'ब्रिटिश संसद में ठहाके', तथा 'क. ख. ग.' लेख आदि अच्छे लगे । शेष सामग्री भी काफी मनोरंजक है ।

—सुशीलकुमार श्रीवास्तव, लखनऊ

'कादम्बिनी' का मार्च अंक मिला । राजनीतिज्ञों से लेकर साहित्यकारों तक, जो भी हास्य-सामग्री इस अंक में मिली उसने मनोरंजन विशेषांक को सार्थक बना दिया। नयी सामग्री के साथ स्थायी स्तंभों ने भी भरपूर मनोरंजन दिया। हर बार की तरह 'काल-चिंतन' अनूठा है। आपका विस्तृत चिंतन हम पाठकों को भी चिंतन की परिधि में ला खड़ा करता है।

—भालासिंह, नजीबाबाद

हिंदी भाषा के सर्वोत्कृष्ट मासिक प्रकाशन 'कादम्बिनी' का मार्च अंक (मनोरंजन-विशेषांक) निश्चय ही आकर्षक पठनीय एवं हास्य-व्यंग्य के रस से लबालब भरा हुआ था। एक-एक रचना को बार-बार पढ़ने का जी चाहता है।

महादेवी वर्मा की 'नहीं भूलते ये प्रसंग', इंदिरा गांधी की जीवन की झलकियां—कुल मिलाके सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं मनोरंजक रहीं।

'हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवां व्यंजन वर्ण' लेख में 'स' की चर्चा में कुछ त्रुटि है और कुछ अधूरा भी है।

त्रुटि यह है कि सप्तऋषि के नाम 'मरीचि, अत्रि, प्रलह, पुलस्त्य, ऋतु, अंगिरा और वसिष्ठ' दिये हैं जबकि सप्तऋषि के नाम इस तरह होने चाहिए—कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, वसिष्ठ।

इसके अतिरिक्त 'स' की चर्चा में—सप्तधान्य सप्तपुरी, सप्तगण्डकी (नदी), सात आश्चर्य, सप्तलोक, सप्तमृत्तिका, सप्तश्लोकी-दुर्गा स्तोत्र। सप्तशति दुर्गा स्तोत्र। सप्तश्लोकी गीता, सप्तमहा-

समुद्र, सप्तमहादेश आदि का उल्लेख करने से 'स' अक्षर की चर्चा में और गहनता एवं पूर्णता आयेगी।

उपर्युक्त सप्तऋषियों के नाम में गलती का समाधान करें।

—रामचन्द्र आचार्य, हेटोंडा (नेपाल)

मनोरंजन, हंसी तथा व्यंग्य-विनोद से भरपूर मार्च '८१ का मनोरंजन-विशेषांक बहुत अच्छा लगा। आद्योपांत पढ़ने के बाद ही दूसरे कामों में मन लगा। वैसे तो पूरा अंक ही पठनीय है, परंतु 'नहीं भूलते ये प्रसंग', 'तीन सौ वर्ष पहले काबुल में होली' तथा 'ब्रिटिश संसद में ठहाके' लेख बहुत पसंद आये।

'नहीं भूलते ये प्रसंग' लेख में हिंदी की महान साहित्यकार श्रीमती महादेवी वर्मा ने गागर में सागर भरने का जो सफल प्रयास किया, अपने को उनके ऐसे महान व्यक्तित्व की सराहना के अयोग्य मानते हुए भी, सराहना किये बिना नहीं रहूंगा, लंका के बौद्ध महास्थविर में पौराणिक गुरुओं की भांति स्त्री जाति के प्रति उपेक्षा भाव का प्रसंग पढ़कर महान आश्चर्य तथा दुःख हुआ। कहां गौतम बुद्ध का भिक्षु तथा भिक्षुणियों के प्रति ममतामय समभाव और कहां उनके अनुयायियों का आडंबरपूर्ण आचरण? देश के जनजीवन में उच्च स्थानों पर विराजमान व्यक्तियों में सामान्यज्ञान का अभाव निश्चय ही चिंता की बात है। 'खाली थैली भेंट में मिली' तथा 'आस्तिक जवाहरलाल' लेख के ये अंश सदैव स्मरण रहेंगे।

—शकुनचन्द गुप्त विशारद, लालगंज

मेरी जीवन यात्रा

मार्च अंक में श्रीमती इन्दिरा गांधी का आत्मकथात्मक लेख 'मेरी जीवन यात्रा' पढ़ा। इस लेख से इंदिराजी के व्यक्तित्व के अंतरंग पहलुओं पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। दंगों के समय उनकी निर्भीकता प्रशंसनीय है। 'रोने का इलाज फव्वारा' एक मार्मिक प्रसंग है। जेल की महिला वार्डर जोहरा के प्रसंग में सांप को इंचीटेप से नापनेवाली बात खूब मनोरंजक रही। **—कृष्णराज कृष्ण, शाहदरा**

'कादम्बिनी' का मनोरंजन अंक पढ़ा। अच्छा लगा। ब्रिटिश संसद में ठहाके, मेरे मकान का नम्बर क्यूं बदला, भारतीय संसद जिदादिलों की दास्तान आदि लेख बड़े रोचक लगे। मृदुला सिन्हा का लेख क. ख. ग. मनोरंजन की अपेक्षा, शिक्षा व प्रेरणा अधिक देता है। कमाना, फिर खाना और उसके बाद गाना व्यवस्थित जीवन के लिए यही क्रम होना चाहिए।

—मीनाक्षी श्रीवास्तव, गोरखपुर

नयी दिल्ली नहीं, दिल्ली सेंट्रल

'कादम्बिनी' के मार्च अंक में पृष्ठ १०८ पर लेख का शीर्षक नयी दिल्ली की जगह पर—पाठक 'दिल्ली सेंट्रल के रेलवे प्लेटफार्म पर निजाम का हाथी' पढ़ें। **—सं.**

कादम्बिनी

वर्ष २१ : अंक
अप्रैल, १९८

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

वियोगी हरि
तुम्हें भी लग गयी जमाने की हवा ... १५
डॉ. जगन्नाथ मिश्र
कैसे बतायें आंखें किसने फोड़ी हैं ... १९
विलियम जेम्स
आपकी जन्मतिथि आपका स्वभाव है .. ६२
नरेशचंद्र 'नरेश'
फांसीवाले कैदी की अंतिम इच्छा ... ७२
एस. एल. धनी
पृथ्वी की आयु का अनुमान संभव है ... ७६
दुर्गाप्रसाद शुक्ल
कहानी एक जासूसी कथाकार की ... ८०
डॉ. कृष्णप्रसाद माथुर
जिंदगी और मृत्यु का पूर्वाभास ८४
मधु बेदी
बुरी फिल्म से तो रसोईघर अच्छा .. ९०
श्याम श्रीमाली
रेगिस्तानी जहाज के कुछ रहस्य .. १
जसवंतसिंह विरदी
मां सरस्वती तुम कहां हो ११
सुरेश 'नीरव'
कवि-सम्मेलन कितने सार्थक ११८
रमानाथ त्रिपाठी
भानुभक्त : नेपाली रामकथाकार ... १२३
फारूक आफरीदी
इंद्रधनुषी गुलाब १३२
ज्योतिर्मय
नोटों का आविष्कर्ता एक भिखारी ... १३५
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
द्वापर का उपेक्षित राजव्यक्तित्व ... १४६
श्याम बिहारी आलोक
मृत्युंजय योगी १५१
डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित
लोक परंपरा में भाण ✓...... १५४

स्थायी-स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य—६, समस्या-पूर्ति—७, प्रतिक्रियाएं—८, कालचिंतन—१२, विधि-विधान—४०, हंसाइयां—५०, मुल्ला नसीरुद्दीन के कारनामे—५०, हंसिकाएं (डॉ. सरोजनी प्रीतम)—५१, विज्ञान की नयी उपलब्धियां—५७, बुद्धि-विलास—८९, तनाव से मुक्ति—१२७, ज्ञान-गंगा—१३९, सही कहानियां—१५२, नयी कृतियां—१६१, गोष्ठी—१७३, आस्था के आयाम—१७९

आवरण पृष्ठ : विद्याव्रत / अनिल के. दुग्गल
पारदर्शी : विद्याव्रत—९९, प्रदीप सोनी—१०२, चंद्रशेखर शर्मा—१९९

भूरचंद जैन
सांस्कृतिक धार्मिक स्थल गिरनार ... १५८

प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'
क्या आपका जन्म अप्रैल में हुआ है ... १६७

जयंत चौहान
मणिपुर में विद्रोहियों की तलाश ... १७६

डी. प्रसाद
वह विष पीने के प्रयोग करता रहा ... १८०

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

भगवतीचरण वर्मा
त्याग और ग्रहण २७

माखनलाल चतुर्वेदी
संदेह ३५

भुवनेश्वर बेहेरा
सहावस्थान ४३

ख्वाजा अहमद अब्बास
यदि मैं मंत्री होता ५२

श्याम व्यास
महानगर एक दहशत है ६७

डॉ. शशि शर्मा
चरागाह १०६

भारत प्रकाश भाटिया
रामनाथ का साला १४०

सार-संक्षेप

हेनरी स्कॉट स्टोक्स
उसने क्रांति के लिए हराकिरी की थी ... १८२

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष
एस. एल. खुराना
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

कविताएं

धनंजयसिंह ९८
सुरेशकुमार, श्याम बेबस १३०
राजकुमारी 'रश्मि', कुमार अनुपम ... १३१

संपादकीय सहयोगी
संयुक्त-संपादक : शीला झुनझुनवाला

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल, उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवतीप्रसाद डोभाल, सुरेश 'नीरव', धनंजयसिंह, विजयश्री, प्रूफरीडर : स्वामीशरण, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी

पता : संपादक--'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : २६ रुपये

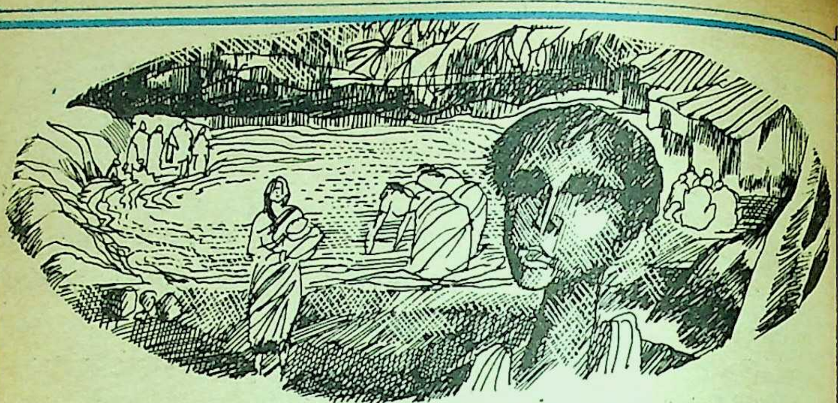

काल-चिंतन

● एक गांव से लौटा हूं मैं और देख रहा हूं सिमटा हुआ विस्तार :

--धूलभरे रास्तों पर गतिशील किसान, गाय, बैल और भैंसों के बीच कंबल ओढ़े एक सिकुड़ी छाया, पैर की फटी हुई बिमाइयां !

--सामने का पोखर, कदम के नीचे लहराता बंद पानी, काई, कीचड़ और सड़े पत्तों से भरा, रेंगते हैं जहां सांप, नाम नहीं है मछलियों का ! पोखर के तट पर कपड़े धोती और सड़े पानी में अपना खुला तन डुबाती हुई ग्राम-बधुएं ! नंगे तैरते हुए भोले बच्चे !

--दूर महकता है हरसिंगार, फूलों के रंगीन गांव में फिरकनी हवाएं बदहवास तैरती हैं । बेजान मिट्टी में उग रही हैं जिंदगी की फसलें !

--चेहरे ! कंकाल, बढ़े हुए पेट, नासूर का सीलनभरा दर्द किसी एक जगह हो तो इलाज हो जाए ! कोई बताता भी नहीं उसे कि उसकी बारीक सांसों पर संघात न पड़े ! ... चेहरे ये, तब भी हंसते हैं, मुसकराते हैं, रोते भी हैं—मौसम बदलता है इनका हर पल !

--यह है मेरा देश : भारत माता ग्रामवासिनी !

●

--मेरे ड्राइंगरूम में इन सबके चित्र लगे हैं और रोज सुबह उन्हें मैं देखता हूं, प्लास्टिक

के फूल हों जैसे वे, ताजे फूल रोज बदलने का सामर्थ्य नहीं है मुझमें ! इनसे एक रोशनी फूटती है शायद :

संघर्ष ही जीवन है !
मौन मृत्यु है !

—सुबह से शाम तक जूझता वह आदमी कितनी बार टूटता है !. . . सड़ा-गला पानी पीकर सिद्ध करता है कि शिव वही है ! शिवत्व की अनजानी स्वीकृति ने उसे संघर्ष की शक्ति दी है !

—आज भी जीवित हैं इसलिए वरद पृथ्वी-पुत्र और शिवत्व का वरदान शहर की कागजी हवाओं को बांटते हैं।

—उनका सत्य बिकता है हमारे शहरी बाजारों में और उनके संघर्ष की कीमत अदा की जाती है छपे हुए धब्बेदार नोटों या गिलट के नकली सिक्कों से !

—यह चलता रहेगा सब, क्योंकि चला आया है सदियों से : पथचिह्न याद दिलाते हैं गुरमुटिया मजदूरों की, अत्याचारों से पीड़ित !

—अपने श्रम-संघर्ष से उन्होंने भले बदल लिया हो अपने को, लेकिन उनके बेहतर होने का श्रेय हमारे हाथ की स्याही में है !

—हम अनजाने मृत तारों के प्रकाश में अपने को उद्भाषित करते हैं। सैकड़ों वर्ष पहले का चला प्रकाश अब पहुंचा है धरती तक, चाहे वह तारा अब तक टूटकर नष्ट हो गया हो। हम अब भी उस तारे के अस्तित्व को स्वीकारते हैं, क्योंकि प्रकाशवान बनने के लिए अस्वीकार व्याघात है !

—हम कठफोड़वा हैं !

—बड़ या पीपल के वृक्ष को अपनी चोंचों से तोड़ने का यत्न करते हैं ! तब भी वटवृक्ष की जड़ें बढ़ती जा रही हैं और पीपल रोज-रोज फैलता जा रहा है ! उनके तनों में हमने घोंसले बनाकर कई कठफोड़वे भले पाल दिये हों; महाबोधमय वृक्ष शांत तपस्वी-सा स्थिर है, अविचल, काल-निरपेक्ष या काल-शून्य और समय की गणना का ज्ञानदाता शोधियों को, खोजियों को !

●

—मेरा सोच रुक जाता है ! हम अपने टूटने, अपनी घुटन, अपने दर्द और अपने अभाव का ढिंढोरा आसानी से पीट लेते हैं !

—अपने मानसिक संघर्ष, आवेग और तनाव को सैकड़ों-हजारों पृष्ठों पर अंकित कर देते हैं !

—सत्ता हमारी मुट्ठी में है और हम शासक हैं उस पोखर के, पोखरी हवाओं के !

●

--आदमी और आदमी के बीच का यह अंतर !
--संघर्ष और संघर्ष दोनों की भिन्न व्याप्ति !
--दर्द और दर्द दोनों की विभिन्न घुटन !
--जीने और जीने दोनों के अपने-अपने लक्ष्य !
--नहीं पूरा किया जा सकता यह अंतर क्या ?
--एक दर्द दूसरे दर्द से रिश्ता नहीं जोड़ सकता शायद !
--एक नासूर है, दूसरा कैंसर ! एक पहचानहीन, दूसरा विज्ञापित !

●

--एक अनंत-सत्ता समस्त ब्रह्मांड को संचालित करती है, इसे किसने नकारा है !
--तब . . . !
--दोष दें किसे--उस अनंत सत्ता को या . . .या. . . ! दोषी की खोज के लिए हमें किसी अदालत में जाना होगा !

●

--हां, जरूर बड़ी अदालतें हमारे शहर में ही हैं, मैं जा रहा हूं वहीं . . . लौट भी सकता हूं और . . . खो भी सकता हूं कागजों की फाइल में ।

राजेन्द्र अवस्थी

अगले अंक में

आदिम युग से आज के आणविक युग तक मनुष्य द्वारा मनुष्य को दी गयी

यातना का बदनाम इतिहास

अच्छे भले घर का रवि किन परिस्थितियों में मादक द्रव्यों का शिकार बना--

वह जिंदगीभर विष पीने के प्रयोग करता रहा

कुछ अन्य शीर्षक

○ बुद्ध की वर-परीक्षा ○ भूमि छीनी सागर से कैसे ○ उसने हजारों लखपति बनाये, स्वयं भूखों मरा ○ मरदों की शोभा ○ एक पेपरवेट में समूचे ब्रह्मांड का दर्शन ○ प्रसिद्ध महिला क्रांतिकारी दुर्गाभाभी से एक भेंट तथा और भी बहुत कुछ

'कादम्बिनी' पढ़िए : समय के साथ चलिए

प्रीतमजी का
'गुलदस्तए बिहारी'

तुम्हें भी लग गई जमाने की हवा साहब

(वियोगी हरि)

कोई दो बरस हुए जब मैं बनारस में श्रद्धेय राय कृष्णदासजी से उनके निवास-स्थान पर मिला था। चर्चा के दौरान उन्होंने कहा था कि "बुंदेलखंड-निवासी ब्रजभाषा और उर्दू के सिद्धहस्त कवि देवीप्रसाद 'प्रीतम' का रचा हुआ 'गुलदस्तए बिहारी' पर मैं मुग्ध रहा हूं, दुःख है कि यह पुस्तक मेरे पास आज नहीं है। एक मित्र इसे ले गये थे, पर उन्होंने उसे लौटाया नहीं।" मैंने कहा कि, "'गुलदस्तए बिहारी' का प्रकाशन तो काशी से ही हुआ है, साहित्य-सेवा-सदन से। मेरे पास उसकी एक फटी-पुरानी प्रति थी, उसे दिल्ली जाकर खोजूंगा।" तब उन्होंने कहा कि, "उसे टाइप कराकर आप भेज देंगे तो बड़ा अच्छा होगा।" मैंने वचन दे दिया, पर भेजना भूल गया। राय कृष्णदासजी का स्वर्गवास हो गया और पुस्तक न भेज सकने का मुझे पछतावा रहा है।

यह पुस्तक काशी से संवत १९८० में प्रकाशित हुई थी। हिंदी-जगत 'गुलदस्तए बिहारी' को और उसके रचयिता प्रीतमजी को शायद भूल गया है। ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते हैं, पुराने कवियों (यद्यपि देवीप्रसाद 'प्रीतम' कोई बहुत पुराने नहीं हैं) और उनकी रचनाओं को धीरे-धीरे भूलते जाते हैं।

प्रीतमजी का जन्म संवत १९२९ में कानपुर के एक कायस्थ-कुल में हुआ था। पिता का नाम मुंशी रामशरण था। उनका पालन छतरपुर (मध्यप्रदेश) में हुआ था, और यहीं उन्होंने इंट्रेंस पास किया था। उर्दू शायरी विद्यार्थी-अवस्था से ही करते थे। इनके उस्ताद थे मिर्जा गालिब के भतीजे मिर्जा बिस्मिल। ब्रजभाषा में भी यह कविताएं रचते थे।

प्रीतमजी सरल स्वभाव के मिलनसार व्यक्ति थे। प्रसिद्ध काव्य-मर्मज्ञ लाला भगवानदीन के यह घनिष्ठ मित्र थे। बिजावर से छतरपुर लालाजी से मिलने यह अकसर आते थे। चार-पांच बार तभी मैंने प्रीतमजी के दर्शन किये थे।

श्रीराम-जानकी के वे अनन्य भक्त थे। 'प्रीतमशतक' का यह सवैया उनकी राम-शरणागति का स्पष्ट द्योतक है—

सन्तान को सोच नहीं कछु 'प्रीतम' चाह नहीं मन में धनकी।
जिन बालपने से सुधारी सदा सुधि लैहैं वही वृद्धापनकी॥
धनि धन्य गोसांईजू डार गये हमें देहरी जानकी-जीवनकी।
अब तो रघुराज गरीब निवाज के हाथ है लाज दुखीजन की॥

प्रीतमजी की १२ रचनाओं का उल्लेख 'गुलदस्तए बिहारी' की भूमिका में भट्ट पुरुषोत्तम तेलंग ने किया है, जो बहुत करके अप्रकाशित ही रहीं।

'गुलदस्तए बिहारी' काव्यमर्मज्ञ लाला भगवानदीन ने साहित्य-सेवा-सदन, काशी को प्रकाशनार्थ दिया था। लालाजी को यह रचना बहुत प्रिय थी। मुझे याद है कि जब मैंने गुलदस्ता के दो-तीन शेर पं. पद्मसिंह शर्मा को सुनाये, तो उन्होंने बहुत दाद दी थी। स्व. जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने 'बिहारी-रत्नाकर' की प्रस्तावना में 'गुलदस्तए बिहारी' पर लिखा है :

"इसमें दोहों का उर्दू शेरों में जो अनुवाद किया है उससे लक्षित होता है कि कवि ने दोहों के अर्थों को समझने में अच्छा प्रयास तथा अनुसंधान किया है। उर्दू भाषा में उन्होंने हिंदी के शब्दों का बेखटके प्रयोग किया है और यह बड़ी बात की है कि बिहारी ऐसे कवि के पूरे एक दोहे का अर्थ उर्दू के एक शेर में झलकाया है।"

बानगी के तौर पर 'गुलदस्तए बिहारी' में से चंद दोहों का शेरों में किया गया उर्दू अनुवाद मैं नीचे दे रहा हूं—

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं परे, स्याम हरित दुति होय॥

मेरे अफकारे-दुनिया दूर कीजे राधिका रानी।
कि जिनके सायएतन से, हरे हों श्याम नूरानी॥

मोहनि मूरति स्याम की, अति अद्भुत गति जोय।
बसति सुचित अंतर तऊ, प्रतिबिंबित जग होय॥

अजब कुछ श्याम की उस मोहिनी मूरत में शकती है।
बसी गो शीशए-दिल में, मगर बाहर झलकती है॥

नाचि अचानक ही उठें, बिन पावस बन मोर।
जानति हौं नंदित करी, यह दिसि नंदकिसोर ।।
अचानक नाच उठे बन मोर बिन ही घोर घन छाये।
समझ पड़ता है, शायद इस तरफ घनश्याम हैं आये ।।
सोहत ओढ़े पीतपट, श्याम सलोने गात।
मनो नीलमनि सैलपर, आतप पर्‌यो प्रभात ।।
कदे घनश्याम पर क्या पीतपट की जौ दमकती है।
जियाये होर सहरी कोहे नीलम पर चमकती है ।।
छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यो जोबन अंग।
दीपति देह दुहूनि मिलि, मनहुं ताफता रंग ।।
लड़कपन की झलक ओ नूर आगाजे जवानी है।
बरंगे ताफता दोनों की जू से जिस्म जानी है ।।
इक भीजे चहले परे, बूड़े बहे हजार।
कितो न अवगुन जग करत, नै वै चढ़ती बार ।।
कोई भीगे पड़े चहले, कोई डूबे बहे सदहा ।
नहीं क्या-क्या सितम करती है, चढ़ती उम्र औ दरिया ।।
खेलन सिखये अलि भलें, चतुर अहेरी मार।
कानन चारी नैन मृग, नागर नरनि सिकार ।।
शिकारी हुस्न ने तेरे सिखाई है ब-उस्तादी ।
गिजाले चश्म को जालिम दिले दाना की संयादी ।।
कीनें हूं कोटिक जतन, अब कहि काढ़े कौन।
भौ मन मोहन रूप मिलि, पानी में को लोन ।।
हजारों हिक्मतें कीं, कहिये निकले कौन सूरत से ।
हुआ दिल-मिल के पानी का नमक मोहन की मूरत से ।।
दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गांठ दुर्जन हिये, दई नई यह रीति ।।
लड़ें आंखें कुटुम टूटे जुड़े दिलदार से उलफत ।
पड़े दिल में रकीबों के गिरह अल्लाह री कुदरत ।।
गुनी गुनी सब कोउ कहे, निगुनी गुनी न होत।
सुन्यो कहूं तरु अर्क तें, अर्क समान उदोत ।।
कहें गो बेहुनर को बाहुनर, कब बोलबाला है।
किसी ने अर्क सा क्या अर्क में देखा उजाला है ।।

जो चाहत चटक न घटै, मैलो होय न मित्त।
रज राजस न छुवाइये, नेह-चीकने चित्त॥
मुकद्दर हो न हमदम चाहते हो कुछ चमक आये।
सनेही चीकने चित पर न रज राजस की छू जाये॥

करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि।
रे गंधी मति अंध तूं, अतर दिखावत ताहि॥
बरंगे आचमन जो रोगने गुल को है पी जाता।
उसे क्या कोरदिल अत्तार इत्रे गुल है दिखलाता॥

जगत जनायो जिहि सकल, सो हरि जान्यो नाहि।
ज्यों आंखिन सब देखिये, आंखि न देखी जाहि॥
जनाया जिसने ये आलम वो खुद जाना नहीं जाता।
हैं दीदे देखते सब, पर नहीं दीदा नजर आता॥

दूरि भजत प्रभु पीठ दे, गुन विस्तार न काल।
प्रगटत निर्गुन निकट ही, चंग रंग गोपाल॥
किए विस्तार गुन का भागते हैं पीठ दे हटकर।
निकट निर्गुन के आते हैं बरंगे चंग हैं नटवर॥

कब को टेरत दीन ह्वै, होत न स्याम सहाय।
तुमहू लागी जगतगुरू, जगनायक जगबाय॥
हूं कबका मुल्तजी सुनते नहीं कुछ इल्तिजा, साहब।
तुम्हें भी लग गई शायद जमाने की हवा, साहब॥

मोहिं तुम्हैं बाढ़ी बहस, को जीते जदुराज।
अपने-अपने बिरद की, दुहुनि निबाहन लाज॥
हमारी औ तुम्हारी लग रही है होड़ जदुराई।
किसे हो जीत, दोनों को है अपने फन में इकताई॥

जद्यपि है सोभा घनी, मुक्ताफल में देष।
गुहे ठौर की ठौर में लर में होत विशेष॥
गुहर गो देखने में खुशनुमा सुन्दर सुहाते हैं।
लड़ी में गूंथने ही से बड़ी पर आब पाते हैं॥

—एफ-१३/२, माडल टाउन, दिल्ली-११०००९

कैसे बताएं इनकी आंखें किसने फोड़ी हैं

बिहार के मुख्यमंत्री से 'कादम्बिनी'-संपादक की अंतरंग वार्त्ता

डा. जगन्नाथ मिश्र बिहार राज्य के मुख्यमंत्री हैं। मुख्यमंत्री होने के पहले वे बिहार विश्व-विद्यालय, मुजफ्फरपुर में अर्थशास्त्र पढ़ाते रहे हैं। अर्थशास्त्र में ही उन्होंने पी. एच-डी. की उपाधि ली। इस पृष्ठभूमि को लेकर वे राजनीति में आये हैं और बिहार-जैसे राज्य की असाधारण समस्याओं को बहुत धैर्यतापूर्वक सुलझाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

कुछ दिन पहले मैं पटना में उनसे मिला था। उस समय वे 'जनता-दरबार' में थे। मैं देख रहा था कि सैकड़ों लोग अपनी शिकायतें और मांगें लेकर उन्हें घेरे हैं और कई बार तो धक्का-मुक्की भी हो जाती है। 'जनता-दरबार' से फायदा यह है कि आम जनता को सीधे मुख्यमंत्री से मिलने का मौका मिल जाता है। 'जनता-दरबार' देखने के बाद मैं उनके साथ उनके घर गया और वहां हमने बैठकर बिहार राज्य की बहुत-सी समस्याओं पर चर्चा की।

प्रश्न: आप प्रतिदिन सैकड़ों लोगों से मिलते हैं और उनके आवेदन-पत्र लेते हैं। मेरे मन में एक प्रश्न उठता है कि क्या उन सब पर कुछ कार्यवाही भी होती है या वे मात्र जनता की संतुष्टि के लिए हैं?

मिश्रजी: हमने अपने यहां एक व्य-

वस्था कर रखी है कि प्रत्येक दिन, जिन दिनों मैं पटना में रहता हूं, इतवार को छोड़कर ६ बजे से ११ बजे तक लोग खुले रूप से हमारे यहां आ सकते हैं और आते हैं। हमारी चेष्टा और कोशिश होती है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास पहुंचें, उनकी व्यक्तिगत बातों को सुनें। मैं आवेदन-पत्र लेकर संबंधित अधिकारियों को देता हूं। फिर उन पर कार्यवाही होती है, इसलिए एक भी शिकायत ऐसी नहीं होती है, जो अनदेखी चली जाए। जो होने लायक होता है, वह हो जाता है। ज्यादातर जो समस्याएं होती हैं, वे शीघ्र निष्पादन की होती हैं। निष्पादन की प्रक्रिया को हम तीव्र कर देते हैं। अगर लोगों का काम नहीं हुआ होता और कोई असर नहीं पड़ता, तो प्रतिदिन इतनी बड़ी तादाद में आवेदन नहीं दिये जाते। बिहार के लोगों का यह विश्वास हम पर जम गया है कि उनकी सहायता की ही जा सकती है।

प्रश्न : इसी प्रसंग में एक बात जानना चाहूंगा कि जो आवेदन-पत्र आपको मिलते हैं, उनमें अधिकांश बड़ी समस्याएं कौन-सी होती हैं ?

मिश्रजी : बहुत-सी तो निजी समस्याएं होती हैं और साधारण समस्याएं खासकर प्रशासनिक होती हैं, जिला स्तर पर, प्रखंड स्तर पर, स्थानांतरण नहीं हुआ, नौकरियों की बहुत बड़ी मांग है, नौकरी सब चाहते हैं। जो नौकरी में हैं, उनकी भी कुछ कठिनाइयां हैं, उनके भी मामले होते हैं या फिर कुछ सार्वजनिक महत्त्व की बात भी होती है। अधिकांश व्यक्तिगत शिकायतें होती हैं।

प्रश्न : मैं आपसे एक मूल प्रश्न पर बात करना चाहता हूं। समाचार-पत्रों में लगातार पढ़ने को मिल रहा है कि भागलपुर और समस्तीपुर में जनता को परेशान किया गया है। लोगों को अंधा किया गया है, उनकी आंखों में तेजाब डाला गया। यह अमानुषिक कार्य है, और शायद सिर्फ बिहार में हुआ है। मैं जानना चाहता हूं,

'जनता-दरबार' में शिकायतें सुनते हुए मुख्यमंत्री

कि इसकी पृष्ठभूमि क्या है ?

हमारी अच्छाइयां भी हैं !

मिश्रजी : यह हमारा दुर्भाग्य है बिहार का, कि बिहार की प्रतिमा को निरंतर धूमिल करने की कोशिश और चेष्टाएं होती हैं। हमारी जो अच्छाइयां होती हैं, उनको तो प्रकाशित ही नहीं किया जाता। हमारी यह शिकायत आप-जैसे राष्ट्रीय प्रैस के लोगों से है कि बिहार में कुछ सामाजिक बुराइयां हैं तो बहुत सारी अच्छाइयां भी हैं। बिहार आगे बढ़ने के लिए बहुत-कुछ कर रहा है। इन बातों को प्रसारित करने की कोशिश नहीं होती है। राष्ट्रीय प्रैस का ध्यान हमारी इन अच्छाइयों की ओर नहीं जाता। जो घटनाएं घटी हैं, उन पर नियंत्रण कुछ नहीं होता है। कुछ हमारी सामाजिक व्यवस्था भी ऐसी है, जिसके कारण यह सब होता है। लेकिन ऐसा नहीं है कि कोई बहुत ज्यादा घटनाएं हो रही हैं और सारा बिहार वही है।

प्रश्न : भागलपुर में ऐसी घटना घट गयी...! इसकी पृष्ठभूमि क्या है ?

मिश्रजी : बता रहे हैं, भागलपुर की घटना दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन आज भी ऐसा लगता है कि सारे देश के लिए बिहार में भागलपुर के अलावा और कोई चीज नहीं है। जिस ढंग से इस घटना को उछाला गया है, हमारी शिकायत उससे नहीं है, लेकिन एक वास्तविकता होनी चाहिए कि सही बात क्या है ? ऐसी अमानुषिक घटनाएं केवल हमारे यहां नहीं घटती हैं, बहुत सारी जगहों पर घटती हैं। ऐसी घटनाएं घटें, अच्छी बात नहीं है। लोकतंत्र में कानून की मर्यादा है, कानून सर्वोपरि है। कानून से ही सब कुछ होना चाहिए। जो कोई भी कानून अपने हाथ में ले, उसको माफ नहीं किया जा सकता। लेकिन सब तरह से इकतरफा इस बात को रखने की कोशिश की जा रही है। जब तक कि वाकई एक किसी कोर्ट से यह बात स्थापित न हो जाए, तो मात्र पूर्वाग्रह के आधार पर

'कादम्बिनी'-संपादक के साथ टेलीविजन पर एक भेंट

जो अभिव्यक्ति की जा रही है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। आप भागलपुर की घटना को ही लीजिए। यह एक दिन की घटना नहीं है, यह तो वर्षों से है।

प्रश्न : कब से चली आ रही हैं ऐसी घटनाएं, कृपया बताएंगे ?

मिश्रजी : पहली घटना—सन १९७७ में घटी। फिर सन १९७८ में। फिर ७९ में फिर ८० में। ये घटनाएं तीन-चार सालों में घटी हैं।

भागलपुर कांड की शुरूआत

प्रश्न : आपके नोटिस में पहली बार भागलपुर की घटना कब आयी ?

मिश्रजी : पहली बार केवल इसी नवंबर महीने में आयी, जबकि कुछ अखबारों में ये बातें छपीं। यदि यह बुरी बात थी और यदि पुलिस ने की है तो यहां के विरोधी दलों और विरोधी व्यक्तियों ने आज तक इसकी चर्चा क्यों नहीं की ?

दूसरा सवाल, जिस परिवार के लोगों के साथ यह घटना घटी, पुलिस में उस परिवार के लोगों ने इस घटना की शिकायत क्यों नहीं की ? वे ऊपर आकर सरकारी स्तर पर भी शिकायत कर सकते थे। तीसरी बात, लोकसभा का चुनाव हुआ, विधानसभा का चुनाव हुआ, पंचायतों का चुनाव हुआ, तब किसी ने ये बातें नहीं उठायीं। आज इन बातों को क्यों उछाला जा रहा है ? ये बातें और जोर से उछाली जा सकती थीं, चुनाव के दिनों में। चुनाव के दिनों में इन बातों की चर्चा क्यों नहीं हुई ? अगर पुलिस का यह जुर्म था, तो वहां के एम.पी. के उम्मीदवार, एम. एल. ए. के उम्मीदवार, पंचायतों के उम्मीदवार तो इन बातों को उठाने की कोशिश कर सकते थे ? फिर विधानसभा का सत्र हुआ, लोकसभा का सत्र हुआ, उस इलाके के किसी सदस्य ने ये बातें क्यों नहीं उठायीं ? और फिर विधानसभा में, विशेषकर मार्क्सवादी सदस्य हैं, उन्होंने भी कोई बात नहीं प्रस्तुत की। और दूसरा जो चिंता का विषय है, 'क्रोनिक इंसीडेंस' कह रहे हैं कि सारी बातों को देखना चाहिए था। तब आप समझ सकेंगे कि यह क्यों हुआ ? यह मामला अगर तीन साल से चल रहा है, तो ३० जुलाई, सन १९८० को यदि मामला चीफ जुडीशियल मजिस्ट्रेट और सेशन जज के यहां दाखिल किया गया, तो भागलपुर की डिस्ट्रिक्ट कोर्ट ने उसे 'रोटीन मैटर' की तरह से 'फॉरवर्ड' कर, सीधे चीफ जुडीशियल मजिस्ट्रेट के पास भेज दिया। और सी. जी. एम. ने इसको 'फारवर्ड' कर दिया जिला अधिकारियों को। जुलाई से लेकर अक्तूबर तक इसे जुडिशियरी के मातहत रखा गया। उन्होंने इसकी सुनवाई क्यों नहीं की ? उन्होंने कार्यवाही क्यों नहीं की ? फिर हम शिकायत नहीं करना चाहते जुडिशियरी की। जो सुप्रीम कोर्ट की चिंता और व्यग्रता आज हम देख रहे हैं, ये चिंता नौ अक्तूबर को नहीं देखी गयी। नौ अक्तूबर को इस मामले को इतने 'रोटीन मैटर' की तरह लिया, कि कहा गया कि

चार सप्ताह में डॉक्टर की रिपोर्ट आनी चाहिए। अगर इतना 'सीरियस क्राइम' था, बुरा 'क्राइम' था, जो नहीं होना चाहिए था, जुल्म हो गया, तो उसकी रिपोर्ट के लिए चार सप्ताह का लंबा समय क्यों दिया जाना था? सुप्रीम कोर्ट तो समर्थ संस्था है, पांच दिन में, दस दिन में, स्पेशल टीम भेजकर जानकारी मंगवा सकती थी। इसलिए आपको इन सबसे लगता है कि ये सारी बातें इस तरह से क्यों होती चली गयीं? सबकी नजरों से चीज क्यों बचती चली गयी? अब सीधा आरोप है कि पुलिस ने यह किया है। हमारी समझ में यह बात नहीं आती। अगर पुलिस का ही यह दुराचरण होता तो हमारे समाज में पुलिस के प्रति जो आक्रोश पैदा होता है, उसे दबाया नहीं जा सकता था। अगर पुलिस का जुर्म निरंतर हुआ होता तो यह आक्रोश बना रहता। और बातें फैलायी गयी होतीं। लेकिन अब आज परिस्थिति और माहौल बनाया गया है। पुलिस के पक्ष में हम कुछ नहीं कहना चाहते। लेकिन, जब तक पूरी जांच न हो जाए, सारे पक्ष-विपक्ष की बातें, गवाही, सबूत ये सब पेश न हो जाएं, सारी चीजें न्यायाधिकरण के सामने चली न जाएं, उससे पहले कहना कि यह सब पुलिस ने किया है, मैं समझता हूं कि पुलिस के साथ 'अनफेयर' होगा।

प्रश्न : ये कैदी तो जेलखाने में थे तो आप समझते हैं कि यह काम जनता ने किया है?

आंखें कहां फोड़ी गयीं ?

मिश्रजी : जेल में तो हुआ ही नहीं, एक यही भ्रम होता है 'अंडर ट्रायल' कहने से, जेल में एक भी घटना नहीं घटी।

प्रश्न : एक अखबार में फाइल का नंबर दिया गया है, जो आपके यहां से 'लीक आउट' हुई। जिस पर आपने कुछ हस्तक्षेप भी किया है, और इनसे पता लगा है कि कई घटनाएं जेल में हुई हैं?

सब काम कानून के अनुसार होंगे

मिश्रजी : नहीं, नहीं। रिपोर्ट में भी नहीं हैं, वो कुछ अलग होगा जो अखबारों में है। वह जेल की घटना नहीं है। घटना कहां की है—दो बातें हैं। पुलिस का कहना है कि हमारे कब्जे में आने से पहले ये घटना घटी। कैदियों का कहना ये है कि उनको गिरफ्तार करके जेल भेजने और पुलिस के बीच में यह घटना हुई। 'द होल केस इज दिस'। कैदियों का भी यही कहना है, इन लोगों ने शायद दर्ज कराया है, कि वे नहीं कहते हैं कि हमको जेल में अंधा किया गया है। वे यह कहते हैं कि पुलिस के गिरफ्तार करने के बाद, जेल तक भेजने के बीच यह सब हुआ है। पुलिस का कहना है कि हमारे कब्जे में आने से पहले लोगों ने आक्रोश में आकर यह किया है। अब यह बात तो हो सकती है कि पुलिस की उपस्थिति वहां रही हो, या पुलिस वहां दखल नहीं कर सकती हो, या और तरह-तरह की बातें हो सकती हैं, लेकिन दोनों तरह के मामले यही हैं,

जो अंततोगत्वा साक्ष्य के आधार पर स्थापित हो सकेगा कि जब पुलिस ने अपने कब्जे में लिया, तब पुलिस ने किया या पुलिस के कब्जे से पहले ये घटना घटी है। यह 'मैटर ऑव इनवेस्टीगेशन' है, जांच का सवाल है। इसलिए इसको जितना 'प्रीसपोज' करके जितनी भी बातें कही जा रही हैं, इससे 'होल ट्रायल प्रोसेस' बिगड़ जाएगा। इस तरह से जो बातें हो रही हैं, उससे कोई न्याय-प्रणाली काम भी नहीं कर सकती। हमने सरकार का कानून बनाया और सरकार के कानून पर अमल करना हमारा प्राथमिक कर्त्तव्य है। अगर कानून का कोई उल्लघंन करता है, तो वह दंडनीय है। उसको दंड होगा, लेकिन इसमें सरकार कहीं नहीं आती। अगर कोई पदाधिकारी कोई खून कर देता है, तो उसका मुकदमा कोई रोक नहीं सकता है। व्यवस्था बनाने की बात हमने कही हैं लेकिन कानून ने कहीं अनुमति नहीं दी कि किसी की आंख फोड़ दो। कानून ने नहीं कहा कि अमानुषिक व्यवहार करो। उन कैदियों के अलावा एक भी साक्ष्य हमारे सामने नहीं आया, जो कहे कि पुलिस ने यह काम किया है। केवल उन अपराधियों के बयान पर यह कैसे मान लिया जाये कि पुलिस ने किया है!

प्रश्न : सुप्रीम कोर्ट जो फैसला देगा, उसे तो आप स्वीकार करेंगे?

मिश्रजी : इस प्रश्न पर विवाद कहां उठता है? न्याय के वे सबसे बड़े संस्कारी हैं। जो इसका दोषी है, उसके खिला समुचित कार्यवाही की जाएगी। लेकि सरकार कहां आती है? बिहार प्रदे में ५ लाख, ६ लाख सरकारी कर्मचारी हैं। कौन कहां, क्या कर देता है, इसकी जिम्मेदारी हमारी नहीं हो सकती। अगर हमारे नियम-कायदों का उल्लघंन कोई करेगा तो उसको दंड जरूर मिलेगा। यही सरकार का प्रशासन है।

प्रश्न : अखबारों में मैंने पढ़ा है कि जिन कुछ अधिकारियों को आपने दंडित किया था, उन्हें फिर बहाल कर दिया गया।

मिश्रजी : दंडित; यह सही है इस रूप में कि हमने उनको 'सस्पेंड' किया। बाद में उन्होंने आवेदन दिये, उन्होंने मजिस्ट्रेट से दरखास्त की कि 'सस्पेंड' करने के पहले यदि कोई व्यक्तिगत रूप से दोषी है तब आप सस्पेंड कर सकते हैं। किसी ने खून कर दिया है या अपराध किया है, तो ठीक है, लेकिन 'परफारमेंस ऑव ड्यूटी' में फेलियर किया है, तब उसको अगर आप 'सस्पेंड' करना चाहते हैं तो उससे आपको 'शो कॉज' पूछना चाहिए। यह कानूनी तरीका है। उसमें हमने पाया कि 'सस्पेंड' करना गैरकानूनी है, नाजायज है। इसलिए एक-एक के मामले को अलग-अलग देखकर बहाल कर दिया!

प्रश्न : क्या आप अभी तक यह मानते आ रहे हैं कि यह काम पुलिस ने नहीं किया?

पुलिस-व्यवस्था में सुधार किया जाएगा

मिश्रजी : यह हम नहीं कह रहे हैं, पुलिस ने किया है या नहीं, यह तत्काल नहीं कहा जा सकता। न्याय की परिपाटी को बिगाड़ना नहीं चाहिए । 'ह्यूमेनिटेरियन एप्रोच' एक बात है लेकिन न्याय की प्रक्रिया अलग चीज है !

प्रश्न : आगे ऐसी घटनाएं न हों, इसके लिए क्या आपने कोई उपाय किया है ?

मिश्रजी : काफी सख्ती कर दी है। सुपरिटेंडेंट और डी. आई. जी. की मीटिंग में काफी और साफ 'स्पेशल ऑर्डर' जारी किया है ताकि कभी किसी के साथ दुर्व्यवहार न हो सके।

प्रश्न : पुलिस-व्यवस्था में सुधार के क्या काम कर रहे हैं ?

मिश्रजी : काफी कुछ कर रहे हैं, हमारे यहां पुलिस अफसर बहुत कम हैं, हम उन्हें बढ़ा रहे हैं, उनको सुविधा देने का काम कर रहे हैं। उनकी कार्य-दक्षता की प्रणाली बना रहे हैं।

प्रश्न: क्या उन दिनों आप भागलपुर और समस्तीपुर गये थे ?

मिश्रजी : समस्तीपुर गये थे। भागलपुर नहीं गये। वहां क्या देखना था ? भागलपुर जेल में तो हम खुद रहे हैं।

प्रश्न : जिनकी आंखें फोड़ी गयीं हैं, वे सब क्या जेल में हैं ?

मिश्रजी : नहीं सब छूटे हुए हैं, कुछ दिल्ली में हैं, आप लोगों के 'गेस्ट' हैं।

उर्दू को बहुत पहले यह दर्जा मिलना था

प्रश्न : अब मैं उर्दू की बात करूंगा। आप उर्दू को दूसरी भाषा बना रहे हैं। कई लोगों का मत है कि यह काम शायद सही नहीं हो रहा है।

मिश्रजी : हम यह मानते हैं कि कोई काम सही हुआ है, तो यही हुआ है। उर्दू को यह हक काफी पहले मिल जाना चाहिए था। नहीं देने का कोई कारण नहीं, क्योंकि हमने उर्दू को कुछ दिया नहीं। हमने केवल कहा है कि उर्दू भाषा-भाषियों के हित में हिंदी के अतिरिक्त उर्दू भी सरकार की दूसरी जबान होगी।

हिंदी का क्या नुकसान होने का है ? उर्दू-भाषियों को हिंदी तो सीखनी ही है, क्योंकि सरकार की भाषा हिंदी ही है। हिंदी के अतिरिक्त उर्दू सरकार की दूसरी जबान होगी। दूसरे भाषा-भाषियों के लिए उर्दू का प्रयोग जरूरी नहीं है। अगर हमने थोड़ी-सी उर्दू की सेवा कर दी, तो किसका क्या नुकसान कर दिया ? देश की एकता और अखंडता का इस पर बड़ा भारी असर पड़नेवाला है। अल्पसंख्यकों को सुविधाएं दी जाएं और उनकी भावनाओं का आदर किया जाए, इसी को राष्ट्रीय एकता कहते हैं। उर्दू के बारे में जो तूल देने की कोशिश की गयी है वह अनावश्यक है, गलत है। खासकर के हिंदीवालों को तो इस सबका समर्थन करना चाहिए। जिन हिंदीवालों ने उर्दू का विरोध किया, जिन मैथिलीवालों ने

उर्दू का विरोध किया, उन्होंने हिंदी का नुकसान किया है। इसलिए हिंदी को दूसरी भाषा का सम्मान करना चाहिए। मैं हिंदी का समर्थक हूं। मैं ही ऐसा मुख्यमंत्री हूं, जो सारा भाषण हिंदी में करता हूं। और मैं भाषणों में कहता हूं कि हमारी राष्ट्रीय परिषदों में यदि हम हिंदी का सम्मान नहीं करेंगे तो क्या तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करेंगे ? लेकिन हिंदी क्षेत्र के मुख्यमंत्री हीन-भावना से इतने ग्रसित हैं कि वे अंगरेजी में भाषण करना पसंद करते हैं। हिंदी की चार पंक्तियां कहना पसंद नहीं करते।

प्रश्न : आपके राज्य में उर्दू-भाषियों का औसत प्रतिशत क्या है ?

मिश्रजी : यही कोई दस से पंद्रह !

प्रश्न : दस से पंद्रह प्रतिशत के लिए आप एक भाषा को मान्यता देंगे ?

मिश्रजी : मुल्क के लिए कर रहे हैं हम ! यदि दस से पंद्रह प्रतिशत लोगों को थोड़ी सुविधा देते हैं, तो हम किसका क्या नुकसान कर देते हैं ?

प्रश्न : इनके लिए क्या आप उर्दू स्कूल खोलेंगे ?

मिश्रजी : नहीं, नहीं, खोलेंगे। सरकार के सचिवालय में थोड़े ही उर्दू में लिखने जा रहे हैं। सब लोग तो समझेंगे नहीं।

प्रश्न : कुछ बातें और पूछ लें आपसे, यदि एक आदमी उर्दू जानता है, फाइल में यदि उसने उर्दू में लिख दिया तो ?

मिश्रजी : फाइल में नहीं लिखेगा वह उर्दू में। हमारे राज्य की भाषा हिंदी
'उर्दू इज नॉट फॉर फाइलिंग एंड नोटि

अखिल भारतीय स्तर पर लेख को पुरस्कार दिये जाएं

प्रश्न : बिहार ग्रंथ अकादमी में
मेरा भाषण हुआ। मुझे लगा कि आगे
यहां से कम से कम ५०-६० पुरस्कार अ
पुस्तकों पर दिये जाएं, जैसे उत्तरप्रदेश
सरकार करती है। इससे बिहार रा
सांस्कृतिक नक्शे में आ जाएगा।

मिश्रजी : आप ठीक कहते हैं। हिं
के पुरस्कारों के बारे में हमारी इच्छा
कि इनको व्यापक किया जाए, राष्ट्री
किया जाए और इनकी संख्या बढ़ाई
जाए। जो पुरस्कार हम देते भी थे और
जो समारोह करते थे, वो भी बंद हो गये।
जैसे कि राष्ट्रभाषा परिषद से जो समारोह
करके हम पुरस्कार बांटते थे, वह भी बंद
हैं। अब हम पूरी तरह सुधार करना चाहते
हैं। हम राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के लेखकों
का सम्मान करेंगे। इसी तरह पुरस्कार
भी देंगे। व्यापक रूप से हम इस योजना
को चलाएंगे।

प्रश्न : क्या अगले वर्ष से ?

मिश्रजी : नहीं, सन १९८१ से ही
हम यह काम करेंगे।

●

प्रकृति अपनी प्रगति एवं विकास में रुकना नहीं जानती और हर अकर्मण्यता पर वह अपने शाप की छाप लगाती जाती है। —गे

● भगवतीचरण वर्मा

त्याग और ग्रहण

जिंदगी को जीना एक बात है, जिंदगी को ढोना अलग बात है, तो पंडित मधुसूदन मिश्र जिंदगी जी नहीं रहे थे, वे जिंदगी ढो रहे थे।

हमारे धर्मशास्त्रों में मनुष्य के जीवन को चार भागों में बांट दिया गया है, हरेक भाग को आश्रम का नाम देकर, तो जिंदगी का प्रथम भाग है ब्रह्मचर्य।

मनुष्य का बचपन भविष्य के सपनों को देखने का काल होता है। जीवन के छल-कपट और छीना-झपटी से दूर। बचपन की इस अवस्था में उमंग है, उत्साह है, ज्ञान की प्यास है और न जाने क्या-क्या है। दूसरों के प्रति किसी तरह की जिम्मेदारी नहीं है। उन्मुक्त वातावरण और जहां २५ वर्ष का हुआ, वह जिंदगी की चक्की में डाल दिया जाता है। उसकी शादी कर दी गयी, करो बच्चे पैदा और आबादी बढ़ाओ। इसी सब में हाथ बंटाने के लिए बीवी साथ में लग गयी तब बचपन के बाद, यानी इस गृहस्थाश्रम में खेलना कूदना बंद, कम से कम हमारे इस तथाकथित विकसित देश में। भला हो पश्चिमवाले सात समुंदर पार कर आये हुए लोगों

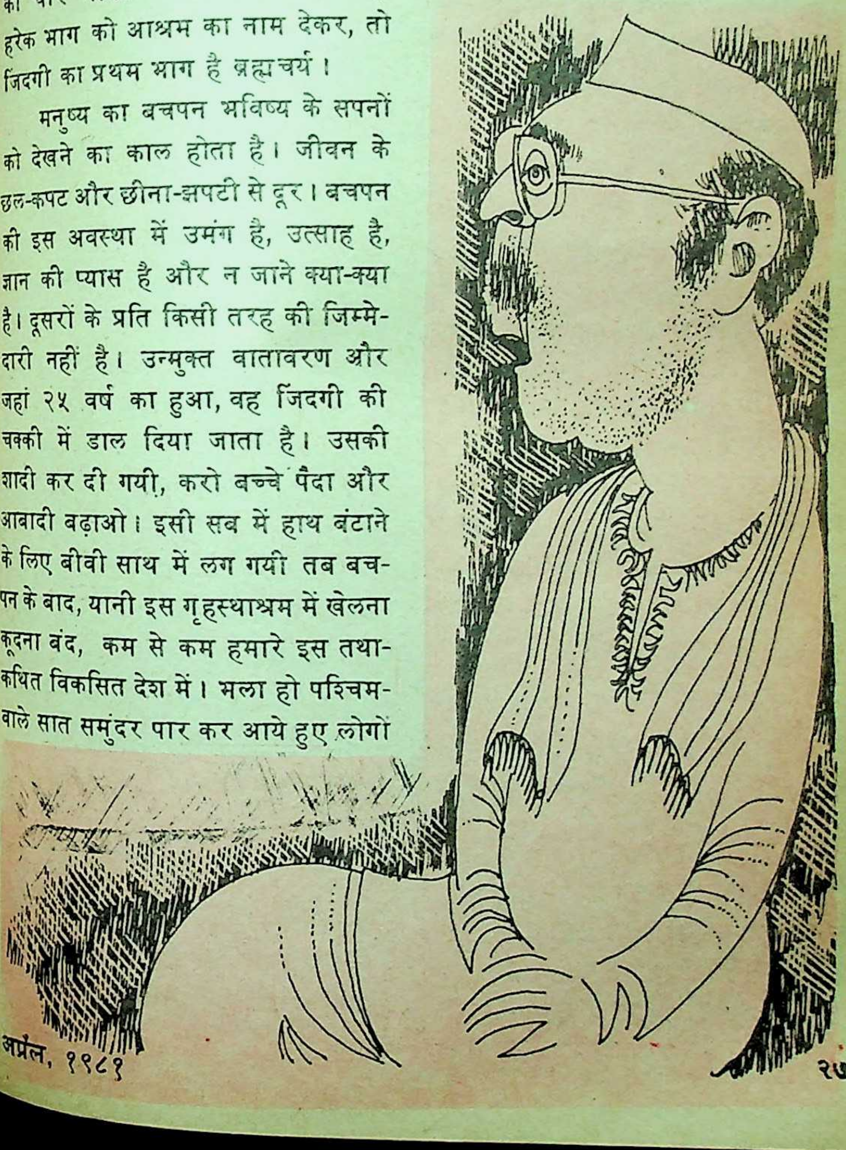

का, तो गृहस्थाश्रम में खेल-कूद कायम रखना हमने सीखा और गृहस्थों के लिए खेलना-कूदना एक वरदान साबित हो रहा है। लेकिन, यह नहीं भूलना चाहिए कि बड़े-बड़े नगरों में या कस्बों में, जिनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, वहां बच्चों की खेप में कुछ रुकावट आ गयी है, जो निहायत जरूरी था। यह तो सबको मालूम है कि दुनिया की आबादी बेतहाशा बढ़ गयी है। और बढ़ती जा रही है, क्योंकि औषधि विज्ञान ने जो उन्नति की है, उससे महामारियां धीरे-धीरे गायब होती जा रही हैं। न चेचक, न मलेरिया, न हैजा। सिर्फ दो बीमारियां ऐसी हैं जिन पर विजय नहीं पायी जा सकी। एक तो, हृदय-रोग और दूसरा कैंसर। इन बीमारियों की भी मरहम-पट्टी हो रही है, लेकिन मरहम-भर। आखिर कोई प्राण-लेवा बीमारी तो होनी ही चाहिए, क्योंकि मनुष्य की आयु १०० वर्ष की मानी गयी है।

मौत बड़ी क्रूर होती है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता। बुढ़ऊ घर में पड़े-पड़े खांस रहे हैं, खकार रहे हैं, कराह रहे हैं, घरवाले बेहद परेशान। तो हमारे हिंदू धर्म में मौत की क्रूरता को जीवन का स्वाभाविक भाग बना दिया है, संन्यास-आश्रम की व्यवस्था करके। इस संन्यास-आश्रम की व्यवस्था से न मनुष्य को कोई विशेष कष्ट होता है और न ही उसके परिवारवाले को।

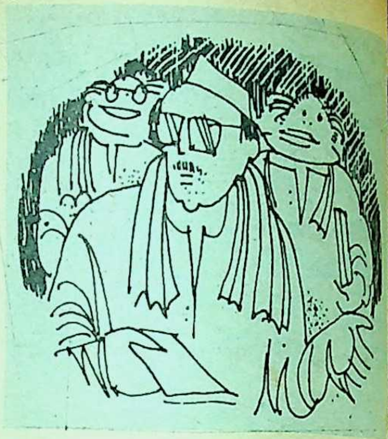

पच्चीस से पचास वर्ष की अवस्था में कोल्हू के बैल की तरह जिंदगी चलाने के समय परिवार के लड़कों-बच्चों की देखभाल करनेवाला तो कोई होना चाहिए। तो पचास साल की उम्र में जिंदगी से अवकाश लेनेवाले इंसान को गृहस्थी और बच्चों की देखभाल करने का काम सौंप दिया गया है। घर का सौदा-सुलुफ खरीद लाओ। बच्चों की ठीक तौर से देखभाल करो और उन्हें बहकने से रोको। आटा पिसा लाये, साग-सब्जी खरीद लाये, कपड़ों-लत्तों की व्यवस्था की और इस तरह के अनगिनती काम अपने ऊपर लाद लिये। तो यह सब करते-करते आप हो गये ७५ वर्ष के और आपका पुत्र हो गया ५० साल का। यानी उसने भी गृहस्थाश्रम से अवकाश-प्राप्त कर लिया और आपकी हालत यह है कि बुढ़ापे की तरह-तरह की बीमारियों ने आपको घर दबोचा। आप घर में पड़े-पड़े खांस-खकार रहे हैं।

परिवारवालों की देखभाल आप करें, इसके स्थान पर परिवारवालों पर आपकी देखभाल करने की जिम्मेदारी आ पड़ी तो आपने पकड़ लिया कमंडल, संन्यासी बनकर आप निकल पड़े गृहस्थी से हमेशा के लिए नाता तोड़कर। भीख मांग कर पेट भरो। अगर पेट न भरे तो भूखे ही सो जाओ, पानी से पेट भरकर। तो जब तक चले चलाओ और न चले तो मरकर गिर पड़ो।

संन्यासी के लिए अपने घर की तरफ मुंह फेरना मना था। घरवालों में यदि आपके प्रति मोह जागा, तो सारी व्यवस्था ही चरमरा गयी।

तो यह सब तब की बात है, जब हमारे देश में संयुक्त परिवार की व्यवस्था थी यानी न आप अपनी छाती पर लाद के कुछ लाये हैं और न अपनी छाती पर लाद कें कुछ ले जाएंगे। आपके परिवार ने आपको पाला-पोसा। आप अपने परिवार को पालने-पोसने की व्यवस्था करके जाएं।

लेकिन, अब तो न जाने कितने वाद चल पड़े हैं। पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद, अराजकतावाद। आदमी बेतहाशा बहक गया है। लेकिन, आदमी को दोष क्यों दिया जाए? बहकना तो उसका गुण है। और पंडित मधुसूदन मिश्र कुछ इसी क्रम में बहक गये थे।

पूरे एक दर्जन मकान बनवा डाले थे उन्होंने, या खरीद लिये थे। सब मकान किराये पर उठे थे। लंबा किराया मिलता था। लेकिन, बुरा हो देश की सरकार का, सब टैक्स-वैक्स काटकर हाथ लगते थे करीब तीन हजार रुपये महीने। दो कारें थीं, तो पैदल चलना एकदम बंद, ड्राइवर अगर छुट्टी पर गया या बीमार पड़ गया, तो अपाहिज बने बैठे हैं। लखनऊ में टैक्सियों की व्यवस्था भी नहीं कि फोन से मंगा ली जाएं। मुटापे ने उन्हें धर दबोचा है, तोंद बढ़ती जा रही है। वायु का प्रकोप स्वाभाविक रूप से उभर आया है, तो रात में ठीक तरह से नींद भी नहीं आ रही है। पंडित मधुसूदन मिश्र की अमीरी, उनकी शान-शौकत सब राजनीति की देन थी। उनके पिता पंडित गोवर्धन मिश्र पेशे से पुरोहित थे। पूजा-पाठ कराते और सत्यनारायण की कथा सुनाकर, जो थोड़ा बहुत पैदा कर लेते थे, वह भांग और मिठाई में उड़ा देते थे। उनके बच्चों को यह धार्मिक हिंदू समाज पाल लेगा, उनकी चिंता करना बेकार।

पिता गोवर्धन मिश्र और पुत्र पंडित मधुसूदन मिश्र के विचारों और मान्यताओं में जो अंतर आया, वह देश में तेजी के साथ फैलती हुई पूंजीवादी व्यवस्था के कारण, जिसने देश को अचानक ही बुरी तरह दबोच लिया था। देश का व्यापारी, व्यापारी न रहकर मिल-मालिक बन गया था और सैकड़ों-हजारों मजदूरों तथा बाबू लोगों से गुलामी कराने लगा था। तो पंडित मधुसूदन मिश्र राजा बनकर लोगों से गुलामी कराने लगे। हां, शासन की उन्हें गुलामी अवश्य करनी पड़ती थी। तो उस ओर भी उनकी आंखें थीं। अपनी ताकत को बदस्तूर बनाये रखने के लिए तथा लगातार बढ़ाने के लिए वह अपनी पार्टी के इने-गिने ऊंचे लोगों में आ गये थे। अब वह चीफ-मिनिस्टरी की कुरसी हथियाने की सोच ही नहीं रहे थे, उसके लिए भरपूर कोशिश कर रहे थे।

विदेशों की देखा-देखी देश में 'डेमोक्रेसी' घुस आयी थी, लेकिन ऊंचे और पढ़े-लिखे लोगों में। अन्यथा हस्बमामूल सभी जगह जातिवाद के आधार पर ब्राह्मणों का शासन था और पंडित मधुसूदन मिश्र पढ़े-लिखे ब्राह्मण वर्ग के अगुआ थे। अपना टूटा-फूटा मकान छोड़कर, उन्होंने अपने लिए पांच मंज़िली इमारत बनवा ली थी, लिफ्ट से सुसज्जित। पांचवीं मंजिल पर अपनी बीवी-बच्चों के साथ खुद रहते थे, चौथी मंजिल पर उनके भाई-भतीजे तथा परिवार के अन्य लोग और अन्य तीन मंजिलों में उनके अनगिनती दफ्तर थे। पांचवीं मंजिल से वे नगर का दृश्य देखकर आनंद लेते थे।

तो उन दिनों उनका सितारा बुलंदी पर था। राजनीति की हलचल जोरों पर थी। चीफ-मिनिस्टरी की कुरसी सामने दिख रही थी। यह राजनीति एक जबरदस्त जुआ है और पंडित मधुसूदन मिश्र ने राजनीति की बाजी पर अपना सब कुछ लगा दिया था। उधर उनकी पार्टी में ही घमासान मच गया था, लेकिन उस घमासान में उनका पक्ष जबरदस्त पड़ रहा था।

सुबह पौ फटने के पहले ही उनकी आंखें खुल गयी थीं। नित्यकर्म से निवृत्त होकर उन्होंने 'गीजर' के गरम पानी से स्नान किया। फिर औपचारिक रूप से उन्होंने गायत्री-मंत्र और गीता के चुने हुए श्लोकों का पाठ किया, लेकिन उस पूरे अरसे में उनका ध्यान चुनाव पर लगा था। पूजा से निकलकर वह टेलीफोन पर अपने आदमियों को हिदायतें देते हुए नाश्ता करने लगे।

अभेद्य मोर्चाबंदी कर रखी थी पंडित मधुसूदन मिश्र ने। पानी की तरह उन्होंने रुपया बहाया था और उनकी विजय निश्चित दीख रही थी। उनके विरोधियों ने अनमने भाव से उनके खिलाफ एक प्रतिद्वंद्वी जरूर खड़ा कर दिया था। लेकिन उसकी विजय की आशा बड़ी क्षीण दीखती थी।

पार्टी के दोनों पक्षों में यह समझौता

हो गया था कि मतदान के समय उम्मीदवार वहां उपस्थित नहीं रहेंगे।

दिन भर गरमागरम भाषण होते रहे और उन भाषणों से ऐसा लगता था कि पंडित मधुसूदन मिश्र चीफ-मिनिस्टर हो गये हैं। स्वयं-सेविकाओं का एक दल भारी-भारी गजरे और सजे हुए आरती के थालों के साथ बुलवा लिया गया था।

वैसे, जहां तक आम जनता का प्रश्न है, उसमें इस महत्त्वपूर्ण चुनाव के प्रति उदासीनता ही थी। उसके लिए तो तुलसीदास की एक चौपाई लागू होती थी--

कोउ नृप होइ हमें का हानी
चेरी छांड़ि न, होबहु रानी

तो एक लंबे अरसे से यानी स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से ही, जनता अथक भाव से यह चौपाई गाती रही है और एक लंबे अरसे तक उसे यह चौपाई गाते रहना था।

लेकिन, इस सब की चिंता ही क्यों की जाए। मनुष्य वर्तमान में जीवित रहता है। बीता हुआ कल विगत बन चुका है। आने वाला कल अनिश्चित है, यह 'आज' ही सत्य है और नित्य है।

पता नहीं, यह राजनीतिक कशमकश इस देश में कब तक चलेगी? लेकिन, इस राजनीतिक कशमकश से बड़े-बड़े नगरों में ही नहीं, दूर-दराज के कस्बों और गांवों में जो चहल-पहल है, वह काबिले-दीद है। लाखों बेकार और बेरोजगार आदमी इस राजनीति के बल पर पलते और पनपते हैं। मेहनतकश मजदूर और किसान बेतहाशा पिसता रहता है और यह पिसते रहना ही उसकी नियति है। इस पिसते रहने में उसे संतोष भी है। इस उखाड़-पछाड़ की दुश्चिंता से तो वह मुक्त है।

अब पंडित मधुसूदन मिश्र की बात ले ली जाए। उनके सगे-संबंधी मौज से पुरोहिताई की जिंदगी बिताते हैं और मल्हारें गाते हैं। बीच-बीच में मधुसूदन मिश्र उनकी जिंदगी में कचोट बनकर आ जाया करते हैं।

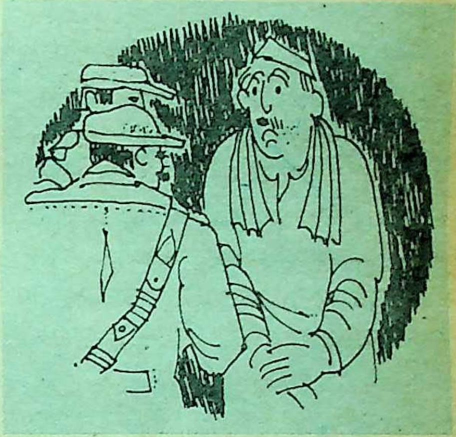

मुझे लगता है इस कहानी में बहकाव आ गया है। तो इस बहकाव से हटकर इस कहानी को ही लिया जाए।

पार्टी का नेता नियुक्त करने की जिम्मेदारी 'हाईकमान' पर होती है। लेकिन 'हाईकमान' में भी बेतहाशा धर-पकड़ और छीना-झपटी चल रही थी। तो 'हाईकमान-वालों' ने यह तय कर लिया कि प्रदेश के पार्टी-नेता के मामले में वह सोंठ हो जाएं।

पंडित मधुसूदन मिश्र बेतहाशा रुपया

खर्च कर रहे थे। वह जानते थे कि पार्टी के नेता बनने पर जितना खर्च किया है, उसका कई गुना पैदा भी कर लेंगे। कभी किसी मुख्यमंत्री से हिसाब-किताब मांगा गया है कि उनसे ही मांगा जाएगा। लेकिन बुरा हो उस ससुरे रामखिलावन यादव का, जो दालभात में मूसलचंद बनकर उनके और पार्टी-नेतापद के बीच फांद पड़ा था। इस रामखिलावन की हैसियत ही क्या थी। उसके संयुक्त परिवार की करीब ४० बीघे की खेती। वैसे, ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में ४० बीघे की खेतीवाला परिवार संपन्न समझा जाता था।

हरेक संपन्न परिवार में एकाध आवारा और लड़ाकू किस्म का आदमी निकल आता है। तो परिवार के सुख-चैन में वह बाधा न बन जाए, इस बात को ध्यान में रखकर परिवार का मुखिया उसे फौज या पुलिस में भरती करा देता है। वर्तमान राजनीति में यूरोप की देखा-देखी उसे राजनीति में छुट्टा छोड़ देने की भी प्रथा चल पड़ी है।

हमारी स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद शुरू-शुरू में मुख्यमंत्री तो पढ़े-लिखे आला-दिमागवाले और जन-जीवन में घिसे-पिटे आदमी ही होते थे, लेकिन बाद में धीरे-धीरे हर तरह के आदमी इस कुरसी की तरफ लपकने लगे। इस स्थान पर एक पुराना लतीफा याद आ रहा है।

हिंदुस्तान के एक पुराने नामी-गिरामी गवर्नर जनरल व वाइसराय लार्ड कर्जन हिंदुस्तान से विदा लेकर इंगलैंड जा रहे थे, तब उन्होंने अपने मुलाजिमों को एक-एक कीमती बख्शीशें बांटीं। बख्शीशें बांटकर वह जब वाइसरीगेल लाज से अपनी फिटन की ओर बढ़े, जिस पर उन्हें कलकत्ता के बंदरगाह पर जाना था, उनका धोबी हांफता हुआ आया। उसने गुहार लगायी, "माई-बाप हम रह गये। गदहा बिदक गया तो हमें देरी हो गयी। माई-बाप के कपड़ा बनावन मां दिन बीत गा।"

लार्ड कर्जन के पास जो कुछ था, वह सब बांट चुके थे। धोबी का लौंडा उनके कपड़े दे गया था। तो उन्होंने रुककर कहा "टुम डेर से आया।" उसी समय उनकी नजर धोबी के लड़के पर पड़ी, जो धोबी के पीछे खड़ा था, तो उन्होंने धोबी से कहा, "अच्छा हमने टुमारे लड़के को डिप्टी कलक्टर बना दिया।" और उन्होंने अपने सेक्रेटरी को इशारे से यह हुक्म दे दिया। धोबी सन्नाटे में बोला, "माई-बाप, यह बेपढ़ा और आवारा लौंडा है, यह डिप्टी कलेक्टरी कैसे करेगा?"

लार्ड कर्जन बोले, "फिकर मट करो, कुरसी सब कुछ करा डेटा है।"

तो 'कुरसी सब कुछ करवा देती है' वाला फिकरा आज के शासनतंत्र पर पूरी तरह लागू हो रहा है। कुछ इसी फिकरे को चरितार्थ करने के लिए रामखिलावन यादव पंडित मधुसूदन मिश्र से भिड़ गया था।

वैसे, रामखिलावन यादव निरक्षर

गंवार भी नहीं कहा जा सकता था। हिंदी मिडिल पास कर लिया था उसने। टूटी-फूटी अंगरेजी बोल और समझ लेता था। लेकिन, रुपये-पैसे के मामले में एकदम ठन-ठन गोपाल। 'डेमोक्रेसी' में जहां खरीद-फरोख्त का बोलबाला है, वहां वह मधुसूदन मिश्र के सामने निहायत पिद्दी लगता था। लेकिन हिंदुस्तान में 'डेमोक्रेसी' से कहीं बड़ा है जातिवाद का चक्कर, और प्रदेश की साठ प्रतिशत आबादी उन लोगों की है, जिन्हें सवर्णों ने क्षुद्र या अछूत करार दे दिया है।

स्वयं सवर्ण और पूंजीपति , जिंदगी नगरों में बीती हुई। पंडित मधुसूदन मिश्र को इस जातिवाद की वास्तविकता का बोध था, यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। जो भी हो, उन्होंने जबरदस्त नाकेबंदी कर रखी थी। स्वयं रामखिलावन को खरीदने की कोशिश में वह पिटते-पिटते बचे थे। वहां से सही-सलामत लौटने पर उन्होंने किचकिचाकर कहा था, 'देख लूंगा एक-एक साले को!'

और यह तय था कि वह चूकेंगे किसी हालत में नहीं। निहायत सरकश आदमी थे वह, आतंकवाद के सबसे बड़े हिमायती। यादवों को डराने और धमकाने के लिए वह यादवों के तीन-चार गांवों में आग लगवा चुके थे। पुलिस उनकी मुट्ठी में थी, तो उनका कुछ नहीं बिगड़ा। उल्टे पांच-छह यादवों पर मुकदमा भी चला, जो कि वह सब निर्दोष साबित होने पर छूट गये।

चुनाव में मतदान ११ बजे सुबह शुरू होना था, और मतदान गुप्त था। दो बजे दोपहर के समय मतगणना शुरू होनेवाली थी और चार बजे शाम तक परिणाम का ऐलान होने वाला था।

मतगणना के समय पंडित मधुसूदन मिश्र वहां स्वयं उपस्थित रहना चाहते थे। तो नहा-धोकर और खाना खाकर वह एक बजे अपने कमरे से निकलकर लिफ्ट पर सवार हुए। लिफ्ट चली और एकाएक एक झटके के साथ तीसरी और दूसरी मंजिल के बीचोंबीच रुक गयी। लिफ्ट के रुकते ही बिजली भी गायब हो गयी, घुप्प अंधेरा। लिफ्ट की मरम्मत करने के लिए दौड़-धूप शुरू हुई।

हमारे देश में जो थोड़ी-बहुत ईमानदारी दीखती है, वह धर्म के नाम पर। वरना, यहां का औसत आदमी निहायत बेईमान और झूठा है। वैसे, इस पार्टी-लीडर के चुनाव के मतदान में पंडित मुधसूदन मिश्र की विजय निश्चित दीखती

थी, लेकिन चूंकि मतदान गुप्त था, और यहां रुपया लेकर भी बेईमानी की परंपरा पनप रही थी। और राजनीति में पूंजीवाद की जड़ पूरी तरह से नहीं जमने पायी थी तो जातिवाद और बिरादरीवाद मौके-बेमौके उभर आया करते थे। इसलिए इस मतदान का परिणाम क्या होगा, यह कहना अनिश्चित था।

पंडित मुघुसूदन मिश्र लिफ्ट में फंसे हुए, लिफ्ट चलानेवाले, लिफ्ट बनानेवाले तथा सारी दुनिया को गाली दे रहे थे। पर लिफ्ट सुधरने का नाम नहीं ले रही थी। पंडित मधुसूदन मिश्र का दम अब घुटने लगा था। १५ मिनट, आधा घंटा, एक घंटा और लिफ्ट जाम की जाम। लेकिन, वाह रे पंडित मधुसूदन मिश्र बड़ी कड़ी जिंदगी पायी थी। किसी तरह दो घंटे बाद लिफ्ट सुधरी और वह नीचे उतरे। लिफ्ट से उतरते ही अपने चपरासी को आंखों से ढूंढ़ा, लेकिन चपरासी नदारद था। अब वह पोर्टिको की तरफ बढ़े, जहां कार खड़ी होती थी। लेकिन वहां कार का कोई पता नहीं। उन्हें ताज्जुब हो रहा था कि यह सब क्या हो गया और क्यों हो गया। तभी चार वर्दीधारी आदमियों ने उन्हें सूचना दी, "माननीय रामखिलावनजी राज्य के मुख्यमंत्री हो गये हैं और उन्होंने आज्ञा दी है कि आपकी सारी संपत्ति जब्त करली जाए। क्योंकि, यह आपने बेईमानी से उपार्जित की है।"

"हूं ! तो यहां तक हो गया," और उन्होंने अपनी कोठी की ओर इशारा करते हुए पूछा, "यह कोठी जिसमें मैं रह रहा हूं, यह तो मेरी रहेगी ?"

बड़े अदब के साथ उन्होंने उत्तर दिया, "जी, यह भी जब्त हो गयी है। लेकिन, जब तक आपका पुराना मकान ठीक न हो जाए, तब तक आप इसमें रह सकते हैं। सरकार ने आपके उस टूटे-फूटे मकान की मरम्मत करने का आदेश दे दिया है।"

और उसी समय पंडित मधुसूदन मिश्र को लगा कि उनके अंदरवाला त्यागी और निस्पृह ब्राह्मण एकाएक जाग उठा है और बड़े शांत भाव से उन्होंने कहा, "यह कोठी भी मैं इसी समय खाली कर रहा हूं। अपना निजी सामान लेकर मैं सपरिवार पुराने मकान में जा रहा हूं। जिंदगी में खोना उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना पाना है।" और उन्होंने चपरासी से कहा, "मुख्यमंत्री के प्राइवेट सेक्रेटरी से कहकर मेरे परिवारवालों को मय सामान के मेरे पुराने मकान में भिजवाने की व्यवस्था कर देना। मैं इस मकान के अंदर पैर न रखूंगा।"

पंडित मधुसूदन मिश्र के नाम बैंक में पचास हजार रुपये थे। कुछ उनके निजी, कुछ पापी संगठन के लिए, जिन्हें वह अपना निजी कह सकते थे। तो बैंक की पासबुक उन्होंने सहेज कर रखली और अपने पुराने मकान में चले गये।

इस अनुपम त्याग पर पत्रों में उनका कितना गुणगान हुआ, जनता में उनकी साख कितनी बढ़ गयी, यह कहना बेकार है। वह जनता-जनार्दन की सेवा में जी-तोड़कर लग गये और निकट भविष्य में रामखिलावन को पदच्युत करके खुद उसकी कुरसी पर आसन जमाने के प्रयत्न में लग गये।

—चित्रलेखा, महानगर, लखनऊ

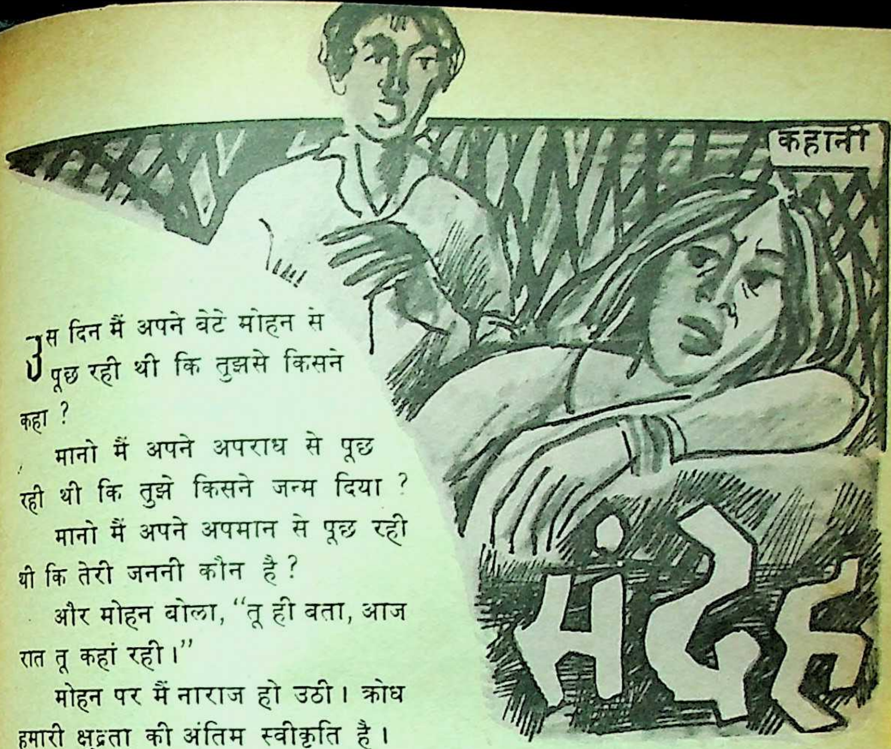

संदेह

• माखनलाल चतुर्वेदी

उस दिन मैं अपने बेटे मोहन से पूछ रही थी कि तुझसे किसने कहा ?

मानो मैं अपने अपराध से पूछ रही थी कि तुझे किसने जन्म दिया ?

मानो मैं अपने अपमान से पूछ रही थी कि तेरी जननी कौन है ?

और मोहन बोला, "तू ही बता, आज रात तू कहां रही।"

मोहन पर मैं नाराज हो उठी। क्रोध हमारी क्षुद्रता की अंतिम स्वीकृति है।

मेरे रक्षण में रहकर, मुझ पर ही संदेह ? बेटा होकर मां से ऐसा सवाल ? मेरी कठिनाइयों में आंसू बहाने के बजाय आते ही मुझ पर प्रश्न का यह पत्थर ? यही मेरे इलजाम थे।

जिस तरह आक्रमण करने, आक्रमण से बचने और आक्रमण की भर्त्सना करने के समय हाथ ही हमारे अपनेपन का, कृतियों में अनुवाद किया करते हैं, वैसे ही मानो आंसू हमारे मानस-शरीर के हाथ हैं। आनंद में उतावले से हाजिर, कष्ट में बावले से बाहर। हाथों की कृति, गुनहगार बनाकर अदालत ले जाती है। आंसुओं की दौड़, आंखवालों की आंख से गिरा देती या आंखों पर चढ़ा देती है।

मोहन अभी तक केवल प्रश्न का उत्तर, कथा में बैठे हुए कथा सुननेवाले जिज्ञासु की तरह चाहता था; किंतु जिस

स्व. चतुर्वेदीजी के छोटे भाई श्री बृजभूषण चतुर्वेदी ने यह कहानी हमारे पास भेजी है, जो माखनलालजी के पुराने कागजों में कहीं मिली। इस अप्रकाशित कहानी को पाठकों तक पहुंचाने में हमें प्रसन्नता हो रही है। माखनलाल चतुर्वेदी अपने युग के महान और तपस्वी साहित्यकार थे।
—सं.

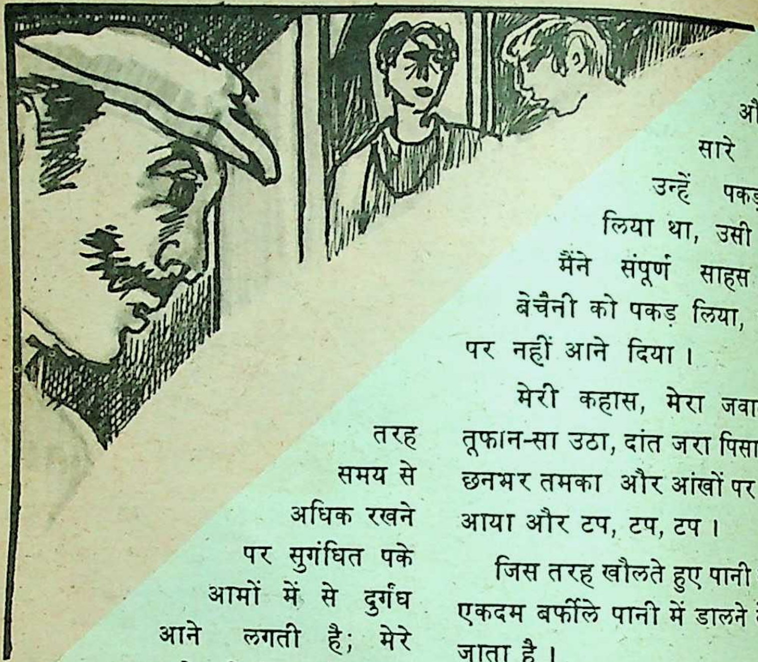

तरह समय से अधिक रखने पर सुगंधित पके आमों में से दुर्गंध आने लगती है; मेरे उत्तर के विलंब में, मोहन कुछ ऐसा-सा सूंघने लगा, जिसे सूंघकर, वह बरदाश्त करने को मानो तैयार न हो।

जिज्ञासु से अब वह, पुलिस का सिपाही हो गया, बोला, "यदि तूने नहीं बताया कि रात कहां रही, तो मैं नहीं कि तू नहीं।"

मैं दौड़कर आयी थी, मोहन भूखा होगा, यह सोचकर। परंतु मोहन अपनी भूख को खा चुका था, और अब मानो मुझे खाने की तैयारी कर रहा था। मैं क्या करती। जिस तरह धन के अभाव में, साहूकार को आया देख, मोहन के पिता कुएं में गिरने के लिए तैयार हो गये थे और मैंने अपने सारे साहस से उन्हें पकड़कर रोक लिया था, उसी तरह आज मैंने संपूर्ण साहस से अपनी बेचैनी को पकड़ लिया, उसे जबान पर नहीं आने दिया।

मेरी कहास, मेरा जवाब, मन में तूफान-सा उठा, दांत जरा पिसा, गालों पर छनभर तमका और आंखों पर तरंगित हो आया और टप, टप, टप।

जिस तरह खौलते हुए पानी का बरतन, एकदम बर्फीले पानी में डालने से बर्फ बन जाता है।

मोहन अपने क्रोध में, मेरे प्रति रहनेवाली करुणा ढूंढ़ने लगा।

मेरा अपराध, इस समय मोहन से भी अधिक बेकाबू होकर, मेरी जबान पर आ गया।

मैंने कहा—"मोहन ?"

मोहन ने देखा, मैं मां से मानवी होने जा रही थी और दानवी हो गयी हूं।

तो भी जिस तरह बोझीला होने पर भी दूकान पर दाम चुकानेवाला, अपना सामान उठाता ही है, मोहन ने आंखों में करुणा, स्वर में संदेह, और व्यवहार में रूखापन रखकर कहा—"हां!"

कि इतने ही में, रामगोपाल कांस्टेबल आ गया। बोला—"क्यों रमिया, चीफ साहब ने तो तुझे ४ घंटे ही की छुट्टी दी थी। चल चार घंटे हो चुके।"

मोहन ने पूछा—"क्यों ?"

रामगोपाल एक तो थानेदार की आज्ञा को सरकारी आज्ञा समझता था, दूसरे तरुण मोहन को अपने सामने तुच्छ समझता था, तीसरे पुलिस-सिपाही होने का अधिकार-मद उसकी आंखों पर चढ़ा हुआ था, बोला—"क्यों ? क्यों का पता चलेगा, जब हाथों में हथकड़ियां पड़ जाएंगी !"

चाहे जेल से बदतर भूख और दुःखों में जिंदगी बिता दें, किंतु ग्रामीण हथकड़ी का नाम सुनकर कांपते हैं। बैल लड़ाई में अपने से बड़े बैल को पछाड़ दे, किंतु गाड़ीवाले की हांकनी के घुमाव मात्र से गाड़ी घसीटते भागा-भागा फिरता है। हथकड़ी का नाम सुनकर मोहन सहमा !

मोहन को डरते देखकर रामगोपाल का पशु, बाहर निकल आया। उसने रमिया को एक झटका दिया, और उसे घसीटकर सड़क पर खींच लिया।

दिन का चौथा पहर खतम हो रहा था।

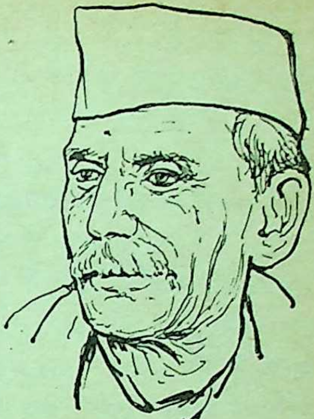

लेखक

पक्षी घोंसलों की ओर जा रहे थे। अनहोनी ! नदी का कल-कल जन-रव बंद होने से साफ सुनायी देने लगा था। पशु-धन घर को लौट रहा था। तारे इस तरह धीरे-धीरे चमकना

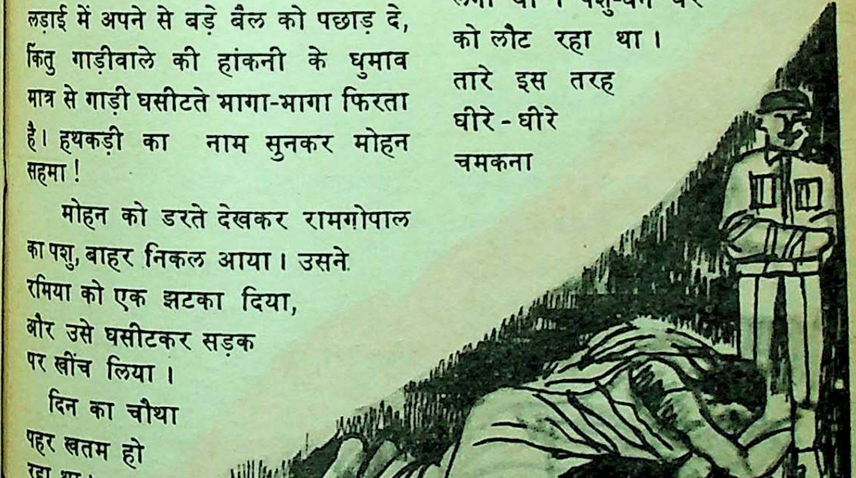

चाहते थे——जैसे किसी सभा में धीरे-धीरे आदमी जमा होते हैं।

और रमिया, अपने घर से मालगुजार की चौपाल की ओर चली जा रही थी।

रूप उसका अपराध था। तरुणाई उसका कांटा था, जो हर सांस के साथ खटकता था, और सांस की तेजी के साथ खटक में इतना दर्द बढ़ा देता था कि सांस शरीर से बाहर जाकर उस कीमत पर लौटने को राजी न होती थी। और वैधव्य मानो उसके लावारिस होने का प्रमाण-पत्र था——शास्त्रों से प्रमाणित, धर्म से संचित और गंगाजल से धुला हुआ।

मोहन अब, अपने से प्रश्न कर उठा——'मां से सवाल पूछा तूने, यह बिना जाने कि वह किस कष्ट में है, और यह बिना सोचे कि वह मां है।' वह चला। पीछे-पीछे। धीरे-धीरे।

जब रमिया के पास रूप और तारुण्य था, और वह गरीब थी, तब जयराम पटेल के यहां चोरी तो होने ही को थी। और रमिया का देवर मुल्लू गवाह में तो मिलने ही को था।

रमिया पटेल के यहां पहुंच गयी। थानेदार अलीमुल्ला पलंग पर बैठे थे। उन्होंने इशारा किया और रमिया एक कोठरी में पहुंचा दी गयी। शौकीन लोग कहा करते हैं कि प्रेम जीभ से नहीं बोलता। किंतु पीड़ित जानता है कि उसके जीभ नहीं हुआ करती।

रमिया ने अपराध स्वीकार कर लिया। उसने चोरी की है। प्रेम की भाषा बिना बोले समझ में आती है। चाहे वह मां-बेटे का हो; चाहे प्रेमी-प्रेयसी का। मोहन ने जब यह जाना, तब पहले तो वह ऊबा; ऐसे जैसे जीवन में कोई जोर की गांठ लगायी हो, और खुल न रही हो। किंतु फिर ऐसे संभल गया, मानो चढ़े बुखार में किसी दवा से पसीना आ गया हो। उसने कहा अपराध न करके भी अपराध मान लेने का आज दिन है।

रात का वक्त। रमिया आगे-आगे। चीफ साहब का घोड़ा पीछे-पीछे। औरतों को हथकड़ी लगाना मना है।

जो जंगल दिन में घना, सुहावना, हरियाला, रंगीन, छायादार, फलवान, प्यारा मालूम होता था, रात में कितना भयंकर! परंतु रमिया का भय, वृक्षों में नहीं; घोड़े पर चढ़ा चला आ रहा था। और मोहन एक फर्लांग दूर था, पीछे-पीछे। मानो छाया आगे थी, व्यक्ति पीछे था। माया नेता थी, ब्रह्म अनुगामी था!

घोड़े को टिक-टिक की जरूरत न थी। कांस्टेबल मीलभर आगे जा रहा था। रात चल रही थी, तारे चल रहे थे, सांस चल रही थी, हां अभागा रास्ता, इन पांच प्राणियों को छोड़कर, मानो बंद हो गया था।

थानेदार घोड़े से उतरा। रमिया को हुक्म हुआ——!

चांद हंस रहा था। तारे चमक रहे थे। वृक्ष वायु में सनसना रहे थे।

क्या ये परीक्षक थे ? गरीब मानवता को दिये गये प्रश्न-पत्र का उत्तर सुनने में क्रूर और उतावले।

थानेदार आगे बढ़ा, और रमिया ? रमिया कड़क उठी—खबरदार !

वह थानेदार था। उसके पास घोड़ा था। घोड़े का हंटर था। सरकार से पाया हुआ अधिकार था। १२५ रु. वेतन मिलता था। बाजुओं में बल था और दिल में काला सांप जाग उठा था। यह किसे खाएगा ?

मोहन राह भूल गया। अंधेरा था। रमिया ने ऊपर देखा, नीचे देखा, और दायें-बायें देखा। यहां कहां सहायता ?

चीफ साहब का सांप फुंकार उठा। रमिया ने फिर ऊपर देखा और झपट पड़ी। वह कुश्ती थी, तारे थे, चांद था, हवा थी, झाड़ थे। मोहन राह भूल गया था।

रमिया ने चीफ साहब को कुश्ती में पछाड़ा। वह दांतों से नोचने लगी। चीफ साहब ने हंटर उठाया। रमिया घायल हो गयी। और चीफ ने नाड़ी देखी। रमिया के प्राण पखेरू उड़ गये थे।

अब मोहन आ गया। देर होती देख रामगोपाल कांस्टेबल लौट आया था।

मोहन को गिरफ्तार कर लिया गया। हथकड़ियां डाल दी गयीं। सेशन जज की अदालत से रमिया की हत्या के कारण मोहन को फांसी की सजा हो गयी।

आज फांसीवाली रात है। मोहन पर पहरा है। जेल की तंग कोठरी है। अभी भी, सीखचों से झांककर उसने देखा, रात चल रही है, झाड़ हिल रहे हैं और मोहन अपने से पूछता है—मां, से पूछे हुए उस दिन के प्रश्न का जवाब अभागे मोहन, आज तुझे सूली देगी ! ●

मलयालम कविता

दूध

पके
घास के विस्तृत मैदान में
गायें हैं—
दूध के वजन से
थन
मोटा व तगड़ा रहता है
हृष्टपुष्ट हैं गायें।
घने रोएं हैं उनके
तथा
रेशम-सी पूंछ भी
हीरा-सा
श्वेत दूध भी मिलता है बहुत
परंतु, फिर भी
बच्चे तो भूखे हैं
और
पुरुष संतुष्ट।

—डोरोती वेना जोणसन

अनुवाद : वेणु गोपालकृष्ण
सेंट जोजफ कालेज, देवगिरि
कालोकट-८, केरल

विधि विधान

कम दहेज से अमानुषिक व्यवहार

दरखीलाल कुशवाहा, इलाहाबाद : मैंने अपनी पुत्री का विवाह एक कामगार लड़के के साथ, अपने सामर्थ्य के अनुसार दान-दक्षिणा देकर किया। ६ माह तक तो उसके ससुराल के लोगों ने उसे अच्छी तरह रखा, लेकिन बाद में लड़के ने तथा उसके घरवालों ने मेरी पुत्री को दहेजादि का बहाना बनाकर ताने मारने शुरू कर दिये, और कुछ समय के बाद नौबत मारपीट तक आ गयी; अन्य कीमती सामान जबरदस्ती छीनकर उसे घर से भी निकाल दिया। इस समय लड़की मेरे पास है। मैंने तथा मेरे नाते-रिश्तेदारों ने कई बार उनसे बातचीत करनी चाही, किंतु उन्होंने बातचीत करने से इंकार कर दिया, मौका पाकर घर से भी गायब हो जाते हैं। अपनी बदनामी के भय से मैंने पुलिस-थाने में कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं करायी है और यह सोचा कि कुछ दिनों के बाद लड़की के ससुरालवाले आकर लड़की को ले जाएंगे, परंतु वे अभी तक नहीं आये और न आना चाहते हैं। मेरी पुत्री ने अभी हाल ही में १५ दिनों पूर्व एक शिशु को जन्म दिया है। मेरी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि लड़की का आवश्यक खर्चा अधिक दिनों तक वहन कर सकूं, कृपया उचित सलाह दें कि कौन-सी कानूनी कार्यवाही की जा सकती है ?

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

यदि आपकी पुत्री को मारपीटकर घर से निकालने का आधार 'दहेज की मांग' है, तब आप दहेज-निषेध अधिनियम १९६१ की धारा ४ के अंतर्गत कार्यवाही कर सकते हैं। इस कार्यवाही के लिए उक्त अधिनियम की धारा ७ के द्वारा एक वर्ष की समय सीमा निर्धारित की गयी है।

आपकी पुत्री अपना सामान प्राप्त करने के लिए कार्यवाही कर सकती है। दहेज-निषेध अधिनियम उक्त सामान पर आपकी पुत्री का अधिकार स्वीकार करता है। सामान वापस मिलने पर धारा ७ के अंतर्गत ही सजा की व्यवस्था है।

यदि मारपीट प्रमाणित की जा सके,

तब मारपीट करनेवालों को भारतीय दंड-संहिता के अंतर्गत दंड दिलवाने के लिए भी कार्यवाही की जा सकती है। आपकी पुत्री अपने पति से अपने तथा बच्चे के भरण-पोषण की मांग भी कर सकती है।

मत्स्य-पालन योजना

ब्रजेश मोहनसिंह, पटना : मैं एक २३ वर्षीय शिक्षित बेरोजगार हूं। मेरे घर के पिछवाड़े एक पोखर है, जो बिहार-सरकार के अधीन है और वर्षों से बेकार पड़ा है, उसे अपने अधीन लाकर मेरी मत्स्य-पालन की योजना है। क्या ऐसा संभव है? अगर नहीं, तो बिहार सरकार के तहत ही अपनी योजना को किस प्रकार क्रियान्वित किया जा सकता है?

आपकी योजना लाभकारी लगती है। परंतु सरकारी पोखर को आप अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए प्रयोग में नहीं ला सकते। अपनी योजना सरकार को प्रेषित कर, आवश्यक अनुमति ले लें। अनुमति लेने से पूर्व यदि आपने उक्त पोखर में मत्स्य-पालन योजना प्रारंभ कर दी, तब उसका लाभ आप नहीं उठा सकेंगे। पोखर के साथ-साथ मछलियों पर भी सरकार का ही अधिकार रहेगा।

निर्धारित किराया

राजकुमार जैन, सागर : कृपया निम्न प्रकरण के बारे में विस्तार से बतायें, ताकि मैं संबंधित अदालत से इसकी सत्य-प्रतिलिपि प्राप्त कर सकूं।

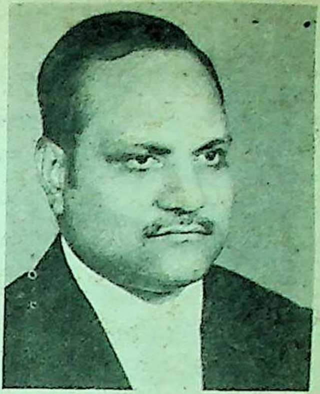
कानूनी सलाहकार

सर्वोच्च न्यायालय का वह मुकदमा, जिसमें फैसला दिया गया है कि स्थानीय निगमों व नगर-पालिकाओं द्वारा अपने क्षेत्र के मकानों पर गृह-कर किराया नियंत्रण कानून द्वारा निर्धारित मानक या स्टैंडर्ड किराये के आधार पर ही लगाया जा सकता है। चाहे उस मकान का वास्तविक किराया कुछ भी हो।

किराया-नियंत्रण अधिनियम की परिधि में आनेवाली संपत्ति या भवन पर लगनेवाले संपत्ति-कर की सीमा-निर्धारित कर दी गयी है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मान्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री पी. एन. भगवती न्यायमूर्ति श्री वी. डी. तुलजापुरकर तथा न्यायमूर्ति श्री आर. एस. पाठक द्वारा दीवान दौलत राम कपूर बनाम नयी दिल्ली नगरपालिका व दो अन्य अपीलों में दिये निर्णय के अनुसार संपत्ति-कर निर्धारण के लिए वार्षिक कर योग्य मूल्य का आधार स्टैंडर्ड रैंट माना है

(देखिए—ए. आई. आर. १९८०, सुप्रीम कोर्ट ५४१) जिन मकानों का स्टैंडर्ड रैंट निश्चित नहीं हुआ हो, उनके संपत्ति-कर का निर्धारण करते समय कर-निर्धारण अधिकारी को दिल्ली किराया-नियंत्रण अधिनियम की धाराओं को लागू करके स्टैंडर्ड रैंट का निर्धारण करना होगा। तथा उसके अनुरूप संपत्ति-कर की देय-राशि का निर्णय करना होगा। मकान-मालिक द्वारा अपने किरायेदार से स्टैंडर्ड रैंट से अधिक किराया लेने के बावजूद, संपत्ति-कर का आधार स्टैंडर्ड रैंट ही रह सकता है।

उच्चतम न्यायालय ने उक्त निर्णय में अपने तीन पुराने फैसलों का भी उल्लेख किया है। कलकत्ता नगर-निगम बनाम पदमावती के मामले में मकान का किराया पश्चिमी बंगाल संपत्ति किराया-निर्धारण (अस्थायी आदेश) अधिनियम १९५० के अंतर्गत निर्धारित हो चुका था। उक्त निर्णय में भी स्टैंडर्ड रैंट को ही वार्षिक कर योग्य मूल्य का आधार माना गया था (देखिए—ए. आई. आर. १९६२, सुप्रीम कोर्ट १५१)

उच्चतम न्यायालय का दूसरा निर्णय भी कलकत्ता नगर-निगम का ही है। इस मामले में संपत्ति का स्टैंडर्ड रैंट न्यायालय से निर्धारित नहीं हुआ था (देखिए—१९७०, २ सुप्रीम कोर्ट केसिस ४४) तीसरा निर्णय गुंटूर म्यूनिसिपल काउंसिल बनाम गुंटूर टाउन रेट पेयरज एसोसिएशन के मामले में हुआ (देखिए--१९७ २ सुप्रीमकोर्ट रिपोर्ट ४२३)

उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रतिपादित कानून के अंतर्गत स्टैंडर्ड रैंट या फेयर रैंट के आधार पर कर योग्य मूल्य का निर्धारण होगा।

लड़की का संरक्षण

अशोककुमार, दिल्ली : हमारे पड़ोस में एक मुस्लिम परिवार रहता था। उस परिवार की १६–१७ वर्षीय लड़की को उसके माता-पिता जबरन बेचना चाहते थे। लड़की मुझसे शादी करना चाहती थी और आज भी चाहती है। अपने माता-पिता से तंग आकर लड़की हमारे यहां रहने लगी। लड़की के घरवालों ने मेरे विरुद्ध लड़की के अपहरण की रिपोर्ट लिखा दी। हमने लड़की को कोर्ट में प्रस्तुत कर दिया। कोर्ट ने उसे 'राजकीय महिला शरणालय' में भेज दिया। लड़की वहां पर परेशान है। कोई ऐसा रास्ता है जिसमें केस का निर्णय हो जाने तक लड़की हमारे संरक्षण में रह सके।

लड़की को आपके परिवार के संरक्षण में देने का कोई औचित्य दिखायी नहीं देता। राजकीय शरणालय में यदि कोई परेशानी है, तब वहां के व्यवस्थापकों से मिलकर उसे दूर करवाया जा सकता है। लड़की के संरक्षक तो माता-पिता होते हैं। उनके विरुद्ध आरोप होने के कारण न्यायालय अन्य किसी निकट संबंधी को संरक्षक बना सकता है। ●

कहानी

सहावस्थान

• प्रो. भुवनेश्वर बेहेरा

छुट्टी का दिन। मैं अति प्रसन्न मुद्रा में बरामदे पर पड़ी कुरसी पर बैठा, सड़क पर तेज रफ्तार से दौड़ रही मोटर-गाड़ियों की ओर देखता हुआ सोच रहा हूं कि एक कप चाय के लिए हुक्म दूं या नहीं। इतने में धारा अपने छोटे-से बच्चे को लेकर आ पहुंची। आते ही उसने कहा, "पिताजी, इसके लिए एक अच्छा-सा नाम चुन दीजिए ना!"

मैंने सड़क से अपनी निगाह लौटायी और कहा, "नाम? नाम में भला क्या रखा है? कुछ भी रख दो। मेढक को ही देखो, तुम उसे किसी भी नाम से पुकार सकती हो--मेढक राजा कहो, मेढकी रानी कहो, 'फ्रॉग' कहो, मंडूक कहो या कुछ और। कोई अच्छा-सा नाम ही तो चाहती हो ना? 'चित्रसेन' क्यों नहीं रख देतीं।"

धारा ने भौंहें सिकोड़ते हुए प्रश्न किया, "चित्रसेन!"

मैंने कहा, "हां। देखने में चित्रसेन-जैसा सुंदर भी है। 'चित्रसेन' ही ठीक रहेगा।"

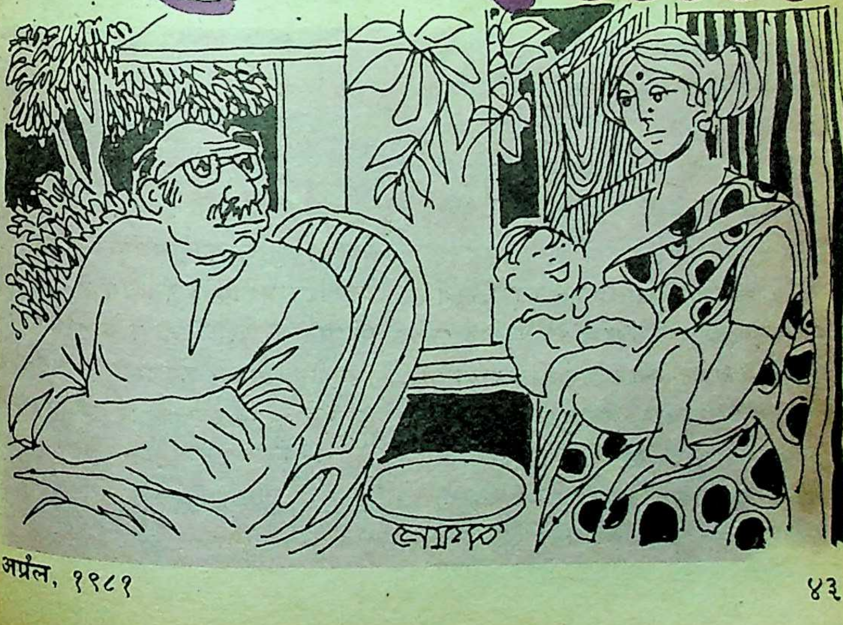

शायद, धारा कुछ कहने की कोशिश कर रही थी। उसके कुछ कहने से पहले ही मैं बोल पड़ा, "सुनो, जानती हो, कौन है चित्रसेन? चित्रसेन गंधर्व इंद्र का पुत्र ...। देखने में जितना सुंदर है, धनुष-विद्या में उतना ही निपुण भी। उसने एक बार किस तरह अकेले ही भीष्म, द्रोण, और कर्ण सहित सारी कौरव सेना को परास्त किया था और दुर्योधन को रथ में बांधकर ले गया था। और अर्जुन ...!"

धारा ने पुनः कुछ कहना चाहा, "यह बात तो सही है पिताजी— यह 'चित्रसेन' ...!"

मुझे गुस्सा आ गया। यह भी भला कोई तरीका है। पूरी बात सुने बिना ही बीच में टांग अड़ाने की आदत-सी बन गयी है, इन लोगों की।

मेरे गले का चढ़ा हुआ स्वर सुनकर वे दौड़ आयीं। पूछने लगीं, "क्या हुआ?" मैंने कहा, "होना क्या है, ये लोग भला हमारी बात सुनेंगे? कहते हैं 'जनरेशन गैप', मानों सैकड़ों युगों का अंतराल हो। भला बताओ तो सही, 'चित्रसेन' नाम में क्या खराबी है? पर इसे बदबू आ रही है।"

धारा की मां ने आश्चर्य से मेरी ओर देखा फिर पूछा, "'चित्रसेन'? किसके लिए?"

मैंने कहा, "सातों कांड समाप्त हो जाने पर अब पूछती हो सीता औरत थी या मर्द? और भला किसके लिए—धारा के बच्चे के लिए।"

उन्होंने आखें फाड़कर मेरी ओर देखा। कहा, "अरे, वह तो तुम्हारी नातिन है ना? भला लड़की का नाम 'चित्रसेन' कैसे होगा जी!"

मैं अपना सिर खुजलाने लगा, कहा, "अरे! बात तो सही है! मैं धारा पर व्यर्थ ही गुस्सा हुआ, तुमने शुरू में ही क्यों नहीं बतलाया?"

धारा ने उत्तर दिया, "पिताजी, आपने मेरी बात सुनी ही कहां? मैंने कई बार कोशिश की, पर आप कहने देते तब ना?"

गलती तो हो ही गयी थी, मैंने आत्मरक्षात्मक मुसकराहट बिखेरते हुए कहा, "ठीक है, तो 'अहिल्या' क्यों नहीं रख देतीं? नहीं तो 'शकुंतला', 'वैजयंती माला', 'कुंदेंदु मेखला', 'तुषार-हार-धवला'।"

"इतना लंबा नाम?"

"तो छोटा-सा रख दो, रीता, नीता,

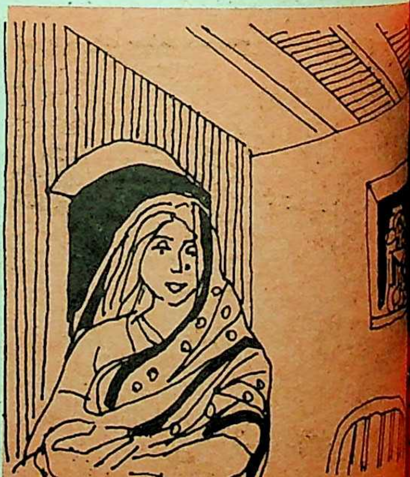

मीता, गीता, फीता, कविता, बनिता ... ।"

"ये सब नाम तो पुराने पड़ चुके हैं, पिताजी !"

"तो कुछ आधुनिक नाम कहे देता हूं, 'चलते बादल', 'डूबती तारिकाएं' 'डूबता-चांद' । और यदि क्रांतिकारी नाम चाहती हो, तब 'लक्ष्मीबाई', 'दुर्गावती'। अगर साम्यवादी नाम चाहतीं हो, तब 'सोमवारी', 'भातखाई', 'गोबर-गोटाई' आदि।"

धारा कुछ मुसकराते हुए बोली, "खैर रहने दीजिए, अन्न-प्रासन के वक्त या जब सालभर की हो जाएगी, तब भी, नामकरण किया जा सकता है ।"

मैं भला ज्यादा क्या कहता, इतना ही कहा, "देखो, जैसी तुम्हारी मर्जी ।"

नातिन के नामकरण की समस्या के बाद से ही मैंने यह तय कर लिया था कि अब इस तरह के झमेलों में नहीं पड़ूंगा। पर कुछ ही दिनों बाद इसी तरह की एक समस्या दूसरे रूप में दीख पड़ी।

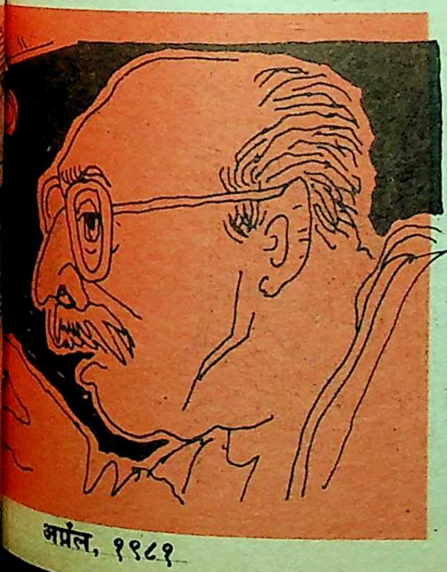

एक प्रकाशक ने एक वजनदार बात कही थी—और सच भी—पुस्तक का नाम रखे बिना पुस्तक छापेंगे किस तरह ? यह तो किसी की औलाद नहीं है कि जन्म होने के तुरंत बाद नाम न देकर बाद में छठिआरी, अन्न-प्रासन या सालभर बाद जन्म-दिन की तिथि पर सत्यनारायण पूजा के वक्त नामकरण करने पर भी चल जाएगा।

अजीब मुसीबत है !

काश ! कोई कविता की पुस्तक होती। पर गद्य की बात बिलकुल अलग है। कहानी को किसी फल के साथ या निबंध को किसी साग-सब्जी के साथ तुलना करने की बात सुनने में नहीं आयी है। 'आम की टोकरी', 'केला का घौद' या 'आलू की बोरी' आदि नाम क्या पुस्तक के लिए किसी ने सुना है ? अंततः मैंने यह निश्चित किया कि धारा की मां से ही पूछूंगा। उन्हें बुलाया भी गया, वे तुरंत आ पहुंची। मैंने कहा, "मेरी पुस्तक के लिए एक अच्छा-सा नाम तो सुझाओ।"

बस इतनी-सी बात ! भौंहे सिकोड़कर, नथुने फुलाकर उन्होंने जवाब दिया, "क्या मेरे पास कोई काम नहीं है कि तुम्हारे पास बैठूं, और फिर तुमने ऐसा क्या कुछ लिख मारा है कि उसके लिए मैं नाम ढूंढ़ू। उधर तरकारी चढ़ाकर

आयी हूं, अगर थोड़ा-सा भी जल जाए या नमक वगैरह कुछ कम-बेशी हो जाए तो सारा घर सिर पर उठा लोगे और दिनभर उसी की रट लगाये रहोगे। आजकल तो हर कोई पुस्तक में संग्रहीत किसी एक कहानी को ही पुस्तक का नाम दे देता है, तुम भी ऐसा ही क्यों नहीं करते ?"

इस तरह अपने अनजाने में ही एक अच्छा-सा संकेत फेंककर वह रसोई में चली गयीं। जब मैंने 'दंतली की हंसी और अन्य कहानियां' नाम देना तय किया, तब एकाएक मुझे यह खयाल आया कि मेरी पुस्तक में सिर्फ कहानियां ही नहीं, बल्कि निबंध, अनुभूति की कहानियां और कई आलोचनाएं भी गुथी हुई हैं।

फिर एक समस्या आ टपकी।

उस दिन अध्यापक वर्मा और श्रीमती वर्मा हमारे घर घूमने आये थे। साथ में आयी थी, उनकी बातूनी लड़की—नेली, धारा की सहेली, अंगरेजी साहित्य में एम. ए.। वर्मा परिवार हमारा बहुत पुराना मित्र है। चाय और जलपान के बीच बातचीत भी खूब जमकर हो रही थी। हठात मैंने अपनी पुस्तक के लिए एक नाम सुझाने के लिए श्रीमती वर्मा से अनुरोध किया, देखा, मेरी पत्नी तिरछी नजरों से मेरी ओर देख रही हैं, पर मैं उसकी ओर न देखने का अभिनय करते हुए श्रीमती वर्मा को देखता रहा।

इससे पहले कि श्रीमती वर्मा कुछ कहतीं, नेली बीच में ही आ टपकी। उसने पूछा, "अंकल, कविता है या उपन्यास?"

मैंने उसकी ओर देखकर उत्तर दिया, "न कविता है और न उपन्यास; कहानियां और निबंधों का एक संकलन है।"

अब उसने किसी भाषण-प्रतियोगिता में हिस्सा लेनेवाले वक्ता की तरह बोलना प्रारंभ कर दिया, "बेकन के मुताबिक कुछ रचनाओं को सिर्फ चखा जाता है, कुछ को एक ही बार में निगल

लिया जाता है, और कुछ को चबा-चबाकर हजम करना पड़ता है।" उसने पूछा, "आपकी रचनाओं को निगलना पड़ेगा या चबाना पड़ेगा ?"

मैंने कहा, "तुम तो अंगरेजी खाने की भाषा में अंगरेजी साहित्य की बात कह रही हो, हमारा उड़िया खाना इससे बिलकुल भिन्न है।"

नेली ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, "क्या आपके लेख उड़िया में हैं ?"

मैंने कहा, "हां, तुमने क्या समझा था ?"

उसे और भी आश्चर्य हुआ। भोलेपन से पूछा, "अंकल, क्या उड़िया में भी कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी और निबंध आदि हैं ?"

प्रश्न सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या जवाब दूं। यदि कोई और पूछता, तो शायद यह समझकर उस पर बरस पड़ता कि जान-बूझकर मजाक कर रहा है, पर यह नेली ! भला, यह मुझसे जान-बूझकर क्यों दिल्लगी करेगी ?

"तुम उड़िया-साहित्य से इतनी अपरिचित हो ? अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के बारे में भी ज्यादा कुछ नहीं जानती होगी ? इसीलिए कई भारतीय नेता सोचते हैं कि अंगरेजी-शिक्षा के कारण ही तुम सब आम जनता की जिंदगी से बहुत दूर जा पहुंचे हो और भारतीय संस्कृति की धारा से अलग रह रहे हो। और यही कारण है कि वे लोग 'अंगरेजी हटाओ' का नारा बुलंद करने में जुटे हुए हैं।"

नेली का चेहरा सूख गया। वह बोली, "अंकल, अगर हमारे व्यवहार और अज्ञानता के कारण अंगरेजी हमारे देश से हटा दी जाएगी, तो मुझे बहुत दुःख होगा। किंतु, इसके लिए हम-जैसों को गुनहगार ठहराना भी एकतरफा निर्णय होगा। एम. ए. में हमारे पास सोलह पेपर थे,

बी. ए. ऑनर्स में छह, पर उनमें एक भी पेपर संस्कृत या भारतीय साहित्य पर नहीं था। जब मैंने बी. ए. ऑनर्स में दाखिला लिया, उस वक्त अतिरिक्त विषय के रूप में भारतीय साहित्य या दर्शन अनिवार्य नहीं था। अब आप ही बतलाइए कि भारतीय साहित्य के बारे में हम कहां से पढ़ें, कैसे जानें ? और अगर हम इस बारे में अज्ञानी हैं, तो इसमें हमारा भला क्या कुसूर हुआ ?''

अध्यापक वर्मा सिर हिला रहे थे। उन्होंने कहा, ''सही है, हमें यह बात स्वीकार करनी ही होगी। शायद, हम अपने आत्माभिमान के चलते युवा-पीढ़ी से दूर होते जा रहे हैं, उनके विचारों और दृष्टिकोणों को समझने की कोशिश नहीं कर रहे, उनके निर्णयों पर पर्याप्त-मात्रा में गौर नहीं कर रहे। शायद, अपने इस उम्रगत अभिमान के बल पर हमने अपने एकतरफा निर्णय को अति-निर्दयता के साथ इन पर जबर्दस्ती थोप दिया है। और अब उन्होंने हमारी तानाशाही मनोवृत्ति के विरुद्ध विद्रोह छेड़ दिया है, सीधे तरीके से कुछ न कर पाने के कारण, हम लोगों से दूर हो गये हैं। दीख रहा है, यह 'जनरेशन गैप'।''

मेरी श्रीमती हंस रही थीं। शायद उस हंसी के माध्यम से वे नातिन के नामकरणवाली घटना की ओर परोक्षरूप से संकेत कर रही थीं, पर मैंने अध्यापक वर्मा की बातों से सहमति प्रकट करते हुए कहा, ''आप ठीक कह रहे हैं। हम सब आपस में इतने करीब होते हुए भी एक दूसरे को समझने की कोशिश न कर, दूर से ही आपस की गतिविधियों की समीक्षा करने में जुट जाते हैं। इन सारी चीजों में कहीं भी आपस में एक दूसरे को समझने या विचारों के आदान-प्रदान की मनोवृत्ति नहीं है, जिसे कि सहावस्थान कहा जा सके। एक अजीब-सी आदत (या तो इकट्ठे अपना लो, या पूरा का पूरा फेंक दो) बन चुकी है। यह 'अंगरेजी हटाओ' की मनोवृत्ति उसी का एक परोक्ष प्रतिफलन है।''

मैंने नेली से पूछा, ''ओड़िसी-नृत्य देखा है ?''

नेली ने खुश होते हुए उत्तर दिया, ''बहुत अच्छा होता है, अंकल।''

''और छउ नृत्य ?''

नेली प्रसन्न होते हुए कहती है—''हां, सड़ाईकला का छउ देखा है, और बारिपदा का भी। खूब अच्छा होता है।''

''उन नृत्यों के साथ-साथ जो गाने गाये जाते हैं ?''

''वे सब भी कुछ नये-नये से लगते हैं।''

''कोणार्क मंदिर ?''

प्रश्न के इस तरह अप्रत्याशित परिवर्तन के कारण एक बार तो वह झिझकी। फिर उसने कहा, ''हां, कोणार्क देखा है, भुवनेश्वर के सभी मंदिरों को देखा है। राजा-रानी मंदिर भी देखा है। कितना

सुंदर शिल्प है। मानो उसमें जान हो। कहा जाता है कि इस तरह की कला खजुराहो को छोड़कर और कहीं नहीं है।"

अध्यापक वर्मा लंबी-लंबी सांसें भर रहे थे। इसके बाद तुरंत उन्होंने लौट जाने का इशारा करते हुए कहा, "आज बहुत देर हो गयी है, फिर मुलाकात होगी।"

श्रीमती वर्मा चुपचाप इन सारी आलोचनाओं को सुनती रहीं। खड़े होते हुए उन्होंने कहा, "आज की बातचीत वास्तव में बहुत अच्छी लगी। कहां तक रोज-रोज उसी जनता पार्टी, कांग्रेस (आई), लोकदल, जनसंघ और आर. एस. एस. को लेकर माथापच्ची की जाए?"

नेली ने कहा, "अंकल का घर 'ओसिस' की तरह लगता है, है न मां?" श्रीमती वर्मा मेरी ओर देखते हुए बोल उठीं, "अपनी पुस्तक का नाम 'मरुद्यान' क्यों नहीं रख देते?"

मैंने कहा, "'मरुद्यान'? यह तो वाकई बहुत अच्छा नाम है?"

अध्यापक वर्मा, श्रीमती वर्मा और नेली चले गये। मैंने कहा, "कुछ भी कहो पुस्तक के लिए आखिर में एक अच्छा-सा नाम मिल ही गया।

उन्होंने मुंह बिराते हुए कहा, "जानते भी हो, 'मरुद्यान' इसके मायने क्या होता है?"

मैंने जवाब दिया, "मरुद्यान माने 'ओसिस।' रेगिस्तान के रेत-भरे तूफान और गरम हवा में ऊंट की पीठ पर बैठकर जब कोई यात्री जा रहा होता है, तब धूप में उसका सिर जलने लगता है, प्यास के मारे उसका गला सूख जाता है, और ऐसे में उसे दीखने लगता है, मरुद्यान, खजूर के पेड़ की छाया, झरने का पानी, पेड़ के नीचे टूटकर गिरे हुए मीठे रसभरे . . .।"

"पर इसके साथ तुम्हारी पुस्तक का क्या ताल्लुक?"

मैंने कहा, "बहुत बड़ा ताल्लुक है। संसार रूपी-रेगिस्तान के यात्री, ये पाठक जब मानसिक उत्ताप से परेशान हो, किसी ड्राइंग-रूम में बैठकर इस 'मरुद्यान' पुस्तक को पढ़ेगा . . .।"

"भला, पाठक मानसिक उत्ताप से क्यों परेशान होंगे, फिजूल की बातें।"

"घर और घरवाली के जंजाल से।"

"इस तरह का उट-पटांग नाम मत रखना, कहे देती हूं,"

तमतमाया हुआ चेहरा लिये हुए वे रसोई में चली गयीं।

मैं पीछे से चिल्लाया, "अवश्य रखूंगा . . . मेरी पुस्तक का नाम होगा?"

आप लोग तो समझ ही गये होंगे कि मैंने अपनी पुस्तक का नाम 'मरुद्यान' क्यों नहीं रखा?

—अनुवादक : राजेन्द्रप्रसाद मिश्र

मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है, क्योंकि यह सभी गुणों की जिम्मेदारी लेता है।

—चर्चिल

हंसाइयां

एक सज्जन अपनी पत्नी को अपनी मोहब्बत का विश्वास दिलाते हुए कह रहे थे, "मैं सच कह रहा हूं, मेरी जिंदगी में सिर्फ एक औरत आयी है।"

"मैं भी तो यही पूछ रही हूं कि उस चुड़ैल का नाम क्या है ?" पत्नी ने कहा।

—मदनमोहन लोहिया

उच्च-अधिकारियों की बैठक में भाषण देते-देते अध्यक्ष ने एक परचे पर कुछ लिखकर सुरक्षा-अधिकारी को दे दिया। उसने सभा में ही तुरंत एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया।

सभा समाप्त होने पर अध्यक्ष ने पूछा, "मैंने तो केवल यह लिखा था कि इस सभा में एक शत्रु-एजेंट है। तुम्हें एजेंट का पता कैसे लगा ?"

सुरक्षाधिकारी ने कहा, "हमें यह सिखाया गया है कि शत्रु कभी नहीं सोता। आपके भाषण के समय केवल वही व्यक्ति जाग रहा था।"

--विजय भारद्वाज

मुल्ला नसीरुद्दीन के कारनामे

करिश्मा हाजिर जवाबी का

घनी अंधेरी रात थी। मुल्ला नसीरुद्दीन गहरी नींद में सोया हुआ था। सहसा टिमटिमे प्रकाश में घर में दो अजनबी व्यक्तियों को देखकर वह सहम गया। दोनों के चेहरे काले कपड़े से ढके हुए थे। वह समझ गया, दोनों चोर हैं, तो शीघ्र खाट के नीचे दुबक गया।

चोरों ने उसे देख लिया था। उनमें से एक बोला, "अरे भाई, छिपते क्यों हो ? हमने तुम्हें देख लिया है। डरो मत।"

मुल्ला की हाजिर जवाबी काम आयी। वह छिपे-छिपे बोला, "भाई, मैं डरकर खाट के नीचे नहीं छिपा हूं। मैं तो इस शर्म के मारे छिपा हुआ हूं कि आप लोगों की सेवा के लायक इस घर में कुछ नहीं है!"

मुल्ला के जवाब पर दोनों चोर हंस पड़े और घर के बाहर हो गये।

हंसिकाएं

• डॉ. सरोजनी प्रीतम

शिला

राम की चरण-रज महिमा--
'ह्वे शिला सब,
चंद्रमुखी'
अध्यापक को कहते हुए सुना

नीति की बात

वे बोले हंसकर,
"नीति की बातों को ही लो
पुस्तक में लिखा है
सच कड़वा होता है
सदा मीठा बोलो"

ब्रह्मानंद सहोदर

ब्रह्म ने
ब्रह्मांड की रचना के बाद
संपादक की रचना की
क्योंकि--
यदि पहले करता
संपादक
उसकी रचना भी
'खेद-सहित' लौटा देता

मुद्रा-स्फीति

वाह शब्द पर टिप्पणी देते हुए
उन्होंने कहा,
वि-वाह के प्रयुक्त होते ही
वाह—का अवमूल्यन हुआ

जज ने अपराधी से पूछा : "तुम यह स्वीकार करते हो कि तुमने पांच बार कपड़े की दूकान से चोरी की । क्या तुम यह बता सकते हो कि तुमने वहां से क्या-क्या चुराया ?"

अपराधी : "साहब, अपनी पत्नी के लिए केवल एक साड़ी ।"

जज : "लेकिन मेरी यह समझ में नहीं आ रहा कि एक साड़ी के लिए पांच बार चोरी करने की जरूरत क्या थी ?"

अपराधी : "चार बार उसे पसंद आयी नहीं थी, सरकार ।" --राजकुमार जैन

मोटर बोट रास्ते में रुक गयी। कप्तान ने कहा, "कोहरा घना है, हम आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं।"

"लेकिन मुझे तो तारे साफ दिखायी दे रहे हैं।" यात्री बोल पड़ा।

"सो तो ठीक है, लेकिन उस रास्ते पर जाने का अभी हमारा इरादा नहीं है।"

*

"भूल करे और माफी मांग ले, वह है 'समझदार'।"

"परंतु भूल न भी करे और माफी मांगे वह है, 'प्रेमी'।" —यशवंत कोठारी

यदि मैं मंत्री होता

● ख्वाजा अहमद अब्बास

कहते हैं कि भगवान गंजे को नाखून नहीं देता, ताकि वह खुजा-खुजाकर अपने सर को लहूलुहान न कर ले, लेकिन अगर मैं केंद्रीय या प्रदेशीय सरकार में मंत्री होता, तो हर साल कम से कम एक बार त्यागपत्र जरूर दिया करता।

त्यागपत्र देने के कई फायदे हैं। मगर शर्त यह है कि चुपचुपाते त्यागपत्र न दिया जाए, बल्कि फिल्म-स्टारों की तरह पब्लिसिटी का सारा प्रबंध करके त्यागपत्र दिया जाए।

त्यागपत्र देने से पहले यह जरूरी है कि किसी बड़े अखबार के संवाददाता को खाने का निमंत्रण दिया जाए और खाने की मेज पर बातों ही बातों में कह दिया जाए, 'अगले महीने शायद मैं इस घर में न रहूं।'

'क्यों? क्या आप घर बदलनेवाले हैं? संवाददाता जरूर पूछेगा।

'हां, ऐसा ही समझो, यह घर तो मुझे मंत्री की हैसियत से मिला हुआ है, और...' और यह 'और' कहकर ड्रामाई अंदाज में रुकना जरूरी है।

'और? और क्या?' वह संवाददाता जल्दी से पूछेगा, 'कहीं आप त्यागपत्र तो नहीं दे रहे हैं?'

उस वक्त मैं ठंडी सांस लेकर कहूंगा, 'हां भई, कौन कह सकता है? शायद ऐसा भी करना पड़ जाए। मगर मैंने तुम्ह अपना दोस्त समझकर यह कह दिया है। ऐसा न हो, कहीं तुम अपने अखबार में छाप दो।'

'नहीं... नहीं...' वह मुझे आश्वासन देगा, 'आप फिक्र न कीजिए।' और अब मुझे यह फिक्र होगी कि कहीं सचमुच ही यह खबर अखबार में न छपी, तो फिर इस डिनर पर जो खर्चा किया है, वह बेकार जाएगा। सो, मैं जल्दी से कहता हूं, 'वैसे, मैं तुम्हें रोकनेवाला कौन होता हूं? तुम इतने पुराने जर्नलिस्ट हो, तुम्हारा क्या फर्ज है, यह तुम अच्छी तरह जानते हो।'

अगले दिन उस पत्र के मुख-पृष्ठ पर बड़ी-बड़ी सुर्खी के साथ छपा होता है—'क्या श्री झूठामल खुरपानी त्यागपत्र दे रहे हैं?'—हमारे विशेष संवाददाता द्वारा—राजनीतिक क्षेत्रों में हर तरफ यही चर्चा सुनायी देती है कि मंत्रिमंडल में बड़े जल्दी रद्दो-बदल होनेवाला है। इस विषय में हमें विशेष सूत्र से पता चला है कि सड़क और धर्मशाला मंत्री झूठामल खुरपानी त्यागपत्र देनेवाले हैं। कारण यह बताया जाता है कि खुरपानीजी के सड़क और धर्मशाला मंत्रालय की बनायी हुई सड़कों के गढ्ढों और घपलों के बारे में, जो ले-दे न केवल विधानसभा में, बल्कि उनकी पार्टी की हाईकमांड में भी हो रही है, उससे खुरपानीजी चिढ़े हुए हैं। उनका विचार है कि उनके विरुद्ध चलाये जा रहे प्रोपैगंडे में उन लोगों का हाथ है, जो कहने को तो कांग्रेसी हैं, मगर अंदर से छिपे हुए कम्युनिस्ट हैं।

यह छिपे हुए कम्युनिस्टवाला पैंतरा देखा आपने। इस खबर का अंतरराष्ट्रीय महत्त्व हो गया, अब तो यह खबर न केवल हिंदुस्तान, बल्कि अमरीका, इंगलैंड, जापान, जरमनी के समाचारपत्रों में मुख-पृष्ठों पर भी छपनी आवश्यक हो गयी और यूं समझिए कि एक ही दिन में मैं—यानी श्री झूठामल खुरपानी अंतरराष्ट्रीय शोहरत और अहमियत का मालिक बन गया।

'न्यूयार्क टाइम्स' और 'लंदन टाइम्स' में भी अपना नाम छप गया कि हिंदुस्तान

में कम्युनिज्म के हथौड़े को रोकनेवाला कोई है, तो उल्टा-प्रदेश का सड़क एवं धर्मशाला मंत्री खुरपानी है।

अब रात को सोना मुश्किल हो गया। हर वक्त इंगलैंड, अमरीका, फ्रांस, जरमनी से तार आने लगे। कहीं से सरकारी निमंत्रण आ रहे हैं। कहीं विदेशी यूनिवर्सिटियों के वाइस-चांसलरों के तार आ रहे हैं कि हमारे विद्यार्थियों के सामने, 'भारत की विदेश-नीति में नया परिवर्तन' शीर्षक विषय पर एक लेक्चर दे दीजिए। हम आपकी सेवा में केवल पांच सौ डालर प्रस्तुत कर सकते हैं। और फिर मैं दिल ही दिल में हिसाब लगाने लगता हूं कि इतने रुपये में मैं अपनी पत्नी के लिए कितनी नाइलोन की साड़ियां और अपने लिए कितने फाउंटेनपैन और कितनी घड़ियां ला सकूंगा।

जब इतनी पब्लिसिटी हो गयी, तब मैंने मुनासिब समझा कि अब तो सचमुच त्यागपत्र दे ही देना चाहिए। सो, मैंने मह-मंत्रीजी को एक लंबी-चौड़ी चिट्ठी लिखा, 'हालांकि मैं आपकी बड़ी इज्ज करता हूं, पर मैंने देश की सेवा अपना जीवन अर्पण कर रखा है। मग आज के हालात में मेरा मंत्रिमंडल में रह असंभव हो गया है। मैंने सुना है कि आ मुझसे सड़क और धर्मशाला का विभा छीनकर कुत्ता-बिल्ली की मिनिस्ट्री दे चाहते हैं। मैं कुत्ता-बिल्ली के महत्त्व क समझता हूं। पशुओं की सेवा हमारा धर्म है। मैं इस मिनिस्ट्री में भी बहुत अच्छा काम कर सकता हूं, लेकिन इस वक्त ज मेरे सड़क और धर्मशाला विभाग के विरु ले-दे हो रही है, तब यही कहा जाएगा कि मेरे काम से असंतुष्ट रहने के कार महामंत्री ने मुझसे सड़क और धर्मशाला की मिनिस्ट्री छीन ली है। इसलिए मेरे लिए इसके सिवा कोई रास्ता नहीं कि मैं अपना त्यागपत्र दे दूं।'

यह न समझिएगा कि यह त्यागपत्र भेजकर मैं चुप बैठा रहूंगा। नहीं साहब, मैं इतना भोला नहीं हूं। त्यागपत्र की खबर न छपे तब त्यागपत्र देने से क्या फायदा? सो, जितने भी मेरे जाननेवाले रिपोर्टर हैं, सबके कान में फुसफुसा दूंगा कि मैंने त्यागपत्र दे दिया है। बल्कि अपने सेक्रेटरी से कह दूंगा कि त्यागपत्र की दस-बारह कापियां टाइप करके तैयार रखे और जो भी रिपोर्टर मांगे, उसे चुपके से कहकर दे दे कि मैं सिर्फ तुम्हें ही दे रहा हूं। खुर-

पानीजी को मालूम नहीं होना चाहिए, वरना वे मुझे खड़ा-खड़ा निकाल देंगे।

अब तो अगले दिन यह खबर अखबारों में छपनी जरूरी हो गयी! इधर खबर छपी, उधर मेरे गुरगों और चमचों ने महामंत्री को तार भेजने शुरू किये--

'बड़ेगांव के एक भरे जलसे में प्रस्ताव पास हुआ कि अगर श्री खुरपानी का त्यागपत्र स्वीकार कर लिया गया तो, मंत्रालय न केवल अनाथ, बल्कि विधवा भी हो जाएगा।'

'झूठागांव की जनता की मांग है कि खुरपानीजी को मंत्रिमंडल में जरूर रखा जाए' इत्यादि . . . इत्यादि . . .

और फिर महामंत्रीजी ने मुझे बुलाया, 'क्यों खुरपानीजी, आप बड़े नाराज मालूम होते हैं ?'

'नाराज होने की बात ही है जी। आप मुझसे सड़क और धर्मशाला की मिनिस्ट्री छीन कर कुत्ते-बिल्ली की मिनिस्ट्री देना चाहते हैं।'

'यह क्या बकवास है ? मैं तो तुम्हें शिक्षा और जनसेवा कल्याण-मंत्री बनाना चाहता था, तो अब मैं समझा ! वे विभाग तुमसे संभलेंगे नहीं। इसलिए सड़क और धर्मशाला की मिनिस्ट्री ही ठीक है तुम्हारे लिए।'

और फिर मैं अपना त्यागपत्र वापस ले लूंगा। मगर अफसोस कि मैं मंत्री नहीं हूं।

—फिलोमिना एपार्टमेंटस,
चर्च रोड, जुहू, बंबई-४०००४९

कागज की नाव

हद नजर तक गहरा पानी
लहरें हैं तूफानी
दूर किनारा
चमके खूनी धारा
तेज हवाएं
खराब वातावरण
कदम-कदम मझधार
हर सू हाहाकार
कागज की एक अहमक नाव
चली है, दरिया पार

--फारिग बुखारी

सुबह

अजां मस्जिदों से उठी जिस घड़ी
हवाओं के दिल और गहरे हुए
किनारे आस्मां के गुलाबी हुए
गुलाबी से फिर सुनहरे हुए

--मुनीर नियाजी

भावानुवाद : खान हाफिज
२४१/१ जे. कालोनी, जाजमऊ,
कानपुर

ख़ून के रिश्ते कितने गहरे...

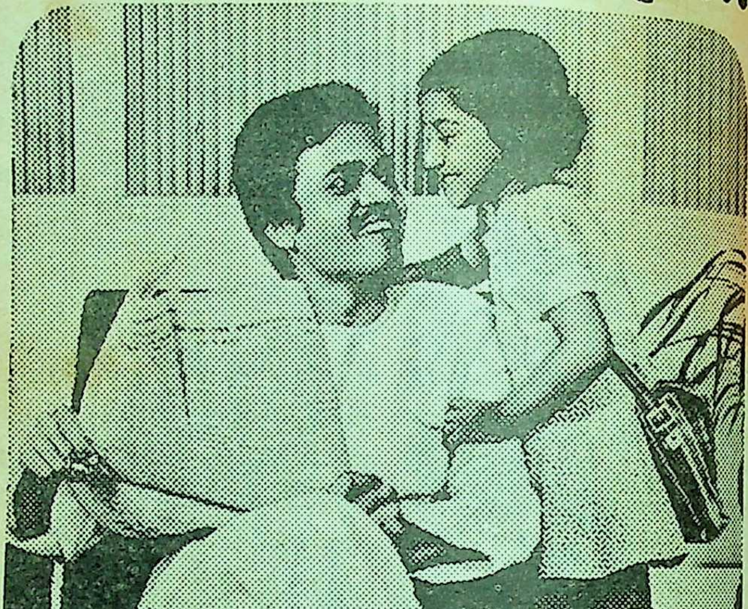

मिनाडेक्स का भी आपके ख़ून के साथ गहरा रिश्ता है

स्वस्थ ख़ून अच्छी सेहत का आधार है। और स्वस्थ ख़ून के लिए ज़रूरत है लौहतत्व की। मिनाडेक्स में लौहतत्व की प्रचुर मात्रा के कारण इसके हर चम्मच से आपके ख़ून को पूरा फ़ायदा मिलता है।

ग्लेक्सो
मिनाडेक्स
स्वस्थ रक्त और नयी शक्ति के लिये

रक्तशक्तिदायक टॉनिक

मिनाडेक्स®

CASGM-19R 182 HN

विज्ञान की नयी उपलब्धियां

विकलांग बच्चों को पैदा न होने दें

इस शताब्दी के पहले विशेषज्ञों को प्रायः यह भ्रम था कि विकलांग बच्चों की पैदाइश का कारण लंबी आनुवांशिक विकृतियां हैं, पर वर्तमान दशकों ने इस भ्रम को साफ कर दिया है। इसकी वजह है—जीव वैज्ञानिकों द्वारा अत्याधुनिक जीव-कोषाओं का रासायनिक विश्लेषण। इस अध्ययन में अमरीकी व जरमन महिलाओं पर प्रयोग किये गये, विशेषकर उन महिलाओं पर, जो गर्भवती थीं और अधिक दवाओं का सेवन करती रहीं। ८०,००० अमरीकी और १०,००० जरमन महिलाओं पर किये गये परीक्षणों से पता चला कि विकलांगता की जड़ कुछ दवाएं हैं।

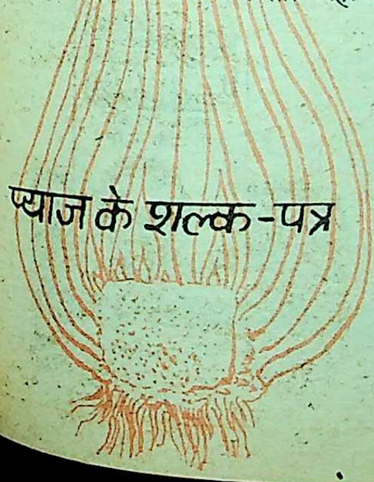

इसलिए विशेषज्ञों की राय थी कि गर्भावस्था के समय महिलाओं को चाहिए कि वे बगैर डॉक्टर की राय के औषधि का सेवन न करें, अन्यथा उन्हें इसका परिणाम विकलांग बच्चों के जन्म के रूप में भोगना पड़ेगा।

डसलड्रॉफ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर फ्रैंक मेजवस्की (मानव-शास्त्री व मानव जिनेटिक्स) का स्पष्ट मत था कि अल्कोहल ही मां के गर्भ में बच्चों को विकृत व विकलांग करता है। पश्चिमी जरमनी की लगभग ३ लाख उन महिलाओं का परीक्षण किया गया, जो शराब पीती थीं, तो पाया गया कि उनके अधिकांश बच्चे बहुत छोटी खोपड़ी के पैदा हुए, साथ ही नाक भी छोटी थी। प्रायः उनके हृदय व प्रजनन अंग शरीर पर सही अवस्था में नहीं पाये गये। यहां तक कि मस्तिष्क से वे विक्षुब्ध अधिक थे।

इन सब परीक्षणों के परिणाम का अध्ययन केंद्र भ्रूण और मां के गर्भ से जुड़ा प्लासेंटा था। यही प्लासेंटा मां के रक्त से सीधा भ्रूण के रक्त तक संबंध रखता है। भ्रूण का पोषण इसी के द्वारा होता है।

प्याज खायें : रक्त-चाप घटायें

हृदय-रोग की घातकता से जाने-अनजाने सभी भयभीत हैं। न जाने कब कोई

कभी न कभी हर मां को इस परेशानी का सामना करना ही पड़ता है!

जुंएं!

अब आ गया है

सॉय-बैन* लोशन

सुरक्षित, प्रभावकारी, चिपचिपाहट रहित और खुशबूदार जूं नाशक

सॉय-बैन तेजी से असर करता है. रात को सिर की त्वचा पर धीरे-धीरे सॉय-बैन मल दीजिये. सुबह बालों में कंघी कीजिये और मरी हुई जूं और लीख निकाल बाहर कीजिये. अब, बालों को अच्छी तरह धो डालिये. बस हो गया आपकी परेशानी का रातोंरात खात्मा!

सॉय-बैन चिपचिपाहट रहित और खुशबूदार है :

सॉय-बैन में तेल न होने के कारण ये चिपचिपा नहीं है. इसलिये आपके तकिये पर धब्बे भी नहीं छोड़ता. तेजी से बालों में फैलकर आपकी परेशानी जड़ से उखाड़ फेंकता है. इस पर मजे की बात ये कि इसकी लवेन्डर से रची खुशबू सारी रात महकती रहती है.

सॉय बैन पूर्ण रूप से सुरक्षित है :

सॉय-बैन आपके बालों और आपकी सिर की त्वचा को हानि नहीं पहुंचाता। याने इसके इस्तेमाल से न तो बालों के रंग पर असर होता है और न ही बाल झड़ते हैं. और ऐसा क्यों न हो...सॉय-बैन को बनाने वाले भी तो आपके जाने पहचाने 'लेडरली' ही हैं। जो बरसों के अनुसंधान और जांच के बाद ये साबित कर चुके हैं कि सॉय-बैन शतप्रतिशत सुरक्षित और तेज असरकारक दवा है.

MALATHIO
LOTION 0.5%
MALATHION
LOTION 0.5%

हर केमिस्ट की दुकान पर उपलब्ध

Lederle

*अमेरिकन सायनामिड कंपनी का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

सॉय-बैन* रातों रात जुंओं और लीखों से छुटकारा

Sista's-CYB-964/80 Hin

इस रोग का ग्रास बन जाए। कभी यह मंद हृदय-गति के द्वारा, तो कभी तीव्र हृदय-गति के द्वारा मनुष्य को भयभीत कर जाता है। जैसे-जैसे यह रोग पंजा बढ़ा रहा है, वैसे-वैसे विश्वभर के वैज्ञानिक अपनी निरंतर खोजों से इस रोग को पीछे धकेलने में जुड़े हैं। इसी कड़ी में चिकित्सकों ने अपने आस-पास के खान-पान को परखकर निदान ढूंढ़ने की कोशिश की है। प्याज हमारे भोजन में आज इसी महत्त्व को लेकर आगे बढ़ रहा है। अनजाने हम प्याज का सेवन करते रहे, पर उसके महत्त्व को पहचान न सके, लेकिन अब आप उसके गुणों को पहचान सकते हैं—

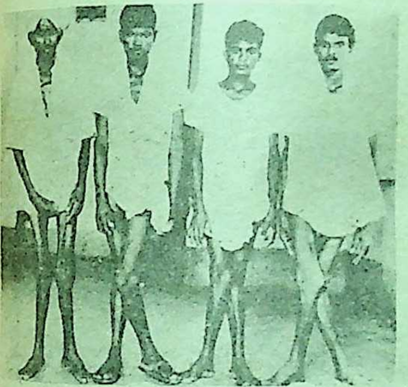

कच्चे प्याज में प्रोस्टेग्लेनडिन ए–१, हारमोन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। लगभग प्रत्येक बल्ब में चौथाई मि. ग्राम हारमोन होता है। पहले पौधों में इस हारमोन की मात्रा का वैज्ञानिकों को पता नहीं था, और न ही उसके इस गुण से परिचित थे कि यह रक्त-चाप को धीमा करता है।

यद्यपि वैज्ञानिक सीधे-सीधे यह पता नहीं कर सके हैं कि प्याज से दिल की धड़कनें कम होती हैं, पर उसमें पाये जानेवाले हारमोन (प्रोस्टेग्लेनडिन) से वे आश्वस्त हैं, क्योंकि लगभग एक मि. ग्राम प्रोस्टेग्लेनडिन हारमोन का इंजेक्शन रक्त-चाप घटाता है। यानी लगभग चार प्याज खाने से आप इस हारमोन की कमी को पूरा कर सकते हैं।

नया हृदय-उपचार

हृदय-रोग के उपचार में हैमबर्ग के एपिन ड्रॉफ विश्वविद्यालय अस्पताल में एक नयी पद्धति का जन्म हुआ है। इसमें अचानक हृदय की धड़कन रुक जाए, तो सीधे नली के द्वारा हृदय को दवा पहुंचाकर रक्त में बने थक्के को घोला जा सकता है। फिर रक्त-संचार सामान्य अवस्था में आ जाता है। इस प्रकार २ या ३ घंटे में हृदय की धड़कन सुचारु हो जाती है। इस विधि से हृदय पर होनेवाले प्रहारों को शांत किया जा सकता है।

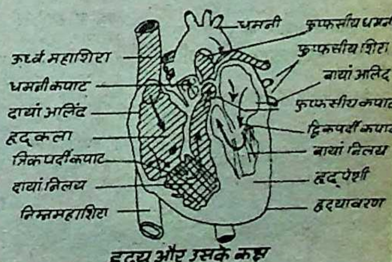
ऊर्ध्व महाशिरा
धमनी कपाट
दायां अलिंद
हृद् कला
त्रिकपर्दी कपाट
दायां निलय
निम्न महाशिरा
धमनी
फुफ्फसीय धमनी
फुफ्फसीय शिरा
बायां अलिंद
फुफ्फसीय कपाट
द्विकपर्दी कपाट
बायां निलय
हृद् पेशी
हृदयावरण

हृदय और उसके कक्ष

मुनिया रानी बढ़ती जाये
घने काले, बालों का जादू जगाये
मोती से सफेद दांतों को चमकाये
BRAHMI AMLA OIL
ब्राह्मी आँवला तैल
COW BRAND
BLACK
TOOTH POWDER
काला दन्त मंजन
heros'-AS-151 B HN

गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तेल
—उसके बालों को और घने बनाये
सबको सुहाये मन में भाये
बालों का ये कालापन, घना व चमकीलापन

गाय छाप काला दन्त-मंजन
—उसके दांतों को चमकाये
मोती से सफेद व मज़बूत बनाये

**सेवाश्रम का गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तेल
और काला दन्तमंजन**

अपनी सुन्दरता को
चिरस्थिर रूप से बनाये रखिये

आयुर्वेद सेवाश्रम लिमिटेड
उदयपुर • [illegible] • हैदराबाद

घाव न करनेवाली बंदूक

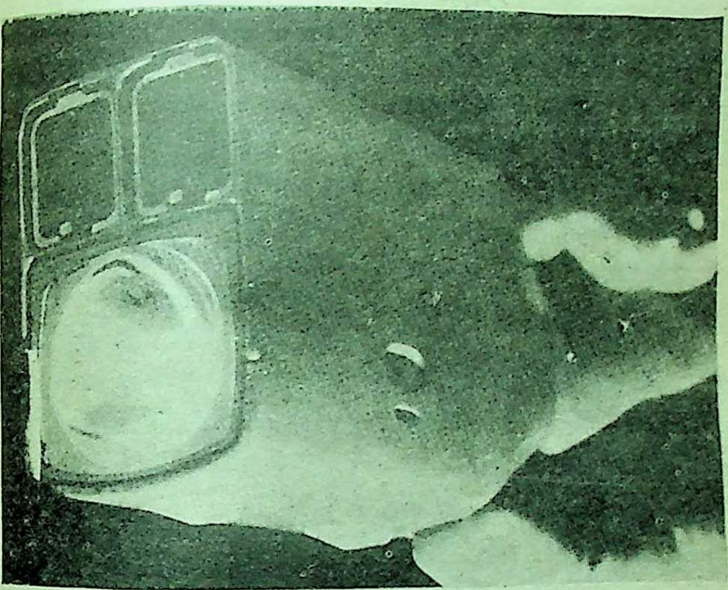

अब तक हम जिस बंदूक की कल्पना ही कर सकते थे, विज्ञान ने उसकी सत्यता प्रमाणित कर दी है। अपराधी को पकड़ने में यह बंदूक मदद तो करेगी, लेकिन घाव का कहीं भी शरीर पर निशान नहीं देगी।

टार्च के आकार की इस बंदूक का नाम 'टसर' है। इसकी कीमत अमरीका में लगभग १०० डॉलर है। मार करने से पूर्व यह प्रकाश दिखाकर एकदम अंधेरा कर देती है। उसके बाद दो गोलियां छोड़ती है। इनकी लंबाई लगभग एक इंच होती है। यह बंदूक तांबे या स्टेनलेस स्टील के तारों से ५ मीटर दूर बैटरी से जुड़ी रहती है। जैसे ही ट्रिगर (घोड़ा) दबाया जाता है, वैसे ही विद्युत् प्रकाश स्नायु-तंत्र के चारों ओर अपना प्रभाव डालता है। और परिणामस्वरूप आपको एक मिनट के लिए असहाय बना देता है। यह प्रभाव घबराहट के रूप में काफी लंबे समय तक रहता है।

'टसर' के अध्यक्ष का दावा है कि हम अपराधियों को पकड़ने का एक अच्छा विकल्प पुलिस को दे रहे हैं, यह यंत्र बहुत सुदृढ़ साबित हुआ है। और कम ही ऐसे क्षण आ सकते हैं, जब इससे घाव हों। ●

२१ जनवरी से १९ फरवरी

पुरुष

ऐसे पुरुष में वर्चस्व बनाये रखने की भावना होती है। आत्म-केंद्रित यह व्यक्ति स्वयं को स्वामी समझता है। यदि आप उसे छोड़कर कहीं जाएंगी, तब वह यह तत्काल जानना चाहेगा कि आप कहां और किसके साथ गयी थीं, पर अपने मामले में वह स्वच्छंदता बरतना चाहेगा। यदि आप उसके कहे अनुसार चलेंगी, तब वह आपको भरपूर संरक्षण भी प्रदान करेगा। पर जहां आपने उसकी इच्छा के विपरीत कार्य किया, तब तूफान उठ खड़ा होगा।

स्त्री

ऐसी नारी हमेशा स्त्रियोचित असहायता का मुखौटा पहने रहती है। लेकिन वस्तुतः बेहद चतुर और सोच-समझकर कार्य करनेवाली होती है। वह गहन संक में भी धैर्य नहीं खोती। ऐसी नारी को आप बहका सकते हैं और न धोखा दे सके हैं। ऐसी नारी अपने अपमान को भी क नहीं भुलाती और न अपमान करनेवा को क्षमा करती है।

२० फरवरी से २० मा

पुरु

ऐसा पुरुष स्वयं को आदर्शवादी, लज्जा और भौतिकता से निर्लिप्त प्रदर्शित करना चाहता है, पर वास्तविकता यह नहीं होती। वह हर काम में सफलता पाने के लिए सदैव अधीर रहता है। वह चाहता है कि लोग उसे मानें, उसकी सराहना करें। वह निरंतर परिवर्तनों की चुनौतियों

आपकी जन्म-तिथि आपका स्वभाव है

अंतरिक्ष में स्थित ग्रह हमारे चरित्र को गढ़ने में भी एक बड़ी भूमिका निबाहते हैं। अनुभवों से यह सिद्ध हो चुका है कि किसी राशि विशेष के अंतर्गत जन्म लेनेवाले व्यक्ति की कुछ विशेषताएं होती हैं। अपनी जन्म-तिथि के अनुसार आप अपनी विशेषताओं को देख सकते हैं। लेखक हैं ब्रिटेन के विख्यात ज्योतिर्विद—विलियम जेम्स

से जूझने के लिए लालायित रहता है।

स्त्री

ऐसी नारी हमेशा सहायता और अच्छी सलाह देने के लिए तत्पर रहती है। पर उसकी हर बात पर विश्वास कर लेना घातक भी हो सकता है। ऐसी नारी कभी दुर्भावनावश झूठ नहीं बोलेगी, पर बातें बढ़ा-चढ़ाकर कहने की आदत से वह मजबूर होती है। वह चाहती है कि उसका जीवन-साथी उस पर काफी ध्यान दे। ऐसा न होने पर वह ईर्ष्या की आग में जलने लगती है।

२१ मार्च से २० अप्रैल

पुरुष

ऐसा पुरुष सृजनात्मक एवं कल्पनाशील प्रवृत्तियों का होता है। ऊपर से तो वह लापरवाह और आराम-पसंद प्रतीत होता है, अंदर से वह जीवन-संगिनी को अपनी कल्पना के अनुरूप बनाने में सदा जुटा रहता है। जब तक वह जीवन-साथी को अपने आदर्श के अनुरूप नहीं बना लेता, तब तक चैन से नहीं बैठता।

स्त्री

ऐसी नारी के बारे में सदा भय बना रहता है कि वह कब, क्या कर बैठे। वह कहेगी कुछ, करेगी कुछ? ऐन मौके पर विचार बदल देगी। वह दूरदर्शी होती है, साथ ही हर बात को अपने अनुरूप चाहती है। वह मित्रता में भागीदारी को बर्दाश्त नहीं कर सकती। ऐसी नारी के जीवन-साथी को उसी का होकर रहना चाहिए।

२१ अप्रैल से २० मई

पुरुष

ऊपरी तौर पर वह बेहद धैर्यवान और कभी-कभी कल्पना-हीन भी प्रतीत होता है, पर भीतर, उसके मन में भावनाओं का ज्वार हिलोरें लेता रहता है। वह कभी अपना आपा नहीं खोता, पर जब उसका क्रोध फूटता है, तब उसकी स्थिति ज्वालामुखी-जैसी हो जाती है। अतः उसके क्रोध के लक्षण प्रकट होते ही सावधान हो जाना चाहिए।

स्त्री

ऐसी नारी कभी दबना पसंद नहीं करती। उसे भविष्य की योजनाएं बनाना भी अच्छा नहीं लगता। वह अपनी इच्छानुसार कार्य करना चाहती है और हमेशा वर्चस्व बनाये रखने की कोशिश में जुटी रहती है। वह संकट में पड़े मित्रों की दौड़कर सहायता करती है।

उत्तर रेलवे

प्रिय विद्यार्थियों, तीर्थ-यात्रियों, पर्यटक बन्धुओं अब भारत दर्शन का आसान तरीका यह है

कि आप देश के सरकुलर भ्रमण के लिए पहले या दूसरे दर्जे का सरकुलर यात्रा टिकट निर्धारित स्टेशनों से खरीदें। इसका रियायती किराया डाक/एक्सप्रेस गाड़ी के सामान्य किराए से १५% कम है। किराया श्रेणी तथा वैधता की अवधि (३०, ६० या ९० दिन) यात्रा की कुल दूरी पर निर्भर करेगी। मार्ग में आप जिस स्टेशन पर यात्रा विराम करना चाहें और जितने समय के लिए करना चाहें उसके लिए आपको अनुमति होगी किन्तु यह अवधि टिकट वैधता की अवधि से आगे नहीं होनी चाहिए।

हमने आपकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ३० प्रकार के मानक सरकुलर यात्रा टिकट निर्धारित किए हैं। इनमें भारत के सम्पूर्ण मनोरम दर्शनीय स्थलों को शामिल किया गया है। इनमें से आप किसी भी एक यात्रा का चयन कर सकते हैं।

यदि आपने अपनी सुविधा के अनुसार अपना कोई अलग कार्यक्रम बनाया है तो आप कृपया इस सम्बन्ध में हमसे व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित करें या अपनी आवश्यकता के बारे में हमें लिखें। हम आपके भ्रमण कार्यक्रम के लिए रियायती किराये का हिसाब लगा कर आपको जानकारी देंगे। (यह आवश्यक है कि यात्रा सरकुलर होनी चाहिए और यात्रा की दूरी २४०० किलोमीटर से कम नहीं होनी चाहिए तथा प्रभारी किराया-दूरी सीधे यात्रा मार्ग द्वारा भ्रमण सूची में दर्ज प्रारम्भिक स्टेशन और सबसे दूर के स्टेशन के बीच की दूरी से तीन गुना से अधिक होनी चाहिए।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया समीपवर्ती स्टेशन के स्टेशन मास्टर या सम्बन्धित मण्डल के वाणिज्य अधीक्षक से सम्पर्क स्थापित करें या टेलीफोन नं. ३८-७३२६/३८-७५०३ पर जानकारी प्राप्त करें।

मुख्य वाणिज्य अधीक्षक
उत्तर रेलवे, नई दिल्ली

२१ मई से २१ जून

पुरुष

ऐसा व्यक्ति बेहद 'मूडी' और भावनाओं में बह जानेवाला होता है। उसका स्वभाव 'पल में तोला, पल में माशा' वाली उक्ति चरितार्थ करता है। अतः उसकी जीवन-संगिनी को समझबूझ से काम लेना चाहिए, साथ ही उसे उस पर नियंत्रक की भूमिका भी निभानी चाहिए; अर्थात जब वह आपे से बाहर होने लगे, तब उस पर नियंत्रण रखे।

साथ ही, जब वह संकट में हो, तब उसे धैर्य बंधाये, सही परामर्श दे।

स्त्री

ऐसी नारी काफी चिड़चिड़ी होती है। उसका खर्चीला स्वभाव कभी-कभी परेशानी में डाल देता है। ऐसी नारी को गप्पें उड़ाने की भी आदत होती है। लेकिन इन दोषों का वह अपने स्नेहिल व्यवहार द्वारा निराकरण कर देती है।

२२ जून से २३ जुलाई

पुरुष

ऐसा व्यक्ति अपने जीवन-साथी पर वर्चस्व बनाये रखना चाहता है। अतः जीवन-साथी को चाहिए कि वह उसे स्वयं पर वर्चस्व न जमाने दे, अन्यथा वर्चस्व होते ही वह रुचि लेना छोड़ देगा। उसे सतत किसी का पीछा करने में ही आनंद आता है। अतः अपने में उसकी रुचि बनाये रखना चाहिए।

स्त्री

ऐसी नारी न तो आसानी से किसी को मित्र बनाती है और न प्रेम के पचड़े में पड़ती है। उसका विश्वासभाजन बनने के लिए काफी समय खपाना पड़ता है और प्रेम प्राप्त करने के लिए तो और भी अधिक। ऐसी नारी हमेशा किसी एक की होकर रहती है। निष्ठावान और आपकी प्रतिष्ठा पर कभी न आंच आने देनेवाली।

२४ जुलाई से २३ अगस्त

पुरुष

ऐसा व्यक्ति हमेशा बेचैन रहता है—हमेशा नयेपन की तलाश में वह अपने साथी को मालामाल भी कर देता और एक सुबह अचानक उसे छोड़कर भी चल देता है। ऐसे व्यक्ति को बदला भी नहीं जा सकता।

स्त्री

ऐसी नारी को किसी के गुप्त रहस्य बेहद भाते हैं। वह उन्हें लेकर ताने-बाने में जुटी रहती है। ऐसी नारी गुप्त संबंधों में भी सहायक हो सकती है। वह किसी के रहस्य को किसी औरों पर प्रकट नहीं करती, पर एक सीमा तक।

२४ अगस्त से २५ सितंबर

पुरुष

ऐसा व्यक्ति अपने मनचाहे ढंग से ही काम करना पसंद करता है। यदि उसे अपना अभीष्ट प्राप्त नहीं होता, तब वह साथी को इस बात की प्रतीति करा देता है कि वह उसकी बात न मानकर उसके साथ अन्याय कर रही है। उसका व्यवहार तर्क-संगत नहीं है। बेहद आत्मविश्वासी लड़की ही ऐसे व्यक्ति के साथ निर्वाह कर सकती है।

स्त्री

ऐसी नारी काफी चुलबुली और प्रशंसा की इच्छुक होती है। उसका खुला और मजाकभरा व्यवहार कभी-कभी गलतफहमी पैदा कर सकता है, पर मन में वह बेहद सतर्क होती है—पुरुषों और पैसों के प्रति। वह महत्त्वाकांक्षी भी होती है।

२४ सितंबर से २२ अक्तूबर

पुरुष

बेहद आत्मविश्वासी प्रतीत होनेवाला ऐसा पुरुष मन से किशोर एवं स्वयं पर विश्वास न रखनेवाला होता है, अतः उसे सदा प्रोत्साहन की जरूरत होती है।

स्त्री

ऐसी नारी लाखों में एक होती है, सरल, सहृदय, सहनशील, उदार और समझदार। संकट में पड़े मित्र की सहायता के लिए वह पहले दौड़ती है।

२३ अक्तूबर से २२ नवंबर

पुरुष

ऐसे पुरुष के साथ निर्वाह के लिए बेहद सावधानी की जरूरत होती है। वह एकाधिकार की भावना से ग्रस्त, बेहद ईर्ष्यालु प्रवृत्ति का होता है। वह काफी चुस्त-दुरुस्त होता है, पर उसकी ईर्ष्यालु-प्रवृत्ति पर नजर रखना जरूरी है।

स्त्री

यद्यपि ऐसी नारी आकर्षक होती है, तथापि वह अपनी दुनिया में मगन रहती है। उसके आकर्षण के वशीभूत होकर हर कोई उसका मित्र बनना चाहता है, पर वह निष्ठावान लोगों को ही मित्र बनाती है

२३ नवंबर से २२ दिसंब

पुरु

ऐसा व्यक्ति बाहर-भीतर एक-जैसा हो है—अभिमानी और वासना से भरा। उसकी इन 'विशेषताओं' को 'सह' ि जाए, तब वह एक अच्छा प्रेमी सिद्ध सकता है। वह और लड़कियों से बोल लेगा, पर इससे अधिक नहीं।

स्त्री

ऐसी नारी स्वयं अपनी सबसे बड़ी दुश् होती है। वह बेहद स्नेहिल, उदार औ मीठी बातों में आ जानेवाली होती है उसके इस स्वभाव का लोग गलत फाय उठाने की कोशिश करते हैं। ऐसी ना को एक सहृदय मार्गदर्शक की जरू होती है।

२३ दिसंबर से २० जनवरी

पुरु

ऐसा व्यक्ति न तो आसानी से प्यार कर है और न अपनी भावनाओं को खुले आ प्रकट करता है। वह बेहद तटस्थ और शांत प्रतीत होता है, पर उसके मन वासना का एक ज्वार उभड़ता रहता है।

स्त्री

ऐसी नारी प्रेम और सुरक्षा के लि आतुर होती है। चूंकि वह स्वयं को असु रक्षित अनुभव करती है, इसलिए इन बातों के प्रति तटस्थता प्रदर्शित करती है ऐसी नारी आसानी से बुरा मान जाती है तथा मन में गांठ बांधे रहती है। •

• श्याम व्यास

महानगर एक दहशत है

सुबह ही सुबह हॉकर अखबारों का बंच डाल जाता है। धप्प से आवाज होती है और यह पता चल जाता है कि हॉकर रोज की तरह, हड़बड़ी में अखबार दरवाजे पर पटक गया है। कई बार, पहले कहा भी था कि भाई, अखबार यूं न फेका कर, थोड़ा आहिस्ते से डाल जाया कर, मगर उसके तौर-तरीकों में, हालातों की तरह परिवर्तन नहीं होना था, सो नहीं हुआ। अब तो बस, न सिर्फ उसे कुछ कहना ही बंद कर दिया है, वरन, ललककर अखबार उठा लाने का उत्साह भी बुझ चुका है। न जाने क्यूं, अखबार पढ़ते हुए एक अनाम-सी दहशत में डूब जाता हूं। मन कहता है कि न पढ़ूं, मगर यह भी संभव नहीं। जिस समाज में जी रहा हूं, उसका अहसास अखबार पढ़कर ही हो पाता है। और यह भी सच है कि रोज सुबह अखबार पढ़ते-पढ़ते ही एक आतंक समूचे व्यक्तित्व को लीलने लगता है, एक कंप शरीर के पोर-पोर में समा जाती है।

अभी कल के अखबार में पढ़ा था। पढ़ा क्या था, सारा शरीर झनझना गया था। लगता था-जैसे मैं ही कॉलोनी की सुनसान सड़क पर अपनी पत्नी के साथ घूम रहा हूं। ताजी हवा के झोंके मन का सारा ताप दूर कर देते हैं, मन में बेहद हलकापन आ समाता है। लगता है, जैसे पुष्प की बंद पंखुड़ियां खुलने ही वाली हैं।

ऐसे में कहीं से एक मोटर-साइकिल दनदनाती हुई रास्ता रोक लेती है। दो में से एक सवार हाथ में पिस्तौल लिये हुए है, और दूसरा, बेरहमी से पत्नी के गले से चेन, हाथ की अंगूठियां और कान से कर्णफूल उतार रहा है। फिर उसी आननफानन में मोटर-साइकिल दनदनाती हुई अदृश्य हो जाती है।

खबर पढ़कर मैं उस जोड़े की कल्पना करने लगता हूं। कैसे लुटे-लुटे-से वे एक-दूसरे की ओर देख रहे होंगे। पति कैसे पुंसत्वहीनता के अहसास में डूब गया होगा। अपनी ही जीवन-संगिनी के समक्ष कितनी लज्जा और कितना अपमान महसूस किया होगा उसने।

एक मित्र से जब यह बात कही थी, तब उसने सहज रूप में जवाब दिया था, "भाई, यह सब तो चलता है। महानगरों के हादसे हैं ये!"

किसी दिन बस में चाकूबाजी की खबर, तो किसी दिन अल-सुबह किसी महिला की हत्या, कभी कॉल-गर्ल की मौत, तो कभी किसी विजिटर का मर्डर। इन तमाम खबरों को पढ़ते हुए कुछ ऐसी मनःस्थिति बन गयी है कि सबसे पहले नजर 'क्राइम पेज' पर ही जाती है। और उस पृष्ठ को पढ़ते हुए दहशत में डूबने लगता हूं, नये सिरे से आतंक हावी होने लगता है, मन बुझने लगता है।

कॉफी हाउस में बैठे, वक्त काटने के लिए काफी पीते हुए दोस्तों को ये रोज की बातें लगती हैं, उन्हें इनसे कोई सरोकार ही नहीं है जैसे।

एक ने कहा था, "यार, क्या घिसी-पिटी बात शुरू कर दी। तुम तो इतने से ही आतंकित ही और जो नहीं छप पाता है, वह भी छप जाए, तो पता नहीं तुम क्या करोगे! सो, 'टेक इट इजी'!"

सोचता हूं छपने से बचा ही क्या है! वही 'एक्सीडेंट', बलात्कार, 'रेप-कम-मर्डर', चाकूबाजी, अपहरण और न जाने क्या-क्या! दिल्ली में रहते हुए लगता है कि एक आतंक की दुनिया में रह रहा हूं, बंबई में लगता है कि दहशत का एक समंदर है, जिसमें मुझे किसी ने धकेल दिया है और डूबता जा रहा हूं। हर क्षण लगता है कि अभी भागती हुई बस में से धकेल

दिया जाऊंगा और बस रौंदती हुई निकल जाएगी, फिर मेरी लाश सड़क पर लावारिश-सी पड़ी-पड़ी 'कार्पोरेशन-वाहन' की प्रतीक्षा करेगी। प्रतीक्षा बच्चे और पत्नी भी घर में बैठ-बैठे करते रहेंगे— या अभी कोई चाकू की नोक पर जेब से पूरा वेतन निकलवा लेगा और अगले ३० भूखे-नंगे दिनों को झेलने के लिए अभिशप्त होना पड़ेगा। या सेकंड शो देखकर लौटते हुए कोई रिक्शा रुकवा लेगा और कहेगा, "हमें कुछ नहीं चाहिए, बस, इस औरत को ले जा रहे हैं। खून-खराबा नहीं चाहते हैं। इसे ले जा रहे हैं, कल लौट आएगी।"

पत्नी रोते हुए जाने लगती है। मैं स्थित-प्रज्ञ-सा, हक्का-बक्का, नामर्दी का रक्त अपनी शिराओं में लिए एक साथ अंधा-बहरा-गूंगा हो जाता हूं। हां, तब भी दोस्त लोग कहेंगे, 'टेक इट इजी।' और धीरे-धीरे 'क्राइम पेज' की खबरें मुख-पृष्ठ पर आने लगती हैं। दहशत की आग सुलगने लगती है, तन-मन सब उस आग में जलने लगता है, मगर अखबार का पृष्ठ नहीं जल पाता। जानता हूं कल वह नये सिरे से ऐसी ही आग लेकर फिर आयेगा!

ऐसे में अपने गांव की ठंडी हवाएं याद आने लगती हैं। झाड़ियों और कुंड के पानी को छूकर बहते 'वायरे' (हवा) की याद आती है। वहां कहां हैं आधुनिक जीवन के उपकरण? ज्यादा से ज्यादा सीकों से बना हाथ-पंखा, वरना उसकी भी जरूरत नहीं रहती। लुगाइयां अपने लुगड़े से ही वायरा ले लेती हैं, मरद लोग अंगोछे से हवा कर लेते हैं, और ग्रीष्म ऋतु अपनी फुंफकार के बावजूद उपेक्षित-सी गुजर जाती है। बहुत हुआ तो एक संवाद कभी सुनायी पड़ता है, 'घणो ताप है आणीं बार!'

गांव की हवाओं के साथ यहां, इस महानगर में रहते हुए फिर आतंक का पंजा गले पर महसूस करने लगता हूं। पता नहीं कब 'लोड शेडिंग' शुरू हो जाए। लिफ्ट में जाने की हिम्मत नहीं होती। डर रहता है कहीं बीच में ही बिजली गुल न हो जाए, दसवीं मंजिल से

पहले ही लिफ्ट अटक न जाए, ए.सी. बंद न हो जाए। इस विचार मात्र से पसीना बहने लगता है। फिर भी लोग भागे जा रहे हैं। बसों में, दफ्तरों में, रेस्तरां और थिएटरों में भीड़ ही भीड़ समायी रहती है, यह जानते हुए भी कि 'लोड शेडिंग' के साथ सब कुछ 'फ्रीज शाट' की तरह ठहर जाएगा। तब सब गालियों की भाषा में बतियाने लगेंगे, साक्षात नरक में रहने की विवशता को रोएंगे और अपने भाग्य को कोसेंगे।

उस दिन भोपाल से एक मित्र आये थे। फोन पर बातचीत हुई। मेरी तरह वे भी शीघ्र मिलने के लिए उत्सुक थे। तब शायद, तापमान ४२ डिग्री से ऊपर चढ़ने लगा था। घर के बाहर स्क्वेअर तपने लगा था। घर की दीवारें, दरवाजे, फर्नीचर सब कुछ गरमाने लगा था। ऐसी तपिश में मित्र को यह सलाह देने के लिए मैं बिलकुल तैयार नहीं था कि वे १० किलोमीटर का रास्ता तय कर तुरंत दक्षिण दिल्ली में, मेरे यहां पहुंच जाएं। मैं भी ऐसी यात्रा के लिए साहस नहीं जुटा पा रहा था। थोड़े संकोच में कहा था, "अभी इस दोपहरी में थोड़ा विश्राम कर लो। शाम तक मैं घर पर इंतजार करूंगा।"

"अच्छा, मैं शाम तक आऊंगा," मित्र के स्वर में मौजूद ठंडेपन ने मुझे थोड़ा 'डिस्टर्ब' भी किया था, पर यह सोचकर कि इस तापमान में उन्हें घर बुलाना एक यातना देना ही है, मैं थोड़ा आश्वस्त हुआ।

चार बजे भी मौसम का पारा वैसा ही था। मित्र जब घर पहुंचे थे, तब पसीने में कपड़े लथपथ थे। बमुश्किल दस मिनट एक-दो बातें ही की होंगी कि अचानक घूमता हुआ पंखा बंद हो गया। कमरे की खिड़कियां खोलनी पड़ीं, मगर बाहर की चिलचिलाहट आंखों में गड़ने लगी थी और पूरे शरीर पर पसीने व खीझ के मौसमी कीड़े ऊग आये थे। लगभग अबोली स्थिति में दो घंटे गुजरे। पत्नी ने कहा, "भाई साहब, खाना खाकर ही जाइएगा।" तब तक टेलीविजन पर प्रोग्राम शुरु हो गये। कमरे में फिर से पंखे के घूमने से हवा भरने लगीं। फिर से हम दोनों ने टूटी हुई बातों के सिरे पकड़ लिये थे। कमरे में थोड़ी सहजता ठुमकने लगी थी।

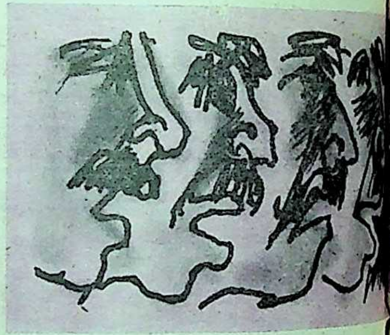

मगर, यह एक छल ही था। इतनी जल्दी प्रसन्न नहीं होना था, सहज होना इतना आसान नहीं होता। आठ बजते-बजते पूरी कालोनी फिर से घुप्प अंधे

में डूब गयी। सब कुछ ठहर गया। पेड़-पौधे, पंखे, टी.वी., बातचीत, हंसना-मुसकराना सब कुछ 'फ्रीज' हो चुका था। सक्रिय था, तो बस मौसम। उमस के डंक शरीर को झुलसा रहे थे। कुछ देर, मित्र को लेकर मैं छत पर बैठा भी, मगर वहां भी वही उमस, वही अंधकार, वही दहशत मौजूद थी।

उन्होंने कहा था, "यार, ऐसे में कभी लिफ्ट में रहूं तो क्या गुजरे? मैं तो मर ही जाऊं!" महानगर के आतंक में दोस्त पूरी तरह, आकंठ डूबा हुआ था और अब वह जल्दी से जल्दी अपने मुकाम तक पहुंचना चाहता था। मोमबत्ती के प्रकाश में जब हम खाना खा चुके, तब टैक्सी स्टैंड तक छोड़ने जाने में मुझे भी भय-सा लगने लगा था। लगभग सात घंटे के साथ के बाद जाते हुए मित्र ने कहा था, "भई, भगवान बचाएं!"

लौटते हुए मुझे वे दिन भी याद आ गये, जब पांच-सात दिन तक दिल्ली में पानी की एक बूंद नहीं मिली थी। लोग हा हाकार कर रहे थे, आपस में पानी के लिए मारामारी कर रहे थे, मुहल्लों के ट्यूबवेल चौबीसों घंटों चल-चलकर सूख चुके थे और वे स्थानीय युद्ध-क्षेत्रों में परिवर्तित हो चुके थे। लेकिन नलों में पानी आते ही लोग इस उपेक्षा, लापरवाही और अपमान—सब भूल गये।

और कभी बसों की हड़ताल, कभी रिक्शा-टैक्सीचालकों का कुरुक्षेत्र, कभी बस के साथ घिसटती हुई कोई लाश, तो कभी नौकरीपेशा युवती का बीच बाजार में अरण्य-रोदन। ऐसे में दहशत शिराओं में बहनेवाले रक्त की रंगत को बदल देती है। घर में बैठे हुए लगता है कभी छत का पंखा टूटकर सर पर न आ जाए, छत पर सोते हुए, आकाश में उड़ते वायुयान को देख-देखकर दहशत होती है कभी यह इसी छत पर गिर पड़ा तो...तो...!

यह 'तो' मुझे अपनी मिट्टी से, घर से, कच्चे-पक्के रास्तों से, गांव मन से; अपनी आम और जामुन की गंध से सराबोर हवाओं से, कुंड और 'खाल' की जल क्रीड़ाओं से; गोबर-लिपी दीवारों से फिर-फिर बांधने लगता है, अपनी ओर खींचता है, पुकारता है—'आ रे, हिवड़ा, अब आ भी जा...आ...भी जा!'

पता नहीं यह वापसी कभी संभव भी होगी! इस प्रश्न पर सोचने का साहस नहीं जुटा पाता हूं। हां, दहशत तब भी होती है।

—सह-संचालक, सूचना एवं
प्रकाशन विभाग, गोलघर, भोपाल

ऊपर : लेखक की एक शिल्प-कृति

एक फांसीवाले कैदी की अंतिम इच्छा

● नरेश चंद्र 'नरेश'

एक सप्ताह पश्चात उसे फांसी लगनी थी।

उसका अपराध था—पूरे होशो-हवास में अपनी पत्नी की निर्मम हत्या।

मर्द था वह ! किंतु बच्चे पैदा करनेवाले शुक्राणु (स्पर्म्स) न थे उसमें ! संतान प्राप्त न कर सकने की मानसिकता ने उसकी पत्नी को पथ-भ्रष्ट कर दिया। बच्चे के लिए पत्नी उससे बेवफाई कर गयी, किसी दूसरे से गर्भवती हो गयी। इसे बर्दाश्त न कर सका था वह, और एक दिन अपनी असंतुलित मानसिकता के उहापोह में उसने पत्नी की हत्या, लोहे से सिर कुचलकर कर डाली थी। न्यायालय से उसे सजा मिली थी—'हैंग टिल डेथ!'

मेरे पिताजी डिप्टी-जेलर थे रायगढ़ जेल में। मैं चौथी में पढ़ता था। तबादला होकर पिताजी के रायगढ़ जेल में आने से पहले वहां कोई मुसलमान जेलर थे। वहां के लोग कहते थे कि उन पर कोई पीर प्रसन्न थे। उस पीर की छोटी-सी मजार जेलर साहब के बंगले के अहाते के दाहिनी ओर आम के पेड़ के नीचे बनी थी। पीर मुसलमान जेलर को दर्शन भी दिया करते थे, तथा उनकी सभी इच्छाओं की पूर्ति भी किया करते थे। पीर को प्रसन्न रखने के लिए प्रत्येक शुक्रवार को जेलर साहब नियमित रूप से मजार पर धूप-लोबान इत्यादि जलाया करते थे।

जब जेलर साहब के तबादले का आदेश आया, तब जेलर साहब ने पीर से कहा कि

वह इस तबादले को रुकवा दें। इस पर पीर ने उन्हें बताया कि उसका कार्य-क्षेत्र सीमित होता है और वह अपने इस सीमित कार्यक्षेत्र के भीतर ही कुछ भी कर सकता है, करवा सकता है, लेकिन भोपाल उसके क्षेत्र के बाहर है। अतः अंत में जेलर साहब को तबादले पर जाना ही पड़ा था और पिताजी ने उनका चार्ज सम्हाला था।

पीर और मुसलमान जेलर से संबंधित बातों को सुनकर पिताजी व माताजी के मन में डर बैठ गया था कि कहीं पीर उन्हें तंग न करे। अतः लोगों की सलाह पर पीर की उस मजार की हिंदू विधि-विधान से पूजा की जाने लगी थी।

ऋतुएं बदलीं और आम के पेड़ में बौर आना शुरू हुआ, फिर छोटी-छोटी अमियों की खुशबू ने हमें आकर्षित किया। पत्थर मार-मारकर अमिया तोड़ते हुए हम भाई-बहनों का मन थक गया, तो एक दिन उस मजार पर पैर रखकर मैं आम के पेड़ पर चढ़ गया। बस, उसी रात मैं बीमार पड़ा और बीमारी बढ़ती ही चली गयी।

कई डॉक्टर आये, जांच की, पर किसी की समझ में न आ सका कि मुझे क्या बीमारी है? और मैं जो कुछ बतलाता था, उस पर पहले कोई विश्वास नहीं करता था, किंतु बाद में वे विश्वास करने लगे कि मैं किसी प्रेत-बाधा से पीड़ित हूं।

प्रत्येक रात बारह बजे के आस-पास मैं देखता कि जिस पलंग पर मैं सोता हूं, उसके पासवाली खिड़की से कोई बुढ़िया आती। खिड़की में सींखचे लगे थे, फिर भी वह सीखचों को हवा-जैसे पार करके अंदर आ जाती। उसके हाथ में एक लंबा बेंत रहता, जिससे वह मुझे मारती और कहती, "बोल ... तूने मेरे ऊपर पैर क्यों रखा ... ?" बेंत की मार से मैं चीखता-चिल्लाता और छटपटाता। माताजी-पिताजी नींद से जागकर मेरे समीप आते, तो मैं कहता, "वह बुढ़िया मुझे बेंत से मार रही थी, और अभी-अभी वह खिड़की से कूदकर भाग गयी है।"

बुखार से तपते, दिन-ब-दिन क्षीण हो रहे शरीर और शरीर पर लंबे-लंबे लाल निशानों को देखकर (जो बुढ़िया द्वारा मारे गये बेंतों के निशान थे) डॉक्टरों का विज्ञान भटक गया था और एक दिन उन्होंने भी यह कहकर इलाज से हाथ खींच लिया कि मैं अब ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहूंगा ...। बाद में मेरी झाड़-फूंक की जाने लगी, किंतु जितने भी ओझा आये, उनसे कोई फायदा न हुआ। फलतः मैं मौत के कगार पर खड़ा जिंदगी और मौत की लड़ाई लड़ने लगा।

इस बीच वह फांसीवाला कैदी मौत की सजा पाकर रायगढ़ जेल आया था। मेरे बीमार रहने

लेखक

और बुढ़ियावाली बात उसे सिपाहियों से विदित हुई, तो एक दिन उसने पिताजी से कहा, "जेलर साहब, तीन दिन बाद मैं फांसी पर चढ़ जाऊंगा . . .। फांसी चढ़ने से पहले मेरी अंतिम इच्छा है। एक हत्या मैंने की। उसका बोझ ढो रहा हूं . . .। यदि फांसी से पहले मैं किसी को बचा सका, तो समझूंगा कि हिसाब बराबर हो गया। फिर मुझे कोई गम नहीं रहेगा कि मैंने इन हाथों से किसी की हत्या की थी। मैं आपके बच्चे को देखना चाहता हूं। हो-न-हो वह किसी प्रेतात्मा के चंगुल में है और मैं उसे बचाने की कोशिश करना चाहता हूं . . .।"

अकसर फांसीवाले कैदी की 'अंतिम इच्छाएं' परिवारवालों से मिलने, भजन-पूजन करने, गीता-रामायण-कुरान-बाइबल आदि पढ़ने, कुछ विशेष खाने-पीने आदि की होती है। पर उस फांसीवाले कैदी की इस विचित्र 'अंतिम इच्छा' को सुनकर थोड़ी देर के लिए पिताजी स्तब्ध रह गये। फांसीवाले की अंतिम इच्छा पूर्ण करना भी इंसानियत और मरनेवाले के पक्ष में न्याय-संगत होता है। अतः उन चंद क्षणों में जीवन के प्रति मोह पैदा करनेवाली विषम स्थिति में जेल अधिकारी कैदी की अंतिम इच्छा पूर्ण करने का भरसक प्रयत्न करते हैं। पर किसी भी फांसीवाले कैदी को अदालत से अनुमति लिये बिना जेल से बाहर निकालना जुर्म है। इसलिए पिताजी कोई निर्णय न ले सके।

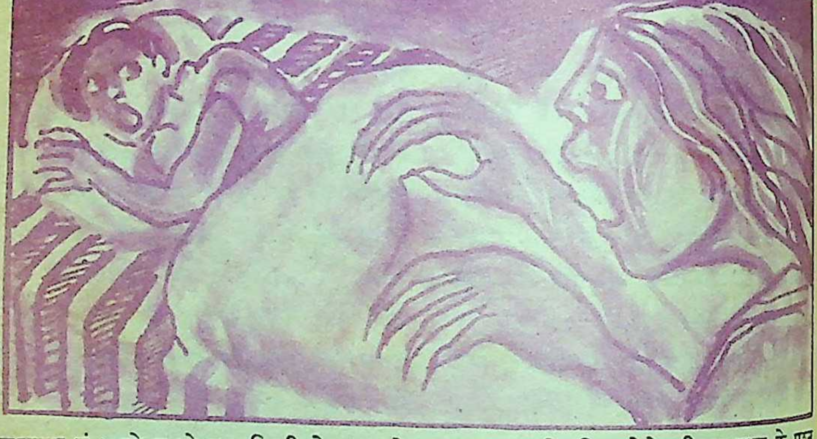

अगले दिन मेरे जीवन-रक्षा के प्रश्न पर उन्होंने उस फांसीवाले कैदी को अपनी जिम्मेदारी पर जेल के बाहर निकाला। यदि वह भाग जाता, तो पिताजी की नौकरी तो जाती ही, साथ ही वह कारावास की सजा से भी न बच पाते।

खैर, वह फांसीवाला कैदी वार्डरों के पहरे में बंगले पर लाया गया। मोटी-मोटी बेड़ियां लगीं थी उसके पैरों में। चेहरा

आम-जैसा चुसा हुआ था उसका। चेहरे पर आड़ी-तिरछी छितरी दाढ़ी-मूंछ फैली थी। जैसे ही वह मेरे सामने आया, मैं डर गया और चीख पड़ा, "पिताजी, बचाइए! बुढ़िया दूसरा रूप रखकर मुझे मारने आयी है। मुझे बचाइए।"

"बेटे ...! मैं तुझे मारने नहीं, बचाने आया हूं। मैं तुझे मरने नहीं दूंगा," उस वीभत्स चेहरेवाले कैदी ने जब मुझसे यह कहा, तब मुझे उसकी वाणी में अमृत-सी मिठास लगी। लेकिन दूसरे क्षण मैं चिल्ला पड़ा, "तुम भी नहीं बचा सकते? भाग जाओ... भाग जाओ!" और बेहोश हो गया।

इसके बाद फिर वह फांसीवाला कैदी मेरे पास नियमित रूप से सुबह-शाम लाया जाने लगा। वह आता और मुझे सामने बैठाता। एक दीपक जलाकर उसकी लौ से बात करता। फिर रस्सी का सोटा बनाकर वह बाती पर प्रहार करता। यह क्रम फांसी लगने के एक दिन पहले तक चलता रहा ...। और अंतिम दिन जबकि वह उसकी अंतिम शाम थी, उसने अपने मंत्र-तंत्र, अपनी साधना, अपनी एकाग्रता से उस पीर पर कई घंटों के संघर्ष के बाद काबू पा लिया, और पिताजी से कहा, "जिसे यहां के लोग पीर समझते हैं जेलर साहब, वह पीर नहीं है बल्कि एक जिन्न है! मैंने उसे बांध दिया है ... अब यह किसी को तंग नहीं करेगा ...।"

और दूसरे दिन सुबह चार बजे, मुझे जीवनदान देनेवाले का जीवनदीप बुझ गया। या बुझा दिया गया। और उस जेलर की आंखों से, जिसने अपने सेवाकाल में कई कैदियों को फांसी पर लटकाते देखा था, पहली बार आंसू बह निकले, जिसका जिक्र करते हुए आज भी मेरी विधवा मां उदास हो जाती है और कहती है, "तुझे उन हाथों ने जिंदा किया है, जिसने कभी किसी की हत्या की थी ...।"

आज मुझे उस फांसी पर लटकनेवाले कैदी की शक्ल भी याद नहीं। पर उसकी 'अंतिम इच्छा' के वरदान-स्वरूप भी मैं आज जिंदा हूं ...।

**—एन. सी.-६० क्वार्टर,
पावर हाउस कालोनी, चचाई, शहडोल**

एक धनवान व्यक्ति काफी बीमार पड़ा। उसका एक भतीजा उसकी सेवा में लगा था। धनवान का अंत समय नजदीक था। उसने उखड़ी-उखड़ी सांसों के बीच अपने भतीजे से कहा, "तुम मुझे अधिक पसंद नहीं हो, लेकिन मेरा और कोई वारिस नहीं है, अतः अपनी सारी दौलत मैं तुम्हारे लिए छोड़े जा रहा हूं।"

भतीजे ने धन्यवाद देते हुए कहा, "मुझे भी कुछ सेवा का अवसर दीजिए।"

धनवान व्यक्ति ने मुसकराने का प्रयत्न करते हुए कहा, "कुछ नहीं, बस, ऑक्सीजन पाइप पर से अपना पांव हटा लो।"

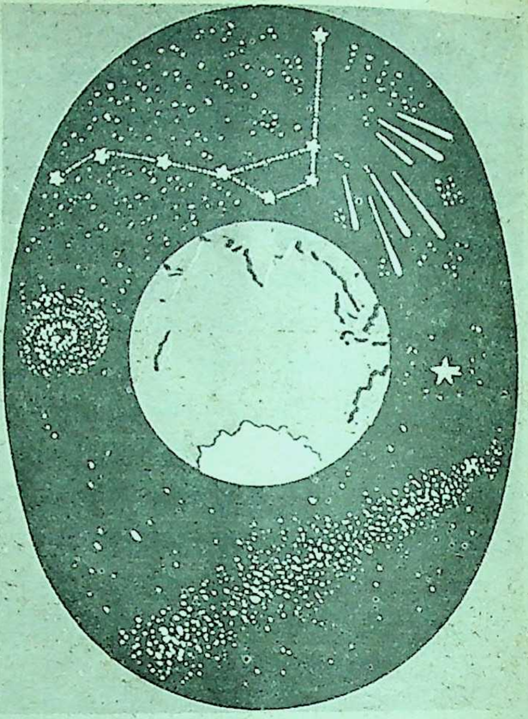

पृथ्वी की आयु का अनुमान लगाना संभव है!

● एस. एल. धनी

पृथ्वी को आधुनिक विज्ञान नारंगी के समान गोल मानता है। विष्णु पुराण के अनुसार पृथ्वी कमल के समान आकारवाली है। पृथ्वी के आकार के संदर्भ में कमल के फूल और नारंगी में कोई अंतर नहीं है, क्योंकि दोनों ही कथनों के अनुसार पृथ्वी का आकार गोलाकार बनता है। प्रकटतः २५०० वर्ष पूर्व भारतीयों को पृथ्वी के आकार का ठीक ज्ञान था। यह तथ्य इतना सर्वमान्य था कि धार्मिक ग्रंथों में भी उसका स्वतः प्रमाण तथ्य के रूप में वर्णन था। इसका प्रबल प्रमाण यह है कि 'ज्योग्रॉफी' विषय को भारत में भूगोल कहते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ है—पृथ्वी गोल। दूसरे, जो कुछ आकाश में स्थित है, उसको ब्रह्मांड कहा गया है। ब्रह्मांड यानी ब्रह्मा का अंडा अथवा अंडा रूपी ब्रह्मा। ब्रह्मांड शब्द का

एस. एल. धनी हरयाणा में सेवारत एक आई. ए. एस. अधिकारी हैं। वह अनेक वर्षों से सृष्टि-विकास के मन्वंतर सिद्धांत पर अध्ययन-मनन करते रहे हैं और उसी का परिणाम है उनकी सद्यःप्रकाशित पुस्तक—'प्राचीन भारत में विज्ञान : सृष्टि-विकास का मन्वंतर सिद्धांत।' यह पुस्तक हिंदी में ही नहीं अपितु, अंगरेजी या विश्व की अन्य भाषाओं में इस विषय पर पहली पुस्तक है। इस विषय पर वह देश में ही नहीं अपितु, विदेशों में होनेवाली अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत कर चुके हैं। यहां प्रस्तुत है इस पुस्तक का एक अंश।

—संपादक

अभिप्राय भी यही है कि ब्रह्मांड गोल अथवा अंडाकार है। ब्रह्मांड का पर्यायवाची कोई अन्य शब्द शायद, सारे शब्दकोष में भी नहीं है।

सूर्य का रथ व घोड़े

कई लोगों का ऐसा विचार है कि प्राचीन भारत में ऐसी मान्यता थी कि सूर्य एक रथ में बैठकर यात्रा करता है, रथ के बारह पहिये हैं, और उस रथ को सात घोड़े खींचते हैं, यह विचार कितना भ्रामक है, यह इस उदाहरण से सिद्ध हो जाता है कि विष्णु पुराण के अनुसार सूर्य के घोड़े भी सूर्य के समान समुद्र-गर्भ से उत्पन्न होते हैं, और वे एक बार जोते जाने पर एक कल्पपर्यंत अर्थात चार अरब वर्ष तक, उसे खींचते रहते हैं। जो घोड़े एक कल्प तक जीवित रहें, उन घोड़ों के जीवधारी होने का प्रश्न ही नहीं उठता। घोड़े और पहिये—ये दोनों शब्द, दरअसल, रूपक के रूप में प्रयुक्त किये गये हैं। सात घोड़े प्रकटतः सप्ताह के सात दिन हैं, और बारह पहिये वर्ष के बारह मास हैं। इन अहोरात्र रूपी घोड़ों और मास रूपी पहियोंवाले रथ में बैठकर सूर्य एक वर्ष में पृथ्वी की एक बार यात्रा पूरी करते हैं।

सृष्टि की आयु

सूर्य और पृथ्वी की वर्तमान स्थित के आधार पर ही ज्योतिर्विद गणित के द्वारा अरबों वर्ष आगे तथा अरबों वर्ष पीछे तक के ग्रहों तथा उपग्रहों की स्थिति के बारे में ठीक प्रकार से गणना कर सकते हैं। इसके आधार पर उन के लिए यह निष्कर्ष निकाल पाना संभव है कि अमुक समय अमुक ग्रह अंधकारमय हो जाएगा, या इतने काल के लिए अमुक समय वह अदृश्य था, अथवा अमुक काल में अदृश्य हो जाएगा। आज के कुछ ज्योतिष-शास्त्रियों के पास कई-कई सौ आगे तथा पीछे के वर्षों की सारणियां हैं, जिनमें समय-समय पर सूर्य के ग्रहों तथा उपग्रहों की विशिष्ट नक्षत्रों तथा राशियों में आकाशीय स्थितियां तथा सूर्य और चंद्र-ग्रहण आदि के बारे में निश्चित जानकारी दी होती है।

महाभारत-युद्ध भारतीय परंपरा के

अनुसार आज से लगभग ५००० वर्ष पूर्व हुआ था। महाभारत में कई घटनाओं के संदर्भ में आकाश में ग्रहों की तत्कालीन स्थितियां वर्णित की गयी हैं, जो आज के वैज्ञानिकों के अनुसार ठीक पायी गयी हैं। इसी प्रकार मन्वंतर सिद्धांत के विश्लेषण से निकलनेवाले निष्कर्ष सामान्यतः आधुनिक विज्ञान के निष्कर्षों से मेल खाते हैं। इन दोनों में जो अंतर है, उनकी संगति संभव है।

कारण और परिणाम

विष्णु पुराण में यह बात कहकर कि वस्तुओं का कारण उनका साधन भी है, आधुनिक विज्ञान के कार्य-कारण का आपसी संबंध बताया है तथा इस ओर स्पष्ट संकेत भी दिया है कि पुराणकार इस तथ्य से भली-भांति परिचित थे कि प्रत्येक कार्य किसी कारण से है, और प्रत्येक कारण किसी अन्य कार्य का परिणाम है।

विष्णु पुराण में ब्रह्मा, दक्ष, काल और प्राणी को विष्णु की विभूतियां बताया गया है। अभिप्राय यह हुआ कि ब्रह्मा इस विकास में एक बड़ा चरण है, और दक्ष इसका एक चरण है तथा समय का दक्ष के काल-चरण में अविर्भाव हुआ, और काल के अस्तित्व के बाद प्राणी का जन्म पृथ्वी पर हुआ है। पुराण की यह विचारधारा आधुनिक विज्ञान के साथ टकराव में आती प्रतीत नहीं होती।

मन्वंतरों के देवता

विष्णु पुराण से ऐसा स्पष्ट है कि भिन्न-भिन्न मन्वंतरों के भिन्न-भिन्न देवगण होते हैं। संस्कृत भाषा में देव और ऋषि शब्द आकाशीय पिंडों के लिए प्रयुक्त हुए हैं। प्रातःकालीन प्रार्थनाओं में 'सूर्य देवः, चंद्र देवः, मंगल देवः' आदि का प्रयोग होता है। इससे स्पष्ट है कि सूर्य तथा उसके ग्रहों को देव कहा गया है। इसके अतिरिक्त ध्रुव तारे के चारों ओर घूमनेवाले सात तारों को 'सप्त-ऋषि', यानी कि तारों को ऋषि कहा गया है।

आज के खगोलशास्त्री मानते हैं कि ध्रुव तारे के स्थान पर करोड़ों वर्षों के पश्चात भिन्न-भिन्न तारे आते रहते हैं। उसी प्रकार पुराणकार भी यह कहकर कि प्रत्येक मन्वंतर के भिन्न-भिन्न ऋषि, देवता और इंद्र आदि होते हैं, इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि करोड़ों वर्षों के पश्चात तारों की स्थितियां बदल जाती हैं। देव संज्ञा में आनेवाले तारों की गिनती बारह बतायी जाती हैं, जिन्हें आदित्य नाम दिया गया है। आदित्य सामान्यतया सूर्य के बारह पर्यायवाची शब्द माने गये हैं। मेरे विचार में वे या तो बारह प्रकार के तारे हैं, या एक विशेष प्रकार के तारों के बारह समूह। वर्तमान मन्वंतर के बारह आदित्यों के नाम विष्णु पुराण के अनुसार विष्णु, इंद्र, अर्यमा, धाता, त्वष्टा, पूषा, विवस्वान (सूर्य) सविता, मित्र, वरुण, अंशु और भग हैं।

इन आदित्यों के बारे में विष्णु पुराण में यह भी कहा गया है कि पूर्व (चाक्षुष)

मन्वंतर में तुषित नामक बारह उत्तम देवगण थे। वैवस्वत मन्वंतर के उपस्थित होने पर वे एक दूसरे से मिले, और कहने लगे कि, 'आओ हम लोग शीघ्र ही अदिति के गर्भ में प्रवेशकर इस मन्वंतर (वैवस्वत मन्वंतर) में जन्म लें।'

मरीचि का अर्थ ब्रह्मांड है और कश्यप का अर्थ है निहारिका । दिति तथा अदिति कश्यप की दो पत्नियां हैं। पंडित जगन्नाथ के अनुसार कश्यप नामक निहारिका की दो शिराएं हैं। दिति शिरा से दैत्यगण उत्पन्न हुए और अदिति शिरा से आदित्य नाम के देवगण अथवा तारागण उत्पन्न हुए । दो शिराएं होने के कारण वे सदा एक दूसरे के विपरीत ही नजर आती थीं। क्योंकि, निहारिका का संस्थिति-काल सूर्य के संस्थिति काल से भी अधिक है इसलिए एक निहारिका में अनेक प्रकार के सूर्य अथवा आदित्य हो सकते हैं, और उनमें से कुछ प्रकार के आदित्य किसी विशिष्ट मन्वंतर में विशिष्ट स्थान पर प्रकट हो सकते हैं। चूंकि, इस से यह स्पष्ट है कि कथित देवगण पहले मन्वंतर में विद्यमान थे, इसलिए वैवस्वत मन्वंतर में जन्म लेने से अभिप्राय यह हो सकता है कि इस मन्वंतर में उन्होंने अपनी स्थिति बदल ली हो। वे बारह प्रकार के देवगण हैं, जो ३०–३० करोड़ वर्ष के अंतर के पश्चात अंत में अपनी स्थिति बदलते हुए दीख पड़ते हैं।

प्रत्येक मन्वंतर ३० करोड़, ६७ लाख २० हजार वर्ष के अंतर पर आरंभ होता है। आधुनिक ज्योतिषशास्त्रियों को आज तक के विज्ञान की उपलब्धि को दृष्टिगत रखकर यह देखना है कि १२ करोड़ वर्ष पहले, जबकि वर्तमान वैवस्वत मन्वंतर का आरंभ होना कहा गया है, आकाश में तारों और ग्रहों की क्या स्थिति थी, और क्या वह स्थिति उनके हिसाब से ३०-३० करोड़ वर्ष से अधिक के अंतर पर ६ बार पहले भी नहीं हो चुकी थी, साथ ही उस स्थिति की पृष्ठभूमि में मनु वैवस्वत और इंद्र की क्या कोई विशिष्ट परिभाषा उभर कर सामने आती है।

एक आयकर-अधिकारी को ऑपरेशन करने के लिए अस्पताल में ईथर सुंघाया गया! ऑपरेशन के पहले सहयोगी डॉक्टर ने उनकी जांच कर कहा : नाड़ी ७४, टेंपरेचर ९९ डिग्री फारेनहाइट ब्लड प्रेशर १२० आदि-आदि।

इतने में आयकर-अधिकारी बड़बड़ा उठे, "एल. आई. सी. पंद्रह हजार, पी. एफ. दो हजार, नेट इंकम बारह हजार और इंकमटैक्स छह सौ रुपये।"

मन्वंतर-सिद्धांत भारतीय पुराणों के ऐसे स्थलों की व्याख्या करता है, जिससे खगोल विषयक शाश्वत मान्यताओं की सत्ता एवं सूक्ष्मता का प्रमाण मिलता है। पुराणकार की वैज्ञानिक जानकारी ऐसी विलक्षण थी कि उसने एक छोटी-सी बात कहकर अपना वैज्ञानिक होना सिद्ध कर दिया है।

—मुख्य-प्रभारी, हरयाणा खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, चंडीगढ़

कहानी एक जासूसी कथाकार की

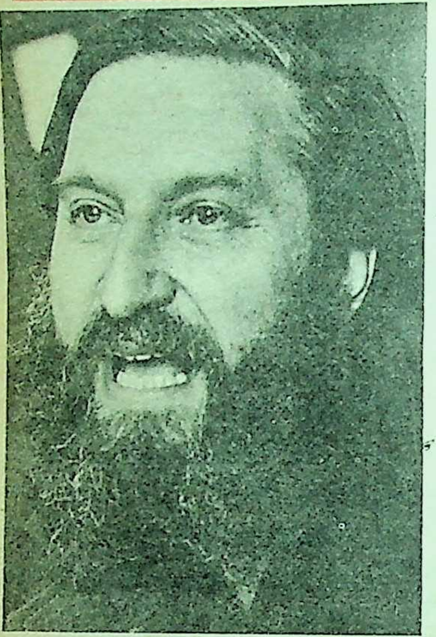

H.R.F. Keating

(एच. आर. एफ. कीटिंग)

सर आर्थर कानन डायल के विश्व-विख्यात जासूस शरलक होम्स की तरह इंस्पेक्टर घोटे भी पिछले कुछ वर्षों से इंगलैंड और अमरीका के लाखों पाठकों में बेहद लोकप्रिय बने हुए हैं। अब उनकी ख्याति पिछले कुछ समय से भारत, उनकी जन्म-भूमि में भी पहुंच गयी है और यहां भी उनके प्रशंसकों की संख्या बढ़ती जा रही है।

हाल ही में इंस्पेक्टर घोटे के सर्जक श्री एच. आर. एफ. कीटिंग 'कादम्बिनी' कार्यालय आये थे। हमने उनसे उनके बा में, इंस्पेक्टर घोटे के बारे में कुछ सवा किये, तो कई दिलचस्प उत्तर मिले।

पहले इंस्पेक्टर घोटे के सर्जक ए आर. एफ. कीटिंग के बारे में—

आयरलैंड में सन १९२६ में ज कीटिंग के पिता स्वयं लेखक बनना चाह थे और असफल होने पर उन्होंने पुत्र अपने सपने को साकार करना चाहा। कीटिंग के शब्दों में, "मैं अपने पिता क पहला बेटा था और उन्होंने मेरा लालन-पालन भी इसी ढंग से किया था कि बड़ा होने पर मैं लेखक बनूं।"

शिक्षा-दीक्षा की समाप्ति के बा कीटिंग ने एक पत्रकार के रूप में जीवन-संघर्ष शुरू किया, 'द टाइम्स' के एक उ संपादक के रूप में। उसी बीच उन्होंने साहित्य का विशेष अध्ययन किया। चार्ल डिकेंस, डोरोथी सेल्स और अपराध-साहित्य की शिरोमणि लेखिका अगाथा क्रि उनके प्रिय रचनाकारों में रहे।

एच. आर. एफ. कीटिंग का एक उपन्यास 'फिल्मी-फिल्मी इंस्पेक्टर घोटे' बंबई की फिल्म-दुनिया पर आधारित है। कहानी का सार कुछ यों है--

टाकीस्तान स्टूडियो में 'खून की गद्दी' फिल्म के नायक 'सुपर स्टार' धरतीराज की एक शूटिंग के दौरान भीमकाय प्रकाश-उपकरण गिरने से मृत्यु हो गयी है। मामला इंस्पेक्टर घोटे को सौंपा जाता है और जांच के दौरान इंस्पेक्टर घोटे का सामना 'सुपर-सुपर स्टार' रविकुमार, प्रोड्यूसर सेठ छगनलाल, सुंदरी नीलिमा, नवोदित अभिनेता किशोर सचदेव और अस्त होते सितारे जगदीश राणा से होता है। कई परेशानियों से गुजरने के बाद घोटे अंततः हत्यारे को पकड़ने में सफल होता है।

कीटिंग के इसी उपन्यास पर मराठी में एक फिल्म भी बन रही है।

कीटिंग को लिखने की प्रेरणा अपनी प्रेमिका जो बाद में उनकी पत्नी बनी, से मिली। प्रेमिका ने ही सुझाव दिया कि आप लिखते क्यों नहीं, खासकर जासूसी कहानियां और उपन्यास!

प्रेमिका की प्रेरणा पाकर कीटिंग ने इसी तरह का साहित्य लिखने का फैसला किया। इसमें उन्हें आशातीत सफलता भी मिली। उन्हें ब्रिटिश 'क्राइम राइटर्स एसोसियेशन' की ओर से एडगर एलन पो पुरस्कार भी मिला। वे इंगलैंड के 'क्राइम राइटर्स एसोसियेशन' के अध्यक्ष हैं और विगत १२ वर्षों से 'द टाइम्स' में अपराध-साहित्य के समीक्षक भी।

घोष से घोटे

और अब कीटिंग के लोकप्रिय पात्र इंस्पेक्टर घोटे के बारे में--

इंस्पेक्टर घोटे का मूल नाम इंस्पेक्टर घोष था। पर घोष तो बंगाली होते हैं और कीटिंग बंबई की पृष्ठभूमि पर अपने जासूसी उपन्यास लिखना चाहते थे, अतः उन्होंने भारत-यात्रा से लौटे अपने एक मित्र की सलाह पर, इंस्पेक्टर घोष को इंस्पेक्टर घोटे बना दिया।

इंस्पेक्टर घोटे का व्यक्तित्व कुछ इस प्रकार है--

प्रौढ़ आयु, सुगठित शरीर, प्रत्युत्पन्न-मति, ईश्वर पर अगाध आस्था और दो

कीटिंग का एक उपन्यास
'इंस्पेक्टर घोटे ड्राज ए लाइन'

A HAMLYN Whodunnit
H.R.F. KEATING
INSPECTOR GHOTE DRAWS A LINE
Featuring Inspector Ghote of the Bombay CID

बच्चों का पिता।

कीटिंग हंसकर बताते हैं, "एक तरह से घोटे मेरा ही प्रतिरूप है।"

हमारे मन में एक प्रश्न बड़ी देर से घुमड़ रहा है, और इंस्पेक्टर घोटे की चर्चा चलते ही पूछ उठते हैं, "आपके मन में एक भारतीय को ही अपना कथा-नायक बनाने की कल्पना कैसे उठी?"

"मैं स्वयं नहीं जानता! शायद इसलिए कि सन १९६३ के आस-पास अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत एक प्रमुख भूमिका निभा रहा था। उसका उदय तीसरी शक्ति के एक नेता के रूप में हुआ था। उन्हीं दिनों मेरे एक मित्र भारत की यात्रा करके लौटे थे। मैंने उनसे कहा, "मैं अपराध-साहित्य लिखना चाहता हूं। आप भी सलाह दें।" वे मेरे विचार से सहमत होते हुए बोले, "आज का भारत बेहद दिलचस्प है। भारत की पृष्ठभूमि पर क्यों नहीं कुछ लिखते?"

मुझे उनकी सलाह जंच गयी और मैंने भारत विषयक सामग्री का अध्ययन शुरू किया। मैंने भारत के इतिहास, उसके भूगोल, सामाजिक दशा आदि के बारे में काफी कुछ पढ़ डाला। और जैसे एक अंडे से कोई चूजा उसकी परतों को तोड़कर निकल पड़ता है, उसी तरह इंस्पेक्टर घोष, जो बाद में घोटे बन गये, की कल्पना का उदय हुआ।

मगर घोष या घोटे की प्रेरणा के पीछे एक वास्तविक व्यक्तित्व भी है—ब्रिटिश शासन में बंबई में एक अंगरेज पुलिस अफसर कीटिंग था, जिसने काफी नाम हासिल किया था।

पहला उपन्यास

एच. आर. एफ. कीटिंग के पहले उपन्यास का नाम था—'डेथ ऑव ए विजिटिंग फायरमैन।' कीटिंग एलिजाबेथ के राज्यारोहण-समारोह की 'रिपोर्टिंग' के लिए गये थे। वहां कई अमरीकी पर्यटक भी आये थे। कीटिंग ने इसी पृष्ठभूमि को लेकर अपना उपन्यास लिखा, जिसमें हत्यारा एक भारतीय था!

हम पूछ बैठते हैं, "भारतीय ही क्यों?"

कीटिंग कोई कारण नहीं देते, कहते हैं, "बस यूं ही एक भारतीय को हत्यारा बना दिया।"

कीटिंग का कथा-नायक घोटे कोई असाधारण पुलिस-कर्मी नहीं है। वह कई बार सफल भी होता है, और कई बार असफल भी।

अपराध-साहित्य के बारे में भारतीय दृष्टिकोण से कीटिंग सहमत नहीं। उनके अनुसार, "अपराध-साहित्य अपराधों में वृद्धि की बजाय उसे रोकने में सहायक होता है, क्योंकि उसमें हर अपराधी को अपने किये की सजा भुगतनी ही पड़ती है। पाठक भी देखता है कि अंत में न्याय की विजय होती है।"

कीटिंग उपन्यास में सेक्स को वहीं तक जरूरी मानते हैं, जहां तक वह किसी

कथानक और उसके विभिन्न चरित्रों को समझने में सहायक हो। वे उसे चटपटे मसाले के तौर पर इस्तेमाल नहीं करते।

कीटिंग ने कुछ भारतीय अपराध-साहित्य भी पढ़ा है और उससे वे प्रभावित भी हैं, पर वे कहते हैं, "भारतीय समाज में 'क्राइम राइटर' को अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता।"

हम कीटिंग की बात को नहीं काट पाते। हम पूछते हैं, "आप अपने उपन्यासों के लिए कथानक कैसे ढूंढ़ते हैं? कहां से प्रेरणा लेते हैं?"

वे कहते हैं, "इस प्रश्न का उत्तर जरा कठिन है। फिर भी मैं कोई उपन्यास गढ़ने के पहले उसकी पृष्ठभूमि का गहरा अध्ययन करता हूं। कभी-कभी तो कथानक में आये स्थल पर जाता भी हूं। फिर तथ्यों को व्यवस्थित कर लिखता हूं।"

हमारा अगला प्रश्न होता है, "एक पुस्तक से आप कितना कमा लेते हैं?"

वे कहते हैं, "पर्याप्त आय हो जाती है। मेरी पुस्तकों के प्रकाशक अमरीकी हैं। वे पक्की जिल्द (हार्ड बाउंड) में ५ हजार और पेपर बैक में ३५ हजार प्रतियां छापते हैं।"

"और एक उपन्यास पर आप खर्च कितना करते हैं?"

"कभी-कभी कुछ नहीं। कभी-कभी ३–४ सौ पौंड तक! जैसे इसी भारत-यात्रा पर मेरे तीन-चार सौ पौंड खर्च हो गये।"

भारत से प्रभावित

कीटिंग भारतीयों की हार्दिकता से बेहद प्रभावित हैं। वे कहते हैं, "कोई भारतीय लेखक लंदन आता है, तो उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता, पर भारत में मेरे-जैसे लेखक का जो स्वागत हुआ है उससे बहुत अच्छा लगता है"––और वे हंस पड़ते हैं।

५५ वर्षीय कीटिंग सूरत-शक्ल से 'क्राइम-राइटर' कम, एक आध्यात्मिक पुरुष ज्यादा लगते हैं। घनी लंबी दाढ़ी, चमकती आंखें, अधरों पर खिली मुसकान। हम कीटिंग की आत्मीयता के कायल हो जाते हैं।

—दुर्गाप्रसाद शुक्ल

अपनी हाल की भारत-यात्रा के दौरान एच. आर. एफ. कीटिंग ने बंबई में एक पुलिस-अधिकारी से कुछ जेबकतरों से मिलने की इच्छा की। थोड़ी देर में उनके सामने बंबई के कुछ छंटे हुए जेबकतरे खड़े थे। जेबकतरे उन्हें बंबई के जुहू बीच ले गये। यों कीटिंग अपनी जेब के प्रति कुछ ज्यादा सावधान थे, पर जैसे ही वे जुहू तट पर पहुंचे, उन्होंने अपना बटुआ नदारद पाया। उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ते देखकर एक जेबकतरे ने उन्हें उनका बटुआ लौटा दिया, तब कहीं कीटिंग की जान में जान आयी और वे ठहाका लगा उठे। बाद में जेबकतरों ने उन्हें अपने पैसों से मसाला दूध पिलवाया।

वह उनके जीवन की अंतिम शाम थी

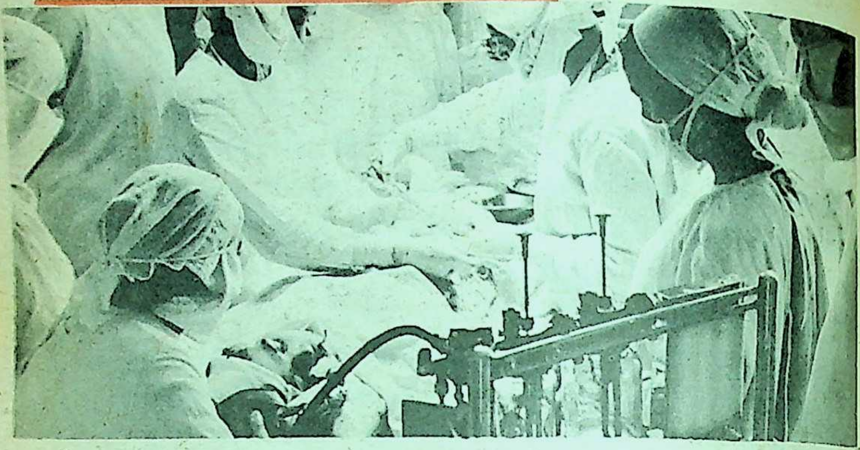

जिंदगी और मृत्यु का पूर्वाभास

कृष्णप्रसाद माथुर

वह एकाएक बीमार पड़े, हृदय की गति मंद हो गयी, रक्त-चाप गिर गया, पेशाब भी रुक गया; अंततः होशोहवास खो बैठे और तरह-तरह की बातें करने लगे। मैं भी वहां मौजूद था। उनसे मेरे निकट के संबंध थे, डॉक्टर के नाते कम और रिश्तेदार के नाते अधिक। मैंने भी, उन्हें देखा अन्य डॉक्टर भी देखने आये। अंत में मैंने सलाह दी कि उन्हें अस्पताल ले चलिए।

हालांकि, वह होशो-हवास में नहीं थे, फिर भी मेरी बात सुनकर बोले, "नहीं, अस्पताल ले जाकर क्या करोगे ? मेरा तो अंत समय आ गया लगता है। मैं मरने से नहीं डरता, लेकिन अस्पताल में सड़ने से जरूर डर लगता है, मैं इज्जत के साथ मरना चाहता हूं।"

कुछ देर बाद मैंने पूछा, "कुछ खाना चाहेंगे।" बोले, "भूख तो नहीं है, लेकिन खाना अच्छा होगा, तो खा लूंगा।"

मैंने उन्हें दूध दिया। जाड़े के दिन थे, इसलिए अंधेरा जल्दी घिर आया था। घर में रिश्तेदारों की भीड़ लगी थी। उन्होंने सबसे सामान्यतः बातचीत की। समय गुजरता गया। एकाएक उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या समय हुआ ?"

मैंने उन्हें बताया, "नौ बजे हैं।"

"केवल नौ बजे हैं ?" उन्होंने कुछ आश्चर्य से पूछा। फिर निढ़ाल हो गये।

लगभग एक घंटे बाद उन्होंने अपने बड़े बेटे को पास बुलवाया और उससे घर के रुपये-पैसों के बारे में बात करने

लगे कि किसको कितने दिये हैं और किसको कितने देने हैं, आदि-आदि।

मुझे अहसास हुआ कि उन्होंने अपने आप को इस दुनिया से अलगकर लिया है। इसी बीच पत्नी ने कुछ कहना चाहा कि इस तरह की बातें क्यों करते हो, तो वह झुंझला उठे, कहा, "तुम चुप हो जाओ और बाहर चली जाओ जी।"

इस के बाद लगभग चालीस मिनट तक वह अर्ध-निद्रा की अवस्था में रहे। कभी पलकें खुल जातीं और कभी पलकें मुंद जातीं। उनके पुत्र और रिश्तेदार चिंतित हो उठे। उन्होंने पुत्र को बुलाया और बड़े प्यार से समझाते हुए कहा, "घबराते क्यों हो, तुमने सारे अच्छे काम किये हैं, जिंदगी में आगे भी अच्छे काम करते रहना। भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे। अब दुनिया को हमारी खास जरूरत भी नहीं है। खत्म हो जाएं, तो अच्छा है," कहकर वह मुसकरा उठे और अगले ही पल उन्होंने हमेशा के लिए सबसे विदा ले ली।

इस तरह तटस्थ भाव से मृत्यु का वरण करते हुए मैंने अपने बीस साल के डॉक्टरी जीवन में बहुत ही कम लोगों को देखा है।

मारने-जिलानेवाला कोई और

हम चाहे कितने ही वैज्ञानिक सोच के क्यों न बनें, लेकिन ईश्वर पर विश्वास करना ही पड़ता है। हम तो केवल उपचार करते हैं, लेकिन जिलानेवाला और मारनेवाला कोई और ही होता है। क्योंकि, मैंने कई बार देखा है कि ज़िसे हम उपचार द्वारा जिला लेते हैं और विश्वास कर बैठते हैं कि हम उसे मौत से बचा लाये हैं, एकाएक मौत उसे अपने पंजों में जकड़ लेती है। ऐसी ही एक घटना याद आ रही है।

एक ४२ वर्षीय महिला को मामूली-सा बुखार आया। इलाज साधारण था। उपचार किया गया, लेकिन वह ठीक होने के बजाय अचानक 'कुलेप्स' कर गयी। खैर, उन्हें संभाला और वह कुछ दिनों में ठीक भी हो गयीं। उनकी लड़की

डॉ. कृष्ण प्रसाद माथुर ने आगरा विश्वविद्यालय से सन '५३ में एम. डी. किया। तत्पश्चात 'पोस्ट डॉक्टोरल फैलोशिप' पर '६२ में एक वर्ष के लिए कनाडा गये। आप मधुमेह, गैस्ट्रो-एंट्रोलाजी के विशेषज्ञ हैं और विगत बीस वर्ष से विलिंगडन अस्पताल में सीनियर फिजीशियन के पद पर कार्यरत हैं।

की जल्दी ही शादी होनेवाली थी, अतः वह जल्द से जल्द घर लौटना चाहती थीं। वह चाहती थीं कि अस्पताल से छुट्टी होने से पूर्व ही वह बाजार से लड़की की शादी के लिए सामान खरीद सकें। उनकी इच्छा पर मैंने उन्हें कहा, "आप बाजार चली जाएं और कार में बैठे-बैठे ही खरीददारी कर लें।"

खैर, उन्होंने मेरी बात मान ली और बाजार से सामान खरीद लायीं। उन्हें शाम को अस्पताल से छुट्टी लेकर घर जाना था, लेकिन शाम को वह एकाएक बेहोश हो गयीं। मैंने उन्हें देखा, तो पता चला कि उन्हें लकुवे का 'अटैक' हो गया है। हमारी जी-तोड़ कोशिशों के बावजूद, पांच-छह घंटे बाद, उन्होंने दम तोड़ दिया। इसे आप क्या कहिएगा ? मैं तो बिलकुल विश्वास करता हूं कि आदमी को मारनेवाला और जिलानेवाला ईश्वर ही है, हम तो केवल माध्यम हैं, जो अपनी ओर से कोशिश ही कर सकते हैं, बस। मुझे तो ईश्वर पर अटूट विश्वास है और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें शक्ति दे, ताकि हम गंभीर से गंभीर मरणासन्न रोगियों को मृत्यु से बचा सकें।

ज्योतिष भी होती है

ईश्वर की तरह ही ज्योतिष की बात है। पहले मैं भी ज्योतिष पर विश्वास नहीं करता था, लेकिन कुछ घटनाएं मेरे सामने ऐसी आयीं कि मुझे ज्योतिष पर विश्वास करना ही पड़ा है। एक घटना; मेरे एक परिचित थे। उन्हें दिल का दौरा पड़ा। दिल का दौरा पड़ने के कई वर्ष पहले से ही मैंने देखा था कि वह बात करते-करते भूल जाते कि वह क्या बात कर रहे हैं। उन्हें सिर-दर्द की शिकायत रहती थी। दिल का दौरा पड़ने के बाद उपचार होने पर वे ठीक हो गये साथ ही उनका सिर-दर्द भी दूर हो गया, और कुछ अधिक बातूनी हो गये। एक बार फिर वह बीमार पड़े। उनकी पत्नी एक ज्योतिषी के पास गयीं। ज्योतिषी ने उन्हें एक तिथि बताते हुए कहा कि यदि आपके पति इस तिथि को पार कर गये, तो ठीक, अन्यथा...। और वह ठीक उसी तिथि को मर गये। इससे स्पष्ट है कि ज्योतिष एक सच्ची विद्या है जरूर, इसलिए उस पर विश्वास करना ही पड़ता है।

कुछ लोगों को अपनी मृत्यु का पहले से ही आभास हो जाता है। मेरे एक परिचित डॉक्टर थे। उनके परिवार में कई व्यक्तियों के साथ यह हो चुका था कि उन्हें एकाएक दस्त लगे, उल्टियां हुईं और उसके साथ ही हाथ-पैर सुन्न हुए तथा मृत्यु हो गयी। एक बार उन डॉक्टर को भी दस्त और उल्टियां हुईं। उन्हें तत्काल अस्पताल लाया गया। वह हमसे कहते रहे, "आप मुझे बचा नहीं सकते।" और हम उनसे यही कहते रहे, "यह तो बहुत ही मामूली-सी बीमारी है, इसमें इतने घबराने की तो कोई बात ही नहीं है।" हमारे हरचंद विश्वास दिलाने के

बावजूद उन्हें विश्वास नहीं हुआ, जबकि हमने उल्टी और दस्तों पर काबू भी पा लिया था। फिर कुछ देर बाद एकाएक उनके हाथ-पैर सुन्न पड़ गये, शरीर में शिथिलता आने लगी और लकुवे का असर दिखायी पड़ने लगा। लकुवा पैरों की तरफ से ऊपर की ओर बढ़ता जा रहा था, वह बोले, "अब मेरा समय आ गया है। अब आप मुझे बचा तो नहीं सकते, हां, अगर कुछ कर सकते हों, तो मेरी पत्नी और दो बच्चों को बचा लीजिए।"

और इसके कुछ देर बाद उन्होंने दम तोड़ दिया।

मनोबल : बहुत बड़ा बल

मृत्यु के पूर्वाभास के विपरीत कई बार ऐसा भी देखा गया है कि रोगी का मनोबल उसे गंभीर बीमारी में भी जिलाए रखता है, और जब कोई कार्य विशेष पूरा हो जाता है, तभी रोगी दम तोड़ देता है।

मेरे परिचित एक डॉक्टर थे, उनके एक मित्र थे, जो अजमेर में रहते थे। वह अजमेर से किसी कार्य-विशेष से दिल्ली आ रहे थे। अजमेर के रेलवे स्टेशन पर ही उन्हें छाती में दर्द उठा। उन्होंने सोचा कि अगर मैं रुक गया और डॉक्टर को दिखाया, तो वह मुझे दिल्ली नहीं जाने देगा, घरवाले भी नहीं जाने देंगे। इसलिए वह दर्द को दबाकर रेल में सवार हो गये। रास्ते में आगरा पड़ा, वहां भी उन्हें काम था। अतः वह तीन दिन आगरा रुके। वहां डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने आराम करने के लिए कहा, तो उन्होंने कहा, "आराम तभी करूंगा, जब काम पूरा कर लूंगा।" और दिल्ली को चल दिये।

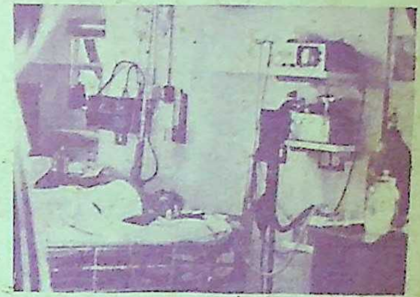

आगरा-दिल्ली के बीच मथुरा में उन्हें पहला 'हार्ट अटैक' हुआ, लेकिन वह डॉक्टर की दवाई लेकर दिल्ली को चल दिये। दूसरा 'हार्ट अटैक' उन्हें दिल्ली में हुआ, लेकिन उन्होंने अपने मनोबल को बनाये रखा, और जब दिल्ली जिस काम के लिए आये थे, यानी एक 'कांट्रेक्ट' पर हस्ताक्षर कराने, वह हो गया, तो उसके कुछ समय बाद मर गये।

रोग से लड़ने में रोगी का मनोबल बहुत बड़ा काम करता है। अस्पताल के माहौल से यद्यपि कभी-कभी रोगी का मनोबल टूटने लगता है, लेकिन हमारी भरपूर कोशिश यही रहती है कि रोगी

का मनोबल बना रहे। हमारी कोशिश यह रहती है, और रहनी भी चाहिए कि अस्पताल आने के बाद मरीज को यही लगे कि वह ठीक जगह पर आ गया है और डॉक्टर उसे बचा लेंगे। यद्यपि हमारे अस्पतालों में डॉक्टर कम हैं, इसलिए डॉक्टरों के पास बहुत काम रहता है, लेकिन फिर भी हमारे डॉक्टर पूरी कोशिश करते हैं, परंतु मरीज यही समझता है कि हम उसके लिए कुछ नहीं कर रहे। नौजवान डॉक्टर आदर्शवादी होने के कारण कहीं अधिक मेहनत करते हैं, लेकिन मरीज के लिए वह जितना करना चाहते हैं, काम की अधिकता के कारण नहीं कर पाते।

हमारे यहां समाजसेवी कार्यकर्त्ताओं का भी अभाव है। समाजसेवा का कार्य हमारे यहां दरअसल, एक फैशन है जिसे कुछ बड़े घर की महिलाएं अपना लेती हैं, लेकिन वे प्रायः समाजसेवा की आड़ में अपने स्वार्थों की सिद्धि ही करती हैं। सही अर्थों में समाजसेवी बहुत कम हैं।

मैं समझता हूं कि अधिकतर रोग हमारे आज के जीवन के तौर-तरीकों के कारण हो रहे हैं। न तो लोगों को मिलावट-रहित, शुद्ध और पौष्टिक आहार पर्याप्त मात्रा में मिल रहा है, और न शुद्ध पेय जल। इसके साथ लोग व्यायाम भी नहीं करते। खाने-पीने और सोने का समय भी निश्चित और नियमित नहीं है। चाय, कॉफी और सिगरेटों का अधिक प्रयोग कर रहे हैं।

स्वस्थ रहने के लिए यह आवश्यक है कि चिंताओं व मानसिक तनावों से जहां तक संभव हो, बचा जाए और नियमित जीवन जिया जाए, भोजन और पानी शुद्ध हो तथा नियमित रूप से व्यायाम किया जाए। शरीर को स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए योग की क्रियाएं बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुई हैं, अतः लोगों को योग की क्रियाएं करनी चाहिए। मेरी तो राय है कि सरकार को चाहिए कि वह योग की शिक्षा को व्यापक बनाये और छात्रों को स्कूल के पाठ्य-क्रम में ही योग की शिक्षा दी जाए।

—७, लोदी गार्डन, नयी दिल्ली-११०००३

"पिछली नौकरी पर तुमने कितने दिन काम किया?'
नौकरी के लिए आये व्यक्ति से पूछा गया।
"तीस साल।" उसका उत्तर था।
"और तुम्हारी उम्र क्या है?"
"पचीस साल!"
"पचीस साल तुम्हारी उम्र है, तो फिर तुमने वहां तीस साल काम कैसे किया?" मालिक ने हैरत से पूछा।
"ओवर टाइम में।" नौकर ने बेफिक्री से जवाब दिया।

बुद्धि विलास

१. '०.०५' को प्रतिशत में किस प्रकार प्रकट कर सकते हैं— क. ०.५ प्र. श., ख. ५ प्र. श., ग. ०.०५ प्र. श., घ. ५० प्र. श. ?

२. क. **भारत** में गंगा नदी अनुमानतः कितने किलोमीटर बहती है ? ख. बंगला देश में उसका बहाव कितने किलोमीटर है ? ग. उपर्युक्त दोनों देशों में गंगा के क्षेत्रों को बताइए।

३. **नीचे** दिये गये शब्द यूरोप के किस प्रसिद्ध विजेता के हैं ?

"हुकूमत मेरी रखैल है। उसे वश में करने के लिए मुझे इतनी दिक्कत उठानी पड़ी है कि मैं न तो उसे किसी को छीनने दूंगा और न अपने साथ भोगने दूंगा।"

४. **भारत** में ऐसा एकमात्र ताप-बिजली घर कहां स्थित है, जिसमें लिगनाइट का प्रयोग होता है ?

५. **राजधानी** के कौन-से दो प्रमुख अंगरेजी दैनिक यहां से प्रकाशन के ५० वर्ष पूरे कर चुके हैं ?

६. **ब्रिटेन** के बाद यूरोप के किस अन्य देश में प्रधानमंत्री का पद एक महिला ने संभाला है ?

७. **विगत** जनवरी में भारतीय समुद्रतट पर १५ समुद्री मील लंबी तैराकी प्रतियोगिता में एक प्रतियोगी को मरणोपरांत पुरस्कृत किया गया था। उसका नाम बताइए। यह प्रतियोगिता कहां हुई थी ?

८. **ब्रिटिश** फिल्म-निर्माता सर रिचार्ड अटेनबरो द्वारा भारत के सहयोग से महात्मा गांधी पर बनायी जा रही फिल्म में महात्मा गांधी का अभिनय कौन कर रहा है— क. रिचार्ड बर्टन, ख. अटेनबरो, ग. बेन किंग्सले, घ. सईद जाफरी ?

९. **हाल** में किस अभियान-दल ने दक्षिणी ध्रुवप्रदेश में पहुंचने में सफलता प्राप्त की ?

१०. '**माध्यम** संदेश है' (द मीडियम इज द मेसेज) नामक प्रसिद्ध संचार-सिद्धांत का प्रणेता तथा 'विश्व-ग्राम' की धारणा का प्रचारक कौन था ?

११. **हाइड्रोजन**-बम के निर्माण में प्रयुक्त 'भारी हाइड्रोजन' का आविष्कारक कौन था ?

१२. **हाल** में दुनिया की सबसे बड़ी गुफा का पता चला है ? यह कहां स्थित है ?

१३. **नीचे** दिये हुए चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

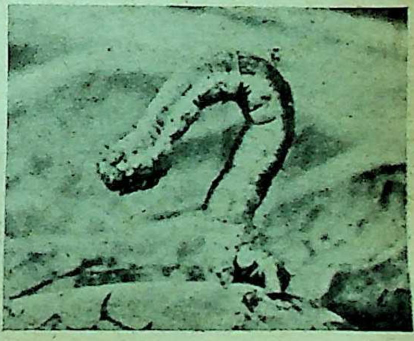

बुरी फिल्मों से तो एक रसोई घर अच्छा

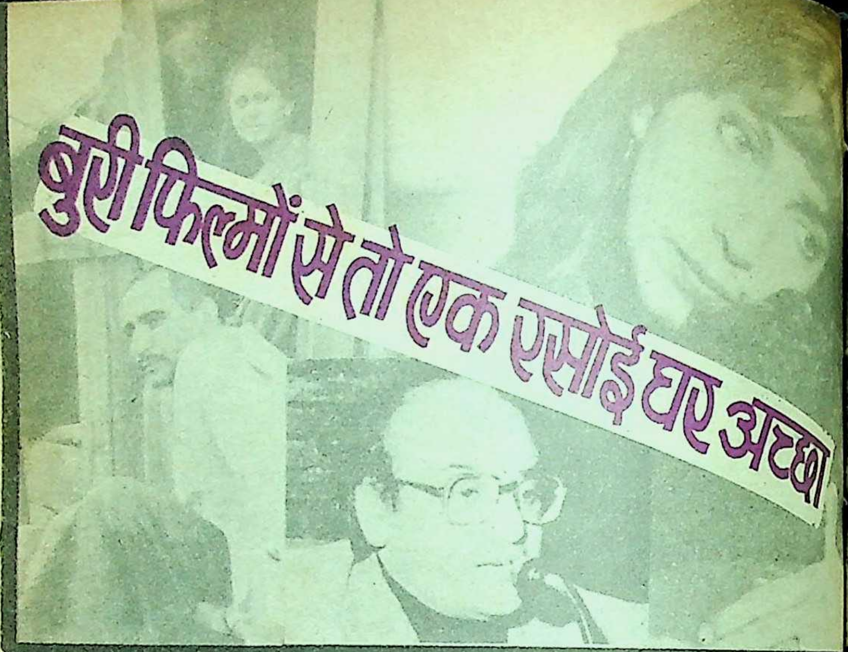

• मधु बेदी

सृजन—खूबसूरत कल्पनाओं की तूफानी दौड़ की पकड़ है, पैबंद तनावों के दरारों की अभिव्यक्ति है, सालते-सहलाते अनुभवों की कसक है। यह जो चित्रकारिता है, संगीत है, अभिनय है, नृत्य है, इन सब मनोरंजक तत्वों का मिश्रित सृजन सिनेमा है। सिनेमा, जो सृजनशील है। सिनेमा की इन्हीं सृजनात्मक कृतियों के रचनाकार ५२ देशों के ख्याति-प्राप्त तथा उदीयमान नक्षत्रों से, कुहासे के घुंधलके में, राजधानी के विज्ञान भवन का व्योम भारत के आठवें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव से ४ जनवरी से १७ जनवरी तक टिमटिमाता रहा।

मित्र स्वदेश लौट गये पुरानी यादों व नयी आशाओं के साथ। यहां प्रस्तुत हैं, इस फिल्म-महोत्सव में आये कुछ प्रतिष्ठित निर्देशकों और कलाकारों से हुई बातों का सार।

विश्वभर में कला के प्रशंसक एक-से हैं —रांगेल वुल्चानोव

“जब मैं १३ साल का था, द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया। मेरे बाल मन में युद्ध की भयानकता इस कदर पैठ गयी कि उसे वक्त के थपेड़े भी सुला नहीं पाये। लिहाजा, सन १९६१ में मैंने इन्हीं निजी अनुभवों व संवेदनाओं पर फिल्म ‘द अननोन सोल्जर्स पेटेंट लैदर शूज’ का आलेख लिखना आरंभ कर दिया।” बल्गारिया के ख्याति-प्राप्त निर्देशक रांगेल वुल्चानोव ने मुझे बताया। बाद में उनकी इसी फिल्म को ‘आक्रोश’ के साथ स्वर्ण मयूर के पुरस्कार

से सम्मानित किया गया।

बलगारिया के क्रीविना गांव के एक निर्धन एवं अशिक्षित किसान परिवार में जन्मे रांगेल ने कहा, "मैंने फिल्म में स्वाभाविकता व सहजता लाने के लिए फिल्म की शूटिंग अपने ही गांव में की और अव्यावसायिक कलाकारों से काम लिया।"

इस फिल्म में रांगेल ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की आड़ में वर्तमान समाज में व्याप्त बनावटीपन का बहुत ही खूबसूरती से परदाफाश किया है ।

रांगेल गंवई संगीत के प्रेमी हैं। गांव का लोक-गान उन्हें आज भी आनंद-विभोर कर देता है। बलगारिया की फिल्मों में काव्य-शैली को लाने का श्रेय रांगेल को ही है। उनका कहना है, "मैं फिल्म निर्माण के दौरान कभी नहीं सोचता कि मुझे कुछ नया प्रयोग कर गुजरना है। पर आश्चर्य तब होता है, जब हर अगली फिल्म पिछली फिल्मों की शैली से एक भिन्नता और निजी विशेषता लिये उभर आती है। यह उपलब्धि बहुत सुख देती है।"

रांगेल की कोशिश यही रहती है कि फिल्मों के आलेख भी स्वयं लिखें। "इससे कथानक को एक प्रभावशाली शैली में प्रतिपादित करना आसान होता है।" फिल्मों में सेक्स या हिंसा के बारे में रांगेल ने दो टूक शब्दों में कहा, "अवांछित सेक्स, हिंसा व नग्नता दर्शाना मुझे गैर-जिम्मेदारी का काम लगता है। इससे दर्शकों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।"

फिल्मों के प्रति अपने उद्देश्य के संदर्भ में उन्होंने कहा, "मैं फिल्मों में जीवन के

कटु यथार्थों व सामयिक ज्वलंत समस्याओं को उभारता हूं, लेकिन मनोरंजक ढंग से। मेरे विचार में महज मनोरंजन के लिए फिल्म बनाना कोई मायने नहीं रखता।"

उन्होंने कहा, "भारतीय फिल्मों में संगीत, समस्या व अभिनय का सुंदर समन्वय होता है। भारतीय फिल्में बल्गारिया में बहुत लोकप्रिय हैं।"

अपनी फिल्म के पुरस्कृत होने पर खुशी जाहिर करते हुए उन्होंने कहा, "मुझे विश्वास हो गया है कि विश्वभर में कला के प्रेमी एक-से हैं।"

कलात्मक फिल्में नया पैगाम हैं

—गोविंद निहलानी

"कलात्मक-सिनेमा परिवर्तन तथा उसके परिणामों को अंगीकृत करता है," अन्याय और शोषण के प्रतिकार के लिए एकजुट होने का संदेश देनेवाली भारतीय फिल्म 'आक्रोश' के निर्देशक गोविंद निहलानी का विचार है। उन्होंने कई बंगाली फिल्मों के साथ-साथ 'अंकुर' का छायांकन भी किया है, लेकिन 'आक्रोश' उनके द्वारा निर्देशित पहली फिल्म है। वे मानते हैं कि "निर्देशक ही फिल्म-निर्माण के पूरे 'शो' का 'रिंग मास्टर' होता है। फिल्म की संरचना उसी के दृष्टिकोण का स्वरूप होती है। कलाकार, कैमरामैन, तकनीशियन सब उसकी कल्पना-दृष्टि को उसी की शैली में अभिव्यक्त करने का माध्यम होते हैं।"

उन्होंने बताया, "सिनेमा एक स्वतंत्र कला नहीं है। यह विभिन्न ललित-कलाओं का सुंदर सम्मिश्रण है, लेकिन विभिन्न निर्देशक इसका प्रयोग विभिन्न अनुपातों में करते हैं, जिससे विभिन्न शैलियों का जन्म होता है। फिर भी सिनेमा में एक भाव-प्रवण अभिव्यक्ति लाने के लिए 'इमेज' में परिवर्तन लाने की सुविधा है। इसके अलावा सिनेमा में गति तथा समय को तीव्र अथवा नियंत्रित करने की संभावना होती है। इन्हीं कारणों से इसकी अपनी एक शब्दावली है।"

गोविन्द निहलानी ने कहा, "पहली बार फिल्म का कथानक सुनने पर मेरी जो प्रतिक्रिया होती है, वही फिल्म-निर्माण के दौरान मेरी 'अप्रोच' बन जाती है। फिल्म-निर्माण के समय मेरा किसी भी तत्व की ओर न तो कोई पूर्वाग्रह ही होता है, न कोई अधिमान। मेरा पूरा ध्यान इस बात पर केंद्रित होता है कि फिल्म में मेरे विचार दर्शकों तक सीधे, स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से पहुंचें।"

उन्होंने कहा, "भारतीय सिने-जगत अब करवट ले रहा है। उदीयमान निर्देशकों के विचारों में समस्याओं की ठीक समझ व पकड़ और कलात्मक दृष्टिकोण, रुढ़िवादी रूप-विधानों में खलबली मचा रहा है। जहां व्यावसायिक-सिनेमा परिवर्तन का विरोध करता है, वहां कलात्मक-सिनेमा इन परिवर्तनों एवं उसके परिणामों का अंगीकरण करता है। जहां व्यावसायिक-सिनेमा पलायनवादी है, वहां

कलात्मक-सिनेमा समस्याओं के साथ संपर्क बनाकर उनके निवारण की ओर संदेश देता है। गोविंद निहलानी का कहना है, "फिल्म-निर्माता का काम समस्याओं को प्रदर्शित करना ही नहीं है, बल्कि उनके प्रति अपना दृष्टिकोण और समाधान भी प्रस्तुत करना है।"

दर्शक समस्याओं का दर्द भी साथ लेते जाएं

—क्वाव अन्साह

"कई भारतीय फिल्मों का अंत बेवजह सुखांत दिखाया जाता है, जबकि समस्याएं वैसी ही मुंह फाड़े खड़ी हैं। लेकिन मेरी फिल्मों का अंत तब तक सुखांत नहीं होगा, जब तक समस्याओं का हल निकल नहीं आता। मैं चाहता हूं कि दर्शक सिनेमा घर से निकलें, तो समस्याओं के दर्द को भी अपने साथ लेते जाएं, ताकि वह उन्हें त्रासती रहें और हल खोजने के लिए मजबूर करती रहें।" ये उद्‌गार थे घाना में निजी क्षेत्र में बनी पहली फीचर-फिल्म 'लव ब्रुइड इन अफरीकन पोस्ट' के निर्देशक चालीस वर्षीय क्वाव अन्साह के। यह फिल्म ज्यूरी के विशेष पुरस्कार से सम्मानित की गयी।

"हालांकि, अब घाना आजाद है, परंतु वहां के लोग अभी भी मानसिक और वैचारिक तौर पर औपनिवेशिक जंजीरों से बंधे हुए हैं। इसी औपनिवेशिक विचार धारा के जहरीले प्रभावों की जानकारी दर्शकों तक पहुंचाना मेरे फिल्म-निर्माण का मुख्य उद्देश्य है।"

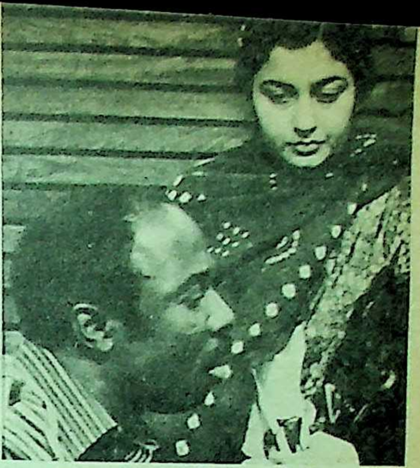

क्वाव अन्साह के साथ लेखिका

पहले-जैसा सब कुछ खत्म हो रहा है

—पियेत्रांजलि

"एक विचित्र-सी बात है—इटली में यदि कोई पत्रकार फिल्म की आलोचना कर दे और कोई दर्शक यदि उसे बुरी फिल्म करार कर न्यायालय से अपील कर दे, तो उस फिल्म के प्रदर्शन पर कुछ दिन से लेकर एक साल तक या उससे भी ज्यादा समय के लिए रोक लगा दी जाती है। यह सबसे बड़ा सेंसर है।"

फिल्म-महोत्सव के प्रतियोगिता वर्ग में शामिल इटली की 'स्वानसींग डेज' के निर्देशक पियेत्रांजलि ने फिल्म-निर्माताओं की समस्याओं के बारे में बताते हुए आगे कहा, "इटली में फिल्म का निर्माण बहुत जटिल और महंगा हो गया है। फिल्म-निर्माताओं के सामने वित्त की समस्या मुंह-फाड़े खड़ी है। यही कारण है कि उनके देश में फिल्मों की हालत बदतर होती जा रही है। अब तो फिल्म बनाने से फिल्म खरीदना अधिक सुविधाजनक हो गया है।

आपके मुन्ने को जन्म के समय ३ महीने के लिये आयरन की सौगात मिली थी

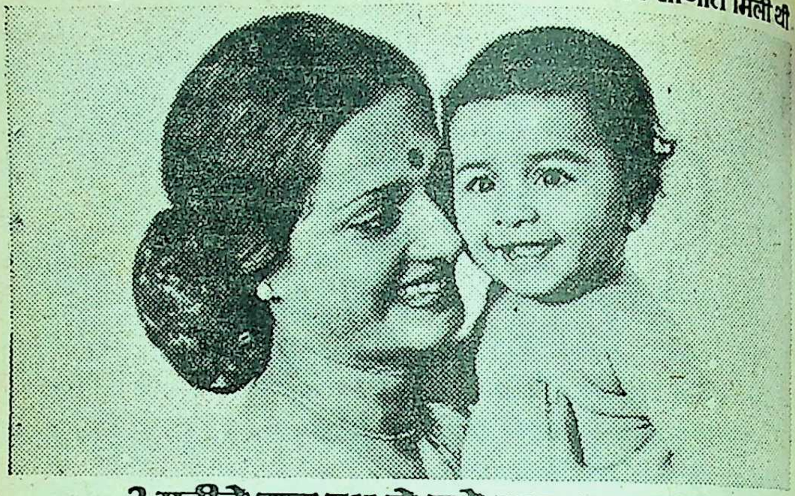

३ महीने बाद दूध से उसे उतना आयरन नहीं मिल पाता जितना उसे चाहिये

उसे दीजिए

फ़ैरेक्स

आयरन से भरपूर

“जन्म के समय बच्चे को माँ से जो आयरन भंडार प्राप्त होता है वह जन्म के बाद धीरे-धीरे घटने लगता है। हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण यह अपने आप में पूर्ण आहार नहीं। इसीलिए बच्चे को आयरनवाले ठोस आहार चाहिएँ।”

डॉक्टर फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश क्यों करते हैं?

सुपाच्य फ़ैरेक्स आपके मुन्ने की कोमल पाचनशक्ति के लिए विशेष रीति से बना ठोस आहार है। इसमें बच्चे के जल्द विकास के लिए प्रोटीन, शक्ति के लिए कार्बोहाइड्रेट्स और फ़ैट्स तथा उसके दाँतों व हड्डियों को मज़बूत बनाने के लिए केल्शियम, फ़ास्फ़ोरस और विटामिन मौजूद हैं। फ़ैरेक्स आयरन से भी भरपूर है जो आपके बच्चे के खून, स्वास्थ्य और समुचित विकास के लिए बहुत ही ज़रूरी है।

मुफ़्त! मुन्ने की प्रथमवर्ष पुस्तिका— नयी माताओं के लिए बच्चे की देखभाल सम्बन्धी सुलभ मार्गदर्शन। ५० पैसे का टिकट भेजकर मंगवाइये।

पो. ऑ. बॉक्स नं. 19119,
(FAR 45 I),
बम्बई - 400 025.

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है-फ़ैरेक्स
मुन्ने का आदर्श ठोस आहार— जल्द और सर्वांगीण विकास के लिए

CASGLF-12-173 Hin

बुरी फिल्म से रसोई घर संभालना अच्छा है

—नोरा बार्नर

पश्चिमी जरमनी की फिल्म 'द संडे चिल्ड्रन' की २० वर्षीय तारिका नोरा को इस फिल्म के जरिए अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली है। अपने देश में वे सात साल से दूरदर्शन फ़िल्मों में अभिनय कर रही थीं। परंतु फिल्म के क्षेत्र में आकर उन्हें बहुत संतोष मिला, क्योंकि उनका मत है, "सिनेमा का क्षेत्र कहीं अधिक विस्तृत है, इसमें सृजन की अधिक गुंजाइश है, यहां भूमिका की बारीकियों को बहुत स्वाभाविक व सहज ढंग से निभाना होता है। दूरदर्शन फिल्में सतही होती हैं। वैसे अभी सिनेमा और टेलीवीजन समानांतर रूप में चल रहे हैं, लेकिन कालांतर में सिनेमा ही आगे निकलेगा।"

"मैं ऐसी भूमिका चाहूंगी, जिसमें अभिव्यक्ति की गुंजाइश हो, भूमिका चुनौतीपूर्ण हो। भूमिका भले ही छोटी हो, लेकिन अच्छी हो। बुरी भूमिका का निर्वाह करने से, तो रसोईघर संभालना मुझे बेहतर लगेगा।" नोरा सामाजिक विषयों व युवा वर्ग की मनौवैज्ञानिक समस्याओं पर आधारित भूमिकाएं निभाना चाहती हैं। कहानी की मांग हो, तो वे सेक्स को लेकर किसी सीमा में नहीं बंधेंगी, हालांकि उन्हें अपनी उल्लिखित फिल्म में बलात्कार के दृश्य को निभाने में कठिनाई महसूस हुई थी। उनकी वह फिल्म ऐसी लड़कियों की कहानी है, जो फौजी अफसरों के व्यक्तित्व से प्रभावित हैं, लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिकाओं से सहमी हुई हैं।

अभिनय में पात्रों को ओढ़ा नहीं जाना चाहिए

—स्मिता पाटिल

एक सुबह कुएं में एक आदिवासी औरत की लाश मिलती है। उसका शायद खून किया गया है। लेकिन सबूत? गांववालों की जुबान खामोश है। यह खामोशी उनके जख्मों की चीत्कार है। क्यों? जवाब है—फिल्म 'आक्रोश', जिसमें आदिवासी लड़की की भूमिका निभाई है स्मिता पाटिल ने। स्मिता 'भूमिका', 'निशांत,' 'मंथन', 'चक्र'-जैसी सफल फिल्मों की नायिका हैं।

एक सफल कलाकार कौन होता है, के जवाब में स्मिता ने बताया, "जो पात्रों को ओढ़ता नहीं, बल्कि अपने में उनका रूपांतरण कर लेता है और उसके चरित्र की बारीकियों को पूरी ईमानदारी एवं स्वाभाविकता के साथ उड़ेल देता है। लेकिन भूमिका के निखार में निर्देशक का भी काफी हाथ होता है, क्योंकि कलाकार को तो उसी की कल्पनाओं को साकार करना होता है।"

स्मिता पहले बंबई दूरदर्शन में खबरें पढ़ा करती थीं, लेकिन, "एक दिन श्याम बेनेगल ने मुझमें छिपी 'अभिनेत्री' को पहचान लिया और अपनी फिल्म 'निशांत'

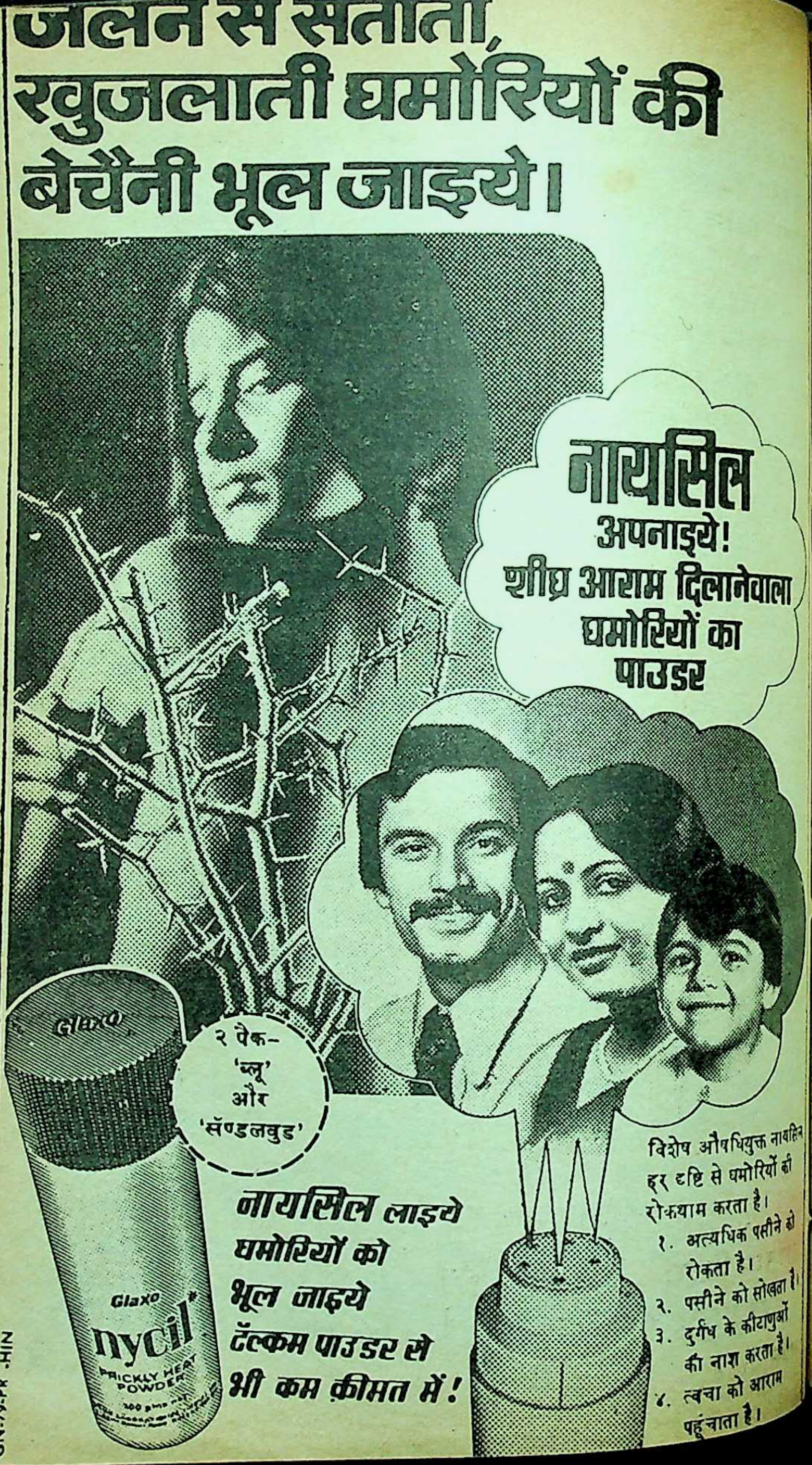

जलन से सताती, खुजलाती घमौरियों की बेचैनी भूल जाइये।

नायसिल
अपनाइये!
शीघ्र आराम दिलानेवाला
घमौरियों का
पाउडर

२ पैक–
'ब्लू'
और
'सॅण्डलवुड'

नायसिल लाइये
घमौरियों को
भूल जाइये
टॅल्कम पाउडर से
भी कम क़ीमत में!

विशेष औषधियुक्त नायसिल
हर दृष्टि से घमौरियों की
रोकथाम करता है।

१. अत्यधिक पसीने को रोकता है।
२. पसीने को सोखता है।
३. दुर्गंध के कीटाणुओं की नाश करता है।
४. त्वचा को आराम पहुंचाता है।

Glaxo
Glaxo
nycil
PRICKLY HEAT POWDER
100 gms
GN-79-PR-HIN

में काम करने के लिए आमंत्रित किया। मैं मान गयी। फिल्म में काम करना मेरे लिए महज एक 'फन' था, लेकिन फिल्म 'भूमिका' के बाद मैंने अपने कैरियर को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया।''

वे कहती हैं, ''अभिनय कोई कुदरत की ही देन नहीं है, इसे अनुभवों से सीखा जा सकता है। प्रशिक्षण तकनीकी जानकारी तो देता है, लेकिन इससे कुछ हद तक कलाकार में 'मैनिरिजम' आ जाता है, जो बहुत अच्छी बात नहीं।''

स्मिता की अधिकतर फिल्में नारी जीवन की ज्वलंत समस्याओं, तनावों व कटु अनुभवों पर आधारित हैं। इनके कथानकों की नारी गरीब, दलित या निम्न मध्यवर्गीय परिवारों से संबंधित हैं, जो जीवन की विषमताओं से जूझती रहती है। ऐसे पात्रों से स्मिता का रिश्ता सहज और शीघ्र जुड़ जाता है। 'चक्र' में वह झोंपड़-पट्टी में रहनेवाली महिला है, और 'आक्रोश' में आदिवासी महिला।

विदेशी फिल्मों के मुकाबले भारतीय फिल्मों में अभिनय के स्तर के विषय में पूछे जाने पर उन्होंने बताया, ''भारतीय फिल्मों में अभिनय अभी भी रंगमंच से प्रभावित होता है, यहां 'स्टाइल' होती है, जबकि कई विदेशी फिल्मों में बहुत ही स्वाभाविक अभिनय देखने का आनंद आता है।''

आज भी सामंतवादसे ग्रस्त हैं भारतीय फिल्में

—मणि कौल

''हमें परंपरागत सुरुचिपूर्ण वस्तु से टूटना रास नहीं आता। भले ही नयें परिवेश में नये मूल्यों को स्वीकारने की जरूरत हम महसूसते रहें हों। लेकिन पुराने रिश्तों से बिछुड़ने का अस्थायी दुःख हमें भ्रमित करता रहता है। वर्तमान परिस्थितियों में अब नये विचार प्रस्तुत किये जाते हैं, तब जाहिर है, उन्हें नया स्वरूप भी दिया जाना चाहिए, क्योंकि पुरानी शैली में अभिव्यक्त नये विचारों में प्राचीनता की बास आती है। लेकिन लोग सामंतवाद के घेरे से बाहर आकर इसे समझना कहां चाहते हैं?'' भारतीय सिने-निर्देशक मणि कौल ने 'उसकी रोटी', 'आषाढ़ का एक दिन' और 'दुविधा'-जैसी पुरस्कृत, लेकिन 'बॉक्स आफिस' पर असफल फिल्मों के बारे में बताते हुए यह बात कही।

उन्होंने कहा, ''सिनेमा का अपना एक अनुशासन है, इसके अपने औजार हैं —दृश्य और आवाज। फिर भी क्या वजह है कि हम केवल इन्हीं की सहायता से फिल्म नहीं बना पाते और अन्य ललित कलाओं का सहारा तलाशते हैं?''

मणि कौल का कहना है कि 'कलात्मक-फिल्में दर्शकों के सामने एक विकल्प के रूप में आ रही हैं।'

—९१९, तिमारपुर, दिल्ली-७

डाली-डाली पलाश दहके . . .

मौसम सुगंध का आया है लेकिन
चंदन पर सर्पदंश के पहरे हैं

डाली डाली पलाश दहके हैं पर
कोई फागुन के गीत नहीं गाता
कोयल का स्वर पिंजरे में बंदी है
वंशी के स्वर को राग नहीं भाता

काफिले रवाना हुए बहारों के
पर उपवन की सीमा पर ठहरे हैं

अंधियारे से मन डरता रहता था
चंदा ने नींद चुराली रातों की
महुए की महक जगाती है फिर-फिर
वे दर्द भरी यादें बरसातों की

अब किससे करें शिकायत घातों की
अपनों के दुख ही ज्यादा गहरे हैं

मन पर हर बिंब अभी यों अंकित है
ज्यों जल में हो वृक्षों की परछाईं
संस्पर्श सुखों का दुर्लभ है ऐसे
ज्यों छुई न जाती दर्पण की झाईं

कालिख के सब आरोप हमीं पर हैं
उनके सारे अपराध सुनहरे हैं

——धनंजय सिंह

द्वारा–'कादम्बिनी' नयी दिल्ली

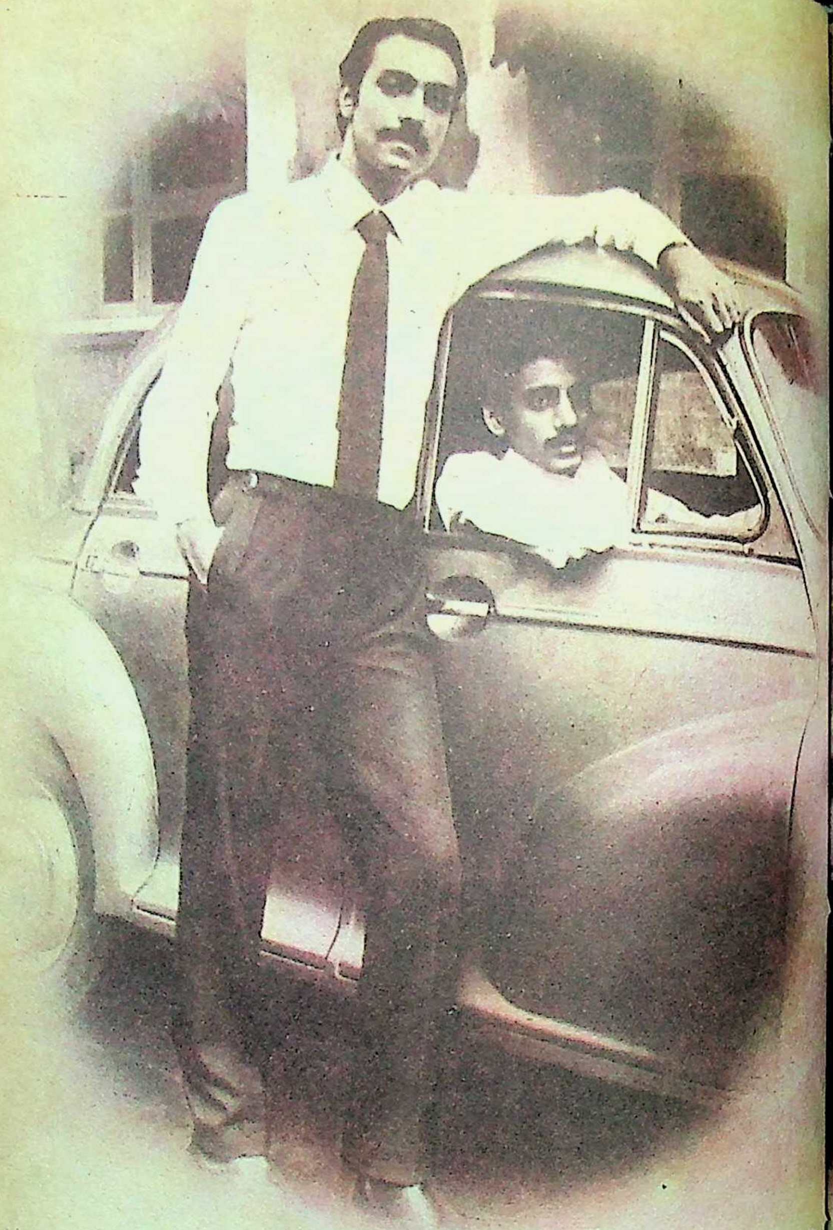

MAPP-GR-81 - 127 HIN

भारत के सबसे पहले सूटि
ग्वालियर से आए थे...

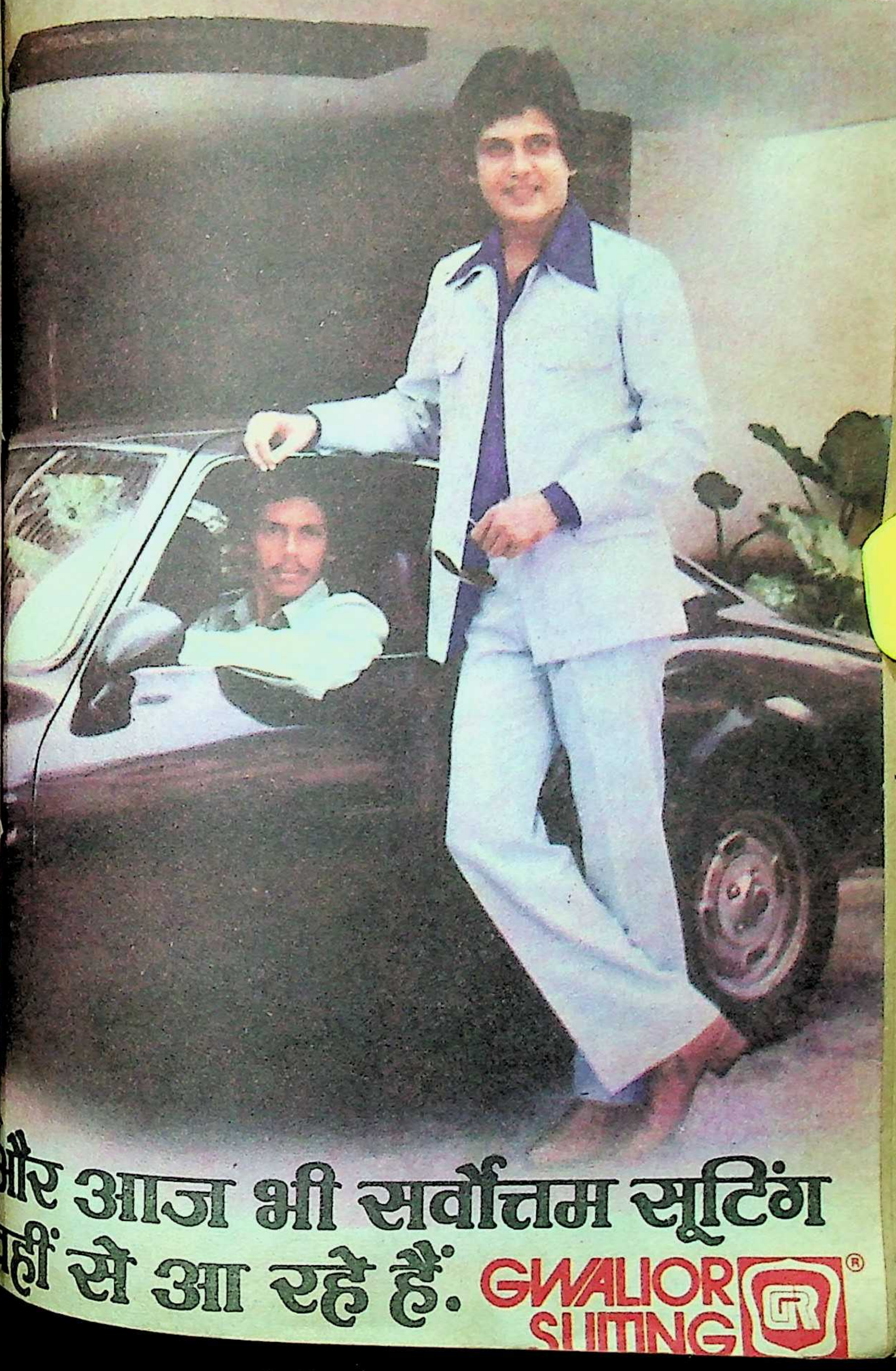
और आज भी सर्वोत्तम सूटिंग
हीं से आ रहे हैं.
GWALIOR SUITING ®
GR

रेगिस्तानी जहाज के कुछ रहस्य

ऊंट : रेगिस्तान से शहर तक

● **श्यामलाल श्रीमाली**

घोड़े और गाय के बाद ऊंट ही ऐसा जानवर है, जिसने मानव-समुदाय की सबसे अधिक सेवा की है। पृथ्वी के अनेक रेगिस्तानी भू-भागों की खोज ऊंट की सहायता के बिना नितांत असंभव थी। इसके शरीर का अंग-प्रत्यंग रेतीली जमीन में लंबी यात्रा करने के लिए ही रचा गया है। इसीलिए इसे रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है।

साहित्य रूपी महासमुंद में जितना यह प्राणी समाया हुआ है, उतना अन्य पशु शायद ही हो। साहित्य की वीर रस, शृंगार रस में वर्णित गाथाओं में प्रायः सभी जगह मुख्य पात्र के साथ-साथ इस रेगिस्तान के जहाज का वर्णन मिल ही जाता है। ऊंट की प्रासंगिकता के संदर्भ में एक जगह जिक्र आया है—

मरुधर रो शृंगार, बाजे रेगिस्तानी जहाज
मीठा थोरो री है साख
ओ है मारवाड़ रो राज

वास्तव में यह प्राणी मरु-प्रदेश का शृंगार होने के अलावा कई बातों में रहस्यमय बना हुआ है। वस्तुस्थिति में, इस मूक प्राणी ने रेगिस्तानी प्रदेश, चाहे अरब का हो, अथवा राजस्थान का विशाल थार, सभी जगह मानव मात्र को अपनी सेवाएं अर्पित करने से मुख नहीं मोड़ा है।

ऊंट एक ऐसा जंतु है, जो बरसात में फिसल जाने के डर से गीले रास्ते को बड़ी कठिनाई से तय कर पाता है। इतना ही नहीं, इसके फिसल जाने के बाद उसकी हड्डियों के जल्दी टूट जाने का खतरा रहता है।

इस प्राणी में बदला लेने की भावना प्रबल होती है। कई बार आक्रोश की अवस्था में वह अपने मालिक तक को चोट पहुंचा देता है। नुकसान पहुंचाते समय शत्रु को (सामने के दांतों) उससे काट खाता है, अथवा अपने शत्रु को जमीन पर गिराकर स्वयं उस पर बैठ जाता है।

ऊंट-पालक अपने ऊंटों के लिए पक्के अथवा कच्चे मकान बनाने की जरूरत नहीं समझते हैं। इसीलिए ऊंट प्रायः इधर-उधर घूमते हुए, अथवा किसी पेड़ के नीचे बैठे दिखलायी देंगे।

हमारे देश में कुछ विशेष जातियां रेबारी (राईका), जाट, राजपूत, कायम-

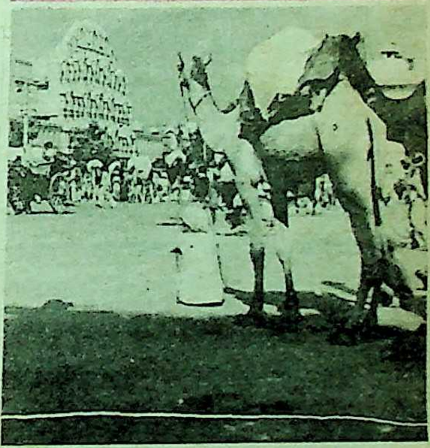

खानी मुसलमानों का ऊंट पालन एक पैतृक धंधा है। राईका लोग तो ऊंटों के टोले के टोले रखते हैं और उनके ऊंट खुले ही घूमते रहते हैं। इस जाति में शादी के समय दूल्हा घोड़े की बजाय ऊंट पर चढ़ कर तोरण मारता है। किसी राईका के ऊंट के मर जाने पर, उसे परिवारिक सदस्य के मर जाने के समान ही शोक होता है।

कुछ बातें ऊंटों के बारे में

किसी ऊंट-पालक का ऊंट रोग ग्रसित न हो। अगर किसी ऊंट की आंखों की झिल्लियां सफेद हैं और उसमें से लगातार जल बह रहा हो, तो निश्चित ही ऐसा ऊंट किसी पुराने रोग का शिकार होगा। ऊंटों के लिए तिबरसा याने सर्रा एक प्राण-लेवा रोग होता है। एक स्वस्थ ऊंट का शारीरिक तापमान मौसम के अनुकूल ९७ डिग्री फारेनहाईट से ९९ डिग्री फारेनहाईट, नाड़ी की गति ३२ से ४४ प्रति मिनट तथा श्वांस गति ५ से १२ प्रति मिनट होती है।

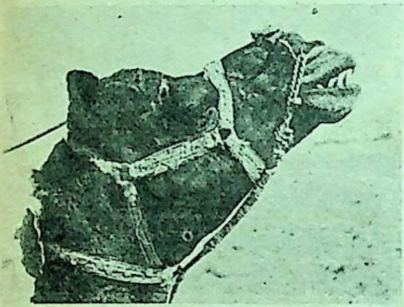

बीकानेरी ऊंट

स्वस्थ ऊंट का मल राजस्थानी भाषा में मिगणा कहलाता है। इसकी शकल कबू- तर के अंडे से कुछ बड़ी और नरम होती है। कठोर और लंबा मल निश्चित ही 'क रोग' का सूचक होता है। अगर कोई ऊं उठते-बैठते समय पिछली टांगे से कांपता है और चिल्लाता रहता है, तो उस ऊं में 'कुमरी' की बीमारी होगी। यह बीमारी भी ऊंटों में घातक होती है। इस रोग के उत्पन्न हो जाने पर काबू पाना अत्यं कठिन है। स्वस्थ और भूखा ऊंट प्राय अपने सामने चारा देखकर उस पर भूखे शिकारी की तरह टूट पड़ता है।

ऊंटों की किस्

समूचे विश्व में ऊंट दो किस्म के होते हैं। अगर आपको मध्य एशिया की उष्ण प्रदेशीय पहाड़ियों, अथवा तुर्किस्तान आदि रेतीले प्रदेशों में पर्यटन का अवसर मिले तो वहां आपको दो थूहीवाले ऊंट जरूर नजर आयेंगे। ऐसे ऊंट 'कैस्टीय' कहलाते हैं। इनके कुब्बड़ का वजन लगभग साढ़े बाईस किलोग्राम होता है। एक थूही वाले ऊंट दक्षिणी-पश्चिमी एशिया, उत्तरी अफरीका तथा यूरोप के निकटवर्ती रूस प्रदेश में बहुसंख्या में पाये जाते हैं। वहां पर इनको सवारी, खेती व बोझ ढोने के काम में लिया जाता है। कुछ लोग इनके दूध व मांस का उपयोग भी करते हैं। इसके कुब्बड़ का वजन लगभग साढ़े तेरह किलोग्राम होता है।

मतवाली चाल ऊंटों की

भारत में एक थूहीवाला ऊंट ही पाया

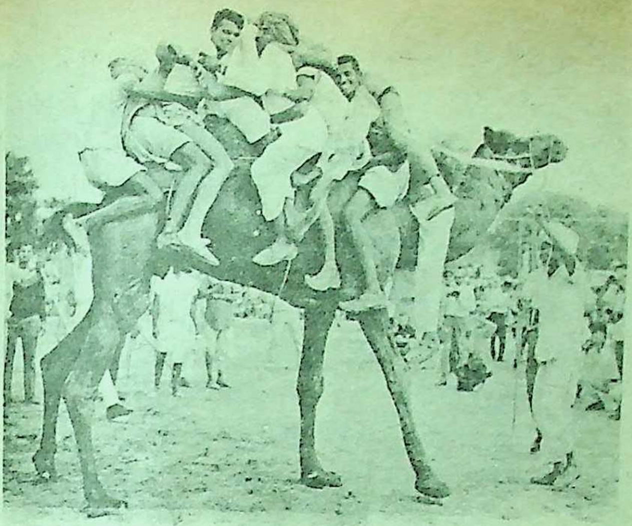

पुष्कर के पशु-मेले में ऊंट की सवारी

जाता है। इनकी कुल संख्या ११ लाख से भी ज्यादा है। एक सामान्य धारणा के अनुसार अरब के बाद ज्यादा संख्या में ऊंट राजस्थान में पाये जाते हैं। राजस्थान के देहातों में इनकी कुल संख्या ७.४२ लाख तथा शहरी क्षेत्र में ०.०९ लाख है। इस समय सबसे ज्यादा ऊंट श्रीगंगानगर जिले में १.०६ लाख और सबसे कम टोंक जिले में १६५९ हैं।

राजस्थान में पायी जानेवाली यह संपदा दो प्रमुख नस्लों—बीकानेरी व जैसलमेरी में विभाजित है। बीकानेरी नस्ल के ऊंट, जहां द्वि-प्रयोजनीय गुणों (सवारी व बोझा ढोना) के लिए ख्याति प्राप्त है, वहां जैसलमेरी नस्ल के ऊंट अपनी मतवाली चाल के लिए। बीकानेरी नस्ल के एक वयस्क ऊंट का शारीरिक वजन लगभग ६५० से ७५० किलोग्राम तथा मादा ऊंटनी का लगभग ५०० किलोग्राम, से ६०० किलोग्राम तक होता है। इस नस्ल के ऊंट, एक दिन में २०० से ३०० कलोग्राम बोझा उठाकर ४०-५० किलोमीटर तक की यात्रा कर लेते हैं।

जैसलमेरी नस्ल का शारीरिक वजन ५००से ६०० किलोग्राम तक होता है। ऐसा ऊंट एक दिन में ८० से १०० किलोमीटर तक का सफर प्रति घंटा ८ से १० किलोमीटर की रफ्तार से कर डालता है। पुराने जमाने में यहां के विख्यात डकैत इन ऊंटों के जरिए डकैती डालने के बाद रातों-रात लंबा सफर तय कर डालते थे। इतना ही नहीं, प्रसिद्ध युगल-प्रेमी ढोला-मरवण की सच्ची प्रेम-गाथा का श्रेय जैसलमेरी ऊंटों को ही है।

—प्राविधिक सहायक सूचना अधिकारी,
पशु-पालन विभाग, जयपुर, राज.

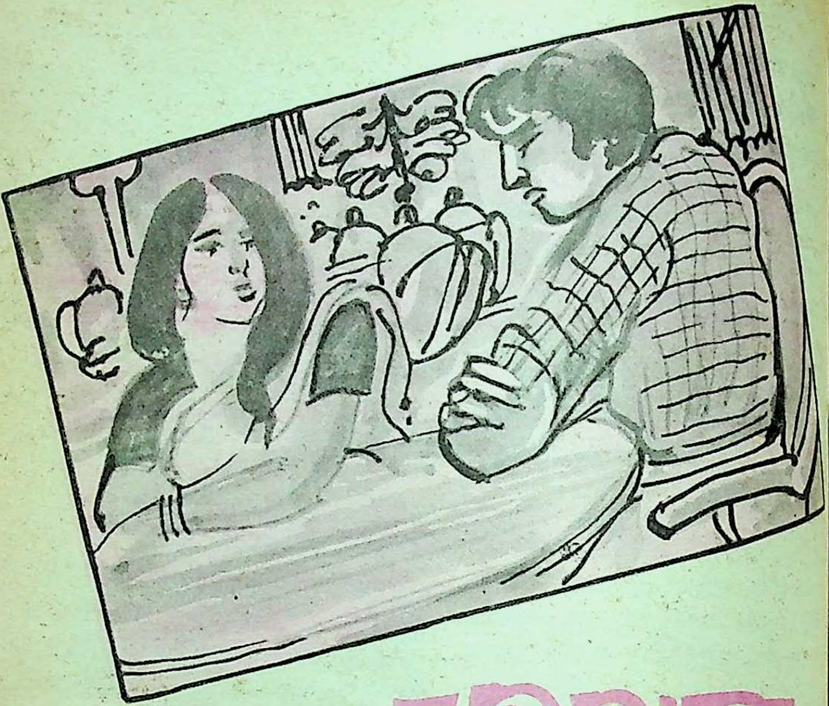

चरागाह

• डॉ. शशि शर्मा

उसने लगातार चार गिलास पानी गटक डाला। सारे कपड़े पसीने से तर हो रहे थे। टाई की नॉट ढीली करके उसने कमीज का ऊपरी बटन खोल दिया और यूं ही सुस्ताने के लिए टेबल पर बैठ गया। उसे सुकून-सा महसूस हुआ।

कितना बेवकूफ है वह? ऐसा मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहिए था! और फिर यह कोई पहली बार थोड़े ही हो रहा था। कितनी ही बार तो हो चुका है। अब तो लोग उसे इस आर्ट का गुरु मानने लगे हैं। ज्यादा-से-ज्यादा दस पंद्रह दिन लगते हैं उसे, किसी को भी उस स्थिति में लाने में। और फिर वह तो अपने आप ही आ गयी थी। उसे बड़ी झुंझलाहट आने लगी अपने आप पर। ठीक ही कहा था उसने- कायर विश्वामित्र। विश्वामित्र! क्या वह था कभी विश्वामित्र?

उसकी तबीयत ठीक नहीं थी। आज छुट्टी लेने की सोच रहा था। पर घर में क्या करेगा? बेकार ही बोर होगा। आजकल कुछ पढ़ने को भी नहीं रहा, यही सोचकर वह ऑफिस चला आया था। सोचा काम नहीं करेगा। कोई सुंदर चेहरा आ गया, तो बस उससे गपशप करेगा। इस पोस्ट का यही तो फायदा है। लोग इसे चरागाह कहते हैं। कोई न कोई चरने आ ही जाता है। ऐसे भरे-पूरे चरागाह में आज कोई नहीं आया!

महि भी नहीं! वैसे दस बार फोन करेगी—पर आज... साढ़े चार बजे उसका फोन आया।

"हैलो"

"हैलो"

"क्या कर रहे हो?"

"कुछ नहीं बोर हो रहा हूं–" आवाज बिना पहचाने ही बोल उठा!

"तो आ जाओ।"

"कहां"

"घर!"

"घर?"

"अच्छा नहीं, 'स्टैंडर्ड' आ जाओ। तुम्हें नजदीक पड़ेगा। मैंने कुछ लिखा है; तुम्हें दिखलाऊंगी।"

वह समझ गया। कोई और समय होता, तो शायद कोई बहाना बना देता, पर इस वक्त किसी के साथ की बहुत कमी खल रही थी और उसने बेतहाशा आने को कह दिया!

शाम को यहां अकसर अच्छी संख्या होती है आनेवालों की। मेजों पर एक-दो-

तीन-चार अपनी-अपनी मनः स्थिति और सहूलियत के अनुसार लोग बैठे हुए थे।

उसने हाल में नजर डाली। दायीं तरफ कोने की मेज पर वह बैठी थी। हाथ में सुलगी सिगरेट लिए नीचे मुंह किये, शायद कुछ सोच रही थी। दीवार की हल्की रोशनी में उसका 'साइड-पोज' बड़ा भला लग रहा था। लंबे बालों के बीच उसका सांवला चेहरा, लगा-जैसे किसी कैमरे ने 'ब्लैक एंड व्हाइट' तस्वीर दीवार पर चिपका दी हो। वह आहिस्ता-आहिस्ता उसकी ओर बढ़ा। तब तक उसने भी उसे देख लिया था। हाथ की सिगरेट ऐशट्रे में बुझाकर, वह संभलकर बैठ गयी। सामने की कुरसी पर वह बैठ गया। अब वह उसे आमने-सामने देख सकता था।

"देर तो नहीं हुई," आदतवश वह बोल उठा।

"नहीं, बहुत तो नहीं" !

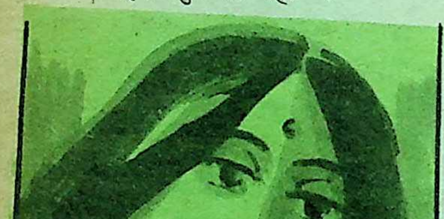

"क्या लोगी ?"

"ऑर्डर कर दिया है", कहकर उसने अपने लंबे बालों को पीछे झटक दिया।

अरे—बस-बस ! ज्यादा पानी से कॉफी का मजा खराब हो जायेगा।

"बस कॉफी ही ?"

"यहां बस कॉफी ही, खाना 'वैगर' में खायेंगे।"

"समर यहां नहीं है क्या ?"

"नहीं आज सुबह वह बाहर गया है।"

"अकेला ?"

"नहीं। छोकरी भी साथ है।"

"ऑफिशियल विजिट पर होगा ?"

"हां होगा", छोटा-सा जवाब दे वह बात टाल गयी थी। या कहो बात टल गयी थी क्योंकि तब तक वेटर कॉफी लेकर आ गया था। धीरे-धीरे 'सिप' लेती वह फिर सोचने लगी थी। उसका दिल चाहा था कि वह उठ जाए। फिर सोचा इसे बुरा लगेगा। वातावरण बोझिल-सा हो चला था। हल्का करने के लिए उसने ऐसे ही पूछ लिया—

"लड़ाई हुई थी क्या ?"

"लड़की ले जाने के लिए लड़ाई जरूरी नहीं होती ! लड़ाई तो बाद में होती है। वैसे भी तुम्हें नहीं लगता कि हम सिर्फ इसलिए साथ रहते हैं क्योंकि साथ रहना है। साथ रहने के लिए किसी ठोस आधार की जरूरत नहीं होती। आदमी के लिए खासकर," कहकर उसने उसकी तरफ सीधा देखना शुरू कर दिया था !

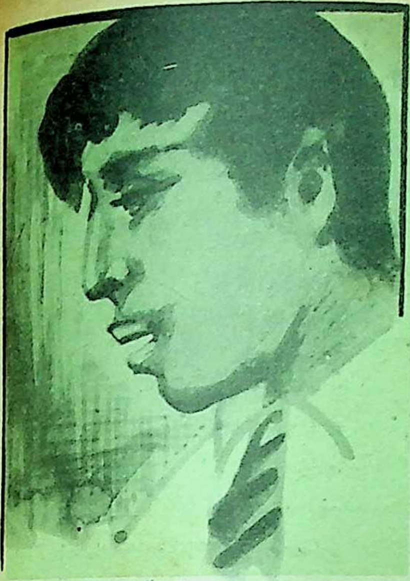

"दरअसल हमारी निजी जरूरतें महत्त्वपूर्ण होती हैं। इसके लिए जो नाम दे दो," उसने कहा, "इसका मतलब ये जरूरतें ही सामाजिक संसार प्रदान करती हैं। अगर जरूरतें ही महत्त्वपूर्ण हैं, तो इन्हें कहीं भी पूरा किया जा सकता है।"

"केवल सहूलियत के लिए या व्यवस्था के लिए-जैसे पब्लिक बूथ बना दिए जाते हैं, जहां जो चाहे पैसे देकर फोन कर सकता है। पर जरूरी नहीं आप वहीं से फोन करें। वास्तव में यह 'प्रायोरिटी' का प्रश्न है। कितनी बार कहीं बैठे होते हैं। और खाली फोन देखकर कहीं भी घुमाने बैठ जाते हैं। और कभी जरूरी फोन के लिए बूथ तक जाना पड़ता है। यह तो समय और जरूरत की बात है," कहकर वह मुसकरा दिया।

उसने उसका हाथ अपनी हथेलियों में दबा लिया। फिर अचकचाकर चारों ओर देखा! लोग अपने में मशगूल थे। वह थोड़ा आश्वस्त हो गया। इससे पहले कि स्थिति बिगड़े उधर से गुजरते वेटर को रोककर उसने पांच रुपये का नोट उसकी ट्रे में डाला और उठ खड़ा हुआ। वह भी उसके साथ चल दी।

बाहर निकलकर उसने सिगरेट सुलगायी और उसकी तरफ देखा। वह उससे इजाजत चाहता था। वह भी समझ रही थी, तभी उसने कहा—

"जल्दी है क्या?"

"नहीं तो," औपचारिकतावश वह कह उठा, "तो चलो 'बैंगर्स' में कुछ खा लेते हैं।" अब तक उसके मस्तिष्क में कुछ कौंध उठा था और वह उसकी कमर में हाथ डाले सड़क पार कर रहा था। गाड़ी लेने का सवाल ही नहीं था। वे पैदल ही निकल पड़े।

शाम के समय किसी भी रेस्ट्रां में चले जाओ——एक-सा ही लगता है। सब कुछ सधा, एक तान पर चलता-सा। मद्धम रोशनी में नहायी मेज-कुर्सियों पर बैठे लोग गुपचुप कुछ षड़यंत्र-सा करने लगते हैं। जैसे, मानो किसी धमाके का इंतजार कर रहे हों। शायद इसीलिए, खासकर शाम को रेस्ट्रां में उसे घुटन-सी लगती है। अब तक वे एक मेज के पास आ चुके थे। उसने चारों तरफ देखा, लोग बिना शोर के चुपचाप आकर

बैठते जा रहे थे, मानो किसी की मातमपुर्सी पर आये हों। संगीत की धुन जरूर खामोशी को तोड़ रही थी। इस बार वह उसके बराबर की कुरसी पर बैठ गयी, और उसकी उंगलियों से खेलने लगी। अब वह बड़ी 'रिलीव्ड' लग रही थी। मुसकराती हुई उसकी आंखों में कुछ शरारत-सी झलकने लगी थी। स्थिति का फायदा उठाते हुए उसने हल्के से उसके लंबे बालों की एक लट खींचकर उसे झुका लिया। इतराकर उसने अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया, जहां 'स्टुअर्ड' खड़ा ऑर्डर का इंतजार कर रहा था। आंखें उसकी पैड और कलम पर थीं, पर होंठों पर सब कुछ देख लेने का भाव था। उसने ही जो चाहा ऑर्डर देकर उसे टरका दिया। अब उनके घुटने आपस में टकरा रहे थे। पहले हल्के-हल्के फिर 'रिदिम' के साथ! उसके हाथ भी मेज के नीचे रेंगने शुरू हो गये थे। वह बिलकुल चुप थी। केवल बीच-बीच में इधर-उधर देखभर लेती थी और फिर आश्वस्त हो मुसकरा देती थी। उसकी आंखों में लाल डोरे खिच आये। पपोटे उभर गये थे और होंठ मानो आपस में सिल-से गये। यह सब देखकर उसके अंदर उबलते लावे का अंदाजा लगाया जा सकता था। वह खाना जल्दी खत्म करने के मूड में थी। फिर भी खाना खत्म करते-करते दस बज गये थे। उसके लिए शराफत का तकाजा था कि उसे घर तक छोड़ आये। गाड़ी में वह उसके कंधों पर सर रखे खामोश बैठी रही। उसे लगा अब वह स्थिर हो गयी है। इसीलिए जब उसने ऊपर चलने का अनुरोध किया, तब वह वहां उसके साथ चला गया।

कमरे में पहले से काफी परिवर्तन कर दिया था। समीर की 'पेंटिंग्स' दीवारों पर लगी थीं। वह यूं ही उन्हें देखने लगा। जितना अच्छा आर्टिस्ट है, उतना ही अच्छा दोस्त भी है समीर। पीने में खूब साथ देता है। बीवी को भी पिलाता है, साथ अपने। फिर भी दोनों की स्थिति तीन-छह की रहती है। कई बार यह उसके सामने रोकर हल्की हुई है। जवाब में समीर ने भी ईमानदारी से स्वीकारा है। 'संबंधों का बासीपन कभी-कभी देह-तहा उबा देता है। मन कहीं भाग जाने को करता है। और मैं सचमुच कहीं निकल जाता हूं। और वैसे भी यार खूबसूरती किस की कमजोरी नहीं होती?'

"कुछ लोगे?"

वह चौंक पड़ता है, और देखता रह जाता है। 'नाइटी' में उसका 'परफ्यूम्ड' जिस्म झिलमिला रहा था। वह थोड़ा आगे बढ़ा। उसके चेहरे पर एक खिचाव उभर आया। उसने उसे कंधों से पकड़कर सोफे पर बैठा दिया और उसके ऊपर हल्की-सी झुक आयी। तेजी से बढ़ती सांसों को उसने दोनों बाहों से बांधना चाहा। वह कुछ कह रही थी, उसे समझ नहीं आ रहा था। सच यह था कि वह भी सोचना, समझना नहीं चाहता था। कमरे में सिर्फ 'नाइट बल्ब' की रोशनी थी। पूरे परिवेश में जितनी भली वह अब लग रही थी, उतनी कभी नही लगी। उसके लिए उसके मन में करुणा जागी थी। क्यूं करता है समीर ऐसा ? और उसने सहानुभूतिवश उसके बालों को अपने होंठों से छू भर दिया !

"ऐसे में अगर समीर आ जाए तो ?" उसने यूंही उसे छेड़ने के लिए कह दिया !

"कितना अच्छा हो अगर वह देख ले। सचमुच जल मरेगा। अगर वह किसी लड़की को ले जा सकता है तो क्या मैं . . .," आंखों में एक प्रतिशोध उभर आया था। अब लगा जैसे वह किसी और के चरागाह में बलात घुस आया है।

उसे अपने अंदर कुछ जमता-सा महसूस हुआ, और एकबारगी उसकी ओर देखकर वह उठ खड़ा हुआ। अब तक लोग उसके चारागाह में आते थे, अब लगा जैसे वह बलात किसी और के घर में घुस आया है। बिना कुछ बोले वह अंधाधुंध सीढ़ियां उतरने लगा।

—१३-ए. डी. डी. ए. फ्लैट्स बेर सराय,
नयी दिल्ली-११००१६

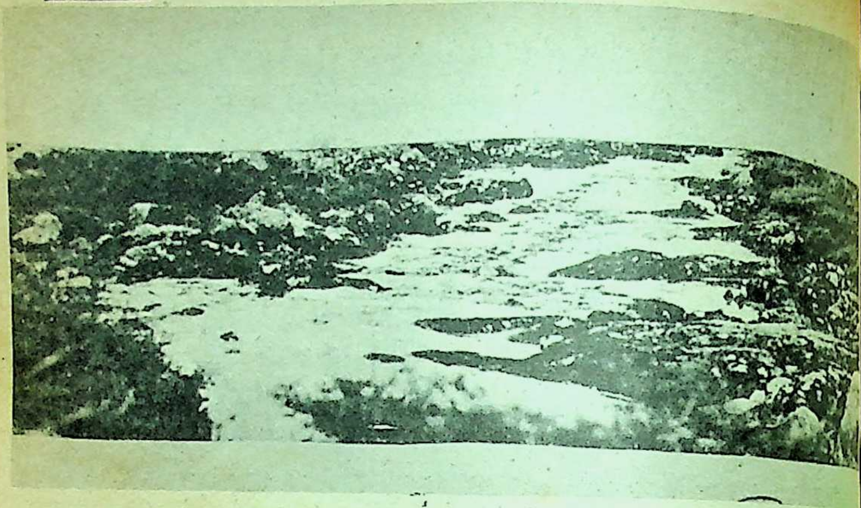

मां सरस्वती तुम कहां हो?

● जसवंत सिंह बिरदी

देश के किसी-किसी भाग में फूट रही ! अमृत के स्रोत की भांति ! माता के मीठे दूध की धारा की तरह ! ज्ञान तथा भक्ति के सरस मधु-जैसी !

कहते हैं, सरस्वती भी हमारे देश की एक महान नदी थी, मगर मैंने आज तक भी उसके दर्शन नहीं किये। बचपन से लेकर चढ़ती जवानी तक के वर्षों तक, मैंने देश की जिन नदियों के किनारों पर मौज की है, उनमें से चिनाब मुझे सबसे अधिक चुनौतीभरी नदी प्रतीत हुई है, जो हर समय बिफरी रहती है और उसका पानी तट के बंधन तोड़कर धरती पर फैल जाता है। परंतु सरस्वती के बारे में मेरे मन में किसी प्रकार की भी 'इमेज' नहीं उभरती थी।

नदियों के निकट रहकर मैंने जो रौंहभरा संगीत सुना है, उसमें सरस्वती की स्वरलहरियां शामिल नहीं थीं। इसके लिए मेरे मन में एक अभाव का अहसास हर वक्त कांटे की तरह चुभता रहता था।

मैं पद-यात्रा कर भारत के समूचे

ऊपर : सरस्वती नदी की जीवंत धारा

राजा के आदेश पर वे सरस्वती नदी का पता लगाने के लिए कुएं खोदकर नीचे उतरे थे, लेकिन जब वे ऊपर आये, तब उनके चेहरे उदास थे। क्यों ? —पंजाबी के सुप्रसिद्ध लेखक जसवंतसिंह विरदी का एक मर्मस्पर्शी रेखाचित्र

अस्तित्व की पहचान नहीं कर सका, परंतु मानचित्र पर मैंने उसके हरेक भूमिखंड को देखकर मस्तक झुकाया है। जब मैं देश की नदियों के बारे में मानचित्र पर निहार रहा था, तब मुझे सरस्वती नदी के कहीं भी दर्शन नहीं हुए।

पता नहीं, सरस्वती कहां थी !

क्या लोग जीवनभर अपनी मर्यादा में रहकर चलते हैं और किसी का भी उनकी ओर ध्यान नहीं जाता ?...परंतु सरस्वती तो ऋग्वेद-काल की सबसे महान नदी रही है !

मैंने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं सरस्वती को अवश्य ढूंढूंगा। फिर जब मैंने इस संबंध में अपने मित्रों से बात की, तब वे हंस दिये, "तो तुम भी भगीरथ की भांति उस नदी को लेने के लिए चले हो ?"

"भगीरथ कौन था ?"

"वह अपने पुरखों की मुक्ति के लिए बड़ी कठिन तपस्या करके गंगा नदी को आकाश से लाया था।"

"मैं भी सरस्वती को खोजकर रहूंगा।"

"तुम किसकी मुक्ति चाहते हो ?"

"लोगों की।"

"कौन से लोगों की ?"

"आम लोगो की...क्योंकि धरती से पानी खत्म होता जा रहा है और नदियों के पानी की खातिर राजनीतिज्ञ अपने दाव-पेंच दिखाकर लोगों को परेशान कर रहे हैं।"

"तो क्या तुम ... ?"

"हां, मैं सरस्वती को लाकर लोगों के लिए पानी का प्रबंध....।"

"तो क्या लोगों के पास पानी की कमी है ?"

"नहीं, लोगों के पास क्योंकि सरस्वती नहीं है, इसलिए वे आंसुओं के खारे पानी से गुजारा कर रहे हैं।"

"अगर उनको सरस्वती प्राप्त हो जाए ?"

"फिर वे खुशहाल हो सकते हैं।"

"अब वे खुशहाल नहीं हैं ?"

"तुम्हें नहीं मालूम ?" मैंने जोर से कहा और घर से निकल पड़ा। मैं सोच रहा था, 'देश में और सब कुछ है, मगर सरस्वती नहीं है, इसलिए विद्या और विवेकशीलता का अभाव है, विद्वानों की कदर नहीं है, और न ही गाय, गरीब तथा

ब्राह्मण का पहले-सा मान-सम्मान रहा है।'

घर से निकलकर मैंने बहुत से लोगों से सरस्वती नदी के बारे में पूछा, मगर कोई भी न बता सका कि वह कहां है। कुछ धार्मिक किस्म के लोगों ने बताया, "गंगा और यमुना की भांति ही सरस्वती भी प्रयाग के स्थान पर पहुंचकर संगम में शामिल होती है। लोग उसकी भी गंगा तथा यमुना की भांति पूजा करते हैं. . . !"

"मगर वह बहती किधर से है ?"

"यह खोज करने वाली बात है।"

उन्हीं दिनों में मुझे भाई कान्हासिंह नाभावाले के दर्शन हो गये। भाईजी बड़े विद्वान, खोजी और सब कलाओं के ज्ञाता थे। मैंने उन्हें अपना उद्देश्य बताया तो वह मुसकराकर बोले, "सरस्वती का मतलब है, जलवाली तर जमीन. . .।"

मैंने नम्रता से विनती की, "अब तो मैं जानना चाहता हूं कि सरस्वती नदी कहां है ?"

वे बोले, "वेदों में सरस्वती नदी ब्रह्मावर्त की सीमा थी, आर्य वहीं रहते थे। वे सरस्वती को इसी तरह पवित्र मानते थे, जैसे आज के लोग गंगा को. . .।"

मेरा सिर आदर से झुक गया, "मगर अब मैं उसे कहां देख सकता हूं ?"

"अब वह सिरमौर के क्षेत्र में से चलकर कई स्थानों पर बालू में लुप्त हो जाती है, और कहीं प्रकट होती हुई पटियाला से आगे घग्गर में मिल जाती है . . .।"

"मगर जो सरस्वती प्रयाग के निकट संगम करती है ?"

"उसका कुछ पता नहीं।"

कुछ विद्वानों की खोज यह भी कहती है कि सरस्वती का मूल प्रवाह-मार्ग दक्षिण की ओर था और वह राजस्थान की धरती पर बहती थी। फिर वातावरण के शुष्क होने से नदी ने भी बदलना शुरू कर दिया। वह पश्चिम की ओर बहने लगी और नोहर रंग-महल, सूरतगढ़, अनूपगढ़ की ओर चली गयी। पहले लूणी उसकी सहायक नदी थी, मगर फिर उसने लूणी को भी छोड़ दिया। और कुछ समय उपरांत सरस्वती जाखल, सिरसा, अनूपगढ़ तथा हनुमानगढ़ की ओर चली गयी। फिर ?

मैं हिमालय के आंचल से चलकर शिवालिक के साथ-साथ होता हुआ, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरयाणा तथा उत्तरप्रदेश के सभी, नगरों, तीर्थों तथा जल-थल से भरपूर सरोवरों के पास से, भारत के बहुरंगे और चहकते हुए चेहरोंवाले लोगों के दर्शन करता प्रयाग के संगम तक पहुंच गया। कभी मैं यमुना नदी के साथ-साथ चलता और कभी गंगा के दूधिया पानी की शीतलता में आनंदविभोर होता हुआ आगे बढ़ता। मैं हर जगह उस नदी को देखना चाहता था, जिसका नाम सरस्वती हो।

मैंने कई विद्वानों तथा ऋषि-मुनियों की संगति की, कई अन्वेषियों से पूछा,

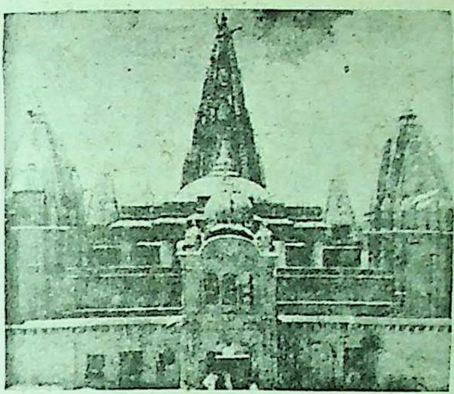

पिहोवा
(कुरुक्षेत्र) स्थित
सरस्वती मंदिर

मगर सरस्वती के बारे में पता न चल सका।

मुझे बहुत ही परेशान देखकर एक महात्मा ने कहा, "पुत्र, सरस्वती तो विद्या की असीम नदी का नाम है, जो हरेक के हृदय में बहती है।"

"मगर पवित्र पानी की नदी...?"

"वह तो बहुत समय पूर्व ही धरती में समा गयी थी।"

"तो क्या वह अभी तक भी जीवित होगी ?"

"हां, धरती की कोख में बहती है।"

"फिर बाहर क्यों नहीं आती ?"

"यह खोज करनेवाली बात है।"

"अच्छा, मैं करूंगा।"

उन्होंने गद्‌गद् होकर कहा, "अगर तुम खोज सको, तो मुझे अवश्य बताना। मैं भी सरस्वती के दर्शन करना चाहता हूं और सदियों से भटक रहा हूं।"

कुछ लोगों ने मुझे यह भी बताया कि जिला करनाल की कैथल तहसील में, थानेसर से सोलह मील पश्चिम की ओर कुरुक्षेत्र के अंतर्गत पिहोवा का तीर्थ है, जिसका संयुक्त नाम पृथू दक (पृथु राजा का ताल) है। उस तीर्थ के सरोवर को सरस्वती-तीर्थ कहते हैं। लोगों का विचार है कि वह सरस्वती का ही रूप है। भगवान कृष्ण भी उस स्थान पर आये थे, गुरु नानकदेव ने भी वहीं सरस्वती के दर्शन किये थे।

"सरस्वती किसी से छिपती और किसी को दर्शन देती है, इसका कारण ?" मैंने खुद से ही प्रश्न किया, मगर उत्तर कहीं भी नहीं था। मुझे तो यह भी पता न चल सका कि अब मैं उसे कहां देखूं।

प्रिश्विन नाम के एक और विद्वान ने

मुझे सरगोशी में कहा, "जहां कहीं भी धरती पर पानी की धारा बहती है, वहां धरती के ऊपर फूलों-पौधों तथा वृक्षों की नदियां बन जाती हैं।"

मैंने हिमालय के आंचल में खड़े होकर देखा, तो मुझे दूर तक वृक्षों की कतारें नजर आने लगीं। मैं उनकी ओर चल दिया। उनके निकट धरती पर बहुत से लोग बसे हुए थे। वे गरीब थे, परंतु उनका मेहनत में विश्वास था। उनके पास पानी कहीं नहीं था।

"तुम लोग किसी नदी के पास क्यों नहीं रहते?"

"हम नदी के पास ही रहते थे।" वे दु:खी होकर बोले।

सरस्वती नदी की लंबाई हजार मील से कम क्या होगी!

सरस्वती के तटों पर भक्तों का निवास था, कथा-कीर्तन होता था और लोग विचार-चर्चा करनेवाले थे। उसके जल में एक प्रकार की सुगंधि थी, विद्या की, ज्ञान-विज्ञान की। मगर उसका भी कहीं मंदिर नहीं बना।

मैंने हिम्मत करके उन लोगों से पूछा, "फिर वह नदी कहां गयी?"

उन लोगों ने उत्तर देने के बजाय मुझे घूरना शुरू कर दिया, "तुम कोई सरकारी आदमी तो नहीं हो?"

"नहीं, बिलकुल नहीं?"

"कोई अफसर किस्म की शै?"

"नहीं।"

उन्होंने फिर भी न बताया, तब मैंने कहा, "तुम लोग मुझे नदी के बारे में क्यों नहीं बताते?"

"हमें मनाही है।"

"किसने की है?"

"मां सरस्वती ने।"

"वह है कहां?"

"हम नहीं बता सकते।"

"क्यों?"

"तुम-जैसे अजनबी दीखते, विदेशी चालचलनवाले और गलत किस्म की बोलचालवाले, लोगों की बेहूदगियों के कारण ही वह . . .।"

"क्या हुआ उसे?"

वे अब फिर खामोश रहे। मगर जब उन्हें मेरी सिदकदिली पर विश्वास हो गया, तब उन्होंने मुझे निम्न कथा सुनायी–

कुछ लोगों को राज के हाकिमों के आदेश अनुसार कुएं खोदकर धरती के नीचे उतारा गया, ताकि वे नदी का पता लगा सकें और उसे धरती के ऊपर आने के लिए प्रेरित कर सकें, पर वे लोग बाहर निकलकर निराशा-से एक ओर को चल दिये। उनके चेहरे उदास थे और आंखें धुंधभरी।

"तो क्या सरस्वती नदी धरती में समा गयी थी?"

"हां।"

"मगर क्यों?"

"क्योंकि धरती पर हाहाकार मचा हुआ था। समय के हाकिम मनुष्यों और

वृक्षों पर अत्याचार कर रहे थे।"

"मगर अब तो देश स्वतंत्र है," मैंने कहा। वे बोले, "धरती के नीचे जानेवाले लोगों ने भी नदी को यही बात कही थी। मगर उसने ऊपर आने से इनकार कर दिया।"

"क्यों ?"

"वह अपमान का अनुभव करके धरती में समा गयी थी।"

"मगर अब तो वह परिस्थिति नहीं रही।"

वे फिर बोले, "उन लोगों ने नदी को यही बात कही थी कि देश स्वतंत्र है और उसे धरती के ऊपर आकर स्वतंत्रता से विचरण करना चाहिए।"

"फिर ?"

"वह धरती के ऊपर आने के लिए तैयार नहीं थी।"

"मगर क्यों ?"

"सरस्वती ने कहा कि अभी भी धरती पर वैसी ही परिस्थिति है ... इसलिए ...।"

मौसम धुंधभरा था और हर तरफ वीरानी फैली हुई थी। उस वीरानी में से निकलने का कोई भी मार्ग नहीं था। मैंने बहुत कुछ सोचने के बाद कहा, "और नदियां भी तो बहती ही हैं।"

"ठीक है। गंगा की हर जगह पूजा हो रही है ... यमुना को भगवान कृष्ण के चरण-स्पर्श प्राप्त हो गये ... चिनाब आशिकों के गौरव से ही थिरक रहा है ...।"

धातुश्चतुर्मुखी कण्ठभृंगाटक विहारिणीम्
नित्यं प्रगल्भवाचालामुपतिष्ठे सरस्वतीम्।
सूक्ष्माय शुचये तस्मै नमो वाक्तत्त्वतन्तवे
विचित्तो यस्य विन्यासो विदधाति जगत्पटम्

"सरस्वती तो विद्या की देवी थी, विवेकशील और अनुभूति-शील नदी ... फिर भी ... ?"

"हां।" उन्होंने उदास होकर कहा, "यह तो किसी के महसूस करने पर निर्भर करता है।" और वे उस वीरान धरती पर, दूर तक देखने लगे।

मैं बड़ी मुश्किल से केवल इतना ही कह सका, "मां सरस्वती ! तुम कहां हो ?"

—१४०, सुखजीतनगर, कपूरथला

परिचर्चा-२

कवि सम्मेलन कितने सार्थक कितने निरर्थक

• सुरेश नीरव

मंचीय कवि विदूषक नहीं

—बालकवि बैरागी

कवि सम्मेलन की सार्थकता एवं निरर्थकता पर आयोजित परिचर्चा में पिछले अंक में आप बुद्धिजीवियों के विचार पढ़ चुके हैं। प्रस्तुत है, परिचर्चा की अंतिम किश्त—

कवि सम्मेलनों का उत्सवधर्मिता से जुड़ना बुरी बात नहीं है, बशर्ते कि उस उत्सव के पास अपना कोई धर्म हो। कवि-सम्मेलनों के सांस्कृतिक उपयोग को अब सब ओर स्वीकार कर लिया गया है।

जब कविता को जनता मनोरंजन बना ले और कवि बना ले रोटी, तो फिर कविता और कवि-सम्मेलन की सार्थकता पर प्रश्न चिह्न लग जाते हैं। व्यावसायिकता में भी एक सात्विकता और शालीनता तो होनी ही चाहिए। लाखों की भीड़ को अकेले स्तर की ऊंचाई की ओर खींचकर ले जाना एक गहन तपस्या है। यह आसान काम नहीं है। आजादी के बाद हमारे जीवन के खास कर सार्वजनिक और सांस्कृतिक जीवन के हर पहलू में गिरावट आयी है। कौन-सा पहलू अछूता रहा? जीवन के हर मूल्य पर चोट हुई, और उसे विकृत होना पड़ा है। कवि सम्मेलन अब रतजगे का रूप ले बैठे हैं, लोग यह नहीं देखते हैं कि कवि-सम्मेलन कैसा चला, देखते यह हैं कि वह कितनी देर तक चला। तथाकथित गिरावट के लिए आप किसी भी एक पक्ष को अपराधी नहीं कह सकते हैं। समय के साथ सब ठीक हो जाएगा।

मंच और पत्रिका के कवियों की बात आप भी नीरव भाई! खूब कर रहे हैं। बैल और बैल में फर्क नहीं है। हां यह बात दूसरी है कि एक बैल को घानी में चलने की आदत हो गयी है और दूसरे को खुले मैदान में चरने और हल में जुतने की आदत है। जिस तरह मंच पर बोला हुआ हर शब्द सुना नहीं जाता है, उसी तरह पत्रिकाओं में छपनेवाली हर कविता क्या पढ़ी जाती है? मंच के कवि और पत्रिका के कवि यह एक कुत्सित षड़यंत्र और जनता द्वारा अस्वीकृत मित्रों का निम्नस्तरीय आत्म संस्कार है। यारों ने दूसरी गली खोज ही ली आखिर, यह 'एक व्यक्तीय कविता-पाठ' किस अग्नि का शमन है?

कवि अपने युग को लिखता बोलता है,

जैसा जीता है, भोगता है; वैसा व्यक्त करता है। कृष्ण-काल में गोपियां और बांसुरी या गांडीव और गीता उसके विषय थे, राम-काल में वह लंका दहन और पंचवटी गाता था—नेहरू का गुलाब, शास्त्री का जय जवान-जय किसान, श्रीमती गांधी का गरीबी हटाओ और बीस सूत्र यदि उसके विषय हो सकते हैं, तो फिर मोरारजी भाई का 'गिलास' और अटलजी का 'कौमार्य' उससे कैसे छूट सकेगा ? जनता का आज सारा फोकस नेता पर है। यही कारण है कि कवि की नजर भी नेता पर ही लगी हुई है। इसमें किसी का दोष नहीं है। युग को भाषा और वाणी देना उसका धर्म है। वह आंखोंवाला अंधा नहीं हो सकता है। रहा सवाल सरकार की आलोचना का, सो सरकार केवल सरकार है। न तब की, न अब की। सरकार एक चिरंतन संस्था है। सरकार जब तक चिरंतन रहेगी आलोचना भी तब तक चिरंतन रहेगी। इसमें कवियों को अपने आपको वाह-वाही के योग्य नहीं मानना चाहिए और सत्ता से मुंह नहीं चिढ़ाना चाहिए।

लोकप्रियता और चुनाव जीतने का कोई रिश्ता नहीं है, दोनों छोर बिलकुल अलग-अलग हैं, परिणाम हां या ना कुछ भी हो सकता है—

मेरी राय में जितना अन्याय हमारे इन हास्य और व्यंग्य के कवियों के साथ बुद्धिवादी माननेवाले महानुभावों ने किया है, उतना किसी के साथ नहीं किया। आप एक काम कीजिएगा। जो भी हमारे इन कवियों को 'विदूषक' कहें उनके सामने एक कोरा कागज रखकर कलम थमा दीजिएगा और उनसे कहिएगा कि वे हास्य या व्यंग्य की ऐसी कविता लिख कर दिखा दें-जैसी कि वे चाहते हैं। रस तक कविता को ले जाना आसान काम नहीं है। कवि की परिभाषा चूंकि बहुत ही विवादास्पद है इसलिए यदि मैं यह कह दूं कि 'जी हां ये सभी' कवि हैं, तो आप को कैसा लगेगा ?

बालकवि बैरागी

निर्भय हाथरसी

[illegible]

सुरेन्द्र शर्मा

मेरा पहला निवेदन यह है कि कवि-सम्मेलन का स्तर सुधारने के लिए आप कोई कवि-सम्मेलन आयोजित मत कीजिएगा। दूसरा निवेदन यह है कि आप खूब कवि-सम्मेलन करवाइएगा और उसमें मुझे भी बुलाइएगा।

जिम्मेदारी मुझ पर भी

—निर्भय हाथरसी

कवि-सम्मेलनों का उद्देश्य तो सांस्कृतिक ही है, किंतु वर्तमान में वह केवल उत्सवधर्मिता के प्रतीक मात्र हो गये हैं।

कवि-सम्मेलन में स्तरीय गिरावट की जिम्मेदारी मूलतः उस अस्तरीय पारिश्रमिक राशि पर आती है, जो कि कवियों को मिलती है। वर्तमान में जो जितना सस्ता लिखता है, वह उतना ही महंगा बिकता है। श्रोताओं में इतना नैतिक बल नहीं कि कवि की अस्तरीय रचना का, चुटकुले बाजी का, विरोध कर सकें और कवि का ध्यान केवल इस बात पर है कि चाहे जिस ढंग से हो श्रोताओं का मनोरंजन हो। स्तरीय कवि मन मारकर समझौता कर बैठे हैं, क्योंकि उनके सामने भी अर्थ समस्या है, इसलिए वह भी अस्तरीयों को सहते हैं और स्वयं हूट होकर भी उसी गंदे माहौल में रहते हैं। मंच के लोकप्रिय कवियों के पास ऐसा कुछ भी तो नहीं है, जो पत्र-पत्रिकाओं में छपे और छपनेवालों के पास ऐसा कुछ भी नहीं है, जो बहुमत प्राप्त श्रोताओं में खपे। मंच पर प्रायः कोई न कोई तो रहता ही है, और उसकी उपस्थिति में आलोचनात्मक रचना जल्दी जम जाती है। सरकार व नेताओं के कर्म भी कुछ ऐसे हास्यापद बन गये हैं, कि हास्य-व्यंग्य के लिए वे सहज साध्य विषय हो गये हैं और कवि भी सहज सफलता के लिए 'शार्ट-कट' अपनाना पसंद करते हैं। श्रोताओं की भीड़ के लोकप्रिय कवि, केवल लोकप्रिय कवि होने के कारण ही चुनाव नहीं जीत सकते हैं।

मंचीय हास्य-व्यंग्य कवि विदूषक समझा जाता रहा है, तो मूल कारण उसका प्रस्तुतीकरण ही है, कविताओं का हल्कापन गौण कारण है। जहां तक प्रतिष्ठित होने का प्रश्न है, वह अपने-अपने क्षेत्र में सभी कवि-कवियत्रियां प्रतिष्ठित हैं, कोई मंच पर प्रतिष्ठित है, कोई पत्र-पत्रिकाओं में। लोकप्रियता के लिए जन-साधारण तक पहुंचना परमावश्यक है और यह कार्य मंचीय कवि सहज ही कर लेते हैं। कवि सम्मेलन के सुधार के लिए मैं स्वयं क्या कहूं? क्योंकि किसी न किसी रूप में मैं भी मंचीय कवि हूं और उसके बिगाड़ने की जिम्मेदारी मुझ पर भी आती है, फिर भी अपने अनुभवों से इतना अवश्य कह सकता हूं कि इसके लिए प्रबुद्ध श्रोताओं को सजग होना पड़ेगा, अश्लील और अरुचिपूर्ण हास्यास्पद रचना को तुरंत टोकना और रोकना पड़ेगा। सब कुछ जानकर भी कवियत्रियों के नाम को बदनाम करने, करानेवाली कवियत्रियों को मंच से हटाना होगा, क्योंकि वे कविता के नाम पर न जाने किस-किस की क्या रचनाएं सुनाती हैं।

'कादम्बिनी' चाहे, तो इस सुधार का श्रेय ले सकती है, हम हर स्थिति में अच्छी और सही कविता की स्थापना के लिए सहयोग करेंगे, चाहे इसके लिए हमें स्वयं भी मंचीय क्षेत्र से हटना पड़े।

मंचीय कवि पारिश्रमिक के भीत

—दिनकर सोनवलकर

कवि-सम्मेलनों का साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रयोजन पहले कभी रहा होगा। आज तो वे मात्र उत्सवधर्मिता के प्रसंग

बनकर रह गये हैं। उत्सव भी ऐसा, जिसमें रस्म अदाई ही प्रमुख है, यानी भीड़भाड़; शोर-शराबा; हो-हल्ला; हूटिंग। कवि-सम्मेलन के स्तर में गिरावट के जिम्मेदार तीनों पक्ष है— कवि, श्रोता, और आयोजक। पिछले दिनों से इसमें एक प्राणी और जुड़ गया है जिसे 'संचालक' नाम से जाना जाता है। संचालन की राजनीति और संचालक-गुट के कवि-विशेष भी इसके हिस्सेदार हैं। अधिकांश कवि जमने के लिए घटिया या गलेबाज कविता सुनाते हैं। उधर श्रोतागण गंभीर, साहित्यिक रचनाओं को बेहिचक हूट करते हैं। आयोजक पैसे वसूलने की नीयत से देर तक चलते रहने को ही कवि सम्मेलन की सफलता का मापदंड समझता है। वैसे, हमारे सांस्कृतिक स्तर में जो गिरावट और सस्तापन स्वतंत्रता के पश्चात आया है; कवि-सम्मेलन भी उसी का एक आईना है। मंच की लोकप्रियता और पत्र-पत्रिकाओं की साहित्यिकता के बीच एक शरारतपूर्ण विरोध की हौआ बहा दी गयी है। बार-बार यह 'मिथक' प्रचारित किया गया कि जो लोकप्रिय हैं; वह साहित्यिक दृष्टि से कदापि श्रेष्ठ नहीं हो सकता। इसीलिए तथाकथित साहित्यिक कवि-महानुभावों ने मंच को 'अस्पृश्य' मान लिया। उधर, मंचीय कवि; मंच की लोकप्रियता तथा अर्थ प्राप्ति से ही आत्म-तुष्ट दिखायी देते हैं। इस प्रवृत्ति से दोनों को ही नुकसान हुआ।

नेता, मंत्री, विधायक—ऐसे विषय हैं, जिनसे श्रोता तुरंत साधारणीकरण स्थापित कर लेता है; क्योंकि प्रायः हर वर्ग इनसे पीड़ित भी है और इनके झूठे आश्वासनों का शिकार भी। लेकिन एक ही विषय की बार-बार पुनरावृत्ति होने से, उसकी 'अपील' कम होती जाती है। अब यह फैशन बासी हो चला है। चतुर व्यावसायिक कवि पुरानी रचनाओं को ही, थोड़े फेर-बदल के साथ, आज भी घिसे जा रहे हैं। वे किसी पार्टी के साथ नहीं हैं। मात्र पारिश्रमिक के मीत हैं।

श्रोताओं की भीड़ का लोकप्रिय कवि चुनाव लड़े; तो वह जीत सकेगा—इसमें मुझे संदेह है। क्योंकि श्रोताओं की 'वाह-वाह' पा जाना एक बात है; और उनका वोट हासिल करना सर्वथा अलग मुद्दा है।

जब भी कवि अपनी गरिमा छोड़कर मात्र मनोरंजन के लिए घटिया रचना पढ़ेगा या चुटकुलेबाजी और फूहड़पन का सहारा लेगा; तब उसे 'विदूषक' की कोटि में रखना ही पड़ेगा। इसका कारण मात्र व्यावसायिकता है। मुद्राराक्षस की खातिर कवि को कैसी-कैसी मुद्राएं धारण करनी पड़ती हैं?

प्रतिष्ठित कवि यह मानकर चलते हैं कि उनकी रचनाओं को समझने की योग्यता साधारण जन में नहीं है; और ऐसा करते हुए वे एक सशक्त माध्यम को ही त्याज्य मान बैठते हैं। यदि प्रतिष्ठित, साहित्यिक जनवादी कवि मंच पर आने का साहस

दिखाने लगें, तो मंच का माहौल एवं स्तर सुधारने की उम्मीद की जा सकती है। त्रासदी यह है कि दोनों वर्गों के रचनाकार अपने-अपने दायरे में कैद हैं। एक कमरे में बैठा 'क्रांति' कर रहा है, तो दूसरा मंच पर 'भ्रांति' फैला रहा है।

कवि-सम्मेलनीय स्तर को सुधारने के लिए सुझाव देना एक बड़ा खतरा उठाना है। फिर भी, दुस्साहस करता हूं—

(अ) कवि-सम्मेलनों में टिकिट लगाकर तमाशबीनों की भीड़ कम की जाए (ब) अच्छी रचना को हूट करनेवालों की प्रताड़ना मंच से की जाए तथा कविगण ऐसी स्थिति में बहिष्कार करें। (स) हद से ज्यादा पारिश्रमिक ऐंठनेवाले कवियों, कवयित्रियों को निमंत्रित न किया जाए। (फ) कवि सम्मेलन की सफलता का मापदंड अधिक देर तक चलने को न मानकर; पढ़ी गयी कविताओं की गुणवत्ता को माना जाए।

मंचीय कवि चापलूस नहीं होता

—सुरेन्द्र शर्मा

कवि सम्मेलन किसी भी संदर्भ में किया जाए उसका सांस्कृतिक उद्देश्य अवश्य है। कवि सम्मेलन ने कव्वाली, नौटंकी, और मुजरे से अलग हटकर आम आदमी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।

कवि सम्मेलन के स्तर में गिरावट के जिम्मेदार-कवि, श्रोता व संयोजक तीनों ही हैं।

मंच के कवि ने अपनी कविता में जिस भाषा का प्रयोग किया है, वह इस देश के आम आदमी की भाषा है। जबकि पत्रिकाओं में छपनेवाले अधिकांश कवियों ने अपनी बुद्धि को प्रदर्शित किया है। उसने कभी यह विचार नहीं किया कि इसे कोई समझेगा या नहीं। पत्रिका में छपनेवाले कवियों में मंच पर जाने की लालसा है, मगर वे वहां फिट नहीं होते हैं इसलिए वे मंच की आलोचना करते हैं।

राजनीति ने आम आदमी के जीवन में दखल देना शुरू कर दिया है। अतः कवि का यह फर्ज हो जाता है कि वह ऐसी भ्रष्ट राजनीति के ऊपर चोट करे। नेताओं को मंच पर कवि सम्मेलन की सफलता के लिए नहीं, संयोजक अपने परिचय के लिए बुलाता है। कवि अगर नेता के सामने भ्रष्ट राजनीति पर चोट करता है तो वह केवल इसलिए कि देश के नेता सबक लेकर कुछ अच्छा काम करें।

मंचीय कवियों को विदूषक वही कहते हैं, जिन्हें हास्य का महत्त्व नहीं मालूम।

मंचीय कवि हमेशा सत्ता विरोधी होता है। चापलूस नहीं। यह उसका गुण है कोई दोष नहीं।

कवि सम्मेलन के स्तर में थोड़ी-बहुत जो गिरावट आयी है उसे कवि, श्रोता, संयोजक तीनों मिलकर ही दूर कर सकते हैं। वैसे आज जो छप रहा है क्या वो सब कुछ अच्छा छप रहा है?

—१६१९/३६, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

नेपाली राम कथाकार भानुभक्त

● रमानाथ त्रिपाठी

हमारे देश की संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता गार्हस्थ्य व्यवस्था है और रामायण इस व्यवस्था का महाकाव्य है। एशिया के एक वृहत् भू-खंड पर राम की पावन गाथा का प्रचार हुआ था। नेपाल में भी राम-कथा का प्रचार रहा, किंतु स्थानीय भाषा के माध्यम से इसे जन-जन तक पहुंचाने का श्रेय श्री भानुभक्त को है।

अंगरेज-नेपाली युद्ध के कुछ दिन पूर्व सन १८१४ में श्री भानुभक्त का जन्म काठमांडू से ८०–८५ मील दूर तनहुं के रमघा ग्राम के कौडिन्य गोत्रीय उपाध्याय ब्राह्मण कुल में हुआ था। भानुभक्त के पिता श्री धनंजय सरकारी कर्मचारी थे, अतः इनका लालन-पालन पितामह श्री कृष्णजी आचार्य ने किया। पितामह धुरंधर विद्वान थे। अतः उन्होंने अपने लाड़ले पौत्र को संस्कृत व्याकरण और ज्योतिष की शिक्षा दी। भानुभक्त १२ वर्ष की आयु में जन्मपत्री का तत्व भली प्रकार समझने लगे थे। १८ वर्ष की आयु तक उनकी शिक्षा पूर्ण हो चुकी थी। इनकी पत्नी का नाम रेवती था। पुत्र रमानाथ के पौत्र सूर्यनाथ आचार्य अभी रमघा ग्राम में जीवित हैं।

भानुभक्तको हस्ताक्षर

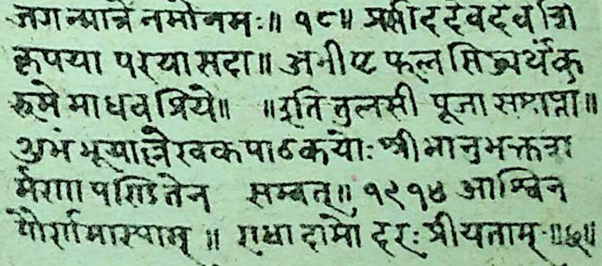

जगन्मात्रे नमोनमः॥ १८॥ प्रसीद देवदेवेशि
कृपया परया सदा॥ अभीष्ट फलसिद्ध्यर्थं कु
रुष्वे माधवप्रिये॥ ॥इति तुलसी पूजा सम्पाप्ता॥
शुभं भूयाल्लेखकपाठकयोः श्री भानुभक्तना
मेणा पठितेन सम्वत्॥ १९१४ आश्विन
पौर्णमास्याम्॥ राधा दामोदरः प्रीयताम्॥छ॥

कविता के कारण जेल

एक घसयारे ने कौड़ी-कौड़ी जोड़कर जन-कल्याण एवं ख्याति-प्राप्ति के उद्देश्य से एक कुंआ खुदवाया था। इस घसयारे से भानुभक्त को अपना नाम अमर करने की प्रेरणा मिली। इसी प्रेरणा से इन्होंने सन १८४१ में रामायण का बालकांड लिखा। इसके पश्चात् कार्य रुक गया। प्रो. ढुंढ़िराज भंडारी ने घसयारेवाली घटना को कपोल-कल्पित बताया है।

भानुभक्त सन १८४६ में अपने किसी पड़ौसी के मुकदमे के संदर्भ में काठमांडू आये। यहां उन्हें प्रधानमंत्री के भाई कृष्ण बहादुर का आश्रय मिला, इसके परिणामस्वरूप जागीर पाकर ये सन १८५० में तराई में आ गये। कवि ठहरे, हिसाब-किताब इन्होंने कविता में लिखा। छंद और अनुप्रास के फेर में हिसाब गड़बड़ा गया। इन्हें पकड़कर कारागार में डाल दिया गया। हिसाब भले ही गड़बड़ा गया हो, किंतु रोकड़ ठीक थी, अतः पांच मा के पश्चात उन्हें ससम्मान छोड़ दिया गया। कारावास के समय पांच मास में इन्होंने अयोध्या से सुंदर कांड तक की रच कर डाली। अगले वर्ष शेष दो कांड लिखे। इस प्रकार ११ वर्ष के भीतर यह अपनी रामायण पूरी कर सके।

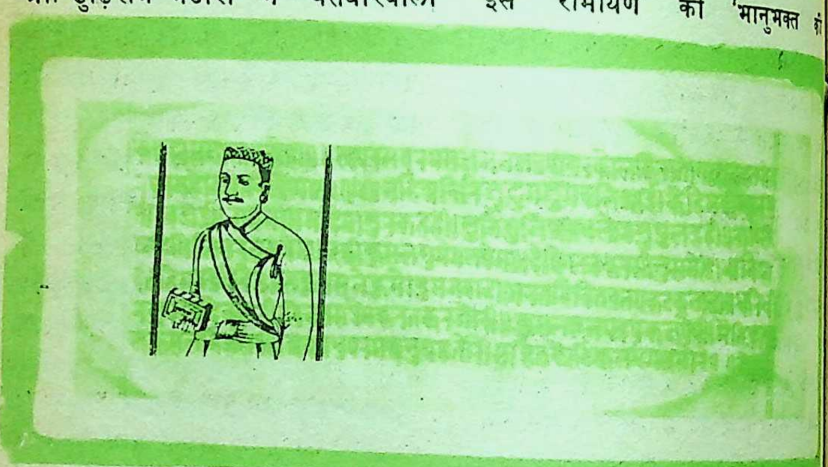

भानुभक्त की रामायण

इस रामायण को 'भानुभक्त की रामायण' कहा जाता है। यह नेपाल में अत्यधिक लोकप्रिय हुई, झोपड़ी से महलों तक इसका प्रचार हुआ। निरक्षर लोग भी इसका पाठ करते हैं। विवाह के समय इसके छंद पढ़े जाते हैं। राजकर्मचारी, व्यापारी, किसान सभी वर्गों का यह अतिप्रिय काव्य है। इस काव्य-पुस्तक के माध्यम से नेपाल की साधारण जनता ने भी राम-कथा के साथ-साथ, भक्ति, माया, कर्मयोग, वैराग्य आदि का परिचय प्राप्त किया है।

भानुभक्त की मृत्यु ५४ वर्ष की आयु में सन १८६८ में हुई थी और इसके १६ वर्ष पश्चात काशी के भारत जीवन प्रेस से इनकी रामायण का प्रकाशन हुआ। सन १८५४ में बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री महेन्द्रकुमार मुखोपाध्याय और नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जिलिंग के प्रयास से श्री सूर्य विक्रम ज्ञवाली के संपादन में नेपाली रामायण का परिशोधित संस्करण गीता प्रेस से मुद्रित हुआ। इसकी भूमिका उत्तरप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री क. मा. मुंशी ने लिखी। भानुभक्त ने ही प्रथम बार नेपाल के सुसंस्कृत वर्ग की भाषा में यह ग्रंथ लिखा। नेपाली भाषा का वर्तमान युग इसी ग्रंथ से आरंभ हुआ माना गया है।

नेपाली रामायण और रामचरित मानस के कई स्थलों में साम्य है, जैसे कि शिव-पार्वती के संवाद के रूप में कथा-वर्णन, शापग्रस्त अहल्या का शिला होना और राम की चरण-रज से उद्धार होना, सरस्वती द्वारा कैकेयी-मंथरा की बुद्धि भ्रमित करना, लक्ष्मण-गुह-दार्शनिक संवाद, खर-दूषण के वध से रावण का चिंतित होना और जान लेना कि उसका उद्धार करने के लिए भगवान का जन्म हुआ है, छाया सीता, काक-प्रसंग, रावण की नाभि में अमृत कुंड आदि के प्रसंग।

संक्षेपीकरण की मौलिकता

नेपाली रामायण कथा, चरित्र और दर्शन की दृष्टि से पूर्णतः अध्यात्म-रामायण पर आधारित है, किंतु है वह मौलिक। इसकी मौलिकता संक्षेपीकरण की है। निम्न दृष्टियों से अध्यात्म-रामायण भिन्न है—

भावपूर्ण प्रसंगों की उपेक्षा—अध्यात्म रामायण में वैसे ही भावपूर्ण स्थलों की उपेक्षा थी, भानुभक्त इस क्षेत्र में और आगे बढ़ गये। अध्यात्म रामायण में फिर भी कुछ सरस स्थल मिल जाते हैं, अयोध्याकांड में राम वनवास वाला स्थल मार्मिक है। भानु आस्थावान् हैं, उन्होंने भावुकता के ऐसे प्रसंग नहीं आने दिये हैं, जो राम को मात्र मानव ही सिद्ध करते।

जनोपयोगी दृष्टिकोण—कवि ने कथा के प्रस्तुतिकरण में अपने प्रादेशिक जनों की मनःस्थितियों का ध्यान रखा है और उसके अनुकूल शब्दावली का प्रयोग किया है। इससे उनके ग्रंथ की लोकप्रियता में वृद्धि हुई।

अध्यात्म-रामायण में रावण, सीता को धमकी देता है कि यदि दो मास के भीतर सीता उसे स्वीकार नहीं करतीं, तो उन्हें

मुसाफिरों की सुविधा के लिए जहाज का एक कर्मचारी आगतों का मार्गदर्शन कर रहा था। प्रथम श्रेणी दाहिनी तरफ तथा द्वितीय श्रेणी बाईं तरफ इतने में एक तरुण महिला एक बालक को उठाये उधर से निकली, वह घबरायी हुई लगती थी।

कर्मचारी ने पूछा, "प्रथम या द्वितीय?" तरुण महिला ने शरमाते हुए कहा, "मेरा नहीं, यह तो मेरी बहन का बच्चा है।"

मारकर प्रातराश (कलेवा) बना दिया जाए—

तदा मे प्रातराशाय हत्वा कुरुत मानुषीम् !

इसे भानुभक्त इस प्रकार कहते हैं—

तर्कारी भुटुवा बन उनु असल मीठा मसाला धरी।

भानुभक्त की रामायण में सेतु बनाने में पांच दिन लगे हैं, जबकि अध्यात्म-रामायण में बताया गया कि सेतु क्रमशः १४, २०, २१, २२ और २३ योजन बना। नेपाली जनता संभवतः योजन न समझ पाती, अतः भानुभक्त ने कोसों का वर्णन किया—५६, ८०, ८४, ८८ और ९२।

लव-कुश राम की सभा में रामकथा सुना रहे थे। राम ने प्रसन्न होकर कहा—इन्हें 'अयुत वसु' प्रदान करो। भानुभक्त ने 'अयुत वसु' के स्थान पर दस हजार रुपया का प्रयोग किया—

दस हजार रुपिया लगी कन दिया जल्दी भरत् ले पनी।

नेपाली रामायण में लक्ष्मण, राम को दाज्यू (बड़े भैया) कहते हैं।

समन्वय की दृष्टि

नेपाल और भारत राजनीतिक दृष्टि से अलग हैं, किंतु सांस्कृतिक दृष्टि से वे पूर्णतः एक हैं। भानुभक्त की रामायण से भी यह बात पुष्ट होती है। उनकी रामायण में जिस संस्कृति का वर्णन है, वह हिंदू संस्कृति है। इसमें जातकर्म, व्रतबंध (उपवीत) आदि संस्कार मनाये जाते हैं। कर्मफल पर विश्वास रखा जाता है। उत्सवों पर भेरी, शंख, मृदंग और नगा वाद्य बजाये जाते हैं। देवता आकाश-मा से पुष्प-वृष्टि करते हैं। तीर्थों के माध्य से सारे भारत में एकता का प्रयास कि गया है। इसका प्रभाव नेपाली रामायण भी आ गया है। रामेश्वर-शिव की स्थाप के समय कहा गया है कि काशी से गंगाज लाकर यहां चढ़ाने से व्यक्ति मुक्ति-प्रा करता है। उत्तर के गोकर्ण तीर्थ की मह का भी वर्णन किया गया है। इस प्रका भानुभक्त ने भारत के उत्तर-दक्षिण समन्वय किया है।

भानुभक्त प्रशंसा के पात्र हैं कि उन्होंने अपनी रामायण में संस्कृत के वर्णिक छंदों का प्रयोग किया है। लगभग प्रत्ये खंड में शार्दूल विक्रीडित छंद का प्रयो है, इसके अतिरिक्त सुग्धरा, मालि शिखरिणी, इंद्रवज्रा, वसंततिलका औ द्रुतविलंबित आदि छंद भी प्रयुक्त हुए हैं।

संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ ह तद्भव और ठेठ नेपाली शब्द भी आये हैं।

बुधशिक्षा और भक्तमाला लेखक के अन्य ग्रंथ बताये जाते हैं। उसने जगद् गुरु शंकराचार्य की 'प्रश्नोत्तरी माला' क भावानुवाद 'प्रश्नोत्तर' नामक पुस्तक किया था।

रामकथा के माध्यम से नेपाल औ भारत की जनता के मध्य सांस्कृतिक ऐक्य को पुष्ट करनेवाले भानुभक्त का प्रयास सर्वथा अभिनंदनीय है। —हिंदी विभा

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-

तनाव से मुक्ति

डॉ. सतीश मलिक

यह अड़चन कैसे ?

चंद्रकिशोर, कोटद्वार (गढ़वाल) : मैं ३२ वर्ष का विवाहित युवक हूं, पारिवारिक जीवन पूर्णतः सुखी और व्यवसाय भी अच्छा है। मेरी एक आदत है--यदि मेरी इच्छा के विरुद्ध कुछ बात हो, तो बहुत सोचता हूं।

९ दिसम्बर, १९८१ को मैं ऑफिस में कार्य कर रहा था, मस्तिष्क तनाव-मुक्त व शांत था। सहसा मुझे सुनाई देना बंद हो गया व मुंह में पानी-सा भरने लगा, थोड़ी देर बाद थकावट महसूस हुई। तत्पश्चात मेरा शरीर अकड़ गया। उसके बाद जो कुछ हुआ, मुझे वह रत्तीभर याद नहीं। सुबह होश आने पर स्मरण-शक्ति क्षीण थी। इस बीमारी का अभी तक चिकित्सकों को पता नहीं चल पाया। ग्लूकोज चढ़ाया गया तथा गोलियां व टीके (डेकाड्रॉन व बी-कांपलेक्स) आदि दिये गये। अब मैं स्वस्थ तो हूं, पर डॉक्टर साहब ! हर समय यह भय बना रहता है कि बीमारी कौन-सी थी, क्या यह फिर हो सकती है। इसका शीघ्र इलाज क्या करें, यदि फिर हो, तो इसको रोकने का उपचार व परहेज कृपया सुझायें।

आपके रोग का आपकी सोचने की आदत से कोई संबंध नहीं है। मस्तिष्क की रक्त-धमनियां अचानक संकुचित हो जाएं, तो ऐसा हो सकता है। इसके लिए आपको रक्त-चाप की जांच करवानी आवश्यक है। पेशाब व रक्त में चीनी की मात्रा का परीक्षण करवायें। यदि यह सब सही हो, तो फिर किसी अच्छे स्नायु विशेषज्ञ (न्यूरोलॉजिस्ट) की सलाह लें। आप शीघ्रातिशीघ्र निदान करा लें, तभी रोकने के उपाय सोचे जा सकते हैं।

चुनाव न करने की क्षमता

क.ख.ग., मेरठ : मैं २३ वर्ष का युवक हूं, कक्षा १० तक पढ़ाई में रुचि नहीं रही, खेल-कूद और उद्दंडता में ही व्यस्त रहा। दूसरे बच्चों से लड़ाई भी खूब होती। कक्षा १२ में सौभाग्य से एक अध्यापक के संपर्क में आने से मैं बिल्कुल बदल गया। आचरण भी अच्छा हो गया। एम. काम. कर, एल-एल. बी. कर रहा हूं।

बी. काम. के अंतिम वर्ष से चित्त बहुत असंतुलित हो गया। कभी तो एकाग्रता और आशा बनी रहती है, पर कभी इसके विपरीत आत्मविश्वास बिल्कुल क्षीण

हो जाता है। जो विषय पहले अच्छी तरह आता था, वह भी दोहरा नहीं पाता। खाने की इच्छा प्रबल हो जाती है। पूरी पढ़ाई करने के पश्चात भी यदि परीक्षा के दिनों में 'मूड' नहीं बना, तो बहुत विचार करने पर ऐसा लगता है कि जैसे मेरे अंदर ही दो भिन्न व्यक्तित्व हों। क्या शारीरिक अस्वस्थता से इसका कोई संबंध नहीं। दूसरी समस्या है—दो चीजों में से किसी एक का चुनाव कर सकने की क्षमता का अभाव, जैसे—व्यापार या सर्विस।

पढ़ाई में मन न लगना, एकाग्रता में कमी व आत्मविश्वास क्षीण हो जाना है; आपकी पहली समस्या का शरीरिक अस्वस्थता से कोई संबंध नहीं।

दूसरी समस्या है आपकी दो चीजों में से चुनाव न कर सकना। आपकी दो व्यक्तित्वों की कशमकश सही है। एक व्यक्तित्व कक्षा ११ तक और दूसरा उसके बाद का। जब कभी मनुष्य पर बहुत तनाव बढ़ता है, तब कुछ हद तक पुनः उसी स्थिति में लौटने के लक्षण बनते हैं, व्यवहार भी पुनर्वावस्था की ओर भागने लगता है। उस समय यदि मन को कुछ सांत्वना तथा आदर्श व्यक्ति का सहारा मिल जाए, तो फिर ऐसे तनावों पर काबू पाया जा सकता है।

ज्यादा खाने का मन करना 'रिग्रेशन' की अवस्था में होता है। आपका पहलेवाला व्यक्तित्व अब आ नहीं सकता, और सामाजिक दृष्टि से अब वह व्यवहार का ढंग अच्छा नहीं समझा जाता। इसलि परिणाम होता है—तनाव व एकाग्रचित में कमी।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजे समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पू परिचय, आयु, पद, आय एवं पते क उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपाद

तनाव व उदासीनता का दुष्चक्र

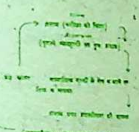

आप इस दुष्चक्र को समझ लें। आपके सामाजिक मूल्य बदल चुके हैं, परंतु अब उन अध्यापक या किसी और आदर्शवादी व्यक्ति के न होने से भी आप में अंतर्द्वंद्व हो जाता है—व्यापार में जाएं या फिर अपनी पढ़ाई को काम में लाकर सर्विस करें—यह भी इसी वजह से है।

आप अवसाद के समय किसी आदर्शवादी का सहारा ले सकते हैं। साथ ही साथ जीवन में व्यावहारिक तथा शैक्षणिक पहलुओं का समन्वय बनाते हुए चलें।

अपराध भावना का शिकार

क. ख. ग., रायपुर : मैं ३० वर्षीय युवक हूं, और जीवन बीमा निगम में १९७४ से कार्यरत हूं। इससे पूर्व मैं पोस्ट

आफिस में था। इस नौकरी को प्राप्त करने के लिए मैंने, जो आवेदन-पत्र दिया था, उसको विभागीय माध्यम से नहीं भेजा, बल्कि सीधे भेजा, साथ ही आवेदन-पत्र पर बेरोजगार अंकित किया, क्योंकि केवल २-३ दिन ही शेष बचे थे।**

अब हर समय मेरे मन में यह शंका रहती है कि कहीं उनको तथ्य का पता चल गया, तो नौकरी से हाथ न धोना पड़े। इससे भारी तनाव व असुरक्षा की भावना भर जाती है। चेतन मन जानता है कि आशंका मेरी कु-कल्पना की उपज है, पर अचेतन में वह बनी रहती है, फलस्वरूप अपराध भावना से ग्रस्त रहता हूं। कभी मन करता है कि अब जाकर सब बता दूं, परंतु कहीं सही जानकारी न देने की वजह से ही न निकाल दिया जाऊं।

समय के अभाव के कारण आवेदन-पत्र की एक प्रतिलिपि आप सीधे भेज सकते हैं; दूसरी को सही माध्यम के द्वारा भेजा जाना चाहिए था। यह आवश्यक नहीं कि आपका आवेदन-पत्र उन्हीं दो-तीन दिन में ही पहुंचे। हां, साक्षात्कार के समय आपको कोई बंधन नहीं का प्रमाण-पत्र पहलेवाले विभाग से लेकर देना पड़ता है।

आपके गुणों का पता आपके कार्यालय को मिल चुका होगा। इसलिए गुणों की वजह से भी नहीं निकालेंगे, चाहे आप बता भी दें।

आपको जब बहुत विचार सतायें, तब उस जगह से उठकर चल दें। मित्रों के बीच बैठें और कुछ हलकी गप-शप करें।

यह समस्याएं आपके घर की, अथवा काम की, या फिर आपके अंतर्द्वंद्व, व्यावहारिकता, सिद्धांत और कल्पना-शक्ति के कारण भी हो सकती हैं।

नस चटखती है

कमलेश पंत, नैनीताल : मैं बीस वर्षीया अविवाहित युवक हूं। अत्याधिक भावुक तथा ठेस पहुंचने पर नींद उचट जाती थी। ५ माह से नींद कम होते-होते खत्म हो गयी। गरदन की नस-चटखती है, कानों में कीड़े का रेंगना व खट-खट प्रतीत होता है। मस्तिष्क में किसी गीत या पंक्ति का हू-ब-हू उसी अंदाज में परिभ्रमण होने लगता है। ऐसा शुक्राणुओं की कमी से तो नहीं, क्या रक्त की जांच करानी चाहिए?

शुक्राणुओं की कमी से ऐसा नहीं होता, परंतु आपने ऐसा पूछा ही है, तो शायद, आप किसी अपराध-भावना से ग्रस्त हैं। शुक्राणुओं की कमी तो नहीं, परंतु तनाव व चिंताग्रस्त मनोस्थिति से भी यह समस्या खड़ी हो सकती है। वास्तव में अत्याधिक भावुकता तथा ठेस को न सह सकने को ही आप दोषी ठहरा सकते हैं। भावुक मन पर ठेस कैसे पहुंची, जिससे यह लक्षण हुए—यह भी आपकी बीमारी को समझने के लिए आवश्यक है। आपको तुरंत मनोचिकित्सक से दवा व सलाह लेनी आवश्यक है। ●

पिघलता रहा

रात एक दर्द पिघलता रहा बादल की तरह
हम सुलगते रहे भीगे हुए जंगल की तरह
सर्द रातों में भी चलते रहे दरिया-दरिया
तेरी यादों को लपेटे हुए कंबल की तरह
तू तो गंगा है तुझे याद है कुछ हम भी कभी
तुझ से वाबस्ता थे ब्रह्मा के कमंडल की तरह
कल मेरे जेहन से निकले तो हवाओं में उ
कुछ खयालात परीशां तेरे आंचल की तरह
दिल तो पत्थर हुआ, बरसों हुए इस घर में मगर
कौन तड़पे है मुसलसल किसी घायल की तरह

—सुरेश कुमार

'रंजिनी' मासिक, जी. टी. रोड, अलीगढ़-१

पागल मन

सूने-सूने बाग-बगीचे · सूना-सूना घर-आंगन
अंधकार में राह ढूंढ़ता भटक रहा है पागल मन
अपने हित में सब जीते हैं, सबके अपने सपने हैं
कोई चाहे मान-प्रतिष्ठा कोई चाहे दौलत-धन
इस दुनिया में मेरे भाई नफरत है, मक्कारी है
ढूंढ़ रहा हूं बस्ती-बस्ती में थोड़ा-सा अपनापन
मेरे आंगन में अंबर से आग बरसती है प्रतिदिन
मैं क्या जानूं कैसी भादों कैसा होता है सावन
हर इच्छा पूरी हो जाए यह कतई नामुमकिन है
यह सच्चाई टूट-टूटकर जान चुका है मेरा मन

श्याम बेबस

२/१३ ए, राजघाट रोड, अलीगढ़-१

गूंगा शहर

कुचले हुए हैं और कुछ तनकर खड़े हुए
हम इस तरह से देश में अपने बड़े हुए
सूरज की रोशनी से भी झरता है अंधेरा
इतिहास से भूगोल तक औंधे पड़े हुए
कुछ इस तरह से वक्त की बदली हुई नजर
पत्थर की जगह मील पर खंजर गड़े हुए
किसको दिखायें जख्म यहां कोई तो मिलें
गूंगा शहर है हर तरफ ताले जड़े हुए
ये जिंदगी है या कि किताबों का तरजुमा
जो भी नियम बनाये, गलत आंकड़े हुए
निश्चित पड़ेंगे काटने वे अंग अब हमें
जो बन चुके हैं कैंसर या जो सड़े हुए

राजकुमारी 'रश्मि'

द्वारा: सुरेश टेलर्स, चंपाबाग लश्कर, ग्वालियर-१

गुजर गये

हम कुछ उदास-उदास निगाहों से डर गये
मुद्दत के बाद लौट के जब अपने घर गये
खनकीं किसी किवाड़ की औटक से चूड़ियां
फिर मन की अल्पना में कई रंग भर गये
तितली ने आके प्यार से छेड़ा जो फूल को
मुरझायी पांखुरी से कई अश्क झर गये
फिर से किसी के नाम उठायी गयी कसम
फिर बेकसूर जाम के टुकड़े बिखर गये
मेंहदी के दर्द को न कोई आशियां मिला
सिंदूर चुटकियों में लिए दिन गुजर गये

—कुमार अनुपम

६४/२, पंचशील, गढ़ रोड, मेरठ-२

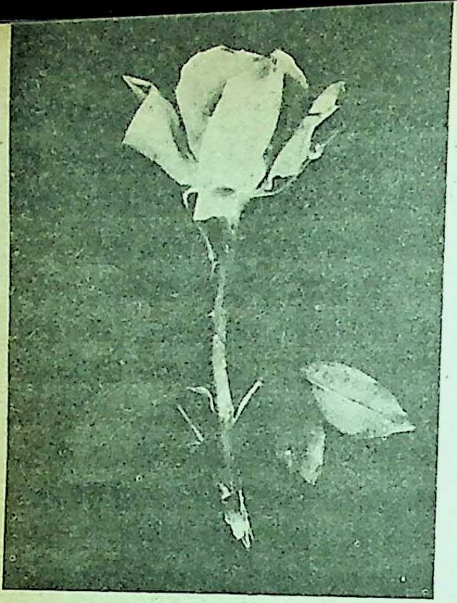

इंद्रधनुषी गुलाब

● फारूक अफरीदी

'गुलाब' शब्द सहज ही शुभ और सौंदर्य का बोध कराता है। गुलाब का वृहद् परिवार संसार भर में फैला हुआ है। रोजा वंश के रोजेसी परिवार से इसकी असंख्य शाखा-प्रशाखाएं विभाजित हुई हैं आज तक गुलाब की लगभग पांच सौ जातियां एवं प्रजातियां निर्धारित की जा चुकी हैं और किस्मों की संख्या तो दस हजार से ऊपर पहुंच चुकी है।

संसार के प्रायः सभी प्रमुख देशों की प्राचीन तथा वर्तमान संस्कृतियों से इसका गहरा संबंध रहा है। पांच हजार एक सौ वर्ष पूर्व भी गुलाब का अस्तित्व था। विश्व-विख्यात बेबीलोन के झूलते उद्या में गुलाब था और आज भी यह हमा निकट है। उन्नीसवीं शताब्दी के आर में सुदूरपूर्व से गुलाब ने पश्चिमी दे में प्रवेश किया था। पूर्व एशिया में दिनों उत्पन्न होनीवाली 'टी-रोज' गुला की प्रसिद्ध जाति थी और सैकड़ों व पहले से वहां उगायी जा रही थी, पू एशिया के 'टी-रोज' के अतिरिक्त फ्रां का 'फ्रेंच-रोज' और ईरान, यूनान तथ इटली के 'मस्क रोज' उद्यान योग्य गुला में अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

रंग-बिरंगे गुलाब

विश्वभर में आधुनिक गुलाब की विभिन्न किस्मों का प्रचलन है। इनमें से कुछ भारत में उगायी जा रही हैं। राज स्थान में भी गुलाब की खेती की जाती है। भारत में प्रमुख रूप से ओकलोहोमा, हेप्पीनेस, सुपर स्टार, किस ऑफ फायर, एफिल टावर, कांफीडेंस, मोंटेजुमा, विरगो, जॉन एफ, केनेडी, एनविल स्पा-र्क्स, मिरेंडी, क्रिमसन ग्लोरी, फर्स्ट लव, फैशन, इंडिपेंडेंस, फ्रेगरेंट, क्लाउड, वर्ल्ड-

गुलाब का संसार के प्रायः सभी प्रमुख देशों की प्राचीन तथा वर्तमान संस्कृतियों से गहरा संबंध रहा है। पांच हजार एक सौ वर्ष पूर्व भी गुलाब का अस्तित्व था और आज भी यह हमारे निकट है। गुलाब न केवल सुंदरता का प्रतीक है, बल्कि पंतीस से भी अधिक बीमारियों में यह औषध के रूप में भी उपयोग में लाया जाता है।

नेर, कालिमा, पिंक पेराफिट, क्वीन एलिजाबेथ, सी पर्ल, आइडियल, मेक् ग्रेडीज ट्रायंफ, मिस विलमोर, बर्निंग लव, इलाइट, फ्लेमिंग सनसेट, आइसबर्ग, मेजेंटा, मेसेज, ब्लयू-मून, आइस-व्हाइट गुलाब उगाये जाते हैं।

भारत के प्रमुख कृषि वैज्ञानिक डॉ. वी. पी. पाल, डॉ. विष्णुस्वरूप तथा उनके सहयोगी वैज्ञानिकों ने रक्तगंधा (वर्ग हाईब्रिड-टी), राजा सुरेन्द्र सिंह ऑव नालागढ़ (वर्ग हाईब्रिड-टी) तथा बंजारिन (वर्ग फ्लोरीबंडा) किस्मों का विकास किया है। यह आधुनिक किस्में निर्यात संभावनाओंवाली हैं। देहली प्रिंसेस, देहली व्हाइट, पर्ल, देहली पिंक पर्ल, इन्दिरा आदि भी प्रमुख किस्में हैं।

गुलाब से महकती पुष्कर घाटी

पुराने गुलाबों में 'रोजा डेमेसीना' की खेती इत्र, गुलाबजल, आदि बनाने के लिये देश के कई भागों में की जाती है। इसे 'दमश्क गुलाब' भी कहा जाता है। राजस्थान में हल्दीघाटी क्षेत्र में इसकी मुख्य रूप से खेती होती है, राजस्थान को ही पुष्कर घाटी में 'रोजा बोर्बोनियाना' की खेती व्यापक स्तर पर की जाती है।

राजस्थान में गुलाब की व्यावसायिक खेती की प्रबल संभावनाएं हैं। अजमेर पुष्कर घाटी में सुगंधित गुलाब 'रोजा बारबोनियाना' की खेती ३०० हेक्टर क्षेत्र में पिछले कई वर्षों से हो रही है। पुष्कर घाटी की माटी में गुलाब की महक रमी हुई है। इस क्षेत्र में उत्पादित गुलाब की ख्याति पूरे देश में फैल चुकी है।

पुष्कर घाटी में उत्पादित गुलाब, गुलकंद की सूखी पंखुड़ियां और इनका स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक गुलकंद न केवल राजस्थान बल्कि देश के कोने-कोने में पहुंच रहा है। बंबई, मद्रास, हैदराबाद,

दिल्ली, आगरा, हाथरस, उज्जैन और कलकत्ता तक यह पहुंचने लगा है। इस गुलाब की यह विशेषता है कि इसके पौधों में बारहों महीने पुष्प खिलते रहते हैं। इस कारण से इसे बारहमासी गुलाब भी कहते हैं। लगभग ३०० हेक्टर क्षेत्र में, दो दर्जन गांवों के ३०० किसान इस व्यवसाय में लगे हुए हैं।

गुलाब की खेती कई लोगों के लिए तो वरदान सिद्ध हुई है। एक गरीब किसान कुछ वर्ष पहले जहां दो समय का भोजन भी नहीं जुटा पाता था, वहां आज वह पुष्कर क्षेत्र में गुलाब की खेती के फलस्वरूप एक सौ बीघा क्षेत्र के फार्म का मालिक है। बंसेली में एक शिक्षित युवक के पास ८० बीघा गुलाब का फसली क्षेत्र है और कई काश्तकार उसके यहां नौकरी करते हैं। कोठी गांव के एक युवक ने न केवल अपने गांव में खेती का विस्तार किया, बल्कि उसने एक फार्म का सहयोग प्राप्तकर पचास-साठ किसानों का एक व्यावसायिक संगठन भी खड़ा किया है।

गुलाब औषधि भी है

पुष्कर घाटी का गुलाब गुलाबीपन के साथ मधुरता लिये हुए है। इसका सौंदर्य तो सुहावना है ही, मीठा गुलकंद भी बड़ा स्वादिष्ट है। पुष्कर घाटी में उगने वाले गुलाब का गुलकंद बहुत ही उम्दा किस्म का माना जाता है। यहां का गुलाब देश के विभिन्न भागों में ठंडाई और मिठाई के उपयोग के लिए भी भेजा जा रहा है। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह मे उर्स के समय ताजा गुलाब काफी श्रद्धा से अर्पित किया जाता है। कुछ किसानों ने इत्र बनाना प्रारंभ कर दिया है। यह काफी सुगंधित है। इत्र बनाने के लि फूलों को सामान्य किंतु शोधित तेल या चरबी में ५० डिग्री फारेनहाइट के बा तक गर्म किया जाता है। उस ताप पर वह तेल फूलों के तेल भाग अर्थात इत्र को सोख लेता है। तत्पश्चात आसवन क्रिया द्वारा इसे अलग निकाल लिया जाता है। दो किलोग्राम फूलों से लगभग १० ग्राम इत्र या ८५० मि. ली. गुलाबजल तैयार हो जाता है।

गुलाब का प्रयोग लगभग ३५ प्रकार के रोगोपचारों के लिए किया जाता है। शरीर का ताप बढ़ जाने पर बर्फ में ठंडा किया हुआ गुलाबजल तथा गुल रोगन का उपयोग किया जाता है। पेट की गर्मी बढ़ जाने पर गुलकंद खिलाया जाता है। गर्मियों में नित्यप्रति प्रयोग करनेवालों के लिए बादाम तथा अन्य मसालों के साथ गुलाब की पत्तियां एक अनिवार्य वस्तु है।

गुलाब उगाइए : विदेशी मुद्रा बढ़ाइए पुष्कर घाटी के किसान प्रति हेक्टर ५० से ६० क्विंटल फूल उत्पादन करते हैं और उससे उन्हें ८ से १० हजार रुपये प्रति हेक्टर प्रति वर्ष लाभ हो जाता है। गुलाब के अनुसंधान केंद्र की स्थापना से गुलाब के निर्यात और विदेशी मुद्रा की आशा भी बढ़ती है। —सहायक जनसंपर्क अधिकारी, सूचना केंद्र, उदयपुर-३१३००१

नोटों का आविष्कारक एक भिखारी

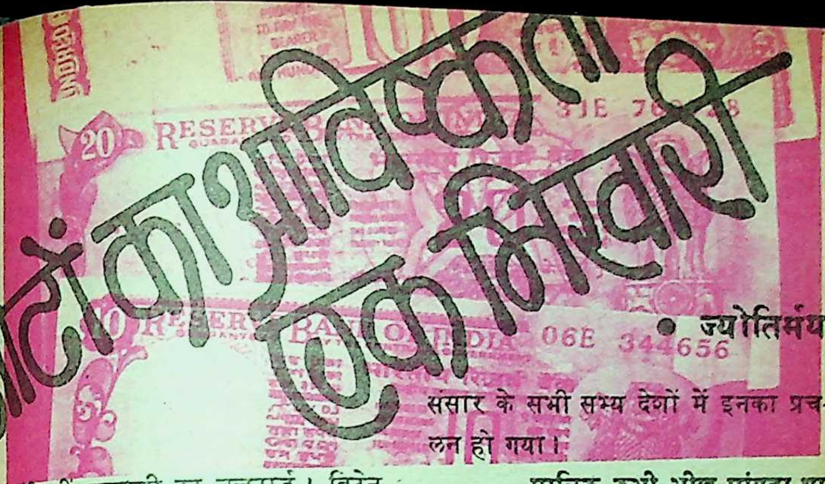

• ज्योतिर्मय

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध। ब्रिटेन का भाग्य-सितारा बुलंदी पर था और दुनिया के कोने-कोने से धन सिमटकर उसके भंडार में जमा होता जा रहा था। उस समय धातु के सिक्कों का ही प्रचलन था। इसलिए उन्हें लाने-ले जाने और रखने में बड़ी परेशानी होती थी।

१८५३ से ब्रिटिश डाक विभाग के लिए टिकटें छापनेवाले प्रेस के मालिक थॉमस रू ने सरकार के वित्तीय विभाग को सुझाव दिया कि डाक टिकटों की तरह ही सिक्कों का भी कागजी मुद्रा में प्रचलन किया जाए अधिकारियों ने इस सुझाव की खूब हंसी उड़ायी परंतु इससे वह निराश नहीं हुआ।

सन १८६४ में ब्रिटिश सरकार ने पहली बार थॉमस रू के सुझाव को गंभीरता से लिया और प्रयोग के तौर पर छोटी-छोटी रकमों के नोट छापे। लाने ले जाने और रखने में ये बहुत ही सुविधापूर्ण सिद्ध हुए और अगले वर्ष ही बड़े नोट भी छापे जाने लगे। फिर तो धीरे-धीरे संसार के सभी सभ्य देशों में इनका प्रचलन हो गया।

मालिक कभी भीख मांगता था

इस प्रकार कागजी मुद्रा को जन्म देनेवाले थॉमस रू के संबंध में बहुत कम लोगों को मालूम है कि वह बरसों भीख मांगकर गुजारा करता रहा। उसने अपनी जिंदगी ही भीख मांगने से शुरू की। छोटी उम्र में ही वह लंदन के एक गिरजाघर के बाहर जाकर खड़ा हो जाता और चर्च में जानेवाले लोगों से भीख मांगता। लोग उसे एक फर्दिंग, आधापेंस या अधिक हुआ तो एक पेंस का सिक्का थमा देते। चर्च में आने-जानेवालों की भीड़ जब समाप्त हो जाती तब वह अन्य स्थानों पर भीख मांगने के लिए निकल जाता किंतु वह चर्च ही उसके भीख मांगने का प्रमुख अड्डा था। कुछ दिनों बाद, उसका यह अड्डा भी छिन गया। चर्च के अधिकारियों ने उसे चर्च के सामने खड़े होकर भीख मांगने से मना कर दिया। उनका कहना था कि वह बहुत ही गंदा रहता है और उसके भीख मांगने का ढंग बेहद घृणास्पद है।

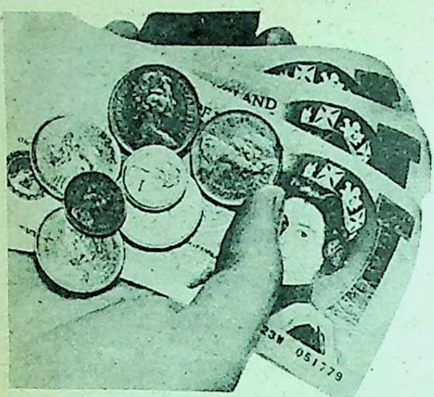

जब वह अपना गांव छोड़कर लंदन आया था, तब उसके मन में बड़ी उमंग थी कि वह भी कहीं काम धंधा कर अपनी रोजी-रोटी कमाये। इसके लिए वह लंदन के कई प्रतिष्ठानों और कारखानों में रोजगार मांगने गया, परंतु उसे निराशा ही हाथ लगी। वह कहता, "दो वक्त खाने को मिल जाए, इतने पर ही संतोष कर सकता हूं।" परंतु कोई भी उसे इतनी-सी मजदूरी पर भी, काम देने के लिए राजी नहीं हुआ। हर जगह से दुत्कार दिये जाने पर ही, विवश होकर पेट की आग बुझाने के लिए उसे भीख मांगने का रास्ता अपनाना पड़ा था।

अब भीख नहीं मांगूंगा!

२४ मार्च १७९३ को लंदन के पास एक छोटे से गांव में थॉमस रू का जन्म हुआ था। थॉमस तो उसे बाद में कहा जाने लगा, लोग उसे रू कहकर ही पुकारते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय थी कि ८ वर्ष का होते ही उसे जीविका की तलाश में गांव छोड़कर लंदन चले आना पड़ा। वहां वह रोजगार की तलाश में दर-दर भटका और गली-गली ठोकरें खायीं। अंततः उसके सामने भीख मांगकर पेट भरने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया। भीख मांगते समय भी उसके मन में आकांक्षा थी कि जैसे ही कोई काम मिल जाएगा, वह काम करने लगेगा और यह अपमानजनक जिंदगी छोड़ देगा। लंबे अरसे तक उसे कोई काम नहीं मिला। अलबत्ता उसने इतना जरूर किया, भीख में जो कुछ मिलता था, उसे रूखा-सूखा खाकर वह थोड़े बहुत सिक्के बचा लेता। एक दिन उसने अपनी रेजगारी गिनी, निश्चय किया कि अब उसे भीख मांगना छोड़ देना चाहिए और जल्दी ही कोई छोटा-मोटा काम शुरू करना चाहिए। उसने अपने पास इकट्ठी हुई रेजगारी से कुछ रंगीन कागज खरीदे और उनके फूल बनाये। कागज के फूल बनाकर वह गलियों और सड़कों पर उन्हें बेचता, लोगों से उन्हें खरीदने के लिए आग्रहपूर्वक कहता। उसके बनाये कागज के फूल बिकने तो लगे, परंतु उससे इतनी आमदनी नहीं होती थी कि भरपेट भोजन किया जा सके। आमदनी बढ़ाने के लिए उसने रद्दी कागजों की टोपियां बनाकर बेचना शुरू किया, जिन्हें बच्चे बहुत पसंद करते थे। अब उसे थोड़ी-बहुत आमदनी होने लगी थी।

रू फिर भी संतुष्ट नहीं था क्योंकि कभी तो फूल और टोपियों की बिक्री से पर्याप्त आमदनी हो जाती थी और कभी कुछ भी नहीं मिलता था। फिर भी वह जैसे-तैसे काम चलाता रहा। तब वह तेरह वर्ष का हो गया था और उसे रद्दी कागज खरीदने के लिए प्रेसों में जाना पड़ता था। जिस प्रेस से वह कागज खरीदता था, उसका मालिक विलियम, रू को दिनरात भागदौड़ करते देख बड़ा प्रभावित हुआ। एक दिन उसने रू से अपने प्रेस में काम करने के लिए कहा। उसे तो जैसे मनचाही सौगात मिल गयी। रू ने खुशी-खुशी विलयम का सुझाव स्वीकार कर लिया।

चुगली ने धक्के खिलवाये!

उन्हीं दिनों गांव से रू के पास उसका पिता आया हुआ था। पिता ने ही विलियम से सारी बातचीत की। यह तय हुआ कि रू कम से कम दस वर्ष तक उसी प्रेस में काम करेगा और उसकी योग्यता के अनुसार उसका वेतन भी बढ़ा दिया जाएगा। २४ शिलिंग प्रति माह पर उसे यहां नौकरी मिली। पिता ने एक लंबी रकम वेतन के रूप में ले ली और रू दस वर्षों के लिए प्रेस मालिक के यहां बंध गया। उसे केवल दोनों वक्त भोजन मिलता था।

उसने भीख मांगने से ही जिंदगी शुरू की। नौकरी मिली तो १० साल तक बंधुआ मजदूर रहा . . . और जब किस्मत पलटी तो प्रेस का मालिक बन गया

वह जी जान से मेहनत करता। प्रेस के बहुत से काम भी उसने सीख लिए परंतु विलियम ने उसके वेतन में कानी कौड़ी भी नहीं बढ़ायी। जैसे-तैसे १० साल पूरे हुए और सन १८१६ में उसने विलियम का प्रेस छोड़ा। वहां से नौकरी छोड़ते ही रू को सबर्ब प्रेस में अपेक्षाकृत अच्छे वेतन पर काम मिल गया। वह अपना काम बड़ी ही मेहनत और लगन के साथ करता था। जल्दी ही इन गुणों के कारण वह अपने मालिक का प्रिय बन गया। लेकिन उसके दूसरे साथी नौकर रू से इसी कारण जलने लगे और उसके खिलाफ कान भरने लगे। सबर्ब प्रेस का मालिक कुछ झक्की किस्म का आदमी था। नौकरों द्वारा रू की लगातार शिकायत किये जाने के कारण उसकी निगाहें भी बदल गयीं और मालिक ने उसे अपने यहां दो साल ही टिकने दिया। उसे न केवल नौकरी से हटा दिया बल्कि उसका पूरा वेतन भी नहीं दिया।

अब फिर रू सड़क पर आ गया। उसने जगह-जगह नौकरी तलाशने की

चेष्टा की पर हर जगह उसे असफलता ही हाथ लगी। एक बार फिर रू के दुर्दिन लौट आए और मजदूर होकर उसे याचक वृत्ति अपनानी पड़ी। उसने सार्वजनिक स्थानों, सड़कों, चौराहों तथा गिरजाघरों के सामने खड़े होकर भीख मांगना शुरू किया। जो भीख मिलती थी, उससे उसका पेट तो भर जाता था पर मन में बड़ी ग्लानि होती। भीख देनेवालों में कोई उसके प्रति सहानुभूति जताता तो रू उससे कोई काम दिला देने की याचना करता।

एक दिन उसने रिचार्ड बेस्ट नामक धनी युवक से भीख मांगी। बेस्ट ने उसे कोई काम करने की सलाह दी। रू ने उसे अपनी व्यथा बताते हुए कहा, "आप ही मुझे कोई काम दिला दीजिए!" बेस्ट ने उससे पूछा, "तुम क्या काम जानते हो?" उसने अपनी सारी आपबीती सुनाते हुए कहा कि वह १३ वर्ष तक प्रेस में काम-कर चुका है। बेस्ट इससे बड़ा प्रभावित हुआ। वह संपन्न था ही, इसलिए कई दिनों से उसके दिमाग में प्रेस खोलने की योजना घुमड़ रही थी परंतु इस व्यवसाय के मामले में वह एकदम कोरा था।

और किस्मत खुल गयी

भिखारी के रूप में रू उसे उस व्यक्ति के समान मिल गया जिसकी उसे बहुत दिनों से तलाश थी। उसने रू से कहा कि यदि वह ईमानदारी से काम करेगा तो उसे अपने प्रेस में साझीदार बना लेगा। सन १८२० में रू की किस्मत ने करवट ली और वह रिचार्ड बेस्ट के साथ प्रेस-व्यवसाय के क्षेत्र में उतरा। शुरू में धंधा चल निकला। इसके लिए रिचार्ड के प्रेस में स्टेशनरी का सामान छापा जाने लगा। रू अपने काम में तन्मयता और मनोयोगपूर्वक लगा रहता तथा खाली समय में नये-नये प्रयोग भी करता। उन दिनों ताश का प्रचलन नया ही नया था। ब्लॉक तो उस समय बनते नहीं थे। मोटे पट्टे पर हाथ से ही ताश तैयार किये जाते थे, ऐसे ताश दिखने में भी भद्दे लगते और महंगे भी होते थे। ताश की एक गड्डी का मूल्य था नौ शिलिंग। इस महंगेपन के कारण ताश का खेल केवल धनवानों तक ही सीमित था। थॉमस रू ने खाली समय में किये प्रयोगों द्वारा ताश छापने में सफलता प्राप्त कर ली। प्रेस में छपकर तैयार ताश अपेक्षाकृत सुंदर होने के साथ कीमत में भी सस्ते थे और बाजार में जल्दी ही चल निकले। लंदन के अलावा बाहर भी भेजें जाने लगे और धीरे-धीरे अन्य देशों से भी उनकी मांग आने लगी। इससे काफी आमदनी हुई।

मेहनत रंग लायी!

सन १८३२ में थॉमस रू ने अपने ताशों को तत्कालीन सम्राट् विलियम फोर्थ से 'पेटेंट' करा लिया। रिचार्ड बेस्ट की चित्रकला और थॉमस रू की मेहनत व लगन ऐसा रंग लायी कि कुछ ही वर्षों में उसकी गणना प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होने लगी। रिचार्ड तो खैर अपने समय

ज्ञान - गंगा

मा तात संपदामग्रमारूढोऽस्मीति विश्वसीः ।
दूरारोहपरिभ्रंशविनिपातो हि दारुणः ॥

—मैं ऐश्वर्य की सीमा पर पहुंच गया हूं ऐसा विश्वास नहीं करना चाहिए। दूर तक चढ़कर गिरना बहुत अधिक दुःखदायी होता है।

परं क्षिपति दोषेण वर्त्तमानः स्वयं तथा ।
यश्च कुप्यत्यमूढ़ः सन्स च मूढतमो मतः ॥

—अपने उसी बुराई और दोष से युक्त होते हुए भी जो दूसरे पर दोष लगाता है और विद्वान होते हुए भी क्रोध करता है वही सबसे बड़ा मूर्ख है।

कूटेन व्यवहारं तु, वृत्तिलोपं न कस्यचित् न
कुर्यात,चिंतयेत कस्य मनसाऽप्यहितं क्वचित॥

—कपटपूर्ण व्यवहार तथा किसी की जीविका का नाश कभी नहीं करना चाहिए। किसी के अनिष्ट का मन से भी चिंतन नहीं करना चाहिए।

उपकारप्रधानः स्याद्, अपकारपरेऽप्यरौ ।
संपद्विपत्स्वेकमना, हेतावीर्षेत् फले न तु ॥

—यदि किसी ने अपकार भी किया हो तो भी उस पर उपकार करने में अग्रसर रहना चाहिए। संपदा और विपदा में एक-जैसा रहना चाहिए। कोई किस कारण से बड़ा बना है, उस कारण के प्रति तो ईर्ष्या करनी चाहिए परंतु उस व्यक्ति से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।

—प्रस्तोता : महर्षिकुमार पाण्डेय

का प्रसिद्ध चित्रकार था ही। थॉमस रू की कलात्मक रुचि से प्रभावित होकर सम्राट् ने भी उसे सम्मानित किया। उन दिनों डाक-व्यवस्था में यह परिवर्तन हुआ था कि पत्र-प्रेषक को, पत्र डालते समय डाक-खर्च देने का नियम लागू हो गया था। इसके पहले, डाक-व्यय पत्र पानेवाले को देना पड़ता था। इससे काफी गड़बड़ियां होने के कारण ब्रिटिश संसद ने यह कानून बनाया परंतु यह काम भी कम झमेले का नहीं था।

सन १८५३ में थॉमस रू ने सरकार के सामने डाक-टिकटों के विक्रय की व्यवस्था का सुझाव रखा। सरकार ने इस सुझाव की उपयोगिता और लाभों को समझते हुए डाक टिकटों की विक्रय-व्यवस्था का ढांचा खड़ा किया। जिसमें पत्र लिखने वालों से डाक की सामग्री खरीदते समय ही डाक-व्यय वसूल कर लिया जाता। डाक व्यवस्था का वर्तमान स्वरूप थॉमस रू के मस्तिष्क की ही उपज है। थॉमस रू ने डाक-व्यवस्था के वर्तमान स्वरूप की तो नींव रखी ही उसका सबसे महत्त्वपूर्ण और आश्चर्यजनक करिश्मा था—कागजी मुद्रा के प्रचलन का सुझाव और सरकार द्वारा उसका क्रियान्वयन। बरसों तक थॉमस रू ब्रिटेन में डाक-टिकटों का एकमात्र मुद्रक रहा। उसकी मृत्यु के बाद यह काम अन्य लोगों के जिम्मे आया परंतु उसे एक ऐसे भिखारी के रूप में सदैव याद किया जाएगा, जिसने नोटों को जन्म दिया।

युगांतर चेतना, शांतिकुंज, हरिद्वार (उ.प्र.)

कहानी

रामनाथ का सपना

• भारत प्रकाश भाटिया

अपने घर से कोई फर्लांगभर की दूरी पर एक मकान के सामने से गुजर रहा था, तभी पीछे से किसी ने आवाज दी--

"राम-राम, भाई साहब।"

"जै सियाराम।" बिना देखे ही आदतन मेरे मुंह से निकल गया।

फिर वही आवाज आयी--"भाई साहब, जरा सुनें तो।"

मुड़कर देखा। वह अपने घर के आंगन में खड़ा था। मेरी ओर देखकर मुसकराया। बोला—"अरे, आप यहां से निकल रहे और मेरे घर... एक कप चाय तो..."

मैंने कहा—"इस समय जरा जल में हूं, फिर किसी दिन फुरसत से आ साथ चाय पीऊंगा।" वह मान गया। उस बारे में मैंने सुना था कि वह यहां का सब बड़ा प्रापर्टी डीलर है।

करीब एक घंटे बाद मैं घर लौटा तो वह वहां विराजमान था। मुझे दे

कुरसी से उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर बोला, "सोचा, आप तो हमारे घर चाय पीने आयेंगे नहीं, क्यों न मैं ही आपके घर चाय पी आऊं। यह भी तो परिचय का एक ढंग है।"

मुझे बरबस मुसकराना पड़ा—"अरे यह आपने अच्छा किया। थोड़ा जल्दी में था, अतः आपके घर नहीं रुक सका।"

पत्नी चाय बनाकर लायी, तो उसने तपाक से कहा—"नमस्ते बहनजी!" फिर चाय पीते-पीते बोला—"बहनजी, आपका मायका कहां है?"

"कल्याणपुर।"

"अरे, कल्याणपुर। वाह, तो आप मेरी सगी बहन लगीं। मैं भी कल्याणपुर का ही हूं।" और फिर आंखों में आंसू भरकर बोला—"जब भाई बहन मिलते हैं, तब हृदय में आनंद भर उठता है।"

चाय समाप्त होने पर वह बोला—"भाई साहब! मैं अपना परिचय देना तो भूल ही गया। मैं रामनाथ का साला हूं।"

"अरे। रामनाथ वही न, जिसकी जगह पर मैं पोस्ट होकर आया हूं।"

"जी, भाई साहब वही। अच्छा तो चलता हूं फिर दर्शन करूंगा।"

धीरे-धीरे रामनाथ के साले से मैं

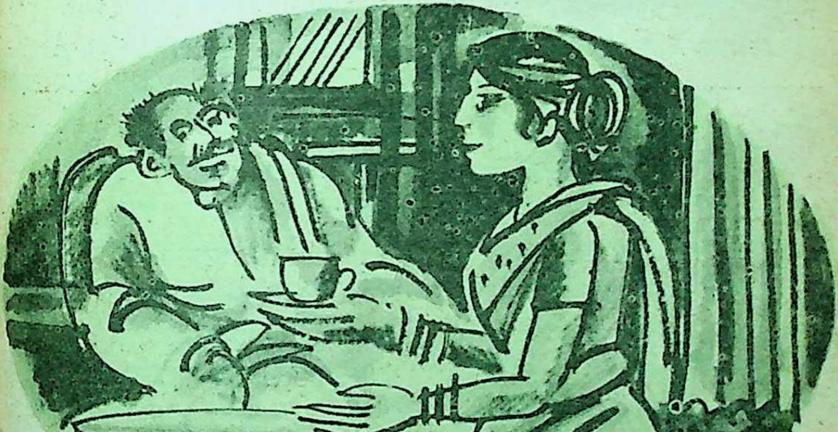

खुलता गया। वह मुझे छोटी-छोटी जानकारियां देता और मेरे परिवार का पूरा सदस्य-सा बन गया। एक दिन सुबह-सुबह मिठाई और फलों से लदा टोकरा ले वह घर आया। मैंने पूछा कि यह सब कहां से उठा लाये।

"भाई साहब, कल रात ही पत्नी मायके से लौटी है। ससुर साहब जमींदार हैं, नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते। कई बार समझाया है कि इतना भेजा करें कि इस्तेमाल में आये, पर वह अपने आगे किसी की चलने ही नहीं देते," कुछ रुककर फिर बोला, "यहां किस-किस के घर बटवाऊं यह सब? अपना तो यही एक घर है, पहले यहां रामनाथजी थे और अब उन्हीं के समान आप हैं मेरे लिए।"

मुझे आशा नहीं थी कि वह मेरे कार्यालय में आयेगा। इधर एक सप्ताह से नहीं मिला था। मैंने सोचा, अपने काम से फुरसत नहीं मिल पायी होगी।

"क्यों, इधर अधिक व्यस्त रहे क्या?'

"हां भाई साहब, मेरा काम ही दौड़ धूप का है। क्या करूं? किसी को जमीन खरीदनी है, तो किसी को मकान।"

"और सब घर में ठीक-ठाक है न।"

"हां, सब ठीक-ठाक हैं। आज एक जरूरी काम से आना हुआ है।" कहकर वह रुका। इधर-उधर देखकर फिर बोला, "इतवारी लाल, मेरा पुराना परिचित है। यह उसके मकान के टैक्स के कागजात हैं। इतना कहकर उसने एक फाइल मेरे सामने खोल कर रख दी।

"अरे, पिछले पांच साल से इसने निगम को एक पैसा तक टैक्स नहीं दिया है। पूरे डेढ़ हजार रुपया बकाया है इस पर और केस भी अदालत में दे दिया गया है। जरा पहले बताते तो कुछ न कुछ करता ही . . .।"

"देख लीजिए भाई साहब, पिछले महीने ही इसकी मां टी० बी० में गुजर गयी है। वह सदमा और यह दूसरी मुसीबत।"

"ठीक है, मैं देख लूंगा। तुम ऐसा करना इतवारी को सोमवार को ले आना। मैं सब करवा दूंगा।"

जब वह चला गया, तब मैंने अपने ओवरसियर को बुलाया।

"सीतासहायजी, आप इनकी पूरी केस-हिस्ट्री निकाल लाइएं।"

उसने पूरा केस मुझे समझाया और इशारे से कहा, "सर, आप इस व्यक्ति को नहीं जानते, जो केस लेकर आया है।"

"शट-अप। मुझे फालतू बातें सुनना पसंद नहीं है। इस केस को वापस लेना है और टैक्स ठीक कर दूसरे पेपर तैयार करवाइए।" मेरा सख्त चेहरा देख सीतासहाय सकपका गया। वह जानता था कि जो मैंने कह दिया, वह कह दिया।

एक दिन शाम, मैं घर लौटा तो पत्नी ने बताया कि वह रामनाथ का साला आया था। कह रहा था कि जीजी अब एक फ्रिज खरीद ही लो।

"फ्रिज ! कहां से खरीद लें ? पूरे पांच हजार के नोट चाहिए, एक अच्छे फ्रिज के लिए।" मैंने कहा।

"यही मैंने भी कहा था उनसे। पर वह बोले कि सब इंतजाम हो जाएगा।"

"क्या मतलब ?"

"मुझे मतलब तो पता नहीं। वैसे किश्तों में तो लेना ही है। वह किश्त डीलर को नहीं दी तो रामनाथ के साले को दे देंगे। इसमें कोई हर्ज हो, मैं तो नहीं समझती।" पत्नी ने अपनी राय दी।

"और क्या कहा था उसने ?"

"कहा तो कुछ नहीं। यह एक फाइल दे गये थे। बेचारे का कोई केस होगा। करवा दो न। तुम्हारा क्या जाता है।"

मैंने फाइल देखी। उसके अंदर जो कुछ देखा तो दंग रह गया। पूरे ढाई सौ गज के प्लाट पर एक फैक्टरी का नक्शा था। फैक्टरी को बने, पूरे दो वर्ष हो गये थे। पूरे केस को मैं भीतर तक जानता था। निगम की जमीन हथियाकर यह प्लाट बना था—आयल पेंट कंपनी का। केस कोर्ट में था और दो तारीखें भी पड़ चुकी थीं। फैक्टरी रामनाथ के साले की पत्नी के नाम से थी।

उस फाइल को देख, मैं सोच में पड़ गया। मेरे रोंगटे खड़े हो गये। फ्रिज और फाइल का आपसी संबंध खतरे से खाली नहीं। मैंने फाइल एक ओर पटक दी।

रामनाथ मेरा पुराना मित्र था। अब वह बदलकर दूसरे विभाग में चला गया था। पहले मैंने टेलीफोन से उससे बात करने का विचार किया, पर कुछ सोचकर उसके आफिस की ओर चला गया।

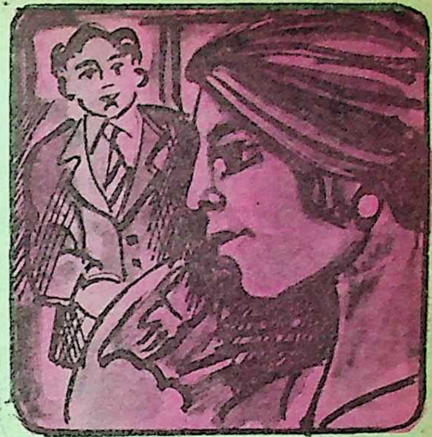

"अरे तुम ?" मुझे देखकर रामनाथ बोला।

"हां, मुझे ही आना पड़ा।"

इधर-उधर की बातों में ही मैंने असली बात छेड़ दी—"अरे रामनाथ। बड़ा अजीब है वह, तुम्हारा साला।"

"साला ? क्या मतलब ?"

"अरे वही, जो हमारी गली में रहता है।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा ?"

"कमाल है। तुम अपने साले को भी नहीं पहचानते।" और जब मैंने उसे पूरी बात बतलायी तब रामनाथ बोला—"अरे, हां। तुम्हारे पड़ोस में मेरे ससुराल के गांव का एक आदमी रहता है। मोटा और नाटे कद का ना ?"

"हां, हां, वही। वह तो धड़ल्ले से

कहता है कि मैं रामनाथ का साला हूं।"

"हां भई। वह ठीक ही कहता है। उसे अपना मकान बनवाना था। नक्शा-वक्शा पास था नहीं। सब कुछ गैर कानूनी। एक रोज मेरे घर आया। मेरी पत्नी से बोला—'बहन जी, आप तो ब्रह्मपुर की ही हैं न। मैं भी वहीं का हूं। अच्छा है, वर्षों बाद हम भाई-बहन फिर मिल गए। कितनी खुशी होती है मिलकर'।"

फिर ठंडी सांस भर कर रामनाथ

बोला—"और वह प्रायः आने लगा। जब भी आता, कुछ न कुछ लेकर आता। तब मैं तुम्हारी वाली सीट पर था। रोज मुझ पर दबाव पड़ने लगा और उसका मकान बनने लगा। कमेटी की बहुत सारी जमीन भी उसने घेर ली। एक फैक्टरी भी लगा ली। कमेटी वाले कार्यवाही करने जाते तो वह कहता—"कमाल है। मुझे नहीं जानते। मैं रामनाथ जी का साला हूं। चुपचाप चले जाओ'।"

फिर थोड़ा रुककर रामनाथ ने कहा—"कुछ ही दिन बाद उसके रंग-ढंग बदल गये। अब वह लोगों के काम भी करवाने लगा। किसी का कोई काम निगम में अटका होता, तो वह झट करवा देता और अपना कमीशन बटोर लेता। मैं बड़ा परेशान था। कई बार, मेरे घर में झगड़ा भी होता। अंत में, तंग आकर मैंने यहां से अपनी बदली करवा ली।" कहकर रामनाथ चुप हो गया।

शाम हुई। मैं घर आया। पत्नी चाय बनाकर ले आयी थी। बोली—"क्यों उस बेचारे को परेशान करते हो?"

"किसको ?"

"अरे, उसी रामनाथ के साले को। कोई छोटा-मोटा काम ही तो होता है उस बेचारे का। करवा दिया करो न। तुम्हारा क्या जाता है।"

मैं सब समझ चुका था। कल तक जो रामनाथ का साला था, वह अब मेरा साला बनने जा रहा है। मेरे से पूर्व जितने भी अधिकारी इस पद पर बैठे होंगे, वह सब का साला ही बनता रहा होगा।

मैंने तय कर लिया कि अब मैं उसका कोई काम नहीं करूंगा। चाहे जो हो।

पत्नी से कह दिया—"तुम्हारा मेरे आफिस के मामलों में दखल देने का कोई मतलब नहीं। तुम घर को देखो। अपने अधिकारों में ही बंधी रहो।"

इसका असर यह हुआ कि मेरे आगे रखी गर्म चाय ठंडी आहें भरने लगी।

रात चूल्हे में आग भी न जल सकी।

सुबह कार्यालय आकर मैंने अपनी बदली के लिए प्रार्थना-पत्र दे दिया। मुझे पता था कि जिस जगह पर मैं आज बैठा हूं, वहां कोई भी दूसरा व्यक्ति सहज ही आना चाहेगा। अत: मैं निश्चित हो गया।

शाम हुई! मैं घर आया। मेरा चेहरा उतरा हुआ था। पत्नी मेरे चेहरे के पीलेपन को भांप कर सहम गयीं।

"क्या बात है आज?"

"कुछ नहीं।"

"नहीं, कुछ तो है। बताओ न।"

मैंने जानबूझ कर ठंडी सांस खींची और बोला— "बड़ी मनहूस खबर है। मेरे तबादले के आदेश आ गये हैं।"

"तबादला?" वह जैसे आसमान से गिरी।

"हां, किसी ने मेरी शिकायत कर दी है।"

"शिकायत?" वह आगे कुछ नहीं बोल सकी। वह मेरे लिए चाय ले आयी।

"नहीं, मैं चाय नहीं पिऊंगा। मेरा मन ठीक नहीं है।" मैंने कहा।

मैं बदल कर उसी शहर में दूसरी जगह पर आ गया। मैंने मकान भी बदल लिया। मेरी पुरानी सीट पर मेरे ही एक परिचित अधिकारी गुप्ता जी आ गये।

मैं अपनी नयी जगह पर मन लगाकर काम करने लगा। घर का वातावरण भी मुझे बदलता हुआ नजर आने लगा। पत्नी के हृदय में न जाने कहां से पुरानी मिठास घर आंगन को भरने लगी। और मेरे जीवन के दिन सुनहरी पंखों पर बैठकर हवा में अठखेलियां करने लगे।

एक दिन मैं कार्यालय में बैठा था कि टेलीफोन की घंटी टनटना उठी। मैंने चोंगा उठाया—

"अरे गुप्ता, तुम। कहो क्या हाल है।"

"हाल। वह तो तुम्हें मिलने पर ही बताऊंगा। लेकिन यह बताओ...वह जो तुम्हारा साला... अरे वही, जो तुम्हारे पुराने घर के पास ही रहता है ... वह प्रापर्टी डीलर...?" "हां, हां, वही..."

गुप्ता बोल रहा था—मैं सुन रहा था।

"अरे, तुम समझ नहीं रहे...अच्छा, मैं आता हूं तुम्हारे दफ्तर। विस्तार से चर्चा करूंगा।" और उसने टेलीफोन बंद कर दिया। मैं किवाड़ की ओर मुंह करके गुप्ता के आने का इंतजार करने लगा...

—सी-५/६३, डी. डी. ए. फ्लैट्स
ईस्ट ऑव कैलाश, नयी दिल्ली-११००६५

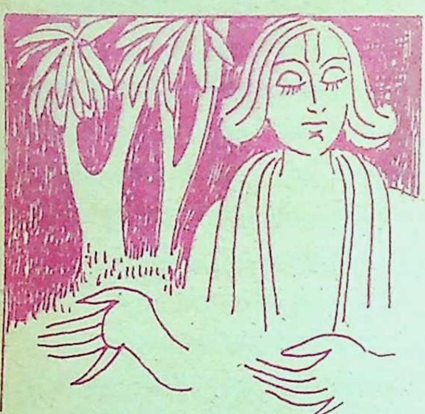

उद्धव

द्वापर का एक उपेक्षित राजव्यक्तित्व

● रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

उद्धव कृष्ण के अनुरागी सखा ही नहीं, यादव नरेशों (उग्रसेनादि) के मंत्री भी थे। महाभारत में उनका सर्वप्रथम उल्लेख (आदि पर्व में) इसी रूप में हुआ है और अर्जुन द्वारा सुभद्रा-हरण के बाद जब कृष्ण, बलराम एवं अन्य यादव वीर दहेज की प्रचुर सामग्री लेकर इंद्रप्रस्थ आये थे, तब उनके साथ उद्धव भी थे, जो महाभारतकार के शब्दों में महातेजस्वी, अनाधृष्टि (वास्तविक साहसी), साक्षात बृहस्पति के शिष्य परम बुद्धिमान, महामनीषी, परम यशस्वी थे। इनकी ज्ञान-गरिमा के कारण भागवतकार ने भी इन्हें साक्षात बृहस्पति का शिष्य बताया है। इनके पिता का नाम उपंग था। कहीं-कहीं इन्हें वसुदेव के भ्राता देवभाग का पुत्र भी बताया गया है। एक अन्य मत के अनुसार ये सत्यक के पुत्र थे। यदुवंश का उद्भव नहुष के पुत्र ययाति से माना जाता है—कालांतर में जिनसे विपुल यदुवंश की सृष्टि हुई। ययाति और देवयानी के संबंध परिणाम से यदु का जन्म हुआ था, जिनके नाम पर यह महान वंश चला था। भोज, वृष्णि, अंधक आदि यदुवंश की अनेक शाखाएं थीं। उद्धव वृष्णियों में एक प्रधान व्यक्ति थे। उनकी सौम्यता और आर्योचित चरित्र-दृढ़ता के कारण समस्त प्रतिस्पर्धी यदुकुल नायकों द्वारा उनके निर्भीक मत-प्रकाशन का आदर किया जाता था। प्रखर प्रतिभा-संपन्न, नीतिनिपुण, दूरदर्शी के रूप में उनकी ख्याति महाभारत और भागवत में बिखरी पड़ी है।

● भागवत का पराजित ज्ञानी

संपूर्ण प्राचीन कृष्णकाव्य में उद्धव का चरित्र प्रायः ज्ञानदूत के रूप में ही

उभरा है। उर्दू-काव्य के बहुचर्चित 'नासेह' की तरह वे समझाने-बुझाने की कला में स्वभावतः निपुण थे। जब-जब अवसर आता है, तब-तब उनकी समाधानी वृत्ति मुखर उठती है। उर्दू कवियों ने 'नासेह' (नसीहत देनेवाला) को पर उपदेश-कुशल दिखाते हुए उसे शुष्क समझदारी की बातें करनेवाला एक ऐसा नीरस नीति-शिक्षक बताया है, जो प्रेम की पीड़ा की अनुभूति तो क्या कल्पना भी नहीं कर सकता। उद्धव को तो होशो-हवास खोये हुए प्रेमविसुध बृजबालाओं की 'बिगड़ी हुई मंडली' मिलती है-जैसे धर्म-शिक्षा देनेवाले अभ्यस्त शिक्षक को पूरी की पूरी क्लास पढ़ाने के लिए मिल गयी हो। भागवतकार ने उद्धव के दूतत्व की भूमिका पर उपालंभपूर्ण भ्रमरगीत-काव्य की परंपरा का सूत्रपात करते हुए उन्हें एक ऐसे पराजित ज्ञानी के रूप में रचा है, जो कृष्ण के प्रति गोपियों की अनन्य 'कांता-प्रीति' से प्रसूत प्रगाढ़ विह्वलता और घनीभूत तन्मयता को देख-देखकर न केवल प्रभावित होता है, वरन अनुगत होकर उनका गुणगान करने लगता है। जो इतने प्रबल, देश के एक प्रमुखतम सर्वाधिक शक्तिशाली यादव राज्य-तंत्र का महामंत्री था और कृष्ण-जैसे युगावतार, युग-संचालक, युगसंस्थापक राजनीतिज्ञ का सहचर था (छाया की तरह हस्तिनापुर में भी उनका साथ न छोड़नेवाला)। वह हिंदी कृष्ण-काव्य में ज्ञान पर भक्ति की विजय का, भक्ति मार्ग की श्रेष्ठता के प्रतिपादन का आधार मात्र बनकर रह गया है।

भागवत के उद्धव

भागवत के उद्धव दार्शनिक, अद्वैतवादी, ब्रह्ममार्गी हैं, जो पहले नंदमहर और यशोदा को अपने दार्शनिक विवेचन द्वारा प्रबुद्ध करने का यत्न करते हैं। इसके बाद गोपियों को कृष्ण के प्रति अनुरक्ति से पूर्ण पाकर उनके मोहाच्छन्न हृदय को 'निर्मल बोध-बुद्धि' प्रदान करने का। गोपियां उनका उपहास करने, उन्हें बनाने में आधुनिकाओं को भी मात करती हैं, 'जिनके बीच कोई निवृत्ति की बातें करनेवाला, प्राचीन पद्धति के संस्कृत-पीठों का प्रवाचक दार्शनिक या 'स्यूडो' दार्शनिक आ फंसा हो। उसी अवसर पर वहां सहसा आ गये काले भौंरे के बहाने से श्याम-वर्ण उद्धव को गोपियों के तीखे, कठोर व्यंग्य सुनने पड़ते हैं। पर वे कृष्ण का गंभीर, दार्शनिक, आत्मनिरूपक संदेश उन्हें सुनाते ही जाते हैं। कृष्ण के भुवन-व्याप्त चैतन्य तत्व को उजागर करनेवाला यह संदेश उद्धव की वाग्मिता से मंडित होकर तत्व-ज्ञान का एक प्रवचन बन जाता है—जो घोर अरुचि-पीड़ित, विरह-दग्ध, मिलनातुर रूपविह्वालाओं को परोसा जा रहा हो।

सबक सिखाने भेजा था

भागवतकार ने उद्धव को महीनों ब्रज में ठहराकर गोपियों के हृदय-परिवर्तन का प्रयास कराया है। पर इस प्रक्रिया में स्वयं वे ही पूरे-पूरे परिवर्तित होते दिखाये

गये हैं। सूरदास ने तो उद्धव को कृष्ण के शब्दों में 'काठ की भांति कठोर, निष्ठुर, प्रेम-भजन से सर्वथा शून्य, अद्वैतदर्शी, निर्गुणव्रती, निठुर जोगी जंग' बताया है, जो दंभी हैं, अहंकारी हैं। कृष्ण-जैसे उन्हें सीधा करने के लिए, उनका अलखवादी अभिमान दूरकर उन्हें प्रेम-भक्ति में दीक्षित करने के लिए ही व्रज भेजते हैं, जहां गोपियां उनके ज्ञान-स्फीति के अभिमान को चूर-चूर कर देती हैं। सगुणोपासना के उस घनघोर युग में ज्ञान मार्ग को हर प्रकार हेठा ठहराना ही भक्त कवियों का लक्ष्य रहा होगा। इसी में उन्हें अपने कविकर्म की सार्थकता और जीवन-धर्मिता प्रतीत हुई होगी। 'कृष्णायन' को छोड़कर संपूर्ण हिंदी कृष्ण-काव्य में उद्धव का चरित्र सूरदास के उद्धव की भांति चित्रित हुआ है।

यथार्थदर्शी राजपुरुष

'कृष्णायन' एक राजनीति-निपुण और अन्यायी ब्रिटिश राजसत्ता से स्वाधीनता प्राप्ति के लिए लंबी जेल-यातना सहन करनेवाले कवि की रचना है। इसलिए 'कृष्णायन' के उद्धव इस दूतत्व से पृथक भी अपना राजमंत्रीवत व्यक्तित्व रखते हैं, जो कृष्ण के साहचर्य के प्रकाश में निखरता है। चतुर यथार्थदर्शी राजपुरुष के रूप में उद्धव ने कृष्ण के मथुरा जाने से लेकर कंस का वध होने तक साहसिक, नीतिपूर्ण भूमिका निबाही है। कंस के भय से यदु, वृष्णि, अंधक, मधु, दाशार्ह और कुकुर आदि वंशों के नायक या सामंत और जब भय से राजधानी छोड़कर इधर-उधर भाग गये थे, तब भी बलात् सिंहासनारूढ़ कंस द्वारा पदच्युत उद्धव धैर्यपूर्वक राज्य-परिवर्तन की प्रतीक्षा करते रहे और समय आते-आते उन्होंने उसके लक्षण समझ लिए थे। इसी प्रकार भागवत के एकादश स्कंध में कृष्ण द्वारा समस्त यदुजनों को प्रभास क्षेत्र जाकर (द्वारकापुरी खालीकर) भावी संकट और चारों ओर प्रतिक्षण हो रहे विनाश के अपशकुनों के कुफल से त्राण पाने के लिए, प्राणरक्षा की आज्ञा दी जाने पर क्रांतिद्रष्टा उद्धव ने सब कुछ समझ लिया। इसके बाद कृष्ण से जो-जो बातें उन्होंने कीं-जैसे तत्वज्ञानपूर्ण प्रश्न उनसे किये—लौकिक तथा पारलौकिक भोगों की असारता का निरूपण, बद्ध-मुक्त, भक्तजनों के लक्षण, कर्म तथा कर्म-त्याग की विधि, भक्तियोग की महिमा तथा ज्ञान-विधि-विधान, विभिन्न सिद्धियों और धर्म के समस्त रूपों—उपरूपों का सार, कर्म-योग की शाश्वतता, तत्वों की संख्या और पुरुष-प्रकृति-विवेक, सांख्य-योग, क्रिया-योग का रहस्य आदि को लेकर, वे उद्धव को 'प्लेटो' द्वारा वर्णित 'फिलासफर किंग' की संज्ञा प्रदान करते हैं। भागवत के इस स्कंध को भारतीय दर्शन का निचोड़ कहना चाहिए। वह उद्धव की तीक्ष्ण प्रश्नता और अतुलस्पर्शी (आत्म और परमात्म) जिज्ञासा से विद्युतालोकित है। उनके-जैसे श्रेष्ठ चरित्रवाले राजपुरुष का

प्रजा पर व्यापक प्रभाव अवश्य रहा होगा। बंदी उग्रसेन और आततायी कंस-पीड़ित प्रजा के प्रवक्ता के रूप में वे समयानुकूल प्रगट अवश्य होते रहे होंगे।

एक जन-नेता

उद्धव के इसी जन नेता रूप ने उन्हें सच्चे गणतांत्रिक अर्थ में प्रधान मंत्रित्व पद दिलाया होगा। बड़े से बड़े संकट में कंस के आतंक से मुक्त वे निर्भीक लोक-हितैषी के रूप में, असुरों से संचालित और आक्रांत मथुरा में अडिग डटे रहे। भागवतकार के शब्दों में वे कभी कभी मोहग्रस्त हो जाते हैं, पर इसके मूल में उनकी अपने आर्यधर्मी स्वामी और कुल के प्रति निष्काम निष्ठा ही है।

तत्कालीन राजनीति और देश की विषम आसुरी स्थितियों का उन्हें तीव्र वोध था, जो महाभारतकार के अनुसार उनकी यथार्थदर्शिता को व्यक्त करता है। एक ओर तो मगधपति सम्राट जरासंध द्वारा प्रवर्तित 'राजचक्र' रूपी साम्राज्यवाद था, जो वशवर्ती राज्यों के संपूर्ण सत्ताहरण पर आधारित था। महाभारत के सभा-पर्व में युधिष्ठिर के साथ राजसूय-यज्ञ की चर्चा करते समय कृष्ण ने जरासंध (वीराग्रणी भारतमहि अधिराज) के पराक्रम और प्रभाव की पूरी जानकारी उन्हें दी है। चेदि देश (बुंदेल खंड) का राजा शिशुपाल और करुष देश (जिसके अंतर्गत मध्यप्रदेश के वर्तमान रीवा संभाग, बघेलखंड के पूर्वीभाग तथा पूर्वी उत्तरप्रदेश और पश्चिमी बिहार के निकटवर्ती क्षेत्र थे) का राजा दंतवक्र जैसे प्रतापी नरेश (जरासंध के) 'राजचक्र' के प्रमुख सदस्य थे। हरिवंशपुराण के अनुसार जरासंध और शिशुपाल के पिता दमघोष एक ही वंश में पैदा हुए थे। दूसरी ओर प्राग्ज्योतिष (गोहाटी) का राजा भौमासुर अत्याचारी दैत्यों का अधिपति था, जिसकी भीषणता के कारण भागवतकार ने उसे 'नरकासुर' का नाम दिया है। उसने देव, नाग, गंधर्व, मानव जाति की कुमारियों का हरण कर-करके पाप की खान 'कन्यापुरी' बसायी थी। पश्चिम-उत्तर की ओर से यवनों के महिपाल कालयवन के प्रचंड आक्रमण होते रहते थे। सप्तनदवासी (पंजाव) उसके आतंक से कांपते थे। देश की पूर्वोत्तर और पश्चिमोत्तर सीमाएं आतंक से घिरी थीं और मध्यवर्ती समानधर्मा राज्यवंश उन असुरों को आक्रमण के लिए आमंत्रित करते रहते थे। इस

प्रकार पूरे देश पर छाये असुर-राज्य में कृष्ण का अवतारी बल ही आर्यधर्मावलंबियों में आशा की किरण जगाये था।

उद्धव को इन विषम, भयावह और नरसंहारकारी स्थितियों का तीव्र बोध था। उनमें जैसी प्रखर दार्शनिक मेधा थी वैसी ही पैनी, कटु राजनैतिक यथार्थों को पहचाननेवाली सामरिक और प्रशासन दृष्टि भी। उन्हें न तो ज्ञान का कोई अभिमान था और न किसी असाधारण प्रज्ञा का ऐसा बोध, जो कहीं भी किसी प्रकार से गर्वव्यंजक हो। कृष्ण के लगभग निरंतर साथ रहनेवाला, हस्तिनापुर और द्वारकापुरी में उनका रण-संचालक और युग-संचालक रूप देखनेवाला किसी प्रकार का आत्मभ्रम अपने भीतर कैसे रहने देगा ? फिर उद्धव तो तत्त्वज्ञानी थे। यदुसभा में जो उनका राजसम्मान था (कंस के अन्यायी निरंकुश शासन के पहले और उग्रसेन को कृष्ण द्वारा फिर सिंहासन पर बैठाये जाने के बाद) और उनके मत-प्रतिमत का जो आदर था, वह उनकी सहज, सात्विक, अमात्योचित गंभीरता के कारण ही। पदच्युति की उपेक्षित स्थिति में भी अपनी मर्यादा और तेजस्विता की रक्षा उन्होंने की।

कंस-कुल का नाश निकट जानकर भीत यदुजन मथुरा छोड़कर जब फिर अन्यत्र जाने लगे, तब उद्धव ने न राजधानी छोड़ी थी और न आर्यधर्म के प्रति अपनी आस्था। उत्थान-पतन के इस 'बंधुरपंथा' अनुभव ने उनके आत्मसंयम और यथार्थ बोध को तीव्रतरकर उन्हें और भी प्रबुद्ध कर दिया था।

कृष्ण-महाप्रयाण के साक्षी उद्धव

महाभारत में वर्णित 'राजचक्र' का ह्रास और दो-दो राज्यवंशों का (कुरुवंश और यदुवंश) करीब-करीब निर्मूल विनाश अपने जीवनकाल में देखनेवाले उद्धव ने देश को विषम और त्रासद स्थितियों में फंसते और उनसे उबरते देखा था। यही नहीं, कृष्ण का महाप्रयाण भी उन्हें देखना पड़ा—उन कृष्ण का जिन्होंने मथुरा का राज्य जीतकर अपने शौर्य से अर्जित राज-मुकुट उसके पूर्वाधिकारी उग्रसेन के सिर पर रख दिया था। द्वापर के अंतिम चरण की सारी दुर्नीति का बढ़ना और मिटना उद्धव ने देखा था। यादव राजवंश के ऐसे प्रधानामात्य को कालांतर में एक उपदेशक दूत मात्र बनाकर रख छोड़ा गया, इसका कारण केवल गोपियों की कृष्ण के प्रति मधुरा भक्ति की बाढ़ है, जो साहित्य में अगाध रूप, रस, लालित्य और मधुरतम कारुण्य की सृष्टि कर चुकी है। उसी की घहराती गंगा में उद्धव का ज्ञान-गर्व (यदि वह सचमुच रहा होगा) तो वह ही गया, उनका सारा नीति-निपुण, मेधावी महामंत्रित्व भी बह गया और आज तक केवल ज्ञान-दूतत्व ही उनके हाथ लगता चला आया।

—साउथ सिविल लाइंस,
पचपेढ़ी, जबलपुर

मृत्युंजयी योगी आज भी हैं

• श्याम बिहारी आलोक

परमहंस योगानंदजी द्वारा लिखित 'ऑटो बायोग्राफी ऑव ए योगी' में एक ऐसे महायोगी का वर्णन है, जो आज भी सशरीर उपस्थित हो जाते हैं। ये महायोगी श्री लाहिड़ी महाशय के गुरु महावतार बाबाजी हैं। इनका निवास आज भी हिमालय के उत्तरी अंचल में स्थित बद्रीनारायण के नजदीक एक पर्वत शिखर पर है। ये युग-युगांतर से अपना शरीर धारण करते आ रहे हैं।

बाबाजी प्रायः हिंदी में संभाषण करते हैं। उनके शरीर पर आयु का कोई प्रभाव नहीं दिखायी पड़ता है। वे ज्यादा से ज्यादा पचीस वर्ष के युवक जैसे मालूम पड़ते हैं। गेहुंआ रंग, मझोले कद वाले बाबाजी के सुंदर और बलिष्ठ शरीर से सतत ज्योति प्रस्फुटित होती रहती है। उनके नेत्र काले, शांत, दयार्द्र एवं लंबे चमकीले केश ताम्रवर्ण के हैं। बाबाजी मंडली के साथ पर्वतों पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक घूमते रहते हैं। उनकी छोटी-सी मंडली में दो अमरीकी शिष्य भी हैं। एक स्थान पर कुछ समय तक रहने के बाद बाबाजी का आदेश होता है, "डेरा डंडा उठाओ।" इस संकेत के अनुसार उनकी मंडली किसी अन्य स्थान के लिए शीघ्र चल पड़ती है।

एक बार बाबाजी की साधु मंडली में एक अपरिचित व्यक्ति आकर खड़ा हो गया। वह नजदीक के एक दुर्गम पर्वत शिखर को लांघकर आ पहुंचा था। उसने आते ही विनीत स्वरों में बाबाजी से कहा, "आपकी खोज में भटकता रहा हूं। मुझे शिष्य रूप में ग्रहण कर लें।" बाबाजी मौन रहे। आगंतुक बोला, "यदि आप मुझे अस्वीकार करते हैं, तो मैं अभी इस पर्वत पर से कूद कर प्राण त्याग देता हूं।" बाबाजी ने उपेक्षा से कहा, "तो फिर कूद जाओ! मैं तुम्हारी वर्तमान अवस्था में स्वीकृति नहीं दे सकता।"

बाबाजी का अस्वीकृतिभरा शब्द सुनकर वह व्यक्ति उसी क्षण पहाड़ पर से कूद गया। कुछ समय बाद बाबाजी ने अपने शिष्यों को उस अपरिचित व्यक्ति का शव लाने का आदेश दिया।

मृतक जीवित हो उठा

बाबा जी ने मृतक के सिर पर हाथ रखा। तत्क्षण मृतक ने अपनी आंखें खोल दी। बाबाजी ने उसकी ओर प्रेमभरी दृष्टि से देखा और आशाभरे शब्दों में कहा, "अब तुम शिष्य बनने के अधिकारी हो गये हो। अब मृत्यु तुम्हारा पुनः स्पर्श नहीं कर पायेगी।"

—बोस्टेड रोड, बाढ़, पटना (बिहार)

सही कहानियां

पाठकों को : लेखकों को नहीं

- इस स्तंभ के लिए रचनाएं भेजते समय ध्यान रखिए :
- कोई भी रचना वापस नहीं की जाएगी
- इसलिए उसकी प्रतिलिपि अपने पास रख ल।
- साथ में टिकट लगा लिफाफा न भेजें।
- इस स्तंभ में किसी तरह का पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा।
- अगली प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि
- ५ मई, १९८१

हम आपकी कहानी भी छापेंगे--११

ठगी का नाटक

--डॉ. सरोजनी कुलश्रेष्ठ

एक दिन मैं अकेली घर लौट रही थी। अचानक एक युवक मेरे साथ-साथ चलते हुए पूछने लगा—"क्या आपने यहां एक साधु को देखा है ? बहुत पहुंचे हुए महात्मा हैं।" तभी किसी ने पीठ की ओर से उसको छुआ। बस, वह तो घूमकर दंड की तरह एकदम उस व्यक्ति के चरणों में गिर पड़ा।

मैं समझ गयी कि यही व्यक्ति इसका 'साधु' है। साधु हंसकर मुझसे कहने लगा—"देखिए यह बालक मेरे लिए मरता भी है और मेरी बात भी नहीं मानता।" फिर उसने युवक से कहा—"ला, अपना सब कुछ मुझे दे दे।" लड़के ने अंगूठी, घड़ी, रुपया आदि सब साधु के हाथ पर रख दिया और चलने लगा। उसके कुछ दूर जाने पर ही साधु ने हंसकर आवाज दी, "अरे यह सब ले जा। मैं तो तेरी परीक्षा ले रहा था।" लड़का लौट आया और मुझसे बोला, "बहिनजी आप भी सब कुछ दे दीजिए, आपको भी मेरी तरह सभी कुछ वापस मिल जाएगा।" अब तक मैं पूरी तरह सम्मोहित हो चुकी थी। अतः पर्स में से सभी रुपये-पैसे यहां तक कि अंगूठियां तथा कानों के टॉप्स भी दे दिये। इन्हें कागज की एक पुड़िया में बांधकर मुझे देते हुए कहा, "जब तक मैं न आऊं, यहीं खड़ी रहना।"

वह १५ मिनट में लौट आया और आभूषणों की पुड़िया पुनः मांगी। साधु ने मेरे ही रुमाल में पुड़िया बांधकर मुझे पकड़ा दी और कहा, "घर जाकर दो बजे इसे खोलकर सब कुछ पहन लेना।"

घर आकर पुड़िया खोली, तो उसमें ठीकरे देखकर स्मृति वापस लौटी; अच्छा तो यह ठगी का नाटक था।

--कि. र. महिला महाविद्यालय, मथुरा

कितनी भयंकर अस्पृश्यता

—देवेन्द्र पाठक 'महरूम'

मेरे गांव की आबादी लगभग ३००० है। चमार, हरिजन, भूमिजन काफी तादाद में हैं, परंतु भंगी एकदम अकेला है। गांवभर की सफाई, मरे हुए कुत्ते, बिल्ली उठाकर फेकने का कार्य वही करता है। चमार केवल गाय, भैंस, बैल ही चीरते हैं।

एक दिन भंगी ने मरा हुआ कुत्ता फेकने का पारिश्रमिक २० रुपये मांगा, तो सवर्णों में खलबली मच गयी। भंगी को बुलाया गया। जिरह हुई, भंगी ने अपनी दुःस्थिति स्पष्ट की, "... मुझे मीलभर चलकर नदी से पानी लाना पड़ता है, सरकारी पंप मेरे घर के सामने क्यों नहीं लगवाया गया। चमार भी हरिजन हैं, उनकी संख्या ज्यादा है, उनका अपना एक अलग कुआं है। उस कुएं से पानी भरने की भी रोक है मुझे, क्यों ? इसीलिए मैं भी अपनी मजदूरी बढ़ाकर ही लूंगा।"

मान्य व्यक्तियों ने चमारों को डांटा और उस कुएं से भंगी को भी पानी भरने को कहा। चमार भड़क उठे, बोले, "आप अपने कुएं से उसे पानी भरने दीजिए।" हमारे एक ठाकुर साहब ने ताव खाकर कहा, "हां, मैं अपने कुएं से पानी भरने दूंगा भंगी को।" चमारों ने कहा, "लेकिन ठाकुर साहब ! हम भंगी का छुआ पानी तो नहीं पीयेंगे, वैसे आप भंगी से पूछिए, "क्या वह चमारों का छुआ पानी पीयेगा?" भंगी से पूछने पर उसने भी चमारों के हाथ का पानी पीने से इंकार कर दिया।

—भुड़सा (म. प्र.)

पुलिसवालों ने चोरी की

—सलिल भट्टाचार्य

मेरा मित्र राजेश, एक ट्रक ड्राइवर है और उसकी ससुराल बदायूं के निकट एक गांव में है। विवाह के बाद प्रथम बार ससुराल जा रहा था, अतः बढ़िया सूट और ऑटोमैटिक घड़ी पहने था। ससुराल पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो गया। जब घर कुछ ही दूर रह गया था कि अचानक चोरों ने उसे घेर लिया और रोककर कपड़े-लत्ते, घड़ी, रुपये, पैसे सभी कुछ लूट लिया। दुःखी मन से राजेश ससुराल पहुंचा, तो वहां कमरे में, खूंटी पर टंगा उसे अपना सूट देख अवाक रह गया और चल दिया कोतवाली—रिपोर्ट लिखाने। वहां देखा, दरोगाजी उसकी एच. एम. टी. 'काजल' (घड़ी) को कभी इस कलाई पर बांध रहे थे, तो कभी उस कलाई पर। यह दृश्य देखकर राजेश इतना भयभीत हुआ कि उल्टे पांव बदायूं भाग आया।

—बदायूं (उ. प्र.)

लोकजीवन और उसकी परंपराएं किसी न किसी रूप में सदा जीवित रहती हैं। नाम या रूप चाहे भले ही बदल जाएं, पर मूल तत्व अंत:सलिला के समान बराबर प्रवाहित होता रहता है। इसी लोक की किसी विशिष्ट छाया को तराशकर, संस्कार देकर हम उसे अभिजात बना देते हैं। और अभिजात में आते ही वह परंपरा ठहर जाती है। पर, वह ठहरी हुई छाया ही रहती है। मूल धारा अपनी पूर्वगति से ठहरती, मचलती, उछलती बहती ही जाती है। परंपरा से हम सदा बंधे रहते हैं। परंपरा जीवन के अवांछित तथ्यों की उपेक्षा तो करती ही है, साथ ही वांछित नवीन उपकरणों का संग्रह भी करती जाती है। भारतीय नाट्य की एक विधा---भाण की भी प्राय: यही स्थिति है। वह साहित्य में आगमन से पूर्व एवं पश्चात, परंपरा में विद्यमान था और आज भी है।

नैषधकार के अनुसार भण् का अर्थ होता है---कहना, वर्णन करना। अर्थात् कथा अथवा पाठ। कथा कहनेवाला या पाठ करनेवाला कहलाता है 'भाणक'।

जनसाधारण में कथा कहना सरल नहीं है। कथा-वाचक को कथा या कथा-पुस्तक का पाठ करना होता है और साथ ही उपस्थित जनता को हाव-भाव सहित समझाना भी। हाव-भाव में उसे आंगिक और वाचिक अभिनय भी करना होता है।

लोक परंपरा में भांड

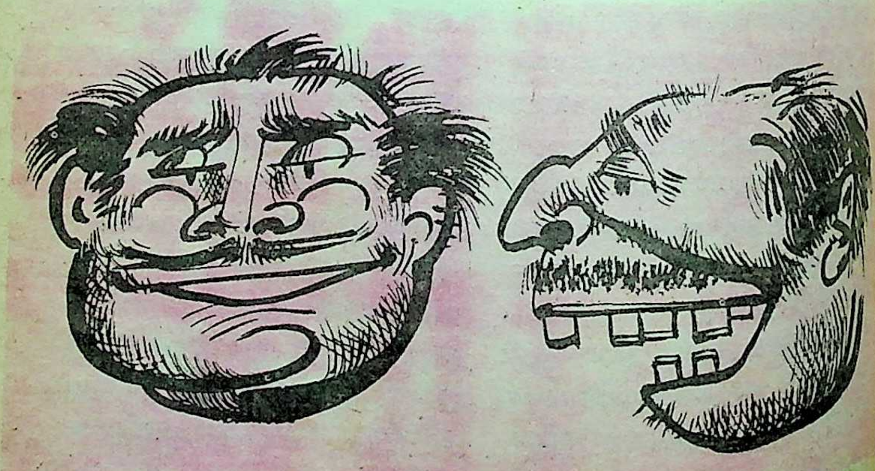

● डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

भणक अथवा भाणक कथा कहते समय अभिनय करता था। अभिनय में हंसी-मजाक का पुट भी रहता ही था। इसलिए केवल हंसी-मजाक करनेवाला मसखरा 'भांड़' कहलाने लगा। इसी से 'भड़ैत' शब्द बना, जो आज भी प्रचलित है। पर आज, भांड़ गणिकाओं के दलालों को ही कहा जाता है । इसका कारण भी प्राचीन परंपरा के गर्भ में छिपा है। गणिकाओं के घर उत्पन्न और आश्रितों को मृच्छकटिक में बंधुल कहा गया है। ये गणिकाओं के घर बड़ी मौज-मस्ती में रहते थे। पर आज के ये भांड़ चाहे जो भी हों, प्राचीन काल जैसे नहीं हो सकते। क्योंकि वे भांड़ मसखरे होते थे और पंडित भी। उनके मजाक में भी पांडित्य होता था। पर धीरे-धीरे गणिकाओं तक ही सीमित रहने से समाज से इनका नाता टूट गया और ये भांड़ असामाजिक बनकर रह गये।

> **भाण समस्त शास्त्रीय घटाटोप से मुक्त है—नितांत स्वतंत्र, स्वच्छंद, मुखर। उसकी प्रखर व्यंग्य-धारा में धर्म और राजनीति, साधु और राजा, विज्ञान और पंडित सभी बहते रहते हैं . . .**

कथक इन्हीं से जन्मा

कालांतर में केवल हंसी-मजाक से भरे चतुर अभिनय से कथा कहनेवाला 'भाणक' कहलाया और नाच-नाचकर कथा कहने वाला कथक। यही कथाश्रित नर्तन परवर्तीकाल में 'कत्थक' कहा जाने लगा।

भाणक को जनरुचि के अनुरूप, मसखरेपन से भरे कथानक चयन करने पड़ते थे, जिसके लिए धूर्तों का चरित अधिक उपयुक्त होता था क्योंकि धूर्त चरित को सुनने में लोगों को अधिक आनंद आता था। सर्वसाधारण को मजा आये—ऐसी दो ही धाराएं हैं—शृंगार और वीर रस से पूर्ण कथाएं। सामान्य जनता का इसी ओर आकर्षण होता है। भाणकों ने वीर की अपेक्षा शृंगार को ही अधिक प्रश्रय दिया। शृंगार में भी गणिका-संबंधी, सामान्य शृंगार ही स्वीकार किया गया।

स्पष्ट ही गणिका-संबंधी शृंगारमय चटखारे लेते हुए फबतियां कसकर बातें करनेवाला सरल प्रकृति का नहीं हो सकता। वह स्वयं भी धूर्त ही होगा । वह या तो अपने अनुभव सुनाता या फिर दूसरों के। परंतु वे होते बहुधा काल्पनिक ही हैं। इन अनुभवों को सुनाने की उसकी शैली बड़ी रोचक होती है। रोचकता बढ़ाने के लिए वह कई उदाहरणों, उपमाओं, कलाओं,

विविध ज्ञान-धाराओं तथा विशिष्ट शैली का ही उपयोग नहीं करता, अपितु अद्‌भुत कल्पना-क्षमता का भी परिचय देता है। वह इन विविध ज्ञान-धाराओं में निष्णात भी होता है। परंपरा में जिसे 'भाणक' कहते थे, साहित्य परंपरा में उसे विट कहते थे, जो एक धूर्त पंडित होता था।

विट की प्रस्तुति अत्यंत कलात्मक होती थी। वह अपने अभिनय में दस प्रकार के लास्यांगों का सन्निवेश कर प्रस्तुति में चार चांद लगा देता था। वह वीणा के द्वारा गाये जानेवाले गेय पदों का भी उपयोग करता था। कामोत्तप्त नायिका का प्राकृत गीत, शोक और चिंता से शोक संतप्त गीत आदि सुनाये जाते। वाद्यसहित नर-नारी की विपरीत चेष्टावाले विविध छंदों में पुष्पगंडिका भी प्रस्तुत की जाती थी। खंडिता नायिका के प्रच्छेदक गीत भी सुनाये जाते। स्त्री-वेशधारी पुरुष के मधुर-गीत सहित नृत्य द्वारा त्रिगूढ़क भी दिखाया जाता था। प्रिया के न आने पर संकेतस्थ नायक के सैंधव गीत भी गाये जाते। रस-भावसंपन्न उत्तमोत्तमक भी प्रस्तुत किये जाते थे, और अंततः उक्त प्रत्युक्त गीत भी प्रस्तुत किया जाता था, जिसमें मान और प्रसाद, नायक का तिरस्कार, रस-संपन्नता, हाव और हेला, चित्रबंध, प्रश्नोत्तर, उपालंभ तथा झूठी बातों के साथ ही विविध शृंगार-चेष्टाएं भी की जाती थीं। इन सबसे कथानक में अधिक सरसता आ जाती थी।

वस्तुतः ये जहां खड़े हो जाते वहीं मजमा जमा लेते थे। आज भी ऐसे मजमा जमाने-वाले लोगों की कमी नहीं है; न गांवों में न नगरों में। ये अपनी बात शुरू करते ही समां बांध देते हैं। उनकी वार्ता के साथ ही श्रोता डूबता-उतराता रहता है। उसमें कथा-सूत्र अत्यंत सूक्ष्म होता है। केवल विवरण और प्रस्तुतीकरण की क्षमता ही विशिष्ट होती है। कला उस प्रस्तुति में ही है। प्रसंग समाप्त होने पर हंसी-ठट्ठे करते लोग अपने-अपने मार्ग चल देते हैं। वह प्रसंग वहीं समाप्त हो जाता है। इसीलिए भाण में एक ही अंक होता है, और आज के चौराहे नाटक का पूर्व रूप भी उसमें पाया जा सकता है। मूलतः इसमें न रंग-मंच की आवश्यकता थी, न पर्दे की।

लोक में प्रचलित इन आनंद-वार्ताओं की परंपरा को ही नाट्य की अनुरूपता प्रदान कर दशरूपकों में स्वीकार कर लिया

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त
एक दूरबीन मुफ्त!!!

गया। जब कथानक होगा, तब उसमें पांच नहीं, तो कुछ संधियां स्वयं ही समाविष्ट हो जाएंगी। यह विवरण-प्रधान है। अतः आरंभ और समापन की द्योतक केवल दो संधियां इसमें होंगी—मुख और निर्वहण, तात्पर्य यह कि भाण समस्त शास्त्रीय घटाटोप से मुक्त है—नितांत स्वतंत्र, स्वच्छंद, मुखर। उसकी प्रखर व्यंग्य-धारा में धर्म और राजनीति, साधु, राजा, विद्वान और पंडित सभी बहते रहे हैं।

आज भी जिंदा है लेकिन . . .

जो लोग इस कला को धंधा बना लेते थे, वे आज के जोकर की समभूमि पर होते थे, जो लोगों को हंसाकर, मनोरंजन कर अपने आंसू पोंछते थे, अपना तथा अपने परिवार का पेट भरते थे। लगता है इस प्रकार का एक वर्ग ईसा से पूर्व को शताब्दियों में ही तैयार हो गया था।

मडित तथा भण्डित की परंपरा में मालवी में आज भी भड़ैत तथा भड़वा शब्द प्रचलित हैं। मराठी में आज भी भांड़-परंपरा विद्यमान है। गुजरात में आज भी भांड़ तथा भवई होती है। इस लोकनाट्य में गाली-गलौज भी आम बात है।

परवर्ती काल में इस परंपरा को साहित्य ने भी स्वीकार लिया। पर लोक-परंपरा की संजीदगी और जीवंतता का वह अधिक समय तक निर्वाह नहीं कर पाया। हां, लोक-धारा कभी टूटी नहीं। वह परंपरा आज भी सर्वत्र जीवित है।

—१२ वीर दुर्गादास मार्ग, उज्जैन

खाद

हो सकता है—
क्रांति होने से पहले ही
हम और तुम
क्रांति के सपने की खाद बन जाएं
जो अभी धरती के गर्भ से
फूटने ही वाला है

मेरे और तेरे जैसे
अनेकों गर्म रोष
खाद बन चुके हैं जिसकी
पर अब मिट्टी नर्म हो चुकी है
हल्की हो गयी है जमीन
जुताई भी काफी हो चुकी है
दरकार है केवल सिंचाई की
जो खाद की गर्मी को खौला दे
और अंकुर क्रांति का फूट जाए

पर सिंचाई पानी से नहीं
दृढ़ निश्चय
फौलादी इरादे
हौसले / और तमन्नाओं के नये खून की
चाहिए

जो बह सके / लाल-लाल
और भर सके लबालब
देश की ऊबड़-खाबड़ तैयारी को
तब सपना सच होगा

—रमणिका गुप्ता
नव लेखन प्रकाशन, मेनरोड,
हजारीबाग (बिहार)

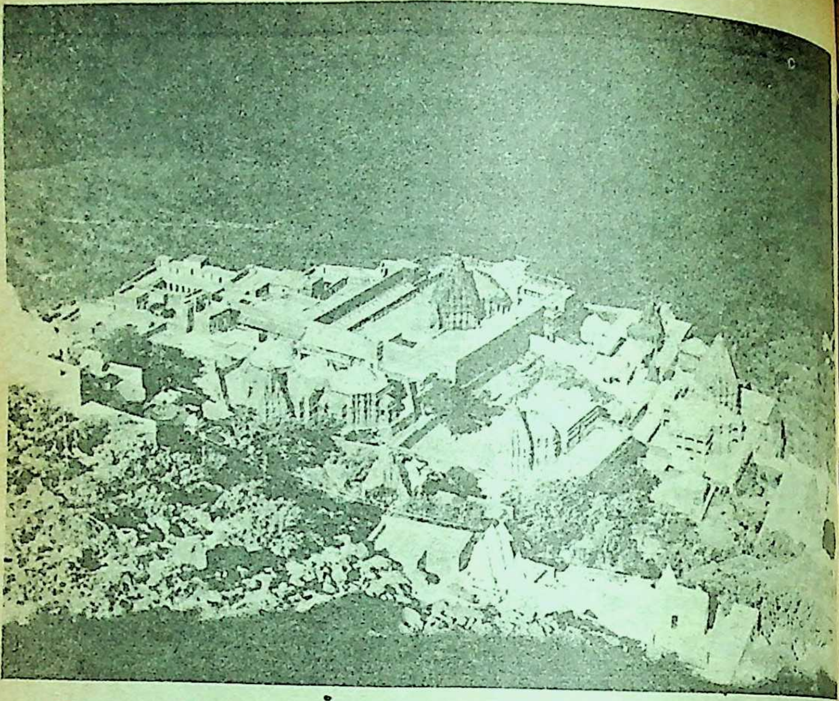

ऊपर : गिरनार के पहाड़ों पर मंदिरों की नगरी

सांस्कृतिक व धार्मिक स्थल गिरनार

● भूरचन्द जैन

गिरनार जैन और वैष्णव धर्म का विख्यात तीर्थ-स्थल, जहां २२वें जैन तीर्थंकर स्वामी नेमिनाथ ने दीक्षा-ग्रहण की, कैवल्य-ज्ञान मिला और यहीं पर निर्वाण प्राप्त किया।

इसके साथ ही गिरनार असंख्य जैन साधु-संतों, महात्माओं, राजा-महाराजाओं, कई जैन तीर्थंकरों, वैष्णव धर्म से संबंधित कई अवतारों की पदधूलि से पवित्र हुआ माना जाता है। गुजरात प्रदेश में स्थित गिरनार पहाड़ जूनागढ़ नगर से करीब तीन मील दूर स्थित है, जिसके चारों तरफ सिद्धगिरि, विद्याधरगिरि, और देवगिरि नामक धार्मिक महत्त्व के पहाड़ हैं। इसके चारों तरफ उदयंती, उज्जयंती, स्वर्णरेखा व सत्यार्थ नामक नदियां इसके प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाती हैं। समुद्र-तल से इस गिरनार पहाड़ की सबसे ऊंची

चोटी ३,६६६ फुट है। इस चोटी पर निर्मित जैन धर्म के विख्यात मंदिरों की विशालता, उनकी कलात्मकता और मूर्तियों की भव्यता के दर्शन हेतु असंख्य यात्री प्रति वर्ष यहां आते हैं।

गिरनार पहाड़ की प्रत्येक चोटी पर पवित्र तीर्थ, मंदिर और अनेकों गुफाएं व चरण-पादुकाओं के स्मारकों की भरमार है।

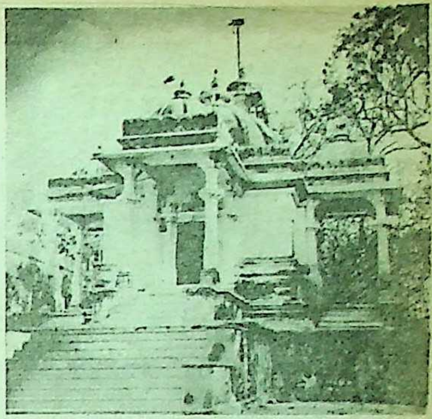

गिरनार की तलहटी में बना श्री आदिनाथ स्वामी का मंदिर

गिरनार का सबसे बड़ा आकर्षण नेमिनाथ का बावन जिनालयों का सुंदर और भव्य मंदिर है। नेमिनाथ की श्यामवर्णी प्रतिमा भी अति सुंदर और भव्य है। मंदिर के आंतरिक भागों में अन्य जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं एवं चरण पादुकाएं भी धार्मिक व ऐतिहासिक दृष्टि से अपना अलग-अलग महत्त्व रखती हैं। मंदिर की परिधि में तीनों तरफ बावन जिनालयों का निर्माण, पीछे छोटा जिन देरासर और

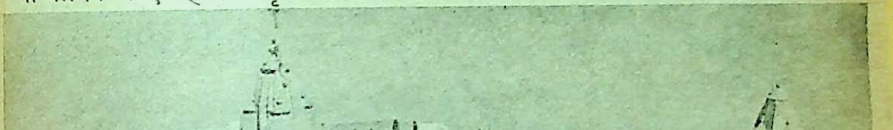

श्री वस्तुपाल तेजपाल द्वारा निर्मित श्री शत्रुंजय-विहार जिनप्रसाद के पार्श्व में श्री नेमिनाथ का मंदिर

गिरनार स्थित श्री अंबे मंदिर

सामने विशाल गोखले की बनावट देखते ही बनती है। इतिहास का कहना है कि इसका निर्माण बेबिलोनिया के महाराजा नेब्रलदनेझर ने कराया था।

नेमिनाथ जिनालय के अतिरिक्त वस्तुपाल तेजपाल का बनाया शत्रुंजयावतार आदिनाथ का जिन मंदिर विशेष उल्लेखनीय है। जिसमें इस समय मूल प्रतिमा के रूप में पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है।

मंदिरों की इसी वस्ती के बीच अनेक दिगंबर जैन मंदिर और वैष्णव मंदिर भी स्थित हैं।

धार्मिक एवं पर्यटन के अतिरिक्त गिरनार पुरातत्व की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके आसपास और पहाड़ी पर सम्राट अशोक के लेख के अतिरिक्त अनेक मंदिर हैं, जो अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं।

——जूनी चौकी का वास, बाड़मेर (राज.)

जूनागढ़ का किला

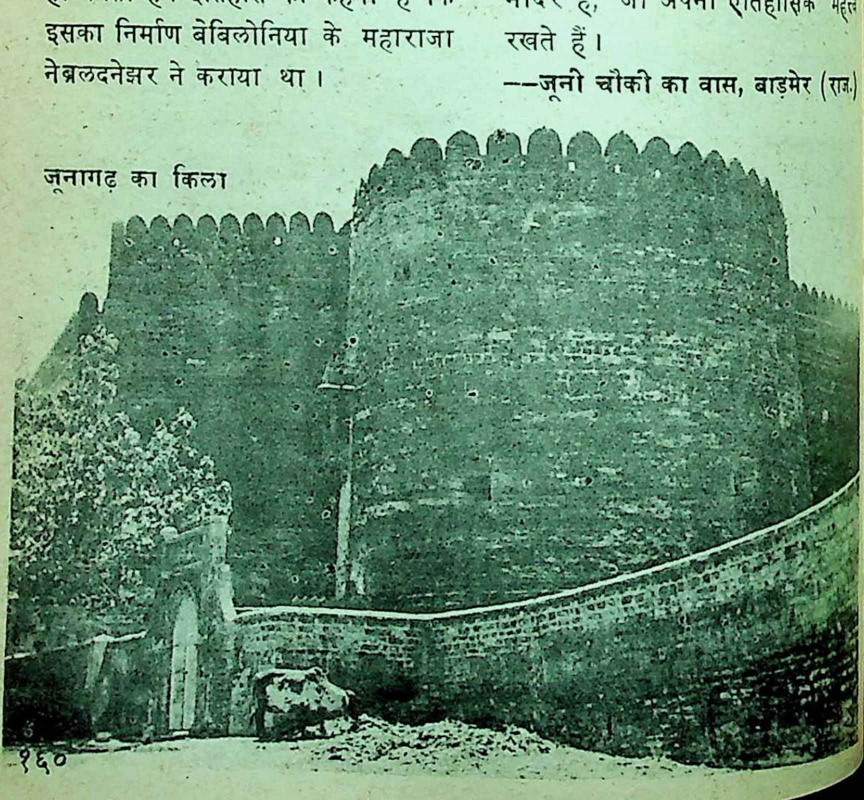

नयी कृतियां

सरस्वती विहार के कुछ नये प्रकाशन

फैलूदा एंड कंपनी : प्रसिद्ध लेखक और फिल्म-निर्देशक सत्यजित राय का यह व्यंग्य-प्रधान मनोरंजक उपन्यास है। पूरा उपन्यास कौतूहल और रहस्यमयी घटनाओं से भरा है। इस उपन्यास के नायक हैं—फैलूदा। वे शौकिया रूप से डिटेक्टिव का काम करते हैं। बंबई में उन्हें मिलते हैं जटायु। जटायु फिल्मों के लिए कहानियां लेकर बंबई गये थे, वहां उन्हें एक हत्या के षड़यंत्र में फंसा दिया जाता है। इसी पात्र के साथ एक पात्र और है, जो आत्माओं को बुलाता है। फैलूदा सारे रहस्यों का उद्घाटन करते हुए अपने मित्र जटायु को बचा लेता है। उपन्यास शुरू से आखिर तक रोचक है और फिल्मी-स्टाइल में लिखा गया है। इसलिए छोटे-छोटे डायलॉग भी हैं। समूची घटना एक के बाद एक आंखों के सामने उभरती है। उपन्यास मूल रूप से बंगला में लिखा गया था, जिसका अनुवाद किया है योगेन्द्र चौधुरी ने। मूल्य-१२ रुपये।

शरद पूनम की रात : कर्त्तारसिंह दुग्गल पंजाबी के परिचित कथाकार हैं। अब तक उन्होंने कई उपन्यास लिखे हैं, जिनका स्वागत भी हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में कुछ सामाजिक विसंगतियों को उठाया गया है और मानवीय संवेदनाओं के द्वंद्व को उभारा गया है। इस प्रक्रिया में कई पात्र सामने आते हैं, जिनमें मुख्य पात्र है—दमयंती। उसका चरित्र अपने आप में पाठकों को पकड़कर रखता है, क्योंकि वह दहशत भी पैदा करती है, और एक समस्या की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करती है। शायद, यह समस्या दमयंती-जैसी बहुत-सी स्त्रियों की है। अनेक

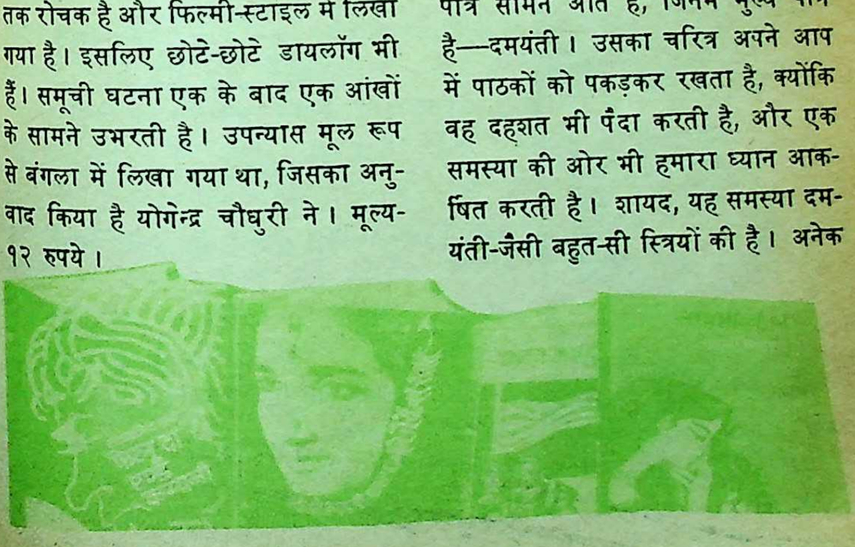

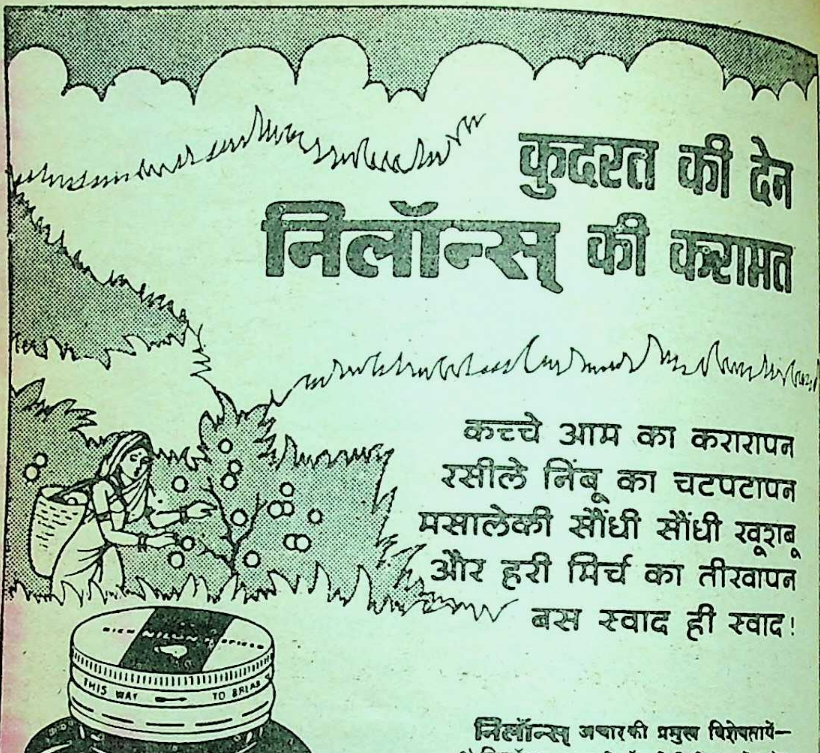
NILON'S
THIS WAY TO BREAK
NiLON'S
LIME PICKLE
निंबू अचार
IN OIL
Manufactured by
NILON'S FOODS PRIVATE LIMITED
Utran Dist. Jalgaon 425001 India

फुदरत की देन निलॉन्स की करामत

कच्चे आम का करारापन
रसीले निंबू का चटपटापन
मसालेकी सौंधी सौंधी खुशबू
और हरी मिर्च का तीखापन
बस स्वाद ही स्वाद!

निलॉन्स अचारकी प्रमुख विशेषतायें—

१) निलॉन्स अचारकी फॅक्टरी किसी शहर में न होकर हरेभरे फलबागों में हैं, ताकि जो भी फल हो ताजे-से-ताजे हो, जो किसी शहर की फॅक्टरी में संभव नहीं है।

२) ताजे से ताजे फलों का पूर्ण परिपक्व अचार सिर्फ निलॉन्स की ही फॅक्टरी में संभव है। जो अनुभवी विशेषज्ञद्वारा जाँचा परखा भी जाता है।

निलॉन्स अचार के चार प्रकार—
आम • निंबु • मिर्च • मिश्र

निलॉन्स अचार सभी के सुरुचिपूर्ण अचार

NILON'S

निलॉन्स
फूड्स प्राईवेट लिमिटेड
उत्राण, जलगांव - ४२५ ००१, महाराष्ट्र

बिनप्रति निर्यात विभागों में वितरक चाहिये।

3 BROTHERS NP/2081 HG

घटनाओं के बाद दमयंती की बेटी सुशील कुएं में कूदकर आत्महत्या कर लेती है। और यहीं आकर हमारी समूची समाज-व्यवस्था पर एक प्रश्न चिह्न खड़ा हो उठता है। उपन्यास की भाषा सहज, कथानक प्रभावशाली है, जो पाठकों को बड़ी आसानी से अपने साथ बहा ले जाता है।

नंगे पैरों का सफर : दलीपकौर टिवाणा से पंजाबी के पाठक भली-भांति परिचित हैं। यह इनकी अपनी आत्मकथा है और शायद एक उपन्यास भी। लेखिका ने बहुत ही सहज ढंग व ईमानदारी से अपनी जिंदगी की पूरी तस्वीर खींची है। जन्म से लेकर चढ़ती उम्र तक की सारी घटनाओं का इसमें चित्रण है और अविवाहित रहकर, अकेले वह किस तरह अपने परिवेश और समाज से लड़ती है, इसका एक अच्छा खाका प्रस्तुत किया गया है। विशेष बात यह है कि कुछ अन्य लेखिकाओं की तरह उन्होंने स्वयं को केवल रोमांस और सेक्स तक सीमित नहीं रखा, बल्कि अपने जीवन के दूसरे संघर्ष को प्रधानता दी है—'इस उपन्यास में मैंने सृजन और ध्वंस की प्रक्रिया को पलटकर देखने का प्रयास किया है। ध्वंस के उपरांत कोई 'स्व' का सृजन करता है, तो वह लोगों से ही नहीं स्वयं से भी बहुत दूर निकल जाता है। इसलिए इस उपन्यास की नायिका पूछती है, 'मैं कौन हूं?' और ये लोग कौन हैं? और उसका यह प्रश्न हर चेतन मनुष्य के उस शाश्वत प्रश्न से जाकर जुड़ जाता है कि वह कौन है? वास्तव में मुझे अपनी आत्मकथा यहीं से आरंभ करनी चाहिए थी क्योंकि वस्तुतः आज ही पहली बार मैं 'मैं' थी।'

पूरी आत्मकथा किसी उपन्यास से कम नहीं है और पाठक को अपने साथ बहाये लिये जाती है। मूल्य है २५ रुपये।

भित्तिचित्र की मयूरी : बहुचर्चित उपन्यासकार हिमांशु श्रीवास्तव का यह नया उपन्यास है, जो सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। उपन्यास की नायिका सरस्वती संस्कारों में पली लड़की है, जो अपने से दोगुनी उम्रवाले पति को भी स्वेच्छा और श्रद्धा से स्वीकारती है। वह एक लंबे अरसे तक असंतुष्ट रहकर भी मौन बनी रहती है, लेकिन क्लाइमेक्स तो तब आता है, जब वह मौन असंतुष्टि उसे गलत रास्ते पर ले जाती है। तब पाठक के मन में प्रश्न उठता है, आखिर ऐसा क्यों हुआ? यह उपन्यास सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उन लोगों पर करारी चोट करता है, जो धनाभाव में अपनी बेटियों की शादी कहीं भी कर देते हैं। फिर नायिका का यह कहना, "मेरे व्यक्तित्व की यही नियति थी, यही तो मेरा 'साइकिक कल्चर' था। इस दुर्घटना के लिए उपन्यास मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सोचने पर विवश करता है।

किसी सिद्धांत विशेष से जुड़े हुए न होने पर भी उपन्यास में फ्रॉयड के

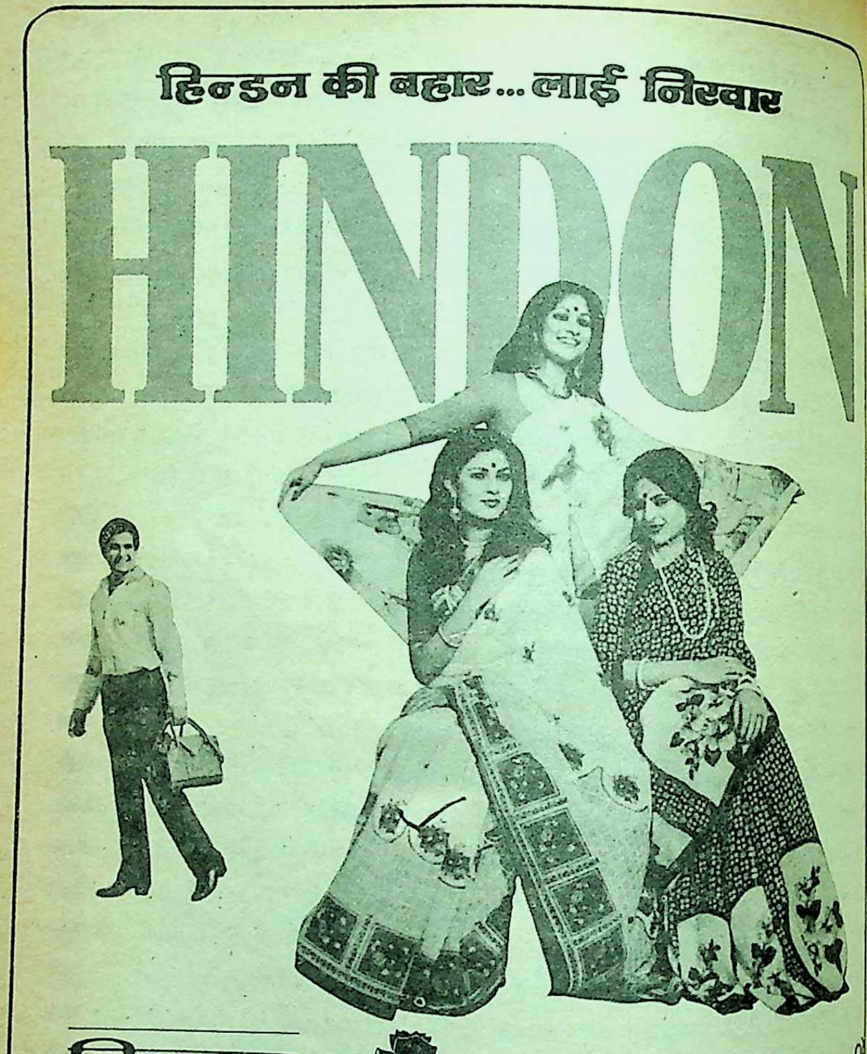

हिन्डन की बहार... लाई निखार

HINDON

हिन्डन

साड़ियां . सूटिंग्स

शर्टिंग्स . ड्रेस मैटिरियल

सर्वाधुनिक मिल द्वारा
निर्मित कपड़े

HINDON RIVER MILLS

DCM
TEXTILES

५०० से भी अधिक डी सी एम रिटेल स्टोर्स
तथा अन्य रिटेल स्टोर्स पर उपलब्ध

स्वप्न-दर्शन और मार्क्स के समाजवाद का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित है। कथानक के शुरू से लेकर अंत तक पाठकों की नायिका सरस्वती के प्रति सहानुभूति बनी रहती है। उपन्यास वैचारिक और मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृष्टियों से पठनीय है। मूल्य—३० रुपये।

अकारण : योगेश गुप्त हिंदी उपन्यासों के क्षेत्र में अपनी अलग शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। इस उपन्यास का कथानक सामाजिक है, समाज चाहे शहर का हो या गांव का, सभी जगह मूलभूत समस्या एक-जैसी ही है। उपन्यास के दोनों मुख्य पात्र—सुनील और रोहित इसी समस्या को उभारते हैं कि सामाजिक प्राणी किसे कहते हैं? कथानक के अनुसार समाज के नीति-नियमों के अनुसार चलनेवाला प्राणी नहीं, बल्कि जो सामाजिक संदर्भ में या तो खुद को बदले या अपनी जरूरत के हिसाब से समाज को बदलने की कोशिश करे। खुद की या समाज की यथास्थिति को बनाये रखने के लिए तालमेल बैठानेवाले तो वस्तुतः समाज-विरोधी ही होते हैं। इन्हीं विरोधियों में से कुछ को समाज अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करता है और कुछ समाज को अपने स्वार्थों के लिए। पूरा कथानक व्यक्ति और समाज के अंतर्द्वंद्व व अंतर्विरोध को प्रकट करता है।

उपन्यास में अनुभूति की गहनता संवेदना की कसक और अभिव्यक्ति का तीखापन जगह-जगह विद्यमान है। शैली के नये प्रयोग ने कहीं-कहीं कथानक को शिथिल-सा कर दिया है। कुल मिलाकर तीव्र संवेदना, अभिव्यक्ति का तीखापन और नयी शैली का वैचित्र्य पाठकों को अपने में बांधे रहता है। इन सभी पुस्तकों के प्रकाशक हैं—सरस्वती विहार, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली, मूल्य—१२ रुपये।

—विजय श्री

लंकेशः रावण के चरित्र पर लिखा यह प्रबंध काव्य रामकाव्य में एक सूत्र और जोड़ता है। कवि ने अन्यान्य पात्रों के आत्मविश्लेषण के द्वारा रावण के लिए उचित भूमि का निर्माण किया है। लोक प्रचलित किसी पात्र के परंपरागत रूप पर किसी भी प्रकार के आघात को कवि बचा गया है। प्रबंध काव्य की दृष्टि से 'भावना' और 'कामना' जैसे स्वतंत्र सर्ग कथा की अन्विति को खंडित करते हैं! प्रबंध काव्य के लिए विषय के जिस सुनियोजित प्रतिपादन की आवश्यकता होती है, उसका इसमें अभाव है। थोड़े प्रयत्न से अच्छी कृति का रूप दे सकते थे। रचनाकार हैं नरेन्द्रस्वरूप विमल और प्रकाशक हैं सरोज प्रकाशन, रायपुर, मूल्य—१० रुपये।

कुर्सी सूत्रः उन्नीस लेखों के इस संग्रह में चार नाटिकाएं हैं। लेखों का सबसे कमजोर पक्ष उसकी वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हैं, जो इतनी अधिक हैं कि लेखों के कुल प्रभाव को नष्ट कर देती हैं। प्रारंभिक पृष्ठों में कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं—प्रतिक्षा (प्रतीक्षा), स्तोंफा (स्तीफा), खुन

(खून), कहुं (कहुं), पड़ा (पढ़ा), सालीसा (चालीसा), बैल (वैल), बालों (वालों), उछेड़ (उधेड़), अपका (आपका), वात (बात), डीग्रीयां (डिग्रियां), प्रोढ़ (प्रौढ़), क्ब्ब (क्लब), माग (भाग), प्रकास (प्रकाश)... इसके लेखक हैं यशवंत कोठारी और प्रकाशक हैं श्रीनाथजी प्रकाशन, जयपुर–मूल्य १६ रुपये।

—डॉ. शशि शर्मा

'साक्षात्कार' एवं 'गलत जगह' क्रमशः मृदुला सिन्हा एवं सुभद्रा की कहानियों के दो नये संकलन हैं। 'साक्षात्कार' में लेखिका की इक्कीस कहानियां संग्रहीत हैं। ग्रामीण एवं मध्यम-निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों की भावभूमि पर आधारित ये कहानियां आज के दुःख-दर्दों को मार्मिक अभिव्यक्ति देती हैं। जैसे—'साक्षात्कार' की नायिका अभावों में पिसती अधनंगी-अधभूखी ग्रामीण नारियों को देखकर विचलित हो उठती है। 'अनशन', 'आप बीती', 'गंवई और शहरी रंग'—'जैसे को तैसा' कहानियों में ग्रामीण जीवन की विसंगतियों का अच्छा चित्रण हुआ है। यह संकलन प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली ने प्रकाशित किया है। मूल्य—२० रुपये।

'गलत जगह' में सुभद्रा की पांच कहानियां संकलित हैं। ये हैं—'नत्थी किया सुख', 'विभाजक रेखा', 'छछूंदर', 'मेरे औगुन चित न धरो' एवं संग्रह की पहली कहानी 'गलत जगह।'

'गलत जगह' में एक ऐसी युवती की संघर्ष-कथा है, जिसे अपने पिता की मृत्यु के बाद उनके दफ्तर में नौकरी मिलती है। मुखौटे लगाकर जीनेवाले अफसर उसके साथी उसके संघर्ष को कटु ही बनाते हैं, कम नहीं करते। 'गलत जगह' की नायिका आज की उन नौकरीपेशा युवतियों की प्रतिनिधि है, जिन्हें मात्र अपने और अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए काफी कुछ गलत करना पड़ता है, लेकिन अन्याय के अतिरेक पर उनका फूट पड़नेवाला विद्रोह बहुत कुछ आशा बंधा जाता है। 'नत्थी किया सुख' में एक बीमार पागल से व्याह दी और बाद में विधवा हो गयी; सुभद्रा की मार्मिक कहानी है। संग्रह की अन्य तीनों कहानियां भी मर्मस्पर्शी हैं और पाठक को उद्वेलित कर जाती हैं। इस संकलन के प्रकाशक हैं— अलंकार प्रकाशन, ६६६ झील, दिल्ली, मूल्य—१६ रुपये।

—दुर्गाप्रसाद शुक्ल

दुनिया में सबसे मंहगा होटल का कमरा अमरीका के टेक्सास राज्य के ह्रस्टन नगर स्थित एस्ट्रा विलेज होटल में है। यहां एक रात ठहरने का किराया १२५० पौंड (बीस हजार रुपये से भी अधिक) है। नाश्ता करने पर अलग पैसे देने पड़ते हैं। इतना किराया होने पर इस कमरे में ठहरनेवालों की कोई कमी नहीं है और धनी ग्राहक इसके खाली होने का इंतजार करते रहते हैं।

भविष्य

(१०)

क्या आपका जन्म अप्रैल में हुआ है?

● प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'

मेष राशि में २० अप्रैल तक सूर्य का प्रभाव रहता है। २१ अप्रैल से जन्मे व्यक्तियों पर वृष राशि के सूर्य का प्रभाव रहता है। इस अवधि में सूर्य वृष राशि में रहता है। वृष राशि का स्वामी शुक्र है। अतः इस अवधि में जन्मे व्यक्ति शुक्र-प्रधान होते हैं। २० अप्रैल तक सूर्य मेष राशि में होता है। मेष का स्वामी मंगल है। इस अवधि में जन्मे व्यक्तियों पर मंगल का प्रभाव होता है। सूर्य मेष राशि में ही उच्च का होता है। अप्रैल माह में जन्मे व्यक्तियों पर मंगल का प्रभाव होता है। सूर्य मेष राशि में ही उच्च का होता है। अप्रैल माह में जन्मे व्यक्तियों पर सूर्य, मंगल, शुक्र का न्यूनाधिक प्रभाव रहता है।

सूर्य का सीधा प्रभाव

आपका जन्म ऐसे समय में हुआ है, जब सूर्य आकश-गंगा में पूर्णतया प्रभावशाली होता है। आप सीधे सूर्य के प्रभाव-क्षेत्र में हैं। अतः आप किसी के नियंत्रण में जीवन-यापन नहीं करते हैं। स्वतंत्र व्यक्तित्व के व्यक्ति हैं। आप न तो किसी के कार्यों में हस्तक्षेप करते हैं और न स्वयं अपने कार्यों में किसी का हस्तक्षेप चाहते हैं। साझे में कोई व्यापार भी न करें क्योंकि आप में क्रोध की मात्रा कुछ अधिक ही है। ऐसी स्थिति में केवल नुकसान ही संभव है। प्रतिशोध में आप किसी भी सीमा तक अहित करने में नहीं चूकते हैं। आप में नेतृत्व करने की जन्म-जात क्षमता भी है। बचपन में आप साथियों का नेतृत्व करते रहे हैं। आज भी अपने क्षेत्र में नेतृत्व कर रहे हैं। इस क्षमता के कारण परिचय

क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा। आप में एक विशेषता यह है कि आप अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति को प्रभावित कर उसे मित्र बना लेते हैं, उससे अपना कार्य करवा लेते हैं। समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से आपके अपने संबंध रहते हैं।

समाज एवं व्यवसाय में एक नयी दिशा देना आपकी खूबी है। ऐसे लोग अलौकिक कार्य, और विलक्षण खोजों के कारण संसार में जाने जाते हैं।

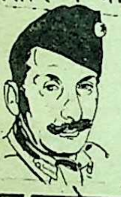
जनरल मानेकशा

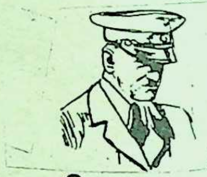
हिटलर

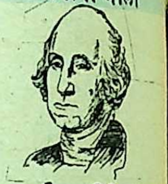
जार्ज वाशिंगटन

आप एक दूरदर्शी व्यक्ति हैं। और राजनीति, व्यापार में अपनी दूरदर्शिता के कारण सफल रहते हैं। आप में नेतृत्व करने की कला भी है। आप अच्छे प्रशासक भी हो सकते हैं।

कला, संगीत, साहित्य में भी आपकी रुचि है। ईश्वर एवं धर्म पर आपकी आस्था है, परंतु आप अंधविश्वासी नहीं हैं। चाटुकारिता में आपका विश्वास नहीं है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली है, लेकिन व्यर्थ की शान-शौकत आपके व्यक्तित्व में न्यूनता लाती है। आपके लिए एक सलाह—लोगों पर अधिक विश्वास न करें तथा जोखिम भी एक सीमा तक ही उठायें। नारी के प्रति आसक्ति के कारण आपको बदनामी भी मिल सकती है।

शुभ तिथियां—६, ९, १८, २७, १५,

शुभ दिन—मंगलवार, शुक्रवार

शुभ रत्न : मूंगा (२० अप्रैल तक

व्यक्तियों के लिए)

हीरा (२० अप्रैल के बाद

व्यक्तियों के लिए)

शुभ धातु : ताम्र, चांदी

(स्वर्ण निषेध है)

शुभ रंग १. आसमानी नीला

२. हलका लाल

३. गुलाबी

४. श्वेत

वर्ष का श्रेष्ठ समय : २१ अक्तूबर से

नवंबर, २० अप्रैल से २४ मई।

वर्ष का निर्बल समय :

१. २१ दिसंबर से १९ फरवरी

२. २० फरवरी से २१ मार्च

२१ दिसंबर से २१ मार्च के मध्य किसी वर्ष में गुरुवार, शनिवार के दिन ३, १२, २१, ३०, ८, १७, २६, तारीखों को जन्मे व्यक्ति सच्चे मित्र, प्रेमी, पत्नी, सहयोगी, के रूप में नहीं सिद्ध हो सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों को व्यवसाय में भी किसी के साथ नहीं रखना चाहिए। भागीदार आपके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं।

मंगल में अग्नि तत्व की अधिकता है। फलस्वरुप क्रोध के कारण झगड़ा, मुकदमेबाजी भी संभव है।

व्यवसाय

आप में क्षमताएं तो अनेक हैं, किसी भी व्यवसाय में सफल हो सकते हैं परंतु यदि आप राजनीति, लेखन, वकालत, सेना, पुलिस, ज्योतिष, चिकित्सा, कला, संगीत, साहित्य आदि का व्यवसाय करते हैं तो आप शिखर पर भी पहुंच सकते हैं।

अप्रैल माह में जन्मे विशेष व्यक्तित्व

३ अप्रैल---जनरल मानेकशा, ४ अप्रैल---माखनलाल चतुर्वेदी, ९ अप्रैल--रामानुजाचार्य, रामनवमी---घनश्यामदास बिड़ला, १३ अप्रैल---जार्ज वाशिंगटन, २० अप्रैल---वराहमिहिर, नेपोलियन, हिटलर, २२ अप्रैल---दार्शनिक कांट, २३ अप्रैल---शेक्सपीयर, ३० अप्रैल---मां आनंदमयी।

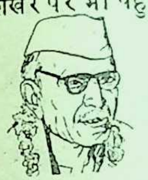
माखनलाल चतुर्वेदी

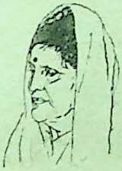
मां आनंदमयी

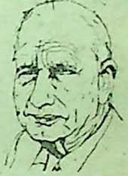
घनश्यामदास बिड़ला

उपासना

यदि आपकी आस्था, धर्म तथा ईश्वर के प्रति है तो आपको हनुमानजी अथवा सूर्य की उपासना करनी चाहिए। मंगलवार का व्रत आपके लिए लाभप्रद है। यदि आप मुसलमान हैं तो शुक्रवार का व्रत करना हितकर होगा। ईसाई धर्मालंबी व्यक्तियों के लिए श्वेत परिधान हितकर होंगे।

मित्र, पत्नी, प्रेमिका, सहयोगी

आप लोगों पर सरलता से विश्वास कर लेते हैं, जिसके कारण कई बार आपको नुकसान उठाना पड़ता है। जिन लोगों का किसी भी वर्ष के २१ अक्तूबर से २६ नवंबर तथा २० अप्रैल से २१ मई के मध्य ६, १५, २४, ९, १८, २७ तारीखों में मंगलवार या शुक्रवार के दिन जन्म हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति मित्र, सहयोगी, पत्नी, प्रेमिका के रूप में अच्छे सिद्ध हो सकते हैं।

३ अप्रैल को फील्ड मार्शल मानेक शा का जन्म हुआ। सूर्य उच्च राशि का है। गुरु, मंगल, सूर्य का प्रभाव है। सूर्य ने सेना का सर्वोच्चपद दिया। कीर्ति, मान-सम्मान मिला। मंगल ने उन्हें सेना में भेजा जबकि डॉक्टर बनना चाहते थे। गुरु ने आजीवन पद में व्यवधान, उच्च के सूर्य ने व्यवधानों को समाप्त किया।

४ अप्रैल को प्रसिद्ध संत रामानुजाचार्य तथा हिंदी के कवि श्री माखन लाल चतुर्वेदी का जन्म हुआ। दोनों पर मंगल, सूर्य का प्रभाव था। एक साहित्य के शिखर पर पहुंचा तो दूसरा अध्यात्म के शिखर पर। श्रीरामानुजाचार्य पर सूर्य, मंगल तथा गुरु

"मुझे चाहिए तो बस कॉम्प्लान®
मेरे परिवार के लिए
एक परिपूर्ण नियोजित आहार."

सिर्फ़
कॉम्प्लान® ही,
सबके लिए ज़रूरी
२३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्वों से परिपूर्ण है.

सिर्फ़ कॉम्प्लान में ही वैज्ञानिक अनुपात से नियोजित २३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्व हैं, जिनकी शरीरको रोज़ाना ज़रूरत होती है...प्रोटीन्स, कार्बोहाइड्रेट्स स्निग्ध-पदार्थ. विटामिन्स और खनिज-पदार्थ. यह एक ऐसा स्वास्थ्यवर्धक पेय है, जिसकी डॉक्टर अधिकतर सिफ़ारिश करते हैं.

कॉम्प्लान चॉकलेट, इलायची-केसर और स्ट्रॉबेरी के स्वाद-भरे जायकों में तथा प्लेन भी मिलता है.

Glaxo
Complan

लिंटास-GLC. 10-1510 HI

कॉम्प्लान®
-परिपूर्ण नियोजित आहार.

का प्रभाव था। सूर्य, मंगल,गुरु ने आध्यात्म को एक नयी दिशा दी। आज उनके नाम से आध्यात्म में रामानुजाचार्य संप्रदाय चल रहा है। यह कीर्ति उन्हें सूर्य ने दी। श्री माखन लाल चतुर्वेदी पर सूर्य–मंगल के साथ बुध की युक्ति थी। इस कारण वे साहित्य के सन्यासी बने।

रामनवमी के दिन भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री घनश्यामदास बिरला का जन्म हुआ। सूर्य, मंगल, शनि, बुध ने शिखर का उद्योगपति बनाया। सूर्य-बुध ने आध्यात्म, साहित्य, धर्म में रुचि दी। मेष का सूर्य होने के कारण कोई पुत्र विशेष उन्नति करेगा, जिसका संबंध भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री से परिवार-जैसा होगा। व्यापार के क्षेत्र में कीर्तमान स्थापित करेगा।

१९८१ का वर्ष बिरला जी की प्रगति का वर्ष होगा। १९८१ से संतानें विशेष प्रगति करेंगी। बुध प्रधान संतान अर्थात श्री के. के. बिरला की विशेष प्रगति होगी। सन १९८३ से १९८८ के मध्य का समय विशेष प्रगति का होगा। सत्ता से सीधा संपर्क रहेगा।

१३ अप्रैल को अमरीका के राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन का जन्म हुआ। उन पर मंगल, सूर्य, व नेपच्यून का प्रभाव था। फलत: वे अमरीका के सर्वाधिक सशक्त राष्ट्रपति के रूप में प्रसिद्ध हुए। सूर्य ने कीर्ति ऐसी दी कि सदियों तक जार्ज वाशिंगटन अमर रहेंगे।

२० अप्रैल एक महत्त्वपूर्ण तिथि

अप्रैल माह की २० तारीख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसी तारीख को संसार के अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का जन्म हुआ। ज्योतिष को प्रतिष्ठा तथा वैज्ञानिक रूप देनेवाले प्रथम भविष्य वक्ता के रूप में जाने जाते हैं वराह मिहिर। उनका जन्म भी २० अप्रैल को हुआ। हिटलर तथा नेपोलियन तृतीय का भी जन्म २० अप्रैल को हुआ। वराह मिहिर ने लोक-कल्याण के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया, वहीं हिटलर व नेपोलियन ने सत्ता के लिए भीषण नरसंहार किया, जब कि सभी का जन्म २० अप्रैल को हुआ।

वराह मिहिर पर शुक्र-बुध–सूर्य का प्रभाव था। जिन्होंने अनेक प्रकृति के रहस्यों को उजागर किया।

हिटलर पर सूर्य, मंगल तथा शनि का प्रभाव था। सूर्य-मंगल ने एक साधारण व्यक्ति को संसार में द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बना दिया। मंगल-शनि की युक्ति ने वीभत्स मृत्यु की गोद में धकेल दिया।

नेपोलियन तृतीय पर भी मंगल, शुक्र, शनि का प्रभाव रहा।

२३ अप्रैल को शेक्सपियर का जन्म हुआ। शेक्सपियर के जीवन में सूर्य, मंगल, चंद्र, बुध का प्रभाव था। सूर्य, चंद्र, बुध ने उन्हें असाधारण सर्जन की क्षमता दी। वहीं मंगल, चंद्र की युति ने उनका दांपत्य जीवन नारकीय बना दिया।

३० अप्रैल को आज की बहुचर्चित

सन्यासिनी मां आनन्दमयी का जन्म हुआ। वे गुरु, सूर्य, नेपच्यून, शुक्र की प्रतिमूर्ति हैं। उन्होंने किसी को निराश नहीं भजा। यह शुक्र-नेपच्युन का प्रभाव है। गुरु ने दांपत्य जीवन तथा भौतिक सुखों से वंचित रखा। १९८२, ८४ के वर्ष उनके स्वास्थ तथा शरीर के लिए कष्टप्रद सिद्ध हो सकते हैं। नेपच्यून तथा सूर्य लंबे समय तक उनकी कीर्ति पृथ्वी पर रखेंगे। बुध, सूर्य, नेपच्यून ने उन्हें असाधारण आध्यात्मिक शक्ति दी है।

अप्रैल १९८१

आपके लिए यह माह अत्यंत लाभप्रद है। रुके हुए कार्य संपन्न होंगे। प्रियजन से भेंट, परिवार-वृद्धि, सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग हैं। गरमी के कारण उदर एवं ज्वर पीड़ा संभव है। आर्थिक रूप से भी माह उत्तम जाएगा।

अप्रैल १९८१ से मार्च १९८२

२० अप्रैल से २४ मई तक समय उन्नतिकारक है। सामाजिक-प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं रुके हुए कार्य संपन्न होंगे। परिवार, पद-वृद्धि के योग हैं। २५ मई से ३० जून के मध्य का समय स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं है। पारिवारिक तनावों तथा रोग का भी सामना करना पड़ सकता है। १ जुलाई से २० अक्तूबर तक सामान्य प्रगति, स्थानांतर, किये गये प्रयासों में लाभ। २१ अक्तूबर से २७ नवंबर के मध्य का समय वर्ष का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समय होगा। आर्थिक संपन्नता, मांगलिक कार्य, पद-प्रतिष्ठा, व्यवसाय में उन्नति के योग हैं। २८ नवंबर से २० दिसंबर तक सामान्य प्रगति। २१ दिसंबर से २१ मार्च तक का समय परेशानी, व्यय, अपमान, तनाव, उलझन, शारीरिक-कष्ट, व्यय विशेष का योग है। वर्ष महत्त्वपूर्ण होगा। यदि आप ३, ४, १८, २४, २८, ३३; ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६६, ६७, ६९, ७२, ७८, ८१, ८७, ९०, ९६ वर्ष के हैं तो यह निःसंदेह आपके लिए महत्त्वपूर्ण वर्ष सिद्ध होगा।

—**ज्योतिष योग, १८ एम. आई. जी.**
रतनलालनगर, कानपुर-२०८०२२

विचार-दीर्घा—१५

पुरस्कार : पचास रुपये

'सौंदर्य केवल बाह्य परिवेश तक निहित है?' विषय पर अपने विचार तीन सौ शब्दों में निम्न पते पर भेजें। विचार के साथ वापसी के लिए लिफाफा संलग्न न करें।

अंतिम तिथि—५ अप्रैल, १९८१
पता—संपादक, 'कादम्बिनी'
विचार-दीर्घा—१५
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

गोष्ठी

अंजू अरोड़ा, चंडीगढ़ : इन दो शब्दों सेंसिबिलिटी (Sensibility) और सेंसिटिविटी (Sensitivity) में क्या अंतर होता है ?

सेंसिबिलिटी' (ग्रहणशीलता) उस संवेदन-क्षमता को कहते हैं, जिसके कारण मनुष्य प्राकृतिक,सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक आदि प्रभावों को अपेक्षाकृत अधिक सरलता से ग्रहण करते हुए अपने परिवेश तथा निजी अनुभवों के प्रति सजग रहते हैं और यह सजगता समझदारी से भरे विचार और व्यवहार में व्यक्त होती है, जबकि 'सेंसिटिविटी' (संवेदनशीलता) मनुष्य की वह संवेदन-क्षमता है, जो उसे परिस्थितिजन्य सुख-दुख आदि के प्रभावों की तीव्र अनुभूति तक ले जाती है और जिसके कारण उसके मन में उन प्रभावों के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। संवेदनशील हुए बिना मनुष्य ग्रहणशील नहीं हो सकता, और ग्रहणशीलता एक गुण होने के कारण मनुष्य का संवेदनशील होना आवश्यक है; लेकिन उसे अतिसंवेदनशील नहीं होना चाहिए, क्योंकि अतिसंवेदनशीलता शारीरिक या मानसिक रोग अथवा कमजोरी का लक्षण है और इससे मनुष्य ग्रहणशील होने के बजाय भावुक (Sentimental) हो जाता है और उसमें समझदारी का अभाव व्यक्त होने लगता है।

सोमप्रकाश पाराशर, मेरठ : सुना है, श्रीलंका में 'सांप-मछली' नामक एक विशिष्ट प्राणी पाया जाता है। वह सांप है या मछली ? बताने की कृपा करें।

सांप-मछली वास्तव में न सांप है, न मछली। यह एक जल-स्थलचर प्राणी है जिसका जीवन जल और स्थल दोनों के अनुकूल होता है। यह जीव प्रायः झरनों के किनारे घास के नीचे रहता है, जहां यह मुख्यतः केंचुए खाता है। मादा सांप-मछली पानी के पास गीली जमीन के भीतर सूराख बनाकर अंडे देती है और भ्रूणों के परिवर्द्धन के लिए उन्हें काफी देर तक नम अवस्था में रखती है। इस प्रकार यह जीव जल और स्थल पर ही नहीं, भूमिगत होकर भी रह सकता है; लेकिन इसके शरीर की संरचना सांप से काफी मिलती-जुलती है अतः जल-स्थलचर प्राणियों के जो तीन भेद (सपुच्छ, अपुच्छ और अपाद) किये जाते हैं, उनमें से सांप-मछली को अपाद वर्ग में रखा जाता है।

शैलेंद्र कुमार चतुर्वेदी, सक्ती (बिलासपुर) : क्या ऊष्मा के अभाव में भी पानी उबल सकता है ?

जी हां, उबल तो सकता है, लेकिन भाप बनकर उड़ने के बजाय जमकर बर्फ

बन जाएगा। यदि आप पानी में से हवा निकालना शुरू कर दें तो पानी खौलने लगेगा। यदि पानी को खौलने के लिए ऊष्मा नहीं मिल रही है तो इस क्रिया के लिए उसे अपनी ही ऊर्जा देनी पड़ेगी। इसका परिणाम यह होगा कि पानी का तापमान कम होने लगेगा। साथ ही हवा निकलने के कारण दाब भी कम हो जाएगा जिससे पानी का उबलना तो बंद नहीं होगा, लेकिन पानी और ज्यादा ठंडा होता जाएगा, अंततः जम जाएगा।

रणवीर सिंह, लखनऊ : पल्लव वंश के राजाओं का नाम पल्लव क्यों पड़ा, सुना है कि इस विषय में दक्षिण भारत में कोई किंवदंती प्रचलित है। क्या आप बता सकते हैं कि वह क्या है?

जी हां, कहा जाता है कि एक तरुण राजकुमार का पाताल लोक की एक नाग-राजकन्या से प्रेम हो गया। जब वह राजकुमारी से अंतिम विदा लेने लगा तब उसे गर्भवती देखकर उसने कहा—'यदि तुम मेरी संतान के शरीर पर पल्लव बांधकर छोड़ दोगी तो बच्चा भटकता हुआ मुझे खोज लेगा और मैं उसके शरीर पर पल्लव देखकर पहचान लूंगा।' राजकुमारी ने ऐसा ही किया और उस राजकुमार ने अपने बच्चे को पहचान कर उसे पल्लव वंश के संस्थापक के रूप में प्रतिष्ठित किया। इतिहासकारों ने इस किंवदंती का अर्थ यह लगाया है कि पल्लव विदेशी थे और उनकी उत्पत्ति एक दूरदर्शितापूर्ण विवाह के फलस्वरूप हुई थी।

वैसे, यह बता दें कि यह कहानी पल्लवों के साथ ही नहीं जुड़ी है, कंबोडिया के खमेर राजाओं के विषय में भी ऐसी ही कहानी पायी जाती है।

शांताबाई, अकोला (महाराष्ट्र) : एक जगह "रबड़ की नली का 'साइफन' बनाकर एक बरतन से दूसरे बर्तन में तेल निकालने का आसान तरीका" के बारे में पढ़ा और खुद 'साइफन' बनाकर देखा, लेकिन तेल निकालने में सफल न हुई। क्या कारण हो सकता है?

'साइफन' वायुमंडलीय दाब के सिद्धांत पर आधारित एक साधारण युक्ति है और इसका प्रयोग करते समय इसका ध्यान रखा जाना आवश्यक है। आप रबड़ की नली का 'साइफन' बनाकर तेल निकालने में सफल नहीं हुईं, इसके हमारी समझ में दो कारण हो सकते हैं : एक तो यह कि शायद आपकी रबड़ की नली में कोई सूराख रहा होगा, जिसकी वजह से उसके अंदर हवा के दाब में गड़बड़ी होती होगी और तेल की धार टूट जाती होगी। दूसरा कारण यह हो सकता है कि आपने संभवतः उस बरतन को जिसमें तेल निकालना है उस बर्तन से ऊंचा रखा होगा, जिसमें से तेल निकाला जाना है। ध्यान रखिए कि 'साइफन' के जरिए, तेल ऊंचे रखे बर्तन से नीचे रखे बर्तन में ही निकाला जा सकता है; और इसका कारण वही है—वायुमंडलीय दाब।

रामप्रकाश बजाज, सीकर (राजस्थान) : 'अधिक' और 'पर्याप्त' में क्या फर्क है ?

दो या दो से अधिक चीजों की तुलना के संदर्भ में जब हम उनमें से किसी चीज की मात्रा में अधिकता देखते हैं तब 'अधिक' का प्रयोग करते हैं; जबकि एक ही चीज की निश्चित मात्रा के संदर्भ में 'पर्याप्त' का। उदाहरण के लिए दो गिलासों में विभिन्न मात्राओं में भरे पानी को देखकर हम तुलना के द्वारा यह निश्चय करेंगे कि कौन-से गिलास में पानी अधिक है; जबकि एक गिलास की क्षमता मालूम होने पर उसे भरने के लिए हम उपलब्ध पानी की मात्रा देखकर गिलास की क्षमता के अनुपात में यह निश्चय करेंगे कि उपलब्ध पानी उसे भरने के लिए पर्याप्त है या नहीं।

सुबोधसिंह पवार तथा असलम नवाब, बेरमो (गिरिडीह, बिहार) : चमगादड़ को 'प्राकृतिक राडार' क्यों कहा जाता है ?

प्रकृति में ऐसे कई जीव-जंतु हैं जो एक लाख हर्टस तक की आवृत्तिवाली पराध्वनियों (Ultrasounds) को ग्रहण कर सकते हैं, जैसे चमगादड़, मधुमक्खियां, ह्वेल मछली आदि। चमगादड़ अंधेरे में अच्छी तरह जीवन बिताने के लिए पराध्वनि का उपयोग करता है। उड़ान के दौरान चमगादड़ आदमी के कान को सुनायी न देने वाली २५ हजार से ५० हजार तक आवृत्ति वाली पराध्वनियों के संकेत छोड़ता चलता है। ये संकेत निश्चित दिशा में जाकर रुकावट के साथ टकराते हैं और परावर्तित होकर उस तक लौटते हैं। चमगादड़ की श्रवणशक्ति इतनी अच्छी होती है कि वह प्रारंभिक संकेत से दो हजार गुना कमजोर परावर्तित हुए संकेत को भी सुन सकता है। संकेत के भेजने से उसके वापस आने तक के बीच के समय में चमगादड़ रुकावट तक की दूरी मालूम कर लेता है और आंखों से देख न पाने पर भी उसे मालूम हो जाता है कि उसे अबाध उड़ने के लिए किस दिशा से उड़ना चाहिए, किधर जाकर शिकार पकड़ना चाहिए, और किधर मौजूद खतरे से बचना चाहिए।

अरुण कुमार दुबे, बिलंदपुर (गोरखपुर) : साइमन बोलीवर के बारे में बतायें।

साइमन बोलीवर एक दक्षिण अमरीकी क्रांतिकारी था। उसका जन्म १७८३ में हुआ था और मृत्यु १८३० में। काराकास में पैदा हुआ यह स्वाधीनता प्रेमी वीर 'लिबरेटर' (मुक्तिदाता) कहलाता था और आज भी लैटिन अमरीका का महानतम वीर माना जाता है।

चलते चलते एक प्रश्न और...

दिनेश श्रीवास्तव, बालोद (दुर्ग, म. प्र.) : मामा की पत्नी मामी, चाचा की पत्नी चाची, तो साले की पत्नी साली क्यों नहीं?

संभलिए भाई साहब, इस तरह तुक मिलायी तो काले की पत्नी को काली कहना पड़ेगा।

—बिंदु भास्कर

मणिपुर में विद्रोहियों की तला

● जयंत चौहान

भारत की पूर्वी सीमा पर स्थित एक औसत आकार के जिले से भी छोटा राज्य है—मणिपुर। यह चीन और बर्मा की सीमाओं को छूता है तथा असम के कछाड़ जिले के पूर्व में स्थित है। मणिपुर का क्षेत्रफल २२,३४६ वर्ग किलोमीटर है, जिसमें से केवल ४२६० वर्ग किलोमीटर हिस्सा मैदानी है और शेष पहाड़ी।

मणिपुर : जातियों की संगम स्थली

मणिपुरी लोग घाटी में ही रहते हैं, पहाड़ी क्षेत्र केवल नागाओं और कुकी लोगों के रहने की जगह है। प्राचीनकाल में उत्तर की ओर से जो जातियां हिंदचीन और भारत में आयीं, वे मणिपुर की घाटी के रास्ते से ही गुजरीं। भारत तथा दूसरे देशों से जानेवाली जातियां भी यहीं से होकर हिंदचीन और इंडोनेशिया गयीं। इस तरह मणिपुर की धरती विभिन्न जातियों और अनेक वंशों की संगमस्थली बन गयी। इन्हीं की संतान आज के मैतेई हैं, जो वर्तमान काल की एक प्रमुख जाति है।

मितै, मैतेई या मणिपुरी, चीनी और आर्यजाति के मिश्रण से उत्पन्न मानी जाती है। मैतेई लोगों ने १३वीं से १५वीं शताब्दी के मध्य वैष्णव धर्म को अंगीकार कर लिया था।

सन १८८० में कैप्टेन पैंबरटन ने उत्तर पूर्वी सीमांत क्षेत्र के संबंध में अपने प्रतिवेदन में और ई. डब्लू. डुन ने 'मणिपुर गजट' में जब यह लिखा कि मणिपुरी लोगों के मूल वंशज हिंदू न होकर चीन के उत्तरी पश्चिमी सीमांत से आये तातार वंशी थे तब मैतेई इस खोज से क्षुब्ध हो उठे थे। उन्हें हिंदू-परंपरा का होने पर गर्व था।

मैतेई हिंदुओं की उपेक्षा

सौ वर्ष बाद आज यही मैतेई, स्व को वैष्णव धर्म पूर्व के एक धर्म से संबंधित बताने लगे हैं। उनमें से कुछ उ वादियों ने गीता-जैसे दार्शनिक ग्रंथों पर भी अपना कोप प्रकट किया और मणिपुर की राजधानी इंफाल में श्रीगोविंदजी मंदिर के निकट स्थित महाबली (हनुमान) के मंदिर पर यह कहकर अधिकार जमाना चाहा कि उस स्थान पर पहले मैतेई देवता मोगंबा हानबा का मंदिर था। मैतेई जनता में इस क्षोभजनक परिवर्तन के कारण कुछ इस प्रकार हैं—

सरकारी क्षेत्र की नौकरियों और

व्यवसाय में नियुक्ति और पदोन्नति के मामलों में स्थानीय आदिवासियों की भांति मैतेई हिंदुओं को समान अवसर नहीं मिले। आज भी १९ उच्च सरकारी पदों में से केवल एक पर स्थानीय मैतेई नियुक्त है।

धर्म-परिवर्तन की लहर

आजादी के बाद पूरी घाटी में ईसाई मिशनरी फैल गये और जनजातियों के लोग धर्म-परिवर्तन कर ईसाइयत अपनाने लगे। धर्म-परिवर्तन के बाद भी उन्हें सरकारी रियायतें मिलती रहीं। इससे मैतेई हिंदुओं का क्षोभ और भड़का।

सन १९६३ में नागालैंड को पूर्ण राज्य का दरजा मिला। लेकिन मणिपुर केंद्र-शासित राज्य बना रहा। इसने असंतोष की आग में घी डालने का काम किया। फलस्वरूप मणिपुर सार्वभौमिक राज्य की स्थापना के लिए एक मैतेई राज्य समिति का गठन हुआ। छठे दशक में सुधीरकुमार ने एक क्रांतिकारी सरकार का गठन किया। वर्तमान पी. एल. ए. के विश्वेसरसिंह तब उनके दाहिने हाथ थे। पर शीघ्र ही दोनों में वैचारिक मतभेद शुरू हो गये। बाद में सुधीर मारे गये और विश्वेसरसिंह ने पी. एल. ए. (पीपुल्स लिबरेशन आर्मी) का गठन किया।

सुधीर के समर्थकों ने 'प्रीपाक' (पीपुल्स रिवोल्यूशनरी आर्मी ऑव कांगलीपाक) का गठन किया। कांगलीपाक इस क्षेत्र का ऐतिहासिक नाम है।

गुरिल्ला-युद्ध की नीति

मणिपुर की राजधानी इंफाल में तनाव स्पष्ट दिखायी पड़ता है। विद्रोहियों ने गुरिल्ला-युद्ध की नीति अपनायी हुई है। वहां हर व्यक्ति दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखता है। सामान्य-सा दिखनेवाला कोई भी आदमी विद्रोही हो सकता है। मुठभेड़ कब हो जाए कोई भी नहीं कह सकता।

पी. एल. ए. और प्रीपाक के अलावा यू. एन. एल. एफ. (यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट) तथा एम. आर. एफ. (मणिपुर रिवोल्यूशनरी फ्रंट) एवं अन्य अनेक छोटी विद्रोही टुकड़ियां हैं।

विद्यार्थियों के भी दो संगठन 'ऑल मणिपुर स्टूडेंट्स यूनियन' तथा 'ऑल मणि-

पुर स्टूडेंट्स को-ऑर्डिनेटिंग कमेटी' विदेशियों के विरोध में आंदोलन में सक्रिय हैं।

नमक का भी आयात होता है

मणिपुर में भयंकर बेरोजगारी व्याप्त है। समस्त मणिपुर की जनसंख्या के केवल दसवें भाग को ही रोजगार प्राप्त है। वहां उद्योग नाम मात्र को भी नहीं हैं। रोजमर्रा की जरूरतों की चीजों का अभाव बना रहता है। यहां तक कि नमक का भी आयात करना पड़ता है। आर्थिक अभावों की दुर्दशा के कारण अधिकांश स्त्रियां वेश्यावृत्ति करने को बाध्य हैं।

भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। वहां एक मजाक प्रचलित है कि मणिपुर में सरकारी दफ्तर में छींकने पर भी रिश्वत देनी पड़ती है। सशस्त्र दलों की निरंतर उपस्थिति ने भी अनेक बुराइयों को बढ़ावा दिया है। इसके कारण सीमा की सुरक्षा के लिए नियुक्त बी. एस. एफ. यहां 'बॉर्डर स्मगलिंग फोर्स' के रूप में जानी जाती है।

इंफाल—सैगॉन की तरह

इन सब कारणों ने मिलकर मणिपुर को एक गंभीर समस्याग्रस्त राज्य बना दिया है। एक सैनिक अधिकारी के अनुसार, "इंफाल वियतनाम युद्ध के समय के सैगोन के समान है।" यह स्थिति अत्यधिक विस्फोटक और चेतावनीपूर्ण है। इस स्थिति का शीघ्र उपाय न खोजा गया तो भारत के संघीय स्वरूप को भारी क्षति पहुंचने की आशंका को निराधार नहीं ठहराया जा सकता।

विद्रोहियों की

मणिपुर में विद्रोहियों की तलाश
लिए भारतीय सेना के जवान और
कारी तत्परता से लगे हुए हैं। वे
हैं कि विद्रोहियों के साथ उनका
सशस्त्र कम, मनोवैज्ञानिक ज्यादा है
उन्होंने अपने कार्य और व्यवहार से
का दिल जीत लिया है। भारतीय सेना
ये जवान २३वीं माउनटेन डिवीजन
और चूंकि उनका चिह्न मुरगा है
'मुरगा-फौज' के नाम से जाने जाते

इंफाल से २५ किलोमीटर दूर
माकोंग नामक एक स्थान है, जहां
जनक व्यक्तियों से पूछताछ की जाती
इस काम में केंद्र एवं राज्य के
गुप्तचर विभाग सेना की मदद करते
चूंकि विद्रोही पर्वतों की दुर्गम घाटियों
जा छिपते हैं, अतः उन्हें पकड़ने का
कभी-कभी कठिन हो जाता है। फिर
सेना को उन्हें पकड़ने में सफलता
रही है।

—१४७, लांसर्स रोड (माल
दिल्ली-११००

१७वीं शताब्दी में, बहुत से
का विश्वास था कि चेहरे और सिर
धोने से दांत की बीमारियां हो जाती
गंजेपन का भी यही कारण है। इन
से चार्ल्स द्वितीय इतने चिंतित हुए कि
सुबह तैयार होने से पहले चेहरे पर
छुआते भर थे।

आस्था के आयाम

'भारत में लोग भले ही अभावों की कष्टकर जिंदगी गुजारते हों पर उन्होंने आज भी कर्त्तव्य और ईमानदारी के अपने परंपरागत मूल्यों को नहीं खोया है!' ये विचार हैं, एक जापानी उद्योगपति के,जिन्हें एक भारतीय की ईमानदारी ने अभिभूत कर दिया।

घटना इस प्रकार घटी कि जापान की राजधानी टोक्यो में कई देशों के स्काउटों के एक शिविर यानी जंबूरी का आयोजन किया गया। इस जंबूरी में भारत के स्काउटदल ने भाग लिया।

शिविर के समापन का दिन था। भारतीय स्काउटिंग दल के नेता श्री रमाशंकर मिश्र शिविर स्थल पर बने एक सार्वजनिक सुविधा केंद्र में गये। जब वह वाशबेसन पर हाथ धोने लगे तो उन्होंने देखा कि वहां पर एक सुंदर-सी कलाई घड़ी रखी है। निश्चित ही था कि कोई व्यक्ति हाथ धोते समय उसे वहीं रखे भूल गया है। श्री मिश्र ने वह घड़ी उठायी और अपनी जेब में रख ली। बाद में उन्होंने वह घड़ी शिविर के अध्यक्ष को सौंपते हुए कहा कि मुझे यह घड़ी मिली है। आप माइक पर उद्घोषणा कर दीजिए और जिसकी घड़ी हो उसे लौटा दीजिए।

अध्यक्ष ने ऐसा ही किया और उद्घोषणा होते ही वही व्यक्ति जिसकी घड़ी थी, अध्यक्ष के पास पहुंचा और बोला, "ठीक है, यह घड़ी मेरी है लेकिन मैं उस व्यक्ति से मिलना चाहता हूं जिसने यह घड़ी आपको दी है।"

अध्यक्ष ने श्री मिश्र को बुलाया और उन सज्जन से मिला दिया। उन सज्जन ने श्री मिश्र से भेंट की और यह जानकर कि वह भारत के हैं, उनकी ईमानदारी की प्रशंसा करते हुए कहा कि जैसा मैं सुनता रहा हूं कि भारत के लोग ईमानदार होते हैं, आपने मेरी इस धारणा को और दृढ़ कर दिया है।"

इस के बाद उन सज्जन ने जो कुछ बताया वह बहुत ही रोचक था। उन्होंने बताया, "यह घड़ी उन्होंने स्काउटों की, जिन्हें ईमानदार होने की शिक्षा दी जाती है, ईमानदारी की परीक्षा करने के लिए जानबूझकर छोड़ी थी। आपको पता नहीं यह घड़ी कंप्यूटर चालित है जिसमें ऐसी व्यवस्था है कि मुझे यह पता चलता रहता है कि यह घड़ी किस जगह पर है।" ●

रवीन्द्रसिंह को जीवन में सब कुछ मिला था। अच्छे माता-पिता, अच्छा स्कूल औ अच्छा वातावरण। फिर भी उसे बचपन से 'नशे' की लत पड़ गयी और एक प्रतिभ संपन्न किशोर, लापरवाह नशेबाज बन गया। रवि ने एक बार सामान्य जीवन बिता की कोशिश की और उन्हीं दिनों बेहद ईमानदारी के साथ उसने नशेबाज के बितायी गयी अपनी जिंदगी के संस्मरण लिखे। लेकिन नशे का आकर्षण उससे छू नहीं पाया।

अंततः २१ वर्ष की कोमल आयु में उसका प्राणांत हो गया। रवि के पिता हैं— ब्रिगेडियर ज्ञानसिंह, जो सन १९६० में एवरेस्ट पर चढ़ाई करनेवाले भारतीय दल के नेता थे। प्रस्तुत हैं स्व. रवीन्द्रसिंह की डायरी के कुछ अंश :

वह जिंदगी भर विष पीने का प्रयोग करता रहा

● रवीन्द्रसिंह

कंधों तक झूलते, आपस में उलझे लंबे-लंबे बाल, रूखी दाढ़ी, गालों की उभरी हुई हड्डियां, मैला-कुचैला चेहरा। यह मैं था—रवि! मेरी बांहों, पैरों, कंधों और चेहरे पर इंजेक्शन की सुई के निशानों की भीड़ थी। मेरी पैबंदों-लगी, रंग-उड़ी नीली जीन में जेबें तो चार थीं, पर उनमें एक पैसा तक न था। मैल से भरे मेरे शरीर पर कगारों-सी पसलियां उभरी हुई थीं।

१९ वर्ष की अवस्था में मैं 'हिरोइन' (मादक तत्व) का आदी हो चुका था। चार वर्ष पूर्व अर्थात १५ वर्ष की अवस्था से ही मैंने मादक द्रव्यों का सेवन शुरू कर दिया था। मैं ऐसी स्थिति में पहुंच चुका था, जहां अस्तित्व मात्र बनाये रखने के लिए जिंदगी संघर्ष का पर्याय बन गयी थी।

मैं 'हिरोइन' के अगले इंजेक्शन के लिए बेताब था। सूरज, आकाश, साग जमीन, वृक्ष, फूल, पशु और मनुष्य! सब मेरे लिए निरर्थक थे। मेरे लिए उनका कोई मतलब नहीं था। मेरे लिए तो ब अपनी दवा, मादक पदार्थ, ही सब कुछ था उसे खरीदने के लिए मेरे पास एक पै तक न था; पर उसके लिए मेरी बेताबी बढ़ती जा रही थी। मेरे सिर में नारकी पीड़ा हो रही थी और तपते सूरज की धू में मैं ठंड से कांप रहा था। गुस्से से अंगुली दिखाते हुए मैं किसी पागल की तरह जोरों से चीखा, "और तपो, और गरमी

बिखेरो, ताकि मैं ठंड से न कांपू ।"

राह से गुजरते कुछ लोगों ने मुझे पागल समझा । उपहास से वे हंस उठे । पर इससे मैं जरा भी विचलित नहीं हुआ । मैं मान-अपमान की स्थिति को पार कर चुका था। अब किसी के चिढ़ाने का, उपहास उड़ाने का मुझ पर कोई असर नहीं होता था । मैं कौन था ? मैं क्या था ?

बस अब मेरे लिए मेरी प्रियतमा—राजकुमारी ही सब कुछ थी । प्रियतमा नहीं, एक देवी, जिसकी मैं पूजा करता था । यह देवी कौन थी—हशीश । और बाद में इस देवी की अन्य बहनें—'हिरोइन', 'मॉरफीन', 'कोकीन', 'एल. एस. डी.' और ऐसे ही दूसरे मादक पदार्थ । मैं उनका दास था, उनका पुजारी था । मैं उनसे दूर नहीं जा सकता था । मैं पिंजरे में कैद एक पंछी की भांति था । मैं बेहद दुखी, बेहद त्रस्त भी था, मां, पिता, भाई, बहन, संबंधियों, मित्रों की अपेक्षाओं को झुठला देने, उन्हें नीचा देखने के लिए विवश करने का दोषी था और अब मुझे उसकी सजा मिल रही थी ।

मैंने मृत्यु से प्रार्थना की, रोया, गिड़गिड़ाया कि वह मुझे बुला ले, पर उसने भी मुझ पर दया नहीं की ।

मैंने एक पुलिस-सिपाही को अपनी ओर आते देखा । मैंने मन ही मन कामना की—वह मुझे पकड़ ले । मैं एक पागल की तरह चीखने-चिल्लाने लगा । मेरा ख्याल था, ऐसा करने से वह मुझे पागल समझकर गिरफ्तार कर लेगा । पर उसने दूर से ही मुझ पर नजर डाली और चला गया । एक कुत्ता मेरे पास से गुजरा । अपने-जैसे इंसानों की अपेक्षा मुझे उसकी आंखें ज्यादा दयालु, ज्यादा अपनत्वभरी लगीं ।

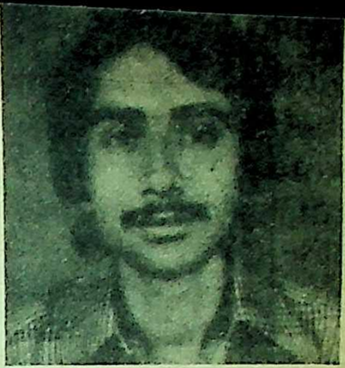

किशोर रवीन्द्रसिंह

सहसा चेहरे पर दयालुता का भाव लिये एक बीमार नशेबाज युवती मेरे पास आयी । वह मेरे पास ही रेत पर बैठकर अपना नशीला पदार्थ फूंकने लगी । उसने पूछा, "समस्या क्या है !" फिर उसने मुझे इंजेक्शन दिया—वह मेरे लिए जिंदगी देनेवाले जहर के समान था । क्षणभर में मैं सामान्य हो गया ।

मैं पहली बार ऐसी बदतर स्थिति में नहीं पहुंचा था । इसके पूर्व तो मैं इससे भी गयी-गुजरी स्थिति में पड़ गया था । कभी-कभी तो मैं कई दिनों तक बेहोश रहता, फलतः मुझे याद नहीं कि उस समय मुझ पर क्या बीती थी । मैं किसी बड़े शहर की गंदी बस्तियों में नहीं पला-बढ़ा । न मैं किसी ऐसे घर से आया था, जो परिस्थितियों के कारण टूट गया था । मेरा जन्म तो वरिष्ठ सैन्य अधिकारी के उच्च मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था । मेरे पिता बाद में पर्वतारोही के रूप में भी विख्यात हुए । मेरे माता-पिता ने मुझे अपने ढंग से बहुत अच्छे तरीके से पाला-पोसा । पर यदि उस सबका वांछित परिणाम न निकला तो इसके लिए मैं दोषी था ।

—प्रस्तोता : डी. प्रसाद

उसने क्रांति के लिए हराकिरी की थी

२५ नवंबर, १९७०

युकिओ मिशिमा नित्य की भांति सुबह तड़के उठा। नित्यकर्म से छुट्टी पाकर उसने दाढ़ी बनायी, स्नान किया और फिर सफेद सूती 'फंडोसी' (बनियान-जैसी पोशाक) के ऊपर 'तातेनोकाई' (उसके द्वारा संगठित निजी सेना का नाम जिसका अर्थ 'रक्षक सेना' है) वर्दी पहनी।

फिर उसने उन चीजों को एकत्र किया जिन्हें उसे अपने साथ ले जाना था। एक अटैची केस था, जिसमें छोटे-बड़े कई खंजर थे, कुछ कागजात और कई अन्य चीजें थीं। इसके बाद वह अपनी मेज प गया। एक बड़े लिफाफे में उसने अ अंतिम उपन्यास (द सी ऑव फर्टिलिटी) की अंतिम किश्त रखी, लिफाफा चिपका कर उस पर अपने प्रकाशक का नाम पता लिखा।

उसकी पत्नी योको अपने दोनों बच्चों के साथ स्कूल जा चुकी थी। युकिओ मिशिमा उस समय तक जापान का सर्व श्रेष्ठ साहित्यकार माना जा चुका था। उसकी ख्याति स्वदेश की सीमा पार करके विश्वभर में फैल चुकी थी। उसके कई उपन्यास, कई विदेशी भाषाओं मे

जापान के विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार युकिओ मिशिमा और उनके एक शिष्य ने सम्राट की 'आत्मरक्षा सेना' के सदर कार्यालय में 'हारा-किरी' की। उनके इस कार्य पर सारा जापान आश्चर्यचकित रह गया। उन्होंने 'हारा-किरी' कैसे की और क्यों की—इसका विस्तृत वर्णन और विवेचन अमरीकी पत्रकार हेनरी स्कॉट स्टोक्स ने अपनी पुस्तक 'द लाइफ एंड डेथ ऑफ युकिओ मिशिमा' में किया है। कादम्बिनी के पाठकों के लिए यहां उसका सार-संक्षेप प्रस्तुत किया जा रहा है।

—प्रस्तुतकर्ता : वीरेन्द्र पाण्डेय

अनूदित और प्रकाशित हो चुके थे। उसके कई नाटक भी जापान में लोकप्रिय हो चुके थे। 'देशभक्त' नामक एक फिल्म भी वह बना चुका था, जिसमें नायक की भूमिका उसी ने की थी। नोबल-पुरस्कार के लिए दो बार उसका नाम प्रस्तावित हो चुका था। जापान का बच्चा-बच्चा उसके नाम से परिचित था।

कोई दस बजे उसने तीन-चार फोन किये। एक फोन उसने अपने एक संवाददाता मित्र को भी किया। उसे वह उस दिन की घटनाओं को देखने के लिए निकट ही मौजूद रखना चाहता था।

पंद्रह-बीस मिनट बाद, उसने एक 'तोतेनोकाई-स्वयंसेवक' को अपने मकान के सदर दरवाजे में प्रवेश करते देखा। उस स्वयंसेवक का नाम 'चिबी-कोगा' था। मिशिमा ने बाहर के लान में ही उसका स्वागत किया और उसे तीन लिफाफे पकड़ा दिये। तीनों लिफाफों पर तीन स्वयंसेवकों के नाम लिखे थे।

"इन्हें ले जाकर कार में बैठो। तुम

तीनों के नाम अलग-अलग निर्देश हैं। जब तक मैं आऊं तुम तीनों इन्हें भली प्रकार पढ़ और समझ लो।"

नौजवान स्वयंसेवक लिफाफों को लेकर सड़क पर खड़ी उस सफेद' टोयटा' कार की ओर लौट आया, जिसमें उसके तीन अन्य साथी बैठे थे।

कमरे में लौटकर मिशिमा ने अपनी कमर में बंधी पेटी में बने स्थान पर एक लंबी 'समुराई' तलवार लटकायी और अटैचीकेस लेकर बाहर आ गया।

कार के पास पहुंचकर मिशिमा ड्राइवर के पास वाली सीट पर बैठ गया। पीछे की सीट पर तीन स्वयंसेवक पहले से बैठे थे। चिबी-कोगा ड्राइवर की सीट पर था।

"तुम लोगों ने पत्र पढ़ लिये ?" मिशिमा ने पूछा—"याद रहे तुम तीनों को मरना नहीं है, तुम्हें सिर्फ जनरल को संभाले रखना है। इस बात की सावधानी भी बरतनी है कि वह आत्महत्या न कर ले।"

कार में, पीछे की सीट के एक छोर पर मोरिता नामक स्वयंसेवक बैठा था। कार्यक्रम के अनुसार उस दिन उसे और मिशिमा को 'हारा-किरी' करनी थी। 'हारा-किरी' आत्महत्या करने की उस विधि का नाम है जो मध्ययुगीन जापान में अपनी सचाई और वफादारी का सबूत देने के लिए की जाती थी।

सफेद टोयटा कार, जिसमें मिशिमा और उसके चार नौजवान स्वयंसेवक थे, कोई ११ बजे टोकियो के लगभग बीच में स्थित 'इचीगाया' के प्रवेशद्वार पर रुकी। यह स्थान जापान सम्राट की आत्मरक्षा सेना का मुख्य कार्यालय था। द्वार पर तैनात सैनिकों ने मिशिमा को पहचान लिया। उन्होंने तुरंत ही टेलीफोन द्वारा कार्यालय भवन में मौजूद स्वागत-अधिकारी को मिशिमा और उसके दल के आगमन की सूचना दी। स्वीकृति मिलते ही सैनिकों ने कार को भीतर जाने का संकेत दे दिया। कार—चालक चिबी-कोगा कुछ मिनटों में ही, सामने की ढलान पार कर कार को पहाड़ी पर बने विशाल भवन के द्वार पर ले आया।

पांचों व्यक्ति गाड़ी से बाहर आये। मिशिमा के एक हाथ में अटैचीकेस था और दूसरी ओर उसकी कमर में लंबी 'समुराई' तलवार लटक रही थी।

मेजर सवामोतो ने उनका स्वागत करते हुए कहा—"आइए, जनरल माशिता आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

मेजर सवामोतो ने मिशिमा और उसके चारों स्वयंसेवकों को जनरल माशिता के कमरे में पहुंचा दिया। ५७ वर्षीय जनरल माशिता ने, जो पैसिफिक युद्ध में भाग ले चुके थे, खड़े होकर इन लोगों का स्वागत किया,—"आइए, यह सचमुच प्रसन्नता की बात है कि हम दोबारा मिल रहे हैं. ।"

कुरसी पर बैठते समय मिशिमा ने अपनी तलवार निकालकर मेज से टिका दी थी। बातचीत के दौरान उसने तलवार का जिक्र छेड़ा––"मैं यह तलवार विशेषरूप से साथ लाया हूं––आपको दिखाने के लिए। यह सोलहवीं शताब्दी के इतिहास-प्रसिद्ध 'सेकी घराने' की तलवार है। प्राचीन कारीगरी का एक उत्कृष्ट नमूना !"

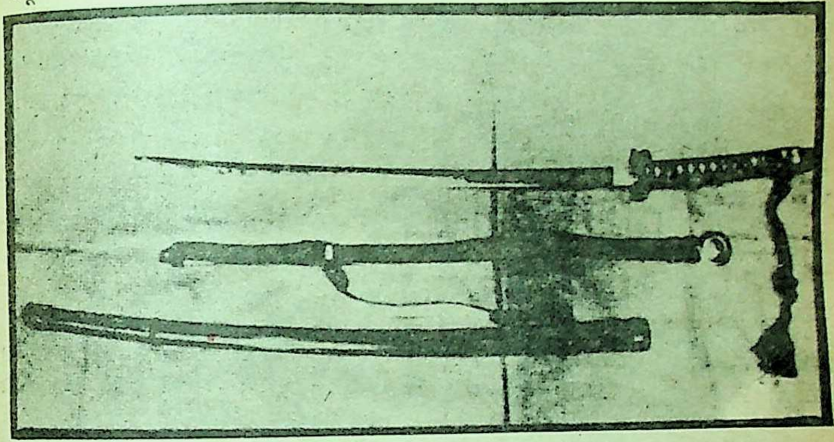

तलवार के प्रति जनरल की उत्सुकता बढ़ाते हुए मिशिमा ने खड़े होकर तलवार म्यान से निकाली। जनरल ने देखा कि उसके पैने फलक पर ग्रीज जैसी कोई चीज लगी थी और मूंठ पर नगीने जड़े थे। मिशिमा ने अपने साथी चिबी-कोगा की ओर देखते हुए आज्ञा दी—"कोगा ! जरा रूमाल देना।"

कोगा खड़ा हो गया। उसके हाथ में रूमालनुमा एक छोटा तौलिया था। वह तौलिया ही वह 'रूमाल' था। योजना के अनुसार कोगा को वह रूमाल जनरल माशिता के मुंह में ठूंसना था तथा उसके बाद अपने साथियों की सहायता से जनरल के हाथ-पैर बांधकर उसे उसकी कुरसी से बांधना था।

किंतु, योजना में थोड़ा व्यवधान पड़ गया। जनरल माशिता खड़े हो गये और पास पड़ी एक दूसरी छोटी-सी मेज पर रखे कपड़े को उठाने चले गये।

कोगा हिचकिचा गया। वह उस छोटे से तौलिये को मिशिमा को देकर पुनः अपनी कुरसी पर आ बैठा।

मिशिमा ने बड़े इत्मीनान से तलवार का फलक पोंछा। तलवार चमचमा उठी। मिशिमा ने उसे जनरल माशिता की ओर बढ़ा दिया। तलवार हाथ में लेकर जनरल माशिता ने उसे प्रशंसापूर्ण नजरों से देखा। फिर उसे मिशिमा को लौटाते हुए उन्होंने कहा "वाकई, यह एक नायाब चीज है। मैंने इतनी प्राचीन,

प्रशंसित ! पूर्ण प्रशंसित !!

भारत के सभी लोगों ने प्रशंसा की है कि 'अलीमा' ही केवल वास्तविक गोल्ड कवरिंग ज्वेल हैं और अन्य कोई-सा भी ब्रान्ड 'अलीमा' की क्वालिटी के समकक्ष नहीं हैं। प्रसिद्ध अलीमा ज्वेल्स पहनें व आनंद लें। विवाह एवं अन्य समारोह में पहनने योग्य। शुद्ध २२ कैरट स्वर्ण के समान दिखाई देता है। अधिक काल तक चलता है !! लुभावने डिजाइन !!! वी. पी. पी. आर्डर के लिए लिखें (नकली ब्रान्डों से बचें)।

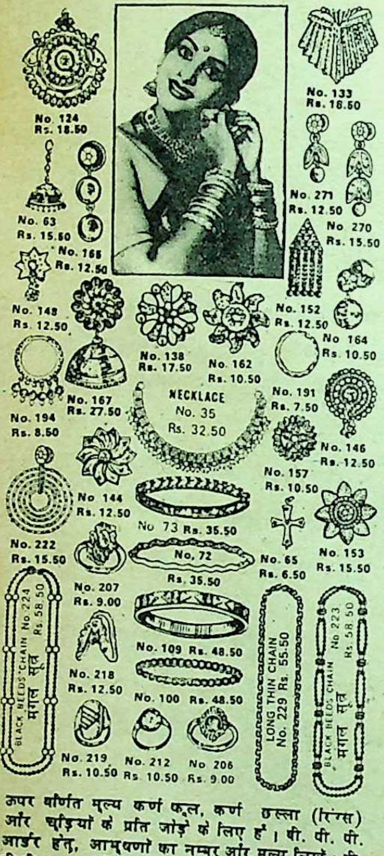
No. 124 Rs. 18.50
No. 133 Rs. 18.50
No. 63 Rs. 15.50
No. 271 Rs. 12.50
No. 270 Rs. 15.50
No. 165 Rs. 12.50
No. 148 Rs. 12.50
No. 138 Rs. 17.50
No. 162 Rs. 10.50
No. 152 Rs. 12.50
No 164 Rs. 10.50
No. 167 Rs. 27.50
NECKLACE No. 35 Rs. 32.50
No. 191 Rs. 7.50
No. 194 Rs. 8.50
No. 146 Rs. 12.50
No. 157 Rs. 10.50
No 144 Rs. 12.50
No 73 Rs. 35.50
No. 222 Rs. 15.50
No. 72 Rs. 35.50
No. 65 Rs. 6.50
No. 153 Rs. 15.50
No. 207 Rs. 9.00
BLACK BEEDS CHAIN No. 224 Rs. 58.50 मंगल सूत्र
No. 109 Rs. 48.50
LONG THIN CHAIN No. 229 Rs. 55.50
BLACK BEEDS CHAIN No 223 Rs. 58.50 मंगल सूत्र
No. 218 Rs. 12.50
No. 100 Rs. 48.50
No. 219 Rs. 10.50
No. 212 Rs 10.50
No 206 Rs. 9.00

ऊपर वर्णित मूल्य कर्ण फूल, कर्ण छल्ला (रिंग्स) और चूड़ियों के प्रति जोड़े के लिए हैं। वी. पी. पी. आर्डर हेतु, आभूषणों का नम्बर और मूल्य लिखें। वी. पी.पी. प्रभार अतिरिक्त। यदि आप को विवरणिका चाहिए तो ६० पैसे का डाक टिकट भेजें।

Alima Gold Covering Works
No. 34 & 46, Ranganathan Street,
T. Nagar, Madras-600017.
(Phone : 446884 & 442715)

खूबसूरत और मजबूत तलवार आज तक नहीं देखी।"

तलवार मिशिमा को पकड़ाकर जनरल पुनः अपनी कुरसी पर बैठ गये, उस समय ग्यारह बजकर पांच मिनट हुए थे।

मिशिमा ने, जो तलवार लिये जनरल के पास ही खड़ा था, अपने स्वयंसेवकों की ओर देखा और आंख के इशारे से चिवी-कोगा को आज्ञा दी। कोगा दूसरी बार खड़ा हो गया। तड़ककर आगे आया और मिशिमा के पीछे होता हुआ जनरल माशिता की कुरसी के पीछे पहुंच गया। उसने अपने दोनों हाथों से जनरल की गर्दन दबोच ली। तभी दो अन्य स्वयंसेवक भी उसके पास पहुंचकर जनरल के हाथ-पैर बांधने लगे। इन लोगों ने यह सारा काम इतनी फुर्ती से किया कि जनरल अपने बचाव के लिए कुछ भी न कर पाया। स्वयंसेवकों ने उसके मुंह में कपड़ा ठूंसकर उसपर पट्टी बांध दी, हाथ-पैर बांधने के बाद, उसे उसकी कुरसी से बांध दिया गया। चिवी-कोगा हाथ में कटार लिये उसके पीछे खड़ा हो गया।

मिशिमा कमरे के बीच में तलवार ऊपर उठाये खड़ा था। मोरिता तार और चिमटे की मदद से कमरे के दरवाजों को भीतर से बंद करने में लगा था। दीवारों या दरवाजों पर चूंकि तारों को मजबूती से बांधने की कोई व्यवस्था न थी इसलिए तारों को जैसे-तैसे कसकर मोरिता, अन्य दो स्वयंसेवकों की मदद

से कमरे में पड़ी मेजों, डेस्कों और आलमारियों को खिसकाकर दरवाजों में अड़ाने लगा।

जनरल माशिता, जिनके मुंह पर पट्टी बंधी थी, हैरान और अर्धबेहोशी की हालत में यह समस्त कार्यवाही देख रहे थे।

प्रवेशद्वार के पास एक ऐसा छेद था जिसके जरिए बाहर से कमरे के भीतर देखा जा सकता था।

मेजर सवामोतो किसी काम से बाहर आये। उत्सुकतावश उन्होंने उस छेद के भीतर देखा। देखते ही 'धक्' से रह गये। उनकी कल्पना थी आगंतुक मेहमान जनरल के साथ बैठे 'हरी चाय' पी रहे होंगे। पर उन्हें दिखायी कुछ और ही दिया। उन्होंने देखा कि एक स्वयंसेवक जनरल का गला दबा रहा है, घबराकर उसने अपने साथी कर्नल हारा को खबर दी। वह भी हड़बड़ाकर माशिता के कमरे की ओर दौड़े। दफ्तरभर में खबर फैलते देर न लगी।

लेकिन, तब तक मिशिमा और उसके साथी अपनी योजना के अनुसार अपना काम पूरा कर चुके थे।

मिशिमा जानता था कि वह द्वार शीघ्र ही खुल जाएगा। अतः वह तीन स्वयंसेवकों को अपने पीछे आने तथा चिबीकोगा को बंधे हुए जनरल पर तैनात रहने का आदेश देकर उस द्वार के निकट पहुंच गया।

तब तक द्वार खुल चुका था। मिशिमा तलवार का वार करता हुआ जोर से गरजा—"बाहर. . . .एकदम बाहर रहो। जिसने भी भीतर कदम रखा उसके टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।"

कुछ लोग शायद उसकी बात पर यकीन न कर सके। एक सार्जेंट ने आगे बढ़कर मिशिमा की कलाई पकड़नी चाही। दो तीन अन्य अफसरों ने भी उस सार्जेंट के साथ भीतर आने की चेष्टा की। किंतु मिशिमा पर जैसे भूत सवार था। उसने तड़ातड़ तलवार के कई वार किये और साथ ही गरजता भी रहा—"बाहर. . एकदम बाहर।"

सार्जेंट और आगे के दो-तीन अफसर तलवार की चपेट में आये। किसी की बांह और किसी की पीठ घायल हुई। चूंकि सभी लोग निहत्थे थे इसलिये सबने कमरे के बाहर रहना ही उचित समझा।

खून से रंगी हुई तलवार घुमाता हुआ मिशिमा द्वार तक गया और द्वार को पुनः भीतर से बंद कर लिया।

कर्नल हारा, जो इस सारे घटनाक्रम को गंभीरता से देख रहे थे, एकाएक जोर से चिल्लाये—"आखिर तुम चाहते क्या हो, मिशिमा! तुम्हारी मांगें क्या हैं?"

मिशिमा ने तेज आवाज में उत्तर दिया कि बालकनी के नीचेवाले मैदान में सम्राट की 'आत्मरक्षा सेना' की पूर्वी कमांड के सभी एक हजार सैनिकों को अविलंब बुलाया जाए। वह उनके सामने एक छोटा-सा भाषण देगा। भाषण के

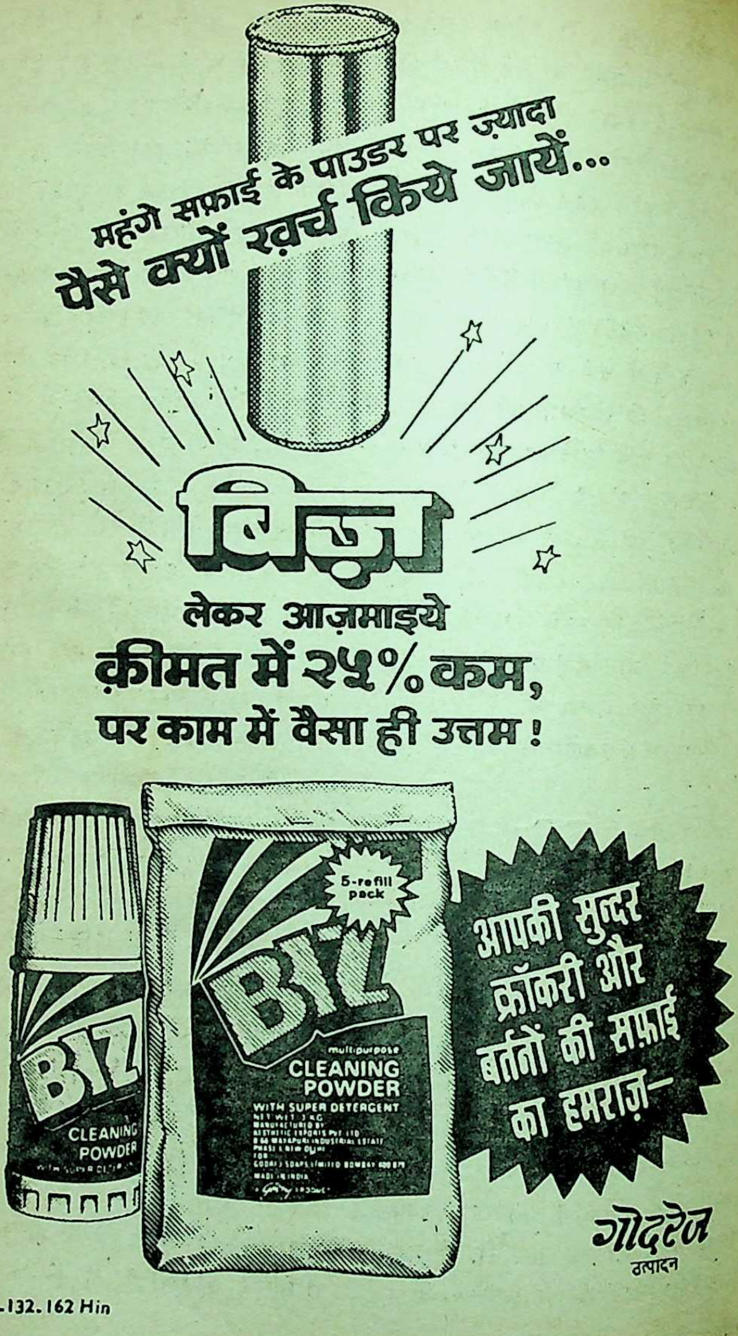
5-refill pack
BIZ
multipurpose
CLEANING POWDER
WITH SUPER DETERGENT
BIZ
CLEANING POWDER

महंगे सफ़ाई के पाउडर पर ज़्यादा
पैसे क्यों ख़र्च किये जायें...

बिज़

लेकर आज़माइये
क़ीमत में २५% कम,
पर काम में वैसा ही उत्तम !

आपकी सुन्दर क्रॉकरी और बर्तनों की सफ़ाई का हमराज़—

गोदरेज
उत्पादन

CASGS-132.162 Hin

दौरान कोई व्यवधान न डाला जाए।

साथ ही मिशिमा ने अटैचीकेस से एक लिफाफा निकाला। दरवाजे की दराज से उसे बाहर फेंकते हुए उसने कहा, "हमारी मांगों का विस्तृत ब्यौरा इस पत्र में है। हम जनरल की हत्या नहीं करना चाहते। सैनिकों के सामने मैं केवल अपने विचार रखना चाहता हूं, बस!"

लगभग आधे घंटे के भीतर, बाहर यह तय हो गया कि मिशिमा की बात मान ली जाए। इस बीच मिशिमा ने जनरल के मुंह में ठूंसा हुआ कपड़ा निकलवाकर उन्हें भी अपनी मांगों से अवगत करा दिया।

कर्नल हारा और उसके साथी अफसरों ने मिशिमा की मांग को पूरा करने के सिलसिले में आवश्यक प्रबंध करने शुरू किये। शहर की पुलिस को फोन किया गया। अस्पताल से ऐंबुलेंस गाड़ियां बुलायी गयीं।

ग्यारह बजकर अड़तीस मिनट पर पुलिस का साइरन सुनायी पड़ा, पुलिस जवानों से भरी दर्जनों गाड़ियां आना शुरू हुईं।

बालकनी के सामने खुले मैदान में पूर्वी सेना के जवान एकत्र हो चुके थे। अनेक ऐंबुलेंस गाड़ियां भी आ चुकी थीं, देश-विदेश के पत्रकारों, फोटोग्राफरों और दर्शकों की भीड़ उमड़ रही थी। ऊपर आसमान पर अनेक हेलीकाप्टर चक्कर लगा रहे थे। इनमें से कुछ टी. वी. केंद्रों और कुछ समाचार-पत्रों व एजेंसियों के थे।

बारह बजने के कुछ मिनट पूर्व मोरिता की चौकोर गठी हुई सूरत बालकनी पर दिखायी दी। उसके पीछे एक अन्य स्वयंसेवक था। दोनों ने मिलकर कपड़े के दो बड़े-बड़े बैनर बालकनी पर लटका दिये। बैनरों में वे शर्तें लिखी थीं, जिनका पालन करके जनरल माशिमा के प्राण बचाये जा सकते थे। इन शर्तों में एक शर्त यह भी थी कि लोग शांतिपूर्वक मिशिमा का भाषण सुनें।

लेकिन, बाहर के माहौल में जो उत्तेजना, जो व्यग्रता और सक्रियता थी, उसमें ऐसा संभव न था। नीचे के शोर में जो कुछ कमी रह गयी थी उसे पूरा कर रहे थे—मैदान के ऊपर मंडरानेवाले हेलीकाप्टर।

तभी मिशिमा के दो 'तोतेनोकाई' स्वयंसेवकों ने बालकनी से छपे हुए परचे गिराने शुरू किये। इन परचों में मिशिमा का नवीनतम घोषणापत्र था। घोषणापत्र में पहले भाषण की सुविधा प्रदान करने के लिए 'आत्म-रक्षा-सेना' के अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट किया गया था और फिर उसके सैनिकों और अधिकारियों को ललकारा गया था। उनसे कहा गया था कि वर्तमान राजनीतिक नेता 'आत्म-रक्षा-सेना' को खिलौना बनाये हुए हैं। उसे इसका विरोध करना चाहिए तथा अपनी शक्ति को बढ़ाकर जापान को पुनः अपने सम्राट के अधीन एक प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित करना चाहिए। घोषणापत्र में मिशिमा ने यह

ANJALI® THE LARGEST RANGE OF KITCHENWARE MORE THAN 85 VARIETIES

अंजली®

एग बोइलिंग स्टैंड

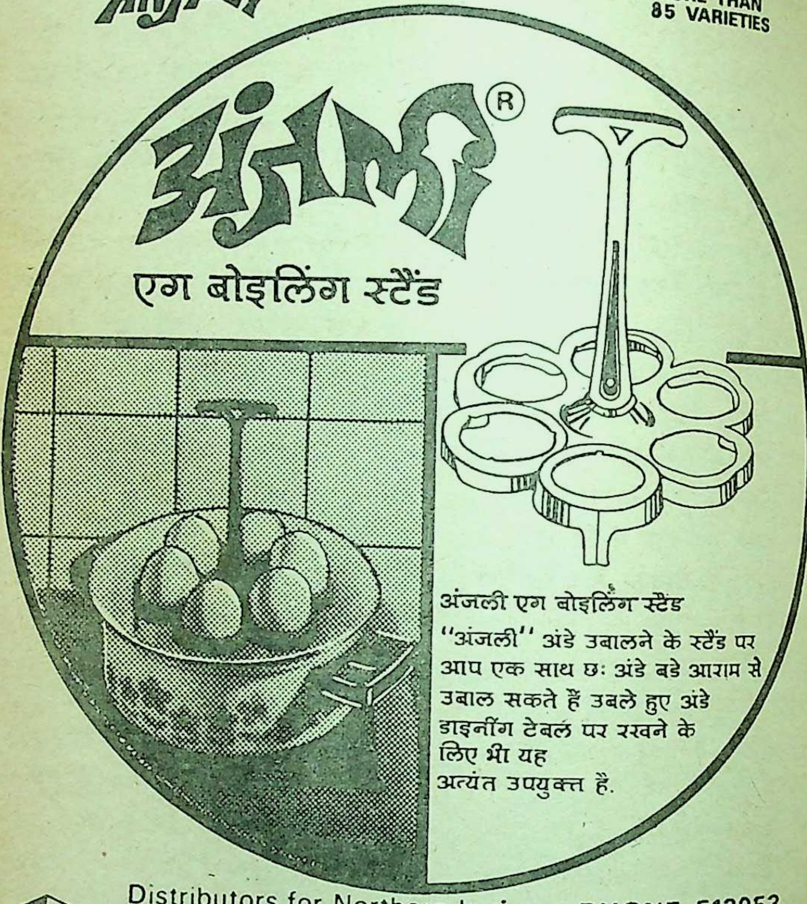

अंजली एग बोइलिंग स्टैंड

''अंजली'' अंडे उबालने के स्टैंड पर आप एक साथ छः अंडे बडे आराम से उबाल सकते हैं उबले हुए अंडे डाइनींग टेबल पर रखने के लिए भी यह अत्यंत उपयुक्त हैं.

Distributors for Northern India PHONE: 513953

S.INDER SINGH DARSHAN SINGH

34, N. BASTI HARPHOOL SINGH,
SADAR THANA ROAD, DELHI-110 006.

भी लिखा था कि जापान के मौजूदा नेता व्यापारियों और विदेशी शक्ति के साथ एक ऐसी भयंकर जापान-विरोधी साजिश में लगे हैं, जो जापान को कभी भी प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र के रूप में उभरने न देगी।

पाठकों की सुविधा के लिए यहां यह याद दिलाना जरूरी है कि द्वितीय महायुद्ध के बाद अमरीकी सेना ने जापान से जिन शर्तों पर संधि की थी, उनके अनुसार जापान से सेना या सैनिक व्यवस्था रखने का अधिकार छीन लिया गया था। सम्राट को केवल 'नाम मात्र का सम्राट' रखा गया था और औपचारिता की दृष्टि से उसे एक छोटी सी शस्त्र-विहीन 'आत्म-रक्षा-सेना' रखने की छूट दी गयी थी।

घोषणापत्र के अंत में मिशिमा ने आत्म-रक्षा-सेना के सैनिकों से जापान में पुनः सम्राट की शक्तियों को स्थापित करने की अपील की थी, उसने कहा था, 'शरीर से आत्मा मूल्यवान है। शरीर भले ही मर जाए पर आत्मा को न मरने दो, स्वराष्ट्र का स्वाभिमान ही आत्मा है। उसका महत्त्व सर्वोपरि है। उसकी तुलना में हमारी जिंदगी, हमारी संपन्नता, हमारी स्वाधीनता, हमारा मौजूदा लोकतंत्र सब कुछ हेय है, व्यर्थ है। हमें सबसे पहले अपने जापान को, इतिहास और परंपरा की गौरवभूमि जापान को, अपनी मातृभूमि जापान को, जिसे हम प्यार करते हैं, जिस पर हमें नाज है, उस जापान को फिर से एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है।'

परेड मैदान में खड़े सैनिकों और दर्शकों ने पर्चे उठाये। कुछ पढ़ने लगे और कुछ ने उन्हें अपनी जेबों में खोंस लिया। वातावरण में एक जबर्दस्त सनसनी थी। कब क्या हो जाएगा ? सभी अगले पल की अप्रत्याशित घटनाओं को देखने को उत्सुक थे।

लगभग १२ बजे मिशिमा बालकनी पर सामने आया। सबकी निगाहें उस पर टिक गयीं। उसने बोलना शुरू किया, "जिन परिस्थितियों में मैं आपके सामने बोल रहा हूं, उन्हें मैं स्वयं पसंद नहीं करता। इस सारे कार्य-व्यापार पर मुझे खेद है, पर ऐसा मौका पाने के लिए मेरे पास और चारा ही क्या था ?"

कई हेलीकाप्टर नीचे चक्कर लगा-लगाकर वातावरण में हो रहे शोर में वृद्धि करने लगे। उन पर बैठे टी. वी. और समाचार-पत्रों आदि के फोटोग्राफर तस्वीरें खींच रहे थे। हेलीकाप्टरों की आवाजों में मिशिमा की आवाज डूबने लगी। वह कह रहा था, "मेरा विचार था कि 'आत्म-रक्षा-सेना' जापान के उद्धार की 'अंतिम आशा' है, लेकिन . . .।"

हेलीकाप्टर पुनः आये और कोई यह न सुन सका कि मिशिमा ने आगे क्या कहा।

"आज जापान की जनता धनोपार्जन ... केवल धनोपार्जन में जुटी है," मिशिमा की आवाज पुनः उभरी, "कहां गयी हमारी राष्ट्रीय भावना ? कहां गयी हमारी

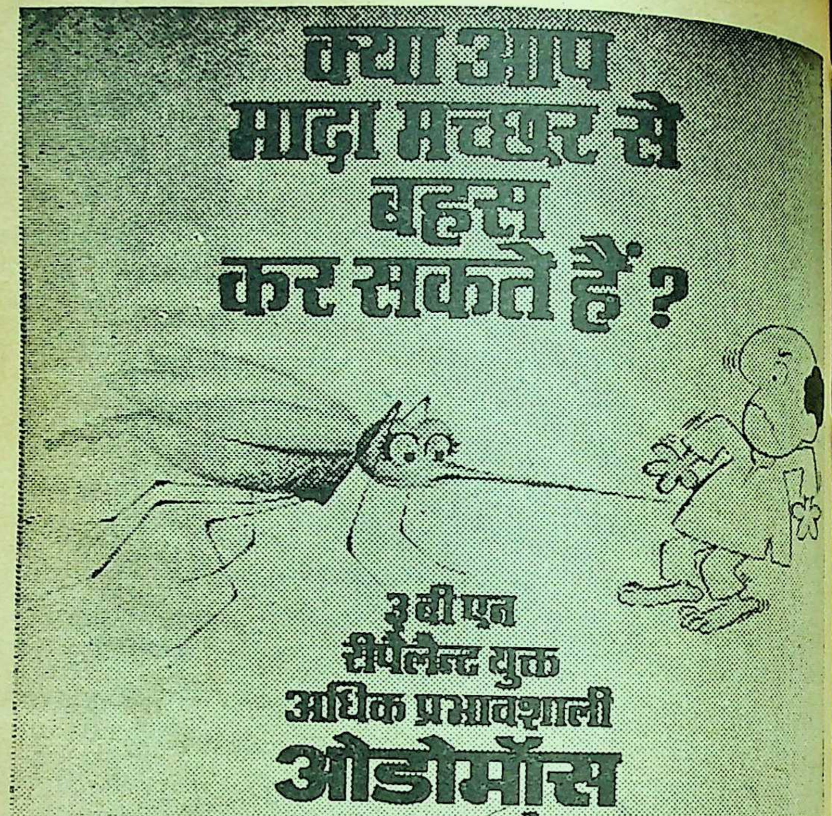

क्या आप
मादा मच्छर से
बहस
कर सकते हैं?
3 बी एन
रीपेलेन्ट युक्त
अधिक प्रभावशाली
ओडोमॉस
कर सकता है।

क्या आप जानते हैं कि नर मच्छर इंसान को नहीं काटता। काटती तो केवल मादा मच्छर है और इस से भी खराब बात ये कि वे मलेरिया और पीले बुखार जैसी जानलेवा बीमारियों के कीटाणु लिये हो सकती हैं। ऐसे मच्छर का एक बार भी काटना आपके व आपके परिवार के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

यह रहा बचने का उपाय। 3 बी एन रीपेलेन्ट युक्त अधिक प्रभावशाली ओडोमॉस लाइये। शरीर के खुले अंगों पर इसे वैनिशिंग क्रीम की तरह लगाइये। बच्चों की कोमल त्वचा के लिए भी यह बिल्कुल सुरक्षित है। आज ही ओडोमॉस लाइये और रातभर सुखद नींद का आनंद पाइये।

ओडोमॉस–मच्छरों का दुश्मन

odomos
mosquito repellent
ODOMOS
mosquito repellent
Safe for Tender Facial Skin

3 बलसारा
—सुखी जीवन के लिए
आधुनिक साधन

CHAITRA-BLS-438 HIN

नैतिकता ? हमारा चरित्र ? हमारे मूल्य और हमारी मान्यताएं ? राजनीतिज्ञों को हमारे राष्ट्र की जरा भी परवाह नहीं है, वे सब सत्ता और धन के लोभ में डूबे हुए हैं। सैनिकों ! 'आत्म-रक्षा-सेना' के सैनिकों एकमात्र तुम्हीं जापान की आत्मा हो, जापान की 'आशा' हो . . .।"

नीचे मोटर गाड़ियों के चालू इंजिनों की आवाजें, ऊपर हेलीकाप्टरों की आवाजें, मिशिमा की आवाज कभी उसमें डूब जाती, तो कभी उसके दो-चार शब्द सुनायी पड़ जाते। नीचे खड़ा हजारों का मजमा बेचैन हो उठा। पक्ष-विपक्ष में आवाजें कसी जाने लगीं। मिशिमा ने बार-बार लोगों से शांत रहने की अपील की, पर वहां बोलनेवाले सब हो गये, सुननेवाला एक न रहा। फिर भी मिशिमा बोलता रहा—"संविधान को बदलो . . . जापान को बचाओ। अपनी संस्कृति, अपनी परंपराओं को बचाओ . . . अगर तुमने संविधान को नहीं बदला, तो तुम जापान को और उसके गौरव को कभी न बचा सकोगे।"

मिशिमा जिस व्यग्रता से बार-बार 'सुनो-सुनो' और 'शांत रहो, शांत रहो' कह रहा था, उससे स्पष्ट था कि वह मन ही मन यह महसूस कर रहा था कि उसकी सारी योजना असफल हो चुकी है। फिर भी उसने अपना भाषण पूरा किया और अंत में यह नारा लगाया, "माननीय सम्राट को मेरा सलाम....हमारा सम्राट जिंदाबाद !"

नीचे खड़े श्रोताओं से विदा लेकर मिशिमा पुनः उस कमरे में आ गया, जहां उसका एक स्वयंसेवक मोरिता जनरल माशिता को बंधक बनाये था। अन्य तीन स्वयंसेवक भी उसके साथ थे। उनमें से एक ने द्वार को फिर भीतर से बंद कर लिया।

कमरे में घुसते ही मिशिमा ने अपनी जैकेट के बटन खोलने शुरू कर दिये।

"रुको . . . रुको," जनरल माशिमा चिल्लाये, "इससे किसी का कोई लाभ नही होगा।"

"नहीं जनरल ! मुझे तो यह करना ही है। तुम पर इसकी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।"

"नहीं....मिशिमा....ऐसा मत करो।" जनरल फिर चिल्लाया।

लेकिन मिशिमा पर तो जनून सवार था। वह जैकेट उतारकर एक तरफ फेक चुका था। पेटी खोलकर उसने पैंट को नीचे किया और इस तरह उसने ऊपर का अपना सारा शरीर नंगा कर लिया। फिर कलाई की घड़ी उतारकर उसने एक स्वयंसेवक को पकड़ायी, अटैचीकेस से एक फुट लंबा तेज धारवाला खंजर निकाला और भूमि पर घुटने के बल सीधे बैठ गया।

तभी ओगावा नामक स्वयंसेवक कलम और कागज लेकर मिशिमा के पास पहुंचा। योजना के अनुसार उसे अपना अंतिम संदेश भी लिखना था।

हाई पावर सर्फ़ की सबसे सफ़ेद धुलाई...
जो देखने में आई

अगर आपका मुन्ना कपड़े मैले करने में चैम्पियन है तो आपको चाहिए एक ऐसा चैम्पियन जो मैल को खदेड़े: हाई पावर सर्फ़. हाई पावर सर्फ़ में अधिक शक्तिशाली फ़ार्मूला है—धूल और चीकट मैल के दाग धब्बों को खींच निकालने के लिए ज़्यादा शक्ति है. यह मैले से मैले कपड़ों में भी जगमगाती सफ़ेदी ले आता है.

हाई पावर सर्फ़ घर-भर के कपड़ों की धुलाई में लाए—ज़्यादा सफ़ेदी, ज़्यादा चमक, तभी तो अधिकांश मांएं दूसरे किसी पाउडर के मुकाबले में सर्फ़ ही इस्तेमाल करती हैं.

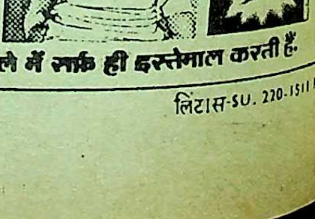

अधिकांश माँएं दूसरे किसी पाउडर के मुकाबले में सर्फ़ ही इस्तेमाल करती हैं.

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिंटास-SU. 220-1511 HI

"नहीं . . . अब इसकी जरूरत नहीं रही," कहकर मिशिमा ने अपनी बायीं हथेली अपने पेट के बायें भाग पर फेरी और दाहिने हाथ के खंजर की नोक पेट के उस भाग में चुभो ली ।

निर्देशानुसार मिशिमा का पट्टशिष्य मोरिता लंबी तलवार लिये उसके पीछे खड़ा था । तलवारवाला हाथ उठा हुआ था और उसकी नजर मिशिमा की गर्दन पर थी ।

मिशिमा ने अंतिम बार 'हमारा सम्राट जिंदाबाद' का नारा लगाया । फिर उसने सांस खींचकर पेट को पिचकाया और खंजर की मूंठ पर दोनों हाथों से जोर लगाते हुए खंजर को पेट में घोंप लिया । खंजर काफी गहरा धंस गया । मिशिमा का चेहरा जर्द पड़ने लगा । फिर भी, उसने खंजर को तिरछा खींचकर अपने पेट को चीर डालने का प्रयास किया । किंतु नाकामयाब रहा, खंजर अपनी जगह से हिल न सका । पेट से खून का फौव्वारा छूट चुका था ।

मिशिमा ने जिस समय सिर को आगे झुकाकर अपने पेट को चीरने की कोशिश की थी, तब उसकी गर्दन स्पष्ट दिखायी दी । मोरिता ने उसी क्षण अपने गुरु और नेता की गर्दन पर तलवार का भरपूर वार किया । लेकिन निशाना चूक गया । गर्दन नहीं कटी ।

"दुबारा...दुबारा ।" एक स्वयंसेवक चिल्लाया क्योंकि योजना समझाते हुए मिशिमा ने मोरिता से कहा था, "मुझे तड़पने की स्थिति में ज्यादा देर तक न रखना ।"

मोरिता ने फिर वार किया, इस बार उसका हाथ कांप गया और तलवार गर्दन की बजाय शरीर पर लगी ।

"फिर . . . एक बार फिर," स्वयंसेवक चिल्लाये ।

मोरिता के हाथों में अब बहुत कम शक्ति रह गयी थी । फिर भी वह अपने साथियों के सामने असफल नहीं सिद्ध होना चाहता था । उसने तीसरी बार तलवार उठायी और भूमि पर पड़े तड़पते मिशिमा की गर्दन पर वार किया । इस बार गर्दन कट तो गयी, पर सिर धड़ से अलग नहीं हुआ ।

फुरू-कोगा नामक स्वयंसेवक ने आगे बढ़कर मोरिता से कहा, "लाओ तलवार मुझे दो ।"

और तलवार लेकर कोगा ने सिर को धड़ से अलगकर दिया । फिर चारों स्वयंसेवक घुटने टेककर अपने गुरु एवं नेता के प्रति श्रद्धांजलि देने लगे । श्रद्धांजलि देते समय उन चारों स्वयंसेवकों की आखों से अविराम आंसू बह रहे थे ।

कुरसी से बंधे जनरल माशिता ने जब आखें खोलीं, तब सभी स्वयंसेवक अपने नेता के क्षत-विक्षत शरीर के सामने घुटने टेके श्रद्धांजलि दे रहे थे । श्रद्धांजलि के बाद उन्होंने कोई प्रार्थना की । प्रार्थना समाप्त होते ही वे खड़े हो गये एकदम सतर्क और

सुपर रिन की चमकार ज़्यादा सफ़ेद

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से ज़्यादा सफ़ेद.

सुपर रिन से नियमित धुलाई करने पर आपके कपड़ों में ऐसा फ़र्क आये कि दूर से दिखे. किसी दूसरी डिटर्जेंट टिकिया या बार के मुकाबले सुपर रिन कहीं अधिक सफ़ेदी लाता है, क्योंकि सुपर रिन में अधिक सफ़ेदी की शक्ति है.

आज़माइए और सबूत पाइए:

किसी अन्य डिटर्जेंट बार से धोया हुआ

सुपर रिन से धोया हुआ

सुपर रिन—अधिक सफ़ेदी की शक्ति से भर

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

लिंटास-RIN. 35.1611

सावधान।

एक स्वयंसेवक ने खून के तालाब में पड़े मिशिमा के शरीर में से खंजर निकाला और उसी बीच मोरिता ने अपने कपड़े उतार डाले।

खंजर हाथ में लेकर मोरिता उसी प्रकार घुटने के बल बैठ गया—जैसे मिशिमा बैठा था। फिर उसने भी एक तेज आवाज में 'सम्राट जिंदाबाद' का नारा लगाया और खंजर को पेट में घोंप लिया।

उसका दूसरा साथी फुरू-कोगा तलवार लिये पीछे खड़ा था। 'ठीक' कहकर उसने तलवार का वार मोरिता की गर्दन पर किया। एक ही वार में मोरिता का सिर धड़ से अलग होकर दूर जा गिरा। कमरे भर में खून ही खून था।

शेष तीनों स्वयंसेवकों ने एक बार फिर घुटने के बल बैठकर अपने साथी मोरिता के प्रति श्रद्धांजलि दी और प्रार्थना की।

जनरल माशिता जो कुरसी से बंधे होने के कारण कुछ भी न कर सकते थे, जोर से चीखे, "बस . . . बस . . ., बंद करो इसे।"

"आप चिंता न करें . . .," एक स्वयंसेवक ने शांत भाव से जनरल से कहा, "हमारा कार्यक्रम यहीं पूरा होता है। उनकी (मिशिमा की) आज्ञा के अनुसार उनके बाद केवल मोरिता को ही 'हाराकिरी' करनी थी। हमारे लिए उनकी आज्ञा है कि अब हम आपके बंधन खोलकर आपको अपने साथियों से मिलने के लिए मुक्त कर दें।"

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ५%, २. क. २१८० कि.मी., ख. १४० कि. मी., ग. भारत—लगभग १० लाख वर्ग कि.मी., बंगलादेश—१% से कम, ३. नेपोलियन (१७६९-१८२१), फ्रांस का सम्राट—१८०४, १८१५ ४. नेयवेली (तमिलनाडु), ५. हिन्दुस्तान टाइम्स (१९७६ में), स्टेट्समैन (१९८१ में), ६. नारवे—श्रीमती ग्रो हार्लेम ब्रंड्टलैंड, ७. सूरत के भरतकुमार सुकानी—चोरवाड़ से वेरावल तट (गुजरात) ८ घंटे ११ मिनट की तैराकी के बाद केवल २० मीटर का फासला रह जाने पर थकान से प्राणांत, ८. ग. 'बेन किंग्सले' ९. ब्रिटिश अभियान-दल, सर रैनल्फ ट्विसिलटन—वाइकहम—फियनेस के नेतृत्व में जनवरी १९८१ में पहुंचा, १०. कनाडा का मार्शल मकलुहान—गत वर्ष ३१ दिसंबर को निधन, ११. डॉ. हैरोल्ड सी. यूरे (अमरीका)—१९३१ में आविष्कार, १९३४ में रसायन में नोबल पुरस्कार, विगत ५ जनवरी को निधन, १२. सारावाक (द. पू. एशिया)—२५० मीटर लंबी, ७० मीटर चौड़ी, १६ फुटबाल मैदानों के बराबर, फ्रांस की पेरे-सान-मार्टिन गुफा से दुगुनी बड़ी, १३. हुक वार्म।

मिशिमा का जन्म १४ जनवरी, १९२५ को टोकियो में हुआ था। उसके माता-पिता उच्च-मध्यमवर्ग के थे, किंतु उसके जन्म के समय तक अपना बहुत कुछ वैभव खो चुके थे। पिता सरकारी अफसर थे। जापान में कन्फ्यूशियस की परंपरा के अनुसार सरकारी नौकरी सर्वाधिक सम्मानप्रद पेशा माना जाता था। इसीलिए पढ़ाई के बाद मिशिमा को भी सरकारी नौकरी में जाने के लिए कहा गया। पर मिशिमा अपने पिता की यह बात पूरी न कर सका। मां एक स्कूल-प्रिंसिपल की बेटी थी। मिशिमा को अपनी मां की सुंदरता पर गर्व था। समय के साथ घर के रहन-सहन में लगातार आनेवाली गिरावट के कारण मिशिमा का बचपन बहुत अच्छा नहीं बीता। बीते जमाने के पारिवारिक वैभव और सम्मान की कहानियों से ही सदा उसको मन समझाना पड़ा। जिस स्कूल में भर्ती कराया गया, वहां अमीरों और शाही परिवार के बच्चे भी पढ़ते थे। उनकी वेशभूषा और उनका रहन-सहन भी मिशिमा के मन में हमेशा अपने अभावों की कसक पैदा करता रहा। किंतु साहित्य, इतिहास और जापान की प्राचीन संस्कृति के प्रति उसकी दिलचस्पी बचपन से ही रही। किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते वह अनेक जापानी और विदेशी विद्वानों का साहित्य पढ़ चुका था।

शताब्दी का तीसरा और चौथा दशक जापान के लिए बड़ी उथल-पुथल का रहा। उत्तर से रूस का खतरा था। दक्षिण में ब्रिटेन, फ्रांस और हॉलैंड खतरा बनाये हुए थे। स्वदेश में भी आये दिन हिंसात्मक घटनाएं हो रही थीं।

मिशिमा की किशोरावस्था और जवानी इसी दौर से गुजरी थी। उसकी संवेदनशीलता और उसका चिंतन इनसे निरंतर प्रभावित होता रहा। अंतर्मुखी प्रवृत्ति का होना ही समय की मांग थी। मिशिमा भी वैसा ही बना रहा और परोक्ष रूप में वह अपने साहित्य के द्वारा अपनी विचारधारा की अभिव्यक्ति करता रहा। सोलह वर्ष की आयु में, उसकी पहली कृति जापान की एक साहित्यिक पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुई। पूरे जापान में इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया गया कि इतनी श्रेष्ठ कृति का कृतिकार इतनी कम आयु का है। अपने ४५ वर्ष के जीवन में मिशिमा ने १०१ से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें से अनेक विदेशी भाषाओं में अनूदित और प्रकाशित हो चुकी हैं। नोबल पुरस्कार के लिए भी दो बार उसके नाम पर विचार किया गया।

मिशिमा का साहित्य इस बात का साक्षी है कि वह अपने देश जापान की मौजूदा राजनीतिक हैसियत से बहुत ही क्षुब्ध था। अपने इस क्षोभ को कभी उसने अपनी जुबान पर नहीं आने दिया।

जहां तक हाराकिरी द्वारा उसके अंत का प्रश्न है, उसका उत्तर बहुत अंशों तक कदाचित, उसके इस वाक्य में मौजूद है, 'लेकिन, मृत्यु, रात्रि और रक्त के प्रति मेरे हृदय की रुझान से इंकार नहीं किया जा सकता।'

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस द्वारा
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

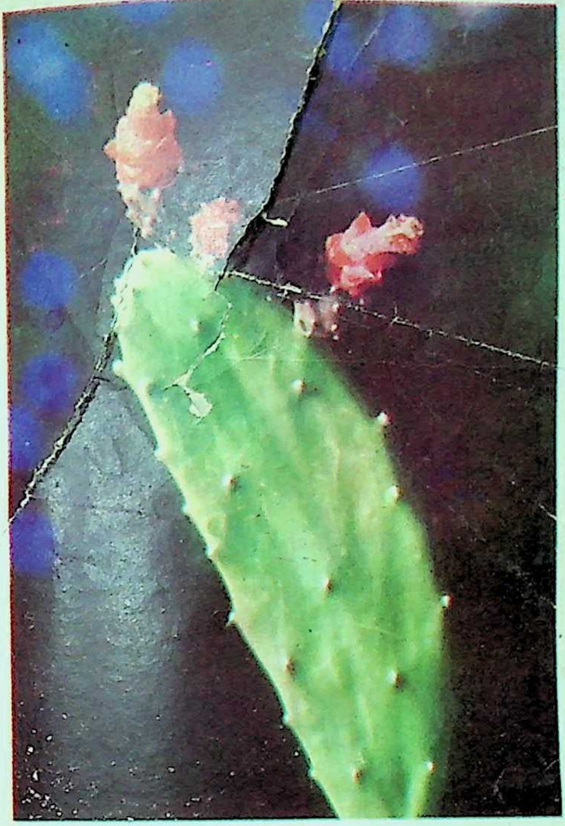

समस्यापूर्ति-- २४

नागफनी

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है---गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी। आपकी रचना मौलिक तथा छह पंक्तियों की ही हो। प्रविष्टि पोस्ट-कार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार---२५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार---१५ रुपये
अंतिम तिथि---५ अप्रैल, १९८१

217

Prakash

30.8.82

415

रजि. नं. डी.(सी)

चन्दे से प्राप्त संख्या ……

प्राप्ति दिनांक ……

26 MAR 1981

एक और नया सितारा

बेलटेक
सुपर स्टार

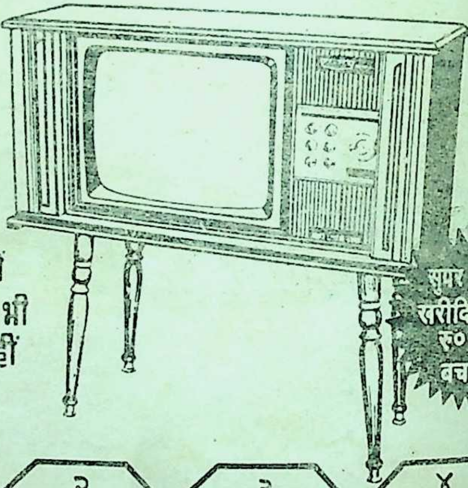

४ ऐसी विशेषताओं के साथ जो कोई भी दूसरा टी० वी० नहीं दे सकता

सुपर स्टार खरीदिये और रु० ३०० बचाईये

१ ६ आई सी सालिड स्टेट टी०वी०

२ विडियो चलाने की सुविधा

३ आई सी नियंत्रित बिल्ट इन आटोमेटिक वोल्टेज स्टैबेलाईज़र

४ ट्रेबल एवं बैस कन्ट्रोलस स्टीरियो जैसी ध्वनि के लिए

दिल्ली में पहले नम्बर पर बिकने वाला

बेलटेक

Continental/BT/1780R

प्रकाशन

कादम्बिनी

तीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

नं 9

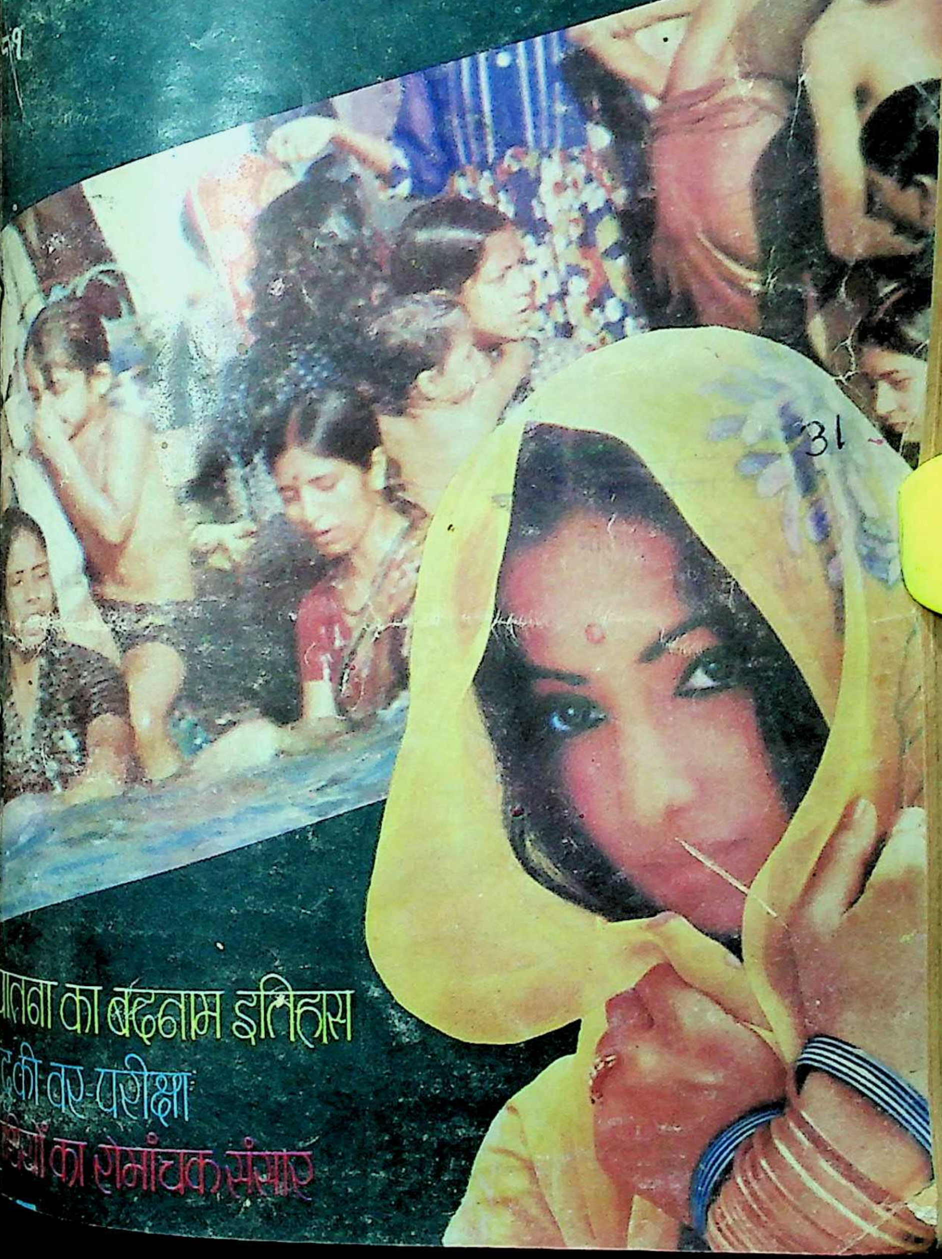

31

यातना का बदनाम इतिहास

दू की वर-परीक्षा

सियों का रोमांचक संसार

स्वाद का
रौब
जमाईए

स्वाद की ऊंचाईयां तसल्ली की गहराईयां

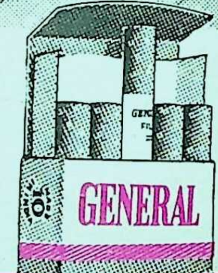
GENERAL
GENERAL FILTER KINGS
FILTER KINGS
STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

जनरल
फ़िल्टर किंग्स

वैधानिक चेतावनी: सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है
STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

REACT-GFK4/10-9

आपके बच्चों को इंटैलीजेंट बनाने वाला अद्‌भुत नॉलिज बैंक

एक ही माह में तृतीय संस्करण

बच्चों के मस्तिष्क
में घुमड़ने वाले संकड़ों
अनबूझे 'क्यों और कैसे ?'
जिज्ञासा भरे प्रश्नों के
उत्तर बताने वाला
अनूठा प्रकाशन

चिल्ड्रन्स
नॉलिज बैंक
CHILDRENS KNOWLEDGE BANK

बड़ा साइज
240 पृष्ठ

मूल्य 20/-
डाकखर्च
4/-

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक

Volume-I

'जनरल नालिज' की अन्य सभी पुस्तकों से परे हटकर अपने किस्म की भारत की पहली पुस्तक जिसमें दिए गए सैकड़ों

प्रश्नों में से कुछ की झलक

- ● लोग गंजे क्यों होते है ?
- ● ओलम्पिक खेल क्या है ?
- ● लोग बेहोश क्यों होते हैं ?
- ● आदमी बूढ़ा क्यों होता है ?
- ● बंक की शुरूआत कैसे हुई ?
- ● आंधी और तूफान कैसे आते हैं ?
- ● चश्मे से सही कैसे दिखाई देता है ?
- ● महिलाओं की दाढ़ी क्यों नहीं होती ?
- ● आतिशबाजी रंगीन क्यों दिखती है ?
- ● सूर्य प्रात:-सायं लाल क्यों दिखता है ?
- ● बन्द आंखों से हम सीधे क्यों नहीं चल पाते ?

नॉलिज बंक की अपनी ही विशेषताएं

- ★ पढ़ाई से जी चुराने वाले बच्चों मे पढ़ने का शौक पैदा करके उनका दिमागी स्तर बढ़ाती है।
- ★ होशियार बच्चों की जानकारी और बढ़ाकर उन्हें इण्टेलीजैण्ट बनाती है।
- ★ ऐसे-ऐसे प्रश्न, जिनके उत्तर मां-बाप और टीचर भी नही दे पाते।
- ★ हर प्रश्न का उत्तर चित्रों सहित बच्चों की अपनी सरल भाषा में।
- ★ अनुभवी सम्पादक मण्डल द्वारा सम्पादित एक प्रामाणिक पुस्तक।

स्त्री-पुरुषों, पशु-पक्षियों, प्रकृति, भूमण्डल, जीव-विज्ञान. समुद्र आदि से सम्बन्धित अजीबो-गरीब प्रश्नों के उत्तर तथा वैज्ञानिक आविष्कारों की पूर्ण जानकारी।

अपने निकट के बुक स्टाल एव रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मांग करें अन्यथा वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का पता।

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

साफ़, ताज़ा सांस
मज़बूत, स्वस्थ दांत

कोलगेट
डेन्टल क्रीम से

हर भोजन के बाद अपने दांत कोलगेट से साफ़ कीजिए. यह ठीक उसी तरह दांतों की रक्षा करता है, जैसे दुनियाभर के दांतों के डाक्टर कहते हैं.

दांतों में छुपे हुए अन्नकणों में कीटाणु बढ़ते है. इनसे सांस में बदबू पैदा होती है, और बाद में दांतों में सड़न.

इसीलिए, हमेशा भोजन के फ़ौरन बाद कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ कीजिए. यह सांस को ताज़ा, दांतों को सफ़ेद और दांतों की सड़न रोकने में असरदार साबित हो चुका है.

देखिए, कोलगेट के भरोसेमंद फ़ार्मूले का काम:

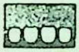

दांतों में छिपे हुए अन्नकणों में, सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु पलते।

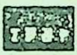

कोलगेट का अनोखा, असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों को और कीटाणुओं को निकाल देता है.

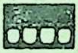

नतीजा : आपके दांत आकर्षक सफ़ेद, आपकी सांस तरोताज़ा और दंतक्षय की रोकथाम.

कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट-जैसा स्वाद मन में बस जाता है.

कोलगेट डेन्टल क्रीम से
सांस की बदबू रोकिए-
दंतक्षय का प्रतिकार
कीजिए...

Colgate
DENTAL
CREAM
Colgate
STOPS BAD BREATH
1
2
3

DC.G.74 HN

60 वर्षों से लोकप्रिय
शुद्धता तथा कम मूल्य के प्रतीक

एम डी एच

मसाले

एम.डी एच मसाले पोली-पेक में सील किये जाते हैं ताकि इनकी ताज़गी और स्वाद बने रहें। ये मसाले आपके लिये क्वालिटी की गारंटी हैं।

हमारे अन्य लोकप्रिय उत्पादन :
किचन किंग, देगी मिर्च, गरम मसाला,
चना मसाला, चाट मसाला इत्यादि

KITCHEN KING
DEGGI MIRCH
GARAM MASALA
CHANE KA MASALA
CHAT MASALA

महाशियां दी हट्टी प्राइवेट लिमिटिड
9/44 इंडस्ट्रियल ऐरिया, कीर्ति नगर, नई देहली-110015 फ़ोन : 585122
सेल्स आफिस : खारी बावली, दिल्ली-110006 फ़ोन : 258714

हिन्डन की बहार... लाई निखार

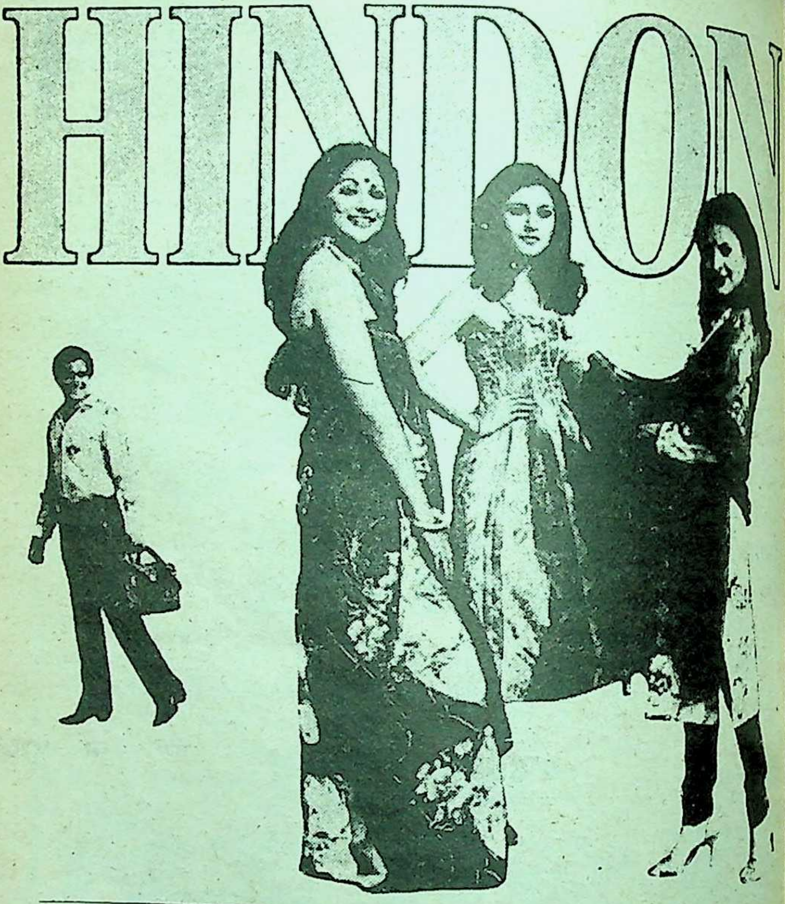

हिन्डन

साड़ियां . सूटिंग्स
शर्टिंग्स . ड्रेस मैटिरियल्स

सर्वाधुनिक मिल द्वारा
निर्मित कपड़े

HINDON RIVER MILLS

DCM
TEXTILES

५०० से भी अधिक डी सी एम रिटेल स्टोर्स
तथा अन्य रिटेल स्टोर्स पर उपलब्ध

कभी न कभी हर मां को इस परेशानी का सामना करना ही पड़ता है!

जुंएं!

सॉय-बैन* लोशन

सुरक्षित, प्रभावकारी, चिपचिपाहट रहित और खुशबूदार जूं नाशक

सॉय-बैन तेजी से असर करता है. रात को सिर की त्वचा पर धीरे-धीरे सॉय-बैन मल दीजिये. सुबह बालों में कंघी कीजिये और मरी हुई जूं और लीख निकाल बाहर कीजिये. अब, बालों को अच्छी तरह धो डालिये. बस हो गया आपकी परेशानी का रातोंरात खात्मा!

सॉय-बैन चिपचिपाहट रहित और खुशबूदार है :

सॉय-बैन में तेल न होने के कारण ये चिपचिपा नहीं है. इसलिये आपके तकिये पर धब्बे भी नहीं छोड़ता. तेजी से बालों में फैलकर आपकी परेशानी जड़ से उखाड़ फेंकता है. इस पर मजे की बात ये कि इसकी लवेन्डर से रची खुशबू सारी रात महकती रहती है.

सॉय बैन पूर्ण रूप से सुरक्षित है :

सॉय-बैन आपके बालों और आपकी सिर की त्वचा को हानि नहीं पहुंचाता। याने इसके इस्तेमाल से न तो बालों के रंग पर असर होता है और न ही बाल झड़ते हैं. और ऐसा क्यों न हो... सॉय-बैन को बनाने वाले भी तो आपके जाने पहचाने 'लेडरली' ही हैं। जो बरसों के अनुसंधान और जांच के बाद ये साबित कर चुके हैं कि सॉय-बैन शतप्रतिशत सुरक्षित और तेज असरकारक दवा है.

20 ml
5227-37
CY-BAN
MALATHION
LOTION 0.5%
PERFUMED
FOR THE TREATMENT OF PEDICULOSIS

हर केमिस्ट की दुकान पर उपलब्ध

Lederle उत्पादन

*अमेरिकन सायनामिड कंपनी का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

सॉय-बैन* रातों रात जुंओं और लीखों से छुटकारा

Sista's-CYB-964/80 Hin

"मुझे चाहिए तो बस कॉम्प्लान®
मेरे परिवार के लिए
एक परिपूर्ण नियोजित आहार."

सिर्फ़
कॉम्प्लान® ही,
सबके लिए ज़रूरी
२३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्वों से परिपूर्ण है.

सिर्फ़ कॉम्प्लान में ही वैज्ञानिक अनुपात से नियोजित २३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्व हैं, जिनकी शरीरको रोज़ाना ज़रूरत होती है... प्रोटीन्स, कार्बोहाइड्रेट्स स्निग्ध-पदार्थ, विटामिन्स और खनिज-पदार्थ. यह एक ऐसा स्वास्थ्यवर्धक पेय है, जिसकी डॉक्टर अधिकतर सिफ़ारिश करते हैं.

कॉम्प्लान चॉकलेट, इलायची-केसर और स्ट्रॉबेरी के स्वाद-भरे जायकों में तथा प्लेन भी मिलता है.

Glaxo
Complan

कॉम्प्लान®
-परिपूर्ण नियोजित आहार.

लिंटास-GLC. 10-1510 HI

क्या आप
मादा मच्छर से
बहस
कर सकते हैं ?

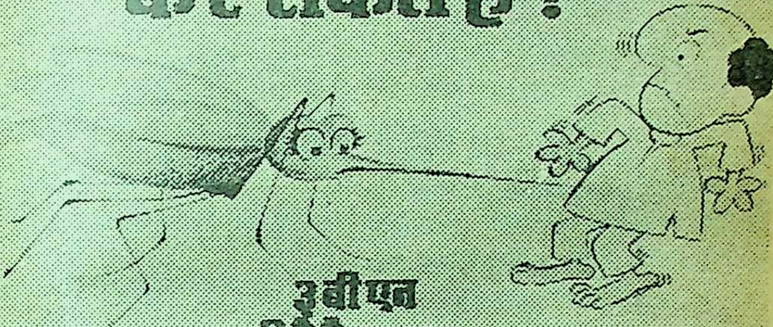

3 बी एन
रीपेलेन्ट युक्त
अधिक प्रभावशाली
ओडोमॉस
कर सकता है।

क्या आप जानते हैं कि नर मच्छर इंसान को नहीं काटता। काटती तो केवल मादा मच्छर है और इस से भी खराब बात ये कि वे मलेरिया और पीले बुखार जैसी जानलेवा बीमारियों के कीटाणु लिये हो सकती हैं। ऐसे मच्छर का एक बार भी काटना आपके व आपके परिवार के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

यह रहा बचने का उपाय।

3 बी एन रीपेलेन्ट युक्त अधिक प्रभावशाली ओडोमॉस लाइये। शरीर के खुले अंगों पर इसे वेनिशिंग क्रीम की तरह लगाइये। बच्चों की कोमल त्वचा के लिए भी यह बिल्कुल सुरक्षित है।

आज ही ओडोमॉस लाइये और रातभर सुखद नींद का आनंद पाइये।

ओडोमॉस–मच्छरों का दुश्मन

odom
mosquito repel
ODOMOS
mosquito repellent
Safe for Tender Facial Skin

3 बलसारा
—सुखी जीवन के लिए
आधुनिक साधन

CHAITRA-BLS-438 HIN

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

निम्नलिखित शब्दों के जो सही अर्थ हों, उन पर चिह्न लगाइए और इसी पृष्ठ से आरंभ उत्तरों से मिलाइए।

१. **दारुण**—क. कठोर, ख. करुण, ग. दरिद्री, घ. अस्त-व्यस्त।

२. **हठधर्म**—क. दृढ़ता, ख. योग का एक अंग, ग. न्याय पर आरूढ़ रहना, घ. अनुचित बात पर अड़े रहना।

३. **संकटापन्न**—क. संकट को आमंत्रित करनेवाला, ख. जो संकट से पार हो गया हो, ग. संकट में पड़ा हुआ, घ. दुर्घटनाग्रस्त।

४. **बकमौन**—क. व्यर्थ की बात, ख. थोड़ा बोलकर चुप हो जाना, ग. किसी घात में चुप रहना, घ. एक व्रत।

५. **भक्तवत्सल**—क. दृढ़ भक्त, ख. भक्त को स्नेह करनेवाला, ग. स्वामिभक्त, घ. भगवान का प्यारा।

६. **यथांश**—क. काफी, ख. बहुत, ग. भाग के अनुसार, घ. लाभ।

७. **रूपक**—क. बहुरूपिया, ख. विभिन्न प्रकार का, ग. सुंदर, घ. नाटक।

८. **मंडलाकार**—क. क्षेत्र के अनुसार, ख. गोलाई में, ग. तंबू की तरह, घ. सुव्यवस्थित।

९. **वाग्जाल**—क. विवाह की एक रस्म, ख. विश्वासघात, ग. बातों का फंदा, घ. घेरा।

१०. **दत्तचित्त**—क. प्रवीण, ख. जिसका मन किसी काम में रम गया हो, ग. एकांत, घ. बेचैन।

११. **चर्वण**—क. चिकनाई, ख. चुप, ग. चबाने की क्रिया, घ. चक्कर।

उत्तर

१. क. कठोर, तीव्र, भयंकर। उस बेचारे ने जीवनभर **दारुण** दुःख झेले।

२. छ. अनुचित बात पर अड़े रहना, हद से ज्यादा जिद। समझौते के लिए तुम्हें अपना **हठधर्म** छोड़ना पड़ेगा। **हठधर्मी** या **हठधर्मिता** (स्त्रीलिंग) का भी प्रयोग।

३. ग. संकट में पड़ा हुआ, मुसीबतजदा। **संकटापन्न** व्यक्ति की सहायता करो (**संकट + आपन्न**)। आपन्न = प्राप्त या पहुंचा हुआ (किसी स्थिति को)।

४. ग. किसी घात में चुप रहना (या रहनेवाला), अपने स्वार्थ के लिए किसी के अहित को नजरअंदाज करना (शाब्दिक अर्थ—बगुले की भांति शिकार की घात में चुपचाप खड़े रहना)। तुम उसकी हानि होते देख भी **बकमौन** बने रहे।

५. ख. भक्त को स्नेह करनेवाला। यदि भगवान को **भक्तवत्सल** मानते हो, तो स्वयं भी दूसरों को प्यार करो। (अपभ्रंश—**भगतबछल** भक्त कवियों द्वारा प्रयुक्त)।

६. ग. भाग के अनुसार, योग्यता के अनुसार। उत्तराधिकार में **यथांश** संपत्ति मिलने से भी वह संतुष्ट नहीं है। (**यथा**+**अंश**)

७. घ. नाटक, नाटकीय दृश्य, अभिनय। उसने अपनी दरिद्रावस्था का ऐसा **रूपक** बांधा कि सभी ने उसकी सहायता की। अभिनयप्रेरित दृश्य काव्य; एक अर्थालंकार।

८. ख. गोलाई में, गोल घेरे की शक्ल में। सभी छात्र **मंडलाकार** बैठे हैं। (**मंडल**+**आकार**)

९. ग. बातों का फंदा। उसके **वाग्जाल** में कहीं फंस मत जाना। (**वाक्**+**जाल**)

१०. ख. जिसका मन किसी काम (या बात) में रम गया हो। वह अपने अध्ययन में **दत्तचित्त** है। (**दत्त**+**चित्त**)

११. ग. चबाने की क्रिया। भोजन का भली-भांति **चर्वण** करना चाहिए। (वि. **चर्वित**=चबाया हुआ) **चर्वित-चर्वण** चबाये हुए को और चबाना, एक ही बात को बार-बार कहना। उसका यह कथन मात्र **चर्वित-चर्वण** है।

पारिभाषिक शब्द

रिजर्वेशन=आरक्षण
(रिजर्व्ड=आरक्षित)
सबजेक्ट मैटर=विषयवस्तु
रिटर्न ऑव इनकम=आय की विवरणी
इंडिविजुअल=व्यष्टि
स्टेटस=प्रास्थिति
कंप्यूटेशन=संगणना
कापीस्ट=प्रतिलिपिक
डिस्पैचर=प्रेषक
रेकॉर्डर=अभिलेखक

समस्या-पूर्ति—२४

नागफनी

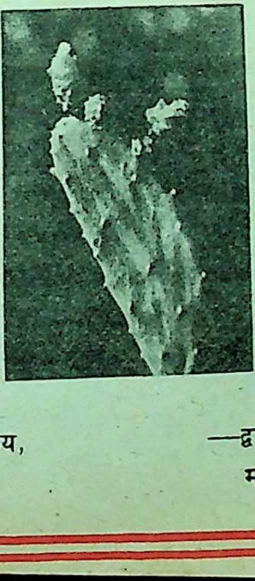

प्रथम पुरस्कार

पानी में तेजाब घुला है
या माटी जहरीली है
या मौसम के ही मिजाज में
आयी कुछ तबदीली है
माली ने तो देख परखकर
बोया था इंसान मगर
कोंपल नागफनी की निकली
कैसी अजब पहेली है

देव भारती

—मूर्तिदेवी सरस्वती विद्यालय,
नजीबाबाद (बिजनौर)

द्वितीय पुरस्कार

रूपवती अंगुली की रक्षक
है हीरे की एक कनी
ज्यों गुलाब कलियों की रक्षा
करती कोई नागफनी

कांता रानी

—द्वारा पं. सूरज भान (दालवाले)
महल्ला हरनाथपुरा, सहारनपुर

आस्था के आयाम

तुर्की बतुर्की जवाब

विभाजनपूर्व की बात है। पेशावर में अंगरेज सरकार के विरुद्ध भाषण देने के अभियोग में प्रसिद्ध आर्य नेता कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया गया। अंगरेज जज ने उनसे पूछा, "मिस्टर सुखलाल टुम कहां का रहनेवाला हाय ?" उन्होंने उत्तर दिया, "यू. पी. का"। "यू. पी. से टुम पेशावर क्यों आया ?" जज ने पूछा।

"अपने धर्म का प्रचार करने," उत्तर था।

"ढर्म का प्रचार करने के लिए टुम्हें यू. पी. में जगह नहीं मिला ?" जज ने फिर पूछा।

"आप सात समुद्र पारकर हुकूमत करने हमारे मुल्क में आ सकते हैं, तो मैं अपने ही देश के हिस्से में अपने धर्म के प्रचार के लिए क्यों नहीं आ सकता ?" कुंवर सुखलाल ने कहा।

जज ने निरुत्तर हो उन्हें पेशावर छोड़ देने के आदेश के साथ बरी कर दिया !

भाग्य से कोई शिकायत नहीं

ब्रिटेन की प्रसिद्ध बैले नर्तकी एलिजाबेथ ट्विस्टिंगटन हिगिंस २९ वर्ष की आयु में, जब वह सफलता के चरम पर थीं, तब पोलियो की शिकार हो गयीं। बीमारी ने उनकी समस्त गतिविधियों को समाप्त कर दिया और उन्हें एक लौह-फेफड़े के नियंत्रण में आबद्ध कर दिया। ऐसा प्रतीत होता था—जैसे वह कभी अस्पताल नहीं छोड़ पाएंगी।

लेकिन एलिजाबेथ एक योद्धा थीं। धीरे-धीरे बड़े कष्ट के साथ उन्होंने अपनी गरदन की मांसपेशियों को विकसित करके अपने फेफड़ों में हवा भर लेने का अभ्यास कर लिया। जब वह अपने आप सांस लेने लगीं तब उन्होंने अपने मुंह से ब्रुश पकड़कर पेंटिंग करना आरंभ किया।

उनकी कलाकृतियां बिकने लगीं। शीघ्र ही उन्होंने ऐसैक्स, चेम्सफोर्ड में अपने लिए मकान खरीद लिया। लेकिन घर को बेहद प्यार करने पर भी वह कभी

घर में सो नहीं पातीं। सिंड्रेला की भांति, वह रात को वहां से गायब हो जातीं—अस्पताल में अपने लौह फेफड़े के पास पहुंचने के लिए।

दिन में भी, जब वह लौह फेफड़े से मुक्त रहती हैं, तब भी उन्हें थोड़े-थोड़े अंतर से कष्टश्वास लेने की बात याद रखनी पड़ती है। और यह भी कि अगर वह पुस्तक पढ़ते-पढ़ते या टेलिविजन देखते-देखते कहीं सो गयीं, तो बस मृत्यु निश्चित है।

उनका दिन कुछ जल्दी शुरू होता है। नर्सें उन्हें नहला-धुलाकर कपड़े पहना देती हैं और तब वह अपनी निजी एंबुलेंस में बैठकर घर जाती हैं। घर पहुंचकर डाक निपटाती हैं। एक विशेष टेप रिकॉर्डर और डिस्टेटिंग मशीन की सहायता से आये हुए पत्रों का उत्तर देती हैं और फिर चित्र बनाती हैं। लड़के-लड़कियों को बैले नृत्य की शिक्षा भी देती हैं—बोल-बोलकर।

'चैम्सफोर्ड नर्तक दल' नामक उनका निजी बैले-दल भी है, जिसके लिए समस्त नृत्य लेखन एलिजाबेथ करती हैं।

दल को संपूर्ण देश के प्रधान और सामान्य गिरजाघरों से निमंत्रण आते हैं। एक मंत्री ने एलिजाबेथ को लिखा, "बैले ने मेरी सामान्य भीड़ को तीन गुनी बढ़ा दिया। सांध्यवंदना मार्मिक थी– वह सचमुच इतनी सुंदर थी, जितनी कि एक पूजा होनी चाहिए।"

एलिजाबेथ हिगिंस

एलिजाबेथ की अद्‌भुत सफलताओं की कहानी पर एक फिल्म बन रही है। इस फिल्म का बैले-लेखन स्वयं एलिजाबेथ कर रही हैं।

इस फिल्म के प्रोड्यूसर का कहना है, "कैंस में इस फिल्म को देखनेवाले हर देश ने इसकी मांग की है। पूर्वी यूरोपीय देश भी इसमें विशेष रुचि दिखा रहे हैं। यह ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया में प्रदर्शित की जाएगी। अन्यत्र टेलिविजन पर भी दिखायी जाएगी।"

एलिजाबेथ के जीवन के प्रति अदम्य साहस की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। उनसे जब यह पूछा गया कि क्या उन्हें अपने भाग्य से कोई शिकायत है, तब उन्होंने उत्तर दिया, "ईश्वर का धन्यवाद, मुझे कोई शिकायत नहीं। हो भी क्यों– मुझे तो जीवन में बहुत कुछ मिला है।" ●

प्रतिक्रियाएं

आंखें किसने फोड़ीं

बिहार के मुख्यमंत्री से 'कादम्बिनी' संपादक की 'अंतरंग वार्त्ता' से बिहार के बारे में अनेक बातें साफ हुईं। जगन्नाथ प्रसाद मिश्र का यह कहना सही है कि बिहार की प्रतिमा को निरंतर धूमिल करने की कोशिश होती है और अच्छाइयों को प्रकाश में नहीं लाया जाता। भागलपुर कांड के संबंध में डॉ. मिश्र का यह कहना भी सही है कि जब तक वाकई एक किसी कोर्ट से यह बात स्थापित न हो जाए, तब तक मात्र पूर्वाग्रह के आधार पर जो अभिव्यक्ति की जा रही है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है।

यों, पुलिस को लेकर आये दिन अखबारों में जो छपता रहता है, उसे देखते हुए उन्हें 'दूध का धोया' समझना भी गलत होगा, पर जब तक मामले की पूरी जांच न हो जाए, सारे पक्ष-विपक्ष की बातें, गवाही, सबूत ये सब पेश न हो जाएं, सारी चीजें न्यायाधिकरण के सामने चली न जाएं, उससे पहले कहना कि यह सब पुलिस ने किया, पुलिस के साथ 'अनफेयर' होगा।

—मधूलिका सिंह, पटना

डॉ. मिश्र से आपकी भेंटवार्त्ता अनेक नये तथ्य उजागर कर गयी। डॉ. मिश्र का कहना सही है 'हमारी राष्ट्रीय परिषदों में यदि हम (अर्थात हिंदी प्रदेशों के मुख्यमंत्री) हिंदी का सम्मान नहीं करेंगे, तो क्या तमिलनाडु के मुख्य मंत्री करेंगे?' इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

—अभिमन्यु सिंह, गाजियाबाद

स्तुत्य निर्णय

बिहार के मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्र से 'कादम्बिनी-संपादक' की अंतरंग बातचीत काफी जानकारीपूर्ण रही। हिंदी पुरस्कारों के संबंध में बात उठाकर आपने एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न की ओर मुख्यमंत्री का ध्यान आकृष्ट किया। डॉ. मिश्र की यह घोषणा स्वागत योग्य है कि हिंदी-पुरस्कारों को व्यापक बनाया जायेगा और उनकी संख्या बढ़ायी जाएगी! इस बात का अनुकरण अन्य राज्यों को भी करना चाहिए। इसके लिए आप और डॉ. मिश्र बधाई के पात्र हैं।

—दीपकनिधि नेमा, जबलपुर

मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्र से आपकी बातचीत काफी महत्त्वपूर्ण रही। सामयिक ज्वलंत प्रश्नों को लेकर इस प्रकार की बातचीत होती रहनी चाहिए

तथा पाठकों के सामने आती रहनी चाहिए। इससे देश और समाज का बहुत भला होगा। 'कादम्बिनी' इस संदर्भ में अपनी भूमिका विशिष्टता से निभा रही है। यह हर्ष की बात है। हिंदी पुरस्कारों पर मुख्यमंत्री का ध्यान खींचने के लिए साधुवाद स्वीकार करें। पुरस्कारों को व्यापक बनाने तथा संख्या में वृद्धि की घोषणा के लिए मुख्यमंत्री भी बधाई के पात्र हैं। आशा है ऐसी भेंट वार्त्ताएं आगे भी पढ़ने को मिलती रहेंगी।

—यतेन्द्रसिंह चौहान, कानपुर

बिहार के मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ मिश्र ने अपने साक्षात्कार में सारी स्थितियां स्पष्ट कर दी हैं। उनके साक्षात्कार से स्पष्ट है कि कुछ विरोधी व्यक्ति हैं और अखबार भी, जो उनकी, मुख्यमंत्री की छवि को नष्ट करना चाहते हैं। मैं आपको बधाई देता हूं कि आपने इतने अच्छे ढंग से सब बातें सामने रख दी हैं। उर्दू भाषा के बारे में पहली बार उनके विचार इतने खुले रूप में सामने आये हैं।

—शफाक अहमद, बरौनी

गुलदस्तए बिहारी एवं पलाश

अप्रैल अंक यूं तो पूरा ही पठनीय रचनाओं से भरा है, पर श्री वियोगी हरि का लेख 'गुलदस्तए बिहारी' और श्री धनंजयसिंह का गीत 'डाली-डाली पलाश दहके' बेहद अच्छा लगा। पाठक श्री वियोगी हरि का अवश्य ही आभार मानेगा कि उन्होंने 'गुलदस्तए बिहारी' से उनका परिचय कराया। अपने गीत में श्री धनंजय सिंह वर्त्तमान परिस्थितियों में परिवेश की यथार्थता का सरल-सुबोध भाषा में भावप्रवण चित्रण करने में पूर्णतया सफल रहे हैं।

—जितेन्द्रनाथ, लखनऊ

काल-चिंतन की गहराई

अप्रैल अंक की कुछ रचनाएं, चंद कविताएं और चुनी हुई कहानियां निस्संदेह आवश्यकता से अधिक मुखर प्रतीत हुईं। मैंने 'काल-चिंतन' की गहराई में भी अनेक बार डुबकियां लगायीं, जिसके कारण इसमें निहित अनूठा सौंदर्य-सागर व शब्दों के प्रति मेरा व्यामोह अनोखा रहा।

—जयप्रकाश, कानपुर

कथाकार माखनलाल चतुर्वेदी

अप्रैल अंक में स्वर्गीय माखनलाल चतुर्वेदी की कहानी 'संदेह' पढ़कर सुखद आश्चर्य हुआ। हम उनके कवि रूप से तो परिचित थे—कादम्बिनी ने कथाकार के रूप से भी परिचित कराया, इसके लिए बधाई स्वीकार करें। चतुर्वेदीजी का जन्म अप्रैल मास में ही हुआ था, इसलिए अप्रैल में प्रकाशित होने से इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है। उनकी और भी कहानियां हों और उन्हें आप प्रकाशित करें, तो यह एक अच्छा कार्य होगा।

—अश्विनीकुमार गोयल, सुरंगानी (हि.प्र.)

अप्रैल अंक बहुत ही रोचक व ज्ञानवर्धक रहा है। स्वर्गीय माखनलाल चतुर्वेदी की कहानी 'संदेह' विशेष उल्लेखनीय रही। नरेशचंद्र नरेश का लेख 'एक फांसी

वाले कैदी की अंतिम इच्छा' और विलियम जेम्स द्वारा लिखित लेख 'आपकी-जन्म-तिथि आपका स्वभाव है' रोचक लगा।

—सुभाषचन्द्र कुकल, चंडीगढ़

कादम्बिनी अप्रैल अंक में 'मणिपुर में विद्रोहियों की तलाश' लेख पढ़ा। इस संक्षिप्त किंतु तथ्यपूर्ण लेख में मणिपुर की स्थिति पर व्यवस्थित जानकारी पाठकों को दी गयी है। राष्ट्र की प्रमुख समस्याओं पर ऐसे सुलझे हुए लेख देने की 'कादम्बिनी' की परंपरा प्रशंसनीय है।

'पृथ्वी की आयु का अनुमान लगाना संभव है' लेख भी एक महत्त्वपूर्ण लेख है और यह सिद्ध करता है कि 'कादम्बिनी' स्वस्थ साहित्य के साथ ज्ञान-विज्ञान की श्रेष्ठ पत्रिका है।

स्वर्गीय माखनलाल चतुर्वेदी की कहानी 'संदेह', भगवतीचरण वर्मा की कहानी 'त्याग और ग्रहण' अच्छी लगीं। माखनलालजी की कहानी तो ऐतिहासिक महत्त्व की चीज है। अच्छी सामग्री के लिए बधाई स्वीकार करें।

—रश्मि पांडे, दिल्ली

अप्रैल अंक में जापानी कथाकार युकिओ मिशिमा की जीवन-गाथा पढ़कर ऐसा लगा कि वह हमारे प्राचीन भारत की कोई ऐतिहासिक घटना हो और इस पूरी कहानी को मैंने भारतीय इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखा है, इस कहानी के चुनाव के लिए आपको बधाई। ख्वाजा अहमद अब्बास की व्यंग्य रचना आज की भारतीय राजनीति पर चोट करती है।

—सुभाष छावड़ा, गोलागोकर्णनाथ

कवि सम्मेलन कितने सार्थक

'मनोरंजन विशेषांक' मनोरंजक के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक भी लगा। 'कवि-सम्मेलन कितने सार्थक कितने निरर्थक' पढ़कर वास्तव में एक ठेस-सी लगी। विचार पढ़ने के बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि जो फूहड़ कवि हैं, वे अपने निजी स्वार्थ से प्रेरित होकर कवि-सम्मेलन के महत्त्व को ताक पर रख देते हैं।

वास्तव में कवि-सम्मेलन का उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन करना ही नहीं, बल्कि समाज को एक नयी दिशा प्रदान करना भी है। अतः हम मान सकते हैं कि 'कवि-सम्मेलन' देश के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक वातावरण पर अपना असर डाल सकते हैं।

—प्रतापनारायणसिंह कसमरा, पूर्णिया

लाइफ एण्ड डेथ ऑव यूकिमो : एक सूचना

अप्रैल के अंक में सार-संक्षेप के अंतर्गत प्रकाशित 'लाइफ एंड डेथ ऑव यूकिमो' पुस्तक भारत में हिंद पाकेट बुक्स प्राय. लिमि. ने प्रकाशित की है और उनके पास उपलब्ध है। जो पाठक विस्तार से पढ़ना चाहें, वहां से प्राप्त कर सकते हैं।

—सम्पादक

आगामी अंकों में

दास्तान उस अजायबघर की, जो संसार में सानी नहीं रखता और जहां ऐसे लोगों की भी प्रतिमाएं हैं, जो इतिहास में बेहद घृणित और भयावह माने जाते हैं—

इससे बड़ा तानाशाह उन्हें अभी तक नहीं मिला

महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी, इतिहास के दो बदनाम हमलावर पर भारतीय संस्कृति से वे भी अछूते न रह सके ! शोधपूर्ण लेख

गोरी के सिक्कों पर लक्ष्मी की मूर्ति

सूर मात्र कवि ही नहीं, ज्योतिषी और भविष्य वक्ता भी थे। सूर के जीवन के अनुछुए प्रसंग। सार-संक्षेप के अंतर्गत एक बेहद सनसनीखेज कृति और 'हाथियों का रोमांचक संसार'

इनके अलावा और भी बहुत कुछ

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए

'कादम्बिनी' पढ़िए, समय के साथ चलिए

ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखी गयी आंचलिक कहानियों के लिए

अब कहानी भेजने की अंतिम तिथि १५ मई, १९८१

कहानी मौलिक, अप्रकाशित, अप्रसारित होनी चाहिए। साथ ही किसी पूर्व प्रतियोगिता में पुरस्कृत न हो। कहानी का आकार दो हजार (२०००) शब्दों से अधिक न हो। इससे बड़ी कहानी पर विचार नहीं किया जाएगा !

कहानी प्रतियोगिता के लिए नियम व शर्तों की घोषणा विस्तृत रूप से 'कादम्बिनी' के मार्च अंक में की जा चुकी है।

पता—संपादक : 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन लि.,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

कादम्बिनी

वर्ष २१ : अंक ७
मई, १९८१

आकल्पं कविनूताम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

जस्टिस जी. डी. खोसला
दो हजार वर्ष बाद भी जीवित . . . २४
जेम्स केलहन
जीवंत नेतृत्व:प्रजातंत्र की पहली शर्त ...३०
प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'
क्या आपका जन्म मई में हुआ है . . . ४६
रजनी माथुर
छिपकली के साथ खेलने का शौक . . ५२
शिवकुमार गोयल
गांवों पर गोरों के अत्याचार . . . ५६
रवीन्द्रसिंह
विष पीने के प्रयोग करता रहा–२... ६१
माइकेल लेसर
पौष्टिक आहार ७४
डॉ. मोतीलाल भार्गव
तुलादान महादान ८५
नारायण भक्त
पर्वत छोड़ि नहिं जइहैं ९५
तेजनारायण
फिर वही शाम १०३
रेखा जैन
बाल नाटक और बाल रंग मंच . . . ११५
गगन प्रसाद
भूमि छीनी सागर से कैसे १२०
चन्द्रप्रकाश वर्मा
वो दिल ही न होंगे १२
डॉ. शिवनंदन कपूर
उसने हजारों को लखपति बनाया ... १३
अशोक आत्रेय
एक पेपरवेट में ब्रह्मांड का दर्शन ... १४०

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य—१०, समस्यापूर्ति—११, आस्था के आयाम—१२, प्रतिक्रियाएं—१४, काल-चिंतन—२०, ज्ञान-गंगा—५५, सीपिकाएं—७३, तनाव से मुक्ति—८१, घरेलू उपचार—८३, बुद्धि-विलास—८४, हंसाइयां—९०, हंसिकाएं (डॉ. सरोजनी प्रीतम) —९०, मुल्ला नसीरुद्दीन के कारनामे—९१, विधि-विधान—९२, विचार दीर्घा—११९, इनके भी बयां हैं जुदा-जुदा—१३३, सही कहानियां—१४४, नयी कृतियां—१६१, गोष्ठी—१६७, प्रवेश—१७२, वचन-वीथी—१८१

आवरण पृष्ठ : प्रदीप चंद्र, फार्लसिंह गिरोटा
पारदर्शी : आर. एन. प्रसाद,—९९, तेजनारायण—१०२, फार्लसिंह गिरोटा—१९

चंद्रमोहन प्रधान
मरदों की शोभा १४६
प्रो. श्रीरंजन सूरिदेव
विवाहपूर्व बुद्ध की वर परीक्षा . . . १५२

कहानियां एवं हास्य व्यंग्य

डॉ. सुशीलकुमार फुल्ल
ठूंठ ३८
परशी रामचंद्रन
सजा ६७
गोपाल चौरसिया
बदलते हम १०८
सुकीर्ति गुप्ता
आतंक १३५
भगवतीप्रसाद डोभाल
स्वर्ग का हाथी १५८

कविताएं

द्वारकाप्रसाद मिश्र
मिश्र शतक २६
महादेवी वर्मा
यह व्यथा चंदन नहीं है ३५
राणा जंगबहादुर
अहं की लय १७७

सार-संक्षेप

लीनो नोवास काल्वो
यातना का बदनाम इतिहास . . . १७४

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

संपादकीय सहयोगी
संयुक्त-संपादक : शीला झुनझुनवाला
सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल, उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवतीप्रसाद डोभाल, सुरेश 'नीरव', धनंजयसिंह, विजयश्री, प्रूफरीडर : स्वामीशरण, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
पता : संपादक--'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : २६ रुपये

कालचिंतन

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।

अर्थ है :

—जगत के सभी छोटे-बड़े चेतन अवचेतन में ईश्वर बसा हुआ है। मानव मात्र को चाहिए कि सब समान रूप से बांट खायें और जमाखोरी न करें।

●●

—उस रात ईशावास्योपनिषद् पढ़ते हुए यहां आकर मैं ठहर गया। समूचा मस्तिष्क शून्य की तरह घूम गया। न जाने कब, किस क्षण, किससे यह सार्थक ध्वनि प्रकट हुई कि आज भी वह सत्य है। सत्य होता भी वही है जो काल-खंड में अविभाज्य है, जिसकी चिरंतता पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता।

—हम सब सत्य से दूर नहीं भाग रहे ?

—सत्य क्या भय का प्रतीक नहीं बन गया हमारे लिए ?

—हां, शायद यही, इसीलिए तो आरे की दरांतें हमें एक-दूसरे से काट रही हैं!

—कल के संबंध आज नहीं हैं, आज, कल रहेगा कौन कह सकता है ?

—कितनी आसानी से हम खोल देते हैं अपने को एक-दूसरे के सामने! ... दूसरा, अचानक जेठ की तपती दोपहर में बर्फ का-सा आभास देने लगता है !

—कहां थे हम इतने दिनों ? पहले क्यों नहीं मिले ?

—किसी वृक्ष से अचानक एक पका हुआ फल अपने आप आकर टूट पड़ा है!

—यह फल नहीं हमारा सौभाग्य-सुमेरु है !

—बस, हम मैदानों पर, चट्टानों पर, दीवारों के दायरों पर कहीं भी और हर जगह मिल बैठकर बांट लेने में जुट जाते हैं।

—जिंदगी तब तक एक सार्थक प्रश्न बन जाती है ?

—ग्रीष्म से तप्त नदी की रेत पर किसी महानदी का पानी नहर बनाकर भेज दिया है!

—यह महानदी महान गंगा हो सकती है और कोई नहीं... ! गंगा वह जिसके पानी में कीड़े नहीं पड़ते !

—शायद संबंधों का हौसला भी ऐसा ही बुलंद होगा—उसमें कभी कीड़े नहीं लगेंगे !

—हम एक-दूसरे की चिंताओं के भागीदार बनेंगे; सुख-दुख की सीमा रेखा विभाजित नहीं होने देंगे ।

—आदमी और आदमी ! . . . इनके बीच का धर्म हमारा संबल होगा !

●●

—आइए, समान रूप से हम समझौता करें !

—सब-कुछ बांटकर खायेंगे !

—आकाश गंगा का सौंदर्य हमारा सपना नहीं रहेगा ?

—अंधेरी रातों का दर्द हमें डंक नहीं मारेगा !

—अर्थ की लंगोटी किसी कैंची से काटी नहीं जा सकेगी !

—कहीं आह, कहीं श्वासों का अर्थभरा उफान; कहीं की विराट अर्थवत्ता और कहीं का रीतापन, ये सब बीते हुए कल के प्रतीक बनेंगे ।

—कैसे भेद करेंगे आप आदमी और आदमी में ?

—सत्ता को न संघर्ष की जरूरत पड़ेगी और न जनता में सत्ताधारियों के विरुद्ध आक्रोश का बीजारोपण होगा ।

●●

—सीमाएं कैद नहीं हैं !

—यहां तक कि कैदखाने में बंद व्यक्ति भी मुक्त है ! . . . इसलिए कि कैद उसका शरीर है ! वह वास्तव में मुक्त पवन का झोंका है, उसमें निर्विकार तैर रहा है और अनंत की गहराइयां उसके मन में उतने ही मुक्त रूप से उछालें भर रही हैं, जैसे वे किसी भी ऊंची उड़ान भरनेवाले पक्षी में भर सकती हैं !

—मस्तिष्क का स्वामी व्यक्ति कभी कैद नहीं रह सकता ! कैद रहता है वह, जो मन की सतही गहराइयों में तैरना सीख रहा है !

—हमारे विचारशील दार्शनिकों ने यही तो कहा है: लघुता के ऊपर व्यापक विश्व की

स्थापना करो ! एक ऐसे संसार का निर्माण करो जिसमें उपजनेवाले भेद और विभेद के बीज कीट-पतंगों से बेहतर साबित न हों ! वे सब क्षण-भंगुरता के शिकार बनें। शाश्वत रहे वही जो कालातीत है, समभाव है, विलगाव से आक्रोषित शीत-पवन को लहर-सा जोड़ता है ... हर क्षणभंगुरता एक अस्थिर इकाई में बदलकर रिश्तों को स्थिरता का समन्वित कमल दे ; कमल वह जो हर कीचड़ को नीचे दबाकर रखता है और स्वयं सौंदर्य से अभिषिक्त होता है !

—क्या हम सब कमल का सौंदर्य नहीं पा सकते ?

—संभव है, क्योंकि असंभव कुछ भी नहीं है : सम-भाव और समान रूप से जुड़ने, बांटने और खाने, रहने तथा जिंदगी के नाजुकतम तंतुओं को जोड़ने का उपक्रम ही हमारे महान विद्वत पूर्वजों का स्वप्न रहा है !

—जी हां, स्वप्न ही ! ... हर इच्छाशक्ति के बावजूद विभेद की तरंगें उठने से बाज नहीं आतीं ।

●●

—कल मिला था वह ! बहुत आसान था, सहज भी ! गतिवान सरित-लहरों में साथ बहने को तैयार था ! कैसे थे वे दिन, कैसा था वह काल-चक्र, परिधियां कितनी व्यापक थीं ; मान्यताओं के दायरे पानी की तरह एक-दूसरे में घुल-मिल गये थे !

- ० रेशमी हवाएं हमारा परदा थीं ।
- ० खुशनुमा शामें हमारा अभिषेक करती थीं !
- ० रश्मिकिरणों के बीच रोग-ग्रसित कीटाणु नष्ट हो गये थे !

—क्या नहीं था ?

●●

—और अब ?

—हमारे बीच जमाखोरी पैदा हो गयी है !

—हम आत्म-केंद्रित हो गये !

—बांटने की अपेक्षा हमने अपने ग्रास को सत्य मान लिया !

—बदल गया वह सब जो कल था :

- ० हवाएं जहरीली हैं !
- ० मौसम ने हमें नजरअंदाज कर दिया है !
- ० हमारे अपने अहम ने ही हमें सबसे काट दिया है !
- ० हम अकेले हैं और भयभीत हैं !
- ० वह हर आदमी भयभीत होता है जो जमाखोरी करता है !
- ० समभाव का स्थान जमाखोरी ने ले लिया !

—अकेलापन, टूटन, घुटन, दर्द, भय, एक-दूसरे से बिखराव, अंतरंगता का शीशे की तरह चिटक जाना—यही फल लगा है अब उसी वृक्ष में जिससे कभी पका फल टूटकर नीचे गिरा था!

—रिश्ते नाजुक होते हैं; कभी व्यापकता में नहीं टूटते, वे टूटते हैं सिर के एक बाल की हल्की मार से। कभी कोई एक क्षण आता है और रोकने पर भी नहीं रुकता, वह उस हल्के नाजुक बाल का काम करता है!

••

—एक महान सत्ता हमें संचालित कर रही है। अलक्ष्य और परोक्ष रूप से वही सत्ता हमारी नियंता है। यह सत्ता हर छोटे-बड़े, चेतन-अवचेतन में विराजमान है!

—उस ईश्वरी सत्ता के सामने हम शुतुरमुर्ग की तरह अपने को यदि छुपा लें तो...!

—युगों पहले, आचार्यों और महर्षियों का उपदेश 'ईशा वास्यम्' यानी ईश्वर से ओत-प्रोत समूची मानव जाति को एक सार्थक संज्ञा दे सकता है।

—क्या ले जाते हैं हम अपने साथ : कुछ भी नहीं!

—क्या छोड़ जाते हैं हम :

- मात्र चंद यादें
- कुछ आत्मीयों के भीतरी कोनों में अपनी तसवीर
- अपने किये हुए भले-बुरे काम

—मिलता क्या है? भीड़ के स्वर : राम नाम सत्य है!

राजेन्द्र अवस्थी

विचार-दीर्घा —१५

'जन चेतना से राजनीतिक परिवर्तन संभव है?' विषय पर अपने विचार तीन सौ शब्दों में निम्न पते पर भेंजे। विचार के साथ वापसी के लिए लिफाफा संलग्न न करें।

अंतिम तिथि—५ मई, १९८१

पता—

संपादक : 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

सिकंदर महान

दो हजार वर्ष बाद वह आज भी जीवित है

●जस्टिस जी० डी० खोस

जरा अवैध पिता की उस अवैध पुत्री की कल्पना करिए, जो चौदह वर्ष की आयु में असीम सौंदर्य की स्वामिनी थी, सत्रह वर्ष की आयु में साम्राज्ञी बनी, जिसने तीन बार विवाह किया, जिसे असंख्य गण्यमान्य व्यक्तियों ने प्यार किया और जिसने ३९ वर्ष की आयु में स्वयं ही मृत्यु का वरण किया, क्योंकि यद्यपि उसके सौंदर्य ने सब कुछ जीत लिया था, तथापि उसकी महत्त्वाकांक्षा कभी भी परितुष्ट नहीं हुई थी, उसके स्वप्न बार-बार चूर-चूर होते रहे थे। रोमन जीवनी लेखक प्लूटार्क ने उसके कुछ अत्यधिक स्पष्ट चित्र खींचे हैं, शेक्सपीयर ने अपना सर्वाधिक काव्यमय नाटक संबंध में ही लिखा। ब्रिटिश सं में आज भी पत्थर में तराशा गया सिर रखा है, अनेक इतिहासकारों ने की उल्लेखनीय उपलब्धियों और लताओं का वर्णन किया है। ज्यों-ज्यों उसके संबंध में अधिक से अधिक कारी प्राप्त करते जाते हैं, कीट्स की 'सौंदर्य की वस्तु' की उसका आकर्षण बढ़ता जाता है आज दो हजार वर्ष बाद भी हमें किये रखता है। ज्यों ही क्लियो जीवन का कोई नया पहलू उजागर हो है, वह इतिहास को और सशक्त और अजेय बना देता है।

कला और सौंदर्य-विलास का सिकंदरिया नगर जहां वह रही, किया और मरी, सिकंदर महान ने ब था। यह नगर एक उत्कृष्ट कलाकृति जिसका आकल्प और क्रियान्वयन कि के वास्तविक प्रतिमा-संपन्न उस शिल्पी द्वारा हुआ था, जिसकी क में सदैव महानता और शक्ति के

ही स्थान था। सिकंदरिया से कैनोबस तक एक नहर बहती थी, जिसका नाम सुप्रसिद्ध ट्रॉय की हेलन के उस पति के नाम पर रखा गया था, जो मेनेलौस का भाग्य विधाता था और जिसे हेलन ने धोखा दिया था, क्योंकि जब मेनेलौस का पोत मिस्र के तट पर पहुंचा था, तब यहीं पर उस महापुरुष की मृत्यु हुई थी।

सिकंदरिया से कैनोबस तक इस नहर के किनारे अनेक मनोरंजन-सदन थे, जहां सिकंदरिया-वासी स्वयं को सुरा, [illegible] और उस

[illegible]ह और क्लियोपैट्रा शाही विस्तर में [illegible]गी हो गये। और फिर आगामी अनेक [illegible] को . . . !

प्रणय के आनंदोत्सव

[illegible] ने जीवन की कला में पारंगत [illegible]हिला के साथ सुमधुर प्रेमोत्सवों के [illegible]द का रसास्वादन किया। वह सदैव

[illegible] सुंदरी और संगीत के आनंद में डुबोते थे। यहां वे सुरापान और अंतहीन दावतों में लिप्त हो जाते थे।

नाबालिग भाई से विवाह

मिस्र की परंपरा ने यह रीति स्थापित की थी कि राजा को सिंहासन पर बैठने का अधिकार प्राप्त करने के लिए अपनी ही बहिन से विवाह करना चाहिए। क्लियोपैट्रा के पिता औलेटस ने वसीयत की थी कि सत्रह वर्षीया क्लियोपैट्रा उसकी उत्तराधिकारिणी बने तथा इसके लिए वह अपने छोटे भाई टौलेमी से विवाह करे, जो उस समय नौ वर्ष से अधिक आयु का न होगा। औलेटस का अवैध जन्म तथा यह तथ्य कि क्लियोपैट्रा का जन्म भी वैध विवाह से न था, क्लियोपैट्रा की मंत्रियों और सेनानायकों के साथ लोकप्रियता में बाधक रहे। उन्हें यह भी याद था कि किस प्रकार उसने पौंपेयी को उस समय 'प्रसन्न' किया था, जब वह मिस्र आया था और वे यह भी न भूले थे कि किस प्रकार [illegible] ने, जो सीजर में [illegible] की [illegible]खनीय गुण दिखने का दावा करती थी, ने उसे स्त्री की आत्मा के सच्चे आकर्षण को समझना सिखाया। इस प्रिय रमणी के जादू के प्रभाव से उसके अंदर प्रेम के असामान्य आल्हादों के प्रति एक तीव्र भूख जाग उठी।

और समय बीतने पर क्लियोपैट्रा उसके सीजरियन नामक पु[illegible]

[illegible] आयु में अपने आकर्षण और प्रत्युत्पन्नमति से रोम के सेनानायक मार्क एंटोनी को अभिभूत किया था। क्या उसके अंदर रोम की ओर स्वाभाविक रुझान था? क्या वह देशभक्त के रूप में विश्वासपात्र थी, जो अपने देश के हित को हानि नहीं पहुंचाएगी? इस संबंध में कुछ संदेह थे।

उसके दरबारियों में भी ऐसे व्यक्तियों की कमी न थी, जो युवा और कान के कच्चे राजा को उसके विरुद्ध भड़काने को सदैव तत्पर रहते थे। जब उन्हीं लोगों

ने क्लियोपैट्रा पर अपने भाई को अपदस्थ करने का षड़यंत्र करने के आरोप लगाकर उसे नगर से भगा दिया, तो राजा ने इसका विरोध न किया।

भाई और पति से युद्ध

यौवन और साहस से परिपूर्ण, अपने व्यक्तित्व के आकर्षण के प्रति सजग तथा अपनी वापसी की योजना बनाने और उन्हें कार्यान्वित करने की क्षमता के प्रति आश्वस्त क्लियोपैट्रा ने अपने भाई व जीवन साथी से विरुद्ध युद्ध के लिए सेना

का प्रण कर लिया।

सीजर को माया जाल में फंसाया

सीजर के पास जाने का उसका तरीका भी इतिहास का अंग है। सूर्यास्त हो रहा था, वह एक छोटी नाव में बैठी और शाही किले के उस द्वार पर पहुंची,

सिकंदर महान

... रत कमरों की ओर ले जाता था

किये रखता है।

दो हजार वर्ष बाद वह आज भी जीवित

•जस्टिस जो० डो०

जरा अवैध पिता की उस अवैध पुत्री की कल्पना करिए जो चौदह वर्ष

रूप के जादू का उपयोग सीजर पर करने

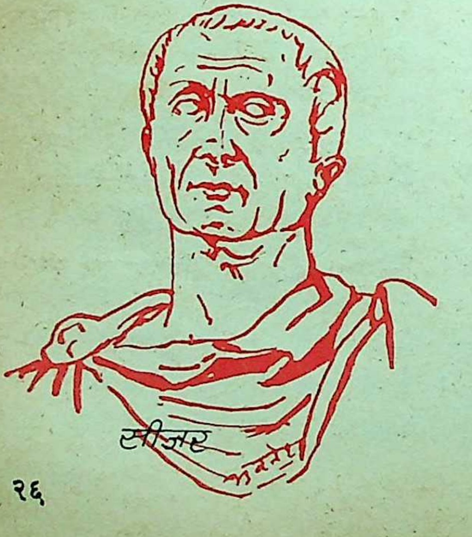

पहली नजर में ही सीजर उसके रू का ऐसा बंदी बना कि युवा राजा के प्रति अपने कर्त्तव्य को बिलकुल भूल गया। क्लियोपैट्रा का सौंदर्य स्वयं में अपूर्व नहीं था और न सदैव ही वह पहली नजर में हर दर्शक को मंत्र-मुग्ध कर लेती थी। वास्तव में ब्रिटिश संग्रहालय में रखी उसके सिर की मूर्त्ति उसे थोड़ी टेढ़ी नाक, लुभावने होंठ और सजीव आंखोंवाले मित्रतापूर्ण व्यक्तित्व के रूप में दर्शाती है। उसके चेहरे की हड्डियों का बनाव कुछ

इस प्रकार था कि जिससे उसे अनिंद्य सुंदरी नहीं माना जा सकता। किंतु निकट और अंतरंग संपर्क में वह आकर्षण का ऐसा जादू डालती थी, जिससे बच पाना असंभव ही था। इतिहास गवाह है कि लोगों से व्यवहार व बातचीत में जिस जादू के प्रवाह और भावनाओं की उत्कृष्टता का प्रदर्शन करती थी, ऐसा प्रतीत होता था, जैसे वह उसके व्यक्तित्व के सौंदर्य से ताज़ी प्रखरता प्राप्त कर रहा हो।

सीजर तुरंत ही उस चालाक साहसी महिला का शिकार बन गया और उस रात वह और क्लियोपैट्रा शाही बिस्तर में सहभागी हो गये। और फिर आगामी अनेक रातों को . . . !

उन्मत प्रणय के आनंदोत्सव

सीजर ने जीवन की कला में पारंगत इस महिला के साथ सुमधुर प्रेमोत्सवों के आनंद का रसास्वादन किया। वह सदैव ही एक सफल प्रेमी रहा था और अपने सैनिक यायावर जीवन के लंबे समय में हर प्रकार की स्त्रियों से उसने रमण किया था, किंतु क्लियोपैंट्रा ने, जो सीजर में उल्लेखनीय गुण दिखने का दावा करती थी, ने उसे स्त्री की आत्मा के सच्चे आकर्षण को समझना सिखाया। इस प्रिय रमणी के जादू के प्रभाव से उसके अंदर प्रेम के असामान्य आल्हादों के प्रति एक तीव्र भूख जाग उठी।

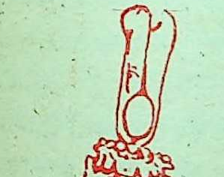

क्लियोपैट्रा

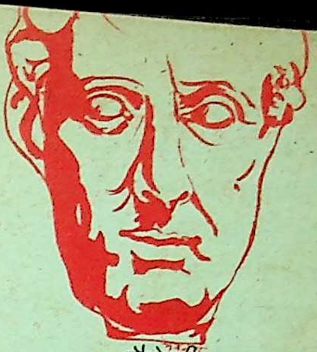

टौलेमी

और समय बीतने पर क्लियोपैंट्रा उसके सीजरियन नामक पुत्र की मां बनी।

मिस्र में लंबे प्रवास और क्लियोपैट्रा के साथ प्रेम लीलाओं के कारण रोम में दिन प्रतिदिन बढ़ रहे आंदोलन ने सीजर को इटली लौटने के लिए बाध्य कर दिया। किंतु उसका हृदय तो सिकंदरिया में ही था। जब उसने रोम में सौंदर्य की देवी वीनस का एक मंदिर बनवाया, तब उसमें मातृत्त्व की देवी वीनस का प्रतिनिधित्व करती हुई क्लियोपैंट्रा की एक प्रतिमा स्थापित करायी। इस बात से रोमवासियों का आक्रोश भड़क उठा, क्योंकि इससे उन-

को अपने साम्राज्य के शासनतंत्र में विदेशी हस्तक्षेप का भय होने लगा।

तीन वर्षीय भाई से भी विवाह

किंतु सीजर इससे विचलित न हुआ और उसने क्लियोपैट्रा को रोम आने के लिए आमंत्रित किया। वह अपने मंत्रिगण और दलबल के साथ आ पहुंची। वह अपने साथ अपने उस तीन वर्षीय भाई को भी लायी, जिसके साथ उसने अपने पूर्व पति के उस युद्ध में मारे जाने के बाद विवाह कर लिया था, जो उसने सत्ता पुन: प्राप्त करने के लिए उसके साथ लड़ा था।

वह मिस्र की साम्राज्ञी होने के साथ-साथ एशिया और इटली की साम्राज्ञी बनने की अभिलाषा की आग में जल रही थी, अत: उसने सोचा कि बाल-सम्राट की उपस्थिति उसकी महत्त्वाकांक्षा की पूर्त्ति के लिए सीजर को मोहरा बनाने की चाल पर पर्याप्त परदा डाले रहेगी।

महात्त्वाकांक्षा की आग

उसने सैन्य विजय की योजनाओं के द्वारा सीजर की कल्पनाशक्ति में चिंगारी लगाकर उसकी महत्त्वाकांक्षा की आग को भड़का दिया। साथ ही अपने मांसल सौंदर्य व विविधता पूर्ण बौद्धिकता के भरपूर उपयोग से सीजर के तन और मन को वह आनंद देती रही, जिन्हें देना केवल उसकी ही क्षमता थी। वह सीजर को फुसलाती रहती थी कि वह विश्व का सम्राट बने, और वह उसकी साम्राज्ञी। उसे इसी प्रका पर्सिया पर विजय प्राप्त करनी चाहि जिस प्रकार सिकन्दर ने की थी।

सपना। बिखर ग

सीजर भी स्वयं इसके लिए इच्छु था ही और उसने २४ मार्च, ईसा पू ४४ को पर्शिया के विरुद्ध अपना अभियान छेड़ने की योजना बनायी। किंतु भाग्य को तो कुछ और अभीष्ट था। १५ मार्च को कैपिटॉल में सीजर की हत्या कर दी गयी।

उसकी मृत्यु क्लियोपैट्रा व उसकी समस्त अभिलाषाओं के लिए एक असह्य आघात था।

किंतु कुछ सप्ताह बाद ही वह मिस्र वापस आ गयी—अपनी महत्त्वाकांक्षा की सुश्रूषा करने और उसे पुनर्जीवित करने के लिए।

उधर रोम में एक तरफ एंटोनी और सीजर के भतीजे औक्टेवियस, जिसे सीजर का उत्तराधिकारी घोषित किया गया था तथा दूसरी ओर सीजर के विरोधी और हत्यारों के मध्य सत्ता के लिए संघर्ष हो रहा था।

क्लियोपैट्रा मिस्र मे ही प्रतिद्वंदियों के संघर्ष को देखती रही और अपना अगला क़दम उठाने के लिए उपयुक्त प के लिए घात लगाये रही।

अगले अंक में एंटोनी और क्लियोपैट्रा के प्रणय की मार्मिक गाथा

—संपादक

मिश्र शतक

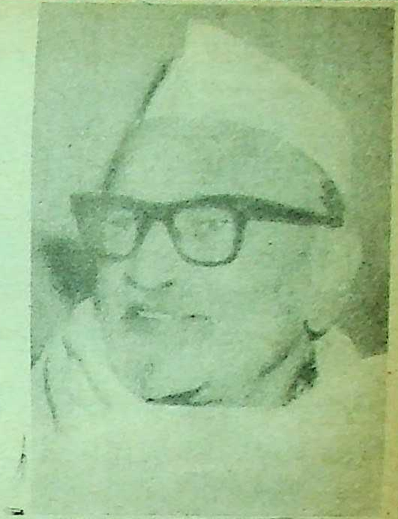

— द्वारकाप्रसाद मिश्र

विख्यात विचारक एवं 'कृष्णायन' के रचयिता तथा राजनीतिज्ञ पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र ने आज के संदर्भ में कुछ दोहे लिखे हैं। उनमें से चुनकर सौ दोहे क्रमशः हम इस अंक से प्रकाशित कर रहे हैं।

—संपादक

(१)

आयी दृढ़ औ गुरु डुबा, काल-नदी की धार।
लायी हलके ही बहा, जिनमें तनिक न सार।।

(२)

दुनियादारों को नहीं, मैत्री करो प्रदान।
भक्षण-रक्षण-दक्ष वे, सरस पक्ष अनजान।।

(३)

पहले धार्मिक पंथ बहु, अब पार्टी प्रतिग्राम।
गुरु को अब नेता कहें, बदले केवल नाम।।

(४)

इस दुनिया में कब सका, कौन किसे पहचान।
बंदी सब निज अहं के, स्वहित-मात्र तक ज्ञान।।

(५)

दुराचार से भी बुरा, है आचार अभाव।
इष्ट-मित्र उससे विकल, इससे सारा गांव।।

(६)

शशि, मंगल की मृत्तिका, मनुज रहा है छान।
पर अब भी वह स्वयं को, नहीं सका पहचान।।

(७)

आयु-साथ अनुभूति की, बढ़ती इक-इक बूंद।
आयी ज्योंही कुछ समझ, मृत्यु गयी दृग मूंद।।

(८)

पाप अन्य के कर प्रकट, अपने रक्खो ढांप।
प्रकटित ही अब पाप है, दुरित नहीं है पाप।।

(९)

नारी दुनियादार से, पाता पुरुष न पार।
डार-डार ही नर चढ़े, पात-पात पर नार।।

(१०)

अर्थ मार्क्स का, काम है, फ्रायड का सर्वस्व।
धर्म-मोक्ष का अब नहीं, रहा कहीं वर्चस्व।।

—'उत्तरायण', जबलपुर

इंगलैंड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री लेबर पार्टी से पिछले तीन दशकों से संबद्ध। अब संसद-सदस्य, विधि, राजनीति और वित्त-विशेषज्ञ। प्रस्तुत लेख में उन्होंने प्रजातंत्र की संरचना की व्याख्या की है।

जीवंत नेतृत्व प्रजातंत्र की पहली शर्त

● जेम्स कलहन

लोकतंत्र के संबंध में मेरे अपने विचार हैं। मैं समझता हूं कि लोकतंत्र विश्वास दिलाता है कि सभी स्त्री-पुरुषों को समान प्राकृतिक अधिकार है। लोकतंत्र में सभी नागरिक स्वतंत्र हैं, अतः यह एक सार्वभौम घोषणा है कि चाहे रंग, जाति और संस्कृति भिन्न क्यों न हो, सारी मानवजाति के लिए यह अधिकार समान है। इसी को पाने के लिए सभी संघर्षरत हैं। इसका उपयोग एक यंत्र के रूप में सही परिवर्तन के लिए हो सकता है। मैं आपको यूरोप के एक पुराने लोकतंत्रात्मक देश के सदस्य की हैसियत से एशिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को बता रहा हूं। मेरा सिर्फ परिचय इतना ही है कि मैं काफी लंबे समय से लोकतंत्र का व्यावहारिक स्वरूप सरकार में देता रहा; और इसीलिए मांग करता रहा कि सभी स्त्री-पुरुष अपने प्राकृतिक अधिकार, जो कि सार्वभौमिक है, का प्रयोग करने को स्वतंत्र हैं। इसी आधार पर हम अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते की अपेक्षा करते हैं।

मैंने 'विभिन्न अनुभवों' की बात कही; क्योंकि मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता कि कहीं एक ही राष्ट्र लोकतंत्र

को सुरक्षित रख सकता है। इसको और व्यावहारिक स्वरूप देने से पहले सबके दिलों में लोकतंत्र की आस्था होनी चाहिए।

लोकतंत्र का आशय

लोकतंत्र का स्वरूप अध्यक्षात्मक हो या प्रधानमंत्रीवाला; वह संघात्मक हो या एकात्मक, यह बात उतने महत्त्व की नहीं; जितना उसमें महत्वपूर्ण है—'लोकतंत्र।' इसका आशय क्या है—जब हम कहते हैं कि इस देश में लोकतंत्र है? तब उत्तर स्पष्ट होता है—'जहां नागरिक अपने शासक को गुप्त मतदान से चुनें। और चुनाव के बाद शासक अपने को मतदाताओं के सामने रखे, जिन मुद्दों पर उसे चुना गया। इसके लिए यह आवश्यक है कि शासक और शासितों के बीच निरंतर संवाद की स्थिति बनी रहे। इसके लिए वातावरण तब ही बन सकता है, जब अभिव्यक्ति व विचारों की स्वतंत्रता बनी रहे। यह सब कानून के शासन के भीतर होना चाहिए। जब न्यायाधीश चुने या नियुक्त किये जाएं, उसके बाद उन्हें अवश्य स्वतंत्र होना चाहिए।

मानव-मूल्यों की तुष्टि की क्षमता

यह भी मैं कहना चाहूंगा कि बहुमत अल्पमत के विचारों का सम्मान करे, और आपस में विचारों का आदान-प्रदान होता रहे। अल्पमत भी ऐसा कार्य न करे, जिससे सरकार को कार्य संपन्न करने में बाधा उत्पन्न हो। बहुमत अपनी शक्ति का प्रयोग अल्पमत पर गलत कार्यों के लिए न करे। अल्पमत यह अनुभव न करे कि उसको दबाया जा रहा है, और उसकी संवैधानिक मामलों में उपेक्षा की जा रही है।

इसलिए लोकतंत्र में मानवमूल्यों और जनता की भौतिक आवश्यकताओं को तुष्ट करने की क्षमता होनी चाहिए।

मैं इस बात से कतई सहमत नहीं हूं कि लोकतंत्र विकसित राष्ट्रों के लिए है; और विकासशील राष्ट्र इसे नहीं अपना सकते। लेकिन यह बात सत्य है कि लोकतंत्र प्रत्येक जगह अपना घर बना सकता है, चाहे स्वरूप कुछ भी क्यों न हो।

लोकतंत्र : विभिन्न दृष्टिकोण

मेरे देश में लोकतंत्र को लोगों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से भी देखा है। एडमंड बर्क और श्री एमेरी कहते हैं, "सरकार इंजिन है और लोग (जनता) उसके ब्रेक।" लेकिन मैं समझता हूं कि बर्क ने कभी भी आधुनिक गाड़ी को नहीं चलाया, जिसमें चालक (ड्राइवर) ब्रेक और एक्सिलरेटर

ऊपर बायें से : क्वीन ऐलिजाबेथ और प्रधानमंत्री श्रीमती थैचर

दोनों का प्रयोग करता है।

उन्नीसवीं शताब्दी में एक दृष्टिकोण का जन्म हुआ, जिसको अधिकांश लोगों ने स्वीकार किया—ब्रिटिश संविधान ऊर्ध्वगामी प्रतिनिधियों के आधार पर स्थित है। मतदाता अपने मत के द्वारा अपनी शक्ति संसद को देते हैं, और सांसद अपनी दिन-प्रति-दिन की शक्ति कैबिनेट को देते हैं। अमरीकी संविधान भी कुछ ऐसे ही कहता है।

शक्तिशाली और स्थिर सरकार

सिर्फ अराजकतावादियों को छोड़कर सभी मजबूत और शक्तिशाली सरकार की हिमायत करते हैं। अस्थिरता तब आ खड़ी होती है, जब नागरिकों को सीधी यह शक्ति हो कि मध्यावधि में ही सरकार को बदला जाए।

हमारे यहां एक बार इस दृष्टिकोण पर काफी चर्चा भी हुई, लेकिन बहुमत ने 'रिकॉल' की इस प्रणाली को निरस्त कर दिया।

इस संबंध में विभिन्न विधियां ब्रिटिश लेबर पार्टी ने अपनायी हैं। पूर्ण संसदकाल के लिए जिस सांसद का चुनाव होता है, उस पर चुनाव से पहले सहमति उस क्षेत्र के पार्टी के लोगों की होती है। तब जाकर सदस्य आम चुनाव के लिए खड़ा हो सकता है।

राष्ट्रपति दि गॉल ने इसी संदर्भ में लिखा है, "कार्यपालिका की शक्ति तब तक संसद द्वारा नहीं वितरित की जानी चाहिए, जब तक सरकार द्वारा कार्य करने की पद्धति पर भ्रम हो, कुछ काल के लिए वह कुछ नहीं मात्र प्रतिनिधियों का सभूह है।"

इनका रास्ता यही था, मजबूत और स्थायी सरकार को कमजोर करनेवाली परिस्थितियां न पैदा होने दो। इनका आशय था कि कार्यपालिका की शक्ति राज्य के शीर्ष में है, जो पार्टियों से ऊपर है। सार रूप में चाहे वह दि गॉल के विचार हों, और चाहे ब्रिटिश लेबर पार्टी के—दोनों प्रणाली लोकतंत्र की पूरक हैं।

पार्टी और उत्तरदायित्व का प्रश्न

ब्रिटेन में पार्टियों की वृद्धि, श्री एमरी के विचारों में—'हमारी पार्टी प्राथमिक अवस्था में संसदात्मक संस्था है, जो जनता का सहयोग संसद में कार्य करने के लिए चाहती है।' यह तब ही संभव हो सकता है, जब पार्टियों का निर्माण हो। इसका ब्रिटेन में आधुनिक उदाहरण है—नयी 'लोकतंत्रात्मक समाज पार्टी।' लेकिन अनेक दशकों पूर्व अन्य पार्टियों के लिए यह बात सत्य नहीं थी। श्री एमेरी ने इन पार्टियों के विकास में सोंबरी के विचारों की पुष्टि करते हुए कहा, "संसदात्मक सरकार की कार्य-प्रणाली में 'पार्टी मशीन' को बहुत सारी गंभीर राजनीतिक शक्ति प्राप्त हुई है।"

ब्रिटेन की लेबर पार्टी का जन्म और विकास संसद के बाहर ही हुआ है, क्योंकि श्रमिक स्त्री-पुरुषों ने महसूस किया था कि संसद में उनका प्रतिनिधित्व जमींदार और बड़े-बड़े व्यापारी नहीं कर

सकते। ये साधारण लोग अपने श्रम के सिवा कुछ नहीं बेच सकते हैं।

लेकिन तनाव तब उत्पन्न होता है, जब संसद-सदस्य का चुनाव पार्टी सदस्य के अलावा आम नागरिक भी करते हैं, तब सांसद किसकी सुने—उनकी, जिन्होंने उन्हें चुना है या उनकी जिन्होंने उन्हें आम चुनाव के लिए खड़ा किया।

विवाद का हल

अब लेबर पार्टी में इस विवाद का हल इस प्रकार किया गया—एक संसद सदस्य अपनी पार्टी के प्रति उत्तरदायी होगा। हां, जिन्होंने उसके चुनाव अभियान में भाग लिया और नीति संबंधी कार्यों में राष्ट्रीय सम्मेलनों में सक्रिय रहे उनके प्रति वह अकेला उत्तरदायी नहीं होगा। उसकी जिम्मेदारी उन लोगों की इच्छाओं पर भी निर्भर करेगी, जिन्होंने उसे मत नहीं दिया। उसकी दृष्टि राष्ट्रीय हितों की पोषक होगी।

इसी प्रकार कैबिनेट का बड़ा उत्तरदायित्व पार्टी के प्रति होगा, जिसने चुनाव में विजय दिलायी, लेकिन इसके सिवाय, उनके प्रति भी उत्तरदायी होगी, जिन्होंने विरोध किया।

पार्टी कार्यकर्त्ताओं पर जनता की राय एकत्रित करने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी तब आती है, जब पार्टी शासन कर रही हो, स्थिरता लाने का सबसे बड़ा कार्य उन्हीं का है। जनता और सरकार के बीच समन्वय स्थापित करने से लेकर वादों का निपटारा करके, जीत प्राप्त करना पार्टी के लोगों का कार्य है।

लेबर पार्टी का संविधान गंभीरता पूर्वक दोनों बातों में संतुलन बनाये हुए है। पार्टी चुनाव घोषणा-पत्र को तैयार करने में संसदीय लेबर पार्टी और राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति संयुक्त रूप से हिस्सा लेती हैं। इस संतुलन को बदलने की कोशिश की गयी, और राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति को धीरे-धीरे अधिक उत्तरदायित्व सौंपा गया। संसदीय पार्टी से अवश्य पहले विचार विनिमय की बात हुई। इस बात का सफल विरोध भी किया गया।

न्यायाधीश की स्वतंत्रता

चाहे न्यायाधीश चुनकर आयें या नियुक्त किये जाएं, उन्हें शपथ के बाद स्वतंत्र रूप से कार्य करना चाहिए। बिना किसी डर और लगाव के; लेकिन यहां पर भिन्नता है—एक, जहां लिखित संविधान है और दूसरा, ब्रिटेन, जहां सदियों से संविधान ने विकास अलिखित रूप में किया है।

जहां लिखित संविधान है, वहां संसद के अधिनियमों, कार्यपालिका के कार्यों को न्यायालय में चुनौती, इस आधार पर दी जा सकती है कि यह संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों का हनन कर रहा है।

ऐसा ब्रिटेन में संभव नहीं है, क्योंकि संसद सर्वोच्च है। वह लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सभा है। न्यायालय को सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन पर निर्णय देने का अधिकार नहीं है।

न्यायाधीशों का कार्य, सिर्फ इतना है कि वह संसद की व्याख्या करे। ब्रिटेन में न्यायाधीशों ने और संसद ने अपने कार्यों का विभाजन स्वीकार किया है। इसलिए आपस में शक्तिपरीक्षण को प्रायः टाला जाता है।

जीवंत नेतृत्व आवश्यक

लोकतंत्र में नेता का जीवंत होना आवश्यक है। सरकार से नेता को जनता के बीच जाना चाहिए। उसे आदेश नहीं देने चाहिए। किसी भी प्रकार की तानाशाही में उसे विश्वास नहीं करना चाहिए। न ही उसे गुप्त पुलिस का सहारा लेना चाहिए और न ही अधिनायकवादी प्रवृत्तियों को पनपाना चाहिए। जनसंचार के माध्यम पर भी नियंत्रण नहीं रखना चाहिए। उसे जनता के विचारों का उत्प्रेरक होना चाहिए। नेता को स्वतंत्र समाज के बीच में से विभिन्न विरोधी विचारों को खोजना चाहिए, और उनका निराकरण आवश्यकताओं के अनुसार करना चाहिए।

एक बार मोरारजी देसाई ने लिखा, "जनता गांधीजी को अच्छी तरह से समझती थी, क्योंकि वे उनकी भाषा में बोलते थे, वे उनकी ही तरह साधारण जीवन बिताते थे, और उन्हीं के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेते रहे। उन्होंने मजदूरों को एकत्र किया, और उनमें से नेता बनाये।"

मेरे लिए उपरोक्त बात निश्चित रूप से नेतृत्व के गुणों को बताने में सहायक हुई है।

नेता में आत्मविश्वास और गंभीर रूप से अपने विरोधी को सुनने की क्षमता होनी चाहिए। बगैर विचारों के आदान-प्रदान के सत्यता का पता नहीं चल सकता है। नेता वही है, जो विरोधी को सुनकर उसके विचारों को अपने उपयोग में ला सके। इस प्रकार नेता में दबंग रूप से सुझाव के विरुद्ध भी कार्य करने की क्षमता होनी चाहिए। इस बात पर मैं मैकियावली से सहमत हूं, "चौकस होने की अपेक्षा साहसी होना अच्छा है।" नेता में किसी भी नये संकट को खोजने की तीव्र क्षमता होनी चाहिए, उसकी सबसे बड़ी स्वतंत्रता उस पर कार्य करने की है। थोड़ी-सी सूचना पर भी उसकी गहराई में उतरकर निर्णय ले सकने की सूझ-बूझ उसमें अवश्य होनी चाहिए। अपने बीते समय के अनुभव, उसे शीघ्र निर्णय पर ले जा सकते हैं। समान समस्या कैसे उठी थी और उसका समाधान कैसे निकला था, इसका ज्ञान होना चाहिए। इन सब पर उसका ध्यान कल्पना और निर्णय की क्षमता के आधार पर होना चाहिए।

मेरी यह मान्यता है कि संसद को उन नजरों से देखो, कि यह राष्ट्र के कार्यों का केंद्र है।

संक्षिप्त रूप में यह कह सकते हैं—स्त्री और पुरुष तभी शासित हो सकते हैं, जब अपने आप पर शासन करना सीखें।

—प्रस्तुति : भगवतीप्रसाद डोभाल

और गंभीर
ने की क्षमता
के आदान-
हीं चल सकता
ी को सुनकर
प्रयोग में ला
दबंग रूप से
ने की क्षमता
में मैकिया-
ने की अपेक्षा
में किसी भी
क्षमता होनी
स्वतंत्रता उस
ी-सी सूचना
रकर निर्णय
अवश्य होनी
अनुभव, उसे
ते हैं। समान
उसका समा-
ज्ञान होना
सका ध्यान
के आधार

ि संसद को
ष्ट्र के कार्यों

सकते हैं—
न हो सकते
सन करता

ाद डोभाल

यह व्यथा चंदन नहीं है

• महादेवी वर्मा

अश्रु यह पानी नहीं है,
यह व्यथा चन्दन नहीं है।

यह न समझो देव पूजा के
सजीले उपकरण ये,
यह न मानो अमरता से
मांगने आये शरण ये,
स्वाति को खोजा नहीं है
औ' न सीपी को पुकारा
मेघ से मांगा नहीं
इनको न भाया सिन्धु खारा।
विकल मानस से छलक आये
तरल ये ज्वाल-मोती
प्राण की निधियां अमोलक
बेचने का धन नहीं है।

नमन सागर को नमन
विषपान की उज्ज्वल कथा को,

देव-दानव पर समझ पाओगे
नहीं मानव-प्रश्न को ,
जब कहा तुमने कि देखा ,
शासन कोई अन्यायियों का ?
अन्धे का भिख मांगा कहता है
'स्वर्गमा! तू और भी ले' ।
यदि स्वयं मानता समझे कि
सत्य को पैर उजाला ,
मनुज की परिवर्तन को
मृत्यु क्या ईश्वर नहीं है।

किरण सूरज की उतरती, धारती
नहीं सूरज की धारायें ,
तिमिर लहराता न बिखरीं
इन्द्रधनुषों की धारायें ,
समय ठहरा है किसी का
क्षण नहीं जिसमें समाते ,
निष्पलक हैं नयन जिनमें ,
स्वप्न भी आते न जाते ।
वह तुम्हारा स्वर्ग, अब मेरे लिए
बसेरा ही है ,

क्या वहाँ मेरा पहुँचना आज
निर्वासन नहीं है ?

आँसुओं से आज सिंचित हो
हमी जानें रहते हैं
खिलते कुछ मुस्कान से
हम आज सच मानें रहते हैं
साँसों से आहट मिलते हैं
आज पहचानें रहते हैं
यह व्यथा और मोती को
हम आज समझानें रहते हैं।
आज मन्दिर के मुखर घड़ियाल -
घंटों से न बोलें,
अब पुजारी के चुनौती है नमन वंदन
नहीं है।
और, यह पानी नहीं है
यह व्यथा चन्दन नहीं है।

Mehta सिद्धपीठ (विन्ध्याचल)

—१७/सी अशोक नगर, न्यायमार्ग, इलाहाबाद

कुंठ

● डॉ. सुशील कुमार फुल्ल

बसंती आगे-आगे और नाथ पीछे-पीछे। उसकी गंध से खचित-सा नाथ। पर्वत की ढलवा पगडंडियों पर कोल्हू के बैल की भांति चलते हुए बसंती और नाथ। बोझ ढुलक-ढुलक पड़ता। घुंघरुओं एवं घंटियों की खनन-खनन से घाटी में मधुर स्वर लहरियां तैरने लगीं।

मूतनी के टीले पर पहुंचते ही बसंती ने हिनहिनाना शुरू कर दिया। नाथ ने भी पूंछ उठाकर जयघोष किया तथा बसंती की हां में हां मिलायी। अचानक दोनों ठहर गये। नाथ ने बसंती को चाटना शुरू किया। बसंती के रोएं खड़े हो गये।

उर्वि ने घूरकर राघू की ओर देखा। राघू ने शरारतभरी अदा में कहा, "वे तुम्हारी तरह 'साधनी' नहीं हुए हैं।"

उर्वि के शरीर में जगमग-जगमग होने लगी। राघू की आंखें चमक उठीं। उर्वि की इच्छा हुई कि वह भी जोर से हिनहिनाये ताकि उसकी आवाज भी जंगल के नन्हें-नन्हें पेड़-पौधों से लिपट जाए। उसने राघू को निहारा। राघू की आंखों में भी आमंत्रण था।

भार-मुक्त होते ही बसंती तथा नाथ बेतहाशा उछल-कूद करने लगे। वे मिट्टी में लोट-पोट हो कल्लोल कर रहे थे तथा एक दूसरे को चाट रहे थे।

"राघू।"

"हां, उर्वि।"

बसंती भी साधनी क्यों नहीं हो

जाती ?"

"तुम्हें नाथ से ईर्ष्या हो रही है ?"

"हां, शायद नहीं। लेकिन राधू यह बताओ क्या नाथ साधू नहीं बन सकता ?"

"वैसे तो साधू बनने-बनाने की परंपरा है ही नहीं, यदि होती भी, तो मैं हरगिज भी साधू न बनता।" राधू ने विश्वस्त स्वर में कहा।

"हूं।"

"तुम्हें अच्छा लगता है ?"

"क्या ?"

"साधनी बनकर जीना।"

"नहीं, तो मुझे तो याद भी नहीं, मैं कब साधनी बन गयी। शायद मेरा जन्म ही साधनी के रूप में हुआ है।" उर्वि ने आह भरकर कहा।

●

वह चार या पांच वर्ष की रही होगी। घर में उत्सव छाया हुआ था। उसे रेशमी कुर्ता-पायजामा पहनाते हुए मां ने कहा था, "उर्मि। तुम्हें साधनी बना रहे हैं। बोलो—अडिग रहोगी ?"

उर्वि को क्या पता साधनी क्या होती है। बस...अच्छे कपड़े मिल गये... रेशमी कुर्ता-पाजामा पहन लिया। गांव-भर को बकरे का भोग लगा दिया। बस हो गयी साधनी। मां के प्रश्न ने उसे चौंकाया नहीं था। वह मुसकराभर दी थी। नन्हीं कोंपल को क्या पता ठूंठ क्या होता है।

फिर वह उछलती-कूदती गांवभर में हो आयी थी। सब से कह रही थी—"मैं साधनी बन गयी। मैं साधनी हो गयी।"

घर में उसका खास दर्जा हो गया था, समाज में भी। वह मलंग आदमियों की भांति घूमती रहती। खेत में काम करती, घर में भी। वह सफेदे के वृक्ष की

भांति बढ़ने लगी थी।

गांव में खुमारी छायी थी।

उर्वि की हम उमर सहेली हिमजा का विवाह था। कुल आठ वर्ष की गुड़िया और दूल्हा दस-बारह साल का, पग्गड धारण किये हुए। नया चोला, डोरा पहने हुए।

बारात लड़खड़ाती हुई झूम रही थी, नाच रही थी। सारे वायुमंडल में एक लय उभर आयी थी।

उर्वि ने अपनी मां से पूछा था, "हिमजा को आज क्या हो रहा है?"

"उसका विवाह हो रहा है।"

"क्यों?"

"क्यों-क्या? सब लड़कियों का विवाह होता है।"

"तुम्हारा भी हुआ था, मां?"

"हां।"

"लाड़ा लाड़ी को ले जाता है?"

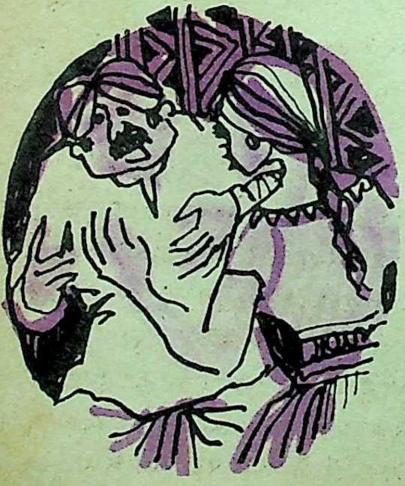

"तुम्हें ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए।" मां ने समझाया था।

"क्यों?"

"क्योंकि तुम साधनी बन चुकी हो?"

"साधनी क्या लड़की नहीं रहती। तुमने अभी तो कहा कि सभी लड़कियों का विवाह होता है। कल मेरा विवाह नहीं होगा?" उर्वि ने आश्चर्य से पूछा।

"नहीं होगा, नहीं होगा। तुम साधनी हो और साधनियों का विवाह नहीं होता।" मां ने खीझकर कहा।

"मां साधनी और भूतनी में कोई अंतर नहीं होता?"

"होता क्यों नहीं। भूतनी तो भटकी हुई आत्मा होती है और साधनी जीवित लड़की। साधनी लड़की होते हुए भी मां-बाप के घर में लड़का बनकर रहती है। तू, तो हमारा लड़का है।"

"तो मेरे लिये दुल्हन लाओ न, मां।" उर्वि ने अनुरोध किया था। मां ने छिटक दिया था। वास्तव में मां के पास उसके प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं था।

उसके अंदर कुछ कुलबुला रहा था, कराह रहा था। प्रश्न उभर रहे थे, अच्छी भली लड़की को लड़का मानने के लिए साधनी बना देना कहां का न्याय है। बस, लड़की होकर लड़कों की तरह रहो। बस, मां-बाप की खुशी के लिए। उसकी इच्छा हुई कि वह भूतनी बन जाए। कम से कम लोग उससे डरेंगे तो सही।

वह अचानक भूतनी के टीले की ओर बढ़ गयी थी। गांव में अब भी शहनाई बज रही थी। टीले पर जाकर वह मिट्टी में लोटने लगी थी. . .उसका सारा मुंह-सिर मिट्टी से लथपथ हो गया था। आधी रात के बाद वह घर लौटी थी। उसने अपने घर का दरवाजा खटखटाया।

"कौन ?"

"मैं भूतनी।"

"हे राम। जाओ-जाओ अपने टीले पर लौट जाओ।" बदहवास-सी मां बोली।

अगले दिन चेला बुलाया गया था।

उर्वि की झाड़-फूंक की जा रही थी। चेला मंत्र बोले जा रहा था। उर्वि मुसकरा रही थी। बोल रही थी, "मैं भूतनी, तू भूत, मिटा न आज छुआछूत। मैं भूतनी, तू भूत, मिटा न अब छुआछूत।"

चेला और भी जोर से चिल्लाने लगता—

"हगड़ दंग . . . पकड़ दंग . . . चल मेरे संग. . .भूतनी के टीले ... चल मेरे संग. . ."

"लकड़ दंग, पकड़ दंग. . .मैं न जाऊं तेरे संग. . .," उर्वि गुर्रायी।

चेला बेहोश हो गया था।

खड्ड में पत्थर लुढ़कने लगे। पत्थरों में रहते हुए उर्वि पत्थर हो गयी थी। बस, बंधा-बंधाया काम। सुबह होते ही घोड़ों पर सामान लादकर कनारथ से शिव-गढ़ी जाना। सांय होते ही लौट आना। उसका साथी था—राघू। बहुत वर्षों से वे इकट्ठे ही घोड़े लेकर निकलते थे।

"शिव-गढ़ी के लोग कनारथ क्यों नहीं आते ?" उर्वि पूछती है।

"कनारथ में भूत प्रेतों का वास है।"

"क्या हम भी भूत प्रेत हैं ?"

"हां, उनकी नजर में तो हम भूत-प्रेत ही हैं।"

कहते हैं शिव-गढ़ी से एक व्यापारी कनारथ आ रहा था। वह विश्राम के लिए भूतनी के टीले के पास रुक गया। उसने चरने के लिए घोड़े खुले छोड़ दिये।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? एक चिड़िया आकर उस व्यापारी की पगड़ी पर बैठ गयी। उसने चिड़िया को उड़ाना चाहा, परंतु वह उड़ी नहीं। चिड़िया के बोझ से वह व्यापारी बेहोश होने लगा। उसे अपने घोड़े दो-दो टुकड़ों में बंटे दिखायी देने लगे। बीच में से कटा हुआ घोड़ा। अगली दो टांगों के बल पर घास चरता हुआ . . .

वह चिल्ला रहा था. . .नहीं. . .नहीं. . . ।"

"कोरी बकावस। मैं नहीं मानती।"

"तुम्हारे मानने न मानने से क्या होता है।"

"क्यों ?"

"अंबा ने यह घटना स्वयं देखी थी।"

"वही अंबा जो कनारथ के बाहर जंगल में रहती है।"

"हां, अंबा ने ही गांव वालों को बताया था कि चिड़िया भूतनी ही थी. . . और व्यापारी के अंदर का भूत भयभीत हो गया था। इसीलिए उसकी आंखों में फरक आ गया था।"

"क्या वह व्यापारी बच गया था ?"

"व्यापारी ! क्या बचना था. . . कुछ मास तक वह चारपाई पर लेटा रहा। सड़ता रहा. . . फिर उसे खून की उल्टियां आने लगीं और एक दिन. . ."

"मैं बताऊं राधू। वह क्यों मरा।"

"हां, बताओ।"

"वह बीमार था।"

"तुमने कैसे जाना ?"

"कनारथ में सब लोग बीमार हैं ?"

"तुम्हारा दिमाग तो ठिकाने है।"

"हां,. . . कोई ऐसा घर बता सकते हो, जिसमें किसी को खून की उल्टियां न आती हों।"

"शायद वह तो खाने-पीने की वजह से है।"

"तुम सच्ची साधनी हो। ये सब मेरी समझ से बाहर की बातें हैं।"

"क्या तुम साध नहीं बनना चाहते? एक बार फिर सोच लो।" उर्वि ने कहा था।

"तुम तो मेरे पीछे ही पड़ गयी हो। "साधू बनने से मुझे कोई फायदा नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैं लड़का हूं। लड़कों को वैसे ही संपत्ति का उत्तराधिकार मिल जाता है।"

"तो लड़कियों को क्यों नहीं मिलता?"

"लड़कियों को भी मिलता है, परंतु इस गांव में नहीं।. . .जिस घर में लड़का नहीं होता, वहां लड़कियों में से एक को साधनी बना दिया जाता है, ताकि मां-बाप की सारी संपत्ति उसे मिल सके। और फिर समाज में उस घर की इज्जत भी बढ़ जाती है।"

"और जब साधनी, मर जाएगी तो...।"

"मुझे नहीं पता. . .साधनी भी कभी मरती है ? संपत्ति तो उसकी ही रहेगी।"

"बेवकूफ। सिर्फ संपत्ति के लिए अच्छी-भली लड़की को साधनी बनाकर रख देते हैं।"

"तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए।"

"क्यों ? क्या सारे प्रतिबंध साधनियों के लिए ही हैं ?"

"तुम साधनी नहीं रहना चाहती ?"

"हरगिज नहीं।"

"किसी से कहना मत, उन्होंने सुन लिया, तो तुम्हें काटकर रख देंगे।"

"मैं एक-एक को देख लूंगी। मैं क्यों बनूं साधनी...क्यों तिल-तिल मरती रहूं...क्यों मैं मलंग-सी घूमती रहूं। सिर्फ संपत्ति के लिए। ये मिट्टी भी किसी की हुई है। कल मैं मर जाऊंगी, मिट्टी में मिल जाऊंगी...फिर ? बस...क्या यह सब प्रतिबंध मिट्टी के शमन के लिए हैं... राघू तुम भी बेवकूफ हो।"

"उर्वि तुम भटक रही हो।"

"तुम डरपोक ही रहे न।" उर्वि की व्यंग्य मुसकान राघू को चीर जाती, परंतु वह चुप हो जाता। साधनी से संबंध स्थापित करना भूतनी के कोप को आमंत्रित करना था।

वह तूफान-सी अशांत थी। एक सांय वह अंबा के पास पहुंच गयी थी। अंबा को हैरानी हुई थी। कनारथ गांव के ऊपर पहाड़ की चोटी पर अंबा की कुटिया थी।

"कैसे आयीं उर्वि ?"

"अंबा ! आप मुझसे बहुत बड़ी हैं।"

"बड़ी-छोटी से कोई अंतर नहीं पड़ता। हैं तो दोनों साधनी।"

"अंबा आप अकेली रहती हैं। कभी कनारथ नहीं आती। क्या कोई मोह नहीं जागता ?"

"पगली मोह कैसा ? साधनी का जीवन तो ठूंठ होता है, जो कभी फलता-फूलता नहीं।"

"नहीं अंबा, मैं नहीं मानती।"

"तुम साधनी हो और साधनी का अर्थ मोह-माया त्यागना है।"

"क्या तुम्हें कभी यौवन में भी कोई इच्छा जागृत नहीं हुई ?"

"क्यों कुरेदती हो ?"

"तुम्हें विद्रोह करना चाहिए था। बैलों की तरह बधियाकर के रख देना...!"

"उर्वि कुछ मत कहो। मेरे फफोले फूटने लगेंगे।" अंबा का तन पिघलने लगा था।

अच्छा...अंबा एक बात-सचसच बताना...क्या कभी तुम्हारे मन में किसी पुरुष के लिए प्रेम अंकुरित नहीं हुआ।"

"तू तो मेरे जख्मों को कुरेदने लगी। शरीर में खून का प्रवाह हो, तो प्रेम क्यों नहीं होगा। हुआ था परंतु मैं भीरु बनी रही...और समय निकल गया। आह भरते हुए अंबा ने कहा।"

"वह कहां गया ?"

"जहां से सब आते हैं।"

"क्या मतलब ?"

"हां, उर्वि। एक शाम वह बहुत भावुक हो गया था। कहता था—'अंबा...मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। तुम व्यर्थ में अपना जीवन नष्ट कर रहीं हो। मैं तुम्हें अपनाने के लिए साध बन जाता हूं। यदि तुम मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं करोगी, तो मैं कुछ भी कर सकता हूं।' पता नहीं मेरे मन में क्या आया ? मैंने कठोर होते हुए कहा, मैं तो साधनी हूं। ठूंठ बिलकुल ठूंठ। तुम मेरी तपस्या में बाधा क्यों डालते हो। सुनो...फिर

ख़ून के रिश्ते कितने गहरे...

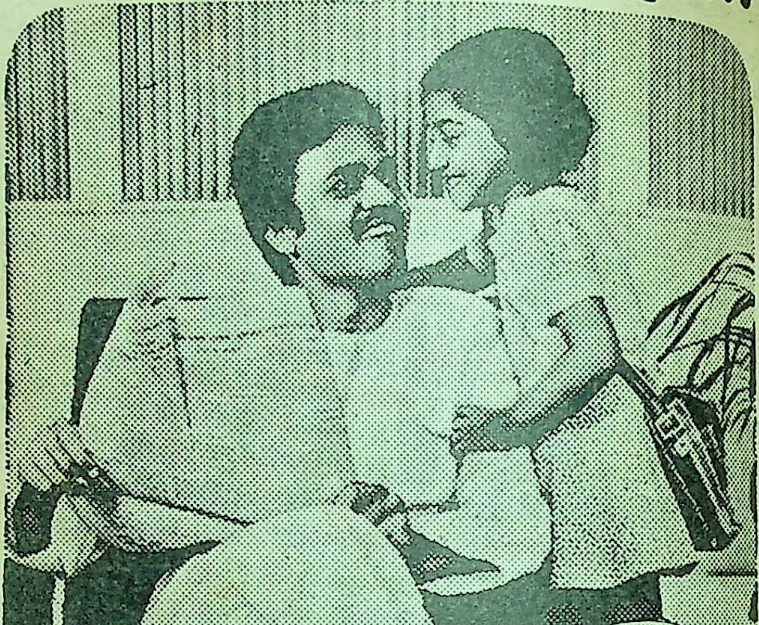

मिनाडेक्स का भी आपके ख़ून के साथ गहरा रिश्ता है

स्वस्थ ख़ून अच्छी सेहत का आधार है। और स्वस्थ ख़ून के लिए ज़रूरत है लौहतत्व की। मिनाडेक्स में लौहतत्व की प्रचुर मात्रा के कारण इसके हर चम्मच से आपके ख़ून को पूरा फ़ायदा मिलता है।

Glaxo
ग्लैक्सो
मिनाडेक्स
स्वस्थ रक्त और नयी शक्ति के लिये

रक्तशक्तिदायक टॉनिक

मिनाडेक्स®

CASGM-19R 182 HN

कभी मुझे शक्ल नहीं दिखाना। मैं साधनी की परंपरा पर कलंक नहीं बनना चाहती। और वह फिर कभी नहीं लौटा।''

"अच्छा। क्यों ?"

"उसने बिनवा खड्ड में छलांग लगा दी थी।"

"ओह !"

उर्वि की आंखों में आंसू थे। वह बोली, तुम्हें दुख तो हुआ होगा।

"दुःख... उस दिन से मैं यहां बाहर आकर रहने लगी। उसकी आत्मा के लिए प्रार्थना करते मेरा समय गुजरता है।"

"वह लौट के नहीं आया ?"

"वह हर रोज आता है.. मुझसे बतियाता है...फिर चला जाता है।"

उर्वि ने देखा अब अंबा की आंखों में विश्वास था। शायद अंबा अपने आप से बतियाती होगी। इसीलिए लोग उसे पागल कहते हैं।

उर्वि लौट आयी थी। एक भारी मन लिये। रातभर उसे नींद नहीं आयी थी। उसने सोचा वह अंबा के पास जाकर उसका मन बहलाया करेगी, उसके घावों को सहलाया करेगी, परंतु अभी गांव सोया ही पड़ा था कि कोहराम मच गया। अंबा ने बिनवा खड्ड में छलांग लगा दी, अंबा ने आत्महत्या कर ली।

"वह बीमार थी ?" कोई कह रहा था।

"सब साधनियां बीमार होती हैं।" दूसरा स्वर।

"उसने भी तो आत्महत्या ही की थी।"

"साधनी हो तो ऐसी हो।"

गांव वाले अपने-अपने अनुमान लगा रहे थे, परंतु उर्वि जानती थी कि अंबा को अत्महत्या के लिए उकसाने में उसका भी सहयोग था।

बीड़ी के लंबे-लंबे कश खींचने के बाद वह बहुत देर तक दूर-दूर तक लहलाते जंगलों को देखती रही। फिर बोली, "राघू।"

"राघू..तुम भी टूंट हो ?"

"क्या मतलब ?"

उर्वि ने बसंती तथा नाथ के मुंह कनारथ की आर मोड़ते हुए कहा, "अलविदा।"

"क्या कहती हो ?" राघू बोला।

"डरो मत। ठूंठ से भी घबराते हो।" उर्वि ने भयभीत राघू को पकड़ा तथा प्रेमी-युगल की मुद्रा में जंगल में खो गयी।

बसंती तथा नाथ बहुत दूर निकल गये थे।

—हिंदी विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुरा—१७६०६१

भविष्य

(११)

क्या आपका जन्म मई में हुआ है?

● प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'

सूर्य २० मई तक वृष राशि में रहता है। तत्पश्चात सूर्य मिथुन राशि में चला जाता है। २० मई तक जन्मे व्यक्तियों की राशि वृष, उसके पश्चात के लोगों की राशि मिथुन है। वृष राशि का स्वामी शुक्र तथा मिथुन राशि का स्वामी बुध है। मई माह में जन्मे व्यक्तियों पर शुक्र तथा बुध का विशेष प्रभाव रहता है।

व्यक्तित्त्व एवं स्वभाव

ऐसे व्यक्ति परिश्रमी तथा लगनशील होते हैं। अपने लक्ष्य को जानते हैं। एक बार लक्ष्य में जुट गये कि कार्य समाप्त करके ही चैन लेते हैं। असफलताएं इनका, रास्ता नहीं रोक पाती हैं। जहां वे अत्यधिक परिश्रमी होते हैं, वहीं उनमें काम टालने की प्रवृत्ति होती है। पर जिस कार्य को वे प्रारंभ कर दें, तो उसे पूर्ण करने की क्षमता उनमें होती है। काम टालने की प्रवृत्ति कभी-कभी उन्हें महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों से वंचित कर देती हैं। शुक्र-प्रधान होने के कारण ऐसे व्यक्ति भावुक होते हैं। क्रोध आने पर अपना कार्य अवश्य कर देते हैं, वैसे आप में क्रोध पर नियंत्रण करने की क्षमता है।

अपने लक्ष्य को हमेशा ध्यान में रखते हैं। यद्यपि उदार, धार्मिक, भावुक, सौंदर्य प्रेमी एवं अनंग प्रिय व्यक्ति हैं।

आप मस्तिष्क से क्रियाशील हैं। बुध के कारण आपका मस्तिष्क निष्क्रिय नहीं रह सकता है। व्यवहार-कुशल होते हैं मित्रों, स्वजनों के सुख दुःख में सहायक होते हैं। अपने व्यवहार के कारण समाज में सम्माननीय जीवन प्राप्त होता है। लोगों की सहायता करना आपका स्वभाव है। कई बार लोग आपसे गलत लाभ उठा लेते हैं। फिर भी आपकी उदारता में तनिक भी अंतर नहीं आता है। जब क्रोध आता है तब स्वजनों पर भी बुरी तरह से बरस

जाते हैं। पत्नी आपके प्रति निष्ठावान रहती है, परंतु आप प्रेम के क्षेत्र में सदा ही अस्थिर रहते हैं। सौंदर्य, कला, साहित्य, संगीत, काम (सेक्स) के प्रति विशेष लगाव रहता है। प्रेम-प्रसंग कई होते हैं। प्रायः प्रेम-प्रसंग वासना प्रधान होते हैं। कोई भी प्रेम-प्रसंग लंबे समय तक नहीं चलता है। प्रायः असफल ही होते हैं। दांपत्य-जीवन सामान्य जाता है।

कला के प्रति शुक्र के कारण विशेष रुचि होती है। ऐसे व्यक्ति फिल्म-जगत में भी सफल होते हैं। बुध चिकित्सा, व्यापार, प्रकाशन, साहित्य के क्षेत्र में सफल बनाता है। आप अत्यधिक भावुक भी हो जाते हैं। यदि आप से जूनियर व्यक्ति को प्रमोशन दे दिया गया, तब आपका नौकरी करना मुश्किल-सा ही होगा।

४ मई—महाराणा प्रताप, ५ मई—कार्ल मार्क्स, ६ मई—रवीन्द्रनाथ टैगोर, ९ मई—जार्ज स्टीफेन्स, १२ मई—स्वामी कृष्णमूर्ति, १४ मई—फॅरनहाइट, १८ मई—उमर खय्याम, १९ मई—नीलम संजीव रेड्डी, २० मई—सुमित्रानन्दन पन्त, २४ मई—महारानी विक्टोरिया, २६ मई—क्वीन मेरी, २९ मई—जान एफ. कैनेडी

पैतृक संपत्ति में व्यवधान आते हैं। परंतु स्वयं संपत्ति अवश्य प्राप्त करते हैं। मुकदमें से आपको बचना चाहिए। कृषि कार्यों में भी आपको सफलता मिलती है। आपकी उन्नति में आपके सहयोगी, मित्र सहायक होते हैं। परंतु आप कभी-कभी लक्ष्य की प्राप्ति के पश्चात मित्रों की अवहेलना कर जाते हैं, जिसके कारण भविष्य में आपको हानि उठानी पड़ती है।

आपको अनेक लंबी यात्राओं का लाभ भी मिलेगा। विदेश-भ्रमण के अवसर भी प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव रहता है।

वराह-मिहिर के मतानुसार, "ऐसे व्यक्ति की प्रगति में कोई स्त्री सहायक होती है। परंतु, विधवा अथवा बांझ (जिसके संतान न हो) स्त्री से भारी हानि भी उठानी पड़ती है। यह व्यक्ति स्वयं किसी स्त्री के प्रति निष्ठावान नहीं रहता है। प्रेम प्रायः असफल होते हैं। यदि मध्य रात्रि का जन्म है, तो पिता की संपत्ति अवश्य प्राप्त होती है।"

ऐसे व्यक्ति दीर्घायु होते हैं। सौंदर्य, आहार तथा भौतिकता के शौकीन होते हुए भी धार्मिक प्रवृति होती है। संतान के विकास के प्रति लापरवाही रहती है।

शुभ तिथि—६, १५, २४, ५, १४, २३

शुभ रत्न—हीरा (२० मई तक जन्मे व्यक्तियों के लिए), पन्ना (२० मई के बाद जन्मे व्यक्तियों के लिए)

शुभ धातु—चांदी

शुभ रंग—१ हल्का पीला
२. हल्का नीला, आसमानी
३. हल्का हरा
४. श्वेत

सुखद समय—प्रत्येक कैलेंडर वर्ष में

१. २१ मई से २३ जून
२. २१ अगस्त से २३ सितंबर
३. २० अप्रैल से २४ मई
४. २१ सितंबर से २४ अक्तूबर

निर्बल समय—प्रत्येक कैलेंडर वर्ष में

१. १६ फरवरी से २१ मार्च
२. २१ मार्च से २० अप्रैल
३. २४ अक्तूबर से २७ नवंबर

स्वास्थ्य—ऐसे व्यक्ति दीर्घायु अवश्य होते हैं। परंतु शुक्र के कारण वायु-विकार, गुरदे में खराबी, तिल्ली, मधुमेह, गुप्तांग-पीड़ा आदि का भय। बुध के कारण रक्तविकार, त्वचा-विकार, छूत की बीमारियां तथा हृदय रोग की संभावना रहती है।

स्वामी कृष्णमूर्ति

सुमित्रानन्दन पंत

जान एफ. कैनेडी

ऐसे व्यक्तियों के जीवन के ११, २३, ३५वें वर्ष में बीमारी की संभावना अधिक रहती है। पशु या वाहन से दुर्घटना की भी संभावना रहती है। उम्र २३, २८, ३५वें वर्ष प्रेम-संबंध में घोर निराशा का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी की मृत्यु का दुःख भी प्रायः मिलता है। भावुक होने के कारण मानसिक वेदनाएं प्रायः मिलती रहेंगी।

क्या करें?—आपमें अनेक क्षमताएं हैं। अनेक व्यवसाय कर सकते हैं। यदि आप कृषि-कार्य, राजनीति, कपड़ा, होटल, फिल्म, चिकित्सा, कला, संगीत, साहित्य, स्त्री-उपयोगी वस्तुएं, सौंदर्य-प्रसाधन, ज्योतिष, प्रकाशन, आदि का व्यवसाय करते हैं, तो आप शिखर तक पहुंच सकते हैं।

आस्थावान—प्रायः मई में जन्मे व्यक्तियों में धर्म, ईश्वर के प्रति आस्था रहती है। जिनमें धर्म तथा ईश्वर में आस्था है, वे अपनी प्रगति, मानसिक शांति, आत्मिक बल के लिए शुक्रवार अथवा बुधवार का व्रत करें। मां दुर्गा या देवि अंजली की उपासना लाभप्रद होगी। यदि आप मुस्लिम धर्मालंबी हैं, तो हरे वस्त्र का प्रयोग अधिक करें। शुक्रवार की नमाज अवश्य करें।

मित्र, रोमांस, पत्नी—आप एक भावुक व्यक्ति हैं। भावुकता में आपके अनेक लोगों से संबंध जुड़ जाते हैं। कई बार उन लोगों से भारी हानि उठानी पड़ती है। मित्र, प्रेम, पत्नी-संबंध में यदि संभव हो तो यह ध्यान रखें कि उसका जन्म कब हुआ है। यदि उसका जन्म किसी भी वर्ष के २० अप्रैल से २३ जून, २१ अगस्त से २४ अक्तूबर के मध्य ६, १५, २४, ५, १४, २३ तारीख को बुधवार या शुक्रवार के दिन

हुआ है, तो वह व्यक्ति आपके लिए अच्छा सहयोगी व निष्ठावान सिद्ध होगा ।

जन्म किसी भी वर्ष के १६ फरवरी से २० अप्रैल तथा २४ अक्तूबर से २७ नवंबर के मध्य ३, १२, २१, ३०, ६, १८ और २७ तारीख को हुआ है,तो उस व्यक्ति से वेदना, असहयोग, विश्वासघात आदि की संभावना रहती है।

कार्लमार्क्स

रवीन्द्रनाथ टैगोर

महाराणा प्रताप

४ मई को **महाराणा प्रताप** का जन्म हुआ। महाराणा पर शुक्र, बुध, सूर्य और मंगल का प्रभाव था। मंगल ने असाधारण साहस दिया। अकबर-जैसे सशक्त व्यक्ति के सामने भी नहीं झुके। शुक्र ने देश-प्रेम दिया, देश-प्रेम ने घास की रोटियां तक खिलायी, फिर भी समझौता नहीं किया। सूर्य ने असीम कीर्ति दी। शुक्र के साथ यदि मंगल का प्रभाव न होता, तो दारुण दुःख न मिलते। अपने प्रिय घोड़े 'चेतक' का विछोह ३५वें वर्ष में सहना पड़ा। परिवार एवं स्वयं को अपने देश-प्रेम के कारण कष्ट उठाना पड़ा।

५ मई को **कार्ल मार्क्स** का जन्म हुआ, जिनके कारण साम्यवाद चला। मार्क्स पर बुध, शुक्र, सूर्य और शनि का प्रभाव था। शनि-लग्न कुंभ में जन्म हुआ। शुक्र, बुध से भी अधिक प्रभाव शनि का हो गया। बचपन से उपेक्षित एवं शोषित रहा। शनि का विशेष प्रभाव पड़ा, जिससे उन्होंने मान लिया कि प्रत्येक सशक्त पूंजीपति शोषण करके ही पूंजीपति बनता है। बुध ने लेखन, साहित्य एवं दर्शन की क्षमता दी। सूर्य ने कीर्ति दी। यदि कार्ल मार्क्स पर गुरु का प्रभाव और हो जाता, तो वह व्यक्ति अपने युग का सबसे बड़ा संन्यासी होता, उसके नाम पर धर्म चलता।

६ मई को गुरुदेव **रवीन्द्रनाथ टैगोर** का जन्म हुआ। गुरुदेव पर शुक्र, बुध, सूर्य तथा गुरु का प्रभाव रहा। शुक्र एवं बुध ने लेखन, साहित्य, कला, धर्म व दर्शन का विद्वान बनाया। गुरु ने असाधारण क्षमता दी। साहित्य में प्राण, धर्म एवं दर्शन के कारण उत्पन्न हुआ। संन्यासी, दार्शनिक, कवि लेखक बना दिया। सूर्य व बुध ने संसार का सर्वोच्च पुरस्कार-नोबल पुरस्कार दिलाया। सूर्य के कारण आज भी उनकी कीर्ति है।

१२ मई को **स्वामी कृष्णमूर्ति** का जन्म कर्क लग्न में हुआ। शुक्र, बुध, मंगल, चंद्र, गुरु का प्रभाव है। निसंदेह इस युग के श्रेष्ठ संत हैं। गुरु एवं बुध ने साहित्य, धर्म व दर्शन की क्षमता दी। अपना स्वतंत्र चिंतन

दिया। सूर्य प्रभाव हीन है, इस कारण कीर्ति सीमित रह गयी। शुक्र के कारण दर्शन का प्रसार अवश्य हो रहा है।

१८ मई को प्रसिद्ध शायर **उमर खय्याम** का जन्म हुआ। खय्याम पर शुक्र, बुध के साथ मंगल, राहु का प्रभाव रहा। मंगल, शुक्र, ने सदा शराब के साथ रखा। साहित्य दिया बुध ने, शुक्र और मंगल ने पारिवारिक जीवन नष्ट किया।

१९ मई को वर्तमान भारत के **राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी** का जन्म हुआ। मंगल, शुक्र, राहु और हर्षल का प्रभाव है। हर्षल ने देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचा दिया, परंतु गुरु, शनि का बुध के राशि, यानि कन्या में होने से जीवन का अंतिम चरण शांत और एकांत बीतेगा। दीर्घायु हैं। १९८२ का वर्ष उत्तम नहीं है। मंगल ने जमीन, कृषक-परिवार में जन्म दिया। शुक्र के वर्ष १९७७ में राष्ट्रपति पद प्राप्त किया, जब कि इससे पूर्व मंगल ने असफलता दी थी।

२० मई को प्रकृति-कवि **सुमित्रानन्दन पंत** का जन्म हुआ। पंतजी पर शुक्र, गुरु, चंद्र, बुध का प्रभाव था। शुक्र, चंद्र, व बुध ने साहित्य, कवि के रूप में बनाया। बुध ने धन, प्रतिभा दी। शुक्र, गुरु की युक्ति ने अविवाहित रखा। परिवार नहीं होने दिया। बुध-शुक्र की युक्ति ने ज्योतिष, धर्म, दर्शन में भी रुचि दी।

२४ मई को **महारानी विक्टोरिया** का जन्म हुआ। शुक्र व हर्षल सूर्य का प्रभाव रहा। संसार में प्रभाव रहा। सत्ता दी, वैभव, कीर्ति सभी कुछ मिला।

२९ मई को अमरीका के राष्ट्रपति **जान एफ. कैनेडी** का जन्म हुआ। कैनेडी पर शुक्र, चंद्र, हर्षल व मंगल का प्रभाव रहा। हर्षल ने सर्वोच्च पद दिया। मंगल व चंद्र की युक्ति ने हत्या करवा दी।

शुक्र एवं मंगल यदि पंचम भाव में वृष लग्न का है, तो वह व्यक्ति असाधारण कार्य अवश्य करेगा। स्वतंत्र सृजन से विश्व कीर्ति अर्जित करने में सफलता प्राप्त कर सकता है। अन्य स्थिति में, शुक्र मंगल की युक्ति, मई में जन्मे व्यक्तियों के लिए उत्तम नहीं है। शुक्र-गुरु, शुक्र-चंद्र, शुक्र-बुध, शुक्र-हर्षल की युक्ति लाभप्रद होंगी। आपकी उन्नति में सहायक होंगी।

यदि आप जीवन में सफल नहीं हो रहे हैं, तो आप अपने लक्ष्य को निर्धारित करें। आलस्य का परित्याग करके समय से जुट जाएं। सफलता प्रतीक्षा कर रही है।

माह कैसा ?

यह माह महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। २ मई को शुक्र उदय हो रहा है। ७ मई को बुध उदय हो रहा है। रुके हुए कार्य संपन्न होंगे। मांगलिक कार्य की भी आशा है। आर्थिक रूप से प्रगति प्रारंभ होगी। असाधारण प्रगति की ओर अग्रसर होंगे। शिक्षा, प्रतियोगिता में भी सफलता का योग है।

मई १९८१ से अप्रैल १९८२

वर्ष का प्रारंभ बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आप विवाह के योग्य हैं, तो विवाह

होने की संभावना है। व्यवसाय की भी आशा है। परिवार वृद्धि होगी, धन संपत्ति के लिए उत्तम योग है। १० जुलाई से १७ अगस्त तक का समय स्वास्थ्य के प्रति उत्तम नहीं होगा। १८ अगस्त से २४ अक्तूबर तक का समय उत्तम होगा। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। २७ अक्तूबर को गुरु तुला यानि शुक्र ग्रह में प्रवेश करेगा। इसलिए व्यवसाय के लिए उत्तम है। किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी। उम्र २४ और ३३ के लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण समय होगा। २३ दिसंबर को राहु, बुध की राशि मिथुन में प्रवेश कर रहा है, जिससे स्वास्थ में परेशानी, षड़यंत्र, तनाव, प्रियजन-विछोह, दुर्घटना आदि की संभावना बनती है। यात्रा के समय चोरी, दुर्घटना, षड़यंत्र भी संभव है। सावधानी बरतें। देवि अंजलि की उपासना लाभप्रद सिद्ध हो सकती है।

उम्र ११, २३, ३५, ३८, ४१, ४४, ४७, ५०, ५३, ६२, ६५, ७४, ८०, ८३ ८९, ९२, ९५, ९७, का वर्ष यदि चल रहा है, तो शरीर, स्वास्थ्य, धन और परिवार के प्रति अप्रिय घटना घट सकती है।

प्रो. के. ए. दुबे 'पद्‌मेश'

२१ मार्च से ३० अप्रैल के मध्य का समय अवश्य उत्तम जाएगा। विवाह, शिक्षा, प्रतियोगिता, धन-व्यवसाय आदि की संभावना है।

उम्र २४, ३३, ४२, ५१, ५७, ६०, ६६, ६८, ६९, ७७, ७८, ८७ का वर्ष उन्नतिकारक सिद्ध होगा। शुक्र-प्रधान होने के कारण निःसंदेह घटनाकारी वर्ष होगा।

—'ज्योतिष योग' १८, एम. आई. जी.
रतनलालनगर, कानपुर-२०८०२२

अंतर क्यों

एक शायर ने खलीफा की शान में एक कसीदा लिखा, और उसे सुनाया। खलीफा ने खुश होकर कहा, "तुम्हें इसका क्या इनाम दूं ?"

"एक लाख मुहरें।"

"यह तो बहुत बड़ी रकम है। कम से कम बतलाओ।"

"एक सौ मुहरें दे दीजिए।"

"तुमने दोनों रकमों में इतना बड़ा अंतर क्यों रखा ?"

"जब आपने मुझसे पूछा क्या लोगे, तब मैंने आपके रुतबे का खयाल किया, और जब आपने उसे घटाने के लिए कहा, तब मैंने अपनी हैसियत का खयाल रखा।"

"कसम खुदा की हम अपनी नाकदरी नही करेंगे।" खुश होकर खलीफा ने यह कहते हुए शायर को एक लाख मोहरें दिलवा दीं।

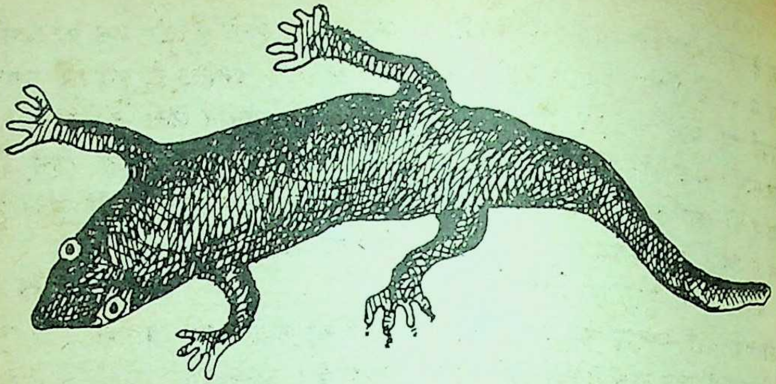

उसे छिपकली के साथ खेलने का शौक था

● **रजनी माथुर**

एक साल वह मेरे घर में रही। इस पूरे समय मैं, उसे और उसकी हरकतों को बहुत ध्यान से देखा करती थी। बहुत सुबह उठना, बिना कुछ कहे घर के बरतन मांजना, झाड़ू लगाना आदि। और भी वे सब काम, जो किसी भी घर को साफ रख सकते हैं। मैं उठती तो आश्चर्यचकित रह जाती। एक दिन मैंने पूछा, "गौरी, तू कितनी सुबह उठा करती है ?"

"मेरी नींद तो चार बजे ही खुल जाती है।"

"रात को सोती भी है ?"

"हां, 'सो' ही लेती हूं। अब तो कुछ नींद भी आने लगी है। पहले. . ."

गौरी एकाएक चुप हो गयी और बाल्टी में डूबे कपड़े धोने चल दी। मैं सोचती रह गयी कि आखिर इसके दर्द को उधेड़ना कहां तक ठीक होगा !

गौरी का दर्द मैं जानती हूं। दरअसल उस दर्द से मुक्ति दिलाने के लिए ही मैं उसे अपने घर ले आयी थी। एक दिन एक महिला-संगठन की संयोजिका ने मेरा कई लड़कियों से परिचय कराया था, उनमें गौरी भी थी। हिमालय की तराई के एक गांव में कभी उसका घर रहा है। एक दिन अचानक वह बिना पैसे के घर से भाग गयी और फिर न जाने कितना सफर उसने तय किया। उस पूरी यात्रा का अंत तब हुआ, जब वह एक पुलिसवाले के हाथ पड़ी। पुलिसवाला कहां-

कहां ले गया और कैसे वह दिल्ली आयी, बात न करना बेहतर होगा। मुझे तो आश्चर्य इस बात पर था कि लड़की बहुत सीधी, सहज और सरल थी। नाक-नक्श काफी आकर्षक थे। उम्र भी अठारह साल से ज्यादा नहीं होंगी।

गौरी के प्रति मेरी दिलचस्पी निरंतर बढ़ती गयी और सप्ताह में एक-दो बार कम से क़म मैं वहां जाने लगी। धीरे-धीरे मैंने उससे बातचीत करनी शुरू कर दी। मैं कह सकती हूं कि सतही स्तर पर मैंने दोस्ती का एक रिश्ता उससे कायम कर लिया था।

ठंड के दिन थे। धूप बहुत तेज नहीं थी। उस खुले मैदान में मेढक यहां-वहां उचक रहे थे। मैंने देखा, गौरी उनके पीछे गयी और दौड़कर, एक-एककर उसने कई मेढक पकड़े और वहीं उनसे गिट्टे (एक प्रकार का खेल) खेलने लगी, बहुत देर तक वह यह खेल करती रही और मैं हतप्रभ-सी सब-कुछ देखती रही।

मैंने पूछा, "गौरी, तूने यह खेल कब सीखा ?"

वह खड़ी हो गयी और उसके खड़े होते ही मेढक इधर-उधर भाग गये। एक-आध की तो जान भी निकल चुकी थी। उसने बताया कि जब वह आठ साल की थी, तब से ही मेढकों के साथ गिट्टे खेल रही है। यह बताते हुए वह जोर से हंसी और बोली, "इनसे गिट्टे खेलने का अपना ही मजा है। हर मेढक की अपनी एक हरकत होती है और जब वह जमीन पर गिरकर चीखता है, तब मैं उसकी बोली भी पहचान लेती हूं। उसके दर्द को देखकर मुझे बड़ी खुशी होती है। सचमुच दूसरों को दर्द देने में मजा भी कितना आता है।"

जाने कितने दर्द !

गौरी की कहानी का सूत्र यहीं से ही शुरू होता है। उसने इतनी छोटी-सी जिंदगी में कितने दर्द नहीं झेले। हिमालय की तराई, हरे-भरे वृक्ष, वृक्षों के बीच कच्ची झोपड़ी, इसी झोपड़ी में वह अपने सौतेले बाप और भाई-बहन के साथ रहती थी। देहात में भला पढ़ना-लिखना कहां रखा है। वह भेड़ चराने का काम करती थी। उस गांव की भेड़ें इकट्ठीकर दूर ले जाती। दिनभर भेड़ों की रखवाली करती और खुद खुले आसमान के नीचे अपनी अल्हड़ उम्र के साथ निर्विकार

यहां-वहां घूमती रहती थी। कभी जंगली बेल तोड़कर खाती, कभी कोई फल। जिस दिन की यह घटना है, शाम होने में थोड़ी देर थी कि अचानक एक आदमी ने पीछे से आकर उसे पकड़ लिया। वह बहुत जोर से चीखी। लौटकर देखा, तो पता चला कि वह भेड़ों का मालिक था। वह बहुत चीखी-चिल्लायी, अपने को बचाने की बहुत कोशिश की लेकिन. . .!

गौरी की कहानी का यहीं अंत नहीं हुआ। जब वह घर पहुंची तब सौतेले बाप ने उसकी बहुत पिटाई की। हाथ दिखाते हुए गौरी ने कहा था, "देखिए न, ये जो काली-काली धारियां हैं, यह सब बेंतों की निशानी हैं। ये बेंत मेरे सौतेले बाप ने मारे थे।"

मुझे पता लगा कि इस घटना के दूसरे दिन गौरी ने वह गांव छोड़ दिया और वहां से चल पड़ी। कभी बस में, कभी बैलगाड़ी में, कभी किसी झुंड के साथ, कभी अकेले, और फिर बिना टिकट रेल की सवारी। उसी में वह पकड़ी गयी। और यहां लाकर उसे रखा गया, ताकि वह सुधर जाए।

सवाल यह है कि सुधार किस बात का किया जाए ? जो गांव में उसके साथ गुजर चुका है, क्या उसका कोई इलाज है ? यह सीधी और भोली-भाली गौरी एक कर्कश लड़की बन गयी।

छिपकलियों से खेल

एक दिन देखकर मैं हैरान रह गयी कि मेरी दीवार पर छिपकली चल रही थी, गौरी ने दौड़कर अपने हाथ से ही उसे पकड़ लिया। मैं घबराकर और जोर से बोली, "अरे, गौरी, छिपकली में जहर होता है, फेंक दे।"

गौरी ने देखते-देखते अपने हाथों से छिपकली को मसलकर फेंक दिया। मैं हैरान ! इसके बाद उसने न जाने कितनी बार छिपकलियां पकड़ीं, उनसे खेल किया, उन्हें मसला और फेंक दिया। मैं देखती कि छिपकली तड़पकर उसके हाथ में बिलबिला रही हैं, खून निकल रहा है, पर गौरी हंसकर खेल कर रही है। मैं यह देख नहीं पाती और वहां से भाग जाती थी।

गौरी ने छिपकलियों के साथ खेलने की बात कैसे सोची, यह बात मेरे लिए तब बेकार साबित हुई, जब मुझे उस महिला-घर की संयोजिका ने बताया कि गौरी तो जिंदा सांप भी पकड़ लेती है। गरदन के नीचे से पकड़कर-जैसे कोई रस्सी जमीन पर पीटता हो, वह सांपों को पीट-पीटकर मार डालती थी। इतना ही नहीं सांपों के बारे में उसकी जानकारी बेमिसाल थी—कौन-सा सांप पनीया सांप (ऐसा सांप जिसके जहर नहीं होता) है, और कौन-सा सांप जहरीला है। उसके लिए इन सबका अर्थ बेकार था कि कौन सांप जहरीला है, कौन नहीं है। उसने काफी लंबे-लंबे सांप भी पकड़े, उनसे खेल किया।

सुधार की कोशिश

यह आश्चर्य की बात हो सकती है कि ऐसी लड़की को मैं अपने घर क्यों लायी ! निश्चित रूप से मैं चाहती थी कि मेरे पास रहकर उसकी यह आदतें सुधर जाएं, और वह एक भली लड़की बन जाए। पहले चार-पांच महीने तो मुझे बहुत चिढ़ हुई। मन हुआ कि उसे धक्के मारकर घर से बाहर कर दूं, पर मैंने शांत चित्त होकर सोचा, अपने गांव की घटनाओं को भूलने में उसे इतना समय तो चाहिए ही था।

हमारे प्रेम-व्यवहार के कारण धीरे-धीरे वह सब भूल गयी। और रह गयी एक भोली-भाली गौरी। वैसे भोलेपन—के नाम पर आज भी वह मेढकों से गिट्टे खेल सकती है, छिपकलियां पकड़ सकती है, सांप भी, लेकिन. . . मैं नहीं कह सकती कि आज की गौरी क्या है ? हमने बहुत प्रयत्न कर, खोजबीनकर एक अच्छे लड़के से गौरी का विवाह करा दिया।

सुना तो है कि गौरी बहुत सुख से रह रही है, लेकिन मेरी तलाश अब भी है, यह देखने के लिए कि अब उसमें अतीत की कितनी सार्थकता शेष है।

५९१७, बड़ा मोर सराय रेलवे कॉलोनी,
—कौड़िया पुल, दिल्ली-११०००६

जिस्म से आकर लिपट जाती है आग
बर्फ की मानिन्द पिघलाती है आग
—इस्लाम पर्वेज

ज्ञान-गंगा

चिंतनेनैधंते चिता त्विंधनेनेव पावकः।
नश्यत्यचिंतनेनैव विनेंधनमिवानलः ॥

—ईंधन से जैसे अग्नि बढ़ती है, ऐसे ही सोचने से चिंता बढ़ती है। न सोचने से चिंता वैसे ही नष्ट हो जाती है, जैसे ईंधन के बिना अग्नि नष्ट हो जाती है।

ना यथा यतते नित्यं यम्दावयति यन्मयः।
याद्वगिछेच्च भवितुं ताद्वग्भवति नान्यथा ॥

—मनुष्य नित्य जैसा यत्न करता है, तन्मय होकर जैसी भावना करता है और जैसा होना चाहता है, वैसा ही हो जाता है, अन्यथा नहीं।

दूरेऽपि परस्यागसि पटुर्जनो नात्मनः समीपेऽपि।
स्वं व्रणमक्षि न पश्यति शशिनि कलंक निरुपयति ॥

—दूसरे का अपराध या दोष दूर या अदृश्य भी हो तो लोग उसे ढूंढ़ निकालने में चतुर होते हैं, किंतु अपने दोष को समीप होते हुए भी नहीं देख पाते। अपने विकार को आंख स्वयं नहीं देख पाती किंतु चंद्रमा के कलंक को देख लेती है।

विषस्य विषयाणां च दूरमत्यंतमंतरम् ।
उपभुक्तं विषं हंति विषयाः स्मरणादपि ॥

—विष और विषयों में बहुत बड़ा फर्क है। विष खाये जाने पर मनुष्य को मारता है और विषय वासनाओं के तो चिंतन और स्मरण से भी मनुष्य नष्ट हो जाता है।

—प्रस्तोता : महर्षिकुमार पाण्डेय

● शिवकुमार गोयल

सन १८५७ के विद्रोह की पहली चिनगारी मेरठ से प्रज्वलित हुई थी तथा उसने इतना उग्र रूप धारण कर लिया था कि मेरठ से दिल्ली तक का हर गांव 'मारो फिरंगी को' के उद्घोषों से गूंज उठा था ।

मेरठ छावनी में स्थित औघड़नाथ (भगवान शिव) मंदिर में उन दिनों पुजारी के रूप में कोई स्वाधीनता सेनानी अपनी गतिविधियों में संलग्न था । उसने छावनी के हिंदुस्तानी सैनिकों में, जो भगवान शंकर की पूजा के लिए मंदिर आते थे, देश-भक्ति की भावनाएं उभारनी शुरू कर दीं । उन्हें बताया कि विधर्मी अंगरेज देश को तो गुलाम बनाये हुए ही हैं, वे कारतूसों में गाय की चरबी लगाकर उनके धर्म के साथ भी खिलवाड़ करने पर तुले हुए हैं ।

पुजारी के अलावा एक अन्य साधु भी अप्रैल १८५७ में मेरठ छावनी में सक्रिय रहा । इन दोनों के अथक प्रयासों का यह परिणाम निकला कि २३ अप्रैल को तीसरी घुड़सवार सेना ने परेड के समय अपवित्र कारतूसों को छूने से इनकार कर विद्रोह का बिगुल बजा दिया ।

अंगरेज सैनिक अधिकारियों ने हिंदुस्तानी सैनिकों को विद्रोही करार देकर बंदी बना लिया । ९ मई को कोर्ट मार्शल द्वारा अस्सी सैनिकों को कठोर दंड सुनाया गया । उन्हें सैनिक-शिविर में बंदी बना लिया गया ।

मेरठ के गांवों पर गोरों के अत्याचार

मुकीमपुर गढ़ी का किला

गढ़ी का कुंआ जिसमें अंगरेजों के [illegible]

१० मई को हिंदुस्तानी सैनिकों ने जेल पर धावा बोलकर अपने सैनिक साथियों को छुड़वा लिया और उसी समय इस चिनगारी ने दावानल का रूप धारण कर लिया। विद्रोही सैनिक 'मरने या मारने' का दृढ़ संकल्प लेकर दिल्ली की ओर कूच कर गये।

ग्रामीण विद्रोह कर उठे

मेरठ क्षेत्र के गांवों में पहले से ही अंगरेजों के अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह की भावना अंदर ही अंदर पनप रही थी। राजपूत, गूजर, त्यागी तथा अन्य जातियों के प्रमुख नेता कई बार गुप्त बैठकें कर विधर्मी व विदेशी गोरों के अत्याचारों का सामना करने के बारे में विचार करते आ रहे थे।

२० मई के सैनिक-विद्रोह के समाचार ने गांव-गांव में किसानों व आम जनता की भावनाओं को प्रभावित किया। बड़ौत क्षेत्र के ग्रामीण शाहमल जाट के नेतृत्व में अंगरेजों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। इधर-गाजियाबाद क्षेत्र के राजपूतों ने भी गोरों के खिलाफ तलवारें निकाल लीं। पिलखुवा, धौलाना, डासना, सपनावत, डूहरी, मुकीमपुर, अछेजा आदि गांवों की जनता गोरों के खिलाफ मैदान में आ डटी।

ठाकुर गुलाब सिंह का किला

पिलखुवा के आस-पास राजपूतों के २४४ गांव हैं। राणा पट्टी के ठाकुर गुलाबसिंह ने १८५२ में पास के मुकीमपुर गढ़ी की स्थापना की थी। वे देश-भक्त तथा अंगरेजों के कट्टर दुश्मन थे। पीर के वेश में जंगल में छिपे एक अज्ञात क्रांतिकारी के संकेत पर उन्होंने 'किलेनुमा गढ़ी' का निर्माण कराया था। लखौरी ईंटों से बनवाये गये इस किले के चारों ओर चौड़ी खाई बनवायी गयी थी। ठाकुर गुलाबसिंह ने कई बार क्षेत्र के प्रभावी राजपूतों को आमंत्रित कर अंगरेजों के खिलाफ विद्रोह की योजना के बारे में बातचीत की। मालागढ़ के नवाब वलीदादखां के साथ भी उनका इस संबंध में विचार-विमर्श हुआ। अपनी इस योजना के अंतर्गत उन्होंने अनेक तोपों, बारूद तथा अन्य हथियारों का जखीरा इकट्ठा किया।

औंघड़ नाथ का मंदिर

उन्होंने किले के चारों ओर पांच बुर्जियां बनवायीं, जिससे उनपर चढ़कर दुश्मन की निगरानी की जा सके।

ठाकुर गुलाबसिंह मुकीमपुर गढ़ी के अलावा अमीरपुर, डूहरी तथा खैरपुर गढ़ी के भी जागीरदार थे। वे अत्यंत बहादुर, साहसी तथा देश-भक्त थे। उनके बड़े पुत्र हिम्मतसिंह का निधन हो गया। ठाकुर

साहब इस आघात को सहन नहीं कर सके।

मई १८५७ के विद्रोह के समय उनके पुत्र बांकेसिंह ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया। मुकीमपुर, डूहरी, पिलखुवा, धौलाना आदि के राजपूतों ने डटकर अंगरेजों से लोहा लिया। एक ओर वड़ौत क्षेत्र में शाहमल जाट अंगरेजों से टक्कर ले रहा था, तो दूसरी ओर साठा-चौरासी क्षेत्र के राजपूत गोरों की नाक में दम किये हुए थे।

जब किसानों ने गोरों को मार डाला

मुकीमपुर गढ़ी के पास स्थित फरीदनगर क्षेत्र के व्यासपुर, भनेड़ा, सुहाना, खिदौड़ा आदि त्यागियों के गांव भी अंगरेजों के खिलाफ विद्रोह में आगे थे। एक दिन लगभग दर्जनभर गोरे सैनिक इन गांवों में आतंक मचाने के लिए आ पहुंचे। खेतों में काम कर रहे किसानों को उन्होंने आतंकित करना चाहा। उन्होंने दो किसानों को गोली का निशाना बना दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि देखते ही देखते सैकड़ों ग्रामीणों ने गोरों को घेर लिया तथा पांच की हत्या कर डाली। शेष गोरे जान बचाकर भाग निकले। गांव के एक कहार ने एक गोरे सैनिक को अपने खेत के घास में छिपाकर बचा लिया। बाद में नांगल गांव उस कहार को इनाम के में दे दिया गया।

अस्सी वर्षीया बाबा जगतसिंह

शहीद स्मारक
राजीत सिंह अरोड़ा
द्वारा
स्थापित की गई

औघड़नाथ शिवमंदिर का शिलान्यास

चौदह देश-भक्त-चौदह कुत्ते

अंगरेजों ने इस घटना की आड़ में पूरे देश में आतंक फैलाना शुरू कर दिया। धौलाना में १४ देश-भक्तों को बंदी बनाकर एक पेड़ पर फांसी से लटका दिया। उनके नाम थे——झुनकू, वजीर चौहान, सोहनसिंह, सुमेरसिंह, किडलासिंह, चंदनसिंह, मुक्खासिंह, दौलतसिंह, जीरासिंह, दुर्गासिंह आदि।

गोरों ने एक पेड़ पर इन्हें फांसी से लटकाने के बाद, चौदह कुत्तों को गोलियों से मरवाया। कुत्तों के शव उनके शवों के पास डाल दिये गये तथा गांव की जनता को चेतावनी दी गयी कि यदि आइंदा किसी ने अंगरेजी हुकूमत के खिलाफ एक शब्द भी निकाला, तो उन्हें कुत्तों की मौत मार डाला जाएगा।

ग्यासपुर, भनेड़ा तथा अन्य गांवों में भी गोरों ने भारी अत्याचार किये।

कुछ गांवों में आग भी लगायी गयी। सीकरी गांव को फूंक दिया गया।

अंगरेजों को यह सुराग लग चुका था कि क्षेत्र में इस विद्रोह के पीछे स्व० ठाकुर गुलावसिंह तथा उनके पुत्र बांकेसिंह का पूरा हाथ रहा है। उन्हें यह भी पता था कि मुकीमपुर गढ़ी का किला इन गतिविधियों का केंद्र रहा है। अतः अंगरेजों ने किले को ही पूरी तरह तहस-नहस करने की योजना बना ली।

मुकीमपुर से पहले डूहरी गांव पर हमला किया गया। घरों को आग लगायी गयी तथा वहां के कुछ राजपूतों को फांसी पर लटकाया गया। पिलखुवा के मौहल्ला मंडी के तिराहे पर कुछ लोगों को फांसियां दी गयीं। इसके बाद आतंक फैलाकर मुकीमपुर गढ़ी के सामने तोपें लगा दी गयीं। गाजियाबाद में उन दिनों दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह जफर का प्रतिनिधि कर्नल अहमद खान नियुक्त था। उसने बादशाह को ९ सितंबर १८५७ को लिखे पत्र में संकेत दिया था, 'पिलखुवा के पास मुकीमपुर एक बड़ा मजबूत और पक्के चूने का किला है। उसमें ५०–६० मन बारूद है। यदि उस पर फिरंगी का कब्जा हो गया, तो अच्छा नहीं होगा।'

अंगरेजी तोपों ने किले पर गोले बरसाये। बाद में सुरंग लगाकर, बारूद बिछाकर उसे तोड़ डाला गया। ठाकुर बांकेसिंह तथा उनके साथियों को बंदी बना लिया गया।

गोरे अफसरों ने किले के कुएं से बारूद तथा हथियार बरामद किये। ठाकुर बांकेबिहारी को पकड़कर बेगमाबाद (अब मोदीनगर) ले जाया गया।

गोरे ठाकुरों को पकड़कर ले जाते समय रास्ते में बिसोखर गांव का रामदास जाट मिल गया। रामदयाल–ऊपर से अंगरेजों का हमदर्द था परंतु अंदर ही अंदर उसकी सहानुभूति ठाकुर बांकेसिंह के साथ थी। उसने किसी प्रकार अंगरेजों से फरियाद कर इन ठाकुरों को फांसी के फंदे से बचा लिया।

प्लेट खाने में बहोट अच्छा ... है

सन १८५७ की क्रांति के दौरान कुछ अंगरेज छिपते-छिपते हापुड़ होते हुए ग्राम अछेजा पहुंच गये और वहां के चौधरी रामकरण त्यागी से शरण मांगी।

दयावश चौधरी साहब ने भूखे-प्यासे गोरों के लिए भोजन की व्यवस्था करायी। मक्का की रोटियों पर साग रखकर उन्हें दे दिया गया। फूहड़ों की तरह उन्होंने जल्दी से साग खा लिया, फिर एक अंगरेज बोला, "बाबा, यह लो अपनी प्लेट।"

गोरा मक्का की रोटी को प्लेट समझ रहा था। उसे बताया गया कि यह प्लेट नहीं होती है, तो वह मुसकरा पड़ा। रोटी खाकर बोला, "बाबा, तुमरा प्लेट, खाने में बहोट अच्छा लगता है।"

मुकीमपुर गढ़ी के किले की टूटी

दीवार तथा कुआं आज भी अंगरेजों की गोलाबारी की याद दिलाते हैं। ठाकुर बांकेसिंह के प्रपौत्र ८० वर्षीय बाबा जगतसिंह अभी भी अपने परदादा तथा अन्य ठाकुरों की वीरता की कहानियां सुनाते हैं।

अंगरेजों ने पिलखुवा क्षेत्र के कई सौ गांवों को विद्रोही करार देकर जब्त कर लिया था तथा उन्हें एक लाख, १४ हजार १९ रुपये, आठ आना ११ पाई में जॉन मिचल नामक एक अंगरेज का नीलाम कर दिया था।

शाहमल का सिर काटकर प्रदर्शन

गोरे मेरठ के सैनिक विद्रोह तथा क्षेत्र के ग्रामीणों द्वारा विद्रोहियों का साथ दिये जाने से पूरी तरह चिढ़ गये थे। अतः उन्होंने पूरे मेरठ जनपद के गांवों में दमन व आतंक फैलाया।

सरधना क्षेत्र के अकलपुरा गांव के किसानों के नेता रामदल ने विद्रोह में बढ़-चढ़कर भाग लिया था। अकलपुरा की जमींदारी जब्त कर ली गयी तथा मकानों को तोपों से उड़ा दिया गया। रामदल का सिर काटकर सरधना के बाजार में टांग दिया गया।

मेरट-बागपत सड़क पर स्थित पांचली गांव में भी ग्रामवासियों को पेड़ों पर लटकाकर फांसी दी गयी। अनेक मकानों को जलाकर राख कर दिया गया। बागपत क्षेत्र के जाट नेता शाहमल को भी पकड़कर उनका सिर काट दिया गया तथा उसको बांस पर लटकाकर प्रदर्शित किया गया। शाहमल ने महीनों तक गोरों से टक्कर ली थी। अंगरेज बदले की भावना में पागल हो उठे थे। उन्होंने गांवों तथा कस्बों में पहुंचकर जनता पर अमानवीय अत्याचार कराये। घरों को बुरी तरह लूटा गया, आग लगा दी गयी और चाहे जिसे पकड़कर पेड़ों पर लटका दिया गया।

अंगरेज इतिहासकार मैलेसन ने स्वीकार किया—

'मेरठ के गदर को दबाने के लिए सख्ती बरतनी पड़ी। अधसीखे कातिलों का उपयोग किया गया। एक व्यक्ति ने अपनी डींग मारी कि उसने किस कलात्मक ढंग से आम के वृक्षों में फांसी के फंदे लटकाये और कुछ लोगों को हाथी पर लाकर, फंदा गले में डालकर, हाथी आगे बढ़ा दिया।'

पिलखुवा कस्बे में भी गोरों ने अनेक घरों में लूटपाट करवायी। कस्बे के तुलाराम छीपी व रूपा चमार के घरों को बुरी तरह लूटा जाता रहा।

गाजीउद्दीन नगर (वर्तमान गाजियाबाद) में उन दिनों तैनात दिल्ली के बादशाह के प्रतिनिधि कर्नल अहमदखान ने ९ सितंबर १८५७ को बादशाह को भेजी रिपोर्ट में लिखा था—

"८ सितंबर को कुछ फिरंगियों ने कुछ जाटों की सहायता से पिलखुवा और उसके आसपास के चार गांवों पर हमला किया और उन्हें आग लगा दी। हमलावरों के साथ चार तोपें थीं।'

इस प्रकार वर्षों तक मेरठ क्षेत्र के गांव गोरों के कोपभाजन बनते रहे।

—पिलखुवा, गाजियाबाद

वह जिंदगी भर विष पीने का प्रयोग करता रहा

(२)

● रवीन्द्रसिंह

आम तौर पर नशेबाज परिस्थितियों के शिकार होते हैं। नशे की भयानक दुनिया में उनके प्रवेश को रोकने के लिए बाधाएं न खड़ी करने का दोष उनके अभिभावकों का ही होता है। और, यदि 'शिकार' छात्रावास में रहता है तो उसका दोष स्कूल को भी होता है। यदि अभिभावक और स्कूल अपना दायित्व संतोषजनक ढंग से निभायें तो नशे की दुनिया में बच्चों के पहुंचने की संभावना काफी कम हो जाती है।

मैं ऐसे कई भूतपूर्व नशेबाजों को जानता हूं, जो उनके साथ सही ढंग से व्यवहार किये जाने के कारण नशे की दुनिया से वापस लाये जा सके थे। इस काम के लिए न केवल अच्छी मनोचिकित्सा, वरन अभिभावकों और संबंधियों के प्रेम और धैर्य की भी जरूरत होती है। मेरे माता-पिता की प्रार्थनाएं और देखभाल ही मुझे नशे के गर्त्त से निकाल पायीं।

आपका बच्चा मारीजुआना या 'हाशीश' पीने वालों के इन तीन प्रकारों में से किसी एक प्रकार का हो सकता है :

१. वह लड़का, जो 'हाशीश' सिगरेट के कुछ कश ही खींचता है—उसे, उसके साथी 'सिस्सी' या 'चिकन' संबोधन से पुकारते हैं।

२. जो मनोवैज्ञानिक रूप से 'हाशीश' सिगरेट पर निर्भर रहने लगा है और एक दिन में एक या दो सिगरेट पीता है।

३. पुराना 'नशेबाज', जिसकी जिंदगी का एकमात्र ध्येय अपने 'नशे' को प्राप्त करना होता है। ऐसा नशेबाज कई तरह के नशे का आदी बन जाता है। मैं इसी तरह का नशेबाज था, फिर भी घर लौट आया! पहले दो प्रकार के नशेबाजों का तो ठीक तरह की देखभाल से घर में ही इलाज किया जा सकता है। यदि आप अपने बच्चे के साथ सही संवाद स्थापित कर सकते हैं तो उसे अस्पताल भेजने की आवश्यकता नहीं। यदि आप अपने प्रयत्नों में ईमानदार हैं तो उसका अच्छा फल निकलेगा।

सही देखभाल जरूरी

अंतिम प्रकार के नशेबाजों से निपटना कठिन होता है, उसे अस्पताल में भी ले जाने की जरूरत पड़ सकती है। ऐसे नशेबाज से नशा छुड़ाने के लिए अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी सही ढंग से देखभाल बेहद जरूरी है। भारत में अभी नशेबाजों की

सहायता के लिए पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित और अनुभवी कर्मचारियों वाले अस्पताल या केंद्र नहीं हैं। मैंने 'सहायता' शब्द का जानबूझकर इस्तेमाल किया है। कारण, मरीज के लिए दवाओं या मेडिकल चिकित्सा से अधिक उसका मानसिक कल्याण ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है। इस दौरान कोई भी गलत कदम उसे पुराने 'आनंदमय संसार' में लौटने के लिए प्रेरित कर सकता है। अतः उसके परिवार के सदस्यों और मित्रों को एक बेहद महत्त्वपूर्ण लड़ाई लड़नी पड़ती है। यह आवश्यक है कि उसे इस बात की प्रतीति कर दी जाए कि उसके अतीत के बारे में कोई परेशान नहीं है।

आपबीती

मुझमें बड़ी तेजी से सुधार हुआ था। पहले दस दिनों में तो मैंने स्वयं दवाओं की मात्रा कम करने का अनुरोध किया था। दरअसल कुछ दिनों के लिए तो उन्हें बिलकुल बंद कर दिया गया था। मेरा मनोबल ऊंचा था। मेरे पिता मेरठ से दो बार आये थे। मेरे चचेरे भाई मुझसे रोज मिलने आते थे। अस्पताल के कर्मचारी भी शुरू-शुरू में सहृदय थे।

पर एकाएक कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं घट गयीं। गलतफहमी का शिकार एक नर्सिंग असिस्टेंट अनावश्यक रूप से कठोर था। दूसरे लोगों ने भी कहा कि चूंकि मैं 'मेंटल वार्ड' में हूं, मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाएगा। एकाएक मेरे चचेरे भाइयों ने भी आना बंद कर दिया और फिर उनसे कोई संपर्क नहीं हो पाया। मेरे पिता भी देर से मिलने आये।

मैं समझ नहीं पाता हूं कि उन दिनों मुझे नींद क्यों नहीं आती थी और मैं क्यों बेचैन था! मुक्ति के इस संघर्ष के दौर में मैं नारकीय यातना से गुजर रहा था। मैं जानता था कि टांग टूट जाने के कारण मैं अस्पताल में दाखिल नहीं किया गया था। न मैं क्षय अथवा अन्य किसी भयानक बीमारी का शिकार था। मैं स्वयं को हीन और निरर्थक समझ रहा था। ऐसा व्यक्ति, जिसकी किसी को जरूरत नहीं थी। मैं एक नशेबाज था...

अब मुझे फिर से 'शॉट' की जरूरत थी। मैंने किसी तरह नींद की गोलियों का इंतजाम किया और उनका 'ओवरडोज' ले लिया। मुझे लगा, जैसे मैं नशे की पुरानी दुनिया में लौट रहा हूं। मैंने इसी दुनिया के बारे में सोचना भी शुरू कर दिया। अब मेरा मनोबल रसातल को पहुंच गया था, पर मैंने संघर्ष किया। नाना प्रकार के भयों से लड़ाई लड़ी। इसी समय मेरे चाचा मुझसे मिलने आये। वे नौजवानों को चाहते थे। उनमें घुलमिल

रवीन्द्रसिंह—नशे के पहले नशे के बाद

जाते थे। उन्होंने मेरा काफी उत्साह बढ़ाया। कर्नल राव तथा वार्ड के इनचार्ज भी बेहद सहृदय थे। वे मेरे विश्वास को जोड़ने में सफल रहे। इस तरह मुझ पर छाया संकट दूर हो चुका था।

मैं किसी भी नशेबाज के अभिभावकों, संबंधियों और मित्रों से हार्दिक अनुरोध करूंगा कि वे उपरोक्त स्थितियों की पुनरावृत्ति न होने दें। आप नशे के शिकार व्यक्ति के पास जाएं, उससे जीवन के उज्ज्वल पक्ष पर प्रसन्नतापूर्वक बातें करें और उसे इस बात का अहसास करायें कि दुनिया को उसकी जरूरत है। जो लोग उससे मिलने नहीं जा सकते हों, वे उसे संदेश भेजें कि अस्पताल से बाहर आने पर उससे मिलकर उन्हें बेहद खुशी होगी। इस सबका, डॉक्टर की चिकित्सा से भी अधिक असर होगा।

इस मार्ग में कितनी ही कठिनाइयां क्यों न आयें, अभिभावकों का यह परम कर्त्तव्य है कि वे लक्ष्य-प्राप्ति की ओर धीरे-धीरे बढ़ते रहें अर्थात उसके नशे से पूर्ण-मुक्ति तक तथा शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक तरीके से पूर्णरूपेण पुनः स्वस्थ होने तक वे अपने प्रयत्न न छोड़ें। उनमें ढिलाई न आने दें।

नशे की आदत रोग नहीं लक्षण

सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि आपका बच्चा क्यों नशा कर रहा है? अन्यथा यह बुखार के मूल कारणों को जाने बिना गोलियों द्वारा उसे कम करने की कोशिश करने-जैसा होगा।

और, अंत में एक बात—कृपया उसके मन की अपराध-बोध की भावना को बार-बार न जगायें। यद्यपि वह प्रत्यक्ष कुछ नहीं कहता है, तथापि मन ही मन वह अपराध-बोध से पीड़ित रहता है। नशीली वस्तुओं के बारे में जानकारी रखना आसान काम नहीं है। जैसे-जैसे नशीली वस्तुओं का सेवन बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे तरह-तरह के आकर्षक नामों की आड़ में नशीली वस्तुओं का चोरी-छिपे व्यापार बढ़ता जा रहा है। ये नाम हैं—'एंजेल डस्ट', 'सनशाइन

यलो', और 'परपल हेज'। भारत में भी जेट-युग के लड़के-लड़कियां इन नामों से परिचित होंगे—'वीड', 'ज्वाय पाउडर', 'ड्रीमर' और 'मेरी जेन'।

भारतीय कालेजों में शुरू-शुरू में लड़के लड़कियों का 'हाशीश' या 'डेक्सेड्राइन' और 'मेनड्रैक्स' गोलियों से परिचय हुआ था। तेज नशेवाली वस्तुओं, जैसे 'एल. एस. डी.' 'हीरोइन' और कोकीन का आयात किया जाता था, फलतः वे काफी महंगी होती थीं। फिर भी जिनमें सामर्थ्य था, वे उन्हें खरीदते थे।

'हाशीश' : अंगरेजी में इसे 'केन्नाबिस संतिना' कहते हैं और उससे भांग, गांजा व चरस प्राप्त किया जाता है। उत्तर भारत के पहाड़ों में यह पौधा बहुतायत से होता है। पकने पर ये पौधे गहरे हरे रंग के हो जाते हैं और शिखर की पत्तियों को हथेली पर रगड़ने मात्र से 'हाशीश' प्राप्त किया जा सकता है।

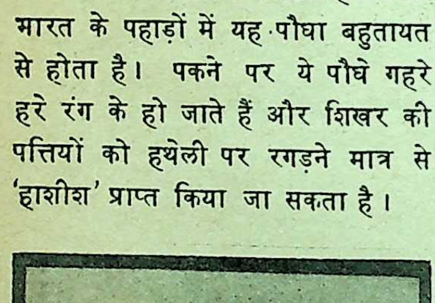
रवीन्द्रसिंह बचपन में

व्यावसायिक दृष्टि से 'केन्नाबिस' को गरमी की फसल के रूप में उगाया जाता है। वर्षा के तुरंत पहले बीज बो दिये जाते हैं और पतझर में उनकी फसल ली जाती है। उनकी पत्तियों, तनों और फूलों को छांव में सुखाया जाता है। ऊंची किस्म के 'हाशीश के लिए पौधों की ऊपरी पत्तियां अलग कर ली जाती हैं।

हाशीश का प्रभाव

शुरू-शुरू में लड़के,लड़कियां उत्सुकतावश ही 'हाशीश' को 'पीते' हैं। शुरू-शुरू में खांसी आती है, पर शीघ्र ही वह उसके अभ्यस्त हो जाते हैं। 'हाशीश' के प्रभाव से व्यक्ति आलसी बन जाता है। 'हाशीश' उसकी सारी ताकत निचोड़ लेता है। उसे नहाना, दांत साफ करना और बालों में कंघी करना भी भारी पड़ता है। अपनी निजी चीजों और रुचियों के मामले में वह लापरवाह हो जाता है। पढ़ाई में भी वह ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता। 'हाशीश' व्यक्ति में शैथिल्य और बेहद उदासी भी पैदा करता है। यदि वह उदासी की मन-स्थिति में है तो हाशीश पीने से उसकी उदासी और बढ़ेगी। 'हाशीश' पीनेवाले आम तौर पर अपने 'खोल' में ही रहते हैं। वे अपना एक गिरोह बना लेते हैं और दूसरों को संदेह की निगाह से देखते हैं। समाज और अभिभावकों के प्रति उनका रुख शत्रुतापूर्ण हो जाता है।

अफीम पोस्त के पौधों से मिलती है। उससे कई दवाएं बनती हैं। भारत में

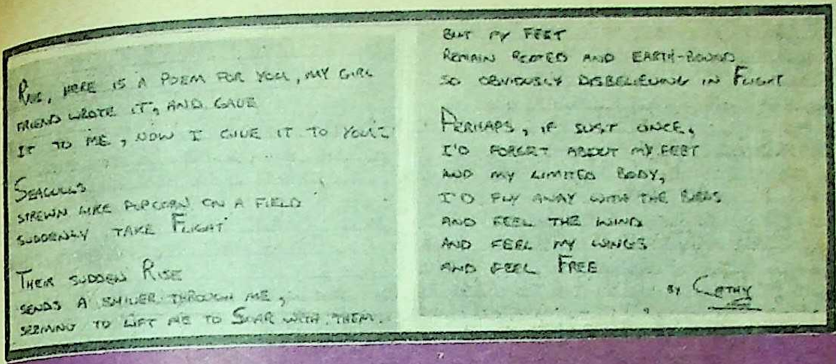

RVC, HERE IS A POEM FOR YOU, MY GIRL
FRIEND WROTE IT, AND GAVE
IT TO ME, NOW I GIVE IT TO YOU!

SEAGULLS
STREWN LIKE POPCORN ON A FIELD
SUDDENLY TAKE FLIGHT

THEIR SUDDEN RISE
SENDS A SHIVER THROUGH ME,
SEEMING TO LIFT ME TO SOAR WITH THEM.

BUT MY FEET
REMAIN ROOTED AND EARTH-BOUND
SO OBVIOUSLY DISBELIEVING IN FLIGHT

PERHAPS, IF JUST ONCE,
I'D FORGET ABOUT MY FEET
AND MY LIMITED BODY,
I'D FLY AWAY WITH THE BIRDS
AND FEEL THE WIND
AND FEEL MY WINGS
AND FEEL FREE

BY CATHY

रवीन्द्रसिंह की कविता का एक अंश

कठोर सरकारी नियंत्रण में उसे उगाया जाता है, फिर भी चोरी-छिपे उसे पैदा किया जाता है।

कहते हैं, एक अफीमची आम मजदूर से ज्यादा काम करता है और चूंकि थकान अनुभव नहीं करता, अतः देर तक काम में जुटा रहता है। इस तरह का शोषण रुकना चाहिए।

'हीरोइन' और मारफीन

ये दोनों नशीली वस्तुएं भी अफीम से तैयार की जाती हैं। हीरोइन भारत में नहीं बनती और विदेशों से आयात की की जाती है। 'मारफीन' एक दर्दनाक दवा है और भारत में ही तैयार की जाती है।

शुरू-शुरू में नशेबाज इस 'दवा' का इंजेक्शन लेता है और क्षणमात्र में उसका वास्तविकता से संबंध टूट जाता है। वह विक्षिप्त हो जाता है। उसे तरह-तरह के ऐंद्रजालिक दृश्य दिखायी पड़ते हैं। उसमें आत्महत्या की इच्छा भी बलवती होने लगती है।

ये दोनों पदार्थ न मिलने पर वह बेहद बीमार पड़ जाता है। उसे भयानक सिरदर्द भी होता है। मुझे लगता था, जैसे मेरे सिर पर हथोड़े से चोट हो रही है। पेट-दर्द भी आम बात है। नशेबाज का गला सूखने लगता है और वह कितना ही पानी क्यों न पिये, उसे कोई आराम नहीं पहुंचता। कभी-कभी, बारी-बारी से उसे कंपकंपी छूटती है तो कभी पसीना आने लगता है। नशेबाज नपुंसक भी हो सकता है। 'हीरोइन' और 'मारफीन' लेनेवाले नशेबाज 'जंकी' कहलाते हैं। 'जंकी' अपने इंजेक्शन की 'सीरींज' को कीटाणु-रहित करने के मामले में भी लापरवाह रहता है। वह उसे साधारण पानी से धो लेता है। वह इस बात की भी जांच नहीं करता कि 'सीरींज' में हवा के बुलबुले तो नहीं हैं। रक्त में विष फैल जाने से या 'सीरींज' में हवा के बुलबुले होने से 'जंकियों' की मौत भी आम घटना है।

एल. एस. डी.

'डी—लीसेरजिक एसिड डाईडीथेलानाइड टार्टेट' का संक्षिप्त नाम है—'एल. एस. डी.'

यह अमरीका और इंगलैंड में कृत्रिम तरीके से बनायी जाती है। यह तरल और ठोस दो रूपों में प्राप्त होती है।

तरल एल. एस. डी. रंग और गंध-हीन होती है। यह बेहद घनीभूत होती है, और एक बार के 'सफर' के लिए एक बूंद पर्याप्त है। कुछ व्यक्ति इस तरल पदार्थ का इंजेक्शन भी लेते हैं। ठोस एल. एस. डी. की गोलियां मिलती हैं।

एल. एस. डी. को 'साइक्डेलिक' भी कहा जाता है। कारण, उसे लेने पर एक अजीब-सी कृत्रिम सनसनी होती है। इसे लेते ही वातावरण बिलकुल बदल जाता है। आम तौर पर एल. एस. डी. लेकर, जब लड़के-लड़कियां शोर-शराबे भरा संगीत सुनते हैं, तब उन्हें संगीत से रंग-बिरंगी तरंगें निकलती दिखायी देती हैं। यदि वे लोग खुले में इसका सेवन करते हैं तो उन्हें वृक्ष, पत्थर, प्रकृति अर्थात आसपास की सारी चीजें बदली-बदली—नृत्य करती नजर आती हैं। नशा न करनेवाला व्यक्ति संगीत सिर्फ सुन सकता है, जबकि एल. एस. डी. लेने-वाला संगीत को 'देख' सकता है, शरीर में उसका स्पर्श अनुभव कर सकता है। इसी तरह वह रंगों को सुन भी सकता है।

एल. एस. डी. में एक विचित्र बात यह भी है कि उसे या तो भूख न रहते हुए भी भूख लग सकती है, या फिर भोजन देखते ही जी बिदक जाता है। उससे कुछ अतिरिक्त ताकत भी मिलती है। मुझे एल. एस. डी. के कुछ विचित्र अनुभव हुए। एक बार मुझे लगा कि सारा सागर सूख गया है। एक बार और ऐसा लगा कि रात में जलती मोमबत्तियां फूल बन गयीं।

—प्रस्तोता : डी. प्रसाद

मार्क ट्वेन रेलवे प्लेटफार्म पर टहल रहे थ। गाड़ी आने में अभी देर थी। तभी परेशान-से एक मित्र आये और बोले, "ट्वेन, यार मेरी जेब कट गयी है, मुझे जाना भी जरूरी है, तुम मेरा टिकट खरीद लो।" ट्वेन ने गंभीर मुद्रा बनायी, बोले, "मुझे अफसोस है मित्र, मेरे पास भी एक ही टिकट के पैसे हैं। यहां इस अनजान स्टेशन पर कोई परिचित भी नहीं दिखायी दे रहा है, जिससे उधार ले सकूं।"

दोनों मित्र निरुपाय और परेशान थे, तभी ट्वेन को विचार कौंधा, "ऐसा है तुम बगैर टिकट चलो, घर पहुंचकर रेलवे विभाग को टिकट के पैसे मनी आर्डर से भेज देना।"

"लेकिन रास्ते में पकड़े गये, तो?" इस पर ट्वेन ने सुझाव दिया कि तुम बर्थ के नीचे लेट जाना मैं ऊपर से ओवरकोट फैला दूंगा। मित्र ने सुझाव मान लिया।

ट्रेन आने से पहले ट्वेन टिकट लेने गये। ट्रेन आयी। ट्वेन बर्थ पर और उनके मित्र बर्थ के नीचे। टिकट-चेकर आया, तब ट्वेन ने दो टिकट दिखाये। चेकर के यह पूछने पर कि दूसरा यात्री कहां है, ट्वेन ने बर्थ के नीचे इशारा करते हुए कहा, "नीचे है। जरा सनकी आदमी है, ट्रेन में हमेशा इसी प्रकार यात्रा करता है।"

—सुधीर निगम

तमिल कहानी

भ्रष्टा

• परशी रामचन्द्रन

पोस्टर को देखते ही, उसकी आंखों में पानी भर आया। पोस्टर उसके मकान के ठीक सामने लगा हुआ था।

शंकर मन ही मन रो रहा था, "भ्रष्टा! इस तरह मुझे क्यों जलाती है ?"

पोस्टर में एक युवती नायक की गोद में लेटी हुई थी, हंसती हुई। चित्र के बीच एक गोल घेरा था और उसके भीतर थी 'ए' की मुद्रा।

चोटी संवारकर, शरम से आंखों को धरती में गड़ाये वह श्राद्ध की सामग्री लेकर आगे चल पड़ा।

उसे अच्छी तरह मालूम था, वकील साहब की पत्नी दरवाजे पर खड़ी-खड़ी गालियां रट रही होगी। 'आठ तो बज गये, अब तो भागने से ही काम चलेगा', उसने सोचा।

एक बार फिर उसकी दृष्टि उस असह्य पोस्टर पर गयी। यह कैसा जीवन है ?

वकील की पत्नी के बारे में उसका अनुमान ठीक निकला था। वह कह रही थी, "शंकर, तुमने क्या कर दिया ? तुम्हें पहले ही बता चुकी थी कि वकील साहब को आज जल्दी जाना है। फिर इतनी देर क्यों कर दी ? तुम नहीं जानते, उनके कितने 'इंपार्टेंट' काम पड़े हुए हैं ? खैर कम-से-कम अब तो जल्दी बरतो।"

वह क्या कहता, 'हां-हां' को छोड़कर। यों वह कहना तो चाहता था, "जैसा हुकुम होगा, हम तो नाचेंगे, पर पितृलोग

क्या श्राद्ध में हमारे टाइम पर आयेंगे ! क्या वे भी हमारे कंट्रोल में हैं ?" पर प्रत्यक्षतः उसने कुछ नहीं कहा। वह तो पेट भरने के लिए बैठा है न !

वकील साहिबा हाथ में गरम काफी लिए तत्पर खड़ी थीं, "पीलो जल्दी करो।" पता नहीं कैसे वह गरम काफी उसके गले में उतरी।

वकील साहब स्नान-ध्यान के बाद पलंग पर बैठे उस दिन का अखबार पलट रहे थे। वकील साहिबा का फिर से मंत्रपाठ शुरू हो गया, "जल्दी करो, बहुत काम पड़ा है . . .।" आदि-आदि।

वकील साहब ने भी स्वर मिलाया, "सुनो शंकर, जितनी जल्दी हो सके, कर दो। देखो,अभी मैं मैच के लिए लेट हो गया हूं। सवा दस तक वहां पहुंचना था।"

"समझ गया, वकील साहब, पर इसमें एक संकट है। पितृगण मंत्रों से ही तृप्त होते हैं और मंत्रोच्चार से ही आते हैं।"

"ओह ! भगवान भला करे, वे न आयें। वे आ बैठे, तो मैच का क्या होगा?" वकील साहब ने कहा और चुपचाप श्राद्ध शुरू कर दिया।

'पितृलोग खायें न खायें, अपना पेट तो भरना ही है।' इसलिए वह काम में लग गया।

"पूर्व-दिशा देखकर बैठें। बोलिए, 'शुक्लां वर्द्धनं, विष्णु', आचमन करें, पिता का नाम बतायें . . .।"

श्राद्ध दौड़ रहा था। बीच में वकील साहब की धर्मपत्नीजी आकर खड़ी हो गयीं, "सुनो शंकर, जानते हो विशाली की एक नयी फिल्म रिलीज हुई है।"

शंकर का कलेजा फटने लगा। अनसुनी कर वह आगे चल पड़ा। "पितामह का नाम . . ?"

"नीलकंठ . . . ।"

"प्रपितामह का ?"

बीच में आवाज, "विशाली की नयी फिल्म . . . !"

फिर वही ! क्रोध से उस औरत की ओर देखा और बोला, "माफ करना, मैं कोई फिल्म नहीं देखता।"

"यह क्या बात है, तुम्हारी पत्नी अभिनय करती है फिर उसकी फिल्म तुम क्यों नहीं देखते ?"

"मामीजी ! इतना जान लीजिए कि अब किसी के घर में श्राद्ध करने जाता हूं, तो उस पिशाचिनी का भी तर्पण करता हूं ।"

"यह बहुत बड़ा अन्याय कर रहे हो शंकर ! पत्नी के जीते जी तर्पण ?"

"मुझे संकट में मत डालिए, मामीजी! जब से मेरा घर छोड़कर वह भाग गयी, तब से मेरी पत्नी मर चुकी है । न तो मैं उसका पति हूं और न वह मेरी पत्नी ।"

किसी तरह श्राद्ध खत्म हुआ । पितृगण को विदा करने पर बीस रुपये का करारा नोट शंकर के हाथ लगा । बस, खाना ही बाकी रहा ।

वकील साहिबा मौका चूक नहीं सकतीं । फिर शुरू किया, "शंकर, तुम जो कहते हो, वह सही नहीं लगता । पता है, वह क्या कहती है ? एक फिल्मी मैगजीन के रिपोर्टर ने पूछा, तो उसने बताया, 'मेरे पतिदेव गांव में खेतीबाड़ी कर रहे हैं। फिल्मी जीवन के बाद उनके साथ ही गांव में आराम से रहने की मेरी इच्छा है।'" यह कहकर मैगजीन उसके सामने फेंक दी । मैगजीन में आदि से अंत तक आकर्षक चीजों की भरमार थी । विशाली के अनेक रंगीन चित्र उसमें थे ।

"शायद उसने सही बताया हो । गांव में रहनेवाला ही उसका असली पति होगा, जिसके बारे में उसने रिपोर्टर को बताया है।"

"यह गलत है । शंकर भी क्या दो हैं ? उसने पति का नाम शंकर बताया है ।"

"सच . . . !" इतना काफी था । वह झट से निकल पड़ा । उसका हृदय पहले से ही जल रहा था । मामीजी ने उस पर थोड़ा पेट्रोल और डाल दिया ।

शंकर अब जीवित शवमात्र था । रास्ते में फिर उस पापिनी का पोस्टर दिखायी दिया । पर यह क्या ? किसी ने उस पर गोबर मारा हुआ था । वह संतुष्ट हुआ, क्योंकि जो काम वह खुल्लम-खुल्ला नहीं कर पाता, किसी ने कर दिया था ।

विशाली के बारे में सोचते-सोचते उसे अपनी मां की याद हो आयी, "मां, यह सब तुम्हारी वजह से हुआ । जबरदस्ती मुझे इस कीचड़ में क्यों फंसा दिया, मां ? ... ठीक ही हुआ तुम मर गयी हो, जीवित होतीं तो अब तक आत्महत्या कर लेतीं ।"

वह घर के सामने पहुंचा, तो सामनेवाला पोस्टर फिर हंसी उड़ाता लगा। आंखों में आंसू तैर आये।

एक जमाना था, वह अपनी पत्नी को गर्व से एक सुंदर देवी मानता था। वह स्वयं काला जरूर था, पर और क्या कमी थी उसमें? वास्तव में गांव के युवक उससे जलते थे। उसने रानी का स्थान दिया उसे। फिर क्या हुआ जो भाग गयी।

वह बार-बार कहता, "विशाली! किसी पुरुष या स्त्री से मत बोला करो। यहां के लोग सबके सब वक्री हैं। अफवाह फैलाना उनका जीवन-लक्ष्य है, उनसे बचकर रहो।" चेतावनी कहो या उपदेश, वह कह तो देता था। विशाली हंस देती, कहती कुछ नहीं।

पर एक दिन जब वह बोली तो शंकर चकित रह गया! वह बोली, "सुनो जी! पड़ोसी लोग सब सिनेमा जा रहे हैं। चलो, हम भी चलें।"

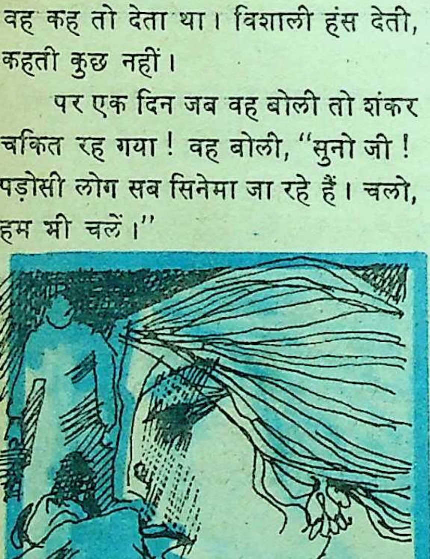

"विशाली सुनो! यह सिनेमा हम-तुम-जैसे लोगों के लिए ठीक नहीं। खराब चीज है।"

"मीना मामी, राधा भाभी, शेषी दीदी, ये सब रोज सिनेमा देखती हैं। वे सब क्या बिगड़ गयीं? फिर मेरे जाने से ही क्या हो जाएगा।"

शंकर के पास कोई जवाब नहीं था।

रात को जब घर लौटा, तब देखा कि कुछ परिवर्तन जरूर हो गया है। वह नयी-नयी चेष्टाएं कर रही थी, जिनका अर्थ उसे थोड़ी ही देर में मालूम हो गया। वह हंस रही थी। कारण पूछा तो पास आकर कहने लगी, "बताऊं? शेषी दीदी कहती हैं कि मैं भी फिल्म की हीरोइन की तरह हूं।"

जो नहीं होना चाहिए था, वह हो गया था। दूसरे दिन घर में विशाली एक युवक के साथ हंस-हंसकर बातें कर रही थी। उसने बताया कि वह शेषी दीदी का पोता है और सिनेमा में काम करता है।

शंकर के सिर पर मानो बिजली ही आ गिरी थी। वह धीमे धीरे बुदबुदाया —"भार्या रूपवती शत्रु।"

विशाली की इच्छा, आशा, आकांक्षा सब उसे मालूम हो गयी। वह चाहती थी कि शंकर भी माडर्न युवक बन जाए। यह कहां संभव था! शंकर ने युवक को भगा दिया। पर कहानी का अंत यहीं तो नहीं था। एक दिन जब घर लौटा, तो मालूम हुआ, वह उस युवक के साथ भाग गयी

है। थोड़े दिनों में वह बहुत बड़ी 'स्टार' बन गयी। आज पांच साल बीत चुके हैं।

शंकर के सिर में दर्द उठा, फिर छाती में। उसने पुकारा, "ओ मां" और जमीन पर गिर पड़ा। अड़ोस-पड़ोस के लोग इकट्ठा हो गये।

"क्या हुआ शंकर भैया ?" एक ने पूछा।

किसी ने कहा, "उस पापिनी की याद आयी होगी।"

लोग कुछ न कुछ बोलते-फिरते रहे। इसी बीच डॉक्टर आया और देखकर बोला, "यह 'स्ट्रोक' है—शायद पहला। बच जाने की थोड़ी-सी उम्मीद है। तुरंत किसी अस्पताल में भरती कराइए। दूसरे स्ट्रोक से बच नहीं सकेगा।" इंजेक्शन देकर डॉक्टर चला गया। जाते-जाते कह गया कि इसके रिश्तेदारों को खबर कर दें।

अब बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे ?

किसी ने वकील साहब का नाम लिया, उन्हें खबर भेजी गयी। वकील साहब आये। 'हार्ट अटैक' की बात सुनी, तो कार लेकर कहीं चले गये। कुछ देर बाद लौटे, तो उनके पीछे-पीछे कोई स्त्री भी आ रही थी।

भीड़ की परवाह किये बिना विशाली शंकर की ओर दौड़ पड़ी। शंकर की आंखें खुलीं। वकील साहब बोल रहे थे, "देखो शंकर, कौन आयी है ? क्या तकलीफ है बताओ, अब चिंता मत करो। एक अच्छे नर्सिंगहोम में तुम्हारा इलाज होगा।"

विशाली रुक-रुककर आगे बढ़ी, आंखें पोंछती हुई। उसके पास बैठकर बोली, "सुनो जी ! पता नहीं, मेरे बारे में आप क्या सोचते हैं, पर आपका दिया यह मंगलसूत्र मेरी पवित्रता का साक्षी है। मैं अभिनय जरूर करती हूं, फिर भी मैं आपकी हूं और आपकी ही रहूंगी। मुझ पर शंका न करें। मेरे साथ आइए, यही मेरा निवेदन है। हम एक नये जीवन की सृष्टि करेंगे।" वकील साहब और उनकी पत्नी भी यही कह रहे थे।

शंकर शांत और दृढ़ स्वर में बोला, "जैसा शास्त्रों में लिखा है—मेरे संकट के समय आ गयी हो, तो ठीक ही कहती हो। फिर भी जिस दुःख में भाग लेने आयी हो, यदि वह स्थायी बन गया तो क्या होगा ?"

एक तेलुगु लघु कथा

मानव

—रचि कोडो विश्वनाथ शास्त्री

गाय सुबह उठकर सोचती है कि क्या खाया जाए ? शेर उठकर सोचता है कि किसे खाया जाए ?

ये दोनों तो पशु हैं, इसलिए ऐसा सोचते हैं लेकिन मानव क्योंकि मानव है, इसलिए वह सोचता है कि क्या खाया जाए और किसे खाया जाए ?

—अनुवाद : एन. आर. श्याम

“आप क्या कह रहे हैं, मेरी समझ में नहीं आ रहा?”

“साफ-साफ बताता हूं, मैंने जब सुख चाहा तो तुम मुझे छोड़कर भाग गयीं। अब यह मेरे कष्ट का समय है, अस्त होने का समय है . . .।”

विशाली उसके मुंह पर हाथ रखती हुई बोली, “ऐसा न कहें। मैं आपको नया जीवन दूंगी। बड़े से बड़े डॉक्टर से इलाज कराकर आपकी बीमारी दूर करा दूंगी। मेरे साथ आ जाइए। आपके पांव पकड़ती हूं।”

“पर क्या तुम शास्त्रों के अनुसार जीवन बिता सकोगी?”

वह समझ गयी। बोली, “जैसे हिंदू शास्त्रों में बताया गया है, वैसे ही रहूंगी।”

वकील साहब और बाकी सब लोग शंकर को उठाकर मोटर की ओर ले जा रहे थे। शंकर का मन शांत और संतुष्ट था। शायद पत्नी की बातों से संतुष्टि मिल गयी थी। अचानक वकील साहब की पत्नी चिल्लायी, “अरे देखो, शंकर ऐसे क्यों देख रहा है?”

विशाली ने देखा, शंकर की आंखें शांत हो गयी थीं। वह अनंत शांति में विलीन हो चुका था।

बाहर उसका पोस्टर चिपका था। पोस्टर के ऊपर किसी ने गोबर मार रखा था। उसके हाथ अपने आप चेहरे का पसीना पोंछने को उठ गये।

—अनु. : एस. के. रमन

बवासीर
शुरू होते ही
इलाज़ कीजिये
विश्वसनीय
हडेन्सा
मरहम
लगाइये
-ऑपरेशन की
नौबत न आने
दीजिये !

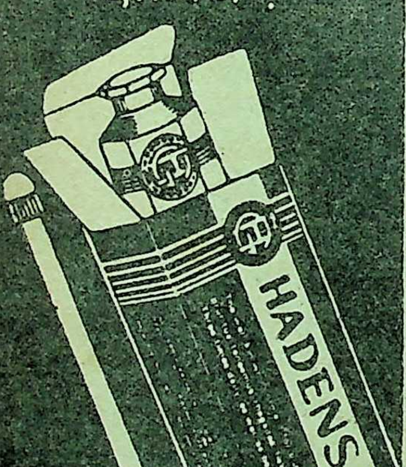

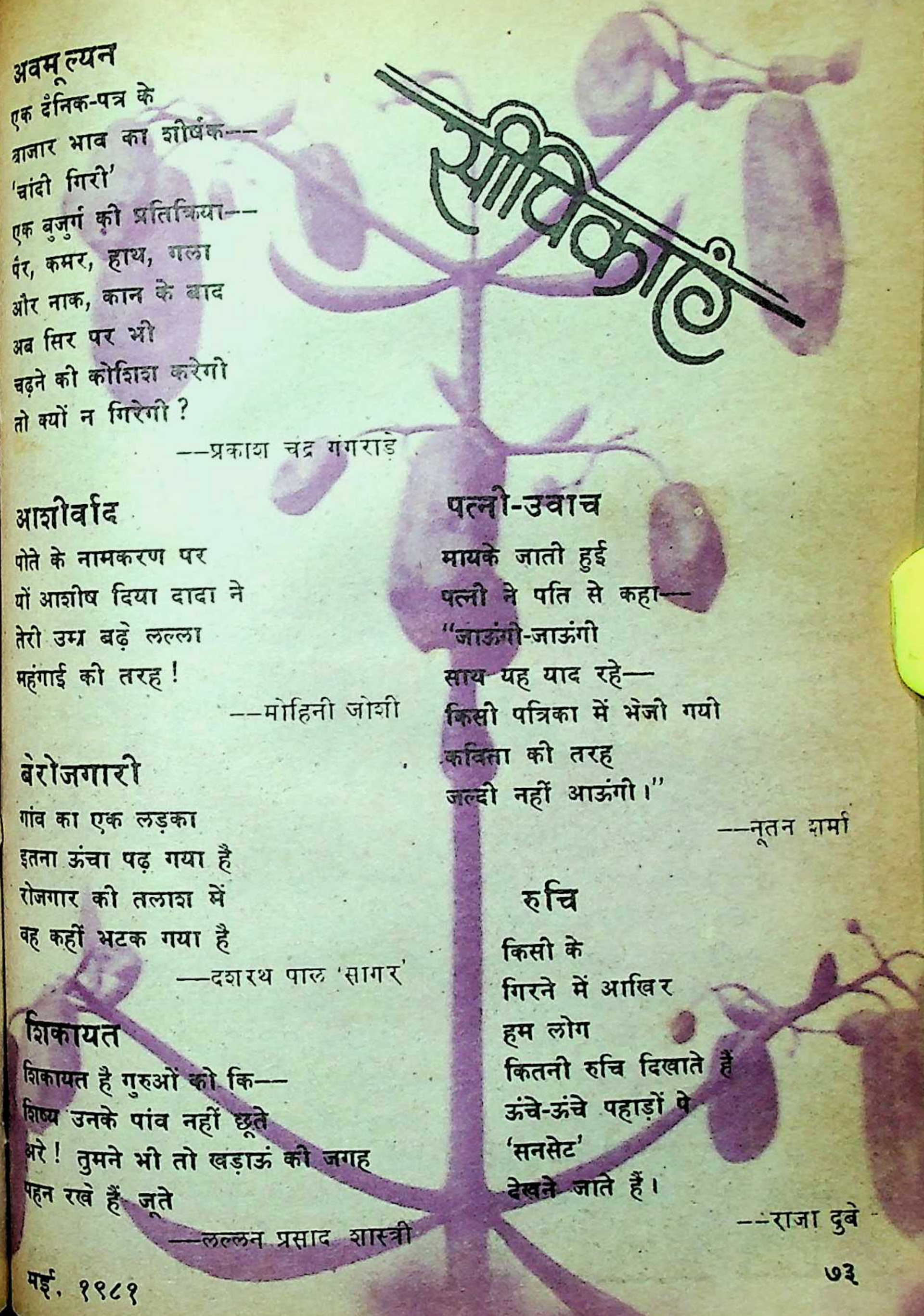

सीपिकाएं

अवमूल्यन

एक दैनिक-पत्र के
बाजार भाव का शीर्षक---
'चांदी गिरी'
एक बुजुर्ग की प्रतिक्रिया---
पैर, कमर, हाथ, गला
और नाक, कान के बाद
अब सिर पर भी
चढ़ने की कोशिश करेगी
तो क्यों न गिरेगी ?

--प्रकाश चंद्र गंगराड़े

आशीर्वाद

पोते के नामकरण पर
यों आशीष दिया दादा ने
तेरी उम्र बढ़े लल्ला
महंगाई की तरह !

--मोहिनी जोशी

बेरोजगारी

गांव का एक लड़का
इतना ऊंचा पढ़ गया है
रोजगार की तलाश में
वह कहीं भटक गया है

—दशरथ पाल 'सागर'

शिकायत

शिकायत है गुरुओं को कि---
शिष्य उनके पांव नहीं छूते
अरे ! तुमने भी तो खड़ाऊं की जगह
पहन रखे हैं जूते

—ललन प्रसाद शास्त्री

पत्नी-उवाच

मायके जाती हुई
पत्नी ने पति से कहा—
"जाऊंगी-जाऊंगी
साथ यह याद रहे—
किसी पत्रिका में भेजी गयी
कविता की तरह
जल्दी नहीं आऊंगी।"

—नूतन शर्मा

रुचि

किसी के
गिरने में आखिर
हम लोग
कितनी रुचि दिखाते हैं
ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों पे
'सनसेट'
देखने जाते हैं।

--राजा दुबे

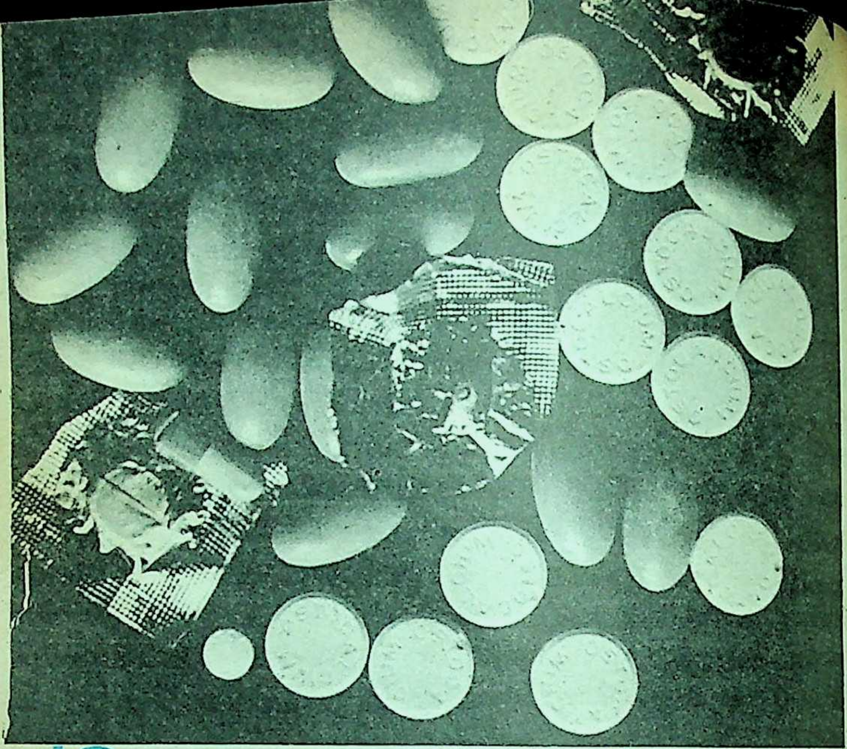

पौष्टिक आहार और रोगों का इलाज

• माइकेल लेसर

आहार की पौष्टिकता पर ही अच्छा स्वास्थ्य निर्भर है। स्वस्थ व्यक्ति में प्रतिरोधक शक्ति अधिक होती है। पौष्टिक आहार के अभाव में बहुत-सी बीमारियां, यहां तक कि कैंसर और हृदय-रोग भी हो जाते हैं। १४वीं शताब्दी में यूरोप में 'ब्लैक डेथ' रोग फैला था, जिसने लाखों लोगों की जान ली थी। इस महामारी का कारण जितना जीवाणु-संक्रमण था, उतना ही ताजे भोजन और पौष्टिक तत्वों का अभाव भी था। ग्रामीण लोग, जिन्हें ताजा भोजन मिलता था, उनमें प्रतिरोधक शक्ति अधिक थी और वे इस महामारी से प्रभावित नहीं हुए। क्षय रोग के दमन के लिए विशेष उपचार की अपेक्षा अच्छे पोषण की आवश्यकता होती है।

आज पौष्टिक आहार को सामान्य स्वास्थ्य-वर्धक के साथ-साथ रोगों के उपचार के रूप में इस्तेमाल करने की दिशा में कार्य हो रहा है। पौष्टिक आहार को उपचार-विधि के रूप में ग्रहण करने के कई लाभ हैं। एक, पदार्थ के रूप में वे

पौष्टिक तत्व शरीर में विद्यमान होते हैं। त: अधिक सहनशील और सुरक्षित होते हैं। सरे, पौष्टिक तत्व प्रकृति से बिना किसी र्वं के सहज उपलब्ध होते हैं। तीसरे, पौष्टिक तत्व बीमारी के मूल कारण का इलाज करते हैं, न कि दवा की तरह क्षणों का।

टामिनों की खोज

टामिनों की खोज से पोषण-विज्ञान में बड़ी प्रगति हुई। सन १७५३ में, जेम्स ंड ने खोज की कि खट्टे फल विटामिन-ी' की कमी पूरी करते हैं। इसके म होने से कमजोरी आती है, खून की मी होती है और अंततः वह मृत्यु का रण बनती है। १७९५ में ब्रिटिश एड-मिरलटी ने लिंड के इस सरल रोकथाम चार को सरकारी तौर पर अपना लिया। ह था—प्रति व्यक्ति एक औंस नीबू ा रस। उस समय के ब्रिटिश जलसेना धिकारी, जिन्हें 'लारमीज' की उपाधि गयी थी, ने घोषित किया कि इससे नके लड़ने की शक्ति दोगुनी हो गयी।

सन १९८० में स्विट्जरलैंड के मुलर गेहूं पीसने की स्टील-रोलर मशीन नायी और शोधित आटे की मशीन का यूरोप तथा अन्य औद्योगिक देशों में प्रसार किया। परिष्कृत शोधित खाद्यान्नों: सफेद आटा, सफेद चीनी, सफेद चावल के प्रचलन से विटामिन की कमी की बीमारियां जोरों से फैलने लगीं। उनमें से एक 'बेरी-बेरी' रोग भी था, जिसने २५ से ४० प्रतिशत जापानी सैनिकों को प्रभावित किया। बेरी-बेरी, रोग विटामिन बी·१ (थायामाइन) की कमी के कारण होता है। इस रोग में शरीर का सुन्न होना, हाथ-पांव का लकवा, गले व सांस की तकलीफें और अंततः मृत्यु हो जाती है। सन १८८२ में जापानी मेडिकल सर्विस के महानिदेशक कनेहीरो ताकागी ने राशन में पॉलिश किये हुए चावल की मात्रा कमकर साबुत जौ, सब्जी, मांस और दूध की मात्रा बढ़ाकर इस रोग को बढ़ने से रोका।

जीवन में खनिजों का भी बहुत महत्त्व है। सन १८२० में जिनेवा के डॉक्टर कॉइनडेट ने आयोडीन द्वारा कंठमाला रोग का बहुत सफल उपचार किया। शरीर के सुचारु रूप से कार्य करने में आयोडीन और लौह अत्यंत आवश्यक हैं। तभी ज्ञात हुआ था कि दस-बारह अन्य महत्त्वपूर्ण

ाइकेल लेसर एम. डी. विश्व-विख्यात मनोचिकित्सक, ऑरथो-मॉलिक्यूलर मेडिकल सोसाइटी' के संस्थापक। ह संस्था मानव स्वास्थ्य और विटामिन की उपयोगिता र शोधकर अनेक नये तथ्य सामने ला रही है।

डॉ. लेसर ने इस विषय पर एक बहु-चर्चित पुस्तक ी लिखी है।

जब आपको ऐसे बैंक की आवश्यकता हो
जो आपके हर कार्य में...
सहायता दे सके...
सलाह दे सके...
रास्ता दिखा सके...

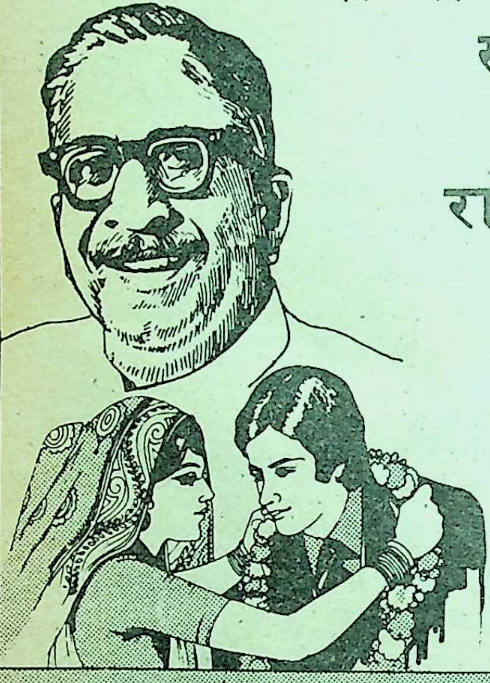

न्यू बैंक आपके लिए बैंक सम्बन्धी सम्पूर्ण सेवा प्रस्तुत करता है। यदि आपको दिलचस्पी डिपाजिट में है तो हमारी अनेक बचत योजनाएँ आपकी आवश्यकताएँ पूरी करती हैं। यदि आपको ऋण चाहिए तो हमारे पास उद्योग धन्धों, कृषि, आत्मनिर्भर और कमज़ोर वर्गों के व्यक्तियों की सहायता हेतु अनेक योजनाएँ हैं। यदि आप आयात या निर्यात में लगे हैं तो हमारा विदेशी मुद्रा विभाग आपकी सभी आवश्यकताओं में सहायक हो सकता है।

न्यू बैंक आफ़ इंडिया
(भारत सरकार का उपक्रम)
प्रधान कार्यालय. १, टालसटाय मार्ग, नई दिल्ली ११०००१

विटामिन	मात्रा	समय
सी (एस्कोरबिक एसिड)	१ ग्राम (१,००० मि. ग्रा.)	प्रतिदिन (५० मि. ग्रा. बायोफ्लेवो नाइड के साथ)
बी-१ (थाइमिन)	१० मि. ग्रा.	"
बी-२ (रिबोफ्लेविन)	१० मि. ग्रा.	"
बी-६ (पैरीडॉक्साइन)	१० मि. ग्रा.	"
नाइसिन या निकोटिनि एसिड		
नैयासिनामाइड	१०० मि. ग्रा.	"
पैंटोथैनिक एसिड	१०० मि. ग्रा.	"
फोलिक एसिड	०.५ मि. ग्रा.	"
बी-१२ (कोबालामिन)	१०० माइक्रो ग्रा.	"
इनोसिटोल	५०० मि. ग्रा.	"
कोलाइन	५०० मि. ग्रा.	"
ई (मिश्रित टोकोफेरोल्स)	१०० (अंतर्राष्ट्रीय इकाई)	

प्रत्येक २० वर्षवाले के लिए

स्वस्थ युवा के लिए विटामिन सूत्र

खनिज भी हैं। सन १९११ में पोलैंड के वैज्ञानिक कास्मीर फंक ने सर्वप्रथम प्रस्तावित किया कि भोजन में बेरी-बेरी, पेलेगरा और रिकेट-विरोधी तत्व होते हैं। इन्हें उसने 'विटामिन' नाम दिया। शीघ्र ही इन विटामिनों को अलग करके उनकी रासायनिक रूप में पहचान की गयी।

कुछ चिकित्सकों ने इन अलग किये गये विटामिनों और खनिजों का उन रोगों पर प्रभाव जानने का निश्चय किया, जिन रोगों का उपचार नहीं था। सन १९४० में कनेक्टिकट के चिकित्सक विलियम काउफमैन ने खोज की कि नैयासिनामाइड (विटामिन बी-३) से 'सायटिका' रोग में प्रभावकारी राहत मिलती है। सन १९४८ में वर्जीनिया के डॉ. फ्रेड्रिक क्लेनर ने शोध के पहले २८ लेख प्रकाशित कराये, जिनमें लिखा था—'. . . विटामिन-'सी' की उचित मात्रा संक्रामक जीवाणुओं को नष्ट करती है।' डॉ. क्लेनर ने गंभीरता से फैल रहे नजले (जुकाम) से लेकर यकृत-शोथ तक के संक्रामक-रोगों में विटामिन-'सी' के तीस हजार से एक लाख मिलीग्राम तक 'इंट्रावीनस' और 'इंट्रामस्क्यूलर' इंजेक्शन देकर रोग का उन्मूलन किया।

पोषण-औषधि कैसे कार्य करती है

रोगियों के पोषण-स्तर को जांचने के लिए मैंने रोगियों को सप्ताहभर दिये गये

ज़ीनत के हुस्न को चाहिए लक्स की ख़ूबसूरत हिफ़ाज़त.

ज़ीनत अमान अपनी अदाकारी के साथ-साथ अपनी ख़ूबसूरती का भी उतना ही ख़याल रखती है. अपने रंगरूप को ख़ूबसूरत और दिलकश रखने के लिए वह केवल लक्स पर भरोसा करती है.

ख़ुद ज़ीनत का कहना है: **"लक्स मेरे रंगरूप को सही माने में मुलायम और ख़ूबसूरत रखता है."**

Zeenat Aman

शुद्ध, सौम्य लक्स—
फ़िल्मी सितारों का सौंदर्य साबुन.

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

भोजन का चार्ट बनाने को कहा, ताकि जाना जा सके कि उन्होंने कितना और कितनी तरह का भोजन लिया। इस चार्ट से भोजन से होनेवाली एलर्जी का पता लगाया जा सकता है। ऐसे भोजन कम ही हैं, जिनसे एलर्जी हो, लेकिन दूध, गेहूं और मक्का से ज्यादातर एलर्जी होती है। थकान, निराशा, असाधारण क्रियाएं, भ्रम और सिरदर्द सामान्यतया भोजन से होनेवाली एलर्जी के लक्षण हैं। अंतड़ियों की खराबी, आंखों में खारिश और पानी बहना, नाक टपकना, गले की खराश तथा दमे की तकलीफ सामान्य रोग हैं। ज्वर, मांस-पेशियों में दर्द, त्वचा रोग भी ऐसे हैं जो भोजन की एलर्जी से होते हैं। उससे जीभ पर मैल की परत जमना, फूलना या सूजना और चेहरे का रंग पीला पड़ जाना शुरू हो जाता हैं तथा आंखों के नीचे काले घेरे भी पड़ जाते हैं।

जिस भोजन से एलर्जी हो, यदि रोगी को उसका बार-बार सेवन कराया जाए, तो शरीर उस भोजन-पदार्थ का आदी हो जाएगा और बेचैनी कम हो जायेगी।

कुपोषण के लक्षण

आदमी स्वस्थ है अथवा नहीं, इसका पता त्वचा, बाल, जीभ और अंगुलियों के नाखून से मिलता है। स्वस्थ व्यक्ति के नाखून चिकने, सपाट, गुलाबी और नियमबद्ध बढ़ते रहते हैं। नाखूनों पर लंबी उभरी हुई धारियां भोजन में प्रोटीन की कमी को इंगित करती हैं। विटामिन-ए की कमी से नाखूनों पर खुरदरी लकीरें पड़ती हैं और हलकी परतें उतरने लगती हैं। लोहे (आयरन) की कमी से नाखूनों का भुरभुरापन, खुश्की और चौड़ा होकर अंगुलियों के किनारों की ओर झुकना शुरू होता है। शरीर में खून की कमी, त्वचा और कानों का पीलापन तथा टखनों की सूजन भी इसी के लक्षण हैं।

शरीर में 'जिंक' (जस्ता) की कमी के कारण बालों और नाखूनों का फटना, टूटना, सफेद धब्बे पड़ना और उनका धीमी गति से बढ़ना शुरू हो जाता है। महिलाओं में अनियमित मासिक धर्म और पुरुषों में नपुंसकता, अंगों की अपरिपक्वता, जोड़ों में दर्द आदि 'जिंक' की कमी से होता है। जिन्हें गंध नहीं आती और स्वाद नहीं मिलता, वह भी जिंक की कमी से होता है। 'जिंक' की कमी से होनेवाले रोगों जैसे—बच्चों के कान की सूजन या संक्रमण और साइनस को 'जिंक' के उपभोग से शीघ्र दूर किया जा सकता है। इसी कमी से त्वचा का तैल-युक्त होना, मुहांसे, कूल्हे, जंघा, वक्ष, कंधों आदि की शिथिलता, बाल उड़ना, भूख न लगना, उदासीनता, आलस्य आदि लक्षण उभरते हैं।

विटामिन बी-२ की कमी से त्वचा में चर्बी की मात्रा बहुत कम हो जाती है। होठों का फटना और लंबे अरसे तक विटामिन बी-२ की कमी बने रहने से ऊपर का होठ धीरे-धीरे छोटा होकर पतला हो जाता है, आंखों का लाल होना

और जलन, भौंहों का उड़ना और गंजापन भी इसी कारण होता है।

विटामिन बी-१२ की कमी के लक्षण हैं—मुख में जख्म, मसूड़ों की सूजन, दर्द, खून आना, चिकनी और लाल जीभ। विटामिन-सी की कमी से चेहरे का रंग मटमैला या धुंधला हो जाता है।

विटामिन बी-६ (पैरीडॉक्साइन) की कमी से कंधों पर रूसी होने लगती है, खोपड़ी, भौंहों, नाक और कानों के आस-पास चिकनाहट दिखायी देती है। प्रोट्रीन के अभाव से बालों में खुश्की और रूखापन आ जाता है। इसी से जीभ, मुंह और हाथ सूखने और फटने लगते हैं।

विटामिन-ए की कमी से मुंहासे, रात को दिखायी न देना, पढ़ते समय आंखें दुखना, आंखों में दर्द व खारिश, पलकों की सूजन व सिरदर्द होता है।

रोगोपचार के लिए उचित पोषण

बहुत से रोगों का इलाज, तो अच्छे पोषण से ही हो जाता है, क्योंकि ये रोग कुपोषण से ही जन्म लेते हैं। इनके लक्षण हैं—झुंझलाहट, नींद न आना, निराशा, थकान, सिरदर्द, सीने और पेट में दर्द, धुंधला दिखना, जल्दी-जल्दी गला खराब होना, भूख कम लगना, रात को भय लगना, बार-बार ज्वर आना। उक्त सभी रोगों में, डॉ. लॉसडैल ने थाइमिन (विटामिन-बी) की कमी का परिणाम निकाला है। अधिकांश रोगी अम्ल-क्षार-युक्त भोजन खाते हैं, जिसमें कैलरीज कम होती हैं। उन्हें भोजन के साथ २ से लेकर ८ सप्ताह तक लगातार १५० से लेकर ३०० मिली ग्राम थायाइमन यानी विटामिन बी-१ लेना चाहिए। विटामिन बी-१ को कम करने में तंबाकू, कॉफी, चाय, सिगरेट तथा चॉकलेट विशेष योग देते हैं।

केवल कुपोषण से जन्मे रोगों में ही नहीं, अन्य रोगों में भी विटामिन और पौष्टिक भोजन प्रभावकारी सिद्ध होता है। 'वाइरस' रोगों में विटामिन-सी के 'इंट्रावीनस' इंजेक्शन बहुत लाभकारी होते हैं।

औद्योगिक प्रगति से भूमिगत विषाक्त धातुओं के कारण पूरा वातावरण दूषित हो गया है। इसका प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ता है। प्रदूषण का प्रभाव कम करने के लिए अंडे, पकी हुई फलियां और दूध का सेवन शरीर में 'सल्फाहाइड्रल' (सल्फर हाइड्रोजन कंपाउंड) पहुंचाते हैं। यह प्रक्रिया 'चेलेशन' कहलाती है। 'सल्फर' लाल मिर्च, नागदौर लहसुन, प्याज आदि में प्रचुर मात्रा में मिलती है। सल्फर एक्स-रे और कोषकीय-विकीर्ण की क्षति को रोकता है। ३ ग्राम से अधिक मात्रा में विटामिन-सी लेने से विषाक्त-धातुओं का प्रभाव समाप्त किया जा सकता है।

वैसे विटामिन का एक-सा फारमूला नहीं बताया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग अनुपात में उसकी आवश्यकता होती है। विटामिन कितने लेने चाहिए, यह चार्ट से स्पष्ट है।

ाव से ुक्ति

नारी के प्रति मेरी धारणा

• डॉ. सतीश मलिक

ओम प्रकाश 'दीपु', गया : मैं एक २० वर्षीय बी. ए. का परीक्षार्थी हूं। पिछले वर्ष परीक्षा के दौरान मुझे संदेहवश किसी स्त्री ने परीक्षा-कॅंद्र से बाहर कर दिया। इससे पूर्व मैं नारी को कृपालु व अति संवेदनशील समझा करता था। यह धारणा उक्त घटना द्वारा टूट गयी। मैं अब नारी पर समाज द्वारा ढाये गये जुल्मों को पत्रिकाओं आदि में पढ़कर बेहद खुश होता हूं। नारी को बदनाम कर अपने को खुश पाता हूं। उसे प्रताड़ित कर ठहाके लगाता हूं। मेरे इस व्यवहार को दूसरे लोग नहीं समझ सकते। उनको क्या पता कि मैं किस मानसिक तनाव से गुजर रहा हूं। कृपया तनाव से उबरने का उपाय बतायें।

पहली नारी जिसे मनुष्य जानता है, वह मां होती है। यदि वह कृपालु तथा अति संवेदनशील हो तो ऐसा ही रूप मन में अंकित हो जाता है। वास्तव में वह मातृत्व का रूप है। हो सकता है, इसके बाद जिन नारियों से भी आपका वास्ता पड़ा, वह इस अंकित रूप की पुष्टि करती गयीं।

वास्तव में नारी के मातृत्व रूप के अलावा और भी रूप हैं। साथ ही सब नारियां एक समान नहीं होतीं। शायद आपको अपनी उम्र की नारियों से ज्यादा पाला नहीं पड़ा। या फिर उन्हें आप इसी धारणा को लेकर ही देखते रहे।

कथित नारी का काम उस समय मात्र निरीक्षण का था, और वह अपना कर्तव्य निभाने को विवश थीं। हो सकता है, वह व्यक्तिगत जीवन में करुण तथा संवेदनशील हों। उन्होंने जानकर तो ऐसा नहीं किया।

आपका नारी जाति के प्रति यह रवैया सिर्फ अपनी एक ही धारणा के कारण हुआ। यह भी इतना ही गलत तथा अवास्तविक है, जितना आपका नारियों के प्रति पहला रुख था। आपको नारियों का मनोविज्ञान समझने की कोशिश करनी चाहिए। तभी आप पूर्वाग्रह से बच सकते हैं।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। --संपादक

डरता क्यों है ?

योगेन्द्र शर्मा, कलकत्ता : मेरी बड़ी बहन की एक ही संतान है, ५-६ वर्ष का पुत्र। शारीरिक व मानसिक रूप से वह बहुत ही नाजुक है। दीवाली के पटाखे हों या बारात का बाजा--सभी से बहुत डरता है। मेरे विचार में दिल व दिमाग से वह बहुत कमजोर है। डॉक्टर साहब, उसे क्या टॉनिक खिलायें, जिससे वह स्वस्थ रह सके।

आपकी बहन का एक ही लड़का होने से वह उसका बहुत ख्याल रखती है। इसी वजह से वह नाजुक व शारीरिक रूप से बहुत कमजोर है। शोर न सह सकना, बारात में बाजे या पटाखों की आवाज से न घबराने की स्थिति तब ही आती है, जब बच्चा अन्य बच्चों के साथ घुलता-मिलता रहे। बच्चे को बीमार-सा बनाना, अकसर माता-पिता के अधिक लाड़-प्यार की वजह से होता है। ऐसी स्थिति में हम उनकी प्राकृतिक वृद्धि को ही रोकते हैं।

मेरे विचार में अच्छा, संतुलित और पौष्टिक आहार ही बच्चे का सर्वोत्तम टॉनिक है, चाहे आप मांसाहारी हों या शाकाहारी।

शून्य में विचरण

मधु गुप्ता, ग्वालियर : मैं २० वर्षीय एम. ए. की छात्रा हूं। कभी-कभी अचानक मुझे ऐसा लगता है—जैसे मैं एकदम भारहीन हो गयी हूं और शून्य में विचरण करने लगी हूं। तब मेरे मन में प्रश्न कौंधता है कि क्या मैं सचमुच इस संसार में हूं? क्या मेरा नाम सचमुच मधु है। क्या मैं भी औरों की तरह संसार में जिंदा हूं। मुझे ऐसा लगता है, जैसे मैं औरों से एकदम पृथक हूं। कभी-कभी लगता है, जैसे मेरी आत्मा अलग और शरीर अलग है। फिर मुझे प्रतीत होता है कि संसार में आयी हूं और कार्य होते ही चली जाऊंगी। ऐसी स्थिति सिर्फ आधा मिनट ही रहती है। बिजली की भांति विचार कौंधते फिर तुरंत लोप हो जाते हैं। मैं धन, स्नेह आदि किसी प्रकार से भी वंचित नहीं। डॉक्टर साहब ! कृपया इस स्थिति से मुझे मुक्त करायें।

आपके लक्षण यदि हर समय बने रहते हैं, तब तो यह मनोरोग की निशानी होती है, लेकिन आपके साथ हो रहे लक्षणों का समय बहुत कम होता है, यानी सेकिंडों में विचार आकर चले जाते हैं—यह लक्षण स्नायु-रोग का है। इसकी पूर्ण पुष्टि स्नायु-रोग विशेषज्ञ से हो सकती है (ई. ई. जी. द्वारा भी)। घबराइए नहीं, जो आजकल इस रोग की दवाइयां हैं, जो पूर्ण पहचान के बाद दी जा सकती हैं। और, तब आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रह सकती हैं।

मां-जैसी ममता

क. ख. ग., सागर : मैं २४ वर्ष का हूं, और मेरी भाभी २७ वर्ष की। भाई-भाभी ११ वर्ष के विवाहित जीवन के बाद भी संतान-सुख से वंचित हैं। मैंने उन्हें अत्यंत दुःखी पा, उनसे प्रार्थना की कि वह मुझे ही स्नेह व ममता का पात्र बनायें। मुझे उन्होंने असीमित पुत्र समान स्नेह दिया, जो शायद मां भी न दे सके। वह मुझे अपने बेटे की तरह साथ सुलाती हैं। पिछला वर्ष आनंदमय रहा, परंतु कुछ दिनों से मैं हीन भावना से ग्रस्त हूं। जब भी मैं भाभी के साथ सोता हूं, तब ही उत्तेजना महसूस करता हूं। वह मुझे हमेशा सोने से सटाकर सुलाती हैं, यदि दूर सोने की कोशिश करता हूं, तो कारण जानना चाहती हैं, साथ ही दुःखी भी होती हैं। मैं उन्हें अपने विकृत मन का हाल कैसे सुनाऊं, हिम्मत ही नहीं होती। अब तो मैं स्वयं से भी नफरत करने लगा हूं। कृपया तनाव का कोई हल सुझायें।

आपका अपने और भाभी में मां-पुत्र-जैसा स्नेहपूर्ण संबंध क्यों न हो, परंतु वह आपसे केवल ३ वर्ष बड़ी हैं, तथा केवल २७ वर्ष की हैं। साथ सोने पर उत्तेजना का होना स्वाभाविक है, इसी कारण आपको साथ नहीं सोना चाहिए। इसमें आपका कोई दोष नहीं, न ही आपका मन विकृत है।

नींद में अकसर इंद्रिय-उत्तेजना तो होती ही है। खास तौर पर निद्रा का वह समय, जिसे हम स्वप्न में गुजारते हैं। यह एक वर्ष के बच्चे में भी होता है। आशा है, आप इस जीव-वैज्ञानिक कारण को समझेंगे, और अपनी समस्या को वैज्ञानिक ढंग से समझकर हीन-भावना से बचेंगे। उन्हें आप कोई भी बहाना बता दें, और साथ न सोने का प्रयास करें।

घरेलू उपचार :

रक्तचाप (ब्लड-प्रैशर)

वस्तुतः रक्तचाप या ब्लड-प्रैशर कोई रोग नहीं है। हर व्यक्ति को हर समय रक्तचाप रहता है। लेकिन वह रक्तचाप आवश्यकता से अधिक बढ़ या घट जाता है, तभी चिंता का विषय बनता है। उच्च रक्तचाप वंश-परंपरागत, अधिक व्यस्तता, अशांति, भावुकता के कारण तनाव, गुर्दे की खराबी, अधिक धूम्रपान व मद्यपान आदि कारण से देखा गया है। निम्न उपायों में से किसी एक उपाय के करने से लाभ प्राप्त होता है।

१. लहसुन का रस चौथाई चम्मच आधा प्याला पानी में डालकर प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करें।

२. आधा नीबू का रस एक प्याला गर्म पानी में डालकर सुबह-शाम पियें।

३. सर्पगंधा १०० ग्राम, मिसरी १०० ग्राम एक साथ कूटकर रखें। आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी के साथ सेवन करें।

४. एक-एक चम्मच शुद्ध मधु—सुबह-शाम नियमित रूप से सेवन करें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

बी-५/७, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

१. **यदि** एक आईना १० रु. में बेचा जाता है, तो उस पर उतना ही मुनाफा है जितना उसका क्रय-मूल्य है। उसका क्रय-मूल्य बताइए ?

२. **भारत** के दक्षिणी प्रायद्वीप के दोनों ओर पश्चिमी घाट तथा पूर्वी घाट नामक पर्वत-शृंखलाएं फैली हैं। बताइए, दक्षिण में कौन-सी पर्वत-शृंखला इन दोनों को एक दूसरे से जोड़ती है ?

३. क. **ईस्ट** इंडिया कंपनी ने अपनी सबसे पहली 'कोठी' कहां और कब स्थापित की ?

ख. अंगरेजों को शुरू में अपनी सत्ता स्थापित करने में किन विदेशी शक्तियों का मुकाबला करना पड़ा था ?

४. क. **भारत** में रिजर्व बैंक की स्थापना कब हुई थी ? **ख.** उसका राष्ट्रीयकरण कब हुआ ?

५. **देश** की कौन-सी बहु-उद्देश्यीय नदी-परियोजना है, जिसमें ८ नदियों के जल-प्रयोग की व्यवस्था की गयी है ?

६. **भारत** में सबसे अधिक लंबाई के रेल-मार्गोंवाले दो रेल-क्षेत्रों के नाम, उनके प्रधान कार्यालयों सहित बताइए।

७. **मई** मास में मई दिवस (१ मई) के अतिरिक्त और कौन-से दिवस मनाये जाते हैं ?

८. **एशिया** तथा अफरीका महाद्वीपों को जोड़नेवाली पहली सुरंग (भूमिगत मार्ग) कहां बनी है ?

९. **गत** वर्ष अक्तूबर में हुई 'हिमालय कार रैली' में प्रथम पुरस्कार किसे मिला था ?

१०. क. **भारत** में पत्र-पत्रिकाओं की प्रचार-संख्या (सर्कुलेशन) कितनी पहुंच चुकी है ?

ख. सबसे अधिक दैनिक पत्र किस भाषा में निकलते हैं ?

११. **'डिफ्थीरिया'** शरीर के किस अंग की बीमारी है ?—

क. दांत, ख. गला, ग. पेट, घ. गुर्दे

१२. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

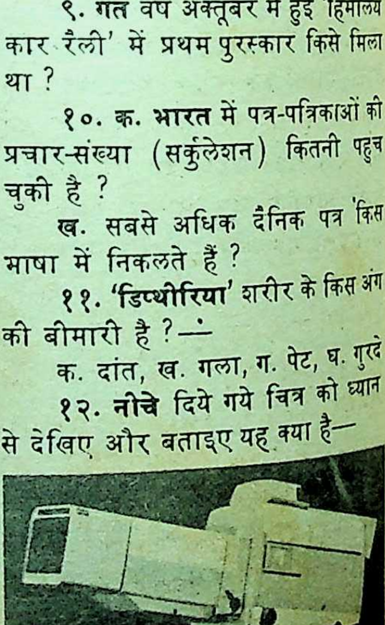

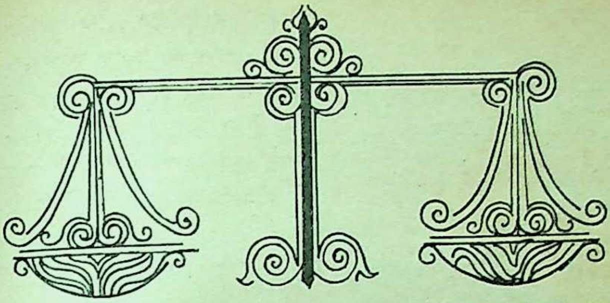

तुलादान-महादान

• डॉ. मोतीलाल भार्गव

भारतवर्ष में दान की प्रशंसा ऋग्वैदिक काल से चली आती है। उसमें विजय प्राप्त करने के पश्चात, इंद्र की स्तुति में दिये गये दान की स्तुति है। दशम-मंडल के ११७वें सूक्त में वर्णित, दान-स्तुति में धन एवं अन्न के दान की महिमा गायी गयी है। कालांतर में धनाढ्य वर्ग द्वारा धनार्थी को धन का दान करने की विशिष्ट परंपरा बन गयी। सहस्त्रों वर्ष बीत जाने के पश्चात भी दान देने की परिपाटी आधुनिक युग में भी मान्य है। सप्ताह में मंगलवार, शनिवार तथा अन्य तिथियों पर आज भी प्रातःकाल से ही दान लेनेवालों का क्रम बंध जाता है।

दान विभिन्न प्रकार के होते हैं; जैसे अन्नदान, गऊदान, भूमिदान, श्रमदान, तुलादान इत्यादि। कहीं-कहीं पर तो बालकों के लिए खिलौने दान करने की महिमा भी वर्णित है। सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ विद्यादान सर्वोपरि माना जाने लगा है। गुरु-दक्षिणा की परंपरा भी प्राचीन भारत में अनोखी परंपरा रही है। ब्राह्मणों को भोजन कराने के पश्चात तथा मंदिरों में पुजारियों को दान करने का विशेष महत्त्व है। ग्रहों की शांति के लिए अथवा कष्ट निवारणार्थ अथवा वार्षिक श्राद्ध के अवसर पर दान देना अनिवार्य समझा जाता है। जन्म, मरण, जन्मोत्सव इत्यादि पर दान देने की अपनी ही महिमा है। दान सागर ग्रंथ में न केवल विधिवत किये गये दान की महिमा ही दी गयी है, वरन उसके विभिन्न प्रकार तथा उनकी पृथक-पृथक महिमा भी वर्णित है।

तुलादान सर्वोपरि दान

तुलादान : के भी कई भेद बन गये थे, जैसे सामान्य दान, लघुदान तथा महादान। महादान भी सोलह प्रकार के

कहे गये, और उनमें तुलादान सर्वोपरि माना गया था। प्राचीन परंपराओं के अनुसार तुलादान का अनुष्ठान तीन दिनों में संपन्न होता था। प्रथम दिन तुलादान करनेवाला व्यक्ति उपवास और नियम-पालन का संकल्प करता था; दूसरे दिन अनुष्ठान-मंडप में स्नानादि करके विभिन्न संस्कार संपन्न करता था, जैसे शुद्ध की गयी भूमि पर मंडप, कुंड तथा वेदियां बनवाना—वस्त्र, अलंकार और पताका से मंडप का प्रसाधन व यजमान के द्वारा अनुष्ठान के निमित्त आचार्य, ब्रह्मा और ऋत्विजों का वरण किया जाना। तीसरे दिन वैदिक शांति-पाठपूर्वक कुंड में सविधि-अग्नि-स्थापन होता था। परंपरा के अनुसार इस प्रकार के महादान के पुण्य अवसर पर चारों वेदों के ज्ञाता विद्वानों की अपेक्षा होती थी।

अनुष्ठान के आरंभ में यजमान विद्वान पंडितों को शय्या दान करता था। सभी विद्वान वैदिक मंत्रों का पाठ करते हुए यजमान को मांगलिक स्नान कराते थे। तत्पश्चात यजमान वस्त्र एवं माला धारण किये हुए अंजलि में पुष्प लेकर तुला की तीन प्रदक्षिणा करता था। तुला के दक्षिण भाग में सुवर्णखंड रखा जाता था, जो यजमान के भार से कुछ अधिक होता था और सुवर्णखंड, विद्वान पंडितों को अर्पित कर दिया जाता था। सुवर्ण के अतिरिक्त भूमि, रत्न एवं दक्षिणा भी इस महादान के पुण्य अवसर पर दान में दी जाती थी।

हर्ष का सर्वस्व दान

उपरोक्त विधि द्वारा संपन्न तुलादान सर्वश्रेष्ठ महादान समझा जाता था। व्यावहारिक दृष्टि से यह प्राचीनकाल में भी राजा-महाराजाओं द्वारा ही संपन्न हो पाता था। वे भी इसे केवल विशिष्ट अवसरों-जैसे जन्मोत्सव अथवा राज्याभिषेक—आयोजित करते थे। इस प्रकार के महादान आयोजित करने का माहात्म्य हिंदुओं में तो था ही, परंतु जैन एवं बौद्ध धर्म अनुयायियों ने दान के महत्त्व को ज्ञानदान, अभयदान तथा सर्वस्व-दान की संज्ञा देकर और भी अनुकरणीय बना दिया। प्राचीन भारत के इतिहास में सम्राट हर्ष द्वारा प्रयागराज में सर्वस्व-दान करने के वर्णन अद्वितीय हैं। तत्कालीन भारत में धार्मिक और दार्शनिक वाद-विवाद के क्षेत्र में बहुत उदारता थी। सम्राट हर्ष ने कन्नौज में आयोजित एक विशाल दार्शनिक शास्त्रार्थ में ह्वेनसांग को भी आमंत्रित किया था और उसे विशेष सम्मान प्रदान किया तथा "... ह्वेनसांग को १०,००० स्वर्ण-मुद्राएं, ३०,००० रजत मुद्राएं और बढ़िया सूती कपड़े के १०० वस्त्र प्रदान किये।"

मध्यकालीन युग में

अध्ययन से ज्ञात होता है कि पूर्व मध्यकालीन युग में प्राचीन मठों तथा मंदिरों का ह्रास हुआ और हिंदू-धर्म एवं संस्कृति को आघात पहुंचा, परंतु दान-इत्यादि की परंपराएं, राजपूत तथा दिल्ली के सुल्तान

शासक भी अपनी मान्यताओं के अनुरूप चलाते रहे। मुगल सम्राटों में सर्वप्रथम हुमायूं द्वारा तुलादान की प्रथा को विशिष्ट अवसर पर अपनाने का विवरण मिलता है। जैसे-जैसे उसे भारत में विजय प्राप्त होती रही तथा मुगल दरबार हीरे-जवाहरातों द्वारा जगमगाने लगा, हुमायूं ने भी भारतीयों को अपना बनाने के लिए पंडितों कवीश्वरों, गुणियों, संत व फकीरों को सम्मानित करना आरंभ कर दिया। नौरोज (नव वर्षारंभ) के समय आनंदोत्सवों पर हिंदुओं को दान-दक्षिणा प्राप्त होने लगी। सौर और चांद्र दोनों गणनाओं के अनुसार वर्षगांठ के अवसरों पर उत्सव मनाये जाने लगे तथा तुलादान होने लगा। बादशाह सात अनाजों और सात धातुओं आदि का तुलादान करता था।

अकबर द्वारा तुलादान

अकबर ने इस महादान को दोनों अवसरों पर मनाया । शम्सुल उल्मा मौलाना मुहम्मद हुसेन 'आजाद' द्वारा प्रणीत 'दरबारे-अकबरी' के अनुसार, "वर्ष में दो बार तुलादान होता था। एक नौरोज के दिन होता था। उसमें सोने की तराजू खड़ी होती थी। बादशाह बारह चीजों में तुलता था—सोना, चांदी, रेशम, सुगंधित द्रव्य, लोहा, तांबा, जस्ता, तूतिया, घी, दूध, चावल और सतनजा। दूसरा तुलादान वर्षगांठ के अवसर पर चांद्र गणना के अनुसार ५ रजब को होता था। उसमें चांदी, कलई, कपड़ा, बारह प्रकार के मेवे, मिठाई, तिलों का तेल और तरकारी होती थी। सब चीजें ब्राह्मणों और भिखमंगों आदि में बांट दी जाती थी। सौर गणना से जिस दिन वर्षगांठ होती थी, उस दिन इसी हिसाब से तुलादान होता था।"

साहित्यकार का तुलादान

औरंजगेब की मृत्यु के पश्चात तथा मुगल-साम्राज्य के पतन के कारण तुलादानकी प्रथा यदा-कदा प्रतिवादित होती रही । इसका स्वरूप 'बदला, मान्यताएं भी बदलीं, परंतु धनाढ्य लोग लीक पर चलते रहे । आधुनिक युग में चाहे देश पराधीन रहा, चाहे संकट मंडराते रहे, युद्ध की स्थिति भी हुई, परंतु उत्साही संगठनकर्ताओं ने तुलादान का आयोजन कर परंपरा को बनाये रखा। इस अनुपम शृंखला में तीन ऐसे उदाहरण प्रस्तुत हैं, जो अपने में विचित्र

है और महत्त्वपूर्ण भी । नेताजी सुभाषचन्द्र बोस; हिजहाईनेस आगाखां तथा माखन लाल चतुर्वेदी के नाम से तो सभी परिचित हैं; परंतु ये लोग तुलादान की शृंखला में किस भांति आये, यह ज्ञातव्य है तथा रुचिकर भी ।

साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष का तुलादान

ग्रीष्म ऋतु में प्रसिद्ध तीर्थनगरी हरिद्वार में वैशाखी के अवसर पर प्रति वर्ष मेला होता है तथा छह वर्ष में अर्द्ध-कुंभ तथा बारह वर्ष में कुंभ पर्व आता है । इन अवसरों पर अखिल भारतीय प्रादेशिक, धार्मिक, शैक्षिक तथा साहित्यिक संस्थाएं अपने-अपने अधिवेशन आयोजित करती हैं। इसी प्रकार १९४३ में १७ अप्रैल से १९ अप्रैल तक हरिद्वार में हिंदी साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन आयोजित हुआ था । इसमें तत्कालीन हिंदी-साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उप-कुलपति माननीय पं. अमरनाथ झा तथा मनोनीत अध्यक्ष श्री माखनलाल चतुर्वेदी आये थे। संगठनकर्त्ताओं में इतना उत्साह जागृत हुआ कि उन्होंने मनोनीत अध्यक्ष को तुलादान के लिए तैयार किया। बड़े उत्साह से नगर में गणमान्य व्यक्तियों द्वारा, जिनमें महंत शांतानंद, महंत घनश्यामगिरि, पन्नालाल भल्ला प्रमुख थे। चांदी के सिक्के एकत्र किये गये और तुलादान की व्यवस्था की गयी क्योंकि यह धनराशि सम्मेलन को अर्पित होनेवाली थी । इसलिए दर्शकगणों ने सुझाव दिया कि भारी-भरकम महंत शांतानंद स्वयं तुला में क्षणभर के लिए बैठकर धनराशि दोगुनी करा दें; अन्यथा अवकाश-ग्रहण कर रहे अध्यक्ष अपने को तुला पर बैठाएं; परंतु यह सौभाग्य तो हलके-फुलके माखनलाल चतुर्वेदीजी के ही भाग्य में था, अतः प्रसिद्ध लेखक एवं साहित्यकार का इस अवसर पर तुलादान करके, उन्हें गौरवान्वित किया गया और समस्त धनराशि सम्मेलन को दान में दे दी गयी।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का तुलादान

२३ जनवरी १९४५ को जब आजाद हिंद फौज द्वितीय महायुद्ध के मध्य भारत-बर्मा सीमा पर युद्धरत थी और भारतीयों के लिए संकट की स्थिति थी ; उस समय आजाद हिंद सेना के नायकों तथा नेताजी के आजाद हिंद मंत्रिमंडल ने न केवल उनके जन्म-दिवस को ही मनाने का निर्णय किया वरन पूर्ण जयंती-सप्ताह ही मना डाला। नेताजी यद्यपि इसके लिए तैयार नहीं थे, परंतु उन्हें आयोजकों का उत्साह देखकर विवश होना पड़ा। इस पुनीत अवसर पर अतुल धन-संपत्ति एवं आभूषण संकलित किये गये और नेताजी के भार के डेढ़ गुना अर्पित करके तुलादान का सांकेतिक अनुष्ठान किया गया। यह समस्त धन-संपत्ति आजाद हिंद बैंक को समर्पित कर दी गयी। युद्ध समाप्त होने पर आजाद हिंद फौज को जब पीछे हटना पड़ा तथा आत्म-समर्पण के लिए तैयार रहना पड़ा, तब यह संपत्ति एवं धन किस प्रकार काम आया, यह सर्वविदित है। ऐसी विषम परिस्थिति में इस भांति नेताजी की वर्षगांठ-जयंती मनाकर आजाद हिंद सैनिकों ने विश्व-महायुद्ध के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण उपस्थित कर दिया था।

हीरों का तुलादान

महायुद्ध समाप्त हुआ ही था कि १० मार्च, १९४६ का इस्माइली समुदाय

चित्र-परीक्षा

प्राचीन समय की बात है। कुछ आदमियों को शराब से भरा एक बर्तन मिला। यह शराब मात्रा में केवल एक आदमी के लिए पर्याप्त थी। अब सवाल यह उठा कि शराब कौन पिये। काफी समय बीत जाने पर भी वे यह निश्चय नहीं कर पाये कि शराब कौन पिये ? अंततः एक आदमी ने प्रस्ताव रखा कि सब लोग जमीन पर सांप का एक-एक चित्र बनायें, जो सबसे पहले चित्र बना लेगा, वही शराब पियेगा।

सभी लोगों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा पेड़ की टहनी से चित्र बनाना प्रारंभ कर दिया।

एक आदमी ने बहुत जल्दी सांप का चित्र बना लिया। उसने देखाकि अभी तक कोई और व्यक्ति चित्र नहीं बना पाया है। तब वह अपने बायें हाथ में शराब का बर्तन और दायें हाथ में पेड़ की टहनी लेकर बड़े घमंड के साथ बोला, "तुम लोग कितना धीरे-धीरे चित्र बना रहे हो, मुझे देखो मैं सांप के चित्र में कुछ पैर भी बनाने जा रहा हूं,"

तब तक दूसरे आदमी ने शराब के बर्तन को अपने हाथों में लेकर कहा, "सांप के पैर नहीं होते, तुमने सांप के चित्र में पैर भी बना दिय, अब यह सांप का चित्र नहीं है। इस प्रकार सांप का चित्र बनानेवाला पहला व्यक्ति मैं हूं न कि तुम!" इतना कहकर उसने शराब का बर्तन मुंह से लगा लिया।

के गणमान्य अध्यक्ष हिज हाईनेस आगा खां की हीरक जयंती के अवसर पर, बंबई में, उन्हें तुलायंत्र पर बैठाकर हीरों से तौला गया था और समानांतर मूल्य-दान में दे दिया गया था। विश्वस्त विवरणों के अनुसार आगा खां का भार २४३.५ पौंड था और उन्हें तौलने के लिए लंदन डाइमेंड सिडीकेट-डर्बीशायर से १७ स्टोन ५.५ पौंड वजन के 'औद्योगिक हीरे' 'बुलट-प्रूफ' प्लास्टिक के डिब्बों में लाये गये थे। उनका मूल्य लगभग ६ लाख ४० हजार पौंड आंका गया था। इतनी बड़ी धनराशि जब आगा खां को भेंट में दी गयी, तब उन्होंने 'वारबांड' में उन्हें परिणत करके, भारतीय परंपरा के अनुसार दान कर दिया। केवल उन्हें तुला के स्थान पर तुला-यंत्र में कुरसी पर बैठाया गया था, परंतु हीरों से तोले जाने का, तुलादान-श्रृंखला में यह एक अनोखा उदाहरण था।

एक बात सभी युगों में सर्वमान्य रही कि तुलादान में प्रयुक्त धन, संपत्ति अथवा सामग्री दान के निमित्त अर्पित की जाती रही। यह तुलादान-महादान की संज्ञा चरितार्थ करता है।

—३४/९, पूर्वी पटेलनगर,
नयी दिल्ली-११०००८

हंसाइयां

सड़क के किनारे एक कार खड़ी थी, जिसका टायर पंक्चर हो गया था। एक सुंदर-सी युवती हताश दृष्टि से उसे देखती हुई वहां खड़ी थी। बगल से गुजरते हुए एक युवक ने यह देखा, तो अपनी कार रोकी और उसके पास सहायता के लिए पहुंचा।

युवती के कहने पर युवक ने कार का पहिया बदल दिया। जब टायर बदल गया, तब युवती बोली, "अब जैक को जरा धीरे से नीचा कीजिएगा, पिछली सीट पर सो रहे मेरे पति की नींद कहीं खुल न जाए।"

—सुरेंद्र श्रीवास्तव

एक आधुनिका पर्स लटकाते बड़ी अदा के साथ सड़क पर चली जा रही थी कि एक मनचले युवक ने उसकी ओर देखा और बोल पड़ा, "मैं तुमसे प्यार करता हूं।"

"व्हाट ?" आधुनिका ने कड़कते हुए कहा।

"मैडम, आ . . . प . . . मुझे गलत न समझें। मैंने तो सिर्फ, आपके पर्स पर लिखे 'आइ लव यू' का हिंदी अनुवाद किया है।"

——पवनप्रसाद वर्मा

★

"यह कितनी गलत बात है कि हर औरत अपनी उम्र चार-पांच साल कम बताती है।"

"इसमें गलत क्या है, वही चार-पांच साल वह पड़ोसिन की उम्र में जोड़ देती है।"

—सुधीर निगम

हंसिकाएं

——डॉ. सरोजनी प्रीतम

साम्य

वे बताते हैं
हुक्का और पत्नी
दोनों मुंह लगे हों—तो बुड़बुड़ाते हैं

पद

आसमान पर पहुंचते ही
गरजता-बरसता—
शोर मचाता है
बादल भी उच्चाधिकारी-हो जाता है

भय

चूहे से डरकर-चीखी,
उछल पड़ी . . . घबरा गयी . . .
चैन की सांस लेने के लिए-फिर
भेड़िये की बांहों में आ गयी

मुल्ला नसीरुद्दीन के कारनामे

कीमत मुरगी और तोतों की

एक दिन की बात है। मुल्ला नसीरुद्दीन किसी काम से बाजार गया। वहां उसने देखा, पिंजड़ों में बंद अनेक नन्हे-नन्हे पक्षी काफी ऊंची कीमतों पर बिक रहे हैं। उसे बेहद अचरज हुआ। मन ही मन उसने एक फैसला कर लिया।

दूसरे दिन मुल्ला नसीरुद्दीन अपनी मुरगी लेकर बाजार गया। उसने उसे भी ऊंची कीमत पर बेचना चाहा, पर कोई भी व्यक्ति उसे बहुत कम पैसों पर भी खरीदने को तैयार नहीं हुआ। मुल्ला चिढ़कर बोला, "अरे मूर्खों, कल तुम इस मुरगी से भी चौथाई छोटे परिंदों को ऊंची कीमतों पर खरीद रहे थे, अब इसे मिट्टी-मोल की बता रहे हो।"

लोग हंस पड़े, "मुल्ला, मूर्ख हम नहीं, तुम हो ! वे परिंदे तोते थे, जो अपनी आवाज से सबका मन मोह लेते हैं। उन्हें जो सिखाओ, सीख जाते हैं। तुम्हारी मुरगी तो सिवाय अंडा देने के, किस काम की ?"

मुल्ला हंस पड़ा, "हो न तुम मूर्ख ! अरे मुरगी बड़ी विचारवान है। मन ही मन सोचा करती है, पर तोतों-जैसा बड़-बड़कर लोगों को परेशान नहीं करती। बताओ, कौन अच्छा है--मुरगी या तोता !"

"तुझे पढ़ते-पढ़ते इतने दिन हो गये, पर तू अभी तक दस तक ही गिन पाता है, तब तू बड़ा होकर क्या करेगा ?"

"पप्पा, मैं कुश्ती का रेफरी बनूंगा।

—रामचंद्र नवाल

★

जज साहब चोरी के एक मुकदमे का फैसला सुना रहे थे, "यह गुनाह अपराधी ने बड़ी ही कुशलता और चतुराई से किया है...।" अपराधी ने बीच में ही बात काटते हुए कहा, "तारीफ के लिए शुक्रिया जज साहब। आप तो यह बता दीजिए कि सजा कितनी है ?"

—राजकुमार जैन

★

एक व्यक्ति को दस वर्ष छह मास का कठोर कारावास का दंड दिया गया। उसने मजिस्ट्रेट से प्रार्थना की, "कृपया, कारण तो बताइए ?"

मजिस्ट्रेट, "तुमने अध्यक्ष 'क' को मूर्ख कहा। महान अध्यक्ष का अपमान करने के अपराध की छह मास की और गुप्त सरकारी भेद खोला, इसकी सजा दस साल।"

—विजय भारद्वाज

विधि विधान

पंचनामा

राजेन्द्रमोहन, बदायूं : आर्बीट्रेशन एक्ट के अंतर्गत पंचनामे के लिए कोई विशेष स्वरूप निर्धारित किया गया है या नहीं। क्या यह आवश्यक है कि पंचनामा किसी खास फार्म में लिखा जाए, जिससे भविष्य में पड़नेवाले झगड़े पंच-फैसले को सौंपे जा सकें।

पंचनामा, किसी विशेष रूप में होना आवश्यक नहीं है। यदि पक्षों ने अपने मध्य होनेवाले झगड़े का निर्णय पंच-फैसले से करवाने का निश्चय किया हो और वह निश्चय लिखित समझौते में उल्लखित हो तो वह पंचनामा माना जाएगा। पंचनामा में पक्षों की, अपने झगड़े को पंच-फैसले से निपटाने की इच्छा महत्त्वपूर्ण है। सर्वोच्च न्यायालय के मान्य न्यायाधीश श्री डी. ए. देसाई व श्री आर. एस. पाठक द्वारा दीवानी अपील सं. १६५ वर्ष १९७० में दिया गया निर्णय उल्लेखनीय है।

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त

साझेदारी

विजयकृष्ण गोयल, रसड़ा, बलिया : मैं २२ वर्षीय ग्रेजुएट युवक हूं। मैं अपने एक रिश्तेदार की फर्म में अगस्त १९७७ में २,००० रु. की पूंजी लगाकर अलिखित समझौते द्वारा साझेदार बना। २७ महीने तक यह साझेदारी चलकर अक्तूबर १९७९ में टूट गयी। अच्छे संबंधों के कारण एवं मेरे रुपये पर परिवार के आश्रित न होने के कारण मैंने कभी भी उनसे हिसाब नहीं करवाया। फर्म से अलग होकर मैंने अपना नया व्यापार प्रारंभ किया, फलतः उन्होंने मुझे अपना साझीदार मानने से इंकार किया। क्या मैं अब कानून की शरण लेकर अपना रुपया वापस पा सकता हूं ? मेरे रिश्तेदार ने स्वयं जो हिसाब करवाया। उसमें मेरे हिस्से की रकम सात हजार दो सौ उन्नीस रुपया आ रही है। परंतु वे अब इतनी रकम भी देने के लिए तैयार नहीं हैं। वे अपना कोई खाता नहीं रखते।

साझेदारी का समझौता होना आवश्यक नहीं। आप अपने साझी से हिसाब मांगने का दावा कर सकते हैं। साझेदारी के काम का हिसाब रखने का काम जिस

पक्ष का होगा, न्यायालय में हिसाब देने का उत्तरदायित्व भी उसी पक्ष का होगा।

छद्म नाम से पत्रकारिता

मुकेश पारीक, लक्ष्मणगढ़, सीकर: मैं एक स्थानीय सरकारी कार्यालय में कनिष्ठ लिपिक के पद पर कार्य कर रहा हूं। मेरी पत्रकारिता में काफी रुचि है तथा इसका मुझे अनुभव भी है। क्या मैं अपने नाम से अथवा अपने किसी छद्म नाम से किसी दैनिक समाचार पत्र के स्थानीय संवाददाता के रूप में कार्य कर सकता हूं?

सरकारी कार्यालय में काम करनेवाले पूर्णकालिक सरकारी कर्मचारी होते हैं। उन्हें कोई अन्य नौकरी करने की अनुमति नहीं होती। पत्रकारिता में आपकी रुचि प्रशंसनीय है, परंतु आप समाचार-पत्र के स्थानीय संवाददाता के रूप में काम नहीं कर सकते। संवाददाता के रूप में काम करना आपके सेवा-नियमों का उल्लंघन होगा। छद्म नाम से काम करना भी कानून सम्मत नहीं है। आपको छद्म नाम से भी काम नहीं करना चाहिए अन्यथा आप परेशानी में पड़ जाएंगे। यदि आपका पत्रकारिता से ही लगाव है, तो सरकारी नौकरी छोड़कर, पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश करना ही एकमात्र विकल्प है।

किराया अधिनियम

डॉ. एस. के. जैसवाल, परासिया: रहने के लिए मकान और किराये पर दुकान देने से संबंधित ऐसे 'अधिनियम' का नाम तथा परिचय दें, जो कि संपूर्ण भारत (म. प्र. राज्य में भी) में लागू तथा प्रचलित हो। क्या 'दिल्ली किराया अधिनियम' म. प्र. राज्य के साथ ही संपूर्ण भारत में लागू है, या मात्र दिल्ली में? किरायेदार को यदि मकान किराये पर रहने हेतु अथवा दुकान के लिए दिया जाए, तो समझौता किस प्रकार का हो, जो कानून-सम्मत हो?

आपका अभिप्राय संपत्ति हस्तांतरण अधिनियम १८८२ से है। उक्त अधिनियम जुलाई १८८२ से लागू हुआ। अधिनियम देश के अनेक भागों पर लागू नहीं किया गया था, परंतु राज्य सरकारों को अपने राज्य के किसी भी भाग में अधिनियम लागू करने का अधिकार दिया गया था। मध्यप्रदेश में यह अधिनियम एम. पी. अधिनियम १२ सन १९५० के द्वारा लागू किया गया है।

दिल्ली किराया नियंत्रण अधिनियम केवल दिल्ली में ही प्रचलित है। मध्यप्रदेश या शेष भारत में वह लागू नहीं होता। किरायेनामा (समझौता) आपस में तय की गयी शर्तों व किरायेदारी की अवधि आदि पर आधारित होता है।

संपत्ति में हिस्सेदारी

नन्दलाल कुम्हेर, भरतपुर: हम छह भाई हैं। हमारी एक मां है। प्रथम दो बड़े भाई के पिता अलग हैं। बाकी छोटे चार भाई दूसरे बाप के हैं। बड़े

बाप की मृत्योपरांत मां उसी घर में उनके छोटे भाई (देवर) के घर में पत्नी-रूप में रहीं। छोटे चार भाई दूसरे बाप के हैं। छह भाइयों ने सहर्ष पूरी जमीन का बराबर हिस्सा किया। परंतु बड़े बाप के लड़कों के नाम जमीन अधिक है। अब छोटे बाप के चारों लड़कों को बड़े बाप के लड़कों से जमीन लेनी है। यानी खातेदारी (नाम) करानी है। बड़े बाप के लड़के सहर्ष यह करने को तैयार भी हैं। क्या यह जमीन हिस्सेदारी या नजरबंदी से इच्छुक भाई को दी जा सकती है ? क्या रजिस्ट्री कराना आवश्यक है ?

आप सब भाई जमीन का आपस में बंटवारा कर चुके हैं तथा जमीन सबके नाम हो गयी है। अब यदि कोई भी भाई अपनी जमीन, दूसरे को देना चाहे, तो उसे वही प्रक्रिया अपनानी पड़ेगी, जो संपत्ति के हस्तांतरण के लिए अपनायी जाती है। जमीन का हस्तांतरण करने के लिए रजिस्ट्री करवायी जानी आवश्यक होगी।

बिना रसीद के किराया

दिनेशकुमार, शाहदरा, दिल्ली : मैं शाहदरा में करीब पांच माह से दूकान करता हूं, लेकिन दूकान-मालिक मासिक किराये की कोई रसीद नहीं देता और ना ही यहां पर इस समय दूकान की ज्यादा कीमत है। मुझे शंका है कि भविष्य में दूकान छोड़ने के लिए दूकान-मालिक कुछ बखेड़ा न कर दे। दूकान-मालिक कुछ तीखे मिजाज का भी है। मैं क्या करूं ?

प्राप्त किये किराये की रसीद देना मकान मालिक का उत्तरदायित्व है। आपको किराया देकर मकान मालिक से रसीद मांगनी चाहिए। रसीद नहीं देना दिल्ली किराया-नियंत्रण के अंतर्गत दंडनीय है। किराया देने के दो माह के अंदर आप उसकी शिकायत किराया-नियंत्रक से कर सकते हैं। (देखिए दिल्ली किराया-नियंत्रण अधिनियम की धारा २६)

मकान-मालिक द्वारा किराये की रसीद न देने से आपको (उक्त अधिनियम की धारा २६ की प्रक्रिया अपनाकर) किराया नियंत्रक के पास किराया जमा करवाने का अधिकार भी मिल जाता है। भविष्य की परेशानी से बचने के लिए उचित यह ही रहेगा कि आप किराया, नियंत्रक के पास जमा करवा दें।

मकान-मालिक अपने किरायेदार से हमेशा गाली-गलौज करता और उसे हर बात पर डांटता रहता था। एक दिन सुबह-सुबह किरायेदार मकान-मालिक के पास पहुंचा और उसे दूध का कटोरा देते हुए बोला, "लीजिए, मैं आपके लिए यह दूध लाया हूं, पी लीजिए।"

"भाई, मैं तो तुम्हें रोज गाली देता हूं, बुरा-भला कहता हूं, इस पर भी तुम मुझे दूध पिला रहे हो, लेकिन किस लिए ?"

"आज नागपंचमी है न, इसलिए।"

—कमल सोगानी,

पर्वत छोड़ि नहिं जइहों

● नारायण भक्त

पहाड़िया—प्रकृति के उन्मुक्त जीवन को पसंद करनेवाली एक आदिम जन-जाति !

पहाड़ों पर स्वतंत्र जीवन बसर करनेवाली जाति का नाम है—पहाड़िया। संभवत: इसी कारण इनका नाम 'पहाड़िया' पड़ गया। शोध एवं समाजशास्त्रियों के अनुसार पहाड़िया समुदाय प्राचीन द्रविड़-जाति से संबद्ध है। बिहार के संथाल परगना जिले के उत्तर तथा मध्य भाग में पहाड़िये निवास करते हैं। राजमहल पहाड़ी पर इनकी संख्या अधिक है—बोरियो, अमरापाड़ा, बरहेठ, सुंदर पहाड़ी। कुछ पहाड़िये नेफा की ओर भी चले गये हैं, जहां वे चायबगान में काम कर अपना गुजारा कर लेते हैं। विशाल जंगलों में ये लकड़ी काटकर, कुछ खेती कर और अब टसर के कीड़े पालकर अपना जीवन बसर करते हैं। ये पहाड़िया तीन प्रकार के हैं—माल, सौरिया और कुमारभाग। अब इन्हें इस काम में बैंक से मदद मिल रही है। प्रत्येक परिवार को हलके ब्याज पर दो सौ रुपये का ऋण मिलता है। पहले महाजन से ये जो ऋण लेते थे, उसका सूद इस कदर बढ़ता जाता था कि उसकी अदायगी नहीं हो पाती थी। हां, एक परेशानी उन्हें अभी भी है कि टसर-कोकून महाजन को मनमानी कीमत पर देने पड़ते हैं। यदि सरकार की ओर से कोकून खरीदने की व्यवस्था हो जाए, तो इन्हें बहुत सहूलियत मिल सकती है।

पहाड़िया अपना जीवन-यापन किसी

तरह, अभाव में पहाड़ों पर करते हैं। दवा, पोषक तत्वों का अभाव तथा अनेक तरह की भयंकर बीमारियों से ग्रसित होने पर समुचित इलाज के अभाव में इनकी संख्या उत्तरोत्तर घट रही है। टी. बी. घेघा, मलेरिया और कोढ़-जैसे रोगों से इनका पिंड नहीं छूटा। भारी मात्रा में मदिरापान तथा शैशवावस्था में बच्चों की बढ़ती मृत्यु-दर भी इनके उन्मूलन का मुख्य कारण है।

गरीबी में भी मस्ती

इस दुःखद स्थिति से उबारने के लिए सन १९६१ में सरकार की ओर से इस जाति के ३२ परिवारों को पहाड़ से उतारकर मैदानी इलाके में बसाया गया। किंतु, कुछ को छोड़, बाकी फिर मौका पाकर पहाड़ पर ही चले गये। पहाड़िया जंगल और पहाड़ पर गरीबी में भी मस्त रहते हैं।

जब इनसे यह पूछा गया कि वे पहाड़ों को क्यों नहीं छोड़ना चाहते, जबकि यहां पर कोई सुविधा नहीं है, तो एक पहाड़ी ने कहा, "बाबू, हमारे पूर्वज यहीं पर रहते थे, हम नीचे क्यों जाएं? सूर्य भगवान हमें सबसे पहले रोशनी देते, पहाड़ के पेड़-पौधे हमें फल खाने को देते। वसंत ऋतु सबसे पहले यहीं आती है, बाकी की चिंता कौन करे।" उसके होठों पर एक सूखी मुसकान थी।

सन १८७२ ई. में इस जाति की संख्या जिले में दो लाख ग्यारह हजार थी, किंतु १९७१ की जनगणना के अनुसार, यानी सौ साल बाद, यह संख्या घटकर केवल एक लाख सात हजार रह गयी। अशिक्षा, दकियानूसी परंपरावादी जीवन-पद्धति, नशाखोरी तथा अन्यान्य रोगों से इनकी संख्या दिनोंदिन कम हो रही है। कुछ जिज्ञासु विद्यार्थी तथा अन्य समाजशास्त्रियों ने उक्त संख्या को भ्रामक बताया है। उनके कथनानुसार पहाड़ियों की वास्तविक संख्या मात्र ६९ हजार रह गयी है। पहाड़ियों का जीवन अभाव एवं संकट में गुजरता है। इनके बच्चों के लिए शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं रहने से वे अशिक्षित हैं तथा इनके सामने जीविका के साधन का घोर अभाव है। ये पहाड़ों पर स्वच्छंद जीवन बिताने के आदी हो चुके हैं। वे अपना इलाज कराने के लिए भी पहाड़ के नीचे जाना नहीं चाहते। इनके बच्चे गांव की पाठशाला में पढ़ते हैं, किंतु अभी

इनकी संख्या अधिक नहीं है। संपूर्ण पहाड़िया जातियों में श्री रामदुलाल देहरी प्रथम एम. ए. हैं। इनके अलावा इसी-गांव के चार और व्यक्तियों ने बी. ए. किया है और अभी तीन छात्र इंटरमीडिएट में पढ़ रहे हैं। गांव में कुछ हरिजन जाति के लोग भी हैं, जो पहाड़ियों के साथ कंधे-से-कंधे मिलाकर चल रहे हैं। यहां पर १९७६ में एक ग्राम-सभा की स्थापना हो चुकी है। सभा-भवन के निर्माण के लिए सरकार की ओर से भी इन्हें अनुदान मिला है।

विहार के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह ने पहाड़ियों की व्यथा-कथा को सुनकर एक बार वहां की यात्रा की थी। उस समय अधिकांश गांवों की ओर जाने के लिए कोई सड़क नहीं थी। वे वहां पालकी से यात्रा करते रहे और करीब जाकर उन्होंने दु:ख-दर्द को देखा। वे द्रवित भी हुए। उन्हें पहाड़ से उतारकर नीचे बसाने की योजना बनी, किंतु ये पहाड़िये आखिरकार पहाड़ के नीचे नहीं उतरे। १९५६ ई. में पहाड़ियों के विकास पर तेरह लाख रुपये की योजना बनी थी। किंतु, संपूर्ण कोष व्यर्थ गया, ये पहाड़ की जिंदगी को छोड़ने के लिए कतई तैयार नहीं।

इधर पहाड़िये कुछ खेती भी करने लगे हैं। कुछ वर्षों पूर्व तक ये कभी जमीन नहीं जोतते थे। इनके मन में यह विचार घर कर गया था कि लोहे के धारीदार औजार से जमीन को जोतना ठीक नहीं, इससे धरती माता को आघात पहुंचता है। किंतु , यह अज्ञानमय विचार इनके मन से कुछ निकलने लगा है। खेती के अलावा जंगलों की लकड़ियां काटकर बेचना भी इनका पेशा है। पहाड़ पर पैदा होनेवाले तथा जंगलों में पाये जानेवाले कंद-मूल तथा फलों को भी बेचकर ये अपनी जीविका चलाते हैं। स्वयं के खाद्य-पदार्थों की दृष्टि से ये भी वनों में प्राप्य कंद-मूल फल पर बहुत अंशों में निर्भर करते हैं। इनका कहना है कि यह 'जंगला देवता' का प्रसाद है।

महाराणा प्रताप के वंशज

तीनों प्रकार के पहाड़ियों की बोल-चाल की भाषा अलग-अलग है। ये मिश्रित भाषा बोलते हैं। माल पहाड़ी की भाषा हिंदी, बंगला और उड़िया है। सौरिया लोग 'मालतो' भाषा बोलते हैं। कुमारभाग संख्या में सबसे कम हैं। ये अपने को राणा प्रताप का वंशज मानते हैं और उसी

मान-सम्मान का जीवन जीना पसंद करते हैं। किंतु, अभी तक यह प्रमाणित नहीं हो सका कि वास्तव में ये प्रताप के ही वंशज हैं। ऐसा लोग मानते हैं कि पहाड़िया जाति पहले समतल में ही रहती थी, किंतु संथालियों ने इन्हें मार भगाया। चूंकि संख्या में ये कम थे, इसलिए डरकर पहाड़ पर चले गये। झंझटों से अलग-थलग रहना इनकी प्रकृति है, इन्होंने इसे ही श्रेयस्कर समझा है। वैसे कुछ पहाड़िये समतल पर भी हैं, किंतु उनकी संख्या नगण्य है।

पैतृक संस्कार

सौरिया पहाड़िये गोमांस (बीफ) खाते हैं। किंतु माल और कुमारभाग ऐसी चीज नहीं छूते। यही इनके अलग होने का सबूत है। ये लोग सौरिया से अपने को ऊंचा मानते हैं। माल और कुमारभाग का रिश्ता सौरिया लोगों से नहीं होता। सभी स्त्रियां माथे पर सिंदूर लगाती हैं और इसका प्रयोग शादी-विवाह में होता है। इस जाति की महिलाएं जब ऋतुमति होती हैं, तब ये ऊंचे स्थान पर नहीं बैठतीं, भोजन नहीं छू सकतीं, पानी नहीं भरतीं और मुख्य घर में इनका प्रवेश निषिद्ध माना जाता है। प्रसवकाल में ये अलग विशेष झोपड़ी में रहती हैं और ऐसे समय इनके पति ही इन्हें खाना बनाकर खिलाते तथा घर के अन्य कार्य करते हैं। प्रसव के बाद बच्चे की छठी होने पर ये शुद्ध हो जाते हैं। बच्चे के अन्नप्राशन को 'हाड़ीपोरा' कहा जाता है। अन्नप्राशन के समय कम-से-कम सात बच्चों को इन्हें खिलाना पड़ता है। इनके समाज में स्वतंत्र मिलन का रिवाज है। युवक-युवतियां एक-दूसरे से मिलते हैं और आदिवासियों की तरह इन्हें अपना वर चुनने का अधिकार प्राप्त है। लड़का स्वयं मनपसंद लड़की का चुनाव करता है। वर पक्ष की ओर से कन्या के मां-बाप को इक्कीस रुपये दिये जाते हैं। इसे 'पौन' या 'गांडा टाका' कहते हैं। इसमें कई संबंधियों का हिस्सा रहता है—बहन, मामा, भाई और चाचा आदि का।

शादी करानेवाले पुजारी को 'देहरी' कहते हैं। नशे का दौर चलता है, जिसे 'पोचाई' कहते हैं। पोचाई चावल और बाजरा से तैयार की जाती है। महुआ से जो शराब बनती है, उसे 'माल' या 'मोद' कहते हैं। महुए की शराब का भी इनके बीच काफी प्रचलन है।

इनमें मृतक के शव को जलाने और गाड़ने—दोनों की प्रथा है। मुर्दे को जलाकर छोड़ देते हैं और दो दिनों के बाद उसे देखने जाते हैं। ये कई लोगों का श्राद्ध एक साथ करते हैं। दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार के श्राद्ध को 'सामूहिक श्राद्ध' भी कह सकते हैं। ये ग्राम देवता या गंवाली देवता की पूजा करते हैं। फसल कटने के बाद माघी पूजा होती है। गांव से रोग भगाने के ख्याल से सभी चंदा करके मुर्गों और बकरी की बलि देते हैं। सौरियों के अपने देवी-देवता हैं, जिन्हें 'गोसाइयां' कहते

हैं। इनमें पहले नरबलि की प्रथा थी, किंतु अब नहीं। ये बोरा, बरबट्टी की पूजा करते हैं। भूत-प्रेत में विश्वास रखते हैं। गुरु मंत्र पढ़ता है। सखुआ या आम के पत्ते पर तेल रगड़कर देखता है कि किसको भूत ने पकड़ा है और उससे त्राण पाने के लिए क्या करना चाहिए। इस क्रिया को 'मानसिक' कहते हैं। ओझा वैद्य का भी काम करता है।

इनका मनोरंजन है—नृत्य, भैंस चराना और बांसुरी-वादन। इनके ग्रामीण वाद्य नगाड़ा, ढोल, पैंपी और शहनाई हैं। शादी और श्राद्ध दोनों अवसरों पर ये नाचते-गाते हैं। इनकी स्त्रियां अधिक कामकाजी होती हैं, मर्द आलसी होते हैं। इस जाति में पुरुषों का मानसिक धरातल थारू जाति के पुरुषों के मानसिक धरातल से सहज ही तुल्य है।

हरिमंदिर, पटना (बिहार)

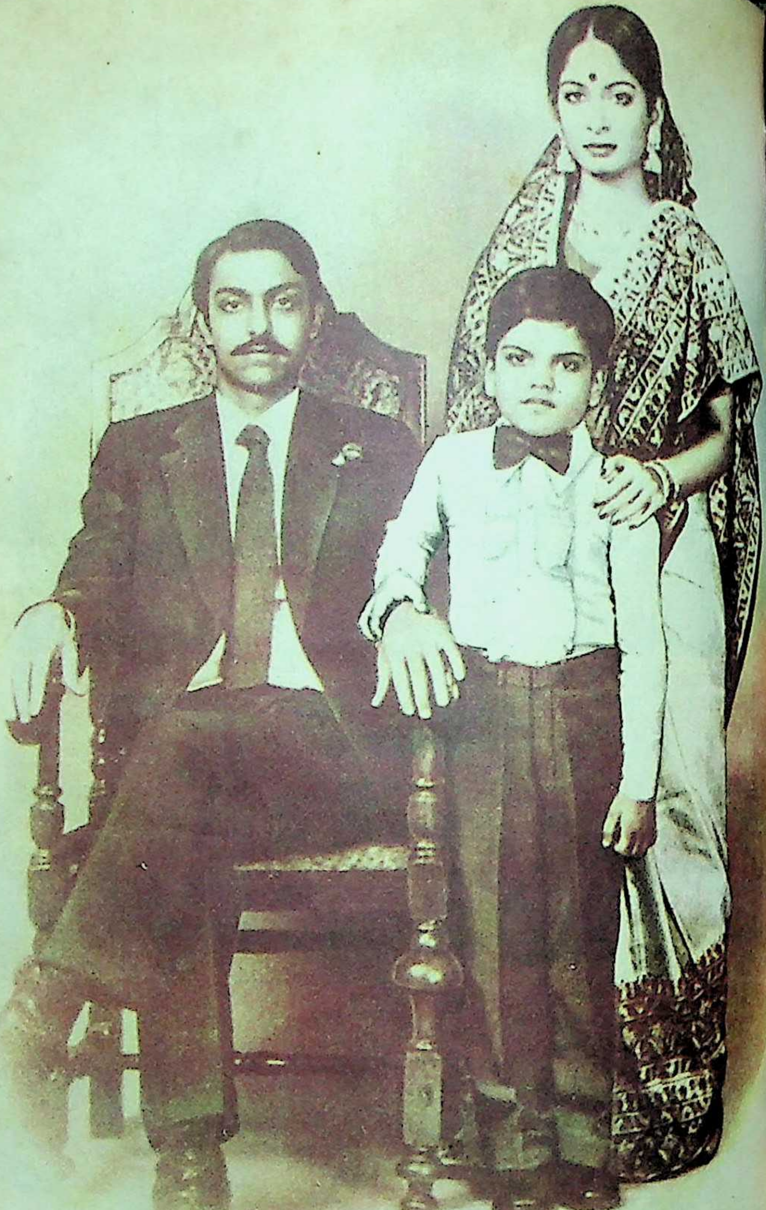

भारत के सबसे पहले सूटिंग
ग्वालियर से आए थे...

MAPP-GR-81-128 HIN

सूटिंर आज भी सर्वोत्तम सूटिंग
ीं से आ रहे हैं.
GWALIOR SUITING
GR
®

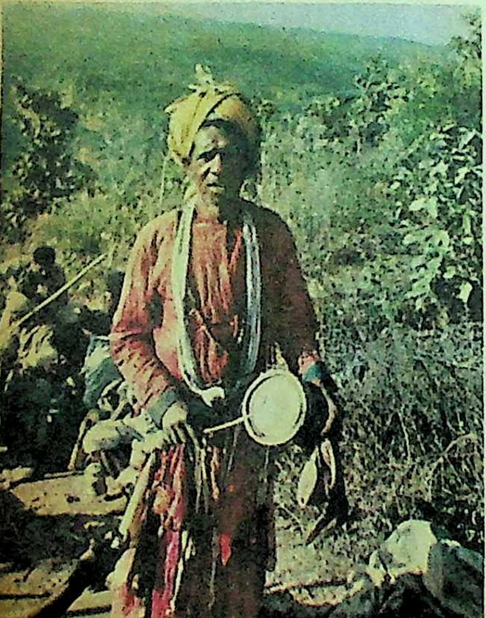

'मैं जब प्रायः दो हजार फुट ऊंचाई पर चढ़ चुका था, तब प्रकृति ने अपने मायावी रूप दिखाने शुरू किये। हर मोड़ पर लालिमा लिये जल-चट्टानों के उफनते पठार से, स्रोत से फूटकर जल नीचे पड़े गोल-गोल पत्थरों पर कलकल नाद करते हुए, गिलहरियों की तरह दौड़ लगा रहा था। झरनों के पथरीले तट हरी-पीली काई से चमचमा रहे थे। मेरी पगडंडी दोनों ओर छाई-हरियाली के बीच अल्हड़ता से अंगड़ाई लेती हुई ऊपर चली जा रही थी। ऊपर पठार पर पहुंचते-पहुंचते शाम हो गयी। जगह-जगह हर्रा, जामुन तथा आम के हरे-भरे वृक्ष, लहलहाते हुए इंगलैंड के पार्कों की याद दिला रहे थे। धीरे-धीरे झाड़ों के पीछे क्षितिज से दूर तीन ऊंची-

फिर वही शाम: नये रंग, नये आयाम

● तेज नारायण

ऊंची चोटियां उठती दिखायी दीं। उनके लाल-काले गात्र पर अस्तांचलगामी सूर्य ने बैंगनी किनारी पहना रखी थी——ये तीन चोटियां थीं——महादेव, धूपगढ़ व चौड़ागढ़ की चोटियां।' ये शब्द थे केप्टन जे. फोरसाईथ के।

आधुनिक पचमढ़ी को बनाने का श्रेय बंगाल लैंसर के केप्टन जे. फोरसाईथ को है, जो सन १८६२ में सबसे पहली बार वहां गये। उन्होंने नरसिंहपुर की ओर से पुराने और कठिन रास्ते से चढ़ना शुरू किया था।

प्राय: इन एक सौ बीस वर्षों में न जाने कितने पथिक वहां पांच-पांडव देखकर अतीत के वैभव में खो गये होंगे, तो दूसरी ओर हांडी-खो की गहराई में झांकते ही दहल गये होंगे। धूपगढ़ की ऊंची चोटी से पश्चिमी क्षितिज में रक्त-वर्णीय सूर्य की शीतल-गरम छैल-छबीली लालिमा देखी होगी, तो महादेव पहाड़ की तराई में महादेव-गुफा के शीतल जल में स्नान करते ही कैलाश पर्वत का सुख पाया होगा।

पचमढ़ी की प्राकृतिक विशेषता उसके गहरे खंद तथा लंबी घाटियों में है, जो प्रकृति की महानता में खोये हुए सैलानी के सामने अचानक आ जाते हैं। उनके सैकड़ों फुट गहरे गर्भ की एक झलक ही रोंगटे खड़े करने के लिए पर्याप्त है। सदियों से जल-धाराएं महादेवजी के तीखे त्रिशूल की तरह वहां की मिट्टी को सैकड़ों फुट खोदती चली गयी हैं। ये गहराईयां पहले पल में बड़ी भयानक लगती

गुप्त महादेव की संकरी गुफा, जिसमें एक समय में एक ही आदमी प्रवेश कर सकता है

हैं, किंतु दूसरे ही पल में बड़ी सुंदर ! पचमढ़ी का पठार सतपुड़ा पर्वत-श्रेणियों के दक्षिण में प्रायः ३५०० फुट की ऊंचाई पर है, जो चारों ओर से ऊंची-ऊंची चोटियों से घिरा है। इनमें ४४५४ फुट की सबसे ऊंची चोटी पश्चिमी छोर पर धूपगढ़ की है। इस तरह इसका आकार एक टूटे-फूटे प्याले-जैसा है।

प्रकृति का मधुर सम्मोहन

धूपगढ़ की चढ़ाई जितनी थकानेवाली है, उतनी ही आनंददायक भी। पूर्व की ओर धूपगढ़ की खड़ी काली-काली शिलाएं उसकी विकरालता का प्रदर्शन करती हैं। ऊपर चढ़ने के रास्ते में हरी-भरी लताओं के वृक्षों से लिपटने से बनी छतरी धूप से बचाती है। सर्दियों में सूर्योदय के समय यदि आप ऊपर चढ़ें, तो ओसमय हरियाली हीरों के कणों से चमचमाते हुए नये-नये रंगों से निखर उठती है। धूपगढ़ की एक शाम यहां जानेवाले हर यात्री के लिए एक अभूतपूर्व अनुभव है।

पचमढ़ी झील : एक विहंगम दृश्य

महाशिवरात्रि का मेला

महादेव पहाड़ की चोटियां महाशिवरात्रि के दिन छोटे-बड़े हजारों सजीव सिरों से आच्छादित होकर जागृत हो जाती है। महाशिवरात्रि के मेलों में चौड़ागढ़ के मेले का विशिष्ट स्थान है। एक समय जब आज-जैसी सड़कें न थीं, भक्तगण बड़ी-बड़ी कठिनाइयां झेलते हुए प्रायः चार हजार फुट की चोटियों पर चढ़कर वहां नीचे महादेव गुफा में उतरकर पहुंचते थे। महादेव गुफा का द्वार महराबाकार है। गुफा पहाड़ के भीतर प्रायः सौ फुट तक चली गयी है। गुफा की छत से ठंडा पानी टपकता रहता है। गुफा के भीतर पानी की पैनी धार से तराशा हुआ शिवलिंग है। शिवरात्रि के प्रायः तीन दिन पहले से यहां धार्मिक हलचल शुरू हो जाती है, जो प्रायः एक सप्ताह तक चलती रहती है। पानी का एकमेव स्रोत यहां बहता हुआ नाला है, जो महादेव गुफा के बांयी ओर से, महादेव पहाड़ी से कुलांचें भरता हुआ

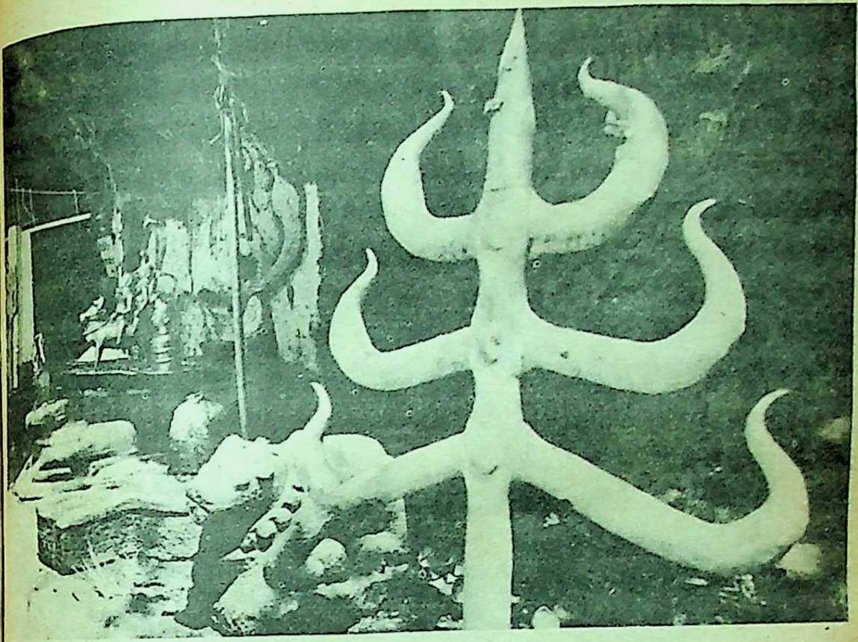

बड़ा महादेव की मेहराबदार गुफा, जिसकी छत से ठंडा पानी टपकता रहता है

नीचे की ओर उतरता चला जाता है।

विकट चढ़ाई : अद्भुत आनंद

उस शिवरात्रि पर मैं भी वहीं था। चौड़ागढ़ पर चढ़ने की चुनौती मेरे कदमों को बार-बार आमंत्रित करती थी। महादेव गुफा से आशीर्वाद लेकर मैंने चौड़ागढ़ की ओर रुख किया। तब शुरू हुआ सिलसिला एक दुष्कर यात्रा का। मेरे आगे कई पथिक आगे बढ़ रहे थे। आगे से कई पथिक चौड़ागढ़ से नीचे उतरकर महादेव गुफा को आ रहे थे। वे मुख्यतः खानदेशी थे। कहीं रास्ते में कोई नवयुवक ढपली बजाते हुए, बैंठा दिखायी दिया, कहीं बाबाजी अपना भूत-भविष्य का लेखा-जोखा खोले दिखायी दिये। कहीं-कहीं पानी का कनस्तर खोले आदिवासी पथिकों से अपने श्रम का मूल्यांकन कराते हुये बैंठे थे। प्रशासन की ओर से जल इस तरह उपलब्ध था, जैसे-अरब देशों से पेट्रोल की आवक!

ऊपर चढ़ते हुए मेरे कदम मंद हो जाते और सांसें फूलतीं, फिर नीचे को उतरने में गति अनियंत्रित होकर बढ़ती। समय कटता हुआ लगता, पर दूरी जानें क्यों कम

न होती थी। मुझे अतीत के वे दिन याद आते, जब मैं हिमालय के मध्य-भाग में पिंडारी हिमनद पर चढ़ा था। यहां की ऊंचाइयां, उतार-चढ़ाव उसकी तुलना में कुछ न थे, किंतु इसका आनंद कुछ और ही था। प्रायः दो-तिहाई रास्ता तय करने के बाद मैंने पथ बदला। प्रचलित मार्ग को छोड़कर आदिवासियों के मार्ग को अपनाया, जो चौड़ागढ़ के उत्तर से पश्चिम को घूमता हुआ छिंदवाड़ा की ओर से आनेवाले खानदेशी भक्तों के मार्ग से जा मिलता है। इन भक्तों की भक्ति में विलक्षण भाव दिखायी दिया। वे प्रायः सभी रुक-रुककर हर-हर-महादेव का नारा गुंजाते, कभी चौड़ादेव की महानता के मराठी गीत गाते—बच्चों से लेकर बूढ़े, सबल से लेकर अबल भी, लाठी या किसी साथी के सहारे एक जोश से बढ़ रहे थे। कई जगह बीच-बीच में पहाड़ों की दो श्रेणियों को जोड़नेवाले संकरे पुलों पर ठसाठस दोनों ओर से जाने-आनेवाले भक्त रगड़ खाते हुए आगे बढ़ते।

अंततः दिन के तीसरे पहर तक मैं ऊपर पहुंच ही गया। चढ़ाई के समाप्त होने के साथ-साथ मेरी कुप्पी का पानी न जाने कब का समाप्त हो चुका था। पानी के नाम पर कहीं-कहीं कोई देशी अंगूर बेचनेवाला समय से लाभ उठा रहा था।

चौड़ागढ़ के ऊपर की अस्सी वर्गफुट की जगह की छटा और भी निराली थी। कदाचित, भारत में किसी अन्य स्थान पर त्रिशूलों का इतना बड़ा संकलन नहीं होगा, जैसा कि कुछ खानदेशी-भक्तों ने सदियों से यहां ला-लाकर किया है। लाल रंग से पुते बड़े-बड़े आकार के त्रिशूल समूह यत्र-तत्र भूमि पर गड़े थे। फिर उनमें बीच-बीच में दूसरे त्रिशूल फंसे थे। इस तरह हर वर्ष इन त्रिशूल समूहों की ऊंचाईयां बढ़ती रहीं हैं, फिर भी प्रतिवर्ष भक्त अपने-अपने त्रिशूलों की स्थापना हेतु इन लगे हुए त्रिशूलों पर चढ़ते नहीं थकते और ऊंचाइयां बढ़ती। त्रिशूल बृहदाकार भी इतने कि दो-दो, तीन-तीन भक्तगण एक त्रिशूल को कंधों पर लादते, तब वह उठता, उत्साह एवं श्रद्धा भी इतनी कि खानदेश के अपने गांवों से वे उसे कंधे पर लादे-लादे, बीच में अन्य मेलों में रुकते-रुकाते चले आते। अब शासन ने प्राचीनकालीन शिवलिंग के स्थान पर शिवजी की एक विशालकाय प्रतिमा स्थापित कर दी है और पुजारीगण वहीं पूजा-पाठ करते हुए वेदमंत्रों से वातावरण को गुंजायमान रखते हैं। ऊपर यत्र-तत्र धूप जल रही थी, मैदान एक दूसरे से टकराती भीड़ से खचाखच भरा था और वातावरण से संपृक्त रूप से घुला हुआ धुंआ आंखों में पानी खींच रहा था। कुछ भक्त उस वातावरण में भक्तिरस में या सोमरस में उन्मुक्त होकर नाचते-गाते, ढपली बजाते त्रिशूलों के समूहों पर चढ़ते-उतरते थे।

कप्तान फोरसाईथ ने अपना अनुभव कलमबद्ध किया है कि जब वे इस महापर्व

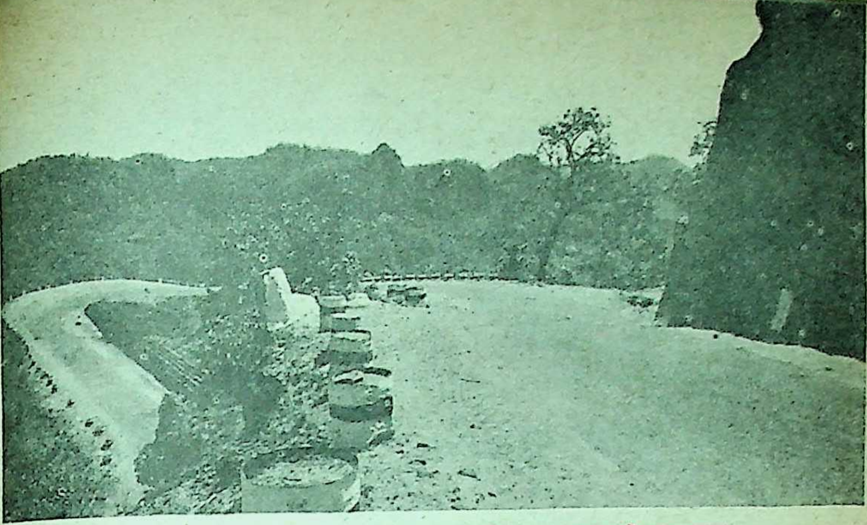

महादेव पहाड़ की घुमावदार चढ़ाई का एक मनोरम दृश्य

पर चौड़ागढ़ चढ़े थे, तब आज-जैसी सुविधाएं उपलब्ध न थीं, लोगों में अंधविश्वास भी खूब था। ऊपर चौड़ागढ़ में धार्मिक सभाएं होती थी, जिनमें पुजारी का व्याख्यान होता। फिर त्रिशूलों पर चढ़ा पुजारी एक त्रिशूल उठाकर हवा में घुमाते हुए भक्तों को भगवान के कदमों पर बलि चढ़ाने को प्रेरित करता। लोग पुजारी तक पहुंचने के लिए धक्का-मुक्की करते व एक-दूसरे पर चढ़ते हुए नाचते-गाते बलि चढ़ाते। देखनेवाली महिलाएं, वृद्धाएं एवं बालकगण भय से चीत्कार करते और पुरुष रक्तरंजित भूमि को चूमते या पागलों के समान रोते-गाते पुजारी को साष्टांग दंडवत करते हुए उसके निकट पहुंचने का प्रयास करते। कुछ महाअंधविश्वासी ४००० फुट ऊंचे चौड़ागढ़ के पूर्व दिशा की खड़ी ऊंचाई से छलांग मारकर नीचे बहती नदी में काली-माई या काल-भैरव के चरणों में अपने प्राणों की आहुति भी दे डालते।

जब सायं चार बजे मैंने नीचे उतरने की सोची, तब चूंकि पहुंचना महादेव था, अतः छिदवाड़ा के पथ के स्थान पर महादेव के पथ को अपनाया, किंतु पथ पूरी तरह 'जाम' था। मुझे आज भी याद है वह दिन जब मुझे कछुआ चाल से भी मंद चलना पड़ा। पद-यात्रियों के 'ट्रैफिक-जाम' में एक स्थान पर ढाई-घंटे बैठ या फिर खड़े होकर काटना पड़ा, क्योंकि व्यवस्था हेतु तैनात पुलिसबल पर्याप्त मात्रा में न था। उतारों पर घिसट-घिसटकर उतरना पड़ा, क्योंकि जनसमूह में अपने ही पैरों तले की धरती न दिखती। इसी बीच अंधेरा हो गया और उस दो घंटे के पथ को पार करने में छ: घंटे लग गये। लगभग दस बजे रात्रि को महादेव पर आ सका।

—३७/ई-१ अरेरा कालोनी, भोपाल

कहानी

बदलते हम

• गोपाल चौरसिया

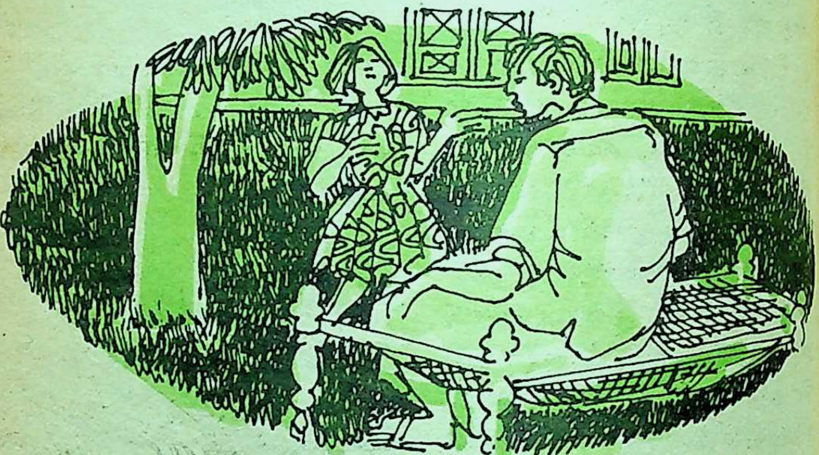

दोपहरी हो चुकी है।

बाहर छोटे मासूम बच्चों के खेलने का स्पष्ट आभास मुझे हो रहा है। सूने कमरे की एक चारपाई पर मेरा निर्जीव-सा शरीर शिथिल पड़ा है। दिन का एक बज चुका है, किंतु अभी तक मुझे खाने को नहीं पूछा गया; अत: बाहर की दोपहरी का भरपूर विकराल सूरज जैसे मेरे पेट में उगा है। एक सम्माननीय मेहमान होते हुए अपनी इस उपेक्षा के कारण मैं तिलमिलाया हुआ हूं। लेकिन, पांच वर्ष पूर्व ऐसा नहीं था, जब सुधा के विवाह में मैं यहां आया था।

तब ऐसा लगता ही नहीं था, जैसे मैं किसी मुंह-बोली बहन की पुत्री के विवाह में शरीक हुआ हूं। सारा दारोमदार तब मेरे ही ऊपर था। क्योंकि, उससे भी, दस वर्ष पहले के मेरे संबंध वैसे ही अटूट थे। दीदी व जीजाजी मेरी सलाह के बगैर कोई मामूली-सा काम भी नहीं करते थे, जबकि दोनों ही मेरे कोई रक्त-संबंधी नहीं थे। दीदी मेरे पड़ोस की थीं। उनके पिता बहुत गरीब थे। दीदी का रिश्ता भी बड़ी मुश्किल से हुआ था। उन दिनों सचमुच मैं दीदी के लिए एक पैर से सारे कॉलेज का चक्कर लगा आता था। गर्मियों की चिलचिलाती दोपहरी में उनका सामान लाना मेरे लिए अत्यंत मामूली-

सा काम था। कभी-कभी सुरक्षा या सहारे के लिए वे मुझे बाजार ले जातीं, तब मेरा मन खुशी से हुलक उठता था। कितने अच्छे दिन थे वे।

लेकिन, आज . . . जबकि मंजरी का विवाह है।

यह आज का संदर्भ ही मेरे तमाम संवेदनात्मक रिश्तों की सार्थकता पर प्रश्न-चिह्न बनकर, मेरे सामने मुंह-बाये खड़ा है। मैं बार-बार करवट बदलकर सहज होने की असफल कोशिश करता हूं। मैं फिर सोचता हूं कि सारे मेहमान खाना खा चुके हैं, और अब गपशप की तैयारी में मशगूल हैं, जबकि मैं अपनी उपेक्षा के कारण, तिस पर भी भूखा, मारे क्रोध और झुंझलाहट से बौखला जाता हूं। तभी अचानक खिलखिलाहट के मुक्त-स्वर से पास का कमरा गूंज गया। मालूम हुआ, मंजरी की सहेलियां और उसके 'बॉय फ्रेंड' उससे चुटकी ले रहे थे। सभी के बदन पर रंग-बिरंगे कपड़े। कुछ की आंखों पर शो-दार चश्मा। रूखे, पर बेतरतीब से सजाये गये बाल और होंठों पर हिंदी-अंगरेजी के मिले-जुले भारी-भरकम शब्द।

मंजरी दिनभर इन्हीं के साथ व्यस्त रहती है, कभी कार्ड बांटने का काम, तो कभी साड़ी खरीदने की योजना, कभी स्टेज की रूप-रेखा की तो कभी बारातियों के मनोरंजन के लिए 'आर्केस्ट्रा-पार्टी' के प्रबंध की चिंता। सभी तरह के युवक और सभी तरह की चिंताओं से युक्त। पर एक आश्चर्य!

कल ही दीदी बताते-बताते गदगद हो उठी थीं कि कैसे मंजरी के एक सहपाठी पवन ने, जिसे मंजरी ने भाई माना हुआ है, सारा सामान, कपड़े, बर्तन व शामियाना सभी कुछ दौड़-दौड़कर अपने मिलनेवालों से किफायती रेट पर तय करा दिये। बेचारा खुद ही भाग-भागकर सब कर रहा है। पवन सचमुच ही एक अच्छा लड़का है।

◆ ◆

लेटे-लेटे उकताहट बहुत बढ़ जाती है।

मैं एक झटके में उठकर बैठ जाता हूं। बाहर एकदम मुर्दनी शांति छायी हुई है। बच्चे भी धीरे-धीरे करके शायद, जा चुके

हैं। मेरे अंदर की चिड़चिड़ाहट और तीव्र हो जाती है। इसी समय एक अबोध बच्ची सामने आ खड़ी होती है, कहती है, "मामाजी, आप खाना खाने चलिए।"

"लेकिन, आपसे किसने कहा है?" मैं पूछता हूं।

बच्ची ने जवाब दिया, "किसी ने नहीं, ऐसे ही . . . हम कहते हैं, चलिए... ।"

सुनकर मुझे एक अजीब-सी बेचैनी होती है। मारे क्रोध के मैं हांफने लगता हूं और बहुत सावधानी से बच्ची को टाल देता हूं। फिर, पेंट की जेबों में हाथ डालकर बाहर सड़क पर आ जाता हूं। उस समय मेरे मुंह में एक अजीब-सी घृणाभरी कड़वाहट छूट रही होती है।

दो घंटे बाद जब लौटता हूं, तब दीदी पवन के साथ बड़े आत्मीय भाव से खाना खा रही होती हैं। मुझे देखकर अचानक उनके चेहरे का रंग फीका पड़ जाता है। इतना तो आज भी वे मुझे पहचानती हैं कि मेरा मूल-स्वभाव क्या है? मैं चुपचाप सीधे अपने कमरे में चला आता हूं। वे बुलाती रह जाती हैं।

कुछ ही क्षणों में दीदी मेरे पीछे आकर कहती हैं, "तूने खाना खाया?"

"हां, जीजाजी ने अपने हाथ से खिलाया था।"

वे चुप रहीं, क्योंकि शायद वह मेरे क्रोध को भांप गयी थीं, "तेरा 'मूड' ठीक नहीं है क्या?" उनका दूसरा प्रश्न था।

"मंजरी के भाई का तो ठीक है न..." मैंने जवाब दिया।

"क्या मतलब?" वे चौंकीं, "उसने तुझसे कुछ कहा? या फिर. . .?"

किंतु मैं चुप रहा। वे चली गयीं। साथ में धमकी भी दे गयीं कि यदि मैंने खाना नहीं खाया, तो वे भी नहीं खायेंगी। मैं समझता हूं, वे भांप गयी होंगी, परंतु... बात आयी-गयी हो गयी। मैं धीरे-धीरे सामान्य होता गया। फिर भी, मन दिन-भर अनमना-सा रहा। उन्होंने भी फिर कोई 'रिसपोंस' नहीं दिया।

●●

रात्रि के लगभग आठ-नौ बजे हैं।

दीदी के रूखेपन और उपेक्षापूर्ण व्यवहार से मैं जला-भुना हूं। अब पेट भरा

हुआ है, फिर भी एक तीखा अहसास अंदर ही अंदर अपने पैनेपन के साथ तीव्र हड़कंप मचाये हुए है; जिससे मेरी धड़कन हर क्षण बढ़ती जाती है। न आंखों में नींद है, न मन में धैर्य। सोचता हूं, मंजरी के भांवरों तक तो रुकना ही है, तभी अचानक मंजरी का स्वर सुनायी दिया।

सांस साधकर मैं बिलकुल मौन हो गया। सिर्फ मेरी सांस का धीमे से निकलनाभर ही मुझे सुनायी दे रहा था। तथापि, मैं स्पष्ट नहीं सुन सका, मंजरी कह रही थी, वही मंजरी, जो अब जवान हो गयी है, जब वह अपनी नानी के यहां आती थी, तब मेरे से ही चिपकी रहती थी। दिन-दिनभर मैं उसे घुमाता-फिराता। इस बात पर सुधा और उसमें अकसर 'टसल' रहती थी। दीदी तब मुझे हमेशा एक गर्वभरे भाव से देखतीं और मंजरी को मेरा अत्याधिक आदर करने को विवश करतीं। वही तोतली मंजरी आज कुछ कतिपय शब्दों के उच्चारण सीख जाने पर कह रही थी, 'नहीं माम, नहीं, मैं नहीं जाती उस बोर-मामा के बच्चे के साथ, वह 'ड्राई-नेचर' का है। आप मानिए न, सारी पिक्चर का मजा खराब हो जाएगा।'

समय के कुछ अंतराल से मैंने सुना, वह दीदी का ही स्वर था, 'अच्छा बाबा, जो तुझे दिखे कर, पर सीधे घर लौटना। और हां, पवन के साथ भी तेरा इतना पिक्चर देखना मेरी समझ में नहीं आता। यह तू ध्यान रख . . .।'

शब्द अधूरे ही रह गये। मुझे आभास हो गया कि निश्चय ही मंजरी, दीदी की अनसुनी करके चली गयी है। दीदी ने जहां मेरे सम्मानार्थ कुछ नहीं कहा, वहां दूसरी गलती, शंका होने पर भी उन्होंने मंजरी को पवन के साथ चाहे-जैसी फिल्म जाने के लिए नहीं रोका। दोनों बातों के प्रति उनके इस झुकाव को मैं अचानक समझ नहीं सका।

* * *

आज रात्रि को बारात का आगमन है।

स्वागत-तैयारियां जोर-शोर से शुरू हो गयीं। बड़े सबेरे उठकर जीजाजी मुझे साथ लेकर साग-भाजी लेने सब्जी-मंडी चल दिये। दिन में बिजली फिटिंग शामि-

याना, फर्श, स्वागत-द्वार आदि का प्रबंध किया जाता रहा। जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया, भीड़ बढ़ती गयी। कालेज के ही वे 'अल्ट्रा-मॉर्डन' लड़के तंग लिबासों में इधर-उधर मंडराते दिखायी देते हैं। सारे वातावरण में एक हांफती हुई-सी उत्तेजना दिनभर व्यापी रही। मंजरी की सहेलियों का हुजूम भी बढ़ने लगा। उस समय मैं पड़ोस के एक सज्जन से कुछ बातचीत कर रहा था, तभी जीजाजी की तेज आवाज कानों में आ पड़ी।

●

हम दोनों उनकी तरफ लपके।

भीड़ में घुसकर मैंने देखा, जमीन पर पवन पड़ा हुआ है। लगता था, उसे बेहोशी है। किंतु जोर देकर पूछने पर बोलता भी था। इस अजीब-सी बेहोशी से मुझे शंका हुई। पूछने पर मालूम हुआ कि उसे अचानक कुछ हो गया है। पर हुआ क्या है, इसका कुछ ठीक उत्तर नहीं देता। सब लोग बहुत देर से परेशान हैं। सारा तमाशा मेहमानों के सामने! मैंने देखा, एक तरफ खड़ी दीदी के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही हैं, जीजाजी उत्तेजित हैं। पूछने पर बड़ी मुश्किल से किसी औरत ने फुसफुसाया, 'मरा कहता है . . . मंजरी आज चली जाएगी।'

सुनते ही मुझे समझने में देर नहीं लगी, पलभर में ही सब भांप गया, लेकिन अंदर से एक झुरझुरीयुक्त घृणा और आवेश बढ़ आया। पास पहुंचकर मैंने बलपूर्वक पवन को उठाया व तेज स्वर में उससे कहा, "तुम्हारी ही अनोखी बहन ससुराल नहीं जा रही, सारी दुनिया का यही रिवाज है। तुम्हें मालूम है, यह सब कितना भद्दा लग रहा है? जरा देखो तो सही!" और जबर्दस्ती उसे एक ओर ले गया। वह भी लुंज-पुंज-सा होकर चलने लगा। इस समय हर आदमी तरह-तरह की कांव-कांव में शरीक था। जैसे-तैसे मामले को दबाया गया। काम आगे बढ़ा। बारात आयी और सब कुछ ठीक-ठाक रहा। पवन की भी हिम्मत फिर कोई नयी बात खड़ी करने की नहीं हुई।

●

दूसरे दिन मंजरी विदा भी हो गयी।

तत्पश्चात, धीरे-धीरे सारे मान्य मेहमान-गण जाने प्रारंभ हो गये। सब कुछ सहज ढंग से निपट चुका था। फिर भी, कल की घटना से दीदी अंदर से दहशत खायी हुई लगतीं थीं। जीजाजी अवसादभरे मन से खिन्न थे। मेरा भी चलने का क्रम आया। बड़े सहज ढंग से मैंने दीदी के पैर छुए और विदा मांगी, लेकिन तभी दीदी पल्लू में मुंह छिपाकर सिसकने लगीं।

लाख मना करने पर भी, दोनों मुझे काफी दूर तक छोड़ने चले आये। एक खास प्रकार की आत्म-स्वीकारोक्ति उनके व्यवहार से झलकती थी। चलते में दीदी ने कहा, "कुछ मन में लेकर मत जाना। मैं माफी मांगती हूं, जो कुछ हुआ वह . . .।"

लेकिन मैंने उन्हें आगे नहीं बोलने दिया. और हर तरह से आश्वस्त किया।

बमुश्किल दीदी व जीजाजी लौटकर गये हैं। बस छूटने में देरी है। बस-अड्डे पर दोपहरी की काटती हुई धूप, यात्रियों के कांव-कांव का स्वर चारों तरफ है। दमघोंटू उदासी सारे वातावरण में पसरी हुई है।

●●

पिछले आठ दिनों की ऊब से मुक्ति का हलका-सा आभास मेरे जहन में समाया हुआ है। उपेक्षा और अनादर की आत्मग्लानिभरी हूक कभी-कभी मेरे दिल को चोट पहुंचा जाती है। अत: एक अजीब से पशोपेश के दरम्यान मेरी आंखों में कभी रूखे व्यवहार की, तो कभी बिलखती हुई-दीदी की सूरत कौंध जाती है. और तब मैं पसीजता हुआ-सा लगता हूं। अंदर से उद्वेग भी उठता हुआ मुझे महसूस होता है। इसी कारण मैं निश्चित नहीं हो पाता हूं कि आखिर मेरी आंतरिक सहमति अब दीदी के संबंध में क्या है? क्या मेरा मन फिर कभी यहां लौटने को राजी होगा या फिर ?

तभी मुझे एकाएक पवन याद हो आता है। अपने और उसके विषय में कुछ प्रश्न तेजी से मेरे दिमाग में गड्ड-मड्ड होने लगते हैं। बस चलने की घरघराहट शुरू हो जाती है। मेरी धड़कन एकाएक घरघराहट में बदलने लगती हैं, और मैं किसी निश्चय पर न पहुंच पाने की वजह से लुंज-सा होने लगता हूं।

—कंपूरोड, रॉक्सी टॉकीज के सामने,
ग्वालियर-४७४००१

आराधना

स्वामी रामकृष्ण परमहंस से किसी ने प्रश्न किया, "संसार के कार्यों में व्यस्त रहते हुए ईश्वर की आराधना संभव है या नहीं ?"

परमहंसजी ने हंसकर उत्तर दिया, "ग्रामीण स्त्री को तुमने चूड़ा बनाते हुए तो देखा ही होगा। वह अपने एक हाथ से चूड़ा हटाती जाती है और दूसरे हाथ से बच्चे को गोदी में लेकर दूध भी पिलाती जाती है। यदि कोई पड़ोसिन या अन्य उस समय उसके पास आ जाता है, तब वह उससे बातें भी करती जाती है। खरीददार आने पर वह उससे हिसाब भी करती है। किंतु उसका कार्य पूर्ववत चलता रहता है। इस सब कामों के करते रहने पर भी उसका मन हर समय ओखली और मूसल में ही रहता है। वह जानती है कि यदि कोई चूक हुई, तो मूसल हाथ पर गिरेगा और वह टूट जाएगा। इसी तरह संसार में रहते हुए सभी काम करो, किंतु मन भगवान में ही रखो, अन्यथा अनिष्ट हो जाएगा।"

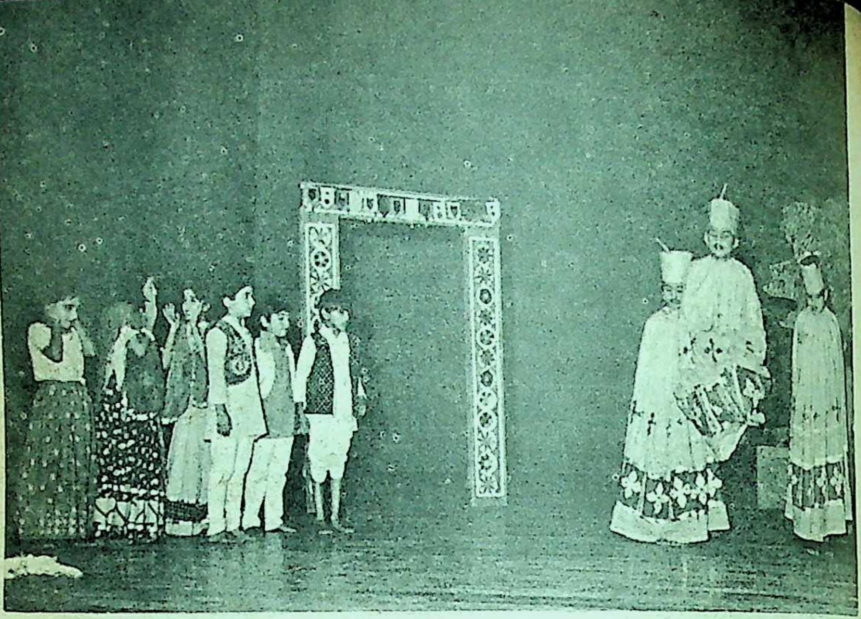

ऊपर : लेखिका द्वारा निर्देशित बाल-नाटक 'दीवाली के पटाखे' का एक दृश्य

बाल-नाटक और बाल-रंगमंच

• रेखा जैन

१९७९ में अंतर्राष्ट्रीय बाल-वर्ष के सिलसिले में बाल-रंगमंच को भी, जो थोड़ा-बहुत महत्त्व मिला और जो अनेक प्रदर्शन-उत्सव हुए, उनसे बाल-रंगमंच से संबंधित अनेक पक्ष उभरकर सामने आये। जैसे—कई उत्सवों में इतने सारे बच्चों द्वारा खेले गये नाटक देखकर, मन इस बात से तो बहुत खुश होता था कि अब विभिन्न स्कूलों में नाट्य-कला को पहले की अपेक्षा काफी बढ़ावा दिया जा रहा है। पर, साथ ही नाटकों के कथानक को देखकर मन बड़ा उदास हो जाता था, क्योंकि उनमें से अधिकतर नाटकों में न तो बालकों के योग्य मनोरंजन था, न ही उनके जीवन से संबंधित कथानक, जिसमें वे अपने आपको डुबा सकें।

यह ठीक है कि पिछले वर्षों में पहले की अपेक्षा अनेक साहित्यकारों का ध्यान बाल-नाटक लिखने की ओर अधिक गया है। बच्चों के मनोविज्ञान, उनकी समस्या तथा समाधान एवं रुचि को ध्यान में रखकर इधर कई नाटक लिखे गये हैं।

यह समस्या किसी हद तक बंगला

और मराठी बाल-नाटकों की नहीं है। वहां की नाट्य-परंपरा हिंदी के मुकाबले कहीं अधिक समृद्ध और विकसित है। विशेषकर, मराठी-भाषी लोगों के जीवन में तो नाटक मनोरंजन का एक आवश्यक अंग है। वहां एक-एक नाटक सैकड़ों बार खेला जाता है। इसलिए मराठी में बच्चों के नाटक बहुत बड़ी संख्या में लिखे गये हैं, जो कलात्मक दृष्टि से ऊंचे स्तर के हैं और बच्चों के मन पर भी प्रभाव डालनेवाले हैं। बंबई के लिटिल थियेटर द्वारा मराठी बाल-नाटकों के एक हजार से अधिक प्रदर्शन किये जा चुके हैं, जो वहां पर बाल-नाटक की लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण है। हिंदी में यह नियति न जाने कब आएगी?

बाल-रंगमंच की शुरूआत

दिल्ली में ही, वर्षों टक्कर खाने के बाद, अब नरेंद्र शर्मा अपनी संस्था 'भूमिका' के अंतर्गत कुछ बाल नृत्य-नाट्य नियमित रूप से बच्चों के लिए कर पाये हैं; और शायद, पहली बार बच्चों और बड़ों को कुछ महीने तक हर शनिवार-रविवार को इस मंडली के बाल-कार्यक्रम देखने को मिल सके हैं। यह कार्यक्रम नृत्य-नाटिकाओं का है, जिसमें नृत्य, संगीत, अभिनय का समावेश होने के कारण अधिक आकर्षक लगता है, पर फिर भी, इस प्रयोग से यह आशा बनती है कि यदि हिंदी में अच्छे बाल-नाटक लिखे जाएं और खेले जाएं, तो मराठी की तरह यहां भी नियमित रूप से बच्चों का थियेटर चल सकता है।

अच्छे बाल-नाटकों के लिए लेखकों को बच्चों की दुनिया में बिचरना होगा—ऐसे नाटक, जिनमें बच्चों के ही स्तर पर उनकी बात इस ढंग से कही जाए कि उनकी कल्पनाशक्ति और सर्जनात्मक अभिव्यक्ति अधिक से अधिक उभर सके।

'बिल्ली का खेल' शीर्षक बाल-नाटक का एक दृश्य

बाल-नाटक कैसे हों ?

बाल-नाटकों के विषय में विचार करते समय यह बात भी सोचना जरूरी है कि नाटकों में कौन-से विषयों को लेना चाहिए। बहुत-से लोगों का मत है कि बच्चों के लिए परी-लोक अथवा ऐसी ही काल्पनिक कथाओं की अपेक्षा रोजमर्रा की समस्याओं पर आधारित नाटकों को चुनना चाहिए। मेरे खयाल से नाटक हमें बच्चों की उम्र के हिसाब से चुनने चाहिए। यदि हम ध्यान से देखें, तो पायेंगे कि छोटे-छोटे ६ से ८ वर्ष की उम्र के बच्चों को कल्पनालोक में विचरण करानेवाली कहानियां ही अधिक आकर्षित करती हैं। ऐसी कहानियां सुनते समय उनका मन एकदम उसमें डूब जाता है। अच्छे-बुरे चरित्रों के साथ वे तुरंत ही एक अनोखा रिश्ता स्थापित करके, स्वयं भी कल्पनालोक में विचरण करने लगते हैं। हर चरित्र के लिए वे अपने सुझाव देते हैं, और उस समय उनकी आंखों की चमक से पता चलता है कि वे ऐसी कहानी से कितने एकाकार हो गये हैं। बच्चों की अपनी छोटी और अनोखी दुनिया होती है। वे शुरू से ही कल्पनालोक में सैर करते रहते हैं। लकड़ी का घोड़ा, एक दूसरे की कमीज या फ्राक पकड़कर लाइन में चलकर रेल की सैर, घर की ही कुछ चीजों, कुरसी, मूढ़े, गद्दी आदि को अलग-अलग ढंग से रखने पर उनकी गुफा, पहाड़, पेड़ आदि बन जाना आदि कल्पनालोक में विचरण ही तो हुआ। ऐसे बच्चों के ऊपर प्रारंभ से ही सामाजिक चेतना या जिम्मेदारी थोपना कहां तक उचित होगा, यह विचारणीय प्रश्न है ?

इसी तरह कुछ लोगों का विचार है कि बच्चों के नाटकों में दृश्यबंध अथवा वेशभूषा आदि भी काल्पनिक न होकर साधारण रोजमर्रा की होनी चाहिए। मेरा अपना विचार है कि बच्चों में सौंदर्य-बोध जगाने अथवा उनके स्वस्थ मनोरंजन के लिए, जहां तक हो सके, हमें सुंदरता पर जोर देना चाहिए और नाटक में सुंदर से सुंदर प्रस्तुतिकरण की कल्पना करनी चाहिए। बच्चे जितने छोटे होते हैं, चटख रंग उन्हें उतने ही अधिक प्रिय लगते हैं। प्रतीकात्मक की बजाय रंग-विरंगी मंच-सज्जा उन्हें अधिक आकर्षित करती है, बच्चों के नाटकों को कम खर्च में निपटाने की प्रवृत्ति बच्चों के साथ अन्याय है।

ताल-लय और अभिनय

रूप-सज्जा, वेशभूषा के लिए भी यही कहा जा सकता है। बच्चों को वे ही चीजें अधिक प्रिय लगती हैं, जो चमक-दमकवाली और रोजमर्रा की जिंदगी से कुछ भिन्न हों। वैसे भी, बच्चों में सजने की बड़ी प्रवृत्ति होती है। नाटक शुरू होने से पहले ही हर बच्चा, राजा, रानी, परी आदि बनना चाहता है, क्योंकि वह जानता है कि उसकी वेशभूषा तड़क-भड़कवाली होगी, चाहे उसका पार्ट कितना ही कम क्यों न हो। भिखारी, किसान आदि

लेखिका

चरित्रों के लिए उन्हें मनाना पड़ता है।

ताल-लय, संगीत भी उनके मन को आनंद पहुंचाता है। बल्कि छोटी उम्र के बच्चे लयबद्ध नाटकों में अधिक दिलचस्पी लेते हैं। तबले की लय के साथ चलने, फिरने, बोलने से उनके मन की झिझक दूर हो जाती है और शुरू से ही उनमें लय, संगीत और अभिनय का इतना प्रारंभिक ज्ञान हो जाता है कि बाद में उन्हें किसी भी तरह के नाटक करने में असुविधा नहीं होती। साथ ही लयबद्ध नाटक में तुकबंदी होने के कारण एक लाभ यह भी होता है कि अन्य बच्चे भी पूरा नाटक याद करके सभी पात्रों का अभिनय करना सीख जाते हैं। परंतु जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं, वे स्वयं ही यथार्थवादी नाटक पसंद करने लगते हैं, लयबद्ध बातों की बजाय बोल-चाल की भाषा में कुछ हास्य व गंभीर नाटक खेलना चाहते हैं।

अभिनय कौन करे

अब प्रश्न यह है कि ये बाल-नाटक कैसे खेले जाएं? बच्चे स्वयं अभिनीत करें या बड़े अभिनेता बच्चों के नाटकों को प्रस्तुत करें? जब हम बच्चों के लिए नियमित बाल-मंच बनाने की कल्पना करते हैं, तब यह जाहिर है कि यह काम केवल बाल-कलाकारों द्वारा नहीं हो सकता। बच्चे अपनी पढ़ाई छोड़कर अधिक समय लगातार नाटक करने के लिए नहीं दे सकते। इसीलिए, लगता है कि बड़ों द्वारा नियमित नाटक मंचित होने पर ही बाल-मंच का विकास हो सकता है। उस प्रकार नाटककारों का दायित्व और भी बढ़ जाता है। यह आवश्यक हो जाता है कि एक, वे ऐसे नाटक लिखें, जिन्हें बच्चे स्वयं मंचित करें और दूसरे, नाटक ऐसे हों, जिन्हें शिक्षित नाट्य-अभिनेता बच्चों के लिए प्रस्तुत कर सकें। मराठी थियेटर के विकास का, उसके अधिक पनपने का यही कारण है कि वहां विख्यात नाटककार, विख्यात अभिनेता और निर्देशक बच्चों के लिए बाल-नाटक लिखते और खेलते हैं।

जहां तक बाल रंगमंच का सवाल है, उसकी समस्या हमारे पूरे देश में एक ही तरह की है। बच्चों के नाटकों की रिहर्सल करने के लिए स्थान नहीं मिलता। दूसरे, नाट्य-प्रशिक्षणों के लिए अभिभावकों का सहयोग भी अनिवार्य है। लेकिन बहुत-से अभिभावक पूरा-पूरा सहयोग नहीं देते।

बाल-नाटक क्यों जरूरी है

बच्चों के समूचे विकास के लिए केवल पढ़ाई ही काफी नहीं है। उनकी सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के लिए उनमें सामाजिक-दायित्व, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व के विकास के लिए सांस्कृतिक गतिविधियां बहुत आवश्यक हैं।

अकसर देखा गया है कि नाटकों में भाग लेनेवाले बच्चों में एक अद्‌भुत आत्मविश्वास पैदा हो जाता है। पढ़ाई-लिखाई में उदासीन व डरपोक स्वभाव के बच्चों के भी पूरे व्यक्तित्व में निखार आ जाता है, उनकी झिझक टूटने से वे अधिक सामाजिक तो बन ही जाते हैं, साथ ही बहुत बार पढ़ाई-लिखाई में भी अधिक दिलचस्पी लेने लगते हैं।

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए कुछ शिक्षण-संस्थाओं में वार्षिक-उत्सव आदि के मौके पर नाटक खेले जाते हैं, जो बच्चों के लिए बड़े उमंगभरे होते हैं। पर, सवाल यह है कि ऐसे शिक्षण-संस्थान हमारे यहां हैं कितने ? बच्चे हमारे देश के भविष्य हैं। बचपन से जो बुनियाद डाली जाती है, उसका उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चों के समूचे विकास के लिए वर्तमान शिक्षा-पद्धति में सुधार किया जाना जरूरी है। यदि उनकी शक्ति को सांस्कृतिक और सर्जनात्मक कामों की ओर नहीं लगाया गया, तो हम उनकी ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों को रोक नहीं सकेंगे। इसलिए जरूरत इस बात की है कि इस दिशा में ठोस कदम उठाये जाएं। जैसे—शिक्षा में, नाटकों को भी एक विषय बना दिया जाए। नाटक को इसलिए कि यह एक ऐसी विद्या है, जिसमें नृत्य, संगीत, चित्र-कला, अभिनय और साहित्य आदि सभी का समावेश है।

शुरू-शुरू में यह किया जा सकता है कि कुछ प्रशिक्षित रंगकर्मी (जिनके प्रशिक्षण में बाल-मनोविज्ञान का अध्ययन एक महत्त्वपूर्ण अंग हो) कुछ समय के लिए गांवों, कस्बों और शहरों के छोटे स्कूलों में जाकर काम करें, और बच्चों में नाटक के प्रति अभिरुचि पैदा करें। इस से नाटक में प्रशिक्षित लोगों को काम भी मिलेगा और उनका इस दिशा में परिश्रम सार्थक भी होगा। शिक्षा में नाटक को स्थान मिलते ही, न केवल बाल-रंगमंच की, बल्कि समूचे नाट्य-मंच की स्थिति में अभूतपूर्व परिवर्तन आ सकता है।

—आई ४७, जंगपुरा एक्सटेंशन
नयी दिल्ली-११००१४

एक युवती ने अपनी सहेली को अपना मंगेतर दिखाया। सहेली ने कहा, "लड़का तो ठीक है, लेकिन हंसता है, तो दांत बाहर आ जाते हैं।"

"उसकी चिंता मत कर, शादी के बाद मैं उसे हंसने का मौका ही नहीं दूंगी।"

विचार-दीर्घा—१४ में चर्चा का विषय था 'उर्दू की समस्या का हल, उसे देवनागरी लिपि में लिखे जाने में है ।' चर्चा में भाग लेनेवाले अधिकांश पाठकों ने इस विचार से सहमति प्रकट की है।

विचार दीर्घा

• एम. सी. सांख्यधर

उर्दू की समस्या का हल देवनागरी लिपि में खोजने से पूर्व अपेक्षित है किस की समस्या को समझा जाए, और इसके लिए नितांत अनिवार्य यह जानना है कि उर्दू क्या है? उर्दू को इस प्रकार पारिभाषित किया जा सकता है कि 'देवनागरी लिपि में जिसका नाम हिंदी है, फारसी लिपि में उसे उर्दू कहते हैं। उदाहरणार्थ, 'कहिए, साहब क्या हाल है?' यदि देवनागरी में लिखा जाएगा, तो हिंदी कहलाएगा और फारसी लिपि में लिखा जाएगा, तो उर्दू कहा जाएगा। यही वाक्य कि 'कहिए, श्रीमान क्या समाचार है?' फारसी लिपि में लिखा जाए, तो हिंदी नहीं माना जाएगा और 'कहिए, जनाब मिजाज शरीफ है?' देवनागरी में लिखे जाने पर उर्दू की मान्यता नहीं ले सकेगा। जबकि फारसी-निष्ठ हिंदी का नाम उर्दू होना चाहिए। तात्पर्य यह है कि 'उर्दू' संज्ञा आत्मा की नहीं, आवरण की है। इसका प्रमुख कारण है कि उर्दू की अपनी आत्मा—वाक्यरूप एवं व्याकरण, है ही नहीं।

दूसरी, महत्त्वपूर्ण बात समस्या की है। इसे समझने के लिए आवश्यक है कि यह जान लिया जाए कि उर्दू के पक्षधर कौन हैं, और क्या चाहते हैं? पक्षधर चाहे जो हों, हिंदी निश्चित रूप से जानते हैं, और यदि नहीं भी जानते हों, तो सरलता से सीख सकते हैं। हां, एक चीज है, जिसे वे नहीं जानते या जानना नहीं चाहते, और वह है—देवनागरी लिपि, जिसे वे हिंदी मानते हैं। यही है उर्दू की समस्या। अब यदि बिना लाग-लपेट के इस प्रश्न का कि वे चाहते क्या हैं, उत्तर दिया जाए तो है—अलगाव। और अलगाव फारसी लिपि के बिना संभव नहीं। ऐसे लोग फारसी लिपि में लिखित संस्कृत को भी उर्दू मान लेंगे, किंतु देवनागरी में लिखी गयी फारसी को भी उर्दू नहीं मानेंगे, क्योंकि उर्दू नाम पर उनका इरादा भाषायी विवाद से कहीं अलग है।

—महात्मा गांधी इंटर कालेज
मंडावर, बिजनौर

पुरस्कृत विचार के अतिरिक्त

शिवदयाल बहुगुणा, देहरादून; मदनमोहन सिन्हा, टुण्डू, धनबाद; हीरालाल जैन, कोटा; शकुनचंद गुप्त, लालगंज, रायबरेली; अपर्ण चतुर्वेदी 'प्रीता', कलकत्ता के विचार भी प्रशंसनीय रहे।

भूमि छीनी सागर से कैसे

● गगन प्रसाद

पृथ्वी के बहुत बड़े भाग पर सागर-कुटुंबों ने अधिकार जमा रखा है, जबकि मानव को रहने के लिए आज पर्याप्त जगह नहीं मिल पा रही। यह सागर का मानव के साथ अन्याय नहीं तो और क्या है? क्या सागर के इस अन्याय का प्रतिकार नहीं किया जा सकता? क्या उससे जमीन नहीं छीनी जा सकती? जमीन छीनना, वह भी सागर से असंभव-सा लगता है, लेकिन इसे संभव कर दखाया है, नेदरलैंड के साहसी पृथ्वी-पुत्रों ने।

नेदरलैंड यूरोप के पश्चिम में उत्तर सागर के पूर्वी तट पर मुख्य-भूमि से जुड़ा एक नन्हा-सा देश है, जिसका क्षेत्रफल हमारे केरल राज्य के बराबर है। नेदरलैंड के बारे में कहते हैं कि 'जब ईश्वर ने पृथ्वी की रचना की थी, तब यह देश भू-मानचित्र पर नहीं था, कालांतर में इसके बेटों ने इसे जन्म दिया, वह भी सागर से धरती छीनकर।' कितनी विलक्षण उक्ति है! बेटे पहले, धरती अनंतर!

आइए, हम पहले इन बेटों की ही बात करें। हालैंड प्रवासकाल में एक दिन मैं सपत्नीक सागर के तट पर टहल रहा था। सागर में ऊंची-ऊंची लहरें उठ रही थीं। दूर से आती इन लहरों को देखकर ऐसा प्रतीत होता, जैसे लील जाएंगी हमें, लेकिन वे कभी-कभार केवल हमारे पैरों को छूकर ही वापस चली जातीं। सहसा हमारी दृष्टि पड़ी एक अबोध शिशु पर, जो बालू पर अकेला नंग-धड़ंग पड़ा था। उसके पैर समुद्र की ओर थे। जब भी लहरें आतीं, वह बालक तीव्र गति से अपने हाथ-पांव चलाने लगता,

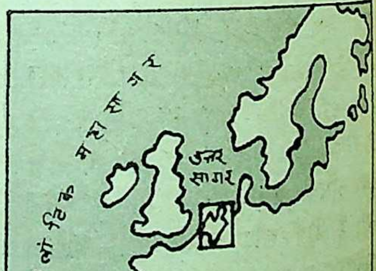

यूरोप में नेदरलैंड

निश्चय ही भयाक्रांत था वह। उसके पेट पर फेनिल लहरों के निशान थे, उसकी नाक से गाढ़ा जल निकल रहा था, और गालों पर अश्रुपंक्ति, स्पष्ट ही कुछ क्षण पहले तक वह रोया होगा। उसकी मां की तलाश में हमारी दृष्टि चतुर्दिक गयी। देखा, एक डच जोड़ा पचास मीटर दूर सागर में जल-क्रीड़ा मग्न है। भारतीय संस्कारों में पली मेरी पत्नी कुछ बड़बड़ायी। स्पष्टतया वह शिशु की उपेक्षा और उनकी निर्लज्ज क्रीड़ा—दोनों से ही रुष्ट थी। वात्सल्यवश उसने उस शिशु को गोद में उठा लिया। उसके माता-पिता जब तट पर आये, तब उसकी मां ने मुसकराकर पूछा, "क्या हुआ?" मेरी पत्नी ने शिशु की उपेक्षा के लिए उसे मीठा उलाहना दिया और कहा, "बच्चा बहुत डर रहा था।"

उसकी मां की प्रतिक्रिया थी, "ओह! डोंट मेक हिम कावर्ड" (ओह! उसे कायर मत बनाइए)। फिर जो कुछ उसने कहा, उसका अर्थ था, 'शिशु को यह सीखने का अवसर दीजिए कि ये सागर-उर्मिया ऊंची उठती हैं, तट पर आती हैं और लौट जाती हैं; गर्जन-तर्जनकर वह केवल डराती हैं, कुछ करती नहीं। उसे जीवनभर इन उर्मियों से खेलना है, अपने पूर्वजों की भांति निर्भीक और बहादुर बनना है, ताकि समुद्र से अपने लिए जमीन छीन सके।'

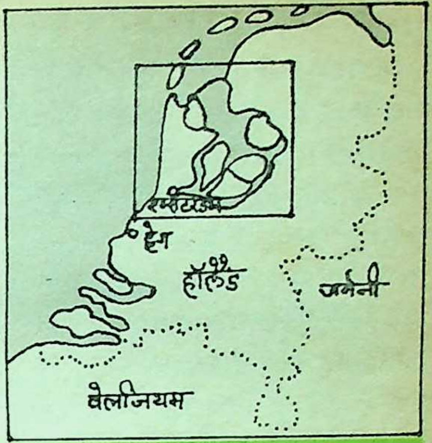

नेदरलैंड में आइसेल लेक

फिर एक दिन अपने महल्ले में हमने एक शिशु-प्रतियोगिता देखी। हॉलैंड के सागरों से 'चेस-बोर्ड' की तरह उदग्र तटवाली पक्की नहरों का जाल बिछा है। मेरे महल्ले की नहर में उस दिन जल-सतह को छूते हुए, एक किनारे से दूसरे किनारे तक बांस-जैसे कुछ अवरोधक लगाये गये थे। एक ओर पंक्तिबद्ध खड़े नहर-जल में कमर तक डूबे ढाई-तीन वर्ष के कुछ शिशु, जिन्हें दूसरी ओर खड़ी अपनी माताओं के पास पानी में डुबकियां लगाकर जाना था। सीटी बजी। सभी बालक चले, लेकिन अवरोधक तक आकर रुक गये, कोई पानी में नाक डुबाने को तैयार न था। दूसरी ओर से उनकी माताएं बार-बार बुला रही थी। कुछ ने साहस किया और पहुंच गये उस पार। देखा-देखी कुछ और बालकों ने डुबकी लगायी। शेष शिशु रोने लगे, 'मम्मा ... मम्मा' ... ! पार कर गये बच्चों के हाथों में खिलौने

एवं बड़ी-बड़ी टाफियां दी गयीं, ताकि पानी में खड़े बालक उन्हें देखकर प्रोत्साहित हों। दर्शकों द्वारा लगातार उनका उत्साहवर्धन किया जाता रहा और खेल का अंत तभी हुआ, जब अंतिम शिशु भी उस पार अपनी मां के पास पहुंच गया। तो इतनी छोटी उम्र से ही इन्हें पानी से लड़ने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

कैसे छीनी जाती है जमीन

यह सच है कि नेदरलैंड पूर्णतः प्रकृति के हाथों नहीं बनाया गया। थोड़ा-थोड़ा करके मानव हाथों से उसका निर्माण हुआ है। नेदरलैंड, जिसका अर्थ है—'समुद्र तटवर्ती नीची भूमि', पश्चिमोत्तर यूरोपीय मैदान का वह भाग है, जो तीन नदियों—राइन, मिउस और शेल्ड का मुहाना है। हिमयुग में वेसर और एल्बे नदियां भी नेदरलैंड से होकर प्रवाहित होती थीं। इन पांच नदियों के सामूहिक डेल्टा होने के कारण इन नदियों ने यहां विशाल मात्रा में सादसिकता राशि निक्षेपित की, जिससे इस कछारी भूमि का आंशिक उद्भव हुआ। लेकिन, यह भूमि रहने योग्य नहीं थी। केवल थोड़ा-सा ही क्षेत्र समुद्र से सुरक्षित ऊंचाई पर था, जहां मानव अपने चरण रख सके।

हिमयुग-समाप्ति पर अपार हिमराशि पिघलने से समुद्र का जल-तल कुछ ऊपर उठ गया, जिससे नयी धरती का कुछ भाग सागर में समा गया।

ऐसी धरती पर, भला कैसे संभव था मानव-पुत्रों का निवास! स्थायी मानवीय वास तब ही संभव हो सका, जब लोगों ने बांध (डाइक) बनाकर जल के आकस्मिक आक्रमण से अपनी रक्षा करना सीख लिया और बांध से घिरी हुई भूमि में जल-सतह पर नियंत्रण पाने का उपाय ढूंढ़ निकाला। बांध से घिरी ऐसी सुरक्षित भूमि को 'पोल्डर' कहते हैं।

नेदरलैंड का सारा पश्चिमी एवं उत्तरी भाग, जो देश के संपूर्ण क्षेत्र का लगभग आधा है, ऐसे ही 'पोल्डरों' से निर्मित है।

आरंभ में केवल वैसी ही ऊंची भूमि का उपयोग हो पाता था, जिनका जल भाटे के दिनों में स्वतः निकल जाता था। तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दियों में ऐसी कुछ भूमि का उद्धार किया गया, लेकिन वैसी नीची भूमि का, जिसका पानी स्वयं न निकल पाता था, उद्धार तो तभी संभव हो सका, जब पंद्रहवीं शताब्दी में कंगूरेदार पनवनचक्कियों (विंड-मिल्स) का आविष्कार हुआ। सन १५८८ में इन पवन-चक्कियों की सहायता से पहली बार एक झील का जल पूर्णतः निकालकर उसे रहने योग्य बनाया जा सका। यह उस महाभियान का आदि-प्रयास था, जो बीसवीं शताब्दी में 'साउदर-सी' की पेंदी (समुद्र की सामान्य सतह से प्रायः पांच मीटर नीचे) से २,२५,००० हेक्टर भूमि निकालकर चरमोत्कर्ष पा सका।

तब से लेकर अभी तक योजनाबद्ध

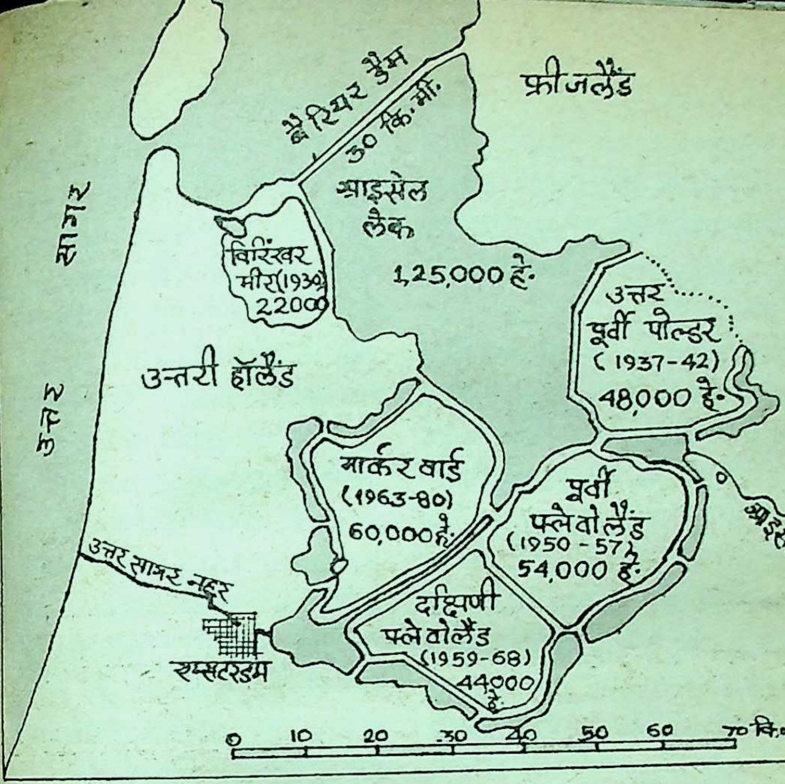
बैरियर डैम
30 कि. मी.
फ्रीजलैंड
आइसेल लेक
1,25,000 हे.
विरिंखर मीर (1930) 2,2000
सागर
उत्तर
उत्तरी हॉलैंड
उत्तर पूर्वी पोल्डर (1937-42) 48,000 हे.
मार्कर वार्ड (1963-80) 60,000 हे.
पूर्वी फ्लेवोलैंड (1950-57) 54,000 हे.
आइसेल नदी
उत्तर सागर नहर
एम्सटरडम
दक्षिणी फ्लेवोलैंड (1959-68) 44,000 हे.
0 10 20 30 40 50 60 70 कि.

आइसेल झील पोल्डर समूह

ढंग से जूझते हुए नेदरलैंड के बेटों ने सागर से इतनी भूमि छीन ली है, जो नेदरलैंड के कुल क्षेत्रफल का २७ प्रतिशत है, जिस पर देश की ६० प्रतिशत आबादी रहती है।

सत्रहवीं शताब्दी मुख्यतः व्यापारी डच जाति के लिए परमोत्थान की अवधि थी। यह वही अवधि थी, जब डचों ने संपूर्ण इंडोनेशिया, श्रीलंका, ब्राजील और दक्षिण-अफरीका के कुछ भाग को अपने अधीन कर लिया था। एम्सटरडम के व्यापारी इन देशों से अकूत धन बटोरकर लाते और उन्हे उत्साह एवं लगन से अपनी मातृभूमि को सजाने में लगाते। इन व्यापारियों के धन एवं जीवट में वृद्धि, पवन-चक्कियों की विकसित तकनीकी क्षमता, नये बसते हुए नगरों के भोजन की समस्या एवं बाढ़ से सुरक्षा की भावना ने एकसाथ मिलकर नयी भूमि की मांग को पर्याप्त बल दिया। समुद्र की पेटी से ताबड़तोड़ भूमि निकाली जाने लगी। यह क्रम उन्नीसवीं शताब्दी तक चलता रहा।

लेकिन इस बीच सागर भी चुपचाप नहीं बैठा। जब कभी भी वह अवसर पाता, कुछ जमीन निगल जाता। पहली से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक कुछ-कुछ भूमि काटते हुए वह भीतरी झीलों से आकर मिल गया था। जल के इस बढ़े हुए विस्तार को 'साउदर-सी' कहा जाने लगा। यह

उथला अंतःस्थलीय समुद्र था, जो ज्वारीय तरंगे लाने लगा था और तटवर्ती भूमि के लिए संकट उत्पन्न करने लगा था। इतना ही नहीं, सारी झीलों के जल को भी खारा बनाकर पेयजल की समस्या पैदा करने लगा था।

सन १९६७ में विख्यात अभियंता हेंड्रिक स्टेफिन ने 'साउदर-सी' को उत्तर सागर से अलगकर, पानी निकालने एवं एक बड़े भूखंड को मानवीय उपयोग में लाने की योजना बनायी, लेकिन उन दिनों इसकी तकनीकी संभाव्यता पर प्रश्नचिह्न लगाया जाता रहा। छिटपुट ढंग से यत्र-तत्र समुद्र की पेटी से भूमि निकाली जाती रही

बीसवीं शताब्दी की विज्ञान की उत्तरोत्तर प्रगति, इसकी आधारशिला पर अभियांत्रिकी क्षेत्र में मिली सफलता एवं तकनीकी उपलब्धियों ने डचों के मन को एक नये विश्वास से भर दिया। "यह संभव है", कहते हुए डॉ. सी. लेली 'साउदर-सी' के लिए एक महत्त्वाकांक्षी योजना लेकर साहस के साथ सामने आये। गंभीरता से विचार-विमर्श आरंभ हुआ ही था कि प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया। और, यह अच्छा ही हुआ। क्योंकि, युद्धोपरांत हुए मानवाहार के नितांत अभाव ने डचों को अन्नोत्पादन की वृद्धि के निमित्त नयी-नयी भूमि की तलाश करने के लिए विवश कर दिया। दूसरी ओर, लगभग इसी समय सन १९१६ में 'साउदर-सी' ने एक और भीषण आघात किया विनाशकारी बाढ़ लाकर। यह सागर की खुली चुनौती थी। इस समय डॉ. लेली संसद में पहुंच चुके थे और परिवहन एवं जल-मार्ग से संबद्ध विभाग के मंत्री बन गये थे। डॉ. लेली ने पहल की और 'साउदर-सी ऐक्ट' संसद में पारित हो गया।

'साउदर-सी एक्ट' के अंतर्गत योजना अपने ढंग की अनोखी योजना थी, जिसके अंतर्गत सागर की पेटी से उतनी भूमि निकालनी थी, जो नेदरलैंड के कुल क्षेत्रफल का ७ प्रतिशत और कृषियोग्य भूमि का लगभग १० प्रतिशत हो।

सन १९२० में डचों ने डॉ. लेली के निर्देशन में 'साउदर-सी' को घेरने का सत्वर उपक्रम किया। प्रथम चरण में नौर्थ हॉलैंड को फ्रीजलैंड से जोड़ते हुए समुद्र के बीचों बीच तीस किलोमीटर लंबा अवरोधक बांध (बैरियर डैम) बनाया गया, जो १९३२ में पूरा हुआ। इस बांध ने समुद्र को ८५ किलोमीटर परे ढकेल दिया और सागर तट-रेखा को ३०० किलोमीटर छोटा कर दिया। 'साउदर-सी' का तो अब अस्तित्व ही समाप्त हो गया और घिरा हुआ समुद्री भाग (३,५१,००० हेक्टर) जो अंतःस्थल से जुड़ा था, अब नीले जल की एक बड़ी झील के रूप में परिवर्तित हो गया, जिसका नाम इसमें गिरनेवाली नदी के नाम पर 'आइसेल लेक' रख दिया गया। फिर कालक्रम से एक-एककर पांच 'पोल्डर' निकाले गये,

जिनके क्रमिक उद्धार की कथा मानचित्र में अंकित है। (देखिए पृष्ठ १२३ पर प्रकाशित मानचित्र)

असंभव संभव कैसे हुआ

सागर के जिस भाग से भूमि निकालनी होती है, सबसे पहले 'डाइक' बनाकर उसे घेर लिया जाता है, ताकि जलविहीन किये जानेवाले जलाशय को समुद्र से पूर्णतः पृथक किया जा सके।

जल में डाइक-पंक्ति निर्धारित कर लिये जाने के बाद पेटी से ढीली और दुर्बल मिट्टी तलकर्षक ('ड्रेजर') की सहायता से हटा ली जाती है। और इस तलकर्षण के बाद बनी नाली को बालू से भर लिया जाता है। अब 'डाइक' के अनुप्रस्थ काट के दोनों ओर (समुद्र की ओर और पोल्डर की ओर) पूरी लंबाई में इस बालू के ऊपर शीट-पाइल युक्त बोल्डर-क्ले भित्ति बनायी जाती है, और मध्यवर्ती रिक्त स्थान को 'हाइड्रोलिक-फिल' प्रणाली अपनाकर बालू से भर लिया जाता है। सबसे ऊपर चिकनी मिट्टी की मोटी परत दी जाती है, जिसके ऊपर कंक्रीट अथवा एस्फाल्टिक सड़कें बनायी जाती हैं। जल-सतह के नीचे और ऊपर 'डाइक' की दोनों ढाल पर आवश्यकतानुसार भारी पत्थर एवं 'कंक्रीट-ब्लौक' बिछाकर तरंगाक्रमण के विरुद्ध इसे सुदृढ़ किया जाता है।

'डाइक' के निर्माण के अंतिम वर्ष में जल के अंदर ही मुख्य नहरों की 'ड्रेजिंग' कर ली जाती है, जो भविष्य में निःसृत जल के लिए मुख्य नालों का काम करती हैं।

ये 'डाइक' जब निर्माण की प्रक्रिया में होते हैं, तभी बड़े-बड़े पंप-स्टेशन स्थापित कर लिये जाते हैं, जो 'डाइक' के पूरा हो जाने के पश्चात इनसे घिरी जल-राशि को निकालना आरंभ करते हैं।

जब पोल्डर जलविहीन हो जाता है, तब सद्यः अनावृत कीचड़वाली भूमि पर विमानों द्वारा सरकंडों के बीज छींटे जाते हैं। इसके बाद समस्त पोल्डर में ३०० से ५०० मीटर के अंतर पर 'ड्रैग-लाइन' की सहायता से 'ड्रेनेज' नालियां खोदी जाती हैं, जिनका जल पहले से खोदी गयी नहरों में प्रवाहित होता है। फिर क्षेत्र-प्रणाल (फिल्ड ड्रेंस) बनाये जाते हैं, जो पहले तो खुले नाले-जैसे होते हैं, फिर बाद में मशीनी उपकरणों की सहायता से उनके बदले जमीन के नीचे छिद्रित पाइप बिछा दिये जाते हैं।

इन सब कार्यों में दो-तीन वर्ष लग जाते हैं। तब धीरे-धीरे इन सरकंडों को जलाकर नष्ट किया जाता है। कृषि उपस्कर लाये जाते हैं और खेती की जाती है।

इसके बाद सुनियोजित ढंग से सड़कों का निर्माण कराया जाता है, जिसके नीचे बिजली, टेलीफोन लाइन और कुकिंग गैस एवं पेयजल ले आनेवाले पाइप बिछाये जाते हैं। इस तरह आधुनिक सुविधाओं से युक्त नगरों का विकास किया जाता है।

—कार्यपालक अभियंता, गंडक क्षेत्र विकास-अभिकरण, कंबाइंड बिल्डिंग, मुजफ्फरपुर

उर्दू-साहित्य के अप्रतिम व्यंग्यकार अकबर इलाहाबादी

वो दिल ही न होंगे कि वह आग निकले

● डॉ. चन्द्रप्रकाश वर्मा

जीवन के मूल्यों की विवेचना हेतु कविता एक सशक्त माध्यम है। वह मूल्यों का निर्धारण भी करती है और जीर्ण-शीर्ण परंपराओं को ध्वस्त कर समाज के परिष्करण की प्रक्रिया को आगे भी बढ़ाती है। वह भविष्य का उज्ज्वल दिशा-संकेत बनती है और वर्तमान का परीक्षण कर उसकी व्याधियों के उपचार का संधान भी करती है। समाज के स्वप्नों, उसकी आकांक्षाओं-आशाओं को भी वह उजागर करती है। महान कवियों द्वारा उच्चारित कविता ने समाज को बार-बार नवचिंतन के लिए बाध्य किया है। साहित्य, समाज के जीवन का प्रतिबिंब बन जाता है और इसलिए यह कथन सारपूर्ण है कि साहित्य के दर्पण में समाज अपना प्रतिबिंब देखा करता है।

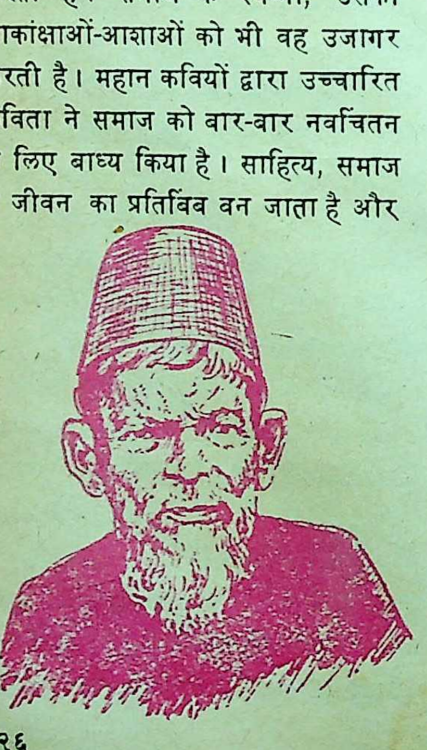

अकबर इलाहाबादी एक ऐसे ही महान शायर थे, जिन्होंने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से समाज को ठोका-पीटा और संवारा। शिष्ट और प्रभावपूर्ण व्यंग्य लिखना कवि की असाधारण रचना-क्षमता का परिचायक होता है। वस्तु-जगत में जीवन के कार्य-व्यापार का सूक्ष्म अध्ययन कर उसमें उन परिस्थितियों, घटनाओं और मानव-कार्यकलापों को खोज निकालना, जो हास्य-रस के सृजन में सहायक हों, एक कठिन कार्य है, और उससे भी कठिनतर है उनमें रस-निष्पत्ति कर उस धारा को किसी रचनात्मक विचार क्षेत्र की ओर मोड़ देना। भोंडापन हास्य की विकृति है, उसकी सरस छवि नहीं। अकबर इलाहाबादी का उर्दू व्यंग्य-काव्य क्षेत्र में सदा शीर्षस्थ स्थान रहेगा। वे गंभीर मुद्रा बनाये समाज को गुदगुदाते रहे। उन्होंने उदासी को गुनाह माना, क्योंकि यह उदासी समाज को कर्तव्य-विमुख

बनाती है। उन्होंने काव्य-सृजन और समाज-सुधार दोनों को समानांतर पटरियों पर चलाया और उनके काव्य का 'कैनवास' इतना बड़ा था कि जो भी चित्र उन्होंने उस पर चित्रित किये, वे संकरे और धुंधले नहीं, बहुत स्पष्ट बने। उनका काव्य-जीवन की समग्रता लिये हुए है।

राजनीति, समाज, धर्म, शिक्षा, विज्ञान, देशभक्ति, ईश्वरवाद, मानव-प्रेम आदि सभी विषयों पर उन्होंने लेखनी चलायी और पुरानी रूढ़ियों तथा आधुनिक कृत्रिम और आडंबरपूर्ण जीवन-व्यापारों को अपने पैने व्यंग्य की तेज धार से छिन्न-भिन्न कर दिया। समाज के धूल-भरे शीशमहल पर उन्होंने अपने तीखे व्यंग्य का हथौड़ा चला दिया और सामाजिक कुरीतियों के उस ध्वंस पर उन्होंने नव-निर्माण के नग्मे गाये। अपनी शायरी के माध्यम से एक मूक विद्रोह का स्वर उन्होंने दूर-दूर तक जगा दिया और समाज उस आग को छूकर चौंक उठा, जो उनकी शायरी में जल रही थी। उनके काव्य का स्वरूप उपयोगितावादी था और उनकी कला पर वैयक्तिकता की स्पष्ट छाप थी—

तेरे बाद अकबर कहां ऐसी नज्में
वो दिल ही न होंगे कि वो आग निकले

अकबर का जन्म सन १८४६ में इलाहाबाद के पास बारा नामक गांव में हुआ था। उनके पिता तफज्जुल हुसैन बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और यही वजह थी कि बचपन से ही अकबर में धर्म के वास्तविक स्वरूप के प्रति एक जागरूकता उत्पन्न हो गयी थी। उनकी प्रारंभिक शिक्षा साधारण ही थी। उनके पिता की धारणा थी कि बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा में गणित और व्याकरण का विशेष योगदान होना चाहिए। फलस्वरूप, अकबर ने शुरू में गणित, व्याकरण, अरबी व फारसी पढ़ी। १४ वर्ष की अवस्था पर उन्होंने अंगरेजी का अध्ययन आरंभ किया और शीघ्र ही उसमें प्रवीणता प्राप्त कर ली। सन १८६७ में उन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त की और उनकी नियुक्ति मुंसिफ के पद पर हो गयी। अंत में अपनी योग्यता द्वारा वे जज बन गये। सेवा-निवृत्त होने के बाद वे इलाहाबाद में ही स्थायी रूप से 'इशरत मंजिल' कोठी में रहने लगे। यह कोठी उन्होंने अपने पुत्र इशरत हुसैन के नाम पर बनवायी थी। उनका शेष जीवन-काल लिखने में ही व्यतीत हुआ।

गौहर जान

अपने साहित्यिक-जीवन के प्रारंभिक वर्षों में वे परंपरागत उर्दू शायरी के अनुरूप गजलें ही लिखते रहे। सन १८७६ में 'अवध पंच' पत्र का प्रकाशन हुआ और इस के प्रकाशन के साथ ही अकबर की काव्य-शैली में एक बड़ा परिवर्तन आ गया। 'अवध पंच' की यह विशेषता थी कि यह पत्र नियमित रूप से सम-सामयिक महत्त्वपूर्ण संदर्भों पर उच्च स्तर की व्यंग्यात्मक सामग्री का ही प्रकाशन करता था। शीघ्र ही इस पत्र को आश्चर्यजनक लोकप्रियता प्राप्त हो गयी। इस पत्र से प्रेरित होकर अकबर भी व्यंग्यात्मक लेखन की ओर आकर्षित हुए और धीरे-धीरे उनकी लेखनी भी तत्कालीन विसंगतियों पर उनके दिल का मलाल उगलने लगी। सामान्य से हटकर जो कुछ भी लिखा जाता है, वह शीघ्र ही लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचता है। अकबर के कलाम लोगों की जबान पर चढ़ने लगे और उनकी यश-गंध दूर-दूर महकने लगी।

अकबर में परिहास-प्रियता की भावना जन्मजात थी। वे सामान्य-सी बात में भी परिहास का तत्व खोज लेते थे और फिर उसे अपनी कला की छेनी से तराशकर चमका देते थे। उनकी इस परिहास-प्रियता के कतिपय उदाहरण यहां दे देना संगत होगा। अपनी सेवा-निवृत्ति के बाद जब उनका पूर्ण अवकाश लेखन-कार्य में ही व्यतीत हो रहा था, तब एक बार वे सीतापुर गये, जहां उनके साहिबजादे इशरत हुसैन डिप्टी-कलेक्टर थे। अकबर की वेशभूषा बड़ी सीधी-सादी रहा करती थी, इसलिए अकसर यह होता था कि लोग उन्हें कोई बहुत साधारण-सा व्यक्ति समझ लिया करते थे। यही बात सीतापुर में भी संयोगवश घटित हो गयी।

क्राइस्ट के फादर अल्लामियां

एक शाम डिप्टी साहब के निवास पर उनके निकट मित्रों की एक पार्टी का आयोजन था। सब तरफ ड्राइंगरूम में एक सरमस्ती का आलम था। खाने-पीने के साथ-साथ कहकहों का बाजार गर्म था। शाम की रंगीनियां गहरी होती जा रही थीं। अकबर साहब भी ड्राइंगरूम के एक कोने में अपने सीधे-सादे लिबास में बैठे हुए थे। किसे फुरसत थी कि उन्हें देखे। सहसा किसी परिचित ने उन्हें पहचान लिया और गुस्ताखी के लिए माफी मांगी तथा सब लोगों को सूचित किया कि ये सीधे-सादे दिखनेवाले व्यक्ति डिप्टी साहब के वालिद हैं। सब पर सकता-सा छा गया। सभी मेहमान अकबर को घेरकर खड़े हो गये और उनकी दिलजोई करने लगे। अकबर साहब बिलकुल गंभीर रहे और फिर बोले, "दोस्तो! आप सबसे मिलकर मुझे बेहद खुशी हुई। पर आप में से किसी को भी आज की सबसे ताजा खबर मालूम हुई?" उत्कंठा में डूबे हुए सब लोग मौन रहे। अकबर साहब बोलते रहे, "वाकया यह हुआ कि अल्ला मियां वेश बदलकर अभी-अभी यूरोप की सैर को गये थे। वे

सब तरफ घूम आये, पर किसी ने भी उनकी बात न पूछी और न कोई तवज्जोह दी। पर, जनाब वहां एक होशियार आदमी था, जो इस हकीकत को पहचान गया। उसने अल्ला मियां की तरफ इशारा करके लोगों से कहा कि यह मामूली-सा दिखनेवाला इंसान और कोई नहीं खुद अल्ला मियां ही हैं, जो हमारे जीसस क्राइस्ट के फादर हैं। इन्हें देखो, और इनकी खातिर करो।''

उन्होंने यह सारा वाकया इतनी संजीदगी से बयान किया कि मानो वे किसी अखबार से कोई नयी खबर पढ़ रहे हों। पर डिप्टी साहब के दोस्तों को फौरन यह बात समझ में आ गयी कि अकबर साहब ने बहुत गहरा मजाक किया है और वे सब बहुत शर्मिंदा हुए।

गजब हाजिर-जवाबी

एक और घटना कुछ ऐसी ही है, जिससे उनकी प्रत्युत्पन्नमति और परिहास-प्रियता का पता चलता है। सन १९११ की बात है। इलाहाबाद में ऑल इंडिया प्रदर्शिनी लगी हुई थी। बहुत दूर-दूर से उस प्रदर्शिनी को देखने लोग आ रहे थे। वह न टाकीज का युग था और न रेडियो-टेलीविजन का। प्रदर्शिनी के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए उस समय की देश की मशहूर गायिका और नर्तकी गौहर जान भी कलकत्ते से इलाहाबाद आयी हुई थीं। गौहर जान ने प्रदर्शिनी के खचाखचभरे हुए पंडाल में, अकबर साहब की ही एक गजल बहुत ही आकर्षक ढंग से गायी। सारे श्रोता मंत्रमुग्ध से हो गये। तालियों की गड़गड़ाहट से सारा पंडाल गूंज उठा। अकबर साहब भी वहां मौजूद थे। जब उनके एक दोस्त ने उनसे गौहरजान की गायन-कला पर उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही, तब अकबर साहब ने अपने निराले ही रंग में यह शेर कह दिया—

खुशनसीब आज यहां कौन है गौहर के सिवा
सब कुछ अल्लाह ने दे रक्खा है शौहर के सिवा

अकबर इलाहाबादी का जीवन हास-परिहास की अनेक रोचक घटनाओं से परिपूर्ण है। जिन परिस्थितियों में हास्य की कोई गुंजाइश न होती, वहां भी अकबर की हास्य-प्रियता विनोद उत्पन्न कर देती। वृद्धावस्था में अकबर की आंखों में तकलीफ हुई और उन्हें आंखों का ऑपरेशन कराना पड़ा। ऑपरेशन हो जाने के बाद उनकी आंखों में पट्टी बांध दी गयी और डॉक्टर साहब अपनी फीस लेकर चले गये। कुछ देर बाद अकबर के बेटे इशरत हुसैन कमरे में आये और उन्होंने अपने वालिद से उनकी तबियत का हालचाल पूछा। अकबर ने मुसकराते हुए कहा—

रोशनी आये तो हम देखें कहीं अपना हिसाब
वो तो दो सौ ले गये आंखों पे पट्टी बांध के

एक बार एक सज्जन अकबर साहब से मिलने आये, जो कुछ दिन पहले ही विदेश से लौटे थे। उनके साथ इंगलैंड से आयी हुईं उनकी विदेशी पत्नी भी थीं। उन्होंने अकबर साहब से कुछ शेर सुनाने का बहुत

आग्रह किया। अकबर ने लाचार हो यह शेर पढ़ दिया—

नेटिव हसबेंड, इंग्लिश वाइफ
ही इज नोज एंड शी इज नाइफ

इसके बाद एक कहकहा उठा, क्योंकि शेर सभी की समझ में आ गया था।

अकबर पाश्चात्य शिक्षा के कोई कट्टर विरोधी न थे, पर घोर भौतिकवाद और अनीश्वरवाद से उनकी लड़ाई अवश्य थी। वे यह नहीं चाहते थे कि हर भारतीय पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करे। वे प्रतिक्रियावादी न थे, पर प्रगति का हर एक कदम वे सोच-समझकर ही आगे रखना चाहते थे। सामाजिक संदर्भ में वे उपयोगितावादी सिद्धांतों के समर्थक थे। अंध-रूढ़ियों और पाखंड से उन्हें घृणा थी। धार्मिक-सहिष्णुता के वे पक्षधर थे। मानवीय दुर्बलताओं का निराकरण वे रचनात्मक और संवेदनात्मक तरीकों से करना चाहते थे। जीवन की विसंगतियों को उनके तीखे व्यंग्य ने इस प्रकार झकझोर दिया—

बेपर्दा नजर आयीं जो कल चंद बीबियां
अकबर, जमीं में, गैरते कौमी से गड़ गया
पूछा जो उनसे आपका परदा वो क्या हुआ
कहने लगीं कि अक्ल पर मरदों की पड़ गया
तुम शौक से कॉलिज में पढ़ो पार्क में फूलो
जायज है गुबारों पे चढ़ो चर्ख पे झूलो
पर एक बात बंदाए अकबर की रखो याद
अल्लाह को और अपनी हकीकत को न भूलो

उन दिनों देश में गांधीजी के सत्याग्रह की आंधी सब तरफ बह रही थी। उनके प्रयोगों की ओर सारा राष्ट्र टकटकी बांधे देख रहा था। अकबर का संवेदनशील हृदय गांधीजी के सम्मोहन से अछूता न रहा। उन्होंने गांधीजी की सराहना में 'गांधी-नामा' लिखा और इस प्रकार उनकी लेखनी ने राष्ट्र-ऋण भी चुकाया। एक उदाहरण देखिए—

लश्करे गांधी को हथियारों की हाजत कुछ नहीं
हां मगर बेइंतहा सब्रो-सदाकत चाहिए

अकबर इलाहाबादी आज हमारे बीच नहीं, पर उनका अदृश्य इंगित आज भी व्यंग्य-साहित्य को दिशा-निर्देश कर रहा है। महफिल सूनी है। वे हास्य की फुलझड़ियां अब कहां!

कोई बैठ के लुफ्त उठाएगा क्या
कि जो रौनके बज्म तुम्हीं न रहे

—११०/२१, शिवाजीनगर, भोपाल

आत्मा की ज्योति भूत में प्रदीप्त होगी, जो आज किसी की भी समझ में नहीं आता, उसे कुछ थोड़े लोग आंखों से देखेंगे। पंडित लोग तो बहस करते और सोते ही रहेंगे किंतु भगवान बढ़ते चले जाएंगे, आगमन के मुहूर्त के पहले आदमी जानेगा ही नहीं कि कोई आनेवाला है और जब तक कार्य पूर्ण नहीं हो जाता मनुष्य को विश्वास नहीं होगा —महर्षि अरविंद

उसने हजारों को लखपति बनाया पर खुद भूखा मरा

• डॉ. शिवनन्दन कपूर

दो सौ तीस वर्ष हुए, एक विदेशी फ्रांस में आया। वह स्काटलैंड का रहनेवाला था, नाम था—जान ला। बेहद खूबसूरत होने के कारण वह 'जान ला' कहलाता था। जिस समय जान ला पेरिस पहुंचा, वहां न उसका कोई दोस्त था, न परिचित और न एक कौड़ी ही पास में थी। फिर भी, वह अपनी प्रतिभा के बल पर फ्रांस का आर्थिक अधिनायक और यूरोप में सबसे अधिक शक्तिशाली व्यक्ति बन बैठा था।

यद्यपि, उसकी तानाशाही महज बारह वर्ष तक रही, लेकिन उसने इन बारह वर्षों में गजब ढा दिया। फिर जब उसके दिन पलटे, तब उसे बहुत ही 'बे-आबरू' हो पेरिस के कूचों से भागना पड़ा, क्योंकि खूंख्वार भीड़ उसे चीर डालने के लिए उसके पीछे भाग रही थी। पकड़ में आ जाने पर वह अपने को अमीर बना देनेवाले उस व्यक्ति का खून पी जाती। उस व्यक्ति ने अनोखा जोखिम उठाया था। अपनी विचित्र योजनाओं से उसने आधे राष्ट्र को पगला दिया था।

प्रतिभाशाली जान बारह वर्ष की छोटी उम्र में ही परिपक्व और उत्कृष्ट गणितज्ञ बन गया था। उसने अपनी प्रतिभा से एडिनबर्थ के अध्यापकों को चमत्कृत कर दिया था। सत्रह साल की उम्र में वह बांका छैल-छबीला बना घूमता रहता था। उस वक्त के फैशन के मुताबिक बेहद खुशबूदार सुंघनी की नास लेते,

घुंघराले बालों का 'विग' लगाये, बांकों की तरह ऐंठकर चलता था।

और जब वह बड़ा हुआ, तब उसके पर निकल आये। बाईस साल का होते-होते वह एक बदमाश जुआरी बन गया। छब्बीस की उम्र में इश्क की इश्कपेंचां ने उसे उलझा लिया। वह एक बूढ़े की महबूबा की काकुलों में गिरफ्तार हो गया। बूढ़े को उससे जलन हुई। बूढ़े ने उसे द्वंद्व-युद्ध के लिए ललकारा। वह भी कहां पीछे हटनेवाला था? लंदन की घने कुहासे-भरी एक सुबह वे दोनों आमने-सामने हुए। तलवारें चमकीं। और उसने अंततः अपने प्रतिद्वंद्वी के बूढ़े कलेजे में तलवार उतार दी।

ला को गिरफ्तार कर लिया गया। हत्या का मुकदमा चलाया गया। न्यायाधीश ने उसे फांसी की सजा सुना दी। पर उसने हिम्मत न हारी। फांसी पर चढ़ाये जाने से ठीक दो दिन पूर्व उसने रक्षकों को कोई नशीली चीज खिला दी। बेड़ियों से छुटकारा पाकर वह जेल की दीवाल फांद फ्रांस भाग गया।

उसकी हालत तो खस्ता थी ही, फ्रांस की भी दशा उन दिनों खस्ता थी। फ्रांसीसी भूख से पीड़ित हो पेरिस की गलियों में भटक रहे थे, क्षोभ से अपने मृत राजा लुई चौदहवें की प्रतिमाएं तोड़ रहे थे और नये शासन से वे बराबर यह मांग कर रहे थे कि देश को भूख और बरबादी से बचाने के लिए तत्काल कुछ न कुछ अवश्य किया जाए।

ला अपनी धारा-प्रवाह तथा प्रभावी वाणी एवं अनोखे विचारों से शीघ्र ही फ्रांस पर छा गया। उसने शासन को तत्काल कुछ और कागजी मुद्रा छापने की सलाह दी। इससे मूल्यों में वृद्धि हुई। व्यवसाय बढ़ा। खुशियों के दिन लौटने लगे, जिससे उसे चमत्कारी व्यक्ति समझा जाने लगा। उसने भी अपनी उन्नति का ध्यान रखकर एक उद्योग-संघ की स्थापना की और उस संघ को उसने भारत, चीन, कनाडा तथा अमरीका आदि कई देशों में स्थित सभी फ्रांसीसी बस्तियों से व्यापार करने का एकाधिकार दिलाया।

जान ला ने बड़ी धूम-धाम से आकर्षक शर्तों पर अपनी नयी योजना के विज्ञापन छपाये और प्रसारित कराये। बड़ी उदारता के साथ उसने यह भी घोषणा की कि वह अपने 'उद्योग-संघ' की आय में से हिस्सेदारों को एक सौ बीस प्रतिशत लाभ देगा।

लोग इस घोषणा को सुनकर पागल हो उठे। शेयरों के भाव आसमान छूने लगे। सरदार और अ-सरदार ही नहीं, प्लेटें धोनेवाले, गुंडे तथा मध्यम-जन सभी उस 'उद्योग-संघ' के शेयर खरीदने दौड़ पड़े। भीड़ इतनी जबर्दस्त थी कि कितने ही लोग दबकर मर गये।

उधर सरकार दनादन नये नोट निकलवाने में लगी थी। सारे छापेखाने इस काम में लगा दिये गये थे। ये नये

नोट शेयरों के विक्रय-मूल्य के रूप में ला के पास आ रहे थे। उसकी धूम सारे फ्रांस में तूफान की तरह छा गयी थी। हर व्यक्ति अमीर हो रहा था। शेयर खरीदे और बेचे जा रहे थे। नौकरों, और साईसों तक ने, जिन्होंने शेयर खरीदे थे, अगले दिन सुबह उठकर अपने आपको लखपति पाया।

पेरिस के एक ओपेरा की टिकटें बहुत महंगी थी, इसलिए उसमें केवल रईस ही जाया करते थे। इस ओपेरा को देखने एक दिन एक सामंत की पत्नी (डचेज) गयी। 'डचेज' को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसके बगलवाले बॉक्स में, जो व्यक्ति भड़कीले और कीमती कपड़े, जिन पर हीरे जड़े थे, पहने बैठा है, वह उसका रसोइया है, जिसने दो ही दिन पूर्व काम छोड़ा था।

पेरिस एक अनोखे 'मेले-सा' लगने लगा था। कितने ही तमाशेवाले आ जुटे। बड़ी सड़कों के किनारे जलपान-गृह खुल गये। हर समय चहल-पहल और भीड़ जुटी रहती। मार्गों पर वाहनों की धूम मची रहती। यूरोप के हर कोने से जेब-कतरे भी भागकर फ्रांस आ रहे थे। पेरिस में सबका जमावड़ा हो रहा था। देखते-देखते ही पेरिस की आबादी तीन सौ हजार गुना बढ़ गयी। कहीं भी तिल धरने की जगह न बची। होटल, सराय, और मकान-मालिक खूब पैसा बटोर रहे थे। कीमतें बढ़ती जा रही थीं। कर्म-

इनके भी बयां हैं जुदा-जुदा

यूं जिंदगी गुजार रहा हूं तेरे बगैर
जैसे कोई गुनाह किये जा रहा हूं मैं
—जिगर मुरादाबादी

ये जिंदगी के कड़े कोस, याद आता है
तेरी निगाहे-करम का घना-घना साया
—फिराक गोरखपुरी

पहले आती थी हाले-दिल पे हंसी
अब किसी बात पर नहीं आती
—मिर्जा गालिब

ठानी थी दिल में अब
न मिलेंगे किसी से हम
पर क्या करेंगे हो गये
लाचार जी से हम
—मोमिन

राहे-हस्ती में हंसते गाते चलो
इतना दुश्वार ये सफर तो नहीं
—अहमद फराज

अपने सर इलजाम
क्यों लेते हो फूंके मार कर
आप ही बुझ जाएंगे
बेनूर मिट्टी के दिये
—शाद अरिफी

पढ़ के अखबार की सुर्खी की तरह
शाम तक लोग भुला देंगे मुझे
—मोहसिन जैदी

हश्र ढाने में एक हैं दोनों
आपकी खामोशी, मेरी फरियाद
—तपिस रादपुरी

चारियों के वेतनों में वृद्धि होती जा रही थी। कारखाने रात-दिन काम कर रहे थे। हर ओर महल बनते जा रहे थे।

फिर उस सुखमयी सपनों की दुनिया में वज्रपात हुआ। काउंटी का युवराज फ्रांस में बहुत शक्तिशाली था। उसकी जान ला से अकस्मात ठन गयी। एक दिन क्रोध में आकर ला तीन गाड़ियों में नोट भरकर बैंक गया और बैंक से उसने उन सारे नोटों के बदले सोने की मांग की। फिर क्या था, फिजा ही बदल गयी। चारों ओर अफवाहें फैल गयीं। लोग घबराहट में उन नोटों को बेकार समझकर बैंक से सोने की मांग करने लगे। कितने ही लोग अपना सोना और सिक्के-फ्रैंक, बैलगाड़ियों में लाकर और उन्हें पुआल से ढककर, फ्रांस की सहरहद पार बेलजियम पहुंच गये।

सोना और सिक्के गायब हो गये। सपनों के ताश का महल धराशायी हो गया। अफवाहें फैलीं, जिससे लोगों में घबराहट छा गयी। 'उद्योग-संघ' के शेयरों के प्रति जैसे हवाई विश्वास पैदा हुआ था, वैसे ही नष्ट हो गया। बैंकों ने नोटों को लेना और सोना देना बंद कर दिया। राष्ट्र की आर्थिक दशा बुरी तरह बिगड़ गयी। जान ला की बेइज्जती होने लगी। लोग जैसे ला के पास धक्के खाते हुए शेयर खरीदने गये थे, वैसे ही ठेलते-धकेलते उसे वापस करने पहुंचे। इस बार और भी अधिक धकापेल थी। न जाने कितने ही लोग दबकर मर गये।

जान ला कहां तक शेयरों को वापस लेता? उसने घर के द्वार बंद कर लिये। दस्तक और फिर धक्के पड़ने लगे। खिड़कियों पर पत्थर गिरने लगे। हवा में गालियां भी गूंजने लगीं। लोग उसकी जान लेने पर उतारू हो गये।

ला भय से कांप उठा। क्या से क्या हो गया? वह अपने परिवार के साथ सब कुछ छोड़कर, पीछे के रास्ते से भाग निकला। सारा खजाना भीड़ के लिए छूट गया। धन, जैसे अकस्मात आया था, वैसे ही चला गया। वह खाली हाथ फ्रांस आया था, खाली हाथ ही वहां से भागा। उसकी करोड़ों पौंड की जायदाद जब्त हो गयी।

ला, उसकी बीवी और बेटियां फटेहाल भटकने लगे। जो कभी राजाओं से भी ज्यादा संपन्न था, वही ला वेनिस में फकीरों की तरह मारा-मारा फिरता रहा, जहां न तो उसका कोई दोस्त था, न दास, न दरबारी। मरते समय उसके पास इतने भी पैसे नहीं थे कि दवा-दारू करा पाता। हजारों को लखपति बनानेवाला ला खुद भिखमंगों से भी बदतर हालत में मरा।

—३८७, टपाल चाल, खंडवा

पश्चिमी जरमनी के अल्म शहर में २० फुट लंबी और १२ फुट ऊंची एक 'रोदन दीवार' बनायी गयी है। जिस पर एक संदेश भी लिखा है—'आप मुझसे बात कर सकते हैं।' दीवार बनाने के पीछे यह विचार रहा है कि लोग अपनी समस्याएं अपने साथियों और मित्रों की बजाय इस दीवार से कहकर, हलके हो सकते हैं।

• सुकीर्ति गुप्ता

वे दोनों अपने में ही मस्त थे । सूनी सड़क पर बस भागी जा रही थी। हल्के ललछौने बादल छोटी-छोटी बूंदों का खेल खेल रहे थे। पहाड़ी रास्ते के मोड़ पर कभी युवक बस के धक्के से युवती की ओर झुक जाता था कभी––युवती मुसकराती अनायास युवक के कंधों पर झूल जाती। खिड़की के शीशे से सटे दोनों गुपचुप रानीखेत के सौंदर्य को निरख रहे थे। सौंदर्य कितना समीप था––मानों वे हाथ बढ़ायें, तो छू सकते हैं।

आंचल

बस एक स्टॉपेज पर रुकती है। युवक धीरे से कुछ कहकर उतर जाता है। काफी लोग चढ़ते हैं—युवती के पास की सीट खाली देखकर एक व्यक्ति हिचकता-सा बैठ जाता है। युवती त्रस्त हो उठती है। सलज्ज भाव से कहती है, "आप दूसरी जगह बैठ जाइए . . . यहां मेरे 'हस्बैंड' बैठे हैं।"

युवक ने ऊपर चढ़ते यह सुन लिया, हाथ के दोने में कुछ खाने का सामान था। वह गंभीर हो गया, अल्हड़ शोखी की जगह, चेहरे पर ठहराव आ गया। जैसे अचानक कुछ वर्ष घट गये। युवती ने बदलाव को अनुभव किया . . .अब उसके कंधे युवती से दूर थे। युवती हतप्रभ-सी उसे देखती है। बड़ी-बड़ी आंखों में कौतूहल था। कुछ समझता-सा युवक मुसकराता है, बड़े प्यार से युवती का हाथ दबाकर दोने की ओर इशाराकर खाने के लिए कहता है। युवती प्रसन्न होकर मिठाई का टुकड़ा युवक के मुंह की ओर ले जाती है। स्वयं भी खाने लगती है। फिर दोनों शीशे के बाहर की दुनिया में खो जाते हैं।

चौहबाटी आ गयी। रानी खेत की

फूलों और फलों की घाटी। एक दूसरे का हाथ पकड़े वे बस से उतरे। सूखे पत्तों का एक रेला उनके ऊपर से गुजर गया। हल्की बूंदें बरसने लगीं। युवती ने बूंदों से बचने के लिए सर पर आंचल रख लिया——युवक ने भी सिहरते हुए मफलर ऊंचा कर लिया। गरमाहट के लिए दोनों ने एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया।

सीढ़ियों पर उनके पैर एक साथ पड़ रहे थे। बूंदें रुक गयीं—काले गहराये बादल थमे-से थे। ऐसे समय में फूलों की घाटी प्रायः अकेली ही थी। उत्सर्क। आंखों में आमंत्रण लहरा उठा। युवक ने झुककर आंखों को चूम लिया। युवती किलकती उसका हाथ पकड़ घाटी में काफी नीचे उतर गयी। चारों ओर तरह-तरह के वृक्ष और पौधे संवरे खड़े थे। अभी उनमें फल और फूल नहीं आये थे। यह मौसम उनके शृंगार का न था। पर, यह सहज अनावृत्त सौंदर्य, उस घाटी के एकाकी सूनेपन को और भी उन्मादक बना रहा था।

युवती की लाल-पीले फूलोंभरी साड़ी प्रकृति की हरी पृष्ठभूमि में उसे एक सजीव हंसता-खेलता फूल बना रही थी। युवक उसके अस्तित्व को बहुत अपने भीतर महसूस करने के लिए व्याकुल दिखायी देता है। उसने एक विशाल वृक्ष के तने के पास उसे बड़ी गहराई से भींच लिया। दोनों ही काफी देर वहां की भीनी ठंडक और अपनी ऊष्मा को तृप्ति के साथ पीते रहे। अपनी प्रकृति के अनुसार युवक फिर गंभीर हो उठा। बड़े ध्यान से प्रिया का हाथ पकड़ वृक्ष और पौधे पर लिखे नाम को पढ़ने-गुनने की चेष्टा करता—पर युवती को उनके नामों की विशिष्टता से मानों कोई सरोकार न था, जहां भी खिले फूल देखती, युवक को घसीटती उसी ओर ले जाती। जहां भी पत्तियों की कोमलता, रंग उसे आर्कषित करते, उसी की हो जाती। युवक उसकी अदाओं पर मुग्ध था। बड़ी प्यारी मुसकान बिखेर उसे बाहों में समेट लेता।

अचानक भूरे-लाल बादल घाटी में नीचे उतर आये, रिमझिम वर्षा शुरू हो गयी। पहाड़ी प्रदेश की ठंडक और वर्षा की बूंदों ने दोनों को सिहरा दिया। दूर युवक अपने विशाल कोट में उसे दुबका और घसीटता ले गया। दोनों ही भीग गये थे—गरमाहट का कोई तरीका सुझाई नहीं दे रहा था। एक कोने में बड़ा चूल्हा बना था

जो बहुत पुराना होने के कारण टूट-फूट गया था। बड़ी-बड़ी लकड़ियों का ढेर अधजला पड़ा था। झोपड़ी का ऊपरी भाग वर्न-बेलि से मंडित था। उन्हें अब वर्षा तंग नहीं कर पा रही थी। बिजली की तड़प से युवती सिहर उठती है—युवक के वक्ष से लग जाती है। युवक उसे अपने में समेट लेता है। दोनों के शरीर बाहर की शीत और भीतर की तड़प से कांपने लगते हैं। घाटी का सूनापन उनमें एक अनबूझ मदहोशी भरने लगता है। एक शिला-खंड पर प्रिया को बांहों का सहारा दे, बैठा देता है। दोनों के होंठ थर्राते एक दूसरे से मिलते हैं। पुरुष का कसाव बढ़ता जाता है—और युवती के वक्ष की धड़कन। दोनों मिलन के लिए आतुर . . .युवती की आंखें मुंद-सी जातीं हैं। . . . युवक को अपने हाथों के पास अचानक एक तीक्ष्ण फुफकार का एहसास होता है। देखता है—

एक काला नाग फन उठाये कुंडली मारकर बैठा है। युवक के हाथों में युवती का सर है। प्रिया के माथे के वह बहुत समीप है—पुरुष जड़ हो जाता है। जरा-सा भी हिलने-डुलने से कहीं वह फन का प्रहार न कर दे। युवती युवक के अचानक इस पथरायेपन को सह नहीं पाती। आंखें खोलकर युवक की ओर देखती है। उसकी आंखों में भय का सैलाब उमड़ रहा था। वह सर उठाना चाहती है किंतु युवक की हथेली का कसाव इतना अधिक है कि वह सर हिला नहीं पाती। अचानक हवा के सर्राटे के साथ कुछ गिरने की आवाज होती है। पानी का एक झोंका तीनों को भिगो जाता है। नाग सहमकर पत्थरों की ओट में चला जाता है। "बहुत धीरे उठना. . . सांप है. . . ।" पुरुष बुदबुदा उठता है।

युवती ने भी सांप को जाते देख लिया था। काफी बड़ा था—उसके शरीर का एक बड़ा भाग अभी तक बाहर था, जिसका कालापन इस उदासी में भी चमक रहा था। दोनों धीरे-धीरे सहमे कदमों से झोपड़ी के बाहर आते हैं। अपने पैरों की आहट ही उन्हें कंपा देती है।

रोमांस बिखर जाता है। क्या इसीलिए इस घाटी में आये थे? दोनों, फिर सहज होना चाहते हैं। उनके बीच जैसे कुछ भी न घटा हो, इसे अनुभव करने के लिए जोरों से बातें करते हैं। बादल अपना भार हल्का कर घाटी के ऊपर चले

जलन से सताती, खुजलाती घमोरियों की बेचैनी भूल जाइये।

नायसिल अपनाइये!
शीघ्र आराम दिलानेवाला घमोरियों का पाउडर

२ पैक–
'ब्लू'
और
'सॅण्डलवुड'

नायसिल लाइये
घमोरियों को
भूल जाइये
टॅल्कम पाउडर से
भी कम क़ीमत में!

विशेष औषधियुक्त नायसिल हर दृष्टि से घमोरियों की रोकथाम करता है।

१. अत्यधिक पसीने को रोकता है।
२. पसीने को सोखता है।
३. दुर्गंध के कीटाणुओं की नाश करता है।
४. त्वचा को आराम पहुंचाता है।

GN.79.PR.HIN

Glaxo
Glaxo
nycil
PRICKLY HEAT POWDER

गये।
पगडं
बादल
जाती
देकर
तारों
एक
वृक्षों
कितन
भरने
हो,
छोटे
अपेक्ष
की घ
के स
शोर
का
खामो
आका
को
कर
सहस
रौंदत
सुना
की
थी—
बड़े
हो र
है।—
का
लगत
मई

गये। युवक और युवती भी एक पतली पगडंडी से ऊपर की ओर चढ़ते हैं, मानों बादलों से होड़ ले रहे हों। युवती थक जाती है, युवक अपनी बाहों का सहारा देकर उसे ऊपर ले जाता है। रेलिंग के तारों को पकड़कर दोनों सांस लेते हैं। एक दूसरे को बांहों में घेरे घाटी के नीचे वृक्षों की हरीतिमा में खो जाते हैं।.. कितना सौंदर्य, शांत-विराट, एकाकीपन को भरने वाला। जैसे सारा ही सौंदर्य उनका हो, अपना हो,... सिर्फ वे ही दो इस छोटे से संसार में हों। उन्हें और किसी की अपेक्षा भी न थी...दो पूर्ण इकाई। नीचे की घाटी के चीड़ के पत्ते हवा के झकोरों के सहारे कल-कल करते शिशु झरनों-सा शोर कर रहे थे। छोटे-छोटे बादलों का थिरकना थम गया था। सब कुछ खामोश था; अचानक बिजली की तड़प आकाश से लेकर घाटी तक के हृदय को विदीर्ण कर जाती है। युवती सिहरकर युवक के वक्ष में सिर छिपा देती है। सहसा निस्तब्ध घाटी की पगडंडी को रौंदती, टप-टप करती एक आवाज सुनायी पड़ती है। दूर एक छाया ऊपर की पगडंडी से उनकी ओर ही आ रही थी—बड़ा ओवर कोट और पैरों में बड़े-बड़े बूट पहने। उसके बूटों की आवाज हो रही थी। युवक भी विचलित हो उठता है।—"चलो अब चलें...," कहता युवती का हाथ पकड़ नीचे की ओर उतरने लगता है।

युवती भयभीत हो जल्दी-जल्दी उतरना चाह रही है। सिहरकर पीछे की ओर उस काली छाया को देखती है—

"पीछे बार-बार मत देखो... नहीं तो वह समझेगा कि हम लोग भयभीत होकर भाग रहे हैं।"

युवती कुछ कहती नहीं सिर्फ मुंह से 'हूं' निकलता है—पर उसके मुंह पर स्वेद-कण रिमझिमा आये थे। युवक का प्यार उमड़ता है—संयत होकर वह स्वयं अपने कदम तेज कर देता है। छाया काफी पास आ गयी थी। एक छोटा-सा होटल थोड़ी ही दूर रह गया था, वह अपने कदम और तेज कर देता है—युवती लड़खड़ाती, मदहोश कदमों से घिसटती उसके पीछे चलती है। वे लोग होटल के बरामदे तक आ जाते हैं। वह आवाज भी काफी पास आ गयी है। दोनों बेंच पर बैठ जाते हैं। युवती आधी बेहोशी की अवस्था में अपना सर युवक के कंधे पर रख आंखें मूंद लेती है। वह आवाज करता बूटों का जोड़ा भी उनके पास आ जाता है। सामने की बेंच पर ही वह बैठ जाता है। युवक संयत होकर देखता है...वह गश्त लगानेवाला सिपाही है। युवक एक रोबीली आवाज में होटल के बैरे को बुलाता है—

" कड़क चाय और एक प्लेट समोसे ... ।"

—१२ बी, देशप्राण शसमल रोड,
कलकत्ता

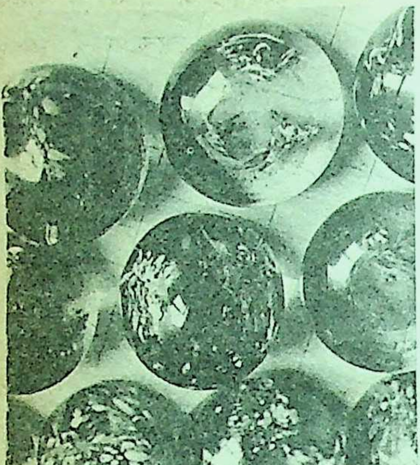

एक पेपरवेट में समूचे ब्रह्मांड का दर्शन

● अशोक आत्रेय

हाल ही की बात है, लंदन में ८ सेंटीमीटर वर्गाकार के एक अद्भुत एवं अलभ्य सौंदर्य के प्रतीक पेपरवेट की खरीद एक व्यक्ति ने ४८ हजार डॉलर (लगभग ४ लाख रुपये) में की, जिससे पेपरवेट-जगत के संग्रहकर्ताओं के दिल और दिमाग पर एक बार फिर से विचित्र एवं विस्मयकारी मानसिकता ने जन्म ले लिया। आज की नौकरशाही ने पेपरवेट को वैसे अब एक अत्यधिक सामान्य दरजा प्रदान कर दिया है, किंतु आज जो पेपरवेट हमारे घर या दफ्तर में केवल कागज दबाने के काम आ रहा है, कल उसी की कीमत हजारों-लाखों रुपयों में आंकी जा सकती है।

लंदन से हाल ही में बिकनेवाले जिस ८ सेंटीमीटर वर्गाकार पेपरवेट की हमने यहां बात की है, उसमें कांच के अंदर नीले और सफेद फूलों का एक ऐसा गुलदस्ता है, जो विश्व के पेपरवेट-जगत में अपनी विशिष्ट दुर्लभ स्थिति बनाये हुए है। यह अपने आप में एक आश्चर्य ही की बात है, लंदन के क्रिस्ट्राइल में, जहां इसकी नीलामी १२ जुलाई को हुई, उसकी कीमत आंकनेवालों का यह अंदाजा था कि इस पेपरवेट की कीमत १० हजार डॉलर से अधिक किसी भी सूरत में नहीं बढ़ पाएगी; किंतु एक निजी संग्रह-कर्ता ने नीलामी-कक्ष से इस पेपरवेट को ४८ हजार डॉलर देकर अपने वैभव का अनोखा अंग बना लिया।

यह उल्लेखनीय है कि लंदन में पेपरवेटों की नीलामी की एक विचित्र परंपरा ही बन चुकी है। पिछले कुछ ही वर्षों में वहां अब ऐसी पत्र-पत्रिकाएं अत्यधिक लोकप्रिय होती जा रही हैं, जो दुनिया के अमोल व अनोखे पेपरवेटों के संबंध में नयी-नयी जानकारियां प्रकाशित करती हैं।

पेपरवेट के इस विश्व-प्रसिद्ध एवं अब अत्यधिक लोकप्रिय विषय पर महत्त्वपूर्ण लेखन-कार्य फ्रांस के एक लेखक आर. इंबर्ट का माना जाता है। इसके अलावा फ्रांस के ही वाई एम्कि ने भी विश्व के पेपरवेट संग्रह पर शोधपूर्ण कार्य किया है।

पेपरवेट : एक अनमोल अंग

अब इसमें कोई संदेह नहीं कि पेपरवेट विश्व की विचित्र वैभवशाली दुनिया के अनमोल अंग बन चुके हैं। अठारहवीं शताब्दी में 'क्यूरोसिटी' शब्द का पर्याय ऐसी वस्तु से माना जाता था, जो अत्यधिक सावधानी, कुशलता व कला से निर्मित की गयी हो। यह शब्द उन्नीसवीं शताब्दी तक भी अपने उसी पर्याय में स्वीकार किया जाता रहा। आज 'क्यूरो' शब्द के साथ उसकी दुर्लभता के गुण जुड़ गये हैं।

पेपरवेट की पिछली वर्षों में बढ़ती हुई इस व्यापक लोकप्रियता तथा इसकी कीमतों का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। उन्नीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में एक कला समीक्षक डब्लू. एच. एलवे का एक लेख प्रकाशित हुआ था, जिसमें यह बताया गया था कि १९१२ के बाद अचानक ही पेपरवेट के मूल्यों में अविश्वनीय वृद्धि हो गयी। उसके पहले आम तौर पर उन्हें बाजार में १०–१२ शिलिंग में खरीदा जा सकता था। इसके अलावा ऐतिहासिक महत्त्व रखनेवाले पेपरवेट भी केवल उनकी सुंदरता और कुशलता को देखते हुए ५–६ डॉलर से अधिक में नहीं बिकते थे। उन्होंने बताया कि १९३९ में एक दुर्लभ फियौरी पेपरवेट की कीमत १०–१२ डॉलर ही आंकी गयी थी। पेपरवेट की सर्वाधिक चर्चित और ऐतिहासिक महत्त्व की नीलामी के बारे में कहा जाता है कि यह लंदन में स्वर्गीय एपल वेटबोट के संग्रह के खरीदे जाने से प्रारंभ हुई।

पेपरवेट का जन्म

अपने आप में अद्भुत सौंदर्य के रूप में फूलों, पत्तियों, रंग-बिरंगे तंतुओं, जीव-जगत के अनदेखे विस्मयकारी जंतुओं के इतिहास को कांच के गोल-चौकोर और दूसरे रूपों में बांधनेवाले इन पेपरवेटों का जन्म वस्तुतः वेनिस में हुआ। तब पेपरवेट अपनी अत्यधिक सामान्य सादगी को लिए हुए केवल अपना सीमित उपयोगी अर्थ बताता था। इसमें अद्भुत अलंकरण

लाखों टी वी दर्शकों की पसन्द
आखिर टैक्सला ही क्यों ?
शानदार
कार्य कुशलता
बेमिसाल गारण्टी
लाजवाब
बिक्री-उपरान्त-सर्विस

हर टैक्सला टी वी पूर्णत: जाँचे परखे हिस्से पुर्जों से तैयार किया जाता है। हर सैट, साफ़ तस्वीर एवं बढ़िया आवाज़ की प्रतिमूर्ति है क्योंकि हम आधुनिकतम आई सीज़ तथा नवीनतम सॉलिड स्टेट टैक्नॉलोजी का प्रयोग करते हैं। और सोने पर सुहागा हैं हमारी लाजवाब गारण्टी और बिक्री-उपरान्त-सर्विस, जिनके कारण ही लाखों परिवारों का मन भावन है, टैक्सला।

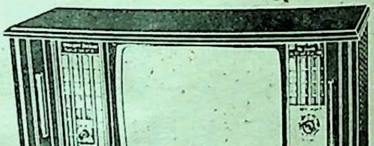

Texla TV
सही पसंद

भारत में सर्वाधिक
लोकप्रिय
सॉलिड स्टेट टी वी

Sobhagya

और
दिनोंदि
मिस्रो
जड़े
रूपाक
के तब
थे, जि
जड़ी
एक इ
होता
के पुन
पेपरवे
था।
अत्यधि
हुए फू
वाले
प्रचलन
हुआ
के रंग
रखकर
अचान
बाद
और
आते-
कर वि
अपनी
निकत
के बा
आधा
कार्य
आज
ई,

और भाव-संयोजन की सृष्टि, जिससे यह दिनोंदिन लोकप्रिय होता चला गया, मिस्री सभ्यता से संबंधित है। कांच में जड़े हुए मोजेइक (पच्चीकारी) के रूपाकारों में अलंकृत मिले फियौरी शिल्प के तब ऐसे पेपरवेट मिस्र में बनने लगे थे, जिनमें रंग-बिरंगी कांच की सलाखाएं जड़ी जाने लगी थीं। वस्तुतः मिले फियौरी एक इटालियन शब्द है, जिसका अर्थ ही होता है, खिलते हुए हजारों फूल। विश्व के पुनर्जागरण के इतिहास में मिले फियौरी पेपरवेट के प्रचलन का दौर चल चुका था। मिस्र में आज भी कांच के अंदर अत्यधिक सुंदर अलंकरणों से जगमगाते हुए फूलों व पत्तियों के शिल्प को उभारनेवाले सौंदर्य का काफी प्रचलन है। यह प्रचलन ईसा पूर्व चौदहवीं शताब्दी से जुड़ा हुआ है। पहले यह कार्य विभिन्न प्रकार के रंगों व कांच के आकारों को साथ में रखकर गरम करने से प्रारंभ हुआ, जिससे अचानक ही ऐसे सौंदर्य की सृष्टि हुई। बाद में इसका विकास होता गया और ईसा पूर्व सत्ताइसवीं शताब्दी तक आते-आते जब रोम ने मिस्र पर कब्जा कर लिया, तब इसका विकास उत्तरोत्तर अपनी परंपरागत कुशलता से आधुनिकता की ओर होने लगा। वस्तुतः ईसा के बाद प्रथम शताब्दी में रोमन तकनीकी आधार पर ही कांच के इस विस्मयकारी कार्य और सौंदर्य का विकास हुआ, जिसे आज मिले फियौरी के नाम से जाना जाता है। विश्वभर में विभिन्न प्रतिष्ठित संग्रहालयों में तथा निजी संग्रहकर्ताओं के पास रोमन-कला के ये नमूने आज मौजूद हैं।

पेपरवेट के आधुनिक निर्माता

पेपरवेट के आधुनिक निर्माताओं एवं संग्रहकर्ताओं में फ्रांस की हस्तियां आज सबसे आगे हैं। इनमें बेकरेट, लुइस, क्लिकि का नाम विश्व में उल्लेखनीय है। पेरिस में कांच के इस वैभवशाली प्रतीक का महत्त्वपूर्ण निर्माण १८४०-१८७० के बीच हुआ। आज विश्व में अपने समृद्ध नमूनों व विशिष्ट अलंकरणों की व्यापक किस्मों के कारण मिले-फियौरी पेपरवेट की लोकप्रियता सर्वाधिक है। इनमें फूलों और जीव-जंतुओं की कांच-नलियां सूक्ष्म आकार में बेजोड़ कलाकृति के रूप में उभरती हैं तथा उनका अलंकरण भी अपनी विशिष्ट शिल्प-संरचना के कारण काफी आकर्षक लगता है।

आज पेपरवेट में जंगली हिरण, ऊंट, घोड़े, तितलियां, बंदर, हाथी तथा रंग-बिरंगे आकारों के फूलों के हजारों नमूने, नृत्य करती हुई बालाएं व अनिश्चित आकारों के रंग-बिरंगे धब्बे व प्रकाश-पुंज ऐसे तैरते हुए नजर आते हैं, जैसे उन्हें किसी शून्य में लटका दिया गया हो। यदि चाहें, तो हम पेपरवेट में संपूर्ण ब्रह्मांड को भी दर्शा सकते हैं।

—सी-९८, मोती मार्ग, बापूनगर,
जयपुर

बहसवादी

● प्रकाश माथुर 'आजाद'

मैं एक विवाह में सम्मिलित हुआ था। उस समय बारात लौट रही थी, उसमें अनेक सामाजिक और राजनैतिक नेता एवं शिक्षाविद भी शामिल थे, जो परस्पर बहस में उलझे हुए थे। बहस का विषय था, "शिक्षा का स्तर कैसे ऊंचा किया जाए।"

"क्या किसी के पास कुछ पढ़ने को है?" एक बाराती ने अंगड़ाई ली। "अभी लो", एक अन्य बाराती ने सहसा कहा और उसने एक गांठ खोलकर प्रति बाराती एक अदद किताब बांट दी।

"इधर से तो भैया तुम्हारे पास एक भी किताब नहीं थी। लौटते में, इतनी किताबें कहां से आ गयीं?" पहले बाराती ने प्रश्न किया।

"बारात एक कालेज की लायब्रेरी में ठहरी थी ना", दूसरे बाराती ने हंसकर उत्तर दिया "मैंने एक अलमारी का ताला चटका लिया और पचास-साठ किताबें निकाल लीं।"

यह सुनकर किताबें हाथ में थामे वे नेता और शिक्षाविद हो-होकर हंस पड़े। और, परस्पर पुन: जोरदार बहस में उलझ गये। मैं हतप्रभ-सा उन्हें देख रहा था।

अब बहस का विषय था, "शिक्षा संस्थानों में नैतिक-स्तर कैसे ऊंचा किया जाए?"

—बजाज नगर, जयपुर

सही कहानियां

पाठकों की : लेखकों की नहीं

इस स्तंभ के लिए रचनाएं भेजते समय ध्यान रखिए :

- **कोई भी रचना वापस नहीं की जाएगी, इसलिए उसकी प्रतिलिपि अपने पास रख लें।**
- **साथ में टिकट लगा लिफाफा न भेजें।**
- **इस स्तंभ में किसी तरह का पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा**
- **अगली प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ५ मई, १९८१**

हम आपकी कहानी भी छापेंगे--१२

कुलीनता

● निरंजनकुमार तिवारी

सन '६८ की बात है। करीब ११ साल का रहा हूंगा। पिताजी के साथ जबलपुर की यात्रा पूरी कर मिर्जापुर होते

हुए पटना आ रहा था। मिर्जापुर में ट्रेन बदलनी थी। रात्रि का समय। सुना था, ट्रेन दो-तीन मिनट से अधिक नहीं रुकती। जगह अनजान। साथ में कुछ अधिक सामान, बेहद भीड़। खैर, गाड़ी आयी। कुलीमय हम दोनों निश्चित डिब्बे की ओर झपट पड़े। डिब्बे में प्रवेश के साथ ही ट्रेन चल पड़ी। पता चला बाकी सामान छूट गया है। जंजीर खींची गयी। गार्ड ने आकर कहा, "सामान के लिए हमें प्लेटफार्म पर ही जाकर रपट लिखवानी पड़ेगी।" ट्रेन स्टेशन से करीब आधा किलोमीटर दूर निकल चुकी थी। हमने ट्रेन से उतरकर पीछे छूटे स्टेशन की ओर कदम बढ़ाया ही था कि वही कुली सारे सामान के साथ आता दिखायी पड़ा। वह ट्रेन के साथ-साथ भागा आ रहा था। हांफते हुए उसने भविष्य में इस तरह सामान न छोड़ने की 'विनती' की। पिताजी ने इनाम के तौर पर उसे १० का नोट दिया, पर उसने नहीं लिया।

आज उस कुली की कुलीनता पर शरीर रोमांचित हो उठता है, और साथ ही उसे १० का नोट देने पर ग्लानि भी होती है। —मिहिजाम, बिहार

नयी जिंदगानी

● ललितमोहन पन्त 'नीरद'

एक बार एक भिखारिन स्त्री, हमारे दरवाजे पर बड़े ऊंचे स्वर में भीख मांग रही थी, मेरे भविष्य के संपूर्ण सुख-साधनों को दुहाई देती हुई। उसका कंठ जब काफी समय तक न थमा, तब मैंने किवाड़ खोलकर पूछ ही लिया, "क्या चाहिए तुम्हें",

"तनिक-सा आटा दई दो भइया, भगवान भला करेगा तुम्हारा। ई देखौ, हमार बिटवा दुई दिन से भूखा है।" एक नन्ही बच्ची की ओर इशारा करते हुए उसने कहा।

मैं थोड़ा सा आटा ले आया, मगर उसके पुष्ट शरीर को देखकर मुझसे रहा न गया, "तुम तो स्वस्थ्य औरत दिख रही हो, इस तरह भीख मांगते तुम्हें शर्म नहीं आती, क्या इस बच्ची को यही शिक्षा दे रही हो तुम, मजदूरी क्यों नहीं कर लेती कहीं जाकर?" मैंने पूछा।

यह सुनकर वह मेरा लाया हुआ आटा छोड़कर जाने लगी, मेरे आग्रह पर भी जब उसने न लिया, तब मुझे बड़ा दुःख हुआ, सोच रहा था, जब मुट्ठी भर आटा देना ही था, तब अपने कोरे उपदेश भी पास ही रख लेता।

लेकिन कुछ दिन बाद उस भिखारिन स्त्री को एक नये बन रहे मकान के लिए ईंटें ढोते देख मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, वह भी मुझे पहचानकर पास आयी और दोनों हाथ जोड़कर बड़ी कृतज्ञता से बोली, "बाबूजी, भला हो आपका, आपने तो हमका नयी जिंदगानी दई दी, अब हम भीख नाहीं मांगत हैं, मजूरी करत हैं।" यह कहकर वह तो चली गयी, लेकिन उसका चेहरा मेरे हृदय पर एक अमिट छाप छोड़ गया। —रानीपुरम, लखनऊ

मरदों की शोभा.....से

• चन्द्रमोहन प्रधान

आजकल स्त्री-पुरुष, दोनों की वेशभूषा एक जैसी कर, अत्याधुनिक क्षेत्रों में एक नयी सामाजिक क्रांति की जा रही है। स्त्रियां पुरुष वेश अपना रही हैं, बाल मर्दाने ढंग से कटा रही हैं किंतु, दाढ़ी-मूंछें उगाना उनके वश के बाहर की बात है। मर्दों को चाहिए, वे मॉडर्न युवतियों को मिस्त्री रानी हतशेपसुत (ईसा पूर्व १६०० वर्ष) से प्रेरणा लेने को प्रोत्साहित करें, जो राजकीय समारोहों में सदा नकली दाढ़ी लगाकर सम्मिलित होती थी। पुराने मिस्र में, राजपरिवार के अधिकार-प्रदर्शन के लिए दाढ़ी अनिवार्य चिह्न थी। हां, यह दाढ़ी सोने की बनी होती थी!

और पीछे लौटें, जब सभ्यता का प्रारंभ नहीं हुआ था; उस आदिम युग में दाढ़ी-मूंछों के विभिन्न फैशनों का सवाल ही नहीं था। तब तो, मर्दों के सामने इन कड़े बालों से, चेहरे का पीछा छुड़ाने की परेशानी रही होगी। बाद में, जब पुरुषों ने दाढ़ी पर अपना एकाधिकार देखा, तब इसे पौरुष और वीरता का प्रतीक मान लिया। प्रागैतिहासिक युग में मर्दों के सामने

उदाहरण रहा होगा नर सिंह और सिंहनी का।

दाढ़ी ने राज्य किया था

सभ्यता के प्रसार, और मातृसत्तात्मक के बदले पुरुष सत्तात्मक समाज के प्रारंभ के बाद, दाढ़ी-मूंछों का महत्त्व बढ़ने लगा। सभी प्राचीन सभ्यताओं में दाढ़ी-मूंछों का अखंड साम्राज्य रहा है। पुराने असीरियाई, बेबीलोनियन (असुर, बाबुल) लोगों में राजा से रंक तक लंबी, बलखाती दाढ़ियां रखते थे। असुर लोग सिंह-जैसी दाढ़ी रखने का प्रयास करते थे। बाबुल के सम्राट हम्मुराबी (ई. पू. १७८०) की बनवायी न्यायसंहिता लिखित रूप में सब से पुरानी है। यह सम्राट एक बित्ते की, लहरायी दाढ़ी रखता था। असुर सम्राट वेणीपाल (असरबनीपाल) के सिंह के शिकार करते मूर्त्तिफलक में नाभि तक आती दाढ़ी चित्रित है। प्राचीन ईरानियों में दारायुष (डेरियस) की दाढ़ी छाती तक है। मिस्र में, दाढ़ी की लंबाई विभिन्न पदों के अनुसार रहा करती थी। राजा को कम से कम ६ इंच लंबी दाढ़ी रखनी जरूरी थी। भारतीय सामान्य रूप से छोड़ देते, कुछ छांटकर छोटी कर लेते। किंतु सभी देशों के विद्वानों, दार्शनिकों के लिए दाढ़ी बड़प्पन एवं विद्वता का अनिवार्य चिह्न रही।

असुर, यूनानी, सोने की भस्म से दाढ़ी रंगने के शौकीन थे। यूनान में सिकंदर के पिता फिलिप्स तक तो सभी दाढ़ीदार रहे, पर सिकंदर ने अनिवार्य आदेश निकाला कि उसकी सेना में नित्य सबको दाढ़ी मूंडनी होगी। सिकंदर को दाढ़ी से बहुत चिढ़ थी और वह खुद रोज दाढ़ी बनाता था।

रोमनों के उदय के पूर्व, इटली में जो सभ्य जाति एट्रस्कन बसी हुई थी (जिसे रोमनों ने नष्ट कर, अपना साम्राज्य स्थापित किया) वह घोर दाढ़ी-प्रेमी जाति थी। इनकी महिलाएं बड़ी सुंदर होती थीं। नृतत्त्वशास्त्रियों के अनुसार यह जाति भारतमूल के असुरों की शाखा थी। रोमनों ने अधिकतर दाढ़ी साफ रखी। उनमें हेड्रियन, उसके उत्तराधिकारी एंटोनियोस और प्रख्यात मार्कस ओरेलियस, इन सम्राटों ने दाढ़ियां रखीं। एप्रिफेनस ने दाढ़ी मुंडवाने का नियम बनाया, ताकि युद्धों में शत्रु कहीं रोमनों की दाढ़ी न पकड़ लिया करें।

मध्यकालीन यूरोप में, दाढ़ी शौक की वस्तु होने के साथ बुद्धिजीवियों की प्यारी चीज रही। शेक्सपियर स्वयं तो

दाढ़ी रखता ही था। उसके प्रमुख पात्र भी दाढ़ीदार रहे। 'मिडसमर नाइट्स ड्रीम' में एक पात्र पूछता है, "उसे बैंगनी रंग की दाढ़ी लगानी है, पुआल के रंग की फ्रेंच क्राउन-जैसी या गाढ़े पीले रंग की?" 'ऐज यू लाइक इट' की नायिका रोजालिंड कहती है, "आप लोगों में, जिनकी दाढ़ियां मुझे पसंद आयी हैं, उन सबको मैं चुंबन दे सकती हूं।" दाढ़ी सम्मान का प्रतीक थी।

दाढ़ी रखने पर टैक्स था

रूसी सम्राट पीटर महान की दाढ़ी-मूछें होती ही नहीं थी। सन १७०५ में उसने दाढ़ियों पर कर लगा दिया, ताकि दूसरे लोग भी दाढ़ी रखने में हिचकें। धनी व्यापारियों को १०० सामान्य व्यापारी को ६०, नौकरों और सामान्य स्थिति वालों को ३० रूबल का कर दाढ़ी रखने पर देना पड़ता था। भिखारियों को इससे छूट रही, पर राजपरिवारवालों को स्पष्टत: दाढ़ी मना थी। १७२२ ई. में नया आदेश हुआ कि जो दाढ़ी रखे, वह पुराने युगों की पोशाकें भी पहने, अन्यथा ५० रूबल का और अर्थ-दंड! रूसी प्रारंभ से ही दाढ़ी के शौकीन रहे हैं, जैसे कि अन्य ठंडे, उत्तरी प्रदेशों के निवासी। उधर की ठंड में दाढ़ी से बहुत-कुछ आराम मिलता है। रूसी सम्राट भयंकर ईवान (ईवान द टेरिबल) की दाढ़ी प्रसिद्ध है। तोल्स्तोय, चेखव, लेनिन, दोस्तोवस्की, बुलानिन आदि प्रख्यात रूसी दाढ़ी के शौकीन थे। फ्रांस में, तेरहवें लुई ने १७वीं शताब्दी में दाढ़ी रखना गैर-कानूनी एवं जुर्म घोषित कर दिया। कारण वही, उसके दाढ़ी उगती नहीं थी!

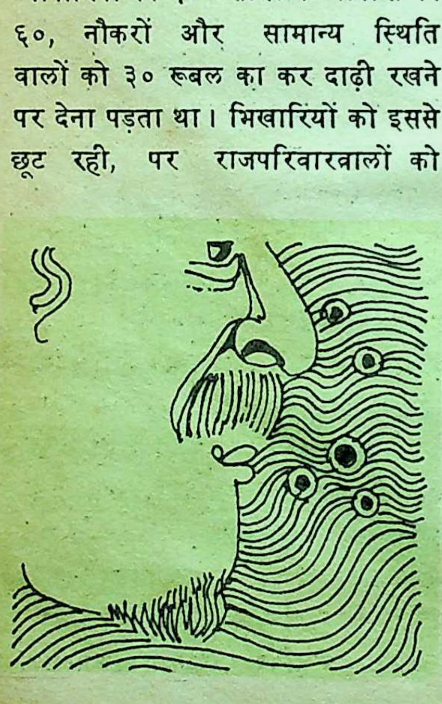

भारत में सिखों के लिए दाढ़ी अनिवार्य धार्मिक चिह्न है। कैंची उसे छू नहीं सकती। गुरु गोविन्दसिंह ने तत्कालीन युद्धों के युग में युद्धोपयोगी दृष्टिकोण से दाढ़ी (केश), कड़ा, कच्छ, कृपाण, पंच ककार के अनिवार्य नियम बनाये, जिनमें दाढ़ी पौरुष का प्रतीक और केश सिर पर अस्त्राघात से बचाव के साधन के रूप में रहे। युद्धों का जमाना बीत गया, पर ये चिह्न सिखों में धार्मिक तौर पर रूढ़ हैं। सिख भाइयों का कौल है, "बिना दाढ़ी के मर्द बंदर लगता है।"

अभी सौ वर्ष पहले तक दाढ़ी-मूंछ मर्दों की इज्जत और खानदानी गौरव की प्रतीक रहीं। तब, दाढ़ी-मूंछ का एक बाल गिरवी रखकर लोग लाखों के कर्ज ले लेते

और जब तक वह या उसके पुत्र-पौत्र रुपये अदाकर उस बाल को छुड़ा न लेते, अपनी खानदानी इज्जत को ही गिरवी रखी मानते। पिछली पीढ़ी तक तो पिता के जीवित रहते पुत्र का मूंछें साफ कराना घोर अपराध रहा, क्योंकि हिंदुओं में पिता के देहावसान के बाद मूंछें मुंडाई जाने का नियम है।

द्वितीय महायुद्ध के जमाने--१९४२ में हिटलर कट की मूंछों का फैशन आया। इस कट में यह दिक्कत है कि दोनों तरफ के बाल रेजर या उस्तरे से बराबर काटने होते हैं, जिससे होंठों पर तितली बैठी होने का भ्रम होता था। इसी कारण, यह तितली-कट भी प्रसिद्ध है। काटते हुए यदि एक तरफ का हिस्सा अधिक कटा, तो दूसरी ओर से भी उसे छोटा करना होता है। इस तरह प्रायः हिटलर कट मूंछें रखनेवालों की मूंछें ऐसी दीख पड़ती थीं-जैसे नाक के नीचे दो मक्खियां बैठी हों, अथवा डबल बैरल की बंदूक सामने तनी हो।

वैसे, मूंछों के उपयोग भी कम नहीं। एक तो यही है कि जब अकेले में बेकार बैठे हों, तब मूंछों पर ताव देकर समय काटिए। मन नहीं ऊबेगा। दूसरा यह भी, कि किसी वास्तविक सुंदरी (यदि कोई महिला इस लेख को चोरी से पढ़ रही हों, तो क्षमा करें) को देखकर पुरुष का हाथ, प्रसन्नतावश अनायास मूंछों पर ताव देने लगता है। सफाचट लोगों को यह सुविधा कहां! मूंछें मर्दाना भावों को कई तरह से व्यक्त करने के लिए सुंदर साधन हैं। दुःख की बात यही है कि मर्दानगी की प्रतीक ये दोनों दाढ़ी-मूंछें, पता नहीं कैसे स्त्री लिंग में शुमार हो गयीं हैं।

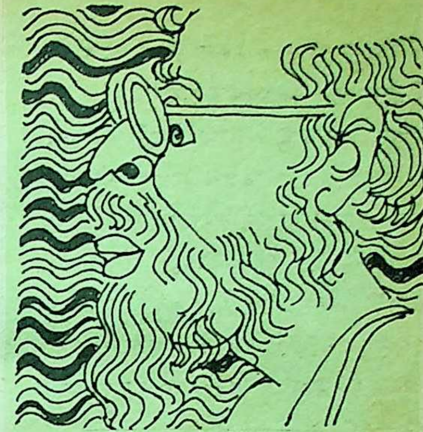

पोता दाढ़ीदार और दादा सफाचट

पिछली पीढ़ी जहां सफाचट रह गयी, नयी पीढ़ी ने फिर अतीत की ओर लौटना चाहा है। लंबी कलमें, विभिन्न बनावटों की मूंछें, दाढ़ियां फिर फैशन में है? कहावत है, 'यदि दो व्यक्ति कहीं जा रहे हैं, तो उनमें दाढ़ीवाला ही बेटा होगा, सफाचट बाप।' पुरानी पीढ़ी के मोरारजी हैं सफाचट। बीच के जगजीवन राम मूंछ रखे हैं, नयी पीढ़ी के प्रतीक चंद्रशेखर हैं, दाढ़ी-मूंछ दोनों से युक्त! जो हो, ऑस्ट्रेलिया के डॉ. पार्कर का शोध है कि दाढ़ी या मूंछ रखनेवाले असामान्य प्रकृति के होते हैं। उनमें विशेषताएं होती हैं। सफाचट सामान्य होते हैं। इसके प्रमाण में स्टालिन, हिटलर, कैसरविलियम आदि बहुत लोगों के साथ, आधुनिक स्पेनिश चित्रकार

एक और नया सितारा

बेलटेक
सुपर स्टार

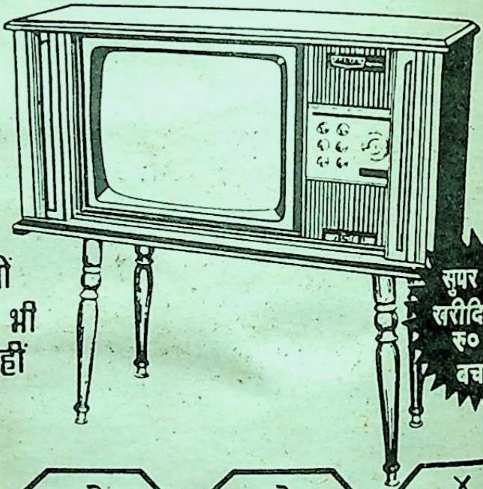

४ ऐसी विशेषताओं के साथ जो कोई भी दूसरा टी० वी० नहीं दे सकता

सुपर स्टार
खरीदिये और
रु० ३००
बचाईये

१
६ आई सी
सालिड स्टेट
टी०वी०

२
विडियो
चलाने
की सुविधा

३
आई सी नियंत्रित
बिल्ट इन
आटोमेटिक
वोल्टेज
स्टैबेलाईज़र

४
ट्रेबल एवं बैस
कन्ट्रोल्स
स्टीरियो जैसी
ध्वनि के लिए

दिल्ली में पहले नम्बर पर बिकने वाला

बेलटेक

Continental/BT/1780R

सॉल्वेदर डॉली भी हैं। डॉली की मूंछें दोनों कोनों से एकाएक ऊपर उठती, सूई की नोंक सरीखी होकर दोनों आंखों तक जा पहुंचती है घूमकर।

दाढ़ी-मूंछ प्रसंग में उस्तरे का जिक्र अनिवार्य है। प्रागैतिहासिक भारत में, घोड़े की पसली, पत्थर आदि के उस्तरे बनते थे। प्रारंभिक यूरोप में शॉर्क मछली के दांत इस काम में आते थे। रोमन सैनिक प्यूमिस पत्थरों का उपयोग करते रहे। मिस्र के एक प्राचीन पिरामिड में से कांसे का बना उस्तरा मिला है। बाद में चलकर भारतीय तांबे का प्रयोग करने लगे, लोहा बनाना बाद में शुरू हुआ। बहुत से जंगली कबीलों में आज भी दाढ़ी साफ करने का आदिम तरीका है—'दाढ़ी में आग लगा देना और चेहरे के पास आंच पहुंचते ही मुंह पर चपतें लगाकर उसे बुझा देना। घोड़े की नाल तेजकर, यूरोप में मध्य काल तक दाढ़ी बनायी जाती रही। जब १९०४ ई० में किंग जिलेट ने सेफ्टी रेजर का आविष्कार किया, तब पुरुष वर्ग को दाढ़ी की मुसीबतों से राहत मिली, और बनाने वाले बिना कष्ट या खतरे के दाढ़ी मजे में मूंडने लगे।

दाढ़ी के बाल २५,००० !

दाढ़ी-मूंछों के बाल, चेहरे की लगभग ४०% जगह घेरे रहते हैं। ये बाल नाईट्रोजन और सल्फर केराटिन के बने होते हैं और अपनी मोटाई के स्टील के तार से भी अधिक मजबूत होते हैं। इनकी वृद्धि की रफ्तार औसत आधे से पौन इंच प्रतिमास है। २४ घंटों में ये बाल १।१०० इंच बढ़ते हैं, और एक बार दाढ़ी बनाने में ढाई सौ इंच, या २१ फुट बाल कटते हैं, क्योंकि इनकी संख्या २५ हजार होती है। दाढ़ी की उपयोगिता के संदर्भ में, एक मजेदार प्रसंग का उल्लेख अनुचित न होगा। कहते हैं, ईरान के शाह दारा ने एक बार अपने बुजुर्ग वजीर को भारत भेजा और आदेश दिया कि जो अच्छी चीजें वहां हों, लेता आये। वजीर हिन्दुस्तान आया। महीनों देशाटन कर लौटा, तो सम्राट् ने पूछा, "हिन्दुस्तान की सब से अच्छी चीज क्या ?"

"हजूर, आम है, एक फल।" वज़ीर ने बताया

जब सम्राट् ने आम मांगा, तब वजीर घबराया, वह आम को लाना भूल ही गया था। पर, ठहरा वजीर का दिमाग, उसने झटपट एक कढ़ाई में मीठी चाशनी तैयार करायी, उस में सुगंध मिलायी, और अपनी लंबी, सफेद दाढ़ी को उसमें भरपूर डुबो कर, दाढ़ी दोनों हाथों में ले, सम्राट् की सेवा में पेश हो गया, "लीजिए, हुजूर, इसे चूस कर देखिए। आम ठीक ऐसा ही होता है।"

दाढ़ी में अनगिनत गुण हैं। आज, रहीम होते, तो लिखते :

'रहिमन दाढ़ी राखिए,
बिन दाढ़ी सब सून...'

—निदेशक : ज्ञान-कला-केंद्र आमगोला,
मुजफ्फरपुर-२

विवाह पूर्व बुद्ध की वर-परीक्षा

● प्रो. श्रीरंजन सूरिदेव

भावी श्वसुर द्वारा अपने भावी जमाता की शास्त्रज्ञान-परीक्षा भारतीय लोकजीवन की प्राचीन प्रथा है। यह परीक्षा विभिन्न कालों में विविध रूपों से ली जाती रही है। आज भी यह परीक्षा-विधि किसी-न-किसी रूप में प्रचलित है। इस विधि में वर के गुणों के साथ ही उसके रूप, शील, वय और कुल को विशेष रूप से निरखा-परखा जाता है। कहना न होगा कि इस परीक्षा-विधि की अपनी सार्थकता तो है ही, यह अपने-आप में अतिशय अद्‌भुत और मनोरंजक भी हुआ करती है।

सामान्य वरों की तो बात ही छोड़िए, बड़े-बड़े महापुरुषों को भी वर के रूप में इस परीक्षा का सामना करना पड़ा है। प्रसिद्ध बौद्धग्रंथ 'ललितविस्तार' के 'शिल्प संदर्शन' नामक बारहवें परिवर्त्त में प्राप्त कथा के अनुसार, भगवान बुद्ध को भी कुमार बोधिसत्व के रूप में यह परीक्षा देनी पड़ी थी। तभी उन्हें दंडपाणि शाक्य-देव की सुंदरी और गुणवती पुत्री गोपा पत्नी के रूप में प्राप्त हुई थी।

भगवान बुद्ध बुद्धत्व प्राप्त करने के पूर्व कुमार बोधिसत्व के नाम से संबोधित होते थे। उन्होंने लिपिशाला में रहकर दारकाचार्य विश्वामित्र और गणक महामात्र अर्जुन से विभिन्न कलाओं में शिक्षा प्राप्त की थी। उनके बारे में नैमितिक ब्राह्मणों ने निर्देश किया था कि यदि कुमार अभिनिष्क्रमण करेंगे तो ये सम्यक संबुद्ध अर्हत् होंगे और यदि गृहधर्म में रहेंगे, तो चक्रवर्ती राजा होंगे।

बुद्ध कैसी पत्नी चाहते थे?

कपिलवस्तु महानगर में पांच सौ शाक्य

रहते थे। राजा शुद्धोदन ने सबसे पहले अपने पुत्र कुमार बोधिसत्व की इच्छा जाननी चाही कि कौन-सी कन्या उसे पसंद है। इस संबंध में नैमित्तिक ब्राह्मणों ने एक साथ मिलकर कुमार से जिज्ञासा की। कुमार ने सातवें दिन अपनी इच्छा प्रकट की, "जन्म, कुल और गोत्र की दृष्टि से अतिशय शुद्ध कन्या ही मुझे पसंद है। यदि कन्या गुणवती हो, तो जन्म-कुल-गोत्र को भी महत्व देने की आवश्यकता नहीं। वह कन्या रूपवती युवती अवश्य हो, किंतु रूप-यौवन से मत्त नहीं हो। वह मेरी माता और बहन के प्रति मैत्रीभाव रखनेवाली हो, साथ ही उसमें त्याग और दान की सहज प्रवृत्ति हो। वह अपने पति से ही संतुष्ट रहनेवाली हो और पर-पुरुष को स्वप्न में भी नहीं चाहती हो। वह मानिनी, घमंडी, उद्धत, प्रगल्भ, चंचल, विषयरसलोलुप और लज्जोत्पादक वस्त्र पहननेवाली न हो। मैं वैसी कन्या पसंद करता हूं, जो शास्त्रज्ञ तथा गणिका के समान कुशल और व्यवहार-पटु हो, साथ ही मातृत्व की विभूति से परिदीप्त हो।"

कन्या के विषय में कुमार बोधिसत्व की अभिरुचि जानकर राजा शुद्धोदन ने अपने पुरोहित से कपिलवस्तु महानगर के सभी घरों की कन्याओं के निरीक्षण करने का अनुरोध किया और कहा, "कन्या चाहे वह क्षत्रिय हो या ब्राह्मणी या वैश्य या शूद्रा ही हो, यदि कुमार की अभिरुचि के अनुरूप गुणवती हो, तो मुझे उसकी सूचना दी जाए।"

राजा शुद्धोदन के निर्देशानुसार, कपिलवस्तु महानगर में एक घर से दूसरे घर में हिंडन (अन्वेषण) करते हुए पुरोहित ने दंडपाणि शाक्य के घर में कुमार की अभिरुचि के अनुरूप एक कन्या देखी।

पुरोहित ने लौटकर राजा शुद्धोदन से कहा कि दंडपाणि शाक्य की कन्या कुमार बोधिसत्व की अभिरुचि के अनुकूल है। किंतु, राजा शुद्धोदन ने सोचा, 'कुमार बोधिसत्व की रुचि विचित्र है। संभव है, वह गुणहीन स्त्री को भी कहीं गुणवती न समझ ले। इसलिए, मैं कुमार के हाथों कन्याओं में वितरण के लिए अशोकभांड तैयार कराता हूं। भांड-वितरण करते समय कुमार की दृष्टि जिस कन्या पर जाएगी, उसी को मैं कुमार के लिए वरण करूंगा।'

राजा शुद्धोदन ने सोने, चांदी एवं

बुद्ध का केश कर्तन : १७वीं शताब्दी

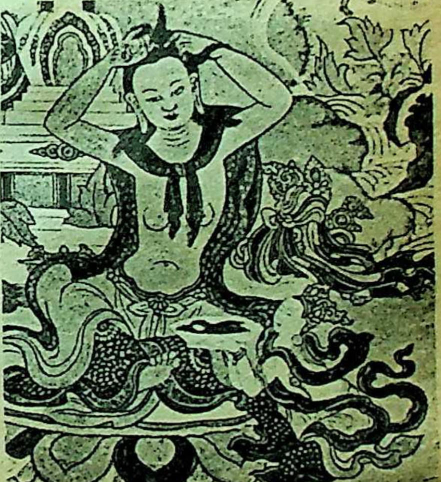

विविध रत्नों के अशोकभांड बनवाये और कपिलवस्तु महानगर में घंटा बजवाकर घोषणा करायी कि सातवें दिन कुमार बोधिसत्व दर्शन देंगे और कन्याओं के लिए अशोकभांडों का वितरण करेंगे।

सातवें दिन कुमार बोधिसत्व संस्थागार में आकर भद्रासन पर बैठे। राजा शुद्धोदन ने अपने गुप्तचरों को निगरानी के लिए नियुक्त किया, ताकि वे राजा को सूचित करें कि कुमार की दृष्टि किस कन्या पर गयी? कन्याएं बारी-बारी से आतीं और कुमार बोद्धिसत्व की श्री और तेज को न सह पाने के कारण अशोकभांड लेकर जल्दी-जल्दी निकल भागतीं।

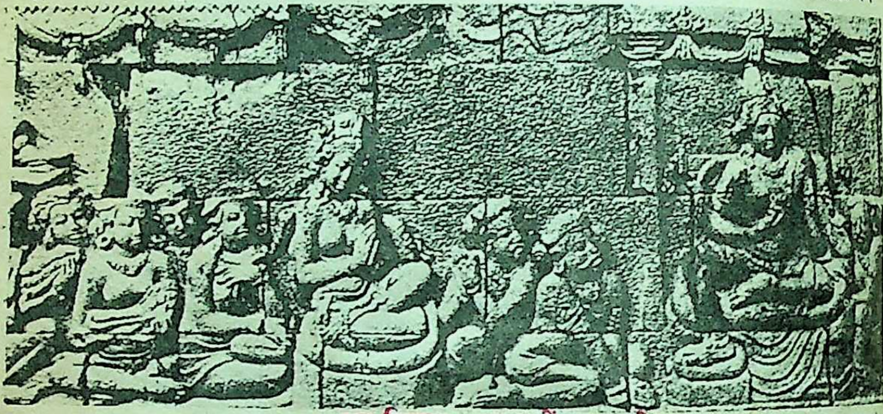

बुद्ध-विवाह : आठवीं शताब्दी

अंत में, जब सभी अशोकभांड वितरित हो गये, दंडपाणि शाक्य की पुत्री गोपा कुमार बोधिसत्व के सामने आयी और उन्हें निर्निमेष नेत्रों से देखती हुई खड़ी रही। पुनः उनके निकट जाकर मुसकराती हुई वह बोली, "मैंने क्या बिगाड़ा है, जो आप मुझे अपमानित कर रहे हैं?"

कुमार ने कहा, "मैं तुम्हें अपमानित नहीं कर रहा हूं, तुम चूंकि सबसे पीछे आयीं, इसलिए तुम्हें अशोकभांड नहीं दे सका।" यह कहकर कुमार ने अपनी अंगुली से लाखों के मूल्य की अंगूठी निकाली और उसे गोपा को दे दिया।

गोपा बोली, "कुमार, क्या मैं इस अंगूठी के योग्य हूं?"

तब कुमार बोधिसत्व अपने शरीर से समस्त आभरणों को उतारकर गोपा को देने लगे। इस पर गोपा ने कहा, "मैं कुमार को अनलंकृत नहीं, अपितु अलंकृत करूंगी।" यह कहकर गोपा चली गयी।

गुप्तचरों ने राजा शुद्धोदन को सूचना दी कि कुमार की दृष्टि गोपा पर गयी है और कुछ क्षणों के लिए दोनों में परस्पर बातचीत भी हुई है।

गुप्तचरों की बात सुनने के बाद राजा शुद्धोदन ने अपना पुरोहित भेजकर दंडपाणि शाक्य से अनुरोध किया कि वे कुमार के लिए अपनी पुत्री गोपा प्रदान

करें।

दंडपाणि बोला, "हमारा यह कुल-धर्म है कि हम अपनी कन्या शिल्पज्ञ या कलामर्मज्ञ वर के हाथ में ही सौंपते हैं।" दंडपाणि के अभिप्राय को जानकर राजा शुद्धोदन चिंताकुल हो उठे।

आठवीं शताब्दी : बोरो बुदुर

बोधिसत्व को जब अपने पिता के चिंतित होने का समाचार मिला, तब वे उनके निकट गये और उन्हें आश्वस्त करते हुए बोले, "इस नगर में कोई भी ऐसा नहीं, जो मेरे साथ अपनी कलाओं के प्रदर्शन में बराबरी कर सके।" बोधिसत्व के इस आश्वासन पर राजा शुद्धोदन प्रसन्न हो गये और उन्होंने कपिलवस्तु में घंटारव के साथ घोषणा करायी कि सातवें दिन कुमार बोधिसत्व अपने शिल्पज्ञान का प्रदर्शन करेंगे। इसलिए शिल्प के प्रदर्शन-स्थल पर कपिलवस्तु के सभी कलाकार एकत्र हों।

माया-प्रदर्शन समारोह

कलाकारों के एकत्र होने पर, योजनानुसार, कला-प्रदर्शन-समारोह प्रारंभ हुआ। दंडपाणि शाक्य की पुत्री गोपा 'जयपताका' बनी। शर्त रखी गयी कि विविध कलाओं के प्रदर्शन में जो विजयी होगा, गोपा उसी की हो जाएगी। सबसे पहले हरितदमन-विद्या की परीक्षा हुई। बोधिसत्व उसमें सफल रहे।

पुनः लिपिज्ञान और संख्याज्ञान के विषय में कुमार बोधिसत्व की परीक्षा ली गयी। लिपिज्ञान की प्रतियोगिता में दारकाचार्य विश्वामित्र तथा संख्याज्ञान की प्रतियोगिता में गणकाचार्य अर्जुन साक्षी नियुक्त हुए। मनुष्य, देव, गंधर्व और इंद्रलोक में जितने प्रकार की लिपियां प्रचलित थीं, उन सबका ज्ञान बोधिसत्व के लिए हस्तामलक था। वे इस परीक्षा में भी सफल रहे।

इसके बाद मल्लयुद्ध का आयोजन किया गया। पांच सौ शाक्यकुमार एक साथ कुमार बोधिसत्व से जूझने लगे। लेकिन वे सभी-के-सभी बोधिसत्व के तेज

को सहन न कर पाने के कारण धरती पर गिर पड़े।

बोधिसत्व और अन्य शाक्यकुमारों के उक्त कला-कौशल को देखने के बाद, गोपा के पिता दंडपाणि ने सभी शाक्यकुमारों से कहा, "अब आप सभी बाण-निक्षेप की कला का प्रदर्शन करें।"

दंडपाणि के अनुरोध पर बाणनिक्षेप-विद्या का प्रदर्शन प्रारंभ हुआ। प्रतियोगियों के लिए विभिन्न दूरियों पर लक्ष्य-बेंध के निमित्त लोहे के नगाड़े क्रमशः रखे गये। नगाड़े के बाद, सात लोहे के तवे रखे गये, जिसके पार लोहे की यंत्र-चालित वराह-प्रतिमा रखी गयी। सभी प्रतियोगियों ने अपने-अपने यथानिर्धारित लक्ष्य का भेदन कर दिया, किंतु उसके आगे लक्ष्य-भेदन में वे असमर्थ रहे। किंतु बोधिसत्व लक्ष्यबेंध के निमित्त जिस धनुष पर डोरी चढ़ाते थें, वह टूट जाता था।

अतः बोधिसत्व ने राजा शुद्धोदन से कहा, "महाराज, इस नगर में है कोई दूसरा धनुष, जो मेरे प्रत्यंच-आरोप को सह सके।"

राजा ने कहा, "पुत्र, तुम्हारे पितामह का 'सिंहहनु' नामक धनुष है, जिसकी पूजा देवकुल में गंध-माल्यों के द्वारा होती है। उस धनुष पर कोई भी मनुष्य प्रत्यंचा का आरोपण नहीं कर सकता है।"

बोधिसत्व बोले, "महाराज, वह धनुष मंगवाइए। मैं उसे आजमाऊंगा।"

बोधिसत्व ने अपने स्थान से बिना उठे ही, अर्द्धपर्यंकासन में बैठकर बायें हाथ से 'सिंहहनु' धनुष को पकड़ा और दायें हाथ की एक अंगुली से उस पर डोरी चढ़ा दी। डोरी चढ़ाते ही धनुष से जोरों का टंकार उत्पन्न हुआ, जिससे सारे नगरवासी भौचक्क होकर पूछने लगे, "यह कैसा शब्द हुआ?"

कुमार बोधिसत्व ने आनंद, देवदत्त आदि के, यथानिर्धारित दूरी पर स्थित लक्ष्यों (लोहे के नगाड़ों) का भेदन करते हुए, अपने, दस कोस की दूरी के लक्ष्य का भेदन किया, पुनः उसी क्रम में सात तवों को बेधते हुए लोहे की यंत्रचालित वराह-प्रतिमा को भी वेध किया। वराह-प्रतिमा को बेधते हुए बाण जिस जगह भूमि में प्रविष्ट हुआ, वहां कूप (कुआं) बन गया, जिसे 'शरकूप' की संज्ञा प्राप्त हुई।

कला-प्रदर्शन के क्रम में, शिल्पज्ञ कुमार बोधिसत्व ने लगभग इक्यानवे प्रकार की कलाओं के वैशिष्ट्य का प्रदर्शन किया। ज्ञातव्य है कि ब्राह्मण परंपरा में चौसठ कलाओं का उल्लेख मिलता है, जबकि जैन परंपराओं में बहत्तर कलाओं का, किंतु बौद्ध परंपरा के संदर्भग्रंथ 'ललितविस्तर' के प्रस्तुत प्रसंग में इक्यानबे प्रकार की कलाओं का निर्देश हुआ है।

इस प्रकार, यथायोजित वर-परीक्षा में जब कुमार बोधिसत्व ने अपने को सर्वश्रेष्ठ वर प्रमाणित किया, तब दंडपाणि शाक्य ने अपनी परम सुंदरी पुत्री गोपा उन्हें प्रदान कर दी।

परदा-प्रथा विरोधी गोपा

'ललितविस्तर' में उल्लेख है कि गोपा ने परदा-प्रथा का भी बहिष्कार किया था। वह सास, ससुर या अंतःपुरवासी लोगों में किसी को भी देखकर अपना मुंह नहीं ढकती थी। सभी सोचते थे, नववधू तो अपने को छिपाकर रखती है, किंतु यह (गोपा) तो सबके सामने अपने मुंह को अनावृत्त ही रखती है।

गोपा को जब इस बात की सूचना मिली, तब उसने कहा, "आर्यजन, जिनका हृदय निष्पाप है, उठना, बैठना, चलना, बोलना, मौन रहना आदि प्रत्येक स्थिति में सुशोभित होते हैं, किंतु जो पापाचारी हैं, वे सर्वांगतः आवृत्त होने पर भी सुशोभित नहीं होते। जिनके मन में कोई मैल नहीं है और जिनकी इंद्रियां संयत हैं, उनके लिए मुंह ढकने का कोई प्रयोजन नहीं। हजारों वस्त्रों से आच्छादित होने पर भी जिनमें लज्जा, सत्य और शील नहीं है, वे नग्न ही नहीं, विनग्नतर हैं। जो स्त्री अपने पति से संतुष्ट है, जिसकी इंद्रियां नियंत्रित हैं और जो स्थिर मनोभाववाली है, उसके लिए मुंह ढकने की क्या आवश्यकता है?"

पुनः गोपा ने अपने बारे में कहा; "ऋषि, महात्मा और परिचित-ज्ञानकुशल देव-देवियां शील, गुण और अप्रमाद से आवृत्त मेरी मनोवृत्ति को जानते हैं, तो फिर मैं अपने मुंह को घूंघट में क्यों छिपाऊं?"

राजा शुद्धोदन ने जब गोपा के विचारों को सुना, तब उन्होंने प्रमुदित होकर अपनी गुणवती पुत्रवधू गोपा को रत्नजटित वस्त्रों एवं सोने के हार से अलंकृत करते हुए अपने हर्ष को इस प्रकार अभिव्यक्त किया—

जिस प्रकार मेरा पुत्र गुणों से अलंकृत है, उसी प्रकार यह कन्या (पुत्रवधू गोपा) भी अपने गुणों से दीप्त है। विशुद्ध सत्ववाले ये दोनों मक्खन में घी की तरह परस्पर मिले हैं।

—संपादक 'परिषद-पत्रिका'
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद, पटना-४

आदमी और गधा

पुराने समय की बात है। एक आदमी एक दिन सर्दी में अपने गधे पर आग जलाने की लकड़ी लादकर कहीं जा रहा था। वह सर्दी से ठिठुर रहा था। राह में उसने सोचा, 'इस सर्दी के मौसम में गधा तो और ज्यादा ठिठुर रहा होगा। अगर मैं उसकी पीठ पर लदी लकड़ियों को जला दूं तो अवश्य ही वह गर्म हो जाएगा।'

जैसे ही उसने ऐसा किया, सूखी लकड़ियां एकदम जल उठीं। इससे भयभीत होकर गधा तेजी से भागने लगा। वह उसके पीछे भागता हुआ चिल्लाया, "अगर तुम काफी फुर्तीले हो, तो पानी में कूद जाओ।"

—सत्यप्रकाश

व्यंग्य

स्वर्ग का हाथी

● भगवतीप्रसाद डोभाल

अब तक हिम्मत पड़ी आपकी या आपके देवताओं की, जो हाथी को रोक सके। सबने उससे तरने की ही कोशिश की। मजाल क्या, जो उसके बिगड़ने से आप पर असर आया हो, वैसे असर तो आया होगा, पर आप उसे खुशी-खुशी झेल गये होंगे, इस लालच में कि आइंदा हो सकता है आप भी उसकी सवारी न सही, पर पूंछ पकड़कर धन्य हो सकते हैं।

बात कोई इतिहास के पृष्ठों की नहीं, और न किसी धर्मग्रंथ के पन्नों की, यूं ही समझ लीजिए, आप हम में से ही लोग रहे होंगे, उस घटना में डूबने के साक्षी। इस भार्या के किसी कोने की आप कल्पना कर सकते हैं कि वहां स्वर्ग होगा; स्वर्ग से मेरा मतलब यह नहीं कि मृत्योपरांत ही मिले, यहीं पर भी मिल सकता है। अभी, बगैर इस दीर्घ-काय के क्षीण होते हुए, सिर्फ कुछ रास्ते आपको भटका सकते हैं। इन रास्तों को मैं बता देना चाहूंगा, शायद गंतव्य तक पहुंचने में सुविधा मिले, सीधा स्वर्ग का द्वार खोल सको। कुछ आपका व्यक्तित्व भी इसमें कुप्रभाव डाल सकता है। उसका बयान भी मैं कर देना चाहूंगा, ताकि आपको 'स्वर्ग' के 'ड्राइंग' और 'डायनिंग रूम' में सीधी हाजिरी लगा सकने में दिक्कत न हो।

लीजिए, पहला तो आप वह रास्ता-- 'शराफत' का छोड़ दीजिए, इस रास्ते में जाओगे, तो चीथड़े ही हाथ लगेंगे।

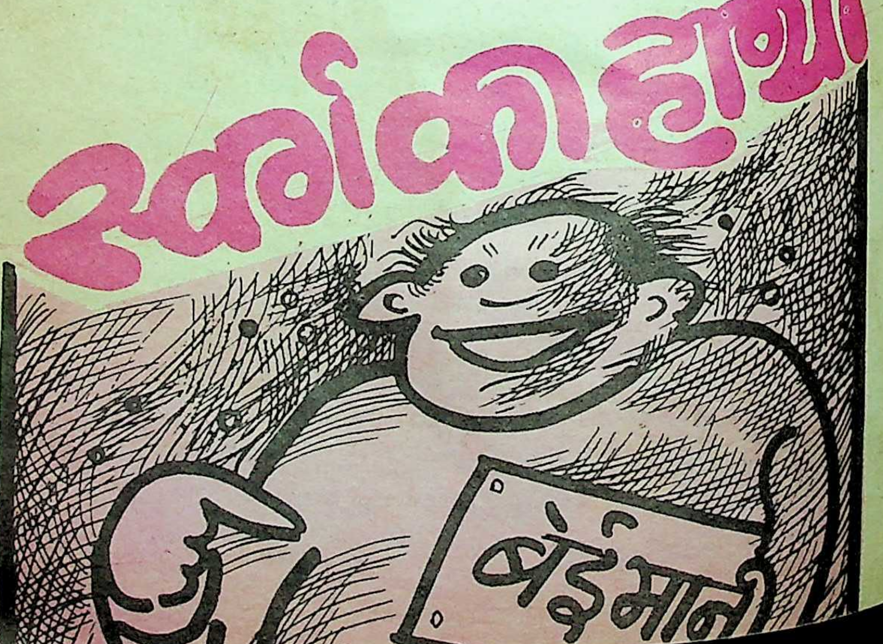

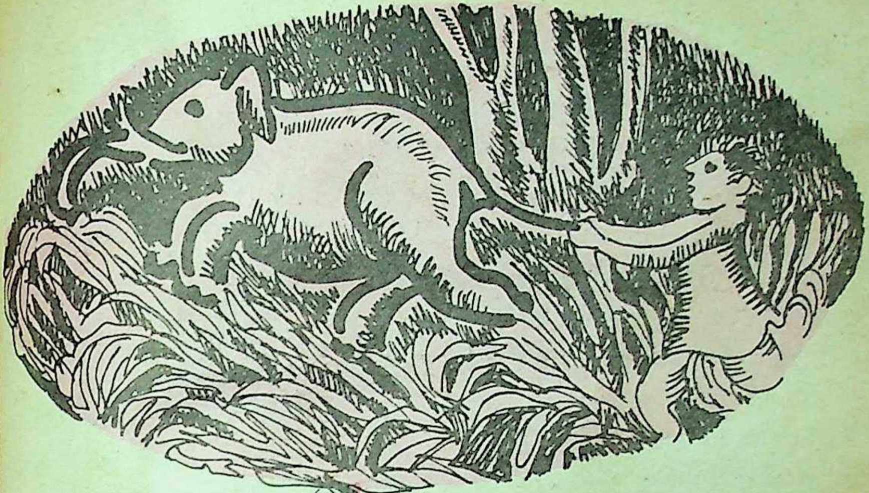

स्वर्गारोहण को भूल जाओगे, किसी झुग्गी-झोंपड़ी का फटा परदा ही मिलेगा। अत: जिस रास्ते पर भी आपको शराफत का बोर्ड टंगा दिखे, उस रास्ते पर भूलकर भी मत जाना। याद रखना—वहां लंबी-लंबी नागफनियों के कांटे ही चुभन से शरीर का बचा-खुचा रक्त बहा देंगे, खबरदार . . . सावधान!

अरे मैं तो यहीं पर ही अटक गया। आगे आपको बताना ही भूल रहा हूं; याद आया, दोस्त! जब तुम प्रयास करोगे, तब जहां पर और जिस मोड़ पर भी 'बेईमानी' का स्वर्णिम अक्षरों में टंगा 'बोर्ड' मिले, तो उसे अवश्य पकड़ना, भूलना मत उस रास्ते को, वही पगडंडी तुम्हें चुटकियों में स्वर्ग के द्वार पर ला खड़ा कर देगी। फिर तुम्हें किसकी चिंता? न स्वर्ग की पुलिस की, न वहां के कूड़े में पड़े पुराने धूल चाटते पोथड़ों पर अंकित कानूनों की। सब आराम ही आराम मिलेगा। सिर्फ तुम्हें कष्ट इतना ही करना पड़ेगा कि कोई सिपह-सलाहकार आंख उठाये, तो उसे भी शरीक कर लेना अपने कारवां में, तब आराम व चैन से मजा मार सकते हो।

अरे! अभी रुक तो जाओ, बात पूरी कहां हुई। तुम बीच में अधूरी बात छोड़कर इतने उतावले हो गये हो, कि 'स्वर्ग' का द्वार खोलने का, और फिर वहां के 'ड्राइंग' और 'डायनिंग रूम' में घुसने और बैठने का कैसा शिष्टाचार है—उसे ही छोड़ते जा रहे हो। अच्छा-अच्छा मैं जल्दी-जल्दी अपनी बात निपटा रहा हूं, ताकि तुम उस परमानंद को प्राप्त करने में मुझे रोड़ा न समझोगे। हां, बगैर किसी को पूछे, सीधे दरवाजे पर धक्का

देना। यदि हिचकोगे तो नौसिखिया समझकर कोई घास नहीं डालेगा। चेहरे और शरीर में ऐसे हाव-भाव जरूर रखना-जैसे तुम कोई इस कमरे की घुटी रकम हो। बस, फिर सारा काम आसान ही आसान। कोई उस सुरे-असुरे संगीत की घुन के बीच रंगीन और रंगहीन शर्बत पिलायेगा, कोई सहलायेगा। और, तब तुम स्वर्गारोहण की सबसे ऊंची चोटी पर खड़े नजर आओगे। हो सकता है, ऐसी स्थिति आने पर आपकी सारी ऑक्सीज़न व चढ़ने के उपकरण उस आंधी और तूफान में खो जाएं और प्यारे, वहीं ढेर हो जाओ। ऐसी स्थिति में आपका 'कंकाल' जिज्ञासु-यात्रियों का अध्ययन का केंद्र भी बन सकता है। दोस्त ! रास्ते मैंने बता दिये, अब तुम्हारी मर्जी कि कैसे डग भरते हो।

अरे इन रास्तों के चक्कर में मैं उस कहानी को ही भूल गया, जो मुझे तुम्हें बतानी थी। क्या रुकने की कोशिश करोगे, उसे सुनने के लिए। सुनो, फिर—यार, उस स्वर्ग के इंद्र का हाथी रोज लहलहाती फसल को देखकर, तूफानी नदी को भी पारकर चरने आया करता था। यह बात बहुत दिनों तक लोगों की समझ में नहीं आयी। एक दिन अचानक एक सज्जन इस स्थिति को भांप गये। वे इस फिराक में रहे क्यों न इसके सहारे ही स्वर्ग देखा जाए। सवारी करना उनके बस की बात न थी, पर पूंछ पकड़कर वे गिरते-पड़ते स्वर्ग पहुंच ही गये। वहां की चकाचौंध को वे समेट न सके। निश्चय किया कि यहां अकेले आना ठीक नहीं। क्यों न परिवार के साथ आया जाए। इसी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए वे मृत्युलोक में आये। सारी कहानी पत्नी को बतायी और उसे साथ चलने को कहा। यह बात भला पत्नी को कैसे पच सकती थी, उसने भी अपने नाते-रिश्ते के जितने लोग थे, सबको एक-एककर बता दी। अचानक सब इकट्ठे हो गये और सबने स्वर्ग जाने की ठान ली। अब 'स्वर्गदर्शी' सज्जन को तय कर पाना मुश्किल हो गया कि कैसे हाथी की पूंछ से सबके सब पार जाएं। सोच-विचारकर तय हुआ कि 'गाइड' पूंछ पकड़ेगा और उसके पीछे सबके सब एक-एक कर कतार में स्वर्ग पहुंच जाएंगे। सज्जन के पीछे पत्नी का रहना स्वाभाविक ही था। नदी में पानी के बीच पत्नी से न रहा गया। वह पूछ ही बैठीं कि वहां क्या-क्या होता है। पतिदेव स्वर्ग की कल्पना में यह भी भूल गये कि वे बीच धार में हैं और हाव-भाव से स्वर्ग का बखान करने लगे, ऐसी चरम स्थिति में वे हाथी की पूंछ, जो पकड़ी थी, उसे ही छोड़ बैठे और फिर न जाने कब, सबके सब आत्मा कहीं और शरीर कहीं छोड़ गये।

—६/६८८, लोदी कालोनी, नयी दिल्ली

सिसली शहर की दो बहनें विसेंजा और गिओवाना कोलंबो एक साथ एक घंटे के अंतर से पैदा हुईं। सारा जीवन एक साथ एक ही घर में रहकर बिताया और २५ वर्ष की उम्र में एक घंटे के अंतर से दोनों मर गयीं।

THE CRUCIFIXION
भटकाव
ओजपूर्ण शब्द

नयी-कृतियां

द क्रूसीफिकेशन : प्रस्तुत अंगरेजी पुस्तक में विभिन्न राजनेताओं और समकालीन राजनीति में किसी न किसी रूप में चर्चित व्यक्तियों से ली गयीं भेंट-वार्त्ताएं संकलित हैं। भेंटवार्त्ताकार हैं, राजधानी की युवा पत्रकार कुमकुम चड्ढा। सात खंडों में बंटी इस पुस्तक में जहां एक ओर पुरानी पीढ़ी के श्री जगजीवनराम एवं श्री चरणसिंह-जैसे शीर्षस्थ नेता शामिल हैं, तो दूसरी ओर सर्वश्री अटलबिहारी वाजपेयी, चंद्रशेखर, जार्ज फर्नांडीस, वसंत राव साठे-जैसे नयी पीढ़ी के नेता भी हैं। कुल मिलाकर २४ व्यक्तियों की भेंटवार्त्ताएं संकलित हैं।

इन भेंटवार्त्ताओं की सबसे बड़ी खूबी है, भेंटकर्त्री के संक्षिप्त किंतु चुभते हुए प्रश्न, जो बड़ी खूबसूरती से उत्तर देनेवाले व्यक्ति के चिंतन एवं व्यक्तित्व को उजागर कर जाते हैं। इनमें से कुछ प्रश्न समकालीन राजनीति से संबंधित हैं, तो कुछ नितांत वैयक्तिक। कुमकुम चड्ढा अटलबिहारी वाजपेयी से पूछती हैं, "आप ब्रह्मचारी हैं या कुवांरे ? या दोनों ?" उत्तर है, "मैं कुवांरा हूं।" इसके पूर्व उन्हीं से एक प्रश्न है, "लोग सोचते हैं कि आप हमेशा पिये रहते हैं ? ऐसा क्यों ?" उत्तर है—

"पी-पीकर बेहोश सभी
हम बिना पिये दीवाने हैं !"

प्रश्नों के दौरान सुब्रमण्यम स्वामी बताते हैं कि वे कभी आर.एस.एस. के सदस्य नहीं रहे, पर जनसंघ के नेता, समर्पित सच्चे आर. एस. एस. कार्यकर्ताओं के भ्रष्ट संस्करण हैं। श्री स्वामी मानते हैं कि भारत विश्व में चतुर्थ सैन्य-शक्ति है। उसे सोवियत संघ के साथ अपनी बीस वर्षीय मित्र-संधि भंग कर देनी चाहिए, क्योंकि यह संधि खतरनाक है।

शाही इमाम, एक प्रश्न के उत्तर में कहते हैं, "संसार के सभी मुस्लिमों के लिए धर्म का स्थान प्रथम है, और देश का दुय्यम !", "हिंदुओं का कोई धर्म नहीं है। वह तो उनकी संस्कृति है।"

प्रायः सभी साक्षात्कार पठनीय हैं। उनसे हमें देश की राजनीति को किसी न किसी रूप में प्रभावित करनेवाले लोगों की मानसिकता को समझने में अच्छी

सहायता मिलती है। प्रकाशक हैं—अजंता पब्लिकेशन, जवाहर नगर, दिल्ली; मूल्य —४० रुपये।

तुलनात्मक अध्ययन

गोर्की और प्रेमचंद : प्रगति प्रकाशन, मास्को द्वारा प्रकाशित इस कृति में दो साहित्यकारों के समान जीवन-दर्शन एवं साहित्य का गहन अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। लेखक हैं मदनलाल 'मधु'। गोर्की के लिए यदि साहित्यकार 'अपने देश, अपने वर्ग की अनुभूति, अपने युग की आवाज' था, तो प्रेमचंद मानते थे कि 'दलित, पीड़ित वर्ग की हिमायत और वकालत करना साहित्यकार का फर्ज है।' सात अध्यायों में बंटी इस पुस्तक में लेखक ने भारतीय जनता के प्रति गोर्की के प्रेम, उसके स्वाधीनता-संघर्ष की सफलता में उनकी आस्था का प्रामाणिक विवेचन किया है। इसी तरह प्रेमचंद रूस की समाजवादी क्रांति से कितने प्रभावित थे, और उनकी विचारधारा पर इस महान क्रांति का कितना प्रभाव था, यह भी लेखक ने प्रेमचंद के अनेक उद्धरणों के माध्यम से सिद्ध किया है।

विभिन्न अध्यायों में लेखक ने दोनों साहित्यकारों की अमर कृतियों, उनके धरती से जुड़े पात्रों की मानसिकता, उनके संघर्ष का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए यह सिद्ध किया है कि ये दोनों लेखक मानवतावाद के प्रबल पक्षधर थे।

गोर्की और प्रेमचंद के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन पहले भी प्रस्तुत किया गया है, पर प्रस्तुत पुस्तक में शायद, पहली बार रूस और भारत की तत्कालीन ऐतिहासिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में इन दोनों महान लेखकों का क्रमबद्ध और बहुमुखी चित्र प्रस्तुत किया गया है।

निबंध-संग्रह

गंगा एक अविराम संकीर्तन : सुपरिचित कवि उमाकांत मालवीय ने अपने इस निबंध-संग्रह में न केवल देश के पौराणिक एवं साहित्यिक अतीत को जिया है, वरन उन्होंने अनुशासन, भाषा, कवि-सम्मेलन-जैसे विषयों पर भी अपने सुलझे हुए विचार व्यक्त किये हैं। कुछ निबंध व्यक्तियों पर भी हैं।

'मां', 'गंगा एक अविराम संकीर्तन', 'कुंज कुटीरे यमुना तीरे', 'पोर-पोर पिराता सीता-संदर्भ', 'हरे बांस की बांसुरी' आदि इस संग्रह के पठनीय निबंध हैं, जिनमें भावों की कोमलता और भाषा का लालित्य बरबस पाठक को मुग्ध कर जाता है।

'एक स्फुलिंग हस्ताक्षर' में नोबल पुरस्कार विजेता लेखक नट हैमसन एवं विख्यात नाटककार ज्यां जेने की संक्षिप्त किंतु प्रेरक जीवन-संघर्ष कथा है। प्रायः सभी निबंध सरस हैं और पाठक को बांधे रखते हैं। इस निबंध-संग्रह को स्मृति प्रकाशन, १२४ शहरारा बाग, इलाहाबाद ने प्रकाशित किया है। मूल्य है—२५ रुपये।

भोजपुरी शब्द संपदा : भोजपुरी हिंदी की सबसे बड़ी बोली है, जो न केवल भारत के उत्तर-प्रदेश एवं बिहार के एक विशाल भू-भाग एवं अन्य नगरों में बसे भोजपुर निवासियों द्वारा बोली जाती है, वरन मॉरिशस, सूरिनाम, त्रिनिदाद, फिजी और गुआना आदि देशों में वर्षों पूर्व गये भारत मूल के लोगों की पीढ़ियों द्वारा आज भी घरों में प्रयुक्त की जाती है ।

भोजपुरी एक बहुत मीठी बोली है। डॉ. हरदेव बाहरी के अनुसार, 'उसमें पंजाबी की तरह ओज, प्राचुर्य और ठेठपन है।' अपनी इस पुस्तक में उन्होंने भोजपुरी बोली का एक कोश प्रस्तुत किया है।

डॉ. बाहरी ने ठीक ही लिखा, 'हम नहीं जानते कि अपनी संस्कृति की अभिव्यक्ति के लिए अपने देश की भाषाओं और बोलियों में कितनी भारी संपत्ति पड़ी है।'

इस पुस्तक के प्रारंभ में लेखक ने 'भोजपुरी का परिचय' के अंतर्गत हिंदी की तुलना में भोजपुरी की ध्वनि, व्यंजन, संज्ञापद आदि पर प्रकाश डाला है एवं अकरादि क्रम से भोजपुरी शब्दों के हिंदी अर्थ दिये हैं। इस पुस्तक के प्रकाशक हैं—भारती प्रेस प्रकाशन, दरभंगा कैसल, इलाहाबाद और मूल्य है—२० रुपये।

गुलाबी नगर की गुलाबी यादें : हर शहर का अपना एक इतिहास होता है, किसी उपन्यास की तरह रोमांचक और अनुभवों की किसी प्रेरक पुस्तक-सा ज्ञानवर्धक। इस पुस्तक में लेखक मोहनलाल गुप्त (विजयवर्गीय) ने जयपुर के कलात्मक एवं सांस्कृतिक पक्ष को उजागर करने के साथ-साथ, इतिहास पर भी प्रकाश डालनेवाले पूर्व-प्रकाशित लेख संग्रहीत किये हैं । 'अवाम सुबह ओ शाम', 'तख्त, तमाशे, तवाइफें', 'तिरछी निगाहें लाजवाब नूर-रसकपुर', 'इश्क और आशिकी', 'सिलसिला-ऐ-तफरीह', 'तवारीखी बुलंदियों के अफसाने', आदि पठनीय लेख हैं। प्रकाशक हैं, विजयवर्गीय प्रकाशन, एस. एम. एम. हाइवे, जयपुर तथा मूल्य है--४० रुपये।

सूक्ष्म-गणना दर्पण : भारतीय ज्योतिष में ग्रहों की पूर्ण गति की गणना कर व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं उसके भविष्य के संबंध में लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में विशोंत्तरी की समस्त नौ महादशाओं में अंतर, प्रत्यंतर एवं सूक्ष्म दशाओं की गणना तालिकाबद्ध रूप में दी गयी है । साथ ही उसमें विभिन्न ग्रहों के दोष-निवारण के लिए उपयुक्त रत्नों एवं मंत्रादि की जानकारी भी दी गयी है। पुस्तक से पता चलता है कि रामायण के सुंदर कांड का पाठ भी विभिन्न ग्रहों के कुप्रभावों को दूर कर सकता है। लेखक हैं, कैलाश मंजुल, प्रकाशक हैं, के एम. प्रकाशन, पो. बा. ८४०२, दिल्ली। मूल्य—४८ रुपये।

महंगे सफ़ाई के पाउडर पर ज़्यादा
पैसे क्यों ख़र्च किये जायें...,
बिज़
लेकर आज़माइये
क़ीमत में २५% कम,
पर काम में वैसा ही उत्तम !
5-refill pack
BIZ
multi-purpose
CLEANING POWDER
WITH SUPER DETERGENT
MADE IN INDIA
BIZ
CLEANING POWDER
आपकी सुन्दर क्रॉकरी और बर्तनों की सफ़ाई का हमराज़—
गोदरेज
उत्पादन

CASGS-132.162 Hin

भटका
दावेदा
गर्मा' व
हिंदी
श्वेता
पीड़ित
के प्रति
संघर्ष
उपन्या
बासु के
पर चो
होने क
सत्ता व
हर त
स
जीते
आम
पाठक
जाते ह
वास व
जहां
अभिश
देता।
सम्मा
लौटते
स्वाग
मिलने
पूर्व-स
देव व
नक्स
किये

भटकाव, घहराती घटाएं : 'जंगल के दावेदार', '१०८४वें की मां' एवं 'अग्निगर्भा' की लेखिका महाश्वेता देवी से आज हिंदी पाठक अपरिचित नहीं हैं। महाश्वेता देवी की कृतियों में हमें शोषित-पीड़ित जनता का दुख-दर्द ही नहीं, अन्याय के प्रति उसका आक्रोश, उसका बलिदानी संघर्ष भी मिलता है। अपने नवीनतम उपन्यास **भटकाव** में उन्होंने देवादिदेव बासु के माध्यम से उन समकालीन लेखकों पर चोट की है, जो एक ओर प्रतिबद्ध होने का दावा कर रहे हैं और दूसरी ओर सत्ता की तमाम सुविधाएं भोगने के लिए हर तरह के समझौतों के लिए तैयार हैं।

रूमानी क्रांतिवाद के मिथ्या भ्रम में जीते देवादिदेव उम्र बढ़ने के साथ-साथ आम पाठक, खासकर जागरूक युवा पाठक वर्ग, की उपेक्षा के शिकार होते जाते हैं। वे आत्मान्वेषण के लिए एकांतवास की तलाश में डलहौजी जाते हैं, जहां उनका अवसरवादी अतीत उन्हें अभिशप्त प्रेत की तरह चैन नहीं लेने देता। देवादिदेव किसी पुरस्कार और सम्मान को न लेने का संकल्प कर कलकत्ता लौटते हैं, लेकिन स्टेशन पर ही जब स्वागतार्थ खड़े मित्र उन्हें बड़ा पुरस्कार मिलने की सूचना देते हैं, तब उनका सारा पूर्व-संकल्प काफूर हो जाता है। देवादिदेव की कहानी के साथ-साथ लेखिका ने नक्सलवादी युवकों के साथ पुलिस द्वारा किये गये बर्बर व्यवहार का भी 'इतिहास' दिया है। मूल्य है—२० रुपये।

घहराती घटाएं : यह महाश्वेता देवी की आठ लंबी कहानियों का पठनीय संग्रह है। लेखिका वर्षों तक बिहार और बंगाल के घने कबाइली इलाकों में रही हैं, उन्होंने सभ्य समाज के प्रतिनिधियों—व्यापारियों, अधिकारियों और देवताओं के प्रतिनिधि के रूप में प्रतिष्ठित ब्राह्मणों द्वारा कमजोर, अशिक्षित व स्वभाव से भीरु जनजातियों के लोगों पर किये जानेवाले अत्याचारों की कहानी इन कृतियों में प्रस्तुत की है। लेकिन अन्याय की चरम परिणति ही अन्याय सहनेवाले को मारने-मरने की हिम्मत देती है। संग्रह की कहानी 'बीज' का नायक दोलन ऐसा ही आदिवासी है, जो मालिक के कहने पर, उसके द्वारा मारे गये दो आदिवासियों की लाशों को जमीन में गाड़कर उन पर पहरा-सा देता है, और जब एक दिन मालिक के पेशेवर गुंडे उसके पुत्र धनुआ की हत्या कर देते हैं, तब वह मालिक को पत्थरों से कुचल-कुचलकर मार डालता है।

संग्रह की प्रायः सभी कहानियां, चाहे वह 'जगमोहन की मृत्यु' हो या 'धौली', आजादी के बाद आज भी जनजातियों पर होनेवाले अत्याचारों की ज्वलंत साक्ष्य हैं। मूल्य है—३० रुपये। अनुवादक हैं, जगत शंखधर. इन दोनों कृतियों के प्रकाशक हैं, राधाकृष्ण प्रकाशन, २ अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली।

—दुर्गाप्रसाद शुक्ल

अनुवाद

माधव गीता : जिस प्रकार संत तुलसी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र के आदर्श चरितगान के व्याज से भक्तियोग को लोक-भाषा के माध्यम से प्रतिष्ठित किया, उसी तरह ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग के समन्वय के प्रतिपादक ग्रंथ श्रीमद्भागवत-गीता को लोकभाषा के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास उस समय नहीं किया गया।

श्रीमद्भागवतगीता को जन-जन की वाणी बना देने के लिए श्रीमती माधवीलता शुक्ल, संत तुलसी के मानस की छंदोद्वारा का अनुकरण करते हुए **माधवगीता** की रचना में प्रवृत्त हुईं। माधव प्रतिपादित श्रीमद्भागवतगीता का दोहा चौपाईबद्ध अवधी भाषा में यह प्रथम अनुवाद है।

इस अनुवाद में तुलसी के मानस की भांति लयात्मकता और गीतात्मकता के साथ गंभीर स्थलों के गंभीर भावों को सामान्य जनवेद्य बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है। नवें अध्याय के 'मन्मना भव' (९, ३४) श्लोक के भाव को **माधव गीता** के दोहे में इस तरह प्रस्तुत किया गया है—

मन मोह मंह धरि भक्ति मम,
यज्ञ नमन हित मोरि।
यहि विधि पावहु मोहि तुम,
मो सन आत्मा जोरि॥

गीता का समग्र श्लोक इस प्रकार है—

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥

उक्त श्लोक की अर्धाली अठारहवें अध्याय के ६५ वें श्लोक में इस प्रकार पुनरावृत्त हुई है—

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे॥

इस श्लोक का 'माधवगीता' की निम्न उद्धृत चौपाई में और भी प्रशस्त और हृदयग्राही अनुवाद बन पड़ा है—

होहु भक्त मम, मोहि चित धरहू।
मो हित यज्ञ मोहि हित नमहू॥
कहहुं प्रतिज्ञा सत करि तोहि।
मोरे प्रिय तुम पइहहु मोहि॥

इस पुस्तक के प्रकाशक हैं, रत्नाकर शुक्ल, बृहस्पति प्रकाशन १५/९१, सिविल लाइंस, कानपुर। मूल्य है—३० रुपये।

—बागीश शास्त्री

प्रसिद्ध व्यापारी निकोलस स्काइरास को छुट्टियां बिताने बाहर जाना था। उसने सोने के सिक्कों का अपना बहुमूल्य संग्रह तिजोरी में रखने के बजाय रेफ्रीजरेटर में छिपा दिया। डर था कि कहीं चोर तिजोरी न तोड़ लें।

उसकी अनुपस्थिति में चोर आये। तिजोरी तोड़ने की कोशिश में लगे, थक गये। भूख लगी थी। खाने की नीयत से उन्होंने फ्रिज खोला! और सोने के सिक्कों के बहुमूल्य संग्रह के साथ चंपत हो गये।

गोष्ठी

प्रतिमा बोस, कलकत्ता : 'मरकेटर मानचित्र' क्या है ? जिसके आधार पर पृथ्वी के सभी नक्शे बनते हैं, सुनते हैं कि इसमें कई अशुद्धियां हैं, जिन्हें चुनौती दी गयी है। यह चुनौती किसने दी है और क्यों ?

नक्शा किसी समतल सतह पर पृथ्वी के पदार्थों की स्थिति, प्रकृति और उनके वितरण का आनुपातिक प्रतिनिधित्व होता है, जिसे पृथ्वी की गोलाई में वस्तुओं की स्थैतिक और पारस्परिक संबंधों की तसवीर के रूप में अंकित किया जाता है। गोलाकार पृथ्वी का चित्र समतल सतह पर बनाने में अनेक कठिनाइयां होती हैं और इन कठिनाइयों को दूर करने के प्रयास में ही मानचित्रों के अंकन की विद्या का विकास हुआ है। सोलहवीं शताब्दी में फ्लेंडर्स निवासी जिरारडस मरकेटर ने समुद्रों की यात्राएं करनेवाले नाविकों की सहायता के लिए दुनिया का जो नक्शा बनाया, वह उससे पहले के नक्शों की तुलना में अधिक वैज्ञानिक था और आज भी अनेक देशों में (सब देशों में नहीं) उसी को प्रामाणिक मानकर दुनिया के नक्शे बनाये जाते हैं। लेकिन यह नक्शा यूरोप को दुनिया का केंद्र मानकर बनाया गया था, जिससे इसमें कई विकृतियां आ गयीं। उदाहरण के लिए, इसमें भारत को ही देखें, तो वह स्कैंडिनेविया से छोटा दिखायी पड़ता है, जबकि वास्तव में भारत स्कैंडिनेविया से तीन गुने से भी अधिक बड़ा है। मरकेटर मानचित्र की इन विकृतियों को प्रकाश में लाने का श्रेय जरमन इतिहासकार डॉ. आरनो पीटर को है, जिन्होंने मरकेटर के यूरोप केंद्रित नक्शे की अशुद्धियों को स्पष्ट करते हुए दुनिया का एक वैकल्पिक मानचित्र भी दस वर्षों के अथक परिश्रम से बनाया है, जो दुनिया का अपेक्षाकृत अधिक ईमानदार चित्र है।

सुरेश भाई पटेल, सौराष्ट्र : कहते हैं कि बिना कसरत कुश्ती और बिना रियाज गायकी नहीं हो सकती। यह 'रियाज' क्या है ?

'रियाज' का शाब्दिक अर्थ परिश्रम करना है, लेकिन गायकी या संगीत में रियाज का अर्थ केवल परिश्रम करना ही नहीं, बल्कि निरंतर अभ्यास के द्वारा संगीत की साधना करते हुए अपनी कला का परिष्कार करना है। साथ ही यह परिश्रम या अभ्यास नीरस भी नहीं होता, बल्कि इसमें गायक को एक प्रकार का आनंद और तृप्ति भी मिलती है। संगीत के सुर रियाज से ही पकड़ में आते हैं, रियाज से ही राग का रूप समझ में आता है, रियाज के बीच ही ताल और लय के सूक्ष्म भेद स्पष्ट होते हैं और रियाज से

रुचिकर और स्वादिष्ट
मुखशुद्धि के लिए

चमन अति स्वादिष्ट, रुचिकर, सुगंधित चूर्ण है। इसके सेवन से पाचन सुधरता है और मुंह सुगंधित होता है

चमन में क्या-क्या है!

चमन में मुलेठी. केसर. इलायची लौंग. जावपत्री सौंफ. मेंथॉल जैसी अनेक प्रकार की सुगंधित एवं रुचिकर वस्तुएं मिलायी जाती हैं। इसका बच्चों से बूढ़ों तक सभी रुचि से सेवन करते हैं।

स्टार कंपनी, बेलगांव.

ही संगीत की पिछली परंपरा से साक्षात्कार तथा संगीत-सृजन की नयी कल्पनाओं का द्वार खुलता है। पुराने गायक रियाज में तीन चीजें शामिल मानते थे : आदत, जिगर और हिसाब। 'आदत' के अंतर्गत गले का अभ्यास होता था, जिससे राग का मूल-स्वर पकड़ में आता था। 'जिगर' के अंतर्गत श्वास-निश्वास की प्रक्रिया पर नियंत्रण रखने का अभ्यास किया जाता था और 'हिसाब' के अंतर्गत ताल की सही-गणना का अभ्यास होता था, जिससे कि गायक किसी भी मात्रा से शुरू करके सम तक ठीक-ठीक पहुंच सकता था। इन तीनों चीजों को साधने में संगीतकारों को वर्षों लग जाते हैं। फिर भी रियाज कभी खत्म नहीं होता। संगीत में निष्णात हो जाने पर भी रियाज जारी रखा जाता है।

नीरजा अग्निहोत्री, कानपुर : 'भवई' क्या है?

भवई गुजरात का एक लोकनाट्य रूप है। इसके पीछे मूल-भावना तो धार्मिक है, पर इसका कथ्य अधिकतर सामाजिक समस्याओं को दरशानेवाला होता है। भवई का प्रदर्शन विभिन्न मंडलियों द्वारा किया जाता है, जो प्रायः गांव-गांव घूमती हैं या बुलाने पर आती हैं। भवई कलाकारों की आवभगत की जिम्मेदारी गांव के लोगों की होती है। भवई प्रदर्शन प्रायः रातभर चलता है और इसमें कई 'वेश' होते हैं, अर्थात कई छोटे-छोटे नाटक, जो या तो समाज की विभिन्न जातियों के प्रतिनिधि चरित्रों और उनके जीवन को दरशाते हैं, या फिर ऐतिहासिक अथवा पौराणिक पृष्ठभूमि से समाज में चल रही वर्तमान कुरीतियों पर प्रकाश डालते हैं।

भवई के 'वेश' हिंदू और मुसलमान दोनों संप्रदायों के जीवन पर आधारित होते हैं और एक ही मंडली एक ही रात में दोनों का प्रदर्शन करती है। उदाहरण के लिए 'गणपति नो वेश' और 'कान गोपी नो वेश'-जैसे हिंदुओं से संबंधित वेशों से लेकर 'जूठन नो वेश' और 'जंडा जूलन नो वेश'-जैसे मुसलमानों की जीवन से संबंधित वेशों तक। कहा जाता है कि लगभग ८०० वर्ष पहले भवई के प्रथम कवि असाइत ठाकुर ने ३६० वेश लिखे थे, जिनमें से अब तीस-चालीस ही प्रचलित रह गये हैं। इन वेशों में कथा का अंश कम रहता है, लेकिन संगीत, नृत्य और अभिनय द्वारा चतुर अभिनेता नये-नये किस्से गढ़कर और आस-पास के समाज पर टिप्पणी करके मूल-कथा को लोगों के जीवन से जोड़ते चलते हैं। भवई एक संगीत-प्रधान नाट्य रूप है और इसमें भुंगल, तबला, हारमोनियम और झांझ वाद्यों का प्रयोग होता है। भुंगल इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है और यह भवई की विशेषता भी है। पहले पखावज का प्रयोग भी होता था, पर अब नहीं होता। लेकिन भुंगल के बिना भवई नहीं हो सकती।

डेट टिकिया आज़माइए, सफ़ेदी अपनाइए

आज पहले से कहीं
ज़्यादा लोग
डेट टिकिया की
शानदार धुलाई पसन्द
करते हैं; कहते हैं
यह चकाचौंध
सफ़ेदी लाती है.
कहीं ज़्यादा किफ़ायत
करती है.

डेट
डिटर्जेंट धुलाई की टिकिया

डेट टिकिया

Shilpi-DM-41 A/80 Hin.

सुनीतकुमार चावला, लुधियाना : भारत में इलायची का उत्पादन कहां-कहां होता है ?

भारत में इलायची की खेती पश्चिमी घाट की नम ढलवां पहाड़ियों पर होती है और केरल के इद्दुकी जिले में लगभग १०० मील के घेरे में फैली पट्टी इलायची का सबसे बड़ा उत्पादक वन-क्षेत्र है। केरल में अन्य इलायची उत्पादक जिले हैं—कालीकट, पालघाट और कान्नानोर। कर्नाटक में कुर्ग, हसन, चिकमगलूर और दक्षिण कैनरा प्रमुख इलायची क्षेत्र है। तमिलनाडु में मदूरै में इलायची पैदा होती है। विश्व का ८० से ९० प्रतिशत इलायची उत्पादक क्षेत्र भारत में है, लेकिन मानसून की अनिश्चितता, छोटे और साधनहीन उत्पादकों की बहुलता, पौधे के रोगों की रोकथाम के उपायों के अभाव और अव्यवस्थित विपणन व्यवस्था आदि के कारण उत्पादन का प्रतिशत ५० से ७० तक ही है।

रंजन कुलकर्णी, बंबई : समुद्र से मोती निकालने की बात तो सुनी थी, लेकिन अब सुनने में आया है कि सोना और हीरे भी उसमें पाये जाते हैं। कुछ जानकारी हो, तो कृपया बतायें।

आपने यह बात बहुत देर से सुनी है, अन्यथा समुद्र से खनिज पदार्थ निकाले जाने की बात नयी नहीं है। समुद्र में अनेक स्थानों पर खनिज भंडार पाये गये हैं, जैसे-इंडोनेशिया में कलई के भंडार, पश्चिमी अफरीका के पास हीरों के तथा अलास्का के पास सोने के भंडार। नदियों में बहकर आनेवाली धातुओं, समुद्री जीवों की अस्थियों और भूगर्भ संबंधी उथल-पुथल से भी विभिन्न प्रकार के खनिज समुद्र में इकट्ठे हो जाते हैं। लाल सागर की गहरी घाटियों में इस प्रकार के खनिज भंडार काफी हैं। लेकिन अभी इन खनिज भंडारों से खनिज निकालने में कई समस्याएं हैं और इसकी तकनीक कुछ विकसित देशों के पास ही है।

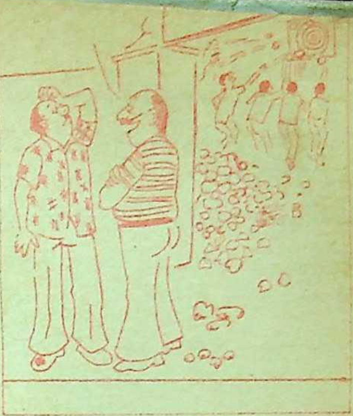

"आजकल हर जगह आंदोलन चल रहे हैं, इसलिए मैंने इस बात के लिए कि अच्छी तरह से पथराव कैसे किया जाए, ट्रेनिंग क्लासें खोल दी हैं।"

चलते-चलते एक प्रश्न और...

दीक्षा पांडेय, सुलतानपुर : 'लजीज' और 'लाजवाब' में क्या अंतर है ?

शादी करके अपनी किस्मत को रोनेवाले पति को लजीज खाना खिलाकर लाजवाबकर देनेवाली पत्नी से पूछिए।

—बिंदु भास्कर

प्रवेश

इस बार हम पाठकों को परिचित करा रहे हैं छाया मिश्रा से। इनकी पांचों रचनाएं पढ़ने के बाद हमें लगा कि इनका अपना विशेष मुहावरा है। प्रकृति और जीवन के आसपास से चुने प्रतीकों के माध्यम से वह अपने आप को अभिव्यक्त करती हैं। छाया मिश्रा की संभावनाएं उनकी कविताओं में देखी जा सकती हैं। यहां प्रस्तुत हैं उनकी पांच कविताओं में से चुनी हुई तीन कविताएं।

—संपादक

हथेली

जब अमावस्या की अंधेरी रातें
गहरी और गहराती चली जातीं
तो ऐसे माहौल में दूर किसी श्मशान-घाट से
गीदड़ों की
डरावनी और कड़वी आवाजें आकर
टकरातीं हवा के तेज झोंकों से
तो हथेलियां
अपने-आप कानों पर चली जातीं

जब पूर्णिमा की चांदनी रातें
सफेद और सफेद छिटकती चली जातीं
तो ऐसे खुशबूदार माहौल में
कहीं दूर झरने से झरझराती आतीं
सुरीली आवाजें
हवा के मंद झोंकों के साथ
जब खिड़कियों पर दस्तक देतीं
तो हथेलियां स्वयं शीशे तोड़ देतीं

उमर की सड़क

दी हुई जिंदगी को जीते हुए
किसी सपाट काली चौड़ी सड़क-सी
उमर की सड़कों पर
चल-चलकर यह सोचती है
ये अनजान राहें न जाने
कब और किस दिशा में रुकेंगी
उमर के पड़ाव में गर्दिश के दिन
महसूस करते हुए
और उन रास्तों पर
सूखे बिछे पत्तों को चुनते हुए
यह सोचकर कि
जरा ये लंबी राहें किसी मोड़ पर रुकतीं
तो हम थोड़ा वक्त निकालकर
जरा अपने अंदर झांककर देखते कि
अब तक अनजाने में कितने ऐसे
हवा के शिकार पत्ते
सूखे पीले बिछे हुए हैं मेरे अंदर
और उन सूखे पत्तों पर किन-किन गमों
और खुशियों के नाम अंकित हैं, पर
डरकर फिर अपना सफर जारी रखती हूं
यह सोचकर कि
किसी गर्दिश की हवा के झोंके
इन सड़कों पर के पत्तों के साथ
मेरे अंदर के विश्वास को भी
न उड़ा ले जाएं अपने साथ

सागर-तट की तनहाई

जाड़े की सुनहरी धूप का
लाल सूरज का गोला
जब डूबने को होता
दूर सागर पार क्षितिज पर
तब सागर तट की चमकती धूप और किरणें
सिमटकर रह जातीं उसकी लाल चादर में
और फिर तो सिमटते और ठंड से उकड़ूं बने
चले जाते सभी अपने-अपने घोंसलों को
ठंडी-ठंडी, लंबी-लंबी आहों के साथ
ऐसे माहौल में रह जाता अकेला
उसका चौड़ा दूर-दूर तक फैला सपाट तट
जिसकी तनहाई अंधेरी और बर्फीली रातों
में काटे नहीं कटती
और रात की निस्तब्धता बांटे नहीं बंटती

ऐसी विवशताभरी रातों में
कभी-कभी
मेहरबान सागर की खामोश लहरें
चुपके से चूमकर चली जातीं
इनके खामोश और सपाट अधर, और
शेष रातें भी बीत जाती इन्हीं के सहारे

आत्म-कथ्य

उम्र—साढ़े सत्रह वर्ष, शिक्षा—इंटर (द्वितीय वर्ष)। कविता किन क्षणों में उपजती है, नहीं कह सकती। पर, इतना अवश्य कह सकती हूं कि कविता मेरी विवशता है। कुछ भावनाएं जब अभिव्यक्ति मांगती हैं, तब मैं इनकार नहीं कर पाती। फिर, भावनाओं का उद्रेक कई कारणों से हो सकता है—वे कारण वैयक्तिक, सामाजिक और राजनीतिक—कोई भी हो सकते हैं। वर्ड्सवर्थ ने कहा था कि 'कविता सशक्त भावनाओं का स्वतःस्फूर्त प्रवाह है। (पोएट्री इज दि स्पांटेनियस ओवरफ्लो ऑव पावरफुल फीलिंग्स) मैं समझती हूं, हर कवि अथवा कवयित्री के जीवन में वे क्षण अवश्य आते हैं, जब न चाहकर भी लेखनी हाथ में आ जाती है, और अंतर को मथनेवाले भाव कागज पर रूपायित हो जाते हैं। बस, अभी इतना ही कहना है—अपने और अपनी कविताओं के संबंध में।

—छाया मिश्रा

द्वारा—श्री लवकुमार मिश्रा, १६ गर्दनी बाग, रोड नं. ३०, पटना

सार-संक्षेप

यातना का बदनाम इतिहास

लीनो नोवास काल्वो

इस शताब्दी के आरंभ में स्पेन में जन्मे लीनो नोवास काल्वो सात वर्ष की कच्ची आयु में ही क्यूबा लाये गये थे और कालांतर में वहीं के नागरिक बन गये। वे अपनी पीढ़ी के अत्यंत प्रतिभाशाली कथाकार और पत्रकार रहे हैं। उनकी प्रस्तुत रचना में संवाददाता की रिपोर्टिंग के पीछे की अनेक ऐसी उपेक्षित घटनाओं में से एक को, जो वास्तव में उपेक्षणीय नहीं होती, कथाकार की दृष्टि ने अत्यंत संवेदनशीलता के साथ उभारा है। प्रस्तुत रचना एक लंबी कहानी है, जो 'स्पेनिश स्टोरीज' नामक ग्रंथ में 'डार्क नाइट ऑव रोमन येंडिया' का संक्षेपण है। प्रस्तोता--भालचंद्र ओझा

मनहूस सपनोंभरी कच्ची नींद टूटने पर रोमन की देह का जोड़-जोड़ दर्द कर रहा था। थकान से चूर हो वह गाड़ी के ठीक रुकने से पहले ही निढाल होकर स्टीयरिंग व्हील पर पड़ रहा था और गाड़ी के पहिए फुटपाथ के साथ कुछ दूर घिसटकर रुके थे। सड़क के इस ओर की जमीन अभी खाली थी। पिछले चार दिन उसने घर से बाहर, यहां-वहां टैक्सी में ही गुजारे थे। इन चार दिनों के हर क्षण उसके लिए मृत्यु-दंड की तरह थे, जिसे वह अपने नजदीक आता देखता रहा था।

रात को वह एक क्रांतिकारी के घर के सामने गाड़ी ले गया, जिसे वह जानता था। उसने सोचा था कि शायद क्रांतिकारी उसकी गाड़ी इस्तेमाल करना चाहें। कारण न जानने पर भी उसे आनेवाले तूफान का आभास था।

तीन वर्ष पहले उसने गाड़ी चलाना शुरू किया था और चार वर्ष पहले उसे पहली संतान, एक बेटी हुई थी। अब उसके तीन बच्चियां थीं और वे सभी बीमार ही रहती थीं। पिछले चार दिनों में वह केवल दो बार चोरी-छिपे अपने घर गया था। उसे अपने परिवार के अलावा उस बेवकूफ बलबीना का भी पालन करना पड़ता था, जिसे तीन मर्दों से आठ बच्चे थे। रोमन भूरी आंखोंवाला एक भयभीत किस्म का आदमी था, जो और लोगों से कहीं पहले, चीजों का आभास पा जाता था। दूसरे ड्राइवर उसकी हंसी उड़ाते थे और व्यंग्य से उसे स्वामीजी कहते थे।

●●

उन दिनों जैसे कोई इंकलाबी रूह उस पर हावी हो गयी थी। ऐसा क्यों या कैसे हुआ, यह तो वह नहीं बता सकता था, क्योंकि वह अपनी भावनाओं का ठंडे मन से विश्लेषण करने में कभी भी समर्थ नहीं हो पाया था। वह अधिक पढ़ा-लिखा भी नहीं था और न किसी राजनीतिक दल से भी संबद्ध था, पर इंकलाब का जादू जैसे-अनजाने रफ्ता-रफ्ता उसमें समा गया था।

उसकी दोनों बच्चियां तब पैदा नहीं

हुई थीं और लड़का, बहुत छोटा था। रोमन का धंधा ठीक चल रहा था, क्योंकि उसे नियमित सवारियां मिल गयी थीं। रोज ही उसे तीन-चार युवकों की सवारियां मिल जाया करती थीं, जो क्रांतिकारी थे। क्रांतिकारी होना उन दिनों गौरव की बात समझी जाती थी, क्योंकि यह शब्द देश के स्वाधीनता-संघर्ष की याद दिलाता था। वह स्वयं भी बचपन से ही इस शब्द से जुड़े गौरवपूर्ण संघर्षों की गाथाएं सुनता आया था। धीरे-धीरे वह उनके बोलने का लहजा, उनकी शब्दावली और उनका उत्साह आत्मसात करता गया।

फिर समय ने पलटा खाया। उसका लड़का जस्टिनो बीमार पड़ा। उस समय उसकी पत्नी एस्टेला गर्भवती थी। फिर जुड़वां बच्चियां जन्मी और इसी बीच रोमन के मन में भी एक वस्तु ने जन्म लिया—वह था संदेह। वह क्रांति के बारे में बातें करते समय उत्तेजित हो उठता था और उसके प्रवाह में बह चलता था, किंतु उसमें आस्था की कमी थी। और शीघ्र ही उसे अनुभव हो गया कि क्रांतिकारी होना कोई आसान काम नहीं है।

अगस्त की एक रात दो व्यक्तियों ने उसकी टैक्सी रुकवायी। उसे फौरन किसी आसन्न खतरे का आभास हुआ। शायद, वे सादी वर्दी में पुलिसवाले थे। ऐसे लोगों ने पहले भी कई बार उसे रोका था और गाड़ी में बैठकर हर बार वे पुलिस मुख्यालय चलने का आदेश देते थे। वहां पहुंचने पर कानूनी गति से अधिक रफ्तार में गाड़ी चलाने, लाल बत्ती के बावजूद गाड़ी निकाल ले जाने या ऐसे ही किसी गैरकानूनी काम का जुर्म लगाया जाता। लेकिन ये मामूली अपराध थे और टैक्सी यूनियन हर बार उसे जमानत पर छुड़ा लेती थी। इन दोनों व्यक्तियों ने भी, जो रोमन के अनुमान के अनुसार पुलिसवाले ही थे, उसे पुलिस मुख्यालय चलने का आदेश दिया।

वहां वे उसे एक कमरे में ले गये, जहां लात, घूंसों से उसकी सारी देह को कुचला गया। इसके साथ ही जितनी फोश और भद्दी गालियां हो सकती हैं, वे उसे दी गयीं। उन्होंने उसे धमकियां भी दीं यहां तक कि उन्होंने उसकी पत्नी से भी ऐसा ही बर्ताव करने की धमकी दी। वह यह सब कुछ चुपचाप सहता रहा। इसके बाद उसे लेफ्टिनेंट के आदेश पर छोड़ दिया गया।

उसके बाद तो उसके सभी पुराने ग्राहक-जैसे कहीं अंतर्ध्यान हो गये और उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि उस पर चारों ओर से नजर रखी जा रही है। अगले दिन पुलिसवालों ने उस पर तीन जुर्म दर्ज किये और तीसरे दिन उसे पुलिस मुख्यालय ले जाकर पहले से कहीं अधिक पीटा गया। और उसे जब छोड़ा गया, तब उसके परिचित एक अन्य टैक्सी ड्राइवर ने उस पर नजर रखने और उसे सही रास्ते पर ले आने का जिम्मा ले

लिया। वह एक धूर्त किस्म का आदमी था, जो रात को ही टैक्सी चलाता था। वह रोमन के दिमाग में यह बात बैठाने लगा कि राजनीतिवाले लोग बस अपना काम साधने के पीछे लगे रहते हैं। रोमन ने सोचा कि अगर अब भी वह दूसरे दल का साथ नहीं देगा, तो यह उसकी बेवकूफी होगी। बस, उसे कुछ हिदायतें ही तो माननी होंगी और कुछ सूचनाएं उपलब्ध करनी होंगी। अंततः उसने इस नयी परिस्थिति के आगे घुटने टेक दिये।

●●

अब उसका मन उदासी व घबराहट से भरा रहने लगा, क्योंकि वह जानता था कि उसने जिन लोगों के बारे में सूचनाएं दी हैं, उनमें से कइयों को पकड़कर जेल भेजा जा चुका है। और एक की तो शायद, हत्या भी कर दी गयी है। उसे यहां तक लगने लगा कि शायद उस पर कोई हमला न कर बैठे। वह हथियार लेकर बाहर निकलने लगा, जैसे वह भी किसी संघर्ष में भाग ले रहा हो। वह हरदम अपनी पिस्तौल अपनी पहुंच में रखता था।

बाद में उसे यह प्रतीत होने लगा कि जिन लोगों ने नये राजनीतिक दल से उसका रिश्ता जोड़ा था, साथी टैक्सी-ड्राइवर और सादे कपड़ोंवाले पुलिस के लोग, वे भी उसका साथ छोड़ने लगे हैं। क्योंकि अब उसके पास उन लोगों को खबर देने के लिए कुछ खास बचा भी क्या

मेरे अहं की लय

—राणा जंगबहादुरसिंह

जब प्रतीत हो है क्या अभाव
जब भिन्न-भिन्न बन गया स्वभाव
जब अंतस्थल में क्यों दबाव
जब एक एक रीता बेकरार
जब अरमानों का हुआ होम
जब धरती पर आ पड़ा व्योम
तब स्वाहा-स्वाहा क्या कहना
तब हाय-हाय भी क्या करना
जब सर्वनाश का अंत बना
जब अर्थों का शासन बना
जब वज्र गिरा और हुई प्रलय
तब अहं ने मेरे छेड़ी लय
मेरा स्मृति-पुंज-रंग लाजवाब
अनुपम रंगों का खूब ख्वाब
दूरस्थ स्वरों का वसंत-राग
मूक मन भी करता जाग-जाग
कब हो सकती है मेरी हार
मैं पतझड़ को कह कर बहार
क्या फिक्र कि जीवन तार-तार
और अनगिन डोले डार-डार
अपने ही लहू से भरा जाम
पीता हूं, खुश हो झूमझाम
जब अनंत अंधेरा लाये शाम
तब और बढ़ा दी धूमधाम

—सी-६, निजामुद्दीन पूर्व, नयी दिल्ली

था कि वे उसकी परवाह करते। दूसरी ओर उसके लिए सभी क्रांतिकारियों के भी दरवाजे बंद हो चुके थे। वह अब अपने को अपाहिज-सा महसूस करने लगा था और यह भी कि कुछ अदृश्य आंखें छिपे उस पर नजरें रख रही हैं। संभवत: जल्दी ही उसके लिए वैसी ही परिस्थितियां बन जाएंगी, जैसी कि तब थीं, जब कि उसे पहली बार पुलिस मुख्यालय ले जाया गया था। अंतर होगा तो बस, इतना ही कि अब वहां दूसरे लोग होंगे, और इस बार फैसला अंतिम होगा। और उसके अगर 'नये लोग' जीत गये, तब तो बचाव का कोई भी रास्ता नहीं रह जाएगा। लुके-छिपे रहकर इंतजार करते रहने या कहीं निकल भागने से ही शायद बचाव हो, तो हो—और किया भी क्या जा सकता था! लेकिन ये दोनों रास्ते गलत थे। उसके मन में विचार आया कि मुमकिन है कि कोई तीसरा रास्ता भी हो।

उसने टैक्सी स्टार्ट की और उसे आगे बढ़ाया, गो कि वह नहीं जानता था कि वह कहां जा रहा है। उसने सोचा कि वह टैक्सी को गैराज में पहुंचा देगा और वहां से पैदल या और किसी तरह गांवों की ओर निकल जाएगा। लेकिन इसके साथ उसके मन में यह विचार भी कौंधा कि क्रांति की यह लहर केवल उसके शहर हवाना में ही नहीं, बल्कि गांव-कस्बों तक भी पहुंच गयी होगी। उसने फिर सोचा, क्यों न वह कोई नया गैराज ढूंढ़ ले और कोई दूसरा रिहायशी मकान...। उस खाली जमीन के सामनेवाले मकानों की कतार के पास जाने का उसका यही मकसद था। लेकिन, वहां पहुंचते-पहुंचते वह थकान से इतना चूर हो गया था कि गाड़ी के ठीक से रुकने के पहले ही उसे नींद ने धर दबाया। और अगली सुबह जब उसकी आंख खुली, तब नरक की यवनिका उठ चुकी थी। अब कुछ भी नहीं किया जा सकता था।

कमर-पेटियों में पिस्तौल लगाये दो आदमी एक खाली दीखते मकान में घुस रहे थे। उसी वक्त मकान की ऊपरी मंजिल पर एक आदमी खिड़की पर आया और नीचेवाले व्यक्तियों का संकेत पाकर नीचे उतरा। रोमन ने टैक्सी का बोनेट खोल रखा था और कल-पुर्जा दुरुस्त करने का बहाना बनाये हुए था। वह इन आदमियों में से किसी को नहीं जानता था। लेकिन, मुमकिन है, वे उसे पहचानते हों। जो भी हो, वे उस घर से निकलकर तेज कदम सड़क पर आगे बढ़ गये। सामान्य परिस्थितियों में उन्हें ऐसा करने की हिम्मत नहीं हो सकती थी, क्योंकि रोमन को यह तो निश्चित था कि वे क्रांतिकारी थे और किसी शिकार की तलाश में थे। वे उस जैसे मेहनतकश नहीं थे, वे अच्छे कपड़ों में और खाते-पीते घरानों के जान पड़ते थे। यह लड़ाई उन्हीं की लड़ाई थी। फिर उसे इसमें क्यों घसीटा गया था—पहले एक ओर और फिर दूसरी ओर?

पहले पुराने दलवाले उसे मिटाने पर उतारू थे और अब नये लोग।

रोमन ने टैक्सी का मीटर गिरा रखा था, किंतु उसका कोई असर नहीं हुआ। संभ्रांत से दीखते वे चारों उस मकान से भागते हुए आए और उसकी टैक्सी में बैठकर उसे कहीं चलने का आदेश दिया।

सारे शहर में हड़ताल थी और सड़कें आदमियों तथा गाड़ियों से अटी पड़ी थीं। भीड़ में सैनिक भी थे और नागरिक भी। वे सभी चीख-चिल्ला रहे थे, उछलते-कूदते जयध्वनि कर रहे थे और हवा में पिस्तौलें भांजते हुए नाच-गा रहे थे।

राह में एक आदमी को कुछ लोग पकड़े हुए थे और उनसे छूटने के लिए वह जी-तोड़ कोशिश कर रहा था। उनके गिर्द एक छोटी-सी भीड़ जमा थी, उस भीड़ में मर्द तो थे ही, औरतें भी थीं। उसने भीड़ से किनारा काटते हुए गाड़ी निकाली, लेकिन भीड़ की तेज नजरों ने टैक्सी के सवारों को देख लिया और उनमें से कुछ लोग टैक्सी पर गोलियां खाली करते उसके पीछे भागे। एक गोली टैक्सी के पीछे के शीशे को और फिर सामने के शीशे को फोड़ती हुई निकल गयी। रोमन ने फौरन टैक्सी रोक दी। उसकी सवारियां गाड़ी से कूदकर पागलों की तरह भागती हुई एक गली में जा घुसीं। लेकिन लोग उनका पीछा करते रहे और पिस्तौल से अंधाधुंध गोलियां चलाते रहे। टैक्सी किनारे लगाते हुए रोमन के मन में आया कि अब उसकी बारी है। लेकिन उसकी ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। निकट खड़े कुछ उत्तेजित व्यक्ति उससे पूछने जरूर आये कि उसने वे सवारियां कहां से उठायी थीं और पता जानकर उसी ओर दौड़ पड़े। उसने उन्हें उस मकान का नंबर भी बता दिया था, जिससे उसकी सवारियां निकली थीं। किंतु संभवतः वे वहां के रहनेवाले न थे। शायद, उन्होंने उस मकान की सीढ़ियों के नीचे छिपकर पिछली रात गुजारी हो। कौन कह सकता है कि उस मकान में रहनेवालों का क्या हश्र हुआ होगा क्योंकि हर आदमी के पास हथियार थे।

रोमन ने टैक्सी स्टार्ट की और भीड़ में खो जाने की कोशिश करने लगा। उसने सोचा कि वह उनमें जा मिलेगा, तो वे उसे अपने में से ही एक समझेंगे और वह बच जायगा। लेकिन उसे अपना साहस छूटता-सा प्रतीत हुआ।

उसने टैक्सी के शीशे में अपना जर्द पड़ा चेहरा देखा। उसे लगा वह न्याय से बचने की कोशिश कर रहे किसी अपराधी का चेहरा हो। इस समय तो उसकी शक्ल ही उसके खिलाफ गवाही देगी। लेकिन तभी उसने आदमियों का एक और समूह गुजरते देखा। उसमें कई व्यक्तियों के चेहरों पर उसी जैसी दाढ़ियां थीं और चेहरे भी उसी की तरह सूखे और मनहूस। जाहिर था कि वे लोग या तो पिछले महीनों भूमिगत रहे होंगे या जेल से निकल-

THIS WAY
TO SHARE
NiLON'S
LIME PICKLE
निंबू अचार
Manufactured by
NILON'S

निलॉन्स अचारकी फॅक्टरी हरेभरे फलबागोंमें ही क्यों?

सिर्फ आपको बेहतरीन अचार देने के लिये।

निलॉन्स अचारकी प्रमुख विशेषतायें—

१) निलॉन्स अचारकी फॅक्टरी किसी शहर में न होकर हरेभरे फलबागों में है, ताकि जो भी फल हो ताजे-से-ताजे हों, जो किसी शहर की फॅक्टरी में संभव नहीं है।

२) ताजे से ताजे फलों का पूर्ण परिपक्व अचार सिर्फ निलॉन्स की ही फॅक्टरी में संभव है। जो अनुभवी विशेषज्ञद्वारा जाँचा परखा भी जाता है।

निलॉन्स अचार के चार प्रकार—
आम • निंबू • मिर्च • मिश्र

निलॉन्स अचार रुची के सुरुचिपूर्ण अचार

निलॉन्स
फूड्स प्राईवेट लिमिटेड
उतराण, जलगांव-४२५ ००१, महाराष्ट्र

निम्नलिखित विभागों में वितरक चाहिये।

B BROTHERS/NFL/[illegible]

यज्ञ
संपूर्ण
नेत्रों
समा
को
हित
ऐसे
स्वरू
प्रत्ये
करते
संसा
हूं अ
पूर्ण

कर
लोगो
कम
कि
सेवक

एक
वह
था
के
फेक
किस
हुए
मई

वचन-वीथी

यज्ञ का अर्थ है कि अपने हाथों को संपूर्ण राष्ट्र के प्रति अर्पण कर देना, अपने नेत्रों को सब नेत्रों के लिए अथवा सारे समाज के लिए समर्पण करना, अपने मन को सब मनों के प्रति भेंट करना, अपने हित को देशहित में लीन करना और सबको ऐसे भान करना कि मानो वे सब मेरा ही स्वरूप हैं। —स्वामी रामतीर्थ

प्रत्येक युवा मनुष्य को संसार में प्रवेश करते समय यही सोचना चाहिए कि मैं संसार में विजय प्राप्त करने के लिए आया हूं और साथ ही उसे अपनी योग्यता पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए।

—स्वेट मार्डन

लगन अपने से विपरीत दिशा में मनुष्य को उसी प्रकार नहीं दौड़ा सकती, जिस प्रकार तीव्रगामी सरिता अपनी ही धारा के विरुद्ध नौका को नहीं ले जा सकती।

—फिलिंडग

जो अपनी रोटी दूसरों के साथ बांटकर खाता है, उसको भूख की बीमारी कभी स्पर्श नहीं करती।

—तिरुवल्लुवर

तुम्हारे ज्ञान के ऊपर पड़े हुए जड़ता के आवरण को फाड़ने के लिए प्रकृति की ओर से तुम्हें एक वस्तु दी गयी है—वह है तुम्हारी वेदना।

—खलील जिब्रान

शंका विनाश का कारण है। शंका करने से बने-बनाये काम बिगड़ते हैं।

—प्रेमचंद

कर आ रहे होंगे। उसे देखकर भी तो लोगों को ऐसा ही कुछ लगना चाहिए, कम से कम लोग यह तो नहीं भांप सकेंगे कि वह पिछली सरकार का वेतनभोगी सेवक भी हो सकता है।

आगे उसे एक और भीड़ मिली, जो एक अकेले आदमी का पीछा कर रही थी। वह सड़क पर पागलों की तरह दौड़ रहा था और बीच-बीच में पीछा करनेवालों के लिए नोटों की गड्डियां निकालकर फेकता जा रहा था। लेकिन नोटों की तरफ किसी का ध्यान नहीं था—वे उन्हें रौंदते हुए उसके पीछे भाग रहे थे और गोलियां चला रहे थे। अंततः वह घायल हो रोमन की गाड़ी से कुछ आगे आकर मुंह के बल गिर पड़ा। उसकी देह से लगातार खून निकल रहा था। उसे गिरते देख भीड़ में से एक आदमी, हाथों में रिवाल्वर थामे रोमन के पास आया और उससे टिन में पेट्रोल देने को कहा। रोमन ने फौरन हुक्म की तामील की। तब उसने गिरे हुए आदमी के पास जाकर उस पर पैट्रोल का टिन खालीकर दिया। भीड़ में से एक दूसरे आदमी ने खून और पैट्रोल से भीगे उस तड़पते आदमी की देह को आग दिखा दी।

सुपर रिन की चमत्कार
ज़्यादा सफ़ेद

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से ज़्यादा सफ़ेद.

सुपर रिन से नियमित धुलाई करने पर आपके कपड़ों में ऐसा फ़र्क आये कि दूर से दिखे. किसी दूसरी डिटर्जेंट टिकिया या बार के मुकाबले सुपर रिन कहीं अधिक सफ़ेदी लाता है, क्योंकि सुपर रिन में अधिक सफ़ेदी की शक्ति है.

आज़माइए और सबूत पाइए:

किसी अन्य
डिटर्जेंट बार से
धोया हुआ

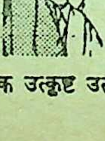

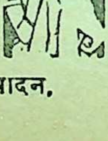

सुपर रिन
से धोया हुआ

सुपर रिन—अधिक सफ़ेदी की शक्ति से भरपूर

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

लिंटास-RIN.40-1611 HI

की
बंद
वे उ
दौर
आयं
थी।
टूटा
गैरा
मरं
युवव
वाले
दिय
नज
बढ़ा
●●
दोप
गाड़
उस
व्या
दृष्टि
कि
स्टा
व्या
का
रहा
शक
तक

हुई
अप

मह

रोमन ने फिर अपनी टैक्सी स्टार्ट की। कुछ ही गज आगे चंद हथियार बंद युवक उसकी गाड़ी में आ बैठे। और वे उसे घंटों इधर-उधर घुमाते रहे। इसी दौरान उसकी गाड़ी उस गैराज के सामने आयी, जहां से उसने भाड़े पर यह टैक्सी ली थी। उसने देखा गैराज का बाहरी फाटक टूटा पड़ा था। गाड़ी रोककर उसने गैराज के आदमी से अपनी गाड़ी में पैट्रोल भरने को कहा। गाड़ी में बैठे हथियारबंद युवकों पर एक नजर डालकर गैराजवाले ने मोटर की टंकी को पूरी तरह भर दिया और कीमत चुकाने की बात को नजरअंदाज करते हुए रोमन ने गाड़ी बढ़ा दी।

●●

दोपहर ढल रही थी। रोमन अपनी गाड़ी में बैठा कुछ सोच रहा था कि तभी उसने देखा, सड़क के दूसरे बाजू खड़ा एक व्यक्ति उस पर नजर रखे हुए है। उसकी दृष्टि में रोमन को कुछ ऐसा नजर आया कि उसकी देह थरथरा उठी। टैक्सी स्टार्टकर उसने कनखियों से देखा, वह व्यक्ति उसकी गाड़ी के पीछे देखकर कागज के एक टुकड़े पर कुछ दर्ज कर रहा था। रोमन ने सोचा अभी उस पर शक ही किया गया है, वरना उसका अब तक खात्मा ही कर दिया गया होता।

गाड़ी की यात्रा एक बार फिर आरंभ हुई और कुछ देर बाद उसने अपने को अपने घर के एकदम निकट से गुजरते पाया। वह स्वेच्छा से उधर नहीं गया था, बस ऐसे ही, उसने गाड़ी रोक दी और उसके मन में अदम्य इच्छा जागी कि वह घर जाकर बाल-बच्चों की खैर-खबर ले। लेकिन सामने से आती हुई भारी भीड़ को देखकर उसकी इच्छा तिरोहित हो गयी। भीड़ चीखती-चिल्लाती, नारे लगाती, नाचती-गाती उसी ओर आ रही थी। वह शीघ्रता से निकट के स्टोर में जा घुसा। भीड़ हटने पर रोमन गाड़ी के पास आया और उसका हुड उठा दिया। फिर निकट से गुजरते एक बच्चे को रोककर उसने कहा, "जरा १२ नंबर मकान में जाकर किसी से कहो कि यहां एक मिनट के लिए आ जाए।" बच्चा दौड़कर गया और लौटकर बोला कि वहां कोई नहीं है। रोमन ने सोचा कि एस्टेला शायद वलबीना के यहां सलाह-मशविरा करने गयी होगी। शायद अब तक वह रोमन के जीवित रहने का भरोसा ही खो बैठी हो।

एक बार फिर उसने गाड़ी स्टार्ट की। जब वह फिर शहर के निचले बाजार में पहुंचा, तब सूरज डूब चला था। पार्क और चौराहों पर भीड़ जमा थी और विजय-भावना से उन्मत्त सैनिक, अधिकारी और सामान्य-जन भेद-भाव भुलाकर एक दूसरे के गले मिल रहे थे। उसने आसमान में गोलियों की ध्वनि सुनी। नीचे सभी जीवित आंखों में खून उतरा दीख पड़ रहा था-जैसे हरेक प्राणी शिकार की तलाश में था।

जब मुन्ना ३ महीनेका हो जाए, तो उसे सिर्फ़ दूध ही काफ़ी नहीं है

आपके मुन्ने को चाहिए फ़ैरेक्स

मुन्ने का आदर्श ठोस आहार

३ महीने की उम्र— ठोस आहार का समय

३ महीने का होनेपर, मुन्ने की बढ़ती माँगों के लिए केवल दूध काफ़ी नहीं है। दिन-ब-दिन बढ़ते उसके शरीर को अब दूध से मिलने वाली कॅलोरीज़ से कहीं अधिक की जरूरत रहती है। साथ ही अब मुन्ने को ठोस आहार की भी जरूरत है जो उसके तरल आहार की मात्रा कम करके थोड़ेमें उसे अधिक कॅलोरीज दे सके और उसको चबाना सिखा सके।

३ महीने की उम्र— अधिक आयरन की आवश्यकता

"बच्चे को ठोस आहार देना शुरू करने का सबसे अच्छा समय है— जब वह ३-४ महीने का हो जाए। हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण अपने आप में पूर्ण आहार नहीं है। इसीलिये बच्चे को आयरनवाले ठोस आहार की जरूरत होती है।"

—डॉ. सुभाष सी. आर्य : "इन्फ़ेंट एण्ड चाइल्ड केअर फ़ॉर दि इण्डियन मदर"

डॉक्टर फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश क्यों करते हैं?

फ़ैरेक्स विशेष रीति से बना सुपाच्य आहार है। इसमें कार्बोहाइड्रेटस, फ़ैट्स, कॅल्शियम, फ़ॉस्फ़ोरस और विटामिनस हैं और पर्याप्त मात्रा में आयरन भी है। इस प्रकार मुन्ने के सर्वांगीण विकास के लिये फ़ैरेक्स एक आदर्श ठोस आहार है।

मुफ़्त! मुन्ने की प्रथमवर्ष पुस्तिका— नयी माताओं के लिए बच्चे की देखभाल सम्बन्धी सुलभ मार्गदर्शन। ५० पैसे का टिकट भेजकर मंगवाइये।

पो. ऑ. बॉक्स नं. 19119, (FAR 45 T)
बम्बई-400 025.

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है-फ़ैरेक्स
मुन्ने का आदर्श ठोस आहार-जल्द और सर्वांगीण विकास के लिए

CASGLF-10-172 Hin

अंधेरा पूरी तरह उतर आया था। अनिश्चय की मनस्थिति में वह कुछ देर तक स्टैंड पर रुका रहा। वह अब वहां अकेला ही बच रहा था और उसे वहां से हटने में डर लग रहा था। क्योंकि, शहर का बीच का भाग एकदम खुला और असुरक्षित था, जहां अंधेरी गलियों और डरावने मोड़ों पर कहीं भी मौत के सौदागर छिपे मिल सकते थे। जो यह थोड़े ही पूछेंगे कि उसने जो कुछ किया, उसके पीछे उद्देश्य क्या था। वे तो केवल उसकी पहचान चाहेंगे। और पहचान के लिए इतना ही काफी है कि वह मुखबिर है। उसने जिन लोगों के भेद खोले थे, उनकी मृतात्माएं उसका पीछा कर रही होंगी।

अगले ही क्षण उसकी गाड़ी रफ्तार में थी। जब वह उस चौराहे पर पहुंचा जहां उसे प्रायः निश्चय था कि शत्रु उस पर हमला बोल देंगे, लेकिन उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसकी आशंका एकदम निराधार थी। और तब शुरू हुई यंत्रणापूर्ण महायात्रा।

सड़कें अब प्रायः सूनी हो चुकी थीं, ट्रैफिक पुलिस का भी कोई सिपाही कहीं नहीं दीख रहा था। रोमन टैक्सी ही चला रहा था, लेकिन उसके पहिये-जैसे रेल की पटरियों पर फिसल रहे हों या हवा में तैर रहे हों। वह अपने जीवन से जुड़े हर स्थान से होकर गुजरा। यद्यपि, ऐसा उसने क्यों किया, इसका उत्तर उसे नहीं मालूम था। पहले वह वलबीना के घर के आगे से गुजरा, जहां उसने अपने दो भाइयों और दो बहनों के साथ इस शहर में अपनी पहली रात बितायी थी। उसके बाद वह फैक्टरी आयी, जहां वलबीना काम करती थी, और उसके बाद वह घर, जहां उसकी बहन लेबीदा एक स्पेनवासी के साथ रहती थी—पता नहीं उसका क्या हुआ होगा?

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ५ क., २. नीलगिरि, ३. क. सूरत, १६१२, ख. पुर्तगाली फौज, डच, ४. क. १९३५, ख. १ जनवरी १९४९. ५. पेरांबिकुलम अलियार—तमिलनाडु तथा केरल की संयुक्त परियोजना (६ नदियां अनामलाई पहाड़ी की तथा २ मैदान की हैं), ६. उत्तरी (न. दिल्ली) १०,६८६ कि. मी., पश्चिमी (बंबई, चर्चगेट) १०,१५३ कि. मी. ७. विश्व रेडक्रास दिवस (८ मई), राष्ट्रीय एकता दिवस (१३ मई), राष्ट्रमंडल दिवस (२४ मई), ८. स्वेज नहर के नीचे (४,२२० मीटर लंबी सुरंग, ४० मीटर से अधिक गहराई पर ७ मीटर चौड़ी सड़क, तथा सिनाई रेगिस्तान में पानी पहुंचाने के लिए एक पाइप-लाइन भी, निर्माण व्यय १५ करोड़ डालर, विगत अप्रैल में सीमित प्रयोग के लिए खुली), ९. डोलर मेहता (केनिया), १०. क. ४ करोड़ साढ़े ८ लाख (१९७८ के आंकड़े), ख. हिंदी (२९४), ११. ख, १२. टी. बी. कैंसर।

BRAHMI AMLA OIL
COW BRAND BLACK TOOTH POWDER
heros'-AS.161 B HN

मुनिया रानी बढ़ती जाये
घने काले, बालों का जादू जगाये
मोती से सफेद दांतों को चमकाये

गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तेल
—उसके बालों को और घने बनाये
सबको सुहाये मन में भाये
बालों का ये कालापन, घना व चमकीलापन

गाय छाप काला दन्त-मंजन
—उसके दांतों को चमकाये
मोती से सफेद व मज़बूत बनाये

सेवाश्रम का गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तेल
और काला दन्तमंजन

अपनी सुन्दरता को
वैज्ञानिक ढंग से बनाये रखिये

आयुर्वेद सेवाश्रम लिमिटेड
उदयपुर • वाराणसी • हैदराबाद

उसके बाद वह उस घर के आगे से गुजरा, जहां उसकी दूसरी बहन एक चीनी से ब्याह करके रहती थी। और, फिर यह भूलकर कि शहर की नाकेबंदी की गयी होगी, वह शहर की सीमा के बाहर स्थित लकड़ी के उस मकान तक गया, जहां उसका बच्चा मरा था। एस्टेला से उसी पड़ोस में उसकी भेंट हुई थी—पहले एक नृत्य में और फिर उस जगह के पीछेवाले स्थान पर, जहां मुर्गों की लड़ाई करायी जाती थी। उस नाच-घर के स्थान पर अब एक फैक्टरी थी, जिसके फाटक पर एक बंदूकधारी संतरी पहरा दे रहा था। राह में किसी ने रोमन को नहीं टोका। यहां तक कि शहर की सीमा पर के पहरेदारों ने भी सिर्फ यह देखकर कि गाड़ी के अंदर कोई है या नहीं, उसे बाहर जाने दिया। लौटती बार तो उन्होंने यह भी नहीं देखा। शहर में लौटकर एक बार वह फिर परिचित स्थानों से होकर गुजरा—नाटक और सिनेमाघर, रात्रि-क्लब और वेश्यालय। वह उन सभी स्थानों से गुजरा जहां वह लोगों को आनंदपूर्वक समय बिताने के लिए पहुंचाया करता था। उसने पहले कभी नहीं सोचा था कि जीवन में आनंद के इतने मुकाम होते हैं। क्या इन्हीं आनंदों की उपलब्धि के लिए लोग लड़ते और मारते-मरते हैं? लेकिन उन्हें फिर भी संतोष नही होता था। उन्हें हरदम अधिक की चाह रहती थी; वे ऊपर उठना चाहते थे, भीड़ से ऊंचा होना चाहते थे; आदेश देना और शासन करना चाहते थे, अधिकार चाहते थे, शक्ति-स्तंभ बनना चाहते थे। वे दूसरों को रौंदते हुए ऊपर उठना चाहते थे—न केवल इसलिए कि वे संगीत, सुरा, सुंदरी, विश्राम, चाटुकारिता, सेवा, उत्तम भोजन और स्वास्थ्य का आनंद ले, सकें, बल्कि इसीलिए कि वे ऊपर उठ सकें—सर्वोपरि, सर्वोच्च हो सकें।

इस विचार से उसका दिवा-स्वप्न टूटा। उसकी गाड़ी-जैसे अपने-आप चल रही थी। रास्ते में कोई बाधा अथवा रुकावट नहीं थी। अचानक उसे अपने बीवी-बच्चों का खयाल आया। आखिर उसने जो कुछ भी किया था, उन्हीं के लिए तो किया था और जहां आ पड़ा था, वह भी तो उन्हीं के कारण। लेकिन वह था कहां? उसने देखा कि वह उसी पुलिस मुख्यालय के सामने से गुजर रहा था, जहां उसे दल-बदल के लिए 'मनाया' गया था। बिना ध्यान दिये वह अपने घर से एक ब्लाक आगे निकल आया था। उसके मन में तीव्र इच्छा जागी कि वह एक बार फिर कोशिश करके देखे कि एस्टेला लौट आयी कि नहीं, और वह आ गयी हो, तो बच्चों को प्यार करे। उसने सोचा कि अगले मोड़ से वह चक्कर काटकर घर से कुछ दूर गाड़ी रोकेगा, फिर परिस्थितियों के अनुसार जैसा उचित होगा, करेगा।

वह चौरास्ते तक तो पहुंच गया, लेकिन इससे पहले कि वह गाड़ी को मोड़ने के लिए स्टीयरिंग घुमाता, एक दूसरी

एगमार्क

पैक की गई वस्तुओं की शुद्धता एवं उत्तमता की गारंटी होने पर ही भारत सरकार द्वारा एगमार्क दिया जाता है।

विश्वास पूर्वक खरीदारी करें एगमार्क पर भरोसा रखें

घी, मक्खन, खाने के तेल, शहद, दालों, मसालों आदि जैसी वस्तुओं को एगमार्क का लेबल केवल बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाओं में भली-भांति से कई परीक्षणों के बाद ही दिया जाता है।

शुद्धता के लिए पूर्व जाँच की जाती है
क्वालिटी के लिए श्रेणी निश्चित की जाती है

हमेशा 'एगमार्क' वस्तुएं ही खरीदें

परचून की दुकानों और जनरल स्टोरों पर उपलब्ध हैं।

डीएवीपी 80/506

गाड़ी उसकी गाड़ी के मडगार्ड को चोट पहुंचाती काफी तेज रफ्तार में उसके सामने से गुजर गयी। और इससे पहले कि वह स्थिति का जायजा ले, एक दूसरी गाड़ी ने उसकी गाड़ी के ठीक आगे आकर उसका रास्ता रोक दिया। रोमन के पास कुछ सोचने का समय नहीं था। उसने तेजी से उलटा गियर लगाकर पीछे की ओर तीखा मोड़ लेकर गाड़ी को विपरीत दिशा में पूरी रफ्तार से चला दिया।

रोमन की टैक्सी सीधे समुद्र की ओर जा रही थी और उसका स्पीडोमीटर अपनी उच्चतम सीमा पर जैसे स्थिर हो गया हो। लेकिन वह अकेला नहीं था। उसके पीछे-जैसे मोटरों का एक काफिला चल रहा हो। जिस गाड़ी ने उसका रास्ता रोका था, वह उस काफिले में सबसे आगे थी और शायद, उसी के वायरलेस-संकेत पर और गाड़ियां भी इस काफिले में शामिल हो गयी थीं। यह काफिला शिकारियों का था और उसका शिकार फिलहाल एक ही था——रोमन।

रोमन की गाड़ी चंद ही मिनटों में नगर की सीमा पर आ पहुंची, जहां नगर का वह मुख्य मार्ग, राजमार्ग से मिलता था, जो देश की सीमा को लांघता था। लेकिन वह सीमा सैकड़ों मील दूर थी और खुले राजमार्ग पर पीछा करते शिकारियों से बच निकलना असंभव-जैसा था।

राजमार्ग से ठीक पहले पड़नेवाले चौराहे ने दाहिनी ओर को तीखा मोड़ लिया और उसके बाद, एक के बाद दूसरी सड़कों पर कभी दायें, कभी बायें घूमती उसकी टैक्सी-जैसे सरकस का कोई बेइंतहा खतरनाक खेल दिखा रही हो, अब उसका पीछा करनेवाली गाड़ियों के काफिले में और भी कई गाड़ियों आ मिली थी और वे अलग-अलग रास्तों से होकर रोमन का रास्ता रोकने की रणनीति अपना रही थीं।

तभी अचानक रोमन के सिर के ऊपरी हिस्से को छीलती एक गोली गुजरी। अब उसकी गाड़ी फिर नगर के मध्य मार्ग पर चल रही थी, जहां से कुछ ही समय पहले यह आखेट शुरू हुआ था। रोमन की नजर सामने की सड़क पर स्थिर थी। उसकी टैक्सी में अब तक न जाने कितनी गोलियां लग चुकी थीं, लेकिन यह पहली गोली थी, जिसने रोमन का स्पर्श किया। ताज्जुब की बात यह थी कि इससे रोमन तनिक भी भयभीत नहीं हुआ, बल्कि वह हैरान था कि अभी तक वह गोलियों से अछूता कैसे रह गया था। तभी उसे दूसरी गोली लगी। वह रोमन के बायें बाजू में लगी थी। उसके मन में आया कि वह नगर के सबसे बड़े अस्पताल के फाटक से अपनी टैक्सी भिड़ा दे और घायल होकर उसमें भरती हो जाए। तभी उसे तीसरी गोली लगी। वह उसकी कनपटी से जरा-सा नीचे लगी थी। सिर के ऊपरी भाग से गिरनेवाले खून से उसकी आंखों पर धुएं का परदा-सा छा रहा था, लेकिन फिर भी वह देख पाया कि उसकी टैक्सी उसी पुलिस-

संगीत सा सुमधुर
पुष्पों सा सुगन्धित
तानसेन
सुगन्धित पान मसाला
तानसेन
केसर मिश्रित

PRATAP

धर्मपाल प्रेमचन्द लिमिटेड देहली -110006

For Soft & Quick Washing

Hindustan washing Machine

- Sturdy Motor
- Beautiful Body
- Lowest Running Cost
- Economical Prices

And a huge range to choose from

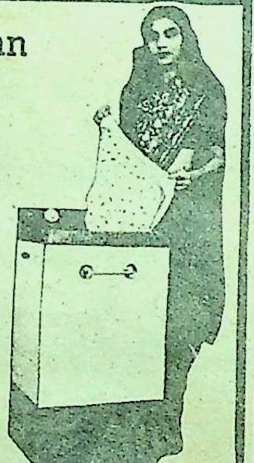

COLD ? WHAT COLD ?
I AM GOING TO HAVE
HOT WATER BATH WITH
HINDUSTAN GEYSER AND WHY NOT !

HINDUSTAN
HINDUSTAN

HINDUSTAN
Hindustan Traders Co. • 32, South Patel Nagar, 589546, 583261
• R-5, Green Park—669768, 663765 • B-10, 12 Rajagarden—588238 • 96 Panchkuin Road
(Near Lady Harding Hospital)—310247 Also Available at leading Stores

मुख्
उसे

लोग
की
सिर
से
झूल
मंद
बहुत

का
गाड़
हथि
भग
सैनि
की
उनं
बाज
का
छूत
ही
बरत
खोल
सीट
ऐसे
उन्हे

दिय
लोग
देख
मई

मुख्यालय के सामने रुक रही थी, जहां उसे कई बार 'नसीहतें' दी जा चुकी थीं।

मुख्यालय में अभी भी रोशनी थी, और लोग आ-जा रहे थे। उसने गाड़ी मुख्यालय की इमारत की ओर घुमायी। फिर उसका सिर उसके बाएं कंधे पर ढुलका और वहां से निढाल होकर उसकी छाती की ओर झूल गया। लेकिन उसे अब भी क्रमशः मंद होता शोर सुन पड़ रहा था—दूर से, बहुत दूर से।

कुछ ही क्षण में रोमन की टैक्सी का पीछा कर रही तीन गाड़ियां भी उसकी गाड़ी के पास रुकीं और उनमें से कुछ हथियार-बंद लोग बाहर कूद पड़े— लगभग इसके साथ ही मुख्यालय से भी कुछेक सैनिक बाहर निकले और उन्होंने रोमन की गाड़ी को सभी तरफ से घेर लिया। उनमें से एक ने गाड़ी के आगे का दरवाजा खोला, तो रोमन की निःस्पंद देह का ऊपरी हिस्सा गाड़ी के रनिंग बोर्ड को छूता हुआ जमीन पर आ पड़ा। इसके साथ ही एक अन्य व्यक्ति ने, बड़ी सावधानी बरतते हुए गाड़ी के पीछे का दरवाजा खोला। वहां कोई न था। कई टार्चों ने सीट के ऊपर-नीचे खूब अच्छी तरह-ऐसे देखा कि यदि वहां चींटा भी होता, तो उन्हें दीख पड़ जाता। वहां कोई न था।

अब उन्होंने ड्राइवर की ओर ध्यान दिया। बारी-बारी से वहां उपस्थित सभी लोगों ने खूब अच्छी तरह उसका चेहरा देखा। उसे कोई नहीं पहचानता था।

स्व. छित्तरसिंह

'हिंदुस्तान टाइम्स' जॉब विभाग के मशीनमैन श्री छित्तरसिंह का लंबी बीमारी के कारण पिछले दिनों निधन हो गया, वह पिछले डेढ़ वर्ष से अस्वस्थ थे। छित्तरसिंह ने ३५ वर्ष पूर्व 'हिंदुस्तान टाइम्स' में नौकरी शुरू की थी। वर्षों तक वे 'कादम्बिनी' के मुद्रण से भी संबंधित रहे। दिवंगत आत्मा को 'कादम्बिनी'-परिवार की श्रद्धांजलि।

—संपादक

मुख्यालय से और लोग बाहर आये। अंततः उसकी देह, जो अभी भी गरम थी, मुख्यालय के एक बड़े कमरे में ले जाकर स्ट्रेचर पर डाल दी गयी। लेकिन वहां ऐसा कोई भी नहीं था, जो उसे पहचान पाता। तब उस व्यक्ति को बुलाया गया, जिसने रोमन की गाड़ी पर सबसे पहले गोली चलायी थी। मुख्यालय के पुलिस-अधिकारी के प्रश्न के उत्तर में उसने कहा कि उसने निश्चित रूप से गाड़ी से किसी

नियमित रूप से थोड़ी-थोड़ी बचत कीजिये—और
तब वह हर चीज़ आपकी होगी,
जिसका आप हमेशा सपना देखते हैं।

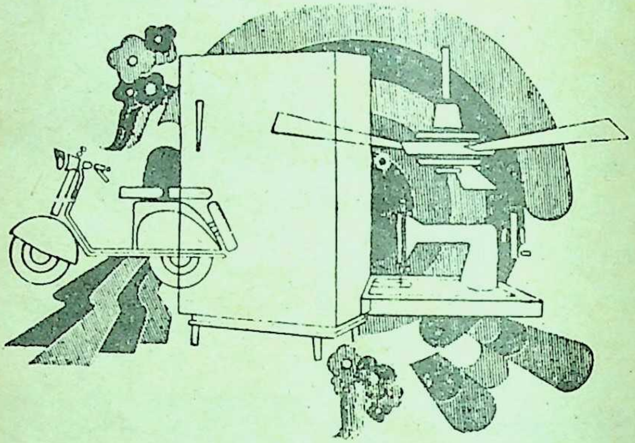

इलाहाबाद बैंक की रेकरिंग डिपॉजिट योजना
आपके सपनों को सच करती है।

इस योजना की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें आप खुद तय करते हैं कि हर माह आपको कितना जमा करना है। कम से कम १० रुपये से लेकर अधिक से अधिक १,००० रुपये तक—१ से १० वर्ष तक की अवधि के लिये।

इस प्रकार आप बगैर किसी परेशानी के आसानी से बचत कर सकते हैं। और अन्त में जो आपको वापस मिलेगा, वह आपके जमा किये हुए पैसों से ५०%...या शायद उससे भी ज्यादा हो सकता है। तब आप बड़े आराम से वह सब कुछ खरीद सकेंगे, जिसका आप हमेशा सपना देखते हैं।

अधिक जानकारी के लिये अपने करीब के इलाहाबाद बैंक की किसी भी शाखा में पधारिये।

इलाहाबाद बैंक
आपका अपना बैंक
(भारत सरकार की एक संस्था)

U-AB-3 B HIN

को क्ष
अंदर
फौरन
थी।
गयी

तलाश
हथिय
निजी
क्षणों
ली थ

कोशि
गुप्त
उसके
उसके
भी न

में य
सया
वह
केवल
इन
दो घ
देह
चुकी

पता
घर
कई
से

मई

को क्षणभर के लिए बाहर झांककर फिर अंदर दुबक जाते देखा था, और फिर फौरन ही ड्राइवर ने गाड़ी तेज कर दी थी। बाद में गाड़ी से गोली भी चलायी गयी थी।

रोमन की गाड़ी की अच्छी तरह तलाशी लेने पर भी उसमें से कोई भी हथियार बरामद नहीं हुआ। रोमन की निजी पिस्तौल भी उसके असावधानी के क्षणों के बीच, रास्ते में किसी ने निकाल ली थी।

फिर ड्राइवर ने भागने की क्यों कोशिश की? उसका लायसेंस देखा गया, गुप्तचर विभाग और न्याय-विभाग से उसके बारे में जानकारी मांगी गयी, लेकिन उसके नाम की कहीं किसी फाइल में चर्चा भी नहीं थी।

उसकी देह को घेरे हुए और उसके बारे में यहां-वहां पता लगानेवाले लोगों का खयाल था कि वह मर चुका है, जबकि वह अधिक खून निकल जाने के कारण केवल 'शॉक' की स्थिति में था। लेकिन इन कार्रवाइयों का नतीजा निकलने तक दो घंटे गुजर गये थे और तब तक उसकी देह अकड़कर बर्फ की तरह ठंडी पड़ चुकी थी।

उसके लाइसेंस पर उसके घर का पता देखकर पुलिस का एक आदमी उसके घर गया और एस्टेला से उसके बारे में कई सवाल पूछे। लेकिन भूख और चिंता से विक्षिप्त बनी भयभीत एस्टेला उसकी कोई मदद नहीं कर पायी। वह भयानक गरीबी में दिन गुजार रही थी, यह असंभव था कि किसी सरकारी भेदिए के घर का ऐसा बुरा हाल हो।

वे सभी, जिन्होंने रोमन की गाड़ी का पीछा किया था, उसकी मृत देह के पास चुपचाप खड़े थे। वे नहीं समझ पा रहे थे कि ऐसा सब किस वजह से हुआ। इस घटना के किसी भी पहलू पर, कोई भी रोशनी नहीं डाल पा रहा था।

तभी एक वर्दीधारी बूढ़ा जो वहां पहले सिपाही था, लेकिन अब क्लर्क बन गया था, लोगों के बीच से रास्ता बनाता हुआ रोमन की लाश के पास पहुंचा और कुछ सोचता-सा कुछ देर अपनी मूंछ को थपकाते हुए, उसने आस-पास के लोगों की ओर कुछ हैरानी से देखते पूछा, "तुमने इसे क्यों मारा? यह तो तुम्हारा ही आदमी था। वे लोग कई बार इसे यहां लाये थे, और इसको हर बार बुरी तरह पीटा गया था। उनका कहना था कि यह क्रांतिकारी था। लेकिन भारी से भारी यंत्रणा पहुंचाने पर भी कभी कोई राज नहीं खोला। फिर... काफी अर्से से यह नहीं आया।"

लोगों ने एक दूसरे की ओर देखा। किसी के पास बोलने को कुछ नहीं था।

फिर बूढ़ा, लोगों की भीड़ से रास्ता बनाता बाहर निकला और उम्र तथा अनुभव के बोझ से झुका हुआ अपने काम पर लौट गया। ●

उत्तर रेलवे

समय सारिणी सूचना

१ अप्रैल, १९८१ से लागू होने वाली उत्तर रेलवे समय सारणी की मुख्य-मुख्य विशेषताएं निम्नानुसार हैं :

(१) सम्मिश्रित की गई गाड़ियां

१. खुर्जा और रोहतक के बीच २ के जी आर के रूप में सीधी गाड़ी चलाने के लिए ६ डी आर रोहतक-दिल्ली शटल गाड़ी २ डी जी के दिल्ली-खुर्जा यात्री गाड़ी के साथ सम्मिश्रित की जाएगी । यह गाड़ी रोहतक से १५.३५ बजे चल कर खुर्जा २२.१५ बजे पहुंचेगी ।

२. इलाहाबाद और आगरा छावनी के बीच सीधी गाड़ियां चलाने के लिए १ के ए/२ के ए इलाहाबाद-कानपुर यात्री गाड़ियां ३ ए सी/२ ए सी कानपुर-आगरा यात्री गाड़ियों के साथ सम्मिश्रित की जाएंगी और १ ए जी ए/२ ए जी ए के रूप में निम्नलिखित संक्षिप्त समय के अनुसार चलाई जाएंगी :

१ ए जी ए				२ ए जी ए
६.१५	छू.	इलाहाबाद	प.	२०.५०
११.३५	प.	कानपुर	छू.	१४.४५
१३.४०	छू.		प.	१३.३५
२३.४५	प.	आगरा छावनी	छू.	३.१०

अतः ४ ए सी गाड़ी का नम्बर २ ए सी परिवर्तित कर दिया जाएगा ।

(२) रद्द की गई/चालन क्षेत्र में कटौती की गई गाड़ियां

१. १ एन एच के/२ एन एच के नई दिल्ली-हापुड़-खुर्जा शटल गाड़ियों का चालन क्षेत्र हापुड़ और खुर्जा के बीच कम कर दिया गया है । अब ये गाड़ियां संशोधित नम्बर १ एन डी एच/२ एन डी एच सहित केवल नई दिल्ली और हापुड़ के बीच चलेंगी ।

खुर्जा से और यात्रियों की सुविधा के लिए हापुड़ पर निम्नलिखित मिलापों की व्यवस्था की जाएगी :

१ के एम हापुड़ प. ६.५५ १ एन डी एच हापुड़ छू. ७.१५

२ एन डी एच हापुड़ प. २०.१५ १६४ डाउन हापुड़ छू. २०.४८ बजे

इसके अतिरिक्त १६४ डाउन संगम एक्सप्रेस के ठहरावों की व्यवस्था हाफिजपुर, गुलौठी और बरल स्टेशनों पर भी की जाएगी ।

२. कम सवारियों के कारण गाड़ी नं २ जी एच गाजियाबाद-हापुड़ शटल रद्द कर दी जाएगी ।

३. १ एच डी हापुड़ - दिल्ली यात्री गाड़ी का चालन क्षेत्र हापुड़ और गाजियाबाद के बीच कम कर दिया जाएगा । अब यह गाड़ी संशोधित नं. ३ डी जी के रूप में केवल गाजियाबाद और दिल्ली के बीच चलेगी ।

२-क. गाड़ियों के दिनों में परिवर्तन

१५२ अप नई दिल्ली - बम्बई सेन्ट्रल राजधानी एक्सप्रेस सोमवार और शुक्रवार की बजाय 'सोमवार और बृहस्पतिवार' नई दिल्ली से १७.५२ बजे की बजाय १६.४० बजे चला करेंगी ।

110517

(३) नए ठहरावों की व्यवस्था

गाड़ी नं.	स्टेशन
१ वी आर	नांगल डेंगरोटा हाल्ट
१ ए टी डी/२ ए टी डी	कमलपुर हाल्ट
१५८ डाउन	बालामऊ
१२१	हजरत निजामुद्दीन
१२३	हजरत निजामुद्दीन
१२५	हजरत निजामुद्दीन
१६४	हाफिजपुर, गुलांठी और बरल
५०३/५०४	कुचामन सिटी
१/२	धप्पड़
१ यूकेएन/२ यूकेएन/ ३५३/३५४	धोला माजरा

(४) कम सवारियों के कारण ठहराव समाप्त कर दिए गए

१ बी डी एस	नांगल डेंगरोटा
१ ए जे डी/२ ए जे डी	कमलपुर हाल्ट
३१/३२ (परीक्षण के तौर पर ठहराव)	देवबंद

(५) सीधे होकर-जाने वाले और खण्डीय सवारी डिब्बों के चलने में परिवर्तन :

(I) ३७६/२ सीएम - ३ सीएम/३७५ गाड़ियों के साथ वर्तमान खण्डीय शयनयान (जीएससीजी) के स्थान पर दिल्ली और चंदौसी के बीच एक ३-टियर शयनयान (जीएससीएन) लगाया जाएगा ।

(II) वर्तमान दिल्ली-बरेली गाड़ियों-३७६/३७५ से हटा कर एक संयुक्त प्रथम व द्वितीय (एफ एस) दिल्ली और चंदौसी के बीच ३७६/२ सीएम - ३ सीएम/३७५ गाड़ियों के साथ लगाया जाएगा ।

(III) बरौनी और कानपुर सेन्ट्रल के बीच ८५ अप/८६ डाउन के साथ

चलने वाला वर्तमान खण्डीय शयनयान (जीएससीजी) बढ़ा कर कानपुर और नई दिल्ली के बीच ८५ अप/८६ डाउन के साथ एक खण्डीय शयनयान (जीएससीजी) लगाया जाएगा (गंतव्य बोर्ड को बदलने से)

(IV) जोधपुर और अहमदाबाद के बीच २६६/६६ - ६५/२६५ गाड़ियों के साथ एक ३-टियर शयनयान और दो साधारण द्वितीय श्रेणी डिब्बे लगाए जाएंगे ।

(६) गाड़ियों के समय में महत्वपूर्ण परिवर्तन

८४ डाउन	वाराणसी पर १५/३० की बजाय १४/५५ बजे पहुंचेगी.
१६५ डाउन	फैजाबाद से ११/३० की बजाय १०/५० बजे चलेगी और वाराणसी १५/३० की बजाय १४/५५ बजे पहुंचेगी ।
११४ डाउन	वाराणसी १४/३० की बजाय १४ बजे पहुंचेगी ।
५३ अप	नांगल डैम ८/१५ की बजाय ८/३० बजे चलेगी ।
५४ डाउन	नांगल डैम से २१/१० की बजाय २१/३० बजे चलेगी ।
२५ अप	नई दिल्ली से १० की बजाय १०/३० बजे पहुंचेगी ।
२५/८१/१०३	नई दिल्ली से ११/१५ बजे की बजाय ११/४५ बजे चलेगी और अमृतसर १९/०५ की बजाय १९/४० बजे पहुंचेगी ।
१४९ डाउन	हजरत निजामुद्दीन १०/१५ बजे की बजाय ११ बजे पहुंचेगी ।
१३१ डाउन	हजरत निजामुद्दीन १४/१० के बजाय १४/४० बजे पहुंचेगी ।
७७ डाउन	निजामुद्दीन १५/०५ की बजाय १५/३५ बजे पहुंचेगी ।
१३७ डाउन	हजरत निजामुद्दीन १९/२० की बजाय २०/१५ बजे पहुंचेगी ।
२३ डाउन	दिल्ली १३/१० की बजाय १३/४५ बजे पहुंचेगी ।
७ डाउन	दिल्ली १८/४० की बजाय १९/५५ बजे पहुंचेगी ।
३ डाउन	नई दिल्ली १८/५३ की बजाय १९/०८ बजे पहुंचेगी ।
२२ अप	नई दिल्ली २०/३५ की बजाय २०/२० बजे पहुंचेगी ।
४६ डाउन	दिल्ली ५/४० की बजाय ५/२५ बजे पहुंचेगी ।
१८ डाउन	जम्मू से २२/०५ की बजाय २२/४० बजे चलेगी और दिल्ली १३/२५ की बजाय १३/०५ बजे पहुंचेगी ।
१७ अप	जम्मू तवी १३/३५ की बजाय १२/५० बजे पहुंचेगी ।
६० डाउन	श्रीगंगानगर से १९/०५ की बजाय १९/४५ बजे चलेगी ।

:

१५२ अप	नई दिल्ली से १७/५२ की बजाय १६/४० बजे चलेगी और १५१ डाउन नई दिल्ली ८/५० की बजाय ९/२० बजे पहुंचेगी ।
२६६ अप	जोधपुर से १५/२० की बजाय १५/५० बजे चल कर भिलडी २२/४५ की बजाय २२/२५ बजे पहुंचेगी ।
२६५ डाउन	जोधपुर १०/१० की बजाय ९/४५ बजे पहुंचेगी ।
२ एफ बी एल	फॅजाबाद २२/२५ की बजाय २२/५ बजे पहुंचेगी ।
१ एफ डी एल	फॅजाबाद से ४/२० की बजाय ४/४० बजे चलेगी ।
४ सी एम	मुरादाबाद से ९/१० की बजाय ८/१० बजे चल कर चंदौसी १०/५० की बजाय ९/५० बजे पहुंचेगी ।
४ ए बी	बरेली से १०/२० की बजाय ९/४५ बजे चल कर अलीगढ़ १७ बजे की बजाय १६/२५ बजे पहुंचेगी ।
३ ए बी	अलीगढ़ से १८/४० की बजाय १८ बजे चल कर बरेली ०/५० की बजाय ०/१० बजे पहुंचेगी ।
३ सी एम	चंदौसी से २१/०५ की बजाय २१/४५ बजे चलकर मुरादाबाद २२/४० की बजाय २३/०५ बजे पहुंचेगी ।
२ के एम	मेरठ सिटी से ६/०५ की बजाय ५/४० बजे चलेगी ।
६ के एम	मेरठ सिटी से १८/१५ की बजाय १७/५० बजे चलेगी ।
१ के एम	खुर्जा से ५/४५ की बजाय ५/१० बजे चलेगी ।
२ ए टी डी	दिल्ली से ८/४५ की बजाय ८/३० बजे चलेगी ।
२ एसयूएन	नांगल डॅम से ३/२५ की बजाय ३/४५ बजे चलेगी ।
२ एमएसएन	नांगल डॅम से ९/५० की बजाय १०/१० बजे चलेगी ।
२ यूएसएन	नांगल डॅम से १५/१५ की बजाय १५/३० बजे चलेगी ।
१ एसयूएन	नांगल डॅम २३ बजे की बजाय २२/४० बजे पहुंचेगी ।
१ यूएसएन	अम्बाला छावनी से ७ बजे की बजाय ६/२० बजे चल कर नांगल डॅम १२/२० की बजाय ११/३० बजे पहुंचेगी ।
३३५ अप	अम्बाला छावनी से ७/१५ की बजाय ६/५५ बजे चलकर श्रीगंगानगर २०/१५ की बजाय १९/१० बजे पहुंचेगी ।
३८१ डाउन	नई दिल्ली १५/५५ की बजाय १६/२५ बजे पहुंचेगी ।
३७२ डाउन	हरिद्वार से ६/५० की बजाय ५/०५ बजे चल कर दिल्ली १७/२० की बजाय १६/०५ बजे पहुंचेगी ।
१ एस एच	हरिद्वार से ५/०५ की बजाय ६/५० बजे चल कर सहारनपुर ८/४५ की बजाय १०/३० बजे पहुंचेगी ।
१ डी एस	सहारनपुर २०/५० की बजाय २१/१५ बजे पहुंचेगी ।

110517

२ डीएसयू	दिल्ली १४ बजे की बजाय १४/३० बजे पहुंचेगी ।
३४२ डाउन	दिल्ली ८/४० की बजाय ९/५५ बजे पहुंचेगी ।
२ एस डी	शकूरबस्ती से ९/१५ की बजाय ९/४५ बजे चल कर दिल्ली ९/५८ की बजाय १०/३० बजे पहुंचेगी ।
३७० डाउन	दिल्ली २४ बजे की बजाए ०१/- बजे पहुंचेगी ।
२ एपीजे	जम्मू तवी से २२/३५ की बजाए २२ बजे चलेगी ।
२ एल जे	जाखल १३/३० की बजाए १३/१५ बजे चलेगी ।
२ बी ए	अबोहर से २२/२० की बजाए २२ बजे चलेगी ।
४ जे जे	जालंधर सिटी से १०/५० की बजाए १०/३० बजे चल कर जेजों दोआबा १४/३५ की बजाए १४/२० बजे पहुंचेगी ।
१ आर जे	राहों से १०/३५ की बजाए १०/५० बजे चल कर जालंधर सिटी १३/२० की बजाए १३/३५ बजे पहुंचेगी ।
३ डीएसएस	शामली १७/२२ की बजाए १६/४५ बजे पहुंचेगी ।
१ एस यू	सहारनपुर से ५/२५ की बजाए ५/१० बजे चल कर अम्बाला छावनी ७/५५ की बजाए ७/४० बजे पहुंचेगी ।
३३१ अप	सहारनपुर से ६/३५ की बजाए ६/०५ बजे चलेगी ।
१ डीयूके	दिल्ली से १४/३५ की बजाए १४/२० बजे चलेगी ।
२ पी एल	पानीपत २३/४० की बजाय ०/४० बजे पहुंचेगी ।
३३२ डाउन	नई दिल्ली ०/३० की बजाय २३/५० बजे पहुंचेगी ।
सीटी-२	हजरत निजामुद्दीन से ७/१० की बजाए ७/४० बजे चलेगी ।
१ जेपीजे	जैसलमेर से ८ बजे की बजाए ८/३५ बजे चलकर जोधपुर १८/१५ की बजाए १८/३० बजे पहुंचेगी ।
३ जेपीजे	जैसलमेर से २१/१५ की बजाए २१/३० बजे चल कर जोधपुर ७/०५ की बजाए ७/१५ बजे पहुंचेगी ।
२ जेपीजे	जैसलमेर से ११/२५ की बजाए ११/४० बजे पहुंचेगी ।
४ जेपीजे	जोधपुर से २१/१५ की बजाए २१/२५ बजे चल कर जैसलमेर ६/३५ की बजाए ७/१० बजे पहुंचेगी ।
२ डी बी	दिल्ली १४/४० की बजाय १५/२० बजे पहुंचेगी ।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया उत्तर रेलवे समय सारणी अप्रैल १९८१ को देखें जो समस्त प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर बिक्री के लिए उपलब्ध हैं ।

मुख्य परिचालन अधीक्षक

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस द्वारा
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित ।

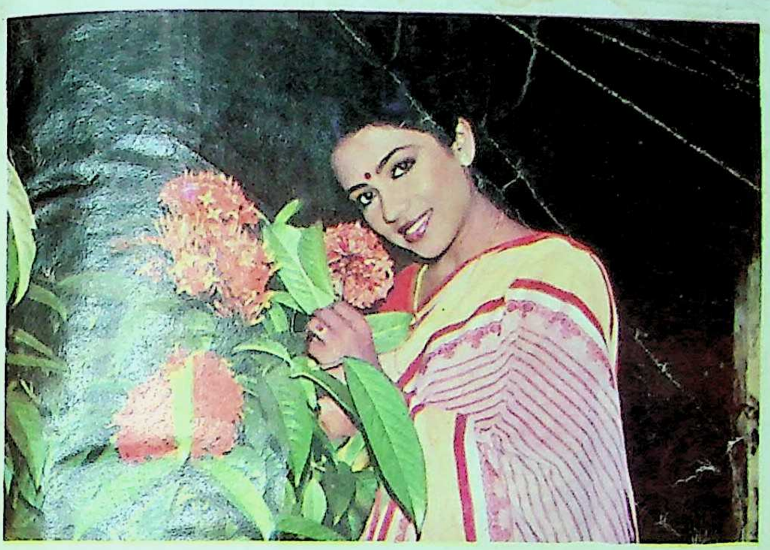

समस्या पूर्ति-२५

प्रतीक्षा

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए । इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है । गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी । आपकी रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की ही हो । प्रविष्टि पोस्ट कार्ड पर ही भेजें । जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा ।

प्रथम पुरस्कार—२५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार—१५ रुपये
अंतिम तिथि—२०मई, १९८१

या : फालसिंह गिरोटा

रजि. नं. डी.-(सी)

Usha 28-8-82

बेटे वाले ज़रा सोचें...

जो लोग बेटियों के विवाह की कठिनाइयों को भोग चुके होते हैं, वही अपने बेटों के विवाह के अवसर पर बिल्कुल भूल जाते हैं कि हमें कितनी ठोकरें खानी पड़ी थी, जरा सी सहानुभूति नहीं प्रकट करते, बल्कि कन्या के विवाह में जो तावान उठाया था, उसे चक्रवृद्धि ब्याज के साथ बेटे के विवाह में वसूल करने पर कटिबद्ध हो जाते हैं। कितने ही माता-पिता इसी चिन्ता में घुल-घुलकर अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, कोई सन्यास ग्रहण कर लेता है, कोई बूढ़े के गले कन्या को मढ़कर अपना गला छुड़ाता है, पात्र-कुपात्र के विचार करने का मौका कहां, ठेलमठेल है।

—प्रेमचन्द ('उद्धार' कहानी मे)

...क्या यह सब आज भी सच नहीं?

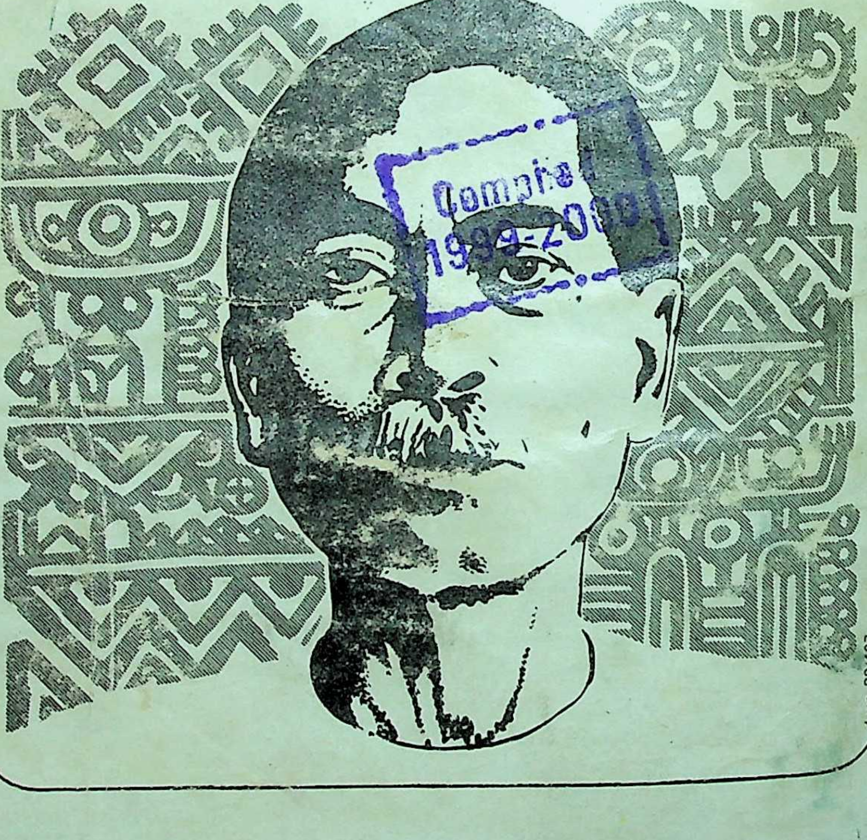

Complied 1999-2000

davp 80/407

क्र० ४।०७

27/8/09